



परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री
सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि-परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19-03-1971

* मुनिदीक्षा-11-05-1989

* आचार्यपद- 20-06-2004

पट्टाधीशपद- 24-12-2010 (20-06-2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:-

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संग्रह के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी-जुलाई 2004) (अक्षयज्योति-अक्तूबर 2004)

लघु विद्यानुवाद

संग्रहकर्ता

परम पूज्य आचार्यश्री कुन्थुसागर जी महाराज

प्रकाशक

श्री कुन्थुविजय ग्रन्थमाला समिति

जयपुर (राजस्थान)

(परम्परानायक)



परम पूज्य चारित्र-चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आनंदमागर जी महाराज
(अंकनीकर)

(तृतीय पट्टाधीन)



परम पूज्य सिद्धान्त-चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिमागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीन)



परम पूज्य तपस्चर्या-चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिमागर जी महाराज

(द्वितीय पट्टाधीन)



परम पूज्य तीर्थभक्त-शिरामणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें। मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि-परिवार

लघु विद्यानुवाद

(यंत्र, मंत्र, तंत्र विद्या का एक मात्र सन्दर्भ ग्रंथ)



संग्रहकर्ता :

श्री १०८ आचार्य गणधर श्री कुन्धुसागर जी महाराज

श्री १०५ गणनी आर्यिका श्री विजयमती माताजी

विदुषी रत्न, सम्यक्ज्ञान शिरोमणि, सिद्धान्त विशारद

शान्ति कुमार गंगवाल
प्रकाशन संयोजक

वल्लूलाल जैन गोधा
प्रबन्ध सम्पादक



प्रकाशक :

कुन्धु विजय ग्रन्थ माला समिति

कार्यालय : १६३६, घी वालों का रास्ता,

कस्तेरों की गली, जौहरी बाजार,

जयपुर—३०२००३ (राजस्थान)

- ☐ सर्वाधिकार सुरक्षित
- ☐ प्रथम संस्करण : १००० प्रतियाँ
- ☐ भगवान बाहुवली सहस्रनाम्नि महामस्तकाभिषेक
महोत्सव : दिनांक २२ करवरी, १९८१
- ☐ मूल्य : १०१) रु० मात्र
(डाक व्यय अतिरिक्त) 1 1 1 0 0 0
- ☐ मुद्रक : राजस्थान प्रिंटिंग वर्क्स,
किशनपोल बाजार,
जयपुर ।
- ☐ ब्लाक निर्माता : जुहली ब्लाक वर्क्स,
जौहरी बाजार, जयपुर, (राजस्थान)

प्राप्ति स्थान :

- ☐ श्री १०८ आचार्य गणधर कुन्नुमागरजी
महाराज सघ ।
- ☐ शान्ति कुमार गंगवाल,
१९३६, घी वालों का रास्ता,
कसेरों की गली, जौहरी बाजार,
जयपुर—३०२००३ (राजस्थान)
- ☐ खल्लुलाल जैन गोष्ठा
सम्पादक, जयपुर जैन डायरेक्टरी,
४९६, पं० नैनसुखदास मार्ग,
किशनपोल बाजार, जयपुर—३ (राज०)



श्री गणेश पद्मावती पार्श्व नाथाय नमः

श्री १०८ आचार्य महावीर कीर्ति

यंत्र मंत्र तंत्र
ग्रंथ

ॐ संग्रह कर्ता ॐ

श्री १०८ आचार्य गणधर कुंथु सागर जी महाराज

श्री गणेश सिद्धि १०९ आर्यिका विजयमती माताजी

श्री गणेशाकार महा मंत्र

गणेशो अरिहंताणं

गणेशो सिद्धाणं

गणेशो आदरियाणं

गणेशो उत्कर्षायाणं

गणेशो लोकासु सदा ह्यं

इति पञ्चगणेशो यारो सव्यपावप्पणा सणा।

मद्वताण च सव्यसि पटमं होदि मंजुलम्॥

श्री १००८ भगवान् पार्श्वनाथ



श्री पार्श्वनाथ

श्री पार्श्वनाथ स्तुति



श्री बाह्यवर्त्म स्थायी

श्री बाह्यवर्त्म स्थायी स्थापना, श्री बाह्यवर्त्म स्थायी स्थापना, श्री बाह्यवर्त्म स्थायी स्थापना

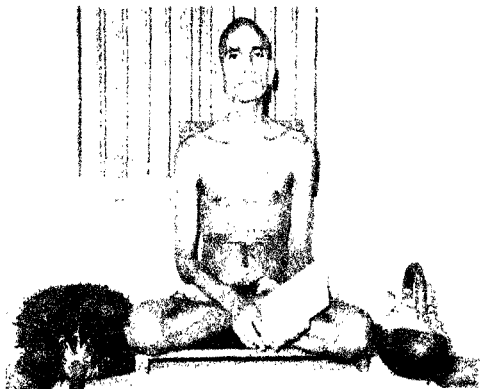
Swami Rajen Maharaj's Sacred Feet
 Paramahansa Bhagawan Chaitanya Mahaprabhu



परम वर्य समाधि समाप्त नार्थ भवन दिगोमलि १०८ परम्परावाय
 परमपरी श्री महावीरकालि श्री गुरु महाराज



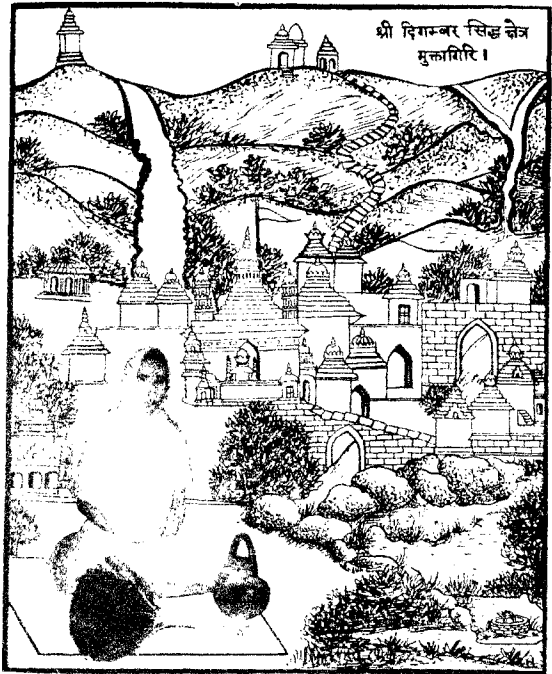
श्री दिगम्बर जनाचार्य निमित्तज्ञान शिरोमणि
१०८ विमलसागर जी महाराज



श्री दिगम्बर जेताचाय १०८ मन्मतिमागरजी महाराज



श्री १०८ आचार्य गणेश कृष्ण गायत्री महाराज नय विद्यानवाध ग्रन्थ का मण्डन करने हुए ।



श्री गणेशाय नमः । श्री गणेशाय नमः । श्री गणेशाय नमः । श्री गणेशाय नमः ।
 । श्री गणेशाय नमः । श्री गणेशाय नमः । श्री गणेशाय नमः । श्री गणेशाय नमः ।



अथर्ववेदशास्त्र, ब्राह्मणशास्त्र, संहिता में अन्य
 'व्याख्यान' 'व्याख्या' 'व्याख्यान' 'व्याख्यान' श्री
 'व्याख्यान' 'व्याख्या' 'व्याख्यान' 'व्याख्यान' श्री
 'व्याख्यान' 'व्याख्या' 'व्याख्यान' 'व्याख्यान' श्री
 'व्याख्यान' 'व्याख्या' 'व्याख्यान' 'व्याख्यान' श्री

'व्याख्यान' 'व्याख्या' 'व्याख्यान' 'व्याख्यान' श्री
 'व्याख्यान' 'व्याख्या' 'व्याख्यान' 'व्याख्यान' श्री
 'व्याख्यान' 'व्याख्या' 'व्याख्यान' 'व्याख्यान' श्री
 'व्याख्यान' 'व्याख्या' 'व्याख्यान' 'व्याख्यान' श्री



'व्याख्यान' 'व्याख्या' 'व्याख्यान' 'व्याख्यान' श्री
 'व्याख्यान' 'व्याख्या' 'व्याख्यान' 'व्याख्यान' श्री
 'व्याख्यान' 'व्याख्या' 'व्याख्यान' 'व्याख्यान' श्री
 'व्याख्यान' 'व्याख्या' 'व्याख्यान' 'व्याख्यान' श्री



1. 凡在本行開辦之各項業務，均應遵守本行所定之各項規章，並應隨時注意本行所定之各項規章，如有違反者，應即停止該項業務，並應隨時注意本行所定之各項規章，如有違反者，應即停止該項業務。

[illegible]

[illegible][illegible]

शुभाशीर्वाद एवं शुभ-कामनाएँ—

निमित्त ज्ञान शिरोमणी
श्री १०८ आचार्य विमलसागरजी महाराज

“श्री लघु विद्यानुवाद” नामक ग्रन्थ श्री १०८ आचार्य कुन्धु सागरजी ने संकलन कर समाज के प्राणोमात्र को श्री १०८ श्री मन्त्रवादी विद्यानन्दजी की ग्रन्थकीवाट की कृति को सभाल कर लिखा है, वह समाज की निधि है। द्वादशांग का एक अंग है, जो लौकिक कार्य के साथ-साथ पारलौकिक, धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान का कारण बने।



श्री १०८ आचार्य विमलसागर

श्री १०८ उपाध्याय मुनि
श्री भरतसागरजी महाराज

अनादिकाल से मानव जीवन विभिन्न शक्तियों के आधार पर टिका हुआ है। शारीरिक, मानसिक, मान्त्रिक, तांत्रिक यांत्रिक और आध्यात्मिक आदि सभी शक्तियों की अपनी-अपनी विभिन्न सत्ता है। शारीरिक, मानसिक शक्ति के आधार पर यदि यह मानव अपने सासारिक जीवन को सुन्दर, उत्तम बना सकता है, तो मान्त्रिक, तांत्रिक एवं यांत्रिक शक्ति के आधार पर यह स्व और पर का उपकार कर जीवन में नई शक्ति का संचार कर सकता है। इन सब में महान शक्ति की दायिनी, अधुण शादवत सुख की दायिनी आध्यात्मिक शक्ति है।



भारतीय इतिहास की खोज करने पर ज्ञात होता है, कि भारत के श्रमण महर्षियों ने जीवन में सभी शक्तियों को पूर्ण स्थान दिया है। मान्त्रिक, तांत्रिक, यांत्रिक शक्तियों को जहाँ श्राज का युग झूठा, मिथ्या एवं पाखण्ड नाम से पुकारता है, वहाँ कुन्द कुन्दादि जैसे महान् अध्यात्म योगियों ने मान्त्रिक शक्ति के बल पर “दिगम्बर धर्म को आदि धर्म घोषित करवाकर” श्रमण परम्परा की, श्रमण संस्कृति की रक्षा की है।

मन्त्र विद्या, तन्त्र विद्या, यन्त्र विद्या भूँठ या मिथ्या नहीं हैं। मिथ्या है तो हमारा श्रद्धान है। पहले उसी मन्त्र से शीघ्र कार्य की सिद्धि देखी जाती थी, परन्तु आज तुरन्त या शीघ्रता से मन्त्र सिद्धि नहीं पायी जाती है, इसका दोष हम मन्त्रों को देते हैं, परन्तु क्या मन्त्र, तन्त्र गलत है नहीं, मन्त्र भी गलत नहीं है, तन्त्र भी गलत नहीं है, गलत है, तो हम है और हमारा श्रद्धान है।

वर्तमान समय में श्री १०८ आचार्य कुन्धसागर जो महाराज ने लुप्त हुई इस मन्त्र, तन्त्र विद्या को पुनः जीवन्त बनाने के लिए बहुत उत्तम प्रयास कर "लघु विद्यानुवाद" नामक पुस्तक का सृजन किया है। मेरी यही शुभ कामना है कि यह पुस्तक हम भूले पानवों को अपनी भूली हुई शक्तियों का स्मरण कराकर सही मार्ग प्रशस्त करने में पूर्ण सफल एवं सक्षम सिद्ध होगी। और ग्रन्थ प्रकाशन में जो श्री शान्तिकुमार जो गंगवाल आदि कार्य कर्त्ता हैं उन सभी को हमारा आशीर्वाद है।

उपाध्याय मुनि श्री भरतसागर

क्षुल्लक श्री १०५ सिद्धसागर जो महाराज

परम पूज्य श्री १०८ प्राचार्य गणधर श्री कुन्ध सागरजी महाराज ने 'लघु विद्यानुवाद' का संकलित करवा के व स्वनः पश्चिम द्वारा तैयार करके तथा आमुख (भूमिका) लिखकर इस ग्रन्थ को मपादन के योग्य बनाया है। उक्त ग्रन्थ श्री परम पूज्य १०८ आचार्यवर्य महावीर कीर्ति यन्त्र, तन्त्र, मन्त्रादि मग्रह अपर नाम लघु विद्यानुवाद का मेने अवलोकन किया है। यह ग्रन्थ समाज के लिये अनिपिड विषयो मे बहुत उप-योगी रहेगा। महाराज को मे सभक्ति सादर त्रिवार नमोःस्तु निवेदन करता है, तथा ग्रन्थ प्रकाशन में तत्पर कार्यरत परम जिनभक्त परायण सगीतज कपूरचन्दजी पाण्ड्या, शान्तिकुमारजी गंगवाल व अन्य इनके सहयोगी गज्जनवर्ग शुभाशीर्वाद के पात्र हैं। प्रेस कापी आदिक कार्यों मे इनको पूर्ण सफलता प्राप्त हो।



क्षु० सिद्धसागर

मोजमानाद,
जयपुर (राजस्थान)



राजस्थान,
जयपुर
जनवरी ३१, १९८१

सन्देश



मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री दि० जैन कुन्धु विजय ग्रन्थ मान्दा समिति, जयपुर, आचार्य श्री कुन्धुसागर जी द्वारा संप्रहीत तत्त्व विद्यानुवाद ग्रन्थ का बृहत प्रकाशन कर रही है।

जैन धर्म के अनुयायियों एवं जनसाधारण के लिये इस ग्रन्थ का प्रकाशन, संप्रहीत, ग्रन्थ, मन्त्र और तन्त्र विद्या की जानकारी के लिये, उपादेय होगा, ऐसी मे आशा करता हूँ और इस अभिनत प्रकाशन की सफलता के लिए मंगलकामना करता हूँ।


(रघुपुत्र सिंह)

श्री १०८ आचार्य गणधर कुंथु सागर जी महाराज

का

—: आशीर्वादात्मक मंगल वचन :-

श्री १००८ भगवान् अर्हन् देव के शासन में द्वादशांग रूप जिनवाणी कही है और द्वादशांग को धारण करने वाले भगवान् महावीर की आचार्य परम्परा में आने वाले अन्तिम



श्रुत केवल आचार्य भद्र बाहु हुये। वे आचार्य अष्टांग निमित्त ज्ञान के ज्ञाता थे। उसके बाद स्मरण शक्ति के कम हो जाने पर द्वादशांग रूप श्रुत ज्ञान को धारण करने वाले कम हो गये। यहाँ तक कि कम होते २ धर्षे-णाचार्य को अंग रूप का ज्ञान का कुछ अंश का ज्ञान था। उनकी महान् कृपा में आज जो श्रुत ज्ञान दृष्टि मोचर हो रहा है वह उन्हीं की कृपा दृष्टि है। ग्याह अंग चौदह पूर्व रूप श्रुत ज्ञान है। नरन्तगते जिनान्ग में विद्यानुवाद दशम पूर्व है। यह विद्यानुवाद पूर्व अनेक यन्त्र मन्त्रों रूप महामागर में भरा हुआ है। जिसको पार करने में समर्थ केवली, श्रुत केवली ही होते हैं। उस

विद्यानुवाद पूर्व में अनेक प्रकार की विद्याये है, वह १२०० मो लघु विद्या, ७०० महा विद्याओं से भरा हुआ है। नाना प्रकार के चमत्कारों में अलंकृत है। ऐसे विद्यानुवाद का जो रागी निरन्तर साधु राज मात्र श्रुत ज्ञान प्राप्ति के अर्थ एकान्ता में इन्द्रिय विजयी होकर अध्ययन करने हैं। अध्ययन करने मात्र में नाना प्रकार की विद्याये सम्मुख आकर खड़ी हो जाती है। साधु राज में कहने लगती है, हमारे लिये क्या आज्ञा है? "साधु भी सम्मुख हुई विद्याओं को कह देते हैं कि तुमसे हमारा कोई प्रयोजन नहीं है। ऐसी वीतरागी साधु ही विद्यानुवाद रूप समुद्र को पार करते हैं निस्पृही होकर। उनका मान उद्देश्य वस्तु स्वभाव की प्राप्ति का रहता है और जो शुभोपयोग में ज्यादातर रहते हैं और शुद्धोपयोग में कम रहते हैं वे भी विशेष धर्म प्रभाव नार्थ धार्मिक विद्याओं से काम लेते हैं। अन्यथा कभी भी उन विद्याओं

की तरफ दृष्टिपात भी नहीं करते। इस हूँडा वसपिणी पंचम काल में उस महात् सागर रूप विद्यानुवाद का लोप हो गया। क्योंकि बीतरागी साधुओं की दृष्टि बीतरागता की ओर रही और ये बीतरागता मे बाधक है। इसलिये केवली प्रणीत विद्यानुवाद प्रायः नष्ट हो गया। आज समाज में हस्त लिखित विद्यानुवाद की प्रतियाँ दृष्टि मोचर है। वे भी इस काल के लोगों के लिए महान् हैं। मुस्लिम काल में एवं अन्य आतताइयों के काल में हमारे जैन गुरुवाचार्य भट्टारकों ने उस महान सागर रूप विद्यानुवाद के अश रूप पाठको को बचाया और उनको विद्याये सिद्ध कर जैन धर्म का रक्षण किया। आज विद्यानुवाद की जो भी प्रतियाँ उपलब्ध है वे जगह जगह अशुद्ध एवं जीर्ण हो गई है। वर्तमान साधु समाज व भट्टारक समाज में कोई ऐसा नहीं जो चमत्कारों द्वारा जैन धर्म का प्रभावना करे। आज जैन धर्मन्यायियों की भावनाओं में विकार आ गया है, और समाज पतन की ओर जा रहा है। बीतराग धर्म की ओर लोगों की आस्था कम हो गई है और मिथ्या धर्मों की ओर समाज का झुकाव प्रशिक है। सामाजिक वातावरण अत्यन्त दयनीय है। सभी मिथ्या देव शास्त्र गुरु की पूजा में नग्न है। क्योंकि लोगों में श्रद्धात पाया जाता है कि इनमे ही हमारा सकट टले जाता है, परन्तु ऐसा होता नहीं। ऐसे व्यक्तियों के लिये यह लघु विद्यानुवाद की रचना की है। इसमें सामान्य मन्त्र यन्त्र है। अनेक प्रकार के तन्त्र एवं ओपधिया है। आज के मिथ्याचरण युक्त समाज के लिये यह हस्तलिखित के समान है। यह ग्रन्थ लोगों को मिथ्यात्व से बचायगा जो अज्ञातपूर्वक व विधि पूर्वक यन्त्रो मन्त्रो तन्त्रो का आश्रय लेना उसके मनवाञ्छित लौकिक कार्यों की सिद्धी होगी। आज कल वर्तमान शास्त्र भण्डारों में मिलने वाले विद्यानुवाद की प्रतियों का लघु अंश रूप ग्रन्थ सग्रहित किया है वह तो पूर्वाचार्य श्री मल्लिषेणाचार्य कृत है। उन विद्यानुवाद रूप लघु सागर को हम जंगे मद बुद्धि तरंगों को समर्थ नहीं है। इसलिये सगल भाषा में लघु विद्यानुवाद बनाया है। मैं आशा करता हूँ कि हमारा जैन समाज इससे लाभान्वित होगा। तभी हमारा परिश्रम कार्यकारी होगा। इस विद्यानुवाद में वर्णित शान्ति कर्म, पोष्टिक कर्म, वृद्ध कर्म आकापंगा कर्म, स्तम्भन कर्म विद्वपणा कर्म, उच्चाटन कर्म के मन्त्र यन्त्र तन्त्र दिये है। अनेक जगह अशुद्ध द्रव्यों का प्रयोग भी आया है। लेकिन क्या करें यह मन्त्र शास्त्र है। इसमें मैंने अपनी ओर से इस ग्रन्थ में कुछ नहीं लिखा है जिस प्रकार हमको वर्णन मिला उन सबका उल्लेख करना पडा है। हमारा अपना कोई स्वतन्त्र भाव नहीं है। इस ग्रन्थ में जो भी मन्त्र तन्त्र यन्त्र है वे हमारे गुरु विश्व वदनीय जैनाचार्य अध्यागम योगी समाधि सम्राट श्री १०८ आचार्य महावीर कीर्ति जी महाराज के कई गुट के कावियों में सग्रहित किये हैं। इसके अलावा और भी अनेक पूर्व हस्तलिखित मन्त्र शास्त्रों से संकलन किया है जो सिद्ध धोत्र सोनागिरी की देन है। सोनागिरी संवत् १९ नं० २५ जिनालय श्री मल्लीनाथ प्रभु के

चरणों के सानिध्य में बैठ कर संग्रह किया है। इस प्रकार का ग्रन्थ जैन परम्परा में प्राज तक प्रकाशित नहीं हुआ है। हस्तलिखित तो पाया जाता है किन्तु वो भी प्रक्षेप रूप में है इस एक ही ग्रन्थ में गामर में सागर भग्ने कहावन रूप प्रयास किया है। मुझे ग्रन्थ के संग्रह करने में बहुत परिश्रम करना पड़ा है। लेकिन मुझे पदस्थ ध्यान का अपूर्व लाभ हुआ। पदस्थ ध्यान मन्त्रों की ध्यान साधना से होता है और इसमें मन एकाग्र होता है। मन की एकाग्रता से कर्म निजंरा होती है। यह भी भगवान की वाणी है। विद्याधर मनुष्य नित्य ही इन मन्त्रों का ध्यान व साधना करते हैं।

प्रस्तुत मन्त्र शास्त्र में मारण उच्चाटन आदि हानि पहुँचाने वाली क्रियाएँ भी वर्णित हैं उन क्रियाओं में साधक किसी भी प्रकार हाथ न लगावे। हमारा वितराग में अहिंसा मयी है। जो मारण कर्म उच्चाटन कर्म दूसरों के हानि पहुँचाने की क्रिया करता है। वह महान् पातकी कहलाता है, और सबसे अधिक हिंसा के दोष का भागी होता है।

वितराग धर्म या (हम) सग्रहकर्ता किसी भी प्रकार में इन क्रियाओं में साधक को प्रवेश करने की आज्ञा नहीं देते। शान्ति कर्म पोष्टिक कर्म या दूसरों को हानि पहुँचाने रूप क्रियाओं में प्रवेश करने रूप भाव भी करेगा तो वह वितराग धर्म के गूट करने रूप पाप का अधिकारी होगा। महान् हिंसक हाँगा। हाँ इन क्रियाओं में कब प्रवेश करे, जबकि कहीं मन्त्र देव शास्त्र गुरु पर उपसर्ग आया हो अथवा कोई धर्म सकट आया हो, किसी सत्ता की रक्षा करना हो। धर्मात्मा के प्राण सकट में हो। तब इन क्रियाओं को शुद्ध सम्यग्दृष्टि धारक है वेही, करे। इस शास्त्र में जो मन्त्र, यन्त्र और तन्त्र है उनको मिथ्यादृष्टियों के हाथ में न दे। जो भी गुंसा करेगा उसे बाल हत्या का पाप लगेगा। हमने इस शास्त्र का संग्रह मात्र जैन समाज के हितार्थ किया है। कहो कही मन्त्रों की विधि नमस्क में नहीं आने के कारण ज्याँ की ल्यो लिख दी है और लगभग सभी जगह मन्त्रों की विधि बुद्धि के अनुसार स्पष्ट की है। इस ग्रन्थ को संग्रहित करने में मन्त्रों की विधि लिखने में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं हो तो उसे विशेष मन्त्र शास्त्र के जानने वाले शुद्ध कर हमने तो अपने अल्प ज्ञानानुसार शुद्ध कर संग्रह किया है।

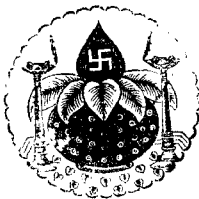
इस ग्रन्थ के कार्य में हर समय १०८ आचार्य सन्मार्ग दिवाकर विमलसागरजी महाराज का आशीर्वाद रहा है और श्री गणनी १०५ आर्यिका सिद्धान्त विशारद सम्मक ज्ञानशिरोमणि विजय मती माताजी का ग्रन्थ संग्रह में कार्य पूर्ण सहयोग व दिग्दर्शन रहा है। माताजी को मेरा पूर्ण आशीर्वाद है।

विभिन्न मुद्राओं के नाम व लक्षण के साथ चित्र व २४ यक्ष यक्षणियों के चित्र भी दिये हैं। चित्रकार श्री गोतम जी गोधा लखकर वालों ने चित्रों का चित्रण करके ग्रन्थ के एक अंग की पूर्ति की है उनको भी हमारा आशीर्वाद है कि उनकी चित्रकला उत्तरोत्तर वृद्धि गत हो और धर्म प्रभावना करे। इस ग्रन्थ की प्रेस कापी करने में दर्शना कुमारी पाटनी भोपाल, महावीर कुमार, आशा कुमारी जैन दतिया, होरामणी जापुर ने सहायता की है, उनको भी हमारा आशीर्वाद है।

ग्रन्थ प्रकाशन कार्य में कार्य रत धर्म स्नेही सगोत्राचार्य श्री शान्ति कुमार जी गंगवाल, श्री लल्लू लालजी गोधा, हीरा लाल जी मेठी, मोती लाल जी हाडा, कपूरचन्द जी पाण्ड्या, मुशीलकुमार गंगवाल, प्रदीपकुमार गंगवाल श्रीमती कनक प्रभा जी हाडा, श्रीमती मेमदेवी गंगवाल, श्री रमेश चन्द जी जैन को हमारा पूर्ण आशीर्वाद है। ऐसा ही धर्म कार्य आप लोग सदैव करते रहे।

१०८ आचार्य गणधर

कुंभुसागर



१०५ आर्यिका विजयमतीजी का ग्रंथ की उपयोगिता के बारे में प्रकाश एवं आशीर्वाद



परम पूज्य समाधि सम्राट १०८ आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी महाराज विश्व की अनुपम निधि थे। आपने न केवल जैन जाति, धर्म व संस्कृति का ही रक्षण किया, अपितु विश्व कल्याण लोक हित का भी सम्मान किया। मन्त्र तन्त्र विद्या पर आपका सर्वाधिक अधिपत्य रहा। और उससे लोक हित का कार्य भी किया। उनके शास्त्रों गुटको, डायग्रियों में यंत्र तंत्र विखरी मणियों को एक सूत्र में पिरोकर कण्ठहार बनाने का प्रयत्न प्रस्तुत ग्रन्थ में किया है। मेरे पास स्वयं उनके द्वारा कराये गये नोट भी थे। उनको एक अन्यत्र मे भी चुन चुन कर सग्रह किया है। जिससे इस ग्रन्थ का महत्व न केवल व्यावहारिक जीवन में ही उपयोगी है अपितु आध्यात्मिक जीवन में

भी लाभकारी, गहरी होगी। इसके प्रकाशन का कार्य "कुन्धु विजय ग्रन्थ माला" अत्यन्त जगन में कर रही है। श्री ज्ञानि कुमार जी गंगवाल का पूर्ण सहयोग है। उन्हीं के पुरुषार्थ और बर्ण से यह कार्य हो रहा है। यह महान गौरव का विषय है। मेरा उन्हें पूर्ण आशीर्वाद है। वे इस कार्य में सफलता प्राप्त करें और जितनी भी प्रचार से निर्मल जानी बनने हुए पूर्ण जानी बने। अन्य समस्त कार्य कर्त्ताओं को भी जानावरणी कर्म के क्षयोपशम विशेष की प्राप्ति हो। मिथ्यात्व का नाश और सम्बन्ध की प्राप्ति इस ग्रन्थ के माध्यम से पाठकों को हो, यही मेरी मन्त्रावना, आशीर्वाद है।

गणनी १०५ आर्यिका

विजयमती

वयोवृद्ध तपस्विनी पूज्य १०५ आर्यिका श्री धर्ममती माताजी

श्री १०८ आचार्य गणधर कुंभुसागर जी महाराज व श्री गणनी १०५ आर्यिका विजय मती माताजी ने कठोर श्रम कर के जन कल्याणार्थ लघु विधानुवाद ग्रन्थ का संग्रह किया है, जो कि यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र विद्या की प्रामाणिक सामग्री लिये हुये प्राचीन अद्भूत अलभ्य यन्त्रों के साथ प्रकाशित किया जा रहा है।

उपरोक्त ग्रन्थराज के लिए मे आशा करती हूँ कि समाज निश्चित रूप से लाभान्वित होगा। ग्रन्थ प्रकाशन कार्य में संलग्न जयपुर निवासी श्री शान्ति कुमार जी गंगवाल, श्री लल्लूलाल जी जैन, गोधा व इनके सहयोगीगण जो अकथ परिश्रम कर के, लग्न व निष्ठा के साथ इसका प्रकाशन करवा रहे हैं, उन्हें आशीर्वाद देती हूँ कि इनको इस कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त हो।

—आर्यिका धर्ममती



पेट्रोलियम, रसायन और उर्वरक मन्त्री
भारत

Minister of Petroleum,
Chemicals & Fertilizers
India.

नई दिल्ली-११०००१, ६ फरवरी, १९८१

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री दि० जैत कुन्धु विजय ग्रन्थ
माला समिति द्वारा गोम्मटेष्ट्वर भगवान् वाह्यलो, श्रवणवेनगोला
महन्त्रादि महामस्तकाभिषेक महोत्सव के पुण्य अवसर पर
श्री १०८ आचार्य गणधर कुन्धुसागर जी महागज द्वारा संप्रहीत
लघु विद्यानुवाद ग्रन्थ का प्रथम बार प्रकाशन किया जा रहा है।
मे इस ग्रन्थ की सफलता की मंगल कामना करता हूँ।

—प्रकाश चन्द सेठी

आवरण पृष्ठ का मध्य चित्र परिचय

विक्रम संवत् १३७३ में आलमशाह अलाउद्दीन देहली नगर में राज्य करता था। अपने धर्म का पक्का था, और अन्य धर्मावलंबी लोगों को जबरन मुसलमान बनाता था। एक दिन नगर निवासियों में जो जैनी थे, उनको भी यह हुक्म सुनाया गया कि या तो मुसलमान बन जाओ या अपने किसी धर्म गुरु के द्वारा कोई चमत्कार दिखाओ। सब जैनी इस आपत्ति को देख कर घबराये और बादशाह से छः महीने की मोहलत मांगी। बादशाह ने छः महीने की छूट दी, और सब जैन लोग अपने किसी चमत्कार दिखा सकने वाले दिगम्बर गुरु की खोज करने में लग गये। खोजते हुए दक्षिण भारत में पहुँचे। कोल्हापुर (महाराष्ट्र) के निकट आचार्य दि. गुरु **विद्यासागर जी महाराज** तपस्या कर रहे थे। देहली से आने वाले श्रावकों ने महाराज के दर्शन किये और उनसे अपने धर्म पर आये संकट का दूर करने की जानकारी दी, तथा उनसे प्रार्थना करके धर्म को बचाने की विनती की। विद्यासागरजी महाराज ने तुरन्त स्वीकृति प्रदान की और तपस्या के लिये ध्यान में बैठ गये। छः महीने के समय में जब सिर्फ तीन दिन बाकी रह गये तो श्रावकों ने फिर महाराज से कहा कि वे देहली चलकर विपत्ति से छुटकारा दिलावे। महाराज ने कहा कि घबराइये नहीं सब अच्छा होगा और सब श्रावकों को आज्ञा दी कि आज रात सब लोग यहीं सो जाएँ। गुरु आज्ञा के अनुसार सब श्रावक वहीं सो जाते हैं। रात्रि में दि. आचार्य **विद्यासागरजी महाराज** **मन्त्र शक्ति** के प्रयोग द्वारा सोते हुये श्रावकों सहित देहली पहुँच जाते हैं। मुबह सब जागते हैं तो आश्चर्य से देखते हैं कि यह तो देहली की भूमि है। सब लोग अपने बादशाह को बताते हैं कि दि. जैन धर्म के गुरु आ गये हैं, वे अपने धर्म का चमत्कार दिखावेंगे। बादशाह के खन्ताख भरे दरबार में जैन धर्म गुरु पहुँचते हैं। बादशाह अलाउद्दीन का मोलवी बड़ा मन्त्र वादी था उसने महाराज के कमंडल में मन्त्र प्रभाव से मछलियाँ कर दी और बादशाह से कहने लगा कि बादशाह ये अहिंसावादी साधु हैं और अपने कमंडल में मछलियाँ रखता है। बादशाह ने महाराज से कमंडल दिखाने को कहा। महाराज विद्यासागर जी ने अपने ज्ञान से यह जान लिया कि इस कमंडल में मोलवी ने मछलियाँ पैदा कर दी हैं। महाराज ने अपने मन्त्र का प्रयोग किया और कमंडल में मछलियों के स्थान पर कमल के फूल बना लिये। महाराज बादशाह से कहने लगे कि आपका मोलवी झूठ बोलता है, मेरे कमंडल में मछलियाँ नहीं बरन्, कमल के फूल हैं। बादशाह ने कहा कि कमंडल उल्टा करके दिखाओ। **विद्यासागरजी महाराज** भरे दरबार में अपना कमंडल उल्टा करके दिखाते हैं। कमंडल में कमल के फूल घडाघड़ जमीन पर गिरने लगते हैं, सब लोग जैन धर्म के चमत्कार को देखकर आश्चर्य करते हैं और धर्म की जय जयकार करते हैं। जैनी लोग महाराज विद्यासागर जी की जय जय कार करते हैं। बादशाह भी नन मस्तक होता है। धर्म की रक्षा होती है।

महाराज विद्यासागर जो **बड़े मन्त्रवादी थे**, इनकी समाधि अक्कीबाट स्व ग्राम में हुई थी। अब भी इनके समाधि स्थान पर बड़ा चमत्कार है।

आचार्य महावीर कीर्ति का जीवन परिचय

समाधि सम्राट श्री १०८ आचार्य महावीर कीर्ति का जन्म वंशाख बदि ६ वि० सं० १६६७ में फिरोजाबाद में हुआ था। पिता का नाम रतनलाल जी, माता का नाम बूँदादेवी था। आपने २० वर्ष की अवस्था में पितासम अजमेर में श्री १०८ चन्द्रसागर जी से सप्तम प्रतिमा ग्रहण की थी। सम्बत् १६६५ में मेवाड़ के टाका टोका स्थान पर आचार्य श्री १०८ वीरसागर जी से क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की थी। ३२ वर्ष की अवस्था में उदगाव (दक्षिण) में श्री १०८ आचार्य आदीसागर जी सांगली (महाराष्ट्र) के द्वारा नग्न दिगम्बर मुद्रा धारण की थी। अपने दीक्षा गुरु आदीसागर जी के स्वर्गारोहण के पश्चात् जेडवाल (कनटिक) में एक लाख जन समुदाय के उपस्थिति में आपको आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया था।

आप अनेक विषयों तथा भाषाओं के उच्च कोटि के विद्वान थे। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं के साथ ही गुजराती, कन्नड़ी, मराठी आदि प्रान्तीय भाषाओं का भी अध्ययन कर १८ भाषाओं के ज्ञाता हो गये थे। आपको यह विशेषता थी कि जिस प्रदेश में आपका विहार हो जाता था उसी प्रदेश की भाषा में प्रवचन होता था।

आचार्य श्री ने जैन धर्म तथा संस्कृति की प्रभावना के लिये प्रायः सम्पूर्ण भारत में विहार किया था। दक्षिण भारत में अनेक वर्षों तक विहार करने के बाद उत्तर भारत के मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, बंगाल, बिहार आदि अनेक प्रमुख स्थानों में आपका विहार तथा चातुर्मास हुये। आपके चातुर्मास अधिकतर सिद्ध क्षेत्रों, अतिशय क्षेत्रों पर ही होते थे।

विहार के समय आपके ऊपर अनेक घातक हमले हुए। घोर उपसर्ग और शारीरिक पीड़ा भी कई बार सहन करनी पड़ी। किन्तु आपने समस्त उपद्रवों को यही ही शानि और सयम के साथ सहन किया तथा अपने कर्त्तव्य से रचमात्र भी विचलित नहीं हुए। आप जैसे आचार्य तेजस्वी निर्भीक वक्ता अत्यात्मवेत्ता, मन्त्र, तन्त्र के ज्ञाता आत्मजयों पर दुःख कातर, स्वपर हितकारी, धर्म के प्रति अटूट श्रद्धावान् देखने में कम ही आये हैं। इसी कारण आप अत्यधिक लोक प्रिय हुए। आपके द्वारा १६ मुनि, ६ आर्याका, ७ क्षुल्लक, ५ क्षल्लिका दीक्षा प्रदान की गई। इसके अलावा ८ लोगों को ब्रह्मचारी व ४ का ब्रह्मचारिणी व्रत दिये तथा १ से ७ प्रतिमा तक के अनेक श्रावक श्राविकाओं को व्रती बनाया गया।

आपके प्रमुख शिष्यों में वर्तमान में १०८ आचार्य श्री विमल सागर जी, १०८ आचार्य श्री सन्मनि सागर जी, १०८ एलाचार्य श्री विद्यानन्द जी, १०८ आचार्य श्री सभवा सागर जी, १०८ आचार्य गणधर कुन्धुसागर जी व श्री गणनी १०५ आर्याका विदुषी रत्न, सिद्धान्त विशारद, विजयमती माताजी शामिल हैं, जिनके द्वारा सारे देश में धर्म का प्रचार होते हुए, प्राणी मात्र इन गुरुओं के सानिध्य को पाकर पुक्ति मार्ग पर बढ़ रहे हैं।





❖ प्रस्तावना ❖

प्रस्तुत ग्रन्थ आचार्य प्रवर समाधि सम्राट, उग्र तपस्वी, मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र क्रिया के पारगामी श्री १०८ महावीर कीर्ति जो महाराज के प्रवर शिष्य तपोनिधि प्रशान मूर्ति आचार्य गणधर श्री १०८ कुन्धुसागर जी महाराज व श्री गणेश, विद्वान् विजयार्द्र, सम्यक्-ज्ञान शिरोमणि विजयमयी माना जी ने अपने गुरुवर्य आचार्य श्री महावीर कीर्ति जो एव प्राचीन गुटो में मे बड़े परिश्रम से संचित कर लिखा है।

यन्त्र मन्त्र, तन्त्र विज्ञानवाद के अंग हैं। इनका महत्व आज के भौतिक युग में भी उतना ही है, जितना पूर्व युगों में रहता है, लेकिन आज कल के युग में इन महान् प्रयोगों के जानकार नहीं है, और न इनके साधना की प्रक्रिया में ही परिचित हैं। इसीलिये न इनके प्रति उनकी आस्था जागृत होनी है, और न बिना आस्था व अध्यवसाय के किसी कार्य की सिद्धि होती है। फलस्वरूप अज्ञानता प्रमाद के कारण उन मन्त्र, यन्त्र, तन्त्रों के स्वरूप जो फल स्वर्ण्य निश्चया हावी थी नहीं हा पाती है। विषय का ज्ञान नहीं होने से लोग फिर इन मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र को ही गलत बताने लगते हैं।

मन्त्रों की साधना के लिए चाहे वह कोई मन्त्र हो, नव प्रकार की श्रुतियाँ आवश्यक है। इसके साथ ही मन्त्र के प्रति साधक की पूर्ण आस्था होना परमावश्यक है। इसके बिना साधना की सिद्धि सम्भव नहीं है। नव श्रुतियाँ—(१) द्रव्य श्रुति (२) क्षेत्र श्रुति (३) काल श्रुति (४) भाव श्रुति (५) आसन श्रुति (६) विनय श्रुति (७) मन श्रुति (८) वचन श्रुति (९) काय श्रुति हानी है। साधक को माला (जो तीन तरह की हानी है) कमल जाप्य, हुम्नांगुली माला जाप्य, बन्ध आसन और दिशा बोध भी होना आवश्यक है। किस साधना के लिए कैसे वस्त्र हो, कैसे आसन हो, कैसे मुद्रा हो और किस दिशा की ओर मुख करे, इन सब बातों का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है।

साधक को अपनी श्रुति करने के लिए एकलीकरण, निविघ्नता के लिए संरक्षीकरण भी करना पड़ता है। इसके बिना साधना में अनेक विघ्न आ जाते हैं, और इससे इष्ट सिद्धि नहीं हो पाती है। मन्त्रों द्वारा आत्म शान्ति जागृत की जाती है। मन्त्र की व्युत्पत्ति ही ऐसी है, मन्त्र शब्द मन धातु में षट् प्रव्यय लगाने से बनना है। मन्यते आत्म देशोन्म

रति मन्त्र अर्थात् जिससे आत्मा का आदेश जाना जावे उसे मन्त्र कहते हैं। तन्त्र उन मन्त्रों की प्रक्रिया है और यन्त्रों का आकार अर्थात् मन्त्रों की आकृतियाँ सम्पूर्ण द्वादशांग जिन-वाणी की सुरक्षित रखने के चार्ट हैं, जिनके देखने मात्र से तत्सम्बन्धी सम्पूर्ण ज्ञान हो जाता है। इन यन्त्रों का सीधा सम्बन्ध मन्त्रों और सिद्धियों से है। विधि श्रद्धा और विवेक के साथ इनकी साधना करने से सिद्धियाँ निश्चित रूप से प्राप्त हो जाती हैं। सद्गुरुक आचार्य श्री व माता जी ने इन सब बातों का इस ग्रंथ में सग्रह समन्वित किया है और उन्होंने इसे पांच खंडों में विभाजित किया है।

साधकों का लक्ष्य मन्त्रों की साधना प्रारम्भ करने से पूर्व, सकलीकरण, मरक्षीकरण और साधना करने की मद्राये, विधियाँ, विविध सिद्धियों के लिये मन्त्रों का विधि सहित विवेचन यन्त्रों के आकार, चौबीस भगवान के यक्ष यक्षणियों के (चित्र सहित) वर्णन व आयुर्वेद का विषय विवेचन इन खंडों में किया गया है। उस तरह यह ग्रन्थ यन्त्र मन्त्र और तन्त्रों को विशेष विवेचना करने वाला एक महान् और अर्घ्व ग्रन्थ (लघु विधानुसार) बन गया है। इसके सग्रह करने में पूजा श्री १०८ आचार्य श्री कुन्धुनागर जी महाराज व श्री १०५ आर्यिका विजयमती माता जी ने अथक श्रम करके लुप्त एवं मृत् विद्या को प्रकाश में लाये हैं, उसके लिये सम्पूर्ण मानव समाज आपका उक्त व आभारी रहेगा और यावच्चन्द्र दिवाकर आपका नाम जमर रहेगा।

इस ग्रन्थ को प्रकाशन कराने में धर्मोत्साही गुरु भक्त मगोनाचार्य श्री शान्तिकुमार जी गंगवाल, प्रकाशन संयोजक एवं धर्म प्रेमी श्री लखलूलाल जी जैन गोंधा (सम्पादक जयपुर जैन डायरेक्टरी) जो कि इस ग्रन्थ के प्रबन्ध सम्पादक हैं व इनके सहयोगी कार्यकर्ताओं को मैं धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, क्योंकि इन्हीं लोगों के सहयोग व प्रेरणा से इतना बड़ा कार्य इतनी जल्दी सम्भव हुआ है। कुन्धु विजय ग्रन्थ माला समिति के सभी सदस्यों का मैं अभिनन्दन करता हूँ कि जिनके प्रयास से ही समिति का प्रथम प्रकाशन ही इतना प्रभावक प्रकाशित हुआ है कि जिसका प्रकाश देश के सभी क्षेत्रों में दूर-दूर तक फैलेगा और चिरकाल तक रहेगा।

मुझे प्रकाशन संयोजक श्री शान्तिकुमार जी गंगवाल ने बतलाया कि पंडित जी ऐसे महान् ग्रन्थ के प्रकाशना का कार्य करने की न हम में शक्ति थी और न क्षमता, मगर फिर भी प्रकाशित हो रहा है, आश्चर्य है? मैंने कहा कि इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है, आपको सभी बड़े आचार्यों के आशीर्वाद के साथ साथ श्री १०८ आचार्य गणवर कुन्धुनागर जी महाराज व श्री गणनी १०५ आर्यिका विदुषी रत्न सम्यक्ज्ञान शिरोमणि, सिद्धान्त विशारद, विजयमती माना जी का पूर्ण आशीर्वाद है और साथ ही साधुओं के प्रति अटूट भक्ति ही कार्य कर रही है, भक्ति में अपूर्व शक्ति है।

समाज रत्न पं० राजकुमार शास्त्री,

साहित्य तीर्थ, आयुर्वेदाचार्य

निवाई (टीक) राजस्थान

संचालक—अखिल विश्व जैन मिशन



प्रकाशन संयोजक के

दो शब्द

समाधि सम्राट स्वर्गीय १०८ आचार्य श्री महावीर कीर्तिजी महाराज, निमित्त ज्ञान शिरोमणि, १०८ आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज, १०८ आचार्य श्री सन्मति सागरजी महाराज, १०८ आचार्य गणधर श्री कुंभु सागर जी महाराज, श्री गणनी १०५ आशिका, विदुषी रत्न सम्यक् ज्ञान शिरोमणि सिद्धास्त विशारद विजयमती माताजी व सभी साधुओं के चरण कमलों में त्रिवार नमोस्तु अर्पित कर ग्रन्थ प्रकाशन के कार्य के बारे में दो शब्द लिख रहा हूँ ।

१०८ आचार्य गणधर श्री कुंभु सागर जी महाराज एवं १०५ गणनी आशिका श्री विजयमती माताजी के मेरे प्रथम बार दर्शन, वर्ष १९७२ में जयपुर में किये थे । उस समय आप श्री संघ सहित जयपुर स्थित राणाजी की नशिया (खानिया) में पधारे हुए थे । आप श्री कीर्तपोमयी त्याग प्रतिभा से मैं बहुत प्रभावित हुआ और मेरे मानस में यह भावना जाग्रत हुई कि ऐसे गुरुओं का पूरे चातुर्मास में समागम मिले तो समग्र समाज लाभान्वित हो । जिस मनुष्य की जैसे सच्ची भावना होती है वैसे ही उसे फल मिलता है । कहा भी है “भावना भव नाशिनी”, “भावना भव फामनी” । आखिरकार मेरी सच्ची भावना का फल मुझे मिला, और चातुर्मास स्थापना दिवस की मेरी यह भावना पूर्ण हुई, जब महाराज श्री व माताजी ने राणाजी की नशियां (खानियाँ) में ही चातुर्मास स्थापित करने की उद्घोषणा की । मेरी भावना की सफलता को पाकर मैं खुशी में फूला नहीं समाया । महाराज श्री के साथ २० साधुओं ने चातुर्मास किया था जिसमें ३ मुनि, ५ क्षुल्लक और १४ माताजी थे ।)

आप श्री ने जैसे ही चातुर्मास स्थापना की घोषणा की, तत्काल ही वहाँ पर मुनि भक्तों, मुद्रावकों और कनिषय युवकों ने संघ के चातुर्मास की व्यवस्थाओं के लिए एक चातुर्मास प्रबन्ध समिति का चयन किया । इस समिति का मर्चा पद मुझे दिया गया । मेरे लिये इस पद का भार वहन करना बहुत ही बटिन था, क्योंकि मुझे इससे पूर्व मुनि संघ की

व्यवस्थाओं का कोई अनुभव नहीं था। साथ ही बैंक सेवा में होने से, समय की भी कमी थी। लेकिन महाराज श्री व माताजी के आशीर्वाद व, मार्ग दर्शन व वास्तव्य से, यह चातुर्मास कई विशेष कार्यक्रमों के साथ बहुत ही व्यवस्थित ढंग से गत्यन्त आनन्द के साथ सम्पन्न हुआ, जिसे आज भी जयपुर निवासी याद करते रहते हैं।

चातुर्मास के बीच ही जयपुर स्थित महावीर पार्क में आप जन समूह के बीच १० अक्टूबर १९७२ को बड़ा वाटेडा (उदघाटन) निवागी ब्रह्मचारीजी श्री भूमकलालजी की दीक्षा, आप श्री के कर कमलों में सम्पन्न हुई। दीक्षा के पाचात् उन्हें १०५ श्रुतलक श्री आदी सागरजी के नाम से सम्बोधित किया। वास्तव में यह आप श्री व माताजी श्री के तप का ही प्रभाव था। यह उस चातुर्मास की सबसे उल्लेखनीय घटना थी। इस समय आपने सभी को वीतराग मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। आप श्री के कर कमलों द्वारा जयपुर से विहार के जेज गणनी १०५ आर्यशा विजयमयी मन्नाजी द्वारा लिखित समाधि मन्त्राट १०८ आचार्य महावीर कीर्तिजी के पावन जीवन चरित्र की पुस्तक का विशेष समारोह भी हुआ।

धीरे-धीरे चातुर्मास का समय व्यतीत हो गया और आप श्री ने तीर्थराज सम्मेलन शिखर की ओर विहार करने की घोषणा कर दी। जयपुर से विहार करने समय १६ नवम्बर १९७२ को महाराज श्री व माताजी ने मुझे आशीर्वाद प्रदान किया और कहा कि आपने चातुर्मास के दौरान चतुर विध सघ की जो तन, मन, धन से सेवा की है। ऐसी सेवा भक्ति सघों की आप सदैव करते रहें। देव-शाम्य-भुक्त की सेवा आपके भक्ति का सदैव लक्ष्य लेते रहें। महाराज व माताजी के श्री गुरु से यह मुनकर में अन्य हो गया। मेरा हृदय परमेश्वर हो गया और खुशी से जाबों में अर्थ धारा बहने लग गई। महाराज श्री व माताजी सघ सहित जयपुर निवासियों की भक्ति का मार्ग बतलाकर प्रस्थान कर गये। उस दृष्टि विशेष में मेरे मन में बहुत हल्का प्रश्न उत्पन्न हो रहा था कि न मालूम उस सघों के चरणों के दर्शन करने का सौभाग्य फिर कब प्राप्त होगा। लेकिन महाराज श्री व माताजी का विशेष आग्रह्य व आशीर्वाद मुझे हमेशा मिलता रहा। आपके चातुर्मास के दौरान मुझे विभिन्न स्थानों पर जाने का मौका मिला। इनमें तीर्थराज श्री सम्मेलन शिखर जी, श्री सिद्ध क्षेत्र गंगा गिरजी, आरा (विहार) गङ्गागढ़ (मध्यप्रदेश) शामिल है। आप श्री व माताजी के साथ तीर्थराज सम्मेलन शिखरजी व सिद्ध क्षेत्र गंगागिर जी की भजना करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आपके चातुर्मास के समय विभिन्न स्थानों पर भक्ति संगीत के विशेष कार्यक्रम भी आयोजित किये गये। सम्मेलन शिखर सिद्ध क्षेत्र पर भक्ति संगीत का कार्यक्रम मुनकर महाराज श्री व माताजी ने मुझे संगीतज्ञात्र व बहिन श्रीमती कनकप्रसा जी हाडा को प्राथमिक संगीत विदुषी का पद प्रदान किया। इन कार्यक्रमों में जैन संगीत कोकिला रानी, एवं आध्यात्मिक संगीत विदुषी श्रीमती कनक प्रसा जी हाडा व आदर्शार्थ श्री मोतीलाल जी हाडा का विशेष सहयोग मिला है। श्री मोतीलालजी हाडा व बहिन श्रीमती कनक प्रसाजी हाडा भी महाराज श्री व माताजी के श्रद्धालु भक्त हैं। उन सहयोग के बिना आपका विशेष सभासरी हूं और आशा करता हूँ कि अगला वह सहयोग हमेशा मिलता रहेगा।

अभी हाल ही में गत चातुर्मास में हम लोग महाराज श्री व माताजी के दर्शनार्थ अकलूज जिला शौलापुर (महाराष्ट्र) गये थे। महाराज श्री ने व माताजी ने बातचीत के दौरान मुझे यह आज्ञा प्रदान की, कि हमने सोनापिरि जी सिद्ध क्षेत्र पर "लघु विद्यानुवाद" का संग्रह किया है। यह ग्रन्थ यन्त्र मन्त्र पर प्रमाणिक सामग्री लिये हुए है। आप इस ग्रन्थ की प्रेस कापी को जयपुर ले जायें और इसे भगवान बाहुबली महा मस्तक-भिरुक के पावन महोत्सव के अवसर पर प्रकाशित करवाने की व्यवस्था करो। साथ ही इस कार्य की सफलता के लिये महाराज श्री व माताजी ने आशीर्वाद भी प्रदान किया।

मैंने प्रथम प्रकाशन कराने के कार्य को स्वीकार करते हुए महाराज श्री व माताजी से यह निवेदन किया कि यह कार्य मेरे लिये बहुत कठिन है। मैं इसे कैसे कर पाऊंगा। तब महाराज श्री ने प्रसन्न मुद्रा में कहा, हम क्या कर सकते हैं, इसके प्रकाशन कराने का श्रेय आपको ही मिलने वाला है।

महाराज श्री व माताजी के सानिध्य में भक्ति का लाभ लेकर हम लोग बाहुबली यात्रा करते हुए २-११-८० को जयपुर आने के पश्चात् इसका प्रकाशन कराने के कार्य को प्रारम्भ किया। महाराज श्री व माताजी द्वारा सग्रहित इस ग्रन्थ की प्रेस कापी मैंने १३ नवम्बर १९८० को श्री लख्मलाल जी जैन (गोधा) सम्पादक जयपुर जैन डायरेक्टरी को दिव्याकर विचार धर्मार्थ किया। श्री गोधा ने जयपुर जैन डायरेक्टरी का प्रकाशन भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाण महोत्सव के अवसर पर किया था। उस समय श्री गोधा जी द्वारा सम्पादित व प्रकाशित इस डायरेक्टरी की सर्वत्र प्रशंसा व सराहना हुई थी।

श्री गोधा जी भी महाराज श्री व माताजी से प्रभावित थे। आप महाराज श्री व माताजी द्वारा सग्रहित प्रेस कापी को देखकर अत्यधिक प्रभावित हुए और मुझे इस ग्रन्थ को शीघ्र प्रकाशन में पूर्ण सहयोग देने का विश्वास दिलाया और साथ ही मेरे अनुरोध पर ग्रन्थ प्रकाशन कार्य में प्रबन्ध सम्पादक का पद भी स्वीकार किया।

श्री गोधा का महाराज श्री व माताजी से सर्वप्रथम सम्पर्क जयपुर स्थित राजाजी की नशिया (खानिया) जयपुर में १८ जून १९७२ को हुआ था। आप महाराज श्री व माताजी को सद्य महित जयसिंहपुरा खोर (कानी खोह) भी ले गये थे। महाराज श्री व माताजी ने आहार, सामायिक, प्रवचन आदि के पश्चात् श्री गोधाजी को साहित्यिक एवं धार्मिक क्षेत्र में आगे आने की प्रेरणा दी थी।

आप श्री के आशीर्वाद से कुछ माह पश्चात् ही श्री गोधाजी ने दिगम्बर जैन मन्दिर जयसिंहपुरा खोर का सम्पूर्ण जीर्णोद्धार करवाया। साहित्यिक क्षेत्र में जयपुर जैन डायरेक्टरी जैसे एकमात्र मंदर्भ ग्रंथ जो कि जयपुर जैन समाज के इतिहास में प्रथम बार प्रकाशित हुआ है उसे प्रकाशन एवं सम्पादन जैसे दुरह कार्य को सम्पन्न कर अपनी कार्यकुशलता, कार्यक्षमता एवं प्रतिभा का परिचय दिया है। यह सब महाराज श्री व माताजी के आशीर्वाद का ही फल

है। इसके अतिरिक्त भारतवर्ष के दिगम्बर जैन धार्मिक तीर्थ स्थलों का सड़क व रेलमार्गों से किलोमीटर की दूरी सहित मार्गदर्शन (नक्शा) पृथक्-पृथक् द्वाारा जैन समाज के लिये सराहनीय कार्य किया है। वैसे भी श्री गोधाजी जयपुर जैन समाज में धार्मिक एवं सामाजिक कर्मठ युवक कार्यकर्त्ताओं में से एक है।

मे श्री गोधाजी का अत्यन्त आभारी हूँ कि जिन्होंने व्यस्त कार्यक्रमों में से समय निकाल कर ग्रंथ प्रकाशन कार्य में रुचि लेकर सहयोग प्रदान किया है।

मे १०५ धूमलक श्री सिद्ध सागरजी महाराज, मोजमावाद का भी बड़ा आभारी हूँ कि बृद्धा अवस्था में भी आपने अमूल्य समय में से समय निकालकर ग्रंथ का अवलोकन करके समय समय पर मुझे मार्ग दर्शन दिया।

श्री हीरालालजी मेठी को भी धन्यवाद देता हूँ कि आपके अमूल्य समय में से समय निकालकर ग्रंथ प्रकाशन कार्य में सहयोग दिया है। श्री मेठीजी महाराज व माताजी के श्रद्धालु भक्तों में से है। आपकी धार्मिक प्रवृत्ति होने से आप मुनि सचो के कार्यों में रुचि लेकर कार्य सम्पन्न कराने में सहयोग देने रहते हैं। महाराज श्री के जयपुर चातुर्मास के समय आप चातुर्मास प्रबन्ध समिति में व्यवस्थापक के पद पर कार्य करके मुझे काफी सहयोग दिया था। निर्वाण वर्ष मे २४ तीर्थ करों की जन्म जयन्तिया मनाने में भी आपने मेरे साथ कार्य करके अपनी कार्य कुशलता का परिचय दिया था।

श्री कपूरचन्द जी पाण्डवा (सञ्चालक एवं सस्थापक) श्री पूजा प्रचारक समिति जयपुर को भी धन्यवाद देता हूँ कि जिन्होंने अपने अमूल्य समय में से समय निकालकर ग्रंथ प्रकाशन कार्य में सहयोग दिया है।

श्री मुशील कुमार गगवाल (वी काम) द्वारा की गई सेवाओं को भी मैं नहीं भूषा सकता कि जिन्होंने कार्यालय में अत्यधिक व्यस्त होने के बावजूद भी कटोर परिश्रम करके अपने कर्त्तव्य को निभाया है।

ग्रंथ प्रकाशन कार्य में हमारे आर्टिस्ट श्री पुरुषोत्तमजी शर्मा को धन्यवाद देता हूँ कि जिन्होंने अपनी कला में महाराज श्री व माताजी के चित्रों के बनाने के अलावा ग्रंथ राज छपे सभी यन्त्रों को बनाने में प्राथमिकता देकर ध्वाक बनाने योग्य बनाकर सहयोग प्रदान किया है।

श्री पुरुषोत्तमदासजी, अमोलकदासजी कोटावाला, जो कि मैं मैं राजस्थान प्रिन्टिंग वर्क्स के मालिक हूँ अत्यन्त आभारी हूँ कि जिन्होंने प्रदेश में विजली सफ़्त की घड़ी में भी ग्रंथ को छापने का कार्य समय पर करवाकर कार्य कुशलता का परिचय दिया है। साथ ही प्रेस के व्यवस्थापक, कम्पोज़िटर्स, मशीनमैनो के सहयोग को भी बदापि नहीं भुलाया जा सकता, जिन्होंने आस्था के साथ ग्रंथ को पूर्ण करने में दिन रात एक कर दिया।

मे श्री कन्हैयालालजी काला, श्री धनुषकरजी, श्री मोतीलाल जी हाडा, बहिन श्रीमती कनक प्रभाजी हाडा, श्री रमेशचन्दजी जैन, श्री सतीशकुमार गगवाल, श्री पारसलाल जी पाटनी,

श्री बाबूलालजी गंगवाल, श्री हरकचन्दजी गंगवाल का भी आभारी हूँ कि जिन्होंने ग्रंथ प्रकाशन के कार्य में रुचि लेकर समय २ पर मेरा साथ दिया है। अन्य जिन २ महानुभावों ने सहयोग दिया है, उन सभी को धन्यवाद देता हूँ।

मेरे पण्डित राजकुमारजी शास्त्री निवाड़ी वालों का आभारी हूँ जिन्होंने ग्रंथ राज की प्रस्तावना लिखने की कृपा की है।

ग्रंथ प्रकाशन कार्य में मेरी धर्म पति श्रीमती मेमदेवी गंगवाल व सुपुत्र प्रदीप कुमार गंगवाल का भी बड़ा आभारी हूँ कि मुझे गृह कार्य से मुक्त रख कर तथा समय २ पर प्रेस कापी तैयार करने में व अन्य सभी कार्यों में सहयोग दिया है।

ग्रंथ प्रकाशन कार्य में सभी दानागों का भी मैं अपनी ओर से 'कुन्धु विजय ग्रंथ माला' समिति की ओर से धन्यवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि समिति के भविष्य में भी इस प्रकार के प्रकाशनों के लिये आप लोगों का सहयोग मिलता रहेगा।

ग्रंथ राज के प्रकाशन में सभी कार्यों को बहुत ही सावधानी पूर्वक देखा गया है ताकि ग्रंथ राज अपने आप में उपयोगी साबित हो सके। इसकी भाषा प्राचीन गुटको से सफाई की हुई है और बेसी ही प्रकाशित कराई गई है।

अन्त में आचार्य श्री व मानाजी के कर कमलों में यह ग्रंथ समर्पित करते हुये मैं आज अत्यधिक गम्भीरता का अनुभव कर रहा हूँ, कि आपकी आज्ञानुसार मैंने इस कार्य को करके सफलता प्राप्त की है। मेरे लिये यह कार्य बहुत ही मुश्किल था, लेकिन आप श्री व मानाजी के आशीर्वाद में अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार सभी कार्य सुन्दर से सुन्दर कराने का प्रयास किया है। इस तरह के कार्य का मेरा यह प्रथम प्रयास है। अतः इसमें कमियाँ रहना स्वाभाविक है। इसके लिये मैं आपसे कर बड़ा क्षमा चाहता हूँ। आशा है आप क्षमा करेंगे और भविष्य में इस प्रकार के कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त हो, इसके लिये आशीर्वाद प्रदान करेंगे।

साथ अंग्रे, विद्वत् जन, पाठकगण जो भी इसमें बूटियाँ रहें हों, कृपया सबह कर्त्ता को सूचित करने का कष्ट करें। जिससे आगामी प्रकाशन में उनको दूर किया जा सके।

मैं आचार्य श्री १०८ विमलसागर जी महाराज, उपाध्याय मुनि श्री १०८ भरतसागर जी महाराज, १०५ धनलक श्री सिद्ध सागर जी महाराज का भी बहुत २ आभारी हूँ कि जिन्होंने ग्रंथ राज की उपयोगिता व कार्य की सफलता के लिए प्रकाशनार्थ दो शब्द लिखकर भिजवाने का कष्ट किया है।

श्री यधुकूलजी निलक, राज्यपाल राजस्थान सरकार का भी आभार मानता हूँ कि जिन्होंने ग्रंथ की उपयोगिता के बारे में प्रकाशनार्थ अपना शुभ संदेश भिजवाया है।

पुनः नमोस्तु,

एव आशीर्वाद की भावना के साथ

गुरु भक्त, संगीताचार्य

शान्तिकुमार गंगवाल, बी. काम

जयपुर (राजस्थान)

प्रबन्ध सम्पादक के दो शब्द



श्री १०८ आचार्य गणधर श्री कुन्धुसागर जी व श्री १०५ गण्णि आर्यिका श्री विजयमती माताजी द्वारा सग्रहित 'लघु विद्यानुवाद' ग्रन्थ को मुद्रित करवाने के लिए सलाह करने हेतु श्री शान्तिकुमारजी गंगवाल मुझसे १३ नवम्बर १९८० को मिले । विचार विमर्श के दौरान इस ग्रन्थ को शीघ्र सुन्दर मुद्रित कराने हेतु प्रबन्ध सम्पादक के रूप में दायित्व वहन करने का प्रस्ताव मेरे समक्ष रखा । ग्रन्थ का अवलोकन करने पर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि मैंने इस प्रकार का ग्रन्थ पहिले कभी नहीं देखा था । यह कार्य काफी कठिन था कि इसको अल्प समय में छपवाकर भगवान बाहुबली महामस्तकामिषेक महोत्सव के पुण्य अवसर पर प्रकाशित करके महाराज श्री की भावना को मूर्तरूप दिया जा सके । यह ग्रन्थ उन महाराज श्री व माताजी द्वारा सग्रहित था, जिनसे कि मैं भी परिचित था, व उनके सम्पर्क में आने का मुझे भी सौभाग्य मिल चुका था । ग्रन्थ देखकर मैं बड़ा प्रभावित हुआ तथा मैंने मेरे सारे व्यस्त कार्यक्रमों को छोड़कर ग्रन्थ छपवाने का आश्वासन श्री गंगवाल जी को देकर कार्य को शीघ्र कराने में जुट गया ।

इस ग्रन्थ के मुद्रित कराने से पूर्व मैंने भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाण महोत्सव के अवसर पर जयपुर जैन डायरेक्टरी का सम्पादन कर प्रकाशित किया था, जो कि जयपुर जैन समाज के इतिहास में मेरा प्रथम प्रयास था ।

ग्रन्थ में संकलित सामग्री मेरे सामान्य ज्ञान की परिधि से बाहर है, तथा मैं इस सामग्री के बारे में विनकुल अनभिज्ञ था, लेकिन महाराज श्री के आदेशानुसार गंगवाल जी को मैंने भी इस कार्य में सहयोग देने का आश्वासन देकर प्रबन्ध सम्पादक के पद को स्वीकार करते हुये ग्रन्थ को प्रकाशन करने में समय लगाया ।

ग्रन्थ के मुद्रण में कई त्रुटियों का रहना स्वाभाविक है, और त्रुटियाँ रही भी होगी, वे सब मेरी अल्प बुद्धि के कारण हैं, अतः साधु वर्ग, विद्वत्जन, पाठकगण से क्षमा चाहता हूँ ।

वसन्तपंचमी, दिनांक ६-२-१९८१

माध शुक्ल, ५ वि सं. २०३७

जयपुर

सल्लू लाल जैन गोधा

सम्पादक,

जयपुर जैन डायरेक्टरी

जिनके प्रयत्नों से यह ग्रन्थ मुद्रित हो सका--



श्री जगदीश कुमार मंगल
प्रधान संपादक



श्री लललाल जैन गोपा
ग्रन्थ संपादक



श्री मोनीलाल दादा



श्री मोनील कुमार मंगल

पत्र विज्ञान मंड

प्रकाशन सहयोगी—



← श्री कपूरचन्द पांड्या



श्री हीरालाल सेठी→



← श्री रमेशचन्द जैन

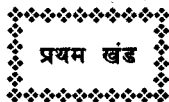


← श्रीमती कनक प्रभा हाडा



श्रीमती मेमदेवी गंगवाल→

तद्य विद्यानुवाद



इस खण्ड में

(पृष्ठ १ से २४ तक)

मंगला चरण	
मन्त्र साधन करने वाले के लक्षण	१
अथ सकलीकरणम्	२
मन्त्र साधन की विधि, मन्त्र जाप करने की विधि का कोष्टक	६
अंगुलियों के नाम	८
आसन विधान	११
अंगुली विधान, माला विधान	१२
मन्त्र शास्त्र में अकडम चक्र का प्रयोग	१३
अकडम चक्र	१४
मन्त्र साधन मुहूर्त का कोष्टक, मन्त्र साधन होगा या नहीं, उसको देखने की विधि, मन्त्र जपने के लिए आसन	१५
मन्त्र शास्त्र में मुद्राओं की विधि	१६
मन्त्र जाप के लिये विभिन्न मुद्राओं के २१ चित्र	१६
मन्त्र जाप के लिये मंडलों का ध्यान, मंडलों का नक्शा	२४



ग्रन्थ--प्रशस्ति

आचार्य श्री शत-अठ "महावीर कीरति" हुये महान् ।
परम्परा में 'विमल' गुरु हैं, जैन जगत की शान ॥
इनके महा तपस्वी शिष्य हैं, आचार्य मुनि श्री कुन्धु ।
कठिन साधना से जिनकी, प्रस्तुत यह अद्भुत ग्रन्थ ॥
श्रेष्ठ तपस्विनी माताजी श्री विजय मतीजी साथ ।
ग्रन्थराज की तैयारी में, धन्य बढाया हाथ ॥
सिद्ध क्षेत्र सोनागिरी पर यह, सिद्ध हुआ है काज ।
गुरु बाहुबल से बाहुबली को है अर्पित आज ॥
लघु विद्यानुवाद ग्रन्थ का नाम दिया है सुन्दर ।
अद्भुत ग्रन्थ बना गुणकारी, उपकारी और हितकर ॥
गोधा लल्लुलाल और श्री शान्तिकुमार गंगवाल ।
संपादन, संयोजन कीना, धन्य हैं दोनों लाल ॥
यन्त्र मन्त्र और तंत्र है बिद्या क्या, और क्या उपयोग ।
ग्रन्थ में इस पर सुन्दर चित्रण, पढ़े कटे सब रोग ॥
और भी उपयोगी सामग्री, चित्र, भरे हैं इसमें ।
जोवन सुन्दर जीने का है, 'राज' भरा है जिनमें ॥
सम्बत् दो हजार सत्तीस में, फागुन माह महान् ।
अभिषेक बाहुबली महा मस्तक का, सुन्दर अवसर जान ॥
कर्नाटक की धन्य घरा पर, लाखों लोग है आये ।
इस अवसर पर ग्रन्थ राज को गुरु जग सम्मुख लाये ॥

रचयिता - (राजमल जैन, जयपुर)

卐 मंगला चरण 卐

वृषभादि जिनान् वन्दे, भव्य पंकज प्रफुल्लकान् ।

गौतमादिगणाधीशान्, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनान् ॥ १ ॥

वन्दित्वा कुण्डकुण्डादीन्, महावीर कीर्ति तथा ।

लघुविद्यां प्रवक्ष्यामि पूर्वाचार्या नुरूपतः ॥ २ ॥

लघुविद्यानुवाद

अर्थ - मोक्ष लक्ष्मी के घर है ऐसे प्रथम तीर्थंकर भगवान् ऋषभदेव से लगाकर अन्तिम तीर्थंकर महावीर स्वामी पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकर प्रभु को नमस्कार करता हूँ ।

भव्य रूपो कमलों का प्रफुल्लित करने वाले, गौतमादि गण नायको को नमस्कार करता हूँ । आचार्य परम्परा में आने वाले कुन्दकुन्दादिक आचार्य देव है, उनको नमस्कार करता हूँ और मेरे गुरुदेव श्री महावीर कीर्ति जी महाराज है उनको नमस्कार करके लघु-विद्यानुवाद को कहूँगा, जो पूर्वाचार्यों के द्वारा कहा गया है ।

मन्त्र साधन करने वाले के लक्षण

निजित मदनोटोपः प्रशमित कोपो विमुक्त विकथालापः ।

देव्यचनानुरक्तो जिनपद भक्तौ भवेन्मन्त्री ॥

जिसने कामदेव को जीता है, और जिनके क्रोधादि कषयों शान्त हैं, जो विकथाओं से दूर रहने वाला है, देवियों की पूजा करने में जिसका चित्त अनुरक्त है, और जिनेंद्र प्रभु के चरण कमलों की भक्ति करने वाला है, वह मन्त्री हो सकता है याने मन्त्र साधन करने वाला हो सकता है ।

मन्त्राराधन शूरः पाप विदूरो गुणेन गम्भीरः ।

मीनो महाभिमानी मन्त्री स्यादौदृशः पुरुषः ॥

जो मन्त्राराधना करने में शूरवीर है, पाप क्रियाओं से दूर रहने वाला है, गुणों में गम्भीर है, मीनो है, महान् स्वाभिमानी है, ऐसा पुरुष ही मन्त्रवादि हो सकता है ।

गुरुजन हितोपदेशो गततन्द्रो निद्रयापरित्यक्तः ।

परिमित भोजनशीलः स स्यादाराधको मन्त्राः ॥

जिसने गुरुजनों से उपदेश को प्राप्त किया है, तन्त्रा जिसकी खत्म हो चुकी है और जिसने निद्रा लेना छोड़ दिया है, जो परिमित भोजन करने वाला है, वही मन्त्रों का आराधक हो सकता है ।

निर्जित विषय कषायोधर्माभूत जनितं हर्षगत कायः ।

गुरुतर गुण सम्पूर्णः समवेदाराधको देव्याः (मन्त्राः) ॥

जिसने सम्पूर्ण विषय कषायों को जीत लिया है, धर्माभूत का सेवन करने में जिसकी काय हर्षयुक्त है, उत्तम गुणों से सयुक्त है, ऐसा पुरुष ही मन्त्राराधना कर सकता है ।

शुचिः प्रसन्नो गुरुदेव भक्तो दृढ व्रतः सत्य दया समेतः ।

दक्षः पटुर्बो ज पदावधारी मन्त्री भवेदीदृश एवलोके ॥

एते गुणायस्य न सन्ति पुंसः क्वचित् कदाचिन्न भवेत् स मन्त्री ।

करोति चेदपि वशात् स जाप्यं प्राप्नोत्यनर्थकणिशेखरायाः ॥

जिसका वाह्य और अभ्यन्तर से चित्त शुद्ध है, प्रसन्न है, देव शास्त्र गुरु का भक्त है, व्रतों को दृढ़ता से पालन करने वाला है, सत्य बोलने वाला है, दया से युक्त है, चतुर है, मन्त्रों के बीज रूप पदों को धारण करने वाला है ऐसा व्यक्ति ही लोक में मन्त्राराधना कर सकता है ।

उपरोक्त गुणों में जो पुरुष युक्त नहीं है, वह मन्त्र साधन का अधिकारी किसी भी हालत में नहीं होना है । अगर अभिमान से संयुक्त होकर मन्त्र साधना कोई करता है तो वह मन्त्रों के अधिष्ठाता देवों के द्वारा अनर्थ को प्राप्त होता है । ऐसी थी मन्त्रिपद्माचार्य की आज्ञा है ।

अथ सकलीकरणम्

दृष्टे मृष्टे भुवि न्यस्ते, सन्निविष्टः सु विष्टरे ।

समीपस्थापना द्रव्यो, मौनमाकर्मिकं दधे ॥

ॐ ह्रीं भूः शुद्धयतु स्वाहा । ॐ ह्रीं अर्हं धम ठ ग्रामन निजिषामि स्वाहा ।
ॐ ह्रीं ह्रूं गिरिहि गिरिहि ग्रामने उपविशामि स्वाहा । ॐ ह्रीं मौन स्थिताय
मौनवन गृह्णामि स्वाहा ।

शोधये सर्वपात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः ।

समाहितो यथाभ्यासं, करोमि सकलीक्रियाम् ॥

ॐ हां ह्रीं हूं ह्रीं ह्रूं नमोऽहंते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन पात्रशुद्धि
करोमि स्वाहा ।

इस मन्त्र से हाथ में पानी लेकर सर्व पूजा के वर्तनों की शुद्धि करे, पश्चात्
ओ३म् ह्रीं अहं श्रो श्रौ वं मं हं सं तं पं इवों श्वों हं सः अ सि आ उ सा
समस्त तीर्थ जलेन शुद्ध पात्रे निक्षिप्त पूजाद्रव्याणि शोधयामि स्वाहा ।

सर्व पूजा द्रव्यों का शासन करे । पश्चात्—

मैं अग्नि मण्डप में पर्वङ्गामन से बैठा हुआ हूँ और मेरे चारों ओर हवा से प्रज्वलित
अग्नि में यह सप्त धातुमय शरीर जल रहा है, ऐसा चिंतन करे । पश्चात्—

ॐ ॐ ॐ रं रं रं श्रौ श्रौ श्रौ अ सि आ उ सा दर्भासने उपवेशनं करोमि
स्वाहा ।

यइ मन्त्र पढ़ कर दर्भ के आसन पर बैठे । पश्चात्—

ॐ ह्रीं ओं क्रों दर्भैराच्छादनं करोमि स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अहं भगवतो जिनभास्करस्य बोधसहस्र करणैर्ममनोकर्मधनद्रव्यं
शोधयामि धे धे स्वाहा । नोकर्म शोधनम् ।

पढ़ पढ़ कर ऐसी विचार करे कि मेरे कर्म शोधन हो रहे हैं । पश्चात्—

ॐ हा ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः ॐ ॐ ॐ रं रं रं ह्यव्यूं ज्वल ज्वल प्रज्वल
प्रज्वल संदह संदह कर्ममलदह दह दुष् पच पच पापं हन हन ह्रूं फट् धे धे
स्वाहा । इति कर्म दहन ध्यानम् ।

इस को पढ़ कर विचार करे कि हमारे सर्व कर्म जल गये हैं ।

ॐ ह्रीं अहं श्री जिनप्रभञ्जन मम कर्मभस्म विधूतनं कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र को पढ़ कर विचार करे कि कर्म जल कर उनकी राख उड़ गई है । इति
भस्मापसरणम् ।

ॐ पंच ब्रह्ममुद्राग्रन्यस्तगुर्वमृताक्षरैः ॥

क्षरत्सुधौघैः सिचामि सुधा मंत्रेण मूर्धनि ॥

अब यहाँ पर पंच गुरु मुद्रा बनाकर और उसको मन्त्रक पत्र उल्टा रखकर अमृत बीज
मंत्र से अपनी शुद्धि करे । निम्नलिखित अमृत मंत्र से हाथ में लिये हुए जल की मन्त्रित कर
अपने शिर पर डाले—

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृत स्रावय स्रावय स स बली क्लीं ब्लूं ब्लू द्रा द्री
द्री श्री द्रावय द्रावय हं श्र्वी श्वी हं स अ सि आ उ सा मम सर्वोद्भ शुद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।
इति अमृत प्लावनम् ।

शून्याक्षरादि गुरु पंच पदान्कनीय ।
 स्याद्यङ्गुली त्रितयपर्वसु चाप भागे ॥
 अंगुष्ठ तर्जनीकया क्रमशः कराभ्याम् ।
 बिन्यस्य हस्तयुगलं मुकुली करोमि ॥

यहाँ पर दोनों हाथों को मिलाकर मुकुलित करे अर्थात् हाथ जोड़े और हाथ जोड़े जोड़े ही निम्नलिखित मंत्र के अनुसार अङ्गन्यास (अङ्ग रक्षण) करे अर्थात् जिस स्थान का नाम प्राया है उस स्थान का स्पर्श करे ।

ॐ ह्रीं गमो अरहंताणं स्वाहा । ॐ ह्रीं गमो सिद्धाणं स्वाहा ।
 ॐ ह्रूं गमो आइरियाणं स्वाहा । ॐ ह्रौं गमो उवज्झायाणं स्वाहा ।
 ॐ ह्रः गमो लोए सव्व साहणं स्वाहा । (करन्यास मंत्रः)
 ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः वं म ह सं तं पं अ सि आ उ सा स्वाहा ।

(हस्त द्वय मुकुलीकरण मंत्रः)

अहं नाथस्य मंत्र हृदय सर सिजे सिद्ध मंत्रं ललाटे ।
 प्राच्यामाचार्य मंत्रं पुनर्वंदुवटे पाठकाचार्य मंत्रं ॥
 वामे साधो स्तुति मे शिरसि पुनरिमानं स योनीभिदेशे ।
 पार्श्वार्भ्यां पंच शून्यैः सह कवच शिरोऽङ्गन्यास रक्षा करोमि ॥

ॐ ह्रां गमो अरहंताणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (हृदय कवचं)
 ॐ ह्रीं गमो सिद्धाणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (मुखम)
 ॐ ह्रूं गमो आइरियाणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (दक्षिणभाग)
 ॐ ह्रौं गमो उवज्झायाणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (पृष्ठागम)
 ॐ ह्रः गमो लोए सव्वसाहणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (वामाग)
 ॐ ह्रां गमो अरहंताणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (ललाट भाग)
 ॐ ह्रीं गमो सिद्धाणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (उर्ध्वभाग)
 ॐ ह्रूं गमो आइरियाणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (शिरो दक्षिण भाग)
 ॐ ह्रौं गमो उवज्झायाणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (शिरो अपर भाग)
 ॐ ह्रः गमो लोए सव्वसाहणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (शिरो वाम भाग)
 ॐ ह्रां गमो अरहंताणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (दक्षिण कुक्षं)
 ॐ ह्रीं गमो सिद्धाणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (वाम कुक्षं)
 ॐ ह्रूं गमो आइरियाणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (नाभि प्रदेशं)
 ॐ ह्रौं गमो उवज्झायाणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (दक्षिण पार्श्वं)
 ॐ ह्रः गमो लोए सव्वसाहणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (वाम पार्श्वं)

इति अङ्गन्यास

विन्यस्य करतर्जण्यां, पंच ब्रह्म पदावलि ।

बध्नामि स्वात्मरक्षायै, कूट शून्याक्षरैर्विशः ॥

नीचे लिखे मंत्रों से दिशा बंधन करे ।

ॐ क्षां ह्रां पूर्व । ॐ क्षीं ह्रीं अग्नी । ॐ क्षीं ह्रीं दक्षिणे । ॐ क्षं ह्रं नेत्रते । ॐ क्षं ह्रं पश्चिमे ।
ॐ क्षौं ह्रौ वायव्ये । ॐ क्षौं ह्रौ उत्तरे । ॐ क्षं ह्रं ईशाने । ॐ क्षः ह्रः भूतले । ॐ क्षीं ह्रीं
उद्ध । ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते समस्त दिग्बध्नं करोमि स्वाहा ।

ऊपर लिखे मंत्रों से क्रम क्रम पूर्वक एक-एक दिशा में तर्जनी अंगुली घुमावे । तर्जनी
अंगुली पर अ सि आ उ सा केशर से लिखे, दाएं हाथ की तर्जनी पर लिखना चाहिए ।

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं अहंद्ध्यो नमः ।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धेभ्यो नमः ।

परमात्म ध्यान मंत्र का यहाँ ध्यान करे ।

जिनेन्द्र पादाक्षित सिद्ध शेषणा ।

सिद्धार्थ दवायिव चंदनाक्षतान् ॥

उपासकानामपि मूर्ध्नि निक्षिपन् ।

करोमि रक्षां मम शान्ति का नाम् ॥

ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा ।

इस मंत्र से पुष्प या पीली सरसों की ७ बार मंत्रित करे और सब दिशा में फेंके । तथा
मंत्र बोलते हुए सब दिशाओं में ताली बजावे व तीन बार चुटकी बजावे ।

सिद्धार्थानभिर्मंत्रितान्सह्य वेरादाय यज्ञ क्षितौ ।

स्वां विद्यामभिरक्षणाय, जगतां शान्त्यं सतां श्रेयसे ॥

सर्वासु प्रचुरान् दिशामु, पर विद्याछेदनार्थं ।

किराभ्यर्हत्याग विधि, प्रसिद्ध कलि कुंडाख्येन मंत्रेण च ॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री कलि कुंड स्वामिन् स्फा स्फी स्फूं स्फे स्फै स्फो स्फं स्फः
हूं क्षूं फट् इतीन् धातय धातय विघ्नान् स्फोटय स्फोटय । पर विद्यां छिन्द छिन्द आत्म
विद्या रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा ।

इस मन्त्र से जो और सरसों मंत्रित कर दाहिनी दिशा में डालें ।

इत्थं सदैव सकलीकरणं यथाव ।

तस सदैव सकलीकरणं यथाव ।

त्सं भाव्यतिमशेष मलंघ्य शक्तिः ।

भूतो रागादि विष क्लिप्तिष दुःख मुपं ।

निर्जित्य निश्चय सुखान्यनु भूयतेऽसौ ॥

॥ इति सकलीकरण ॥

मन्त्र साधन की विधि

- ॥ १ ॥ जो पुरुष मन्त्र साधन के लिए जिस किसी स्थान में जावे, प्रथम उस क्षेत्र के रक्षक देव से प्रार्थना करे कि मैं इस स्थान में, इतने काल तक ठहरूँगा, तब तक के लिए आज्ञा प्रदान करो, और किसी प्रकार का उपसर्ग होवे तो निवारियों—क्योंकि, हमारे जैन मुनि भी जब कहीं किसी स्थान में जाकर ठहरते हैं तो उनके रक्षक देव को कहते हैं कि इतने दिन तक तेरे स्थान में ठहरने में क्षमा भाव रखियो। इस वारते गृहस्थियों का अवश्य ही उपरोक्तानुसार रक्षक देव से आज्ञा लेनी चाहिये।
- ॥ २ ॥ जब मन्त्र साधन करने के वास्ते जावो तब जहाँ तक हो ऐसे स्थान में मन्त्र सिद्ध करो जहाँ मनुष्यों का गमनागमन न हो जैसे अपने जैन तीर्थ, मागी तुङ्गाजी, सिद्ध वर कूट, रेवा नदी के तट पर या सोनागिरीजी या और जो अपने जैन तीर्थ एकान्त स्थान में है, या खगोचो के मकानों में, पहाड़ी में तथा नदी के किनारे पर या निहत्त स्थान में, ऐसे स्थानों में मन्त्र सिद्ध करने को जाना चाहिये। जब उस स्थान में प्रवेश करो, वहाँ ठहरो तो मन, वचन, काय में उस स्थान का जो रक्षक देव या यक्ष आदि है उसका योग्य विनय मुख में यह उच्चारण करे कि हे इस स्थान के रक्षक देव मैं, अपने इस कार्य की सिद्धि के वास्ते तेरे स्थान में रहने के लिये आया हूँ तेरी रक्षा का आश्रय लिया है, इतने दिनों तक मैं तेरे स्थान में रहने के लिये आया हूँ, तेरी रक्षा का आश्रय लिया है, इतने दिनों तक निवाम के लिये आज्ञा प्रदान कीजिये। अगर मेरे ऊपर किसी तरह का सकट, उपद्रव या भय आवे तो उसे निवारण कीजिये।
- ॥ ३ ॥ जब मन्त्र साधन करने जावो तो एक नौकर साथ ले जाओ, जो रसोई की वस्तु लाकर, रसोई बनाकर तुमको भोजन करा दिया करे। तुम्हारा धोती-दुपट्टा धो दिया करे, जब तुम मन्त्र साधन करने बैठो, तब तुम्हारे सामान की चौकनी रखे।
- ॥ ४ ॥ जो मन्त्र साधन करना हो पहले विधि पूर्वक जितना-जितना हर दिन जप सके उतना हर दिन जप कर सवा लाख पूरा कर मन्त्र साधना करे, फिर जहाँ काम पड़े उसका जप जितना कर सके १०८ बार या २१ बार या जैसा मन्त्र में लिखा हो, उतनी बार जपने में कार्य सिद्ध होवे। मन्त्र शुद्ध अवस्था में जपे। शुद्ध भोजन खाये। और मन्त्र में जिस शब्द के दो-दो का अंक हो उस शब्द का दो बार उच्चारण करे।

मन्त्र जाप करने की विधि का कोष्टक

१	शान्ति कर्म	पौष्टिक कर्म	वश्य कर्म	आकर्षक कर्म	स्तम्भन कर्म	मारण कर्म
२	पश्चिम दक्षिण दिशा	नैऋत्य दिशा	कुबेर दिशा	दक्षिण यम दिशा	पूर्वाभिमुख	ईशानविक
३	अर्द्ध रात्रि	प्रभात काल	पूर्वाह्न काल	पूर्वाह्न काल	पूर्वाह्न काल	सन्ध्या काल
४	ज्ञान मुद्रा	ज्ञान मुद्रा	सरोज मुद्रा	अकुश मुद्रा	शंख मुद्रा	वज्र मुद्रा
५	पर्यङ्कासन	पद्मजासन	स्वस्तिकासन	दण्डासन	बध्नासन	भद्रासन
६	स्वाहा पल्लव	स्वधापल्लव	वषट् पल्लव	वौषट् पल्लव	ठ ठ पल्लव	घं घं पल्लव
७	श्वेत वस्त्र	श्वेत वस्त्र	अरुण पुष्प	उदयांक वस्त्र	पीत वस्त्र	कृष्ण वस्त्र
८	श्वेत पुष्प	श्वेत पुष्प	रक्त वर्ण	अरुण पुष्प	पीत पुष्प	कृष्ण पुष्प
९	श्वेत वर्ण	श्वेत वर्ण	रक्त वस्त्र	उदयांक वर्ण	पीत वर्ण	कृष्ण वर्ण
१०	पूरक योग	पूरक योग	पूरक योग	पूरक योग	कुम्भक योग	रेचक योग
११	दीपन आदि नाम	दीपन आदि नाम	सम्पुट आदि मध्य नाम	ग्रन्थन वरुणा तरित नाम	विदमोश्च मध्य नाम	रोधन आदि मध्य नाम
१२	शफाटिक मणि	मुक्ता मणि	प्रवाल मणि	प्रवाल मणि	स्वर्ण मणि	पुत्रजीवा मणि
१३	मध्यमांगुली	मध्यमांगुली	अनामिका	कनिष्ठिका	कनिष्ठिका	तर्जनीगुली
१४	दक्षिण हस्त	दक्षिण हस्त	वाम हस्त	वाम हस्त	दक्षिण हस्त	दक्षिण हस्त
१५	वाम वायु	वाम वायु	वाम वायु	वाम वायु	दक्षिण वायु	दक्षिण वायु
१६	शरद ऋतु	हेमन्त ऋतु	वसन्त ऋतु	वसन्त ऋतु	वसन्त ऋतु	शिशिर ऋतु
१७	जल मण्डल मध्य	जल मण्डल	जल मण्डल	अग्नि मण्डल	पृथ्वी मण्डल	वायु मण्डल
१८	अर्द्ध रात्रि	प्रभात काल	पूर्वाह्न काल	पूर्वाह्न काल	पूर्वाह्न काल	सन्ध्या काल

नोट - प्रत्येक दिन में २॥ घड़ी २॥ घड़ी क्रमशः छोटी ऋतु समझना ।

- ॥ ५ ॥ जब मन्त्र जपने बैठे, पहले रक्षा-मन्त्र सकलीकरण कर अपनी रक्षा कर लिया करे, ताकि कोई उपद्रव अपने जाप्य में विघ्न न डाल सके। अगर रक्षा-मन्त्र जप कर मन्त्र जपने बैठे तो साँप, बिच्छू, भेड़िया, रीछ, शेर, बकरा उसके बदन को न छू सके—दूर ही रहे। मन्त्र पूर्ण होने पर जो देव-देवी माप बगैरह बनकर उसको डराने आवे तो जो रक्षा मन्त्र जप कर जाप करने बैठे उसके अंग को वह छू नहीं सके—सामने से ही डरा सके। जब मन्त्र पूर्ण होने को आवे तब देव पूर्ण देवी विज्रिया से माँप बगैरह डराने आवे तो डरे नहीं। चाहे प्राण आवे तो डरे नहीं तो मन्त्र मिट्ट होय ! मनोकामना पूर्ण होय। यदि बिना मन्त्र रक्षा के [रक्षा-मन्त्र के] जपने बैठे तो पागल हो जाय। इस वारते पहले रक्षा-मन्त्र जप कर, पश्चात् दूसरा मन्त्र जपना चाहिये।
- ॥ ६ ॥ मन्त्र जहाँ तक हो सके श्रीराम ऋतु में करना चाहिये ताकि धोती दुपट्टा में सर्दी न लगे। मन्त्र मिट्ट करने में धोती दुपट्टा दो ही कपडे रखे। वे कपडे शुद्ध हो, उनको पहने हुये पाखाने नहीं जावे, खाना नहीं खावे, पेगाब नहीं जावे, सोवे नहीं, जब जप कर चुके तो उन्हें अलग उतार कर रख देवे, दूसरे वस्त्र पहन लिया करे, यह वस्त्र नित्य हर दिन स्नान कर बदन पौछ कर पहना करे। यह वस्त्र सूत के पवित्र वस्तु के हो। ऊन, रेशम बगैरह अपवित्र वस्तु के न हो। स्त्री सेवन न करे। गृह कार्य छोड़कर एकान्त में मन्त्र जा मिट्ट करे।
- ॥ ७ ॥ मन्त्र में जिस रंग की माला लिखी हो उसी रंग का आसन यानि बिस्तर आदि। धोती दुपट्टा भी उसी रंग का हो। ना और भी श्रेष्ठ है, यदि माला उसी रंग की न होवे तो मूल की माला उस रंग की रंग लेवे। जब मन्त्र जपने बैठे तो इतनी बातों का ध्यान रहे।
- ॥ ८ ॥ पहले सब काम ठीक करके मन्त्र जपे।
- ॥ ९ ॥ आसन सबसे अच्छा डाभ का लिखा है, या सफेद या पीला या लाल—जैसा जिस मन्त्र में चाहिये वैसा लिखावे।
- ॥ १० ॥ ओढ़ने की धोती-दुपट्टा सफेद उम्दा हो या जिस रंग का जिस मन्त्र में चाहिये। वैसा हो।
- ॥ ११ ॥ शरीर की शुद्धि करके परिणाम ठीक करके धीरे-धीरे तमन्नी के साथ जाप्य करे, अक्षर शुद्ध पढ़े।
- ॥ १२ ॥ मन्त्र पद्यासन में बैठकर जपे। जिस प्रकार हमारी वैठी हुई प्रतिमाओं का आसन होता है, वीया हाथ गोद में रखकर दाहिने हाथ में जपे। जो मन्त्र बाये हाथ में जपना लिखा हो तो वहाँ दाहिना हाथ (गोद) में रखकर बाये हाथ में जपे।
- ॥ १३ ॥ जहाँ स्वाहा लिखा हो वहाँ धूप के साथ जपे यानि धूप आगे रहे।

॥१४॥ जहाँ दीपक लिखा हो, वहाँ घी का दीपक आगे जलाना चाहिये ।

॥१५॥ जिस-जिस अंगुली से जाप्य लिखा हो उन्ही अंगुली और अंगूठे से जाप्य जपे । अंगुलियों के नाम आगे लिखे हैं--

अंगुलियों के नाम :-

अंगूठे को अंगुष्ठ कहते हैं ।

अंगूठे के साथ को अंगुली को तर्जनी कहते हैं ।

तीसरी बीच की अंगुली को मध्यमा कहते हैं ।

चौथी यानि मध्यमा के पास की अंगुली को [अंगुष्ठ से चौथी को] अनामिका कहते ।

पाँचवी सबसे छोटी अंगुली को कनिष्ठा कहते हैं ।

अंगुष्ठेन तु मोक्षार्थं धर्मार्थं तर्जनी भवेत् ।

मध्यमा शान्तिकं ज्ञेया सिद्धिं लाभायनामिका ॥१॥

जाप्य विधि में मोक्ष तथा धर्म के वास्ते अंगुष्ठ के साथ तर्जनी से, शान्ति के लिये मध्यमा तथा सिद्धि के लिये अनामिका अंगुली से जाप्य करे ।

कनिष्ठा सर्वं सिद्धार्थं एतत् स्याज्जाप्य लक्षणम् ।

असंख्यातं च यज्जप्तं तत् सर्वं निष्फलं भवेत् ॥२॥

कनिष्ठा सर्वं सिद्धि के वास्ते अंगुष्ठ है, ये जाप के लक्षण जाने बिना मर्यादा किया हुआ मंत्र जाप्य निष्फल होता है अर्थात् किसी मन्त्र का २१ बार जाप्य लिखा है तो वहाँ २१ से कम या अधिक जाप्य नहीं करना, ऐसा करने से वह निष्फल होता है । मन्त्र सिद्ध नहीं होता ।

अंगुल्यग्रेण यज्जप्तं यज्जप्तं मेहलंघने ।

व्यपचित्तेन यज्जप्तं तत् सर्वं निष्फलं भवेत् ॥३॥

अंगुली के अग्र भाग से जो जाप किये जायें तथा माला के ऊपर जो तीन दाने मेरू के हैं, उनको उल्लंघन करके जो जाप्य किया जाय तथा व्याकुल चित्त से जो जाप्य किया जाय वह मंत्र निष्फल होता है ।

माला सुपंचवर्णानां सुमाना सर्वं कार्यदा ।

स्तम्भने बुष्टसंवासे जपेत् प्रस्तरककंशान् ॥४॥

सब कार्यों में पाँचों वर्णों के फूलों की माला श्रेष्ठ है, परन्तु दुष्टों को डराने में तथा स्तम्भन करने व कीलने में कठोर (सक्त) वस्तु के मणियों की माला से जाप्य करें।

धर्मार्थी काममोक्षार्थी जपेद् वं पुत्र जोविकाम् । (स्त्रजम्)

शान्तये पुत्र लाभाय जपे दुत्तममालिकाम् ॥५॥

मन्त्र साधन करने वाला धर्म के लिये तथा काय और मोक्ष के लिये तथा शान्ति के लिये और पुत्र प्राप्ति के वास्ते मोती आदि की उत्तम माला से जाप्य करें। शान्ति से यह तात्पर्य है कि जैसे रोगी आदि के लिये रोग की शान्ति करना या दैवी वगैरह किर्ग का उपद्रव हो उसकी शान्ति करना। अन्य कानों में नीचापोना की माला से जाप्य करें।

शान्ति अर्द्धरात्रि बारुणि दिक् ज्ञानमुद्रापंकजासन ।

मौक्तिकमालिका स्वच्छे स्वेते पृ० चं० आ० ॥६॥ स्वरे

शान्ति के प्रयोग में मन्त्र जाप्य करने वाला आधी रात के समय पश्चिम दिशा की ओर मुख करके ज्ञान-मुद्रा सहित कमलासन युक्त मोतियों की माला से स्वच्छ स्वेत वाण योग पूरक च० आ० का उच्चारण करना हुआ जाप्य करें।

स्तम्भनं पूर्वाह्णे वज्रासने पूर्वदिक् शंभुमुद्रा ।

स्वर्णमणिमालिका पीताम्बर वर्ण ठः ठः ॥७॥

स्तम्भन [रोकना तथा कीलना] के प्रयोग में पूर्वाह्न अर्थात् दुपहर से पहले काल में वज्रासनयुक्त पूर्व दिशा की तरफ मुख करके स्वर्ण के मणियों की माला से पीले रंग के वस्त्र पहने हुये ठ ठ पल्लव उच्चारण करना हुआ जाप्य करें।

शत्रूच्चाटने च रुद्राक्ष विद्वेवारिष्टजंनजा ।

स्फाटिकी सूत्रजामाला मोक्षार्थानां (थीनां) तू निर्मला ॥८॥

दुश्मन का उच्चाटन करने के लिये रुद्राक्ष की माला, बैर में जिया पोते की माला, मोक्षार्थानामां को स्फाटिक मणि की तथा सूत्र की माला श्रेष्ठ है।

उच्चाटनं वायव्यदिक् अपराह्णकाल कुक्कुटासन ।

प्रवालमालिका धूम्रा च फटित् तर्ज न्यगुष्ठयोगेन ॥९॥

उच्चाटन इसके प्रयोग में वायव्य कोण [पश्चिम और उत्तर के बीच में] की तरफ मुख करके अपराह्न [दुपहर के बाद] में कुक्कुटासनयुक्त मूँगे की माला से धुँवे के रंग व फट पल्लव लगाकर अँगूठा और तर्जनी में जाप्य करें।

वशीकरणे पूर्वाह्णे स्वस्तिकासन उत्तरदिक् कमलमुद्रा ।

विद्रुममालिका जपा कुमुम वर्ण वषट् ॥१०॥

वशीकरण अर्थात् वश में करना [अपने अधीन करना] इसके प्रयोग में पूर्वाह्न, दोपहर के पहले काल में स्वस्तिकासन युक्त उत्तर दिशा की तरफ मुख करके कमल मुद्रा सहित मूँगे की माला से जपे । कुमुदवर्ण वषट्पल्लव उच्चारण करता हुआ जाप्य करे ।

आसन डाब रक्त वर्ण यन्त्रोद्धार ! रक्त पुष्प वाम हस्तमे डाब के आसन पर बैठ कर लाल कपड़े सहित यन्त्रोद्धार लाल फूल रखता हुआ बाये हाथ से जाप्य करे ।

आकृष्टि पूर्वाह्न दण्डासनं अंकुश मुद्रा दक्षिणदिक् ।

प्रबालमाला उदयार्कवर्ण वीषट् स्फुट अंगुष्ठमध्यमाभ्यन्तु ॥

आकृष्टि—बुलाना इसके प्रयोग में पूर्वाह्न (दोपहर से पहले) काल में दण्डासनयुक्त अंकुश मुद्रा—सहित दक्षिण दिशा की तरफ मुख करके मूँगे की माला से उदयार्कवर्ण वीषट उच्चारण करता हुआ अंगुष्ठ और बीच की अंगुली से जाप्य करें ।

निषिद्धसन्ध्यासमय भद्र पीठासन ईशानदिक् वज्रमुद्रा ।

जीवापोतामालिका धूप बहुभ कनिष्ठांगुष्ठयोगेन ॥

निषिद्ध कर्म या मारग कर्म समय में भद्र पीठासन युक्त ईशान [उत्तर और पूर्व दिशा के बीच] की तरफ मुख करके वज्र—मुद्रा युक्त जीवापोता माला से धूप खेता हुआ या होम करता हुआ अंगुष्ठ और कनिष्ठा से जाप करे ।

नोट — जो वगैर रक्षा—मन्त्र जप के मन्त्र साधन करते हैं अक्सर व्यन्तरी में डराये जाकर अधबीच में मन्त्र साधन छोड़ देने में पागल हो जाते हैं इसलिये जब कोई मन्त्र सिद्ध करने बैठे तो मन्त्र जपना आरम्भ करने से पूर्व इनमें से कोई रक्षा—मन्त्र जरूर जप लेना चाहिये । इससे मन्त्र साधन करने में कोई उपद्रव नहीं हो सकेगा और कोई व्यन्तर वगैरह रूप बदल कर ध्यान में विघ्न नहीं डाल सकेगा । कुण्डली के मन्दर आ नहीं सकेगा ।

इन मन्त्रों का जाप्य भगवान की वेदी के सामने करना चाहिए या देव स्थान में जाप्य करना चाहिये या घर में एकान्त स्थान में जाप्य करे । किन्तु घर में होम और पृथाहवाचन करके एमोकार मन्त्र का चित्र और जिनेन्द्र भगवान का चित्र, दीप और धूपदानी समक्ष रख कर, ग्रामन पर बैठकर और शुद्ध वस्त्र पहनकर जाप्य करे । उम स्थान पर बच्चों आदि का उपद्रव या शोर नहीं होना चाहिए । मन्त्र की जाप्य अत्यन्त शुद्ध, भक्ति के साथ करनी चाहिए । मन्त्र में किसी प्रकार की आकुलता, चिन्ता, दुःख, शोक आदि भावनाएँ नहीं रहनी चाहिए । जाप्य करते समय मन को स्थिर रखना चाहिए पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके जाप्य देनी चाहिए । जाप्य में बैठने से पहले समय की मर्यादा कर लेनी चाहिए । पद्यासन से बैठना चाहिए, मीन रखना चाहिए । जितने दिन जाप्य कर, उतने दिन एकाशन, किसी रस का त्याग, वस्त्र आदि का परिमाण करे । जमीन, चटाई या तहते पर सोवें, जाप्य समाप्त होने

तक ब्रह्मचर्य व्रत रखें मन्त्र की जाप्य पुष्प हस्त और मल आदि शुभ नक्षत्रों में आरम्भ करना चाहिये। सुबह दोपहर और शाम को जाप्य करें। सुबह ५ बजे उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र पहन कर जाप्य दें। श्वेत वस्त्र पहने। यदि घर में जाप्य करनी ही तो भगवान का दर्शन-पूजन करने के पश्चात् करनी चाहिए। दोपहर को शुद्ध वस्त्र पहनकर तथा सध्या को मन्दिर में दर्शन करने के पश्चात् शुद्ध वस्त्र पहनकर जाप्य करें।

जाप्य तीन प्रकार का होता है

मानसिक, वाचनिक (उपाशुक) और कायिक।

मानसिक जाप : मन में मन्त्र का जप करना यह कार्य सिद्धि के लिए होता है।

वाचनिक जाप :- उच्च स्वर में मन्त्र पढ़ना, यह पुत्र प्राप्ति के लिए होता है।

कायिक जाप :- बिना बोले मन्त्र पढ़ना, जिसमें होंठ हिलते रहे। यह धन प्राप्ति के लिए होता है या किया जाता है।

इन तीनों जाप्यों में मानसिक जाप्य श्रेष्ठ है जाप उगलियों पर या माला द्वारा करना चाहिये। माला चाहे मूल को हो या स्कटिक, सोना, चांदी या माती आदि की हो सकती है।

विश्व शान्ति के लिए आठ करांड आठ लाख आठ हजार आठ सौ आठ जाप करें। कम से कम दान लाख जाप करें। यह जाप निरन्तर होकर निरन्तर करे, मूलक पातक में भी छोड़ नहीं। विश्व शान्ति जाप के लिए दिनों का प्रमाण कर लेना चाहिए।

पुत्र प्राप्ति, नवग्रह शान्ति, रोग-निवारण आदि कार्यों के लिए एक लाख जाप करें। आत्मिक शान्ति के लिए सदा जाप करें। दिनों का कोई नियम नहीं है। स्थियों को रजस्वला होने पर भी जाप करते रहना चाहिए, स्नान करने के पश्चात् मन्त्र का जाप्य मन में करे, जोर से नहीं बोले और माला भी काम में न ले।

जप पूर्ण होने पर भगवान का अभिषेक करके यथा शक्ति दान पुण्य करें।

आसन-विधान

बाँप की चटाई पर बैठकर जाप करने से दग्ध हो जाता है, पाषाण पर बैठकर जाप करने से व्याधि पीड़ित हो जाता है। भूमि पर जाप्य करने से दुःख प्राप्त होता है, पट्टे पर बैठकर जाप करने से दुर्भाग्य प्राप्त होता है, धाम की चटाई पर बैठकर जाप करने से अपयश प्राप्त होता है, पत्तों के आसन पर बैठकर जाप करने से भ्रम हो जाता है, कथरी पर बैठकर जाप करने से मन चंचल होता है, चमड़े पर बैठकर जाप करने से ज्ञान नष्ट हो जाता है, कंबल पर बैठकर जाप करने से मान भंग हो जाता है। नीले रंग के वस्त्र पहनकर जाप करने से बहुत दुःख हो जाता है। हरे रंग के वस्त्र पहनकर जाप करने से मान भंग हो जाता है। श्वेत वस्त्र पहन कर जाप करने से यश की वृद्धि होती है। पीले रंग के वस्त्र पहन कर जाप

करने से हर्ष बढ़ता है। ध्यान में लाल रंग के वस्त्र श्रेष्ठ हैं। सर्व धर्म कार्य सिद्ध करने के लिए दर्भासन (डाव का आसन) उत्तम है।

गृहे जपफलं प्रोक्त वने शत गुणं भवेत् ।

पुष्पारामे तथारण्ये सहस्र गुणितं मतम् ।

पर्वते दश सहस्रं च नद्यां लक्ष मुदाहृतम् ।

कोटि देवालये प्राहुरनन्तं जिन सन्निधौ ॥

अर्थात् घर में जो जाप का फल होता है उससे सौ गुना फल वन में जाप करने से होता है। पुष्प क्षेत्र तथा जंगल में जाप करने से हजार गुणा फल होता है। पर्वत पर जाप करने से दस हजार गुणा, नदी के किनारे जाप करने से एक लाख गुणा, देवालय (मन्दिर) में जाप करने से करोड़ गुणा और भगवान के समीप जाप करने से अनन्त गुणा फल मिलता है।

अंगुली-विधान

अंगुष्ठ जपो मोक्षाय, उपचारे तु तर्जनी

मध्यमा धन सोहयाय, शान्त्यर्थं तु अनामिका ।

कनिष्ठा सर्व सिद्धि वा तर्जनी शत्रू नाशाय ।

इत्यपि पाठान्तरोऽस्ति हि ।

मोक्ष के लिए अंगुष्ठ से जाप करे, उपचार (व्यवहार) के लिए तर्जनी से, धन और सुख के लिये मध्यमा अंगुलि से, शान्ति के लिए अनामिका से और सब कार्यों की सिद्धि के लिए कनिष्ठा से जाप करे। पाठान्तर से कही शत्रु नाश के लिए तर्जनी अंगुली से जाप करे।

माला-विधान

दुष्ट या व्यंतर देवों के उपद्रव दूर करने, स्तम्भन विधि के लिए, रोग शान्ति के लिए या पुत्र प्राप्ति के लिये मोनी की माला या कमल बीज माला से जाप करने चाहिये। शत्रु पञ्चाटन के लिए रुद्राक्ष की माला, सर्व कर्म के लिए या सर्व कार्य की सिद्धि के लिए पंच वर्ण के पुष्पों से जाप करने चाहिये। हाथ की अंगुलियों पर जाप करने से दस गुना फल मिलता आँवने की माला पर जाप करने से सहस्र गुना फल मिलता है। लीग की माला से पाँच हजार गुणा, स्फटिक की माला पर दस हजार गुणा, मोतियों की माला पर लाख गुणा, कमल बीज पर दस लाख गुणा, मोने की माला पर जाप करने से करोड़ गुणा फल मिलता है। माला के साथ भाव जुद्धि विशेष होनी चाहिये।

मन्त्र शास्त्र में अकडम चक्र का प्रयोग

अथ अकडम चक्र प्रयोग—

नाम पुरुष के नाम के पहले अक्षर से मन्त्र के नाम अक्षर तक गिनना। मन्त्र सिद्ध असिद्ध देखे।

अर्थ :—पुरुष के नामाक्षर तक गिनाई पहले सिद्ध, विजई साध्य, तीजई सु सिद्ध, चउ अरि शत्रुता इणी।

अ. ठ कं. ट व. ड	अ क ड म	जा. ल द. य इ. ग ण. र
	म. क ड. म	
ऊ. ऊ र. ज न. ष	र. ध. ध. ष	उ. ड. घ. ज क. ष

अनुक्रम से बारह स्थान कूँ जो बारह कोठे है उनमें गिनकर शुभ अशुभ सिद्ध असिद्ध देखो। १-५-९ कोठा के अक्षर आवे तो देर से सिद्ध, २-६-१० कोठा के अक्षर सिद्ध हो या न भी हो, ३-७-११ कोठा के अक्षर जल्दी सिद्ध हो, ४-८-१२ कोठा के अक्षर शत्रुता कार्य न हो।

प्र. ऊ ह. उ क. ड	ट ब अ अं	ठ. म आ. ज. इ. म इ. क
र. ज न. स	ज. क ड. म	इ. ख व. य
क. ए म. क ऋ. ऋ	ऋ. उ. घ. व	र. उ ग. ज क. ल

मन्त्र साधन मूहूर्त का कोष्टक

नक्षत्र	उत्तरा०-ह०-अश्वि०-म०-वि०-शु०
वार	र०-सो०-बु०-गु०-शु०
तिथि	२।३।५।७।१०।११।१३।१५

इस कोष्टक को देखकर, पचाइस से मिलान कर मन्त्र साधन करने का मूहूर्त देख लेना चाहिये, तब मन्त्र साधना की ओर अग्रसर हो, नहीं तो सफलता नहीं मिलेगी।

॥ ० ॥

मन्त्र सिद्ध होगा या नहीं उसको देखने की विधि

जिस मन्त्र की साधना करना हो उस मन्त्र के अक्षरों को ३ से गुणा करे, फिर अपने नाम के अक्षरों को और मिला देवे, उस संख्या में १२ का भाग देवे, शेष जो रहे, उसका फल निम्नानुसार जाने :—

५-६ बाकी बचे तो मन्त्र सिद्ध होगा।

६-१० बचे तो ढेर से सिद्ध होगा।

७-११ बचे तो अच्छा होगा।

८-१२ बचे तो सिद्ध नहीं होगा।

कोई मन्त्र अगर अपने नाम से मिलाने पर ऋणी या धनी आता हो, तो उस मन्त्र के आदि में ॐ ही श्री बली इनमें से कोई भी बीज मन्त्र के साथ जोड़ देने पर मन्त्र अवश्य सिद्ध हो जायगा।

॥ ० ॥

मन्त्र जपने के लिये आसन

पर्यासन .— इसे मुखामन भी कहते हैं। दोनों जघाओं के नीचे का भाग पाँव के ऊपर करके बैठे यात्रि पालथी मार कर बैठे और दाहिना व बायाँ हाथ नाभि कमल के पास ध्यान मुद्रा में रखें।

बीरासन :—दाहिनी पैर बायीं जंघा पर व बायाँ पैर दाहिनी जंघा पर रख कर स्थिरता से बैठें।

वज्रासन :— वीरासन की मुद्रा में पीठ की तरफ से लेकर दाहिने पैर का अंगूठा दाहिने हाथ से और बायें पैर का अंगूठा बायें हाथ से पकड़े तो वज्रासन होता है ।

पद्मासन :— दायाँ पैर बाँयी जघा पर रखे और बायाँ पैर दाँयी जघा पर, एडियाँ परस्पर मिली हों, दोनों घुटने जमीन से स्पर्श न करे तो पद्मासन होता है ।

भद्रासन :— पुरुष चिह्न के घागे पाँव के दोनों तलुये मिलाकर उनके ऊपर दोनों हाथ की अंगुली परस्पर एक के साथ एक करने के बाद दोनों अंगुलियाँ ठोक तरह से दोखती रहे इस प्रकार हाथ जोड़कर बैठना भद्रासन है ।

दण्डासन :— जिस आसन में बैठने से अंगुलियाँ, गुल्फ व जंघा भूमि से स्पर्श करे, इस प्रकार पाँवों को लम्बे कर बैठना दण्डासन कहा जाता है ।

उत्किटिकासन :— गुदा और ऐंड़ी के सयोग से दृढ़ता पूर्वक बैठे तो उत्किटिकासन कहा जाता है ।

गो दोहिकासन :— गाय दुहने को बैठते हैं, उस तरह बैठना, ध्यान करना गो-दोहिकासन है ।

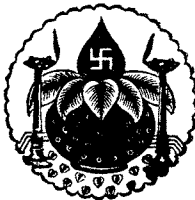
कायोत्सर्गसन — खड़े-खड़े दोनों भुजाओं को लम्बी कर घुटने की तरफ बढ़ाना या बैठे-बैठे काया की अपेक्षा नहीं रख कर ध्यान करना कायोत्सर्गसन कहलाता है ।

मन्त्र शास्त्र में मुद्राओं की विधि

- (१) वाम हस्तस्पोपरिदक्षिणकर कृत्वा कनिष्ठिकागुष्ठाभ्या मणिवध वेष्ट्य शेषांगुलिनां विस्फाग्नि वज्रमुद्रा । [चित्र सं० १]
- (२) पद्माकारो कृत्वा मध्ये अंगुली कार्गिकारो त्रिभ्यम्भेदिति 'पद्ममुद्रा' । [चित्र सं० ५]
- (३) वामहस्ततले दक्षिण हस्तमूल निवेश्य कर शाखा विरलीकृत्य प्रसारयेदिति 'चक्रमुद्रा' [चित्र सं० ७]
- (४) उत्तानहस्तद्वयेन वेगीवध विधाया गुष्ठाभ्या कनिष्ठ तर्जनीभ्या मध्ये मगृह्य अनामिके समीकुर्यातामिति 'परमेष्ठीमुद्रा' ।
- (५) यद्वा करांगुली अर्द्धीकृत्य मध्यमा मध्ये कुर्यादिति 'द्वितीया परमेष्ठी मुद्रा' । [चित्र सं० २०]
- (६) उत्तानो किचिदा कुंचित कर शाखौ पाणी विधाया धारये दिति 'अञ्जुलि मुद्रा' । अथवा पल्लव मुद्रा' । [चित्र सं० ६]

- (७) परस्परभिमुखौ ग्रथितांगुलिकौ करो कृत्वा तर्जनीभ्यामनामिके गृहीत्वा पृथ्वमे प्रसार्य तन्मध्ये अंगुष्ठ द्वय निक्षिपेत् इति (सौम्य मुद्रा) सौभाग्य मुद्रा ॥ ७ ॥
- (८) किचिद्गर्भितौ हस्तौ समौ विधाय ललाट क्षेत्रे योजनेन मुक्तामुक्त मुद्रा ।
- (९) मित्यपराङ्ग मुखौ करो सयोज्यांगुली विद्वद्भ्याम् मधुसूक्तं कव्यपरावर्तनेन 'मुद्गर मुद्रा' ।
- (१०) वामकर सहितंगुलि हृदयाग्रे निवेश्य दक्षिण मुष्टिवद्ध तर्जनीमूर्द्धी कुर्यादिति तर्जनी मुद्रा ॥ १० ॥
- (११) अंगुलीत्रिकं सरलीकृत्य तर्जंयं गुण्ठेमोलयित्वा हृदयाग्रे धार्येदिति प्रदचन मुद्रा ।
- (१२) अन्धोन्त्र ग्रथितांगुलिषु कनिष्ठानामिकयोर्मध्यमा तर्जन्वोश्च सयोजनेन गोस्वनाकार-
धेनुमुद्रा । [चित्र सं० ८१]
- (१३) हस्त तलिकापरि हस्ततिका कार्थीहनि आसन मुद्रा ।
- (१४) दक्षिणांगुष्ठेन तर्जनीमध्यमे समान्धुनर्जन्वयोः मोक्षणेन नाराचमुद्रा ॥
- (१५) करस्थपनेन जन्तुमुद्रा ।
- (१६) वामहस्तपृष्ठापरि दक्षिण हस्त तले निवेशने अंगुष्ठ द्वय चालनेन 'मौन मुद्रा' ।
- (१७) दक्षिणहस्तस्य तर्जनीं प्रसार्य मध्यमा ईषद्वयोः करगे अ कुस मुद्रा । [चित्र सं० ८]
- (१८) वद्धमुष्ण्यो करयोः सलग्नं स मुख्यांगुष्ठयो हृदय मुद्रा । [चित्र सं० १८]
- (१९) नावेवमुष्टी समीकृत्वाङ्गुष्ठः शिरोमिविन्ध्येदिति 'शिरोमुद्रा' ।
- (२०) मुष्टिवद्ध विधाय कनिष्ठमंगुष्ठप्रसारयेत् इति शिवामुद्रा ।
- (२१) पूर्ववत् मुष्टि वत्वा तर्जन्वो प्रसारयेदिति 'कवचमुद्रा' ।
- (२२) कनिष्ठा मंगुष्ठेन सपोद्ग्रयेपांगुली प्रसारयेदिति 'धर्ममुद्रा' ।
- (२३) तत्रदक्षिण करेण मुष्टि वद्ध्वा तर्जनी मध्यमे प्रसारयेत् इति 'अश्व मुद्रा' ।
- (२४) हृदयादीना विन्धास मुद्रा प्रसारितान्मुख्याभ्या हस्ताभ्या पादांगुलि तलान्मस्तकस्पश-
'न्महामुद्रा' ।
- (२५) हस्ताभ्यामजुलि कृत्वा नाभिकामूलं पर्वंगुष्ठ सयोजनेन 'मावाहिनी मुद्रा' ।
- (२६) इयमेवाधोमुखी 'स्थापनी मुद्रा' । [चित्र सं० ११]
- (२७) स तन्मण्डपुच्छितांगुष्ठौ करो 'सखिधानी मुद्रा' । [चित्र सं० १२]
- (२८) तामेवंगुष्ठौ 'निष्ठुरा मुद्रा' एतातिस्र 'अवगाहनादि मुद्रा' ।
- (२९) अन्धोन्त्रग्रथितांगुलीषु कनिष्ठानामिकयोर्मध्यमा तर्जन्वो विस्तारित तर्जन्वा वामहस्त तलचालनेन त्रासनी नेत्राश्रयो 'पूज्यमुद्रा' ।
- (३०) अंगुष्ठे तर्जनी सयोज्य शेषांगुली प्रसारणेन 'पाशमुद्रा' । [चित्र सं० ३]

- (३१) स्वंहस्तोद्ध'गुली वामहस्त मूले तस्यैवांगुष्ठं तिर्यग् विधाय तर्जनी चालनेन 'ध्वजमुद्रा' ।
 (३२) दक्षिण हस्तमुत्तान विधायार्धः कर शाला प्रसारयेदिति 'वरमुद्रा' ।
 (३३) वामहस्तेन मुष्टिं बद्ध्वा कनिष्ठिकां प्रसार्य शेषांगुली रंगुष्ठे न पीडयेदिति 'शंखमुद्रा' ।
 (३४) परस्परभिमुख हस्ताभ्यां वेणी बंधं विधाय मध्यमे प्रसार्य सथोज्य च शेषांगुलिभि-
 र्मुष्टि विधाय 'शक्ति मुद्रा' ।
 (३५) हस्तद्वयेनांगुष्ठं तर्जनीभ्यावल्के विधायपरम्परान् प्रवेशनेन् 'शृ'खला मुद्रा' ।
 (३६) मस्तकोपरीहस्तद्वयेन शिखराकारः कुड्मल क्रियतेस एव मदरमेरु मुद्रा (पद्ममेरु मुद्रा)
 [चित्र सं० ४]
 (३७) वामहस्तमुष्टेरुपरि दक्षिणमुष्टि कृत्वागात्रेणसहकिञ्चिदुन्नामयेदिति 'शदा मुद्रा' ।
 (३८) अधोमुख वामहस्ताङ्गुलीर्घण्टाकाराः प्रसार्यदक्षिणोत्तमुष्टिं बद्ध्वा तर्जनी मूढ्वा कृत्वा
 वामहस्ततलेनियोज्यघण्टावच्चालने न 'घण्टा मुद्रा' ।
 (३९) उन्नतगुष्ठं हस्ताशया सपुट कृत्वा कनिष्ठिकेनित्कास्ययोजयेदिति 'कमण्डलु मुद्रा' ।
 (४०) पत्ताकावत् हस्त प्रसार्य अङ्गुष्ठयोजनेन् 'पद्म मुद्रा' ।
 (४१) ऊर्ध्वदण्डो करौ कृत्वापद्मवत् करशरवाः प्रसारयेदिति 'वृक्ष मुद्रा' ।
 (४२) दक्षिण हस्त सहनांगुलिमृन्मध्य सर्पफणावत् किञ्चिदाकुञ्चयेदिति 'सर्पमुद्रा'
 (४३) दक्षिणकरेणमुष्टिं बद्ध्वा तर्जनी मध्यमे प्रसारयेदिति 'खड्गमुद्रा' ।
 (४४) हस्ताभ्यां सपुट विधायान्गुलीः पद्मवद्विकाम्य मध्यमे परस्पर सथोज्यान्मूलान्नांगुष्ठैः
 कारयेदिति 'ज्वलनमुद्रा'
 (४५) बद्धमुष्टेर्दक्षिण करस्यमध्यमांगुष्ठं तर्जन्याम्नन्मूलान्त्रमेण प्रसारयेदिति 'दण्ड मुद्रा' ।





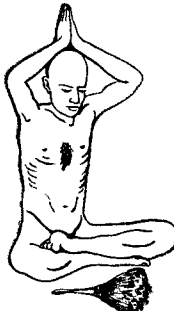
वज्र मुद्रा (चित्र सं० १)



गङ्गा मुद्रा (चित्र सं० २)



पास मुद्रा (चित्र सं० ३)



पचमेरु मुद्रा (चित्र सं० ४)



सरोज मुद्रा (चित्र सं० ५)



मंदकुल मुद्रा (चित्र सं० ६)



वक्क मुद्रा (चित्र सं० ७)



(चित्र सं० ८)



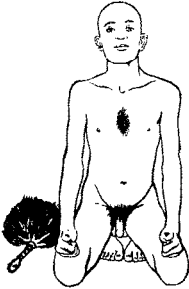
आवाहन मुद्रा सुखामन (पल्लव मुद्रा) (चित्र सं० ९)



स्थभन मुद्रा (शक्त मुद्रा) द्वितीय (चित्र सं० १०)



स्थापन मुद्रा सुखासन (चित्र सं० ११)



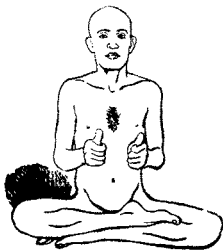
असंनीधिकरण मुद्रा (चित्र सं० १२)



हृदयमुद्रा (चित्र सं० १३)



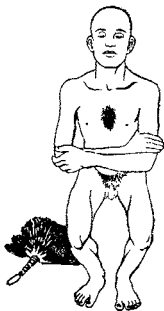
द्वितीय अकुश मुद्रा सुखासन उल्टा (चित्र सं० १४)



और भी अन्य मुद्रा (चित्र सं० १५)



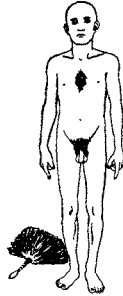
ज्ञानमुद्रा (चित्र सं० १६)



(चित्र सं० १७)



अम्त्र मुद्रा, सिद्धामुखासन (चित्र सं० १८)

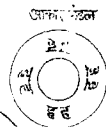
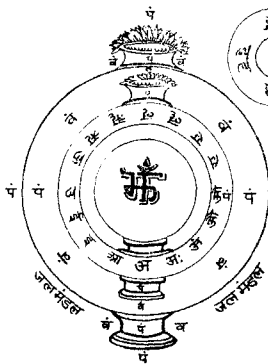
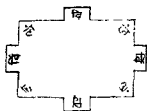
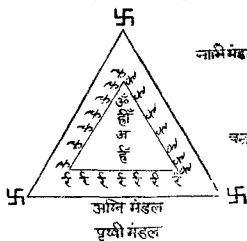


कायोत्सर्ग, अस्त्र मुद्रा (चित्र सं० १९)

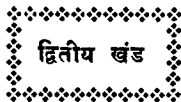


परमेष्ठी मुद्रा (पञ्चगुरुमुद्रा) (चित्र सं. २०) (धेनु) सुरभि मुद्रा, गोस्थानाकार मुद्रा (चित्र सं. २१)

मंत्र जाप के लिये मंडलों का ध्यान मंडलों का नक्शा



लघु विद्यानुवाद



इस खण्ड में

(पृष्ठ २५ से २४७)

स्वर और व्यंजनो के स्वरूप	२५
स्वरो और व्यंजनों की शक्ति	३२
मन्त्र निर्माण के लिये बीजाक्षरों की आवश्यकता एवं उत्पत्ति	३७
ध्वनि (उच्चार) के वर्ण, मन्त्र शास्त्रानुसार, बीजाक्षरों का वर्णन	३८
बीजाक्षर मन्त्र	४१
रक्षा मन्त्र, रोग एवं बन्दीखाना निवारण मन्त्र	४५
अग्नि निवारण मन्त्र	४६
चोर, बेरी निवारण मन्त्र, चोर नाशन मंत्र	
दुश्मन तथा भूत निवारण मंत्र	५०
वाद जीवन मंत्र, विद्या प्राप्ति मंत्र, परदेश लाभ मन्त्र	
शुभा शुभ कहन मंत्र, (वाग्बल मंत्र)	५१
मन चिन्ता इष्ट्य प्राप्ति मन्त्र, सर्व सिद्धि मंत्र	५२
आत्म रक्षा महा सकलीकरण मंत्र तथा	
सर्व कार्य साधक मंत्र	५६
जाप्य मंत्र,	५८
सूर्य मंत्र का खुलासा	
शांति मंत्र, सर्व शांति मंत्र	६०
विभिन्न रोगों व कष्टों के निवारण हेतु ५०८ मंत्र	
विधि सहित	६३
भूत तंत्र विधान ४० मन्त्र विधि सहित	१४६
कुंरगिनी गारुडो विद्या १२ मन्त्र विधि सहित	१५८
शारदा दडक विभिन्न १२० मन्त्र विधि सहित	१६१
सहदेवी कल्प मन्त्र विधि सहित	१८३
लोगस्य कल्प ३२ मन्त्र विधि सहित	१८४
गर्भ स्थंभन मन्त्र ४६ " " "	१८६

❧ अष्ट गंध श्लोक ८ मंत्र विधि सहित	१६५
❧ सर्व शान्ति कर मंत्रोऽयम्, गोरोचन कल्प ११ मन्त्र विधि सहित	१६७
❧ नारी केल कल्प १८ मन्त्र विधि सहित	१६६
❧ मणि भद्रादि क्षेत्रपालों के ३ मंत्र विधि सहित	२०३
❧ अनोत्पादन ४५ मन्त्र विधि सहित	२०४
❧ कलश भ्रामण मंत्र विधि	२११
❧ पद्मावती सिद्धि २७ मंत्र विधि सहित	२१२
❧ जीवन मरण विचार ४० मंत्र विधि सहित	२१७
❧ पुत्रोत्पत्ति के लिए मंत्र, अथ बृहद शान्ति मंत्र	२१६
❧ पद्मावती ब्राह्मणन मंत्र	२२६
❧ पद्मावती माला मंत्र लघु, पद्मावती माला मन्त्र बृहत्	२२७
❧ श्री ज्वाला मालिनीदेवी माला मंत्र	२२६
❧ सरस्वती मंत्र	२३२
❧ शान्ति मन्त्र लघु—शान्ति मंत्र, नव ग्रह जाप्य	२३३
❧ बद्धमान मंत्र	२३६
❧ जिनेन्द्र पंच कल्याणक के समय प्रतिमा के कान में देने वाला सूर्य मन्त्र	२३६
❧ प्रत्येक शासन देव सूर्य मंत्र	२३७
❧ पद्मावती प्रतिष्ठा वा यक्षिणी प्रतिष्ठा सूर्य मन्त्र	
❧ घरणेन्द्र अथवा यक्ष प्रतिष्ठा सूर्य मन्त्र	२३७
❧ गणधर धृत्य से सम्बन्धित ऋद्धि मन्त्र व फल	२३८
❧ अण्डकोष वृद्धि व खाख बिलाई मन्त्र	२४४
❧ मस्सा नाशक मन्त्र, व्रणहर मन्त्र बाला (नहरबा) का मन्त्र, घाव की पीड़ा का मन्त्र	२४५
❧ कर्ण पिशाचिनी देवी एवं क्लीं बीज मन्त्र	२४६
❧ वाक् सिद्धि मन्त्र, दाद का मन्त्र	२४७
❧ भजन, श्री १०८ आचार्य गणधर कुन्धुसागरजी । भारती १०५ गायत्री आयिका विजयमती माताजी	२४८

अथ: द्वितीय मन्त्राधिकार

स्वर और व्यंजनों के स्वरूप

अ : वृत्तासन, हाथी का वाहन, सुवर्ण के समान वर्ण, कुंकुम गंध, लवण का स्वाद, जम्बूद्वीप में विस्तीर्ण, चार मुख वाला, अष्ट भुजा वाला, कांती आँख वाला, जटा मुकुट से सहित, सितवर्ण, मोतियों के आभरण वाला अत्यन्त बलवान, गम्भीर, पुल्लिंग, ऐसा 'अ' कार का लक्षण है।

आ : - पद्मासन, गज, व्याल, वाहन, मितवर्ण, श्व, चित्र-कमल, अंकुश का आयुध है, दो मुख वाला, आठ हाथ वाला, सर्प का भूषण है, जिसको गोभनादि महाद्युति को धारण करने वाला, तीस हजार योजन, विस्तार वाला, स्त्रीलिंग है, जिसका ऐसा 'आ' कार का लक्षण है।

इ - कछुवे का वाहन, चतुरानेन, सुवर्ण जैसा वर्ण, वज्र का आयुध वाला, एक योजन विस्तार वाला, द्विगुणा उत्सेध वाला, कपायला स्वाद वाला, वज्र, वैडूर्य वर्ण के अनकार को धारण करने वाला, मन्द स्वर वाला, और नपुंसक लिंग वाला, और क्षत्रिय है। ये 'इ' कार का लक्षण है।

ई - कुवलय का आसन, वराह का वाहन, मन्द गमन करने वाला, अमृत रस का स्वाद वाला, सुगन्धित, दो भुजा वाला, फल और कमल का आयुध वाला, श्वेत वर्ण वाला, सौ योजन विस्तार वाला, द्विगुणा उत्सेध वाला, दिव्य शक्ति का धारण करने वाला, स्त्रीलिंग वाला। 'ई' कार का लक्षण है।

उ - त्रिकोणा आसन वाला, कोक वाहन, () दो भुजा वाला, मूल गदा के आयुध वाला, धुआँ के वर्ण वाला, कठोर, कड़वा स्वाद वाला, सौ योजन विस्तार वाला, द्विगुणीत उत्सेध वाला, कठोर, वश्याकर्षण वाला ऐसा 'उ' कार का लक्षण है।

ऊ - त्रिकोण आसन वाला, ऊँट का वाहन वाला, लाल वर्ण वाला, कषायला रस वाला, निष्ठुर गंध से सहित, दो भुजा वाला, फल और शूल के आयुध को धारण करने वाला, नपुंसक लिंग वाला, सौ योजन विस्तार वाला है, ऐसा 'ऊ' कार का लक्षण है।

ऋ - ऊँट के समान ऊँट के वर्ण वाला, सौ योजन विस्तार वाला, द्विगुणीत ऊँट के मुख का स्वाद वाला, नाग का आभरण वाला, सर्व विघ्न मय। ऐसा 'ऋ' कार का लक्षण है।

ऋ :—पद्यासन मयूर का वाहन वाला, कपिल वर्ण माला, चार भुजा वाला, सौ योजन विस्तार वाला, द्विगुणित आयाम वाला, मल्ल (चमेली) के गंध जैसा मयूर स्वाद वाला, मुखर्ण के आभरण को धारण करने वाला, नपुंसक लिंग वाला। ऐसा 'ऋ' का लक्षण है।

लृ :—घोड़े का स्वभाव वाला, घोड़े जैसे स्वर वाला, घोड़े के समान रस वाला सौ योजन विस्तार वाला, द्विगुणित आयाम वाला, शूरा का वाहन वाला, चार भुजा वाला, मूसल, अकुस कमल, कोदण्ड, आयुध वाला, कुवलय का आसन वाला, नाग का आभरण वाला, सर्वविघ्नकारि नपुंसक लिंग वाला। ऐसा 'लृ' कार का स्वरूप है।

लृ :—मौलि (मुकुट) मुक्ताओं से सहित और यज्ञोपवित धारण किये हुये, कुण्डलाभरण सहित, दो भुजाओं वाला (कमल की माला से सहित) कमल कुंत (माला) का आयुध से सहित, मल्लिका के गन्ध वाला, पचास योजन विस्तार वाला, द्विगुणित आयाम वाला, नपुंसक, क्षत्रिय, उच्चाटन करने वाला। ऐसा 'लृ' कार का लक्षण है।

ए :—जटा—मुकुट को धारण करने वाला, मौनियों के आभरण वाला यज्ञोपवित पहने हुये, चार भुजा वाला, शल, चक्र, फरसा, कमल के आयुध सहित, दिव्य म्वाद से सहित, मुग्धित से युक्त, सर्व प्रिय शुभ लक्षण से सहित, वृत्तासन को धारण करने वाला, और नपुंसक है। इस प्रकार 'ए' का लक्षण हुआ।

ऐ :—त्रिकोणासन से सहित, गरुड वाहन, दो भुजाओं वाला, त्रिशूल, गदा का आयुध वाला, अग्नि के समान वर्ण वाला, निष्ठुर, गन्ध से सहित, क्षीर के स्वाद वाला, धर्षर स्वर वाला, दस योजन विस्तार वाला, द्विगुणित लम्बावश्य आकर्षण शक्ति वाला। ऐसा 'ऐ' कार का लक्षण है।

ओ :—बैल का वाहन, तपाया हुआ सोना के समान वर्ण वाला, सर्वोयुध से सम्पन्न, लोका लोक में ध्यात, महाशक्ति का धारक, तीन नेत्र वाला, बारह हजार विस्तार वाला, पद्यासन वाला, महाप्रभु, सर्वदेवताओं से पूज्य, सर्व मन्त्र का साधन, सर्व लोक से पूजित, सर्व शान्ति करने वाला, सभी को पालन या नाश करने में समर्थ, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि से सहित, यजमान, आकाश, सूर्य, चन्द्रादि के समान वायं करने वाला, सम्पूर्ण आभरणा में भूषित, दिव्य स्वाद वाला, मुग्धित, सबों का रक्षण करने वाला, जुम देह से सम्पन्न, स्वावर जगम आश्रय से सहित, सर्व जीव दया से सम्युक्त (परम अव्यय) पंच अक्षर से गमित। ऐसा 'ओ' कार का लक्षण है।

औ :—नृत्तासन वाला, कोक (चकवा) वाहन, कुंकुम गन्ध से सम्युक्त पीले वर्ण वाला, चार भुजा वाला, वज्र, पाश के आयुध वाला, कपायला म्वाद वाला, इवेत मान्यादि लेपन से सहित, स्नम्भन शक्ति यन्त्र सौ योजन विस्तार वाला, द्विगुणित आयाम वाला। ऐसा 'औ' कार का लक्षण है।

अ :—पद्यासन, सितवर्ण, निर्लोपल (नीला कमल) गन्ध से सम्युक्त को स्तुभ के

के आभरण से सहित, दो भुजाओं वाला, कमल, पास के आयुध वाला, शुभ गन्ध से सयुक्त यज्ञोपवित को धारण करने वाला, प्रसन्न बुद्धि वाला, मधुर स्वाद वाला, सौ योजन विस्तार वाला, दो गुणित आयाम है जिसका ऐसा 'अ' कार का लक्षण है ।

अः—त्रिकोण आसन वाला, पीले वस्त्र वाला, कुंकुम के समान गन्ध वाला, धूस्र वर्ण वाला, कठोर स्वर वाला, निष्टुर दृष्टि वाला, खारा स्वाद से संयुक्त, दो भुजाओं वाला शूल का आयुध धारण करने वाला, निष्टुर गति वाला, अशोभन आकृति वाला, नपुंसक शुभ कर्म है कार्य जिसका । ऐसा 'अ' कार का लक्षण है ।

क—चतुरस्रासन, चतुरासन भवहृत, पीले वर्ण का मुगन्ध माल्यादि लेपन सहित स्थिर गति वाला, प्रसन्न दृष्टि वाला, दो भुजा वाला, वज्र मूल के आयुध सहित, जटा—मकुट धारी सर्वाभरण से भूषित, हजार योजन विस्तार वाला, दस हजार योजन का उत्प्रेक्ष्य पुल्लिङ्ग, क्षत्रिय, उन्द्रादि देवता का स्तम्भन करने वाला, शान्तिक, पीण्डिक वश्याकर्षण कर्म का नाश करने वाला । ऐसा 'क' कार का लक्षण है ।

ख—पिगल वाहन, मयूर के कण्ठ के समान वर्ण वाला, दो भुजा वाला, ताम्र, शक्ति के आयुध से सहित, सुन्दर यज्ञोपवित को धारण करने वाला, मृस्वर वाला, तीस योजन विस्तार वाला, आकाश में गमन करने वाला, क्षत्रिय, मुगन्ध माल्यादि लेपन से सहित, आग्नेय पुराकपन, चिन्तित मनोरथ की सिद्धि करने वाला, अणिमादि देवत, पुल्लिङ्ग । ऐसा 'ख' कार का लक्षण है ।

ग—हंस का वाहन, पद्मासन मानिक्या भरण से सहित, डंगिलोक वर्ण वाला, श्वेत वस्त्र वाला, मृन्ध माल्यादि लेपन से सहित, कुंकुम चन्दनादिक है प्रिय जिसको क्षत्रिय, पुल्लिङ्ग, सर्व शान्ति करने वाला, सौ योजन विस्तार वाला, सर्वाभरण भूषित दो भुजा से सहित, फल प्रौर पाम को धारण करने वाला, यक्षादि देवता, अमृत स्वाद वाला, प्रसन्न दृष्टि वाला । ऐसा 'ग' कार का लक्षण है ।

घ—ऊँट का वाहन, उल्लू का आसन, दो भुजा, वज्र, गदा, आयुध, धूस्र वर्ण, हजार योजन विस्तीर्ण हंस के समान स्वर वाला, कठोर, गन्ध वाला, खारा स्वाद वाला, महाबलवान्, उच्चाटन, छेदन, मोहन, स्तम्भनकारी, पचास योजन विस्तीर्ण, नपुंसक, रौद्र शक्ति वाला, क्षत्रिय, सर्व शान्तिकर महावीर्य को धारण करने वाले देवता । ऐसा 'घ' कार का लक्षण है ।

ङ—रुपासन, दुष्ट स्वर वाला, दुर्दृष्टि, दुर्गन्ध, दुर्ग्राहारी, कोटी योजन विस्तीर्ण हजार योजन उत्प्रेक्ष्य, शासन को करने वाला, रात्रि प्रिय, छः भुजा वाला, मृगल, गदा, शक्ति मुष्टि, भुशुङ्गि, परसा के आयुध को धारण करने वाला, नपुंसक यमादि देवत । ऐसा 'ङ' कार का लक्षण है ।

च—शोभन, हंस वाहन, शुक्ल वर्ण, सौ करोड़ हजार योजन विस्तार वाला, वज्र

बहुय मुक्ता भरण भूषित, चार भुजा वाला, शुभ चक्र फल, कमल के आयुध वाला, जटा मुकुट धारी, सुस्वर वाला, सुमन प्रिय ब्रह्माणि यक्षादि दैवत को प्राप्त । ऐसा 'ख' कार का लक्षण है ।

छ :- मगर का वाहन, पद्मासन, महाघण्टा के समान वाला, उगते हुये सूर्य के समान प्रभाव वाला, हज़ार योजन विस्तार वाला, आकर्षणादि रौद्र कर्म के करने वाला, सुमन के समान सुगन्ध वाला, काले वर्ण का, दिव्य आभरण से सहित चार भुजा वाला, चक्र, वज्र, शक्ति, गदा के आयुध से सहित सर्व कार्य की सिद्धि करने वाला गरुड देवता । ऐसा 'छ' कार का लक्षण है ।

ज :- शूद्र, पुल्लिग, चार भुजा वाला, परसु, पाश, कमल, वज्र के धारण करने वाला, अमृत का स्वाद वाला, जटा मुकुटधारी भौक्तिक वज्राभरण भूषित व श्याकर्षण शक्ति वाला, सत्यवादी, सुगन्ध प्रिय, सोदल कमल के समान वासुणादिदेव के समान । ऐसा 'ज' कार का लक्षण है ।

झ :- पुरुष, वंश्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, के समान वश्याकर्षण करने वाला कुबेरादि दैवत दो भुजाओं वाला, जम्बू, चक्र के आयुध को धारण करने वाला भौक्तिक वज्राभरण भूषित सत्यवादी, पीला वर्ण का, पद्मासन, मुगन्धि अमृत स्वादु । ऐसा 'झ' कार का लक्षण है ।

ञ :- कौवा के वाहन वाला, गन्धवान, काष्ठासन वाला, काला वर्ण वाला दूत कर्म है, कार्य जिसका नष्ट सब सौ योजन विस्तिर्ण, चार भुजा वाला, त्रिशूल परसु के आयुधों के धारण करने वाला, तिष्ठुर और गदा को धारण करने वाला महाक्रूर स्वर वाला, सब जीवों को भय पैदा करने वाला, शीघ्र गति वाला, व्यभिचार कर्म से संयुक्त, क्षार (खार) स्वाद वाला, शीघ्र गमन के स्वभाव वाला रौद्र दृष्टियम् दैवत । ऐसा 'ञ' कार का लक्षण है ।

ट :- वृत्तासन, कबूतर के वाहन वाला, कपिल वर्ण वाला, दो भुजा वाला, वज्र, गदा, मन्द गति वाला, लवण के समान स्वाद वाला, शीतल स्वाद वाला, व्याल यज्ञोपवित को धारण करने वाला, चन्द्र दैवत । ऐसा 'ट' कार का लक्षण है ।

ठ :- चतुर आसन गज वाहन वाला, शंख के समान दो भुजा वाला, वज्र, गदा के आयुध को धारण करने वाला, जम्बू द्वीप प्रमाण, अमृत स्वाद वाला, पुल्लिग, रक्षा, स्तम्भन, मोहन, कार्य के सिद्धि करने वाला, सर्वाभरण भूषित, क्षत्रिय दैवत । ऐसा 'ठ' कार का लक्षण है ।

ड :- चतुर आसन, शंख के समान, जम्बू द्वीप प्रमाण, क्षीरामृत स्वाद वाला, पुल्लिग, दो भुजा वाला, वज्र पद्म के आयुध को धारण करने वाला, रक्षा, स्तम्भन, मोहनकारी, कर्पूर गन्ध वाला, सर्वाभरण भूषित है । केला के स्वाद वाला, शुभ स्वर वाला, कुबेर दैवत । ऐसा 'ड' कार का लक्षण है ।

ङ —चतुरासन, मोहन के समान, जम्बू द्वीप प्रमाण, पुल्लिग, आठ भुजा वाला, पशु, पाश, वज्र, मूसल, भिदपाल, पद्मगर, चाप, हल, नाराचायुध को धारण करने वाला, मुस्वाद, मुस्वर, सिद्धनाद के समान महाध्वनि करने वाला, लाल वर्ण वाला, ऊपर मुख वाला, दुष्ट निग्रह शिष्ट परिपालन करने वाला, सौ योजन विस्तार वाला, हजार योजन आवृत्त वाला, तदङ्ग परिणाहं जटा मुकुट को धारण करने वाला, सुगन्ध से संयुक्त, निश्वास वाला, किन्नर ज्योतिष के द्वारा पूजित, महोःसवयुक्त, कालाग्नि शक्ति, वक्ष्याकर्षण, निमिषाङ्ग साधन, विकलाग, अग्नि देवत । ऐसा 'ङ' कार का लक्षण है ।

ण —त्रिकोणामन, व्याघ्र वाहन, सौ हजार योजन आयाम, पचास हजार योजन विस्तार वाला, छ. भुजा वाला, शशि तोमर, भुशुङ्गि, भिदपाल, पशु त्रिशूल के आयुधको धारण करने वाला, कठोर गन्ध से महित, थाप या अनुग्रह करने में समर्थ, काले वर्ण का, रौद्र दृष्टि, खारा स्वाद वाला, नपुंसक, वायु देवत । ऐसा 'ण' कार का लक्षण है ।

त :—पद्मासन, हाथी वाहन, शौर्य ही जिसका आभरण है, सौ योजन विस्तार वाला, पचास योजन आयाम, चम्पा के गन्ध वाला, चार भुजा वाला, पशु, पाश, पथ, शस्त्र के आयुध वाला, पुल्लिग, चन्द्रादि देवता से पूजित, मधुर स्वाद वाला, सुगन्ध प्रिय । ऐसा 'त' कार का लक्षण है ।

थ —बैल का वाहन, आठ भुजा वाला, शक्ति तोमर, पशु, धनुष, पाश, चक्र, गदा, दण्ड आयुध वाला, काला वर्ण वाला, काला वस्त्र वाला, जटा मुकुटधारी, करोड़ योजन आयाम आधा करोड़ विस्तार वाला, क्रूर दृष्टि वाला, कठोर स्वर वाला, गन्ध वाला, धूर्तरा के रस का प्रिय, सर्व का मार्थ साधन अग्नि देवत । ऐसा 'थ' कार का शक्ति व लक्षण है ।

द —भैंस का वाहन, काला वर्ण, तीन मुख वाला, छः भुजा वाला, गदा, मूसल, त्रिशूल, भुशुङ्गि, वज्र, तोमर का आयुध वाला, करोड़ योजन आयाम वाला, आधा करोड़ योजन विस्तीर्ण, दिगम्बर (नग्न) लोहा के आभरण वाला, उर्ध्व दृष्टि, सर्प का यज्ञोपवित-धारी, निष्ठुर ध्वनि है जिसकी मकरन्द मुन्मोक्षण, मन्त्र साधन में विशेष, यम देवता से पूजित काला रंग वाला, नपुंसक । ऐसा 'द' कार का लक्षण है ।

ध . —पुल्लिग, कषायला वर्ण वाला, तीन नेत्र वाला, चतुरायुत योजन, विस्तीर्ण, रौद्र कार्य करने वाला, छः भुजा वाला, चक्र, पाश, गदा, भुशुङ्गि, मूसल, वज्र, शरासन का आयुध धारण करने वाला, काला वर्ण, काला सर्प का यज्ञोपवित धारण करने वाला, जटा मुकुटधारी, हुँकार का महाशब्द करने वाला, महाहूँ, कठोर, धूस्र प्रिय, रौद्र दृष्टि, नैऋत्य देव से पूजित । ऐसा 'ध' कार का लक्षण है ।

न .—काला वर्ण का, नपुंसक, त्रिशूल, मुद्गर के आयुध वाला, द्विभुजा युक्त, उर्ध्व केश से व्याप्त, चर्मधारी, रौद्र दृष्टि वाला, कठोर स्वाद वाला, काला सर्प का प्रिय, कौण्ड के समान स्वर वाला, सौ योजन उत्सेध वाला, पचास योजन आयाम वाला, नियांस, गुग्गुलु, तिल,

तेल के धूप का प्रिय, दुर्जन प्रिय, रौद्र कर्म का धारण करने वाला, यमादि देव से पूजित । ऐसा 'न' कार का लक्षण है ।

प :—असित वर्ण, पुल्लिग, जाति पृथ के गन्ध का प्रिय, दस सिर वाला, बीस हाथ वाला, अनेक आयुधों के धारण करने वाली मृदा से युक्त करोड़ योजन विस्तार वाला, द्विगुणित आयाम वाला, मन्त्र, कोटि योजन शक्ति का धारी, गरुड वाहन वाला, कमल का आसन, सर्वाभरण भूषित, सर्प का यज्ञोपवित धारी, सर्व देवता से पूजित, सर्व देवात्मक, सर्व दुष्टों का विनाशक, (अलयातिल) चन्द्रादि देवता से पूजित । ऐसा 'प' कार का लक्षण है ।

फ :—विजयी के समान तेज वाला, पुल्लिग, पचास, सित वाहन, दस करोड़ योजन आयाम वाला, पाँच करोड़ योजन का विस्तार वाला, दस भुजा वाला, पशु, चक्र के आयुध वाला, केतकी के गन्ध का प्रिय, सिद्ध विद्याधर से पूजित, मधुर स्वाद वाला, व्याधि विप, दुष्ट, ग्रह विनाशन, सर्व महारोग, महादिव्य शक्ति, शान्तिकर, ऐशान्य देव से पूजित । ऐसा 'फ' कार का लक्षण है ।

ब :—इ गिल का भ, दस करोड़ योजन का उत्सेध, उसका आधा विस्तार, मुक्ति का भरण धारण करने वाला, जलेय धारी, दिव्या भूषित, आठ भुजा वाला, जंघ, चक्र, गदा, मूसल, कौडिकण, शरासन, ताम्र आयुध को धारण करने वाला, हंस वाहन वाला, कुबलयासन का धारी, वर फल का स्वादी, घन स्वर वाला, चम्पा के गन्ध वाला, वज्रकृति प्रसंग प्रिय, कुबेर देव से पूजित । ऐसा 'ब' कार का लक्षण है ।

भ :—नवसक, दस हजार योजन उत्सेध, पाँच हजार योजन विस्तीर्ण, (विस्तार वाला), निष्टुर मन वाला, कठोर, रुध, स्वाद प्रिय, शीघ्र गति गमन प्रिय, ऊपर गमन वाला, तीन नेत्र वाला, चार भुजा वाला, चक्र, शूल, गदा, शक्ति के आयुधों का धारण करने वाला, त्रिकोणासन वाला, व्याघ्र वाहन, लोहितराज, तीक्ष्ण, उद्धर्त केश वाला, विकृत रूप वाला, रौद्र कान्ति, अर्द्ध खिले हुये नेत्र, शरण सिद्धि कर, नैऋत्य देव से पूजित । ऐसा 'भ' कार का लक्षण है ।

म :—उगते हुये सूर्य के समान प्रभा, अनन्त योजन प्रभा शक्ति, सर्व व्यापि, अनन्त मुख, अनन्त हाथ, भूमि, आकाश, सागर, पर्यन्त दृष्टि, सर्व कार्य साधक, ग्रमरी करण द्रोपण सर्व गन्ध मास्यानु लेपन से सहित, घूप चरु का शत प्रिय, सर्व देवता रहस्य करण, प्रलयार्थि शिखि कान्ति से युक्त, सर्व का नायक, पञ्चमासन, अग्नि देवता से पूजित । ऐसा 'ल' कार का लक्षण हुआ ।

य :—नवसक, भूमि, आकाश, दिशा विज्ञेय वाला, सर्व व्यापि, अरूपी, शीघ्र, मन्द गति युक्त, प्रसाद से युक्त, व्यविचार कर्म प्रिय, सर्व देवता, अग्नि, प्रलयार्थि, तीव्र उद्योति, सर्व विकल्प वाला, अनन्त मुख, अनन्त भुजा, सर्व गर्भ करता, सर्व लोक प्रिय, हरिण वाहन, वृत्तासन, अंजन के समान वर्ण वाला, महामधुर ध्वनि से युक्त वायव्य देवता से पूजित । ऐसा 'य' कार का लक्षण है ।

र :—नपुंसक, सर्व व्यापि, वारह सूर्य के समान प्रभा, ज्वालामाल, करोड़ योजन चुति, सर्व लोक के कर्ता, सर्व होम प्रिय, रौद्र शक्ति, स्त्री नाम पंच सायक, पर विद्या का छेदन करने वाला, ग्राम्य कर्म साधन वाला, स्तम्भन, मोहन कर्म का कर्ता, जम्बू द्वीप में विस्तीर्ण, भेस का वाहन, त्रिकोणासन, अग्नि देवता से पूजित । ऐसा 'र' कार का लक्षण है ।

ल :—पीला वर्ण, चार हाथ वाला, वज्र, शक्र, शूल, गदा के आश्रयों को धारण करने वाला, हाथी का वाहन वाला, स्तम्भन मोहन का कर्ता, जम्बू द्वीप में विस्तीर्ण, मंद गति प्रिय, महात्मा, लोकांका में पूजित, सर्व जीव धारी, चतुरस्वासन, पृथ्वी का जय करने वाला, इन्द्रदेव के द्वारा पूजित । ऐसा 'ल' कार का लक्षण है ।

व :—ध्वेत वर्ण विन्दु से सहित, मधुर क्षार रस का प्रिय, विकल्प से नपुंसक, मगर का वाहन, पद्मासन, वक्ष्याकर्षण, निर्विष शान्ति करण श्रुणादि से पूजित । ऐसा 'व' कार का लक्षण है ।

श :—लाल वर्ण दस हजार योजन विस्तीर्ण पांच हजार योजन आयाम, चंदन गंध, मधुर स्वाद, मधुर रस प्रिय, चक्रवा का नड, कुबलयासन, चार भुजा, शंख, चक्र, फल कमल, का आयुध धारी, प्रसन्न दृष्टि, गृभानस, सुगन्ध, धूप प्रिय, लाल वर्ण के द्वार से आभिता भरण, जटा मुकुटधारी, वक्ष्याकर्षण, शक्ति, पौष्टिक कर्ता, उगते हुए सूर्य के समान, चन्द्रादि देव से पूजित । ऐसा 'श' कार का लक्षण है ।

ष :—पुल्लिग, मयूर शिखा के समान वर्ण, दो भुजा, फण, चक्र का आयुध वाला, प्रसन्न दृष्टि, एक लाख योजन विस्तीर्ण पचास हजार योजन आयाम, अम्लरस प्रिय, शीतल गंध, कछुओं का आसन कछुओं पर बैठा हुआ प्रिय दृष्टि वाला, सर्वाभरण भूषित, स्तम्भन, मोहनकारी, इन्द्रादि देवता से पूजित, ऐसा 'ष' कार का लक्षण है ।

स :—पुल्लिग, शुक्ल वर्ण, चार भुजा, वज्र, शंख, चक्र, गदा का धारी, एक लाख योजन विस्तीर्ण, मधुर स्वर, मौक्तिक वज्र, वैडूर्य आदि के भूषण से सहित, सुगन्धित माल्यनुलेपन से सहित, सित वस्त्रप्रिय, सर्व कर्म का कर्ता, सर्व मंत्र गण से पूजित महा मुकुटधारी, कक्ष्याकर्षण का कर्ता, प्रसन्न दृष्टि, हंसवाहन, कुबेर देव से पूजित । ऐसा 'स' कार का लक्षण है ।

ह :—नपुंसक सर्व व्यापी, सितवर्ण, सितगंध प्रिय, सित माल्यनुलेपन से सहित, सितार प्रिय, सर्व कर्म का कर्ता, सर्व मंत्रों का अग्रणी, सर्व देवता से पूजित, महाद्युति से सहित, अचिंत्य गति, मन स्थायी, विजय को प्राप्त, चिंतन मनोरथ विकल्प से रहित, सर्व देव महा कृष्टित्व अतीत अनागत वर्तमान त्रैलोक्य काल वर्णक, सर्वाश्रयादि देवता से पूजित, महाद्युतिमान, ऐसा 'ह' कार का लक्षण है ।

क्ष :—पुल्लिग, पीले वर्ण का, जम्बूद्वीप ध्याय ध्येय, सम्यात द्वीप समुद्र में व्यापक एक

अतः इस महामन्त्र की समस्त मातृका ध्वनियाँ निम्न प्रकार हुई। अ आ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लृ ए ऐ ओ औ अं अः क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् झ् ञ् ट् ठ् ड् ढ् ण्, त् थ् द् ध् न्, प् फ् ब् भ् म्, य् र् ल् व् श् ष् स ह् !

उपयुक्त ध्वनियाँ ही मातृका कहलाती हैं। जयसेन प्रतिष्ठा पाठ में बतलाया गया है—

अकारादिककारान्ता वर्णा प्रोक्तास्तु मातृकाः ।

सृष्टिन्यास स्थितिन्यास-संहृतिन्यासतस्त्रिधाः ॥३७६॥

अर्थात्—अकार से लेकर क्षकार [क + प + अ] पर्यन्त मातृका वर्ण कहलाते हैं।

इनका तीन प्रकार का क्रम है।—सृष्टि क्रम, स्थिति क्रम और संहार क्रम।

णमोकार मंत्र में मातृका ध्वनियों का तीनों प्रकार का क्रम सन्निविष्ट है। इसी कारण यह मन्त्र आत्म कल्याण के साथ लौकिक अभ्युदयों को देने वाला है। अष्ट कर्मों के विनाश करने की भूमिका इसी मन्त्र के द्वारा उत्पन्न की जा सकती है। संहार क्रम कर्म विनाश को प्रगट करता है। तथा सृष्टि क्रम और स्थिति क्रम आत्मानुभूति के साथ लौकिक अभ्युदयों की प्राप्ति में भी सहायक है। इस मन्त्र की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि इसमें मातृका ध्वनियों के तीनों प्रकार के मन्त्रों की उत्पत्ति हुई है। बीजाक्षरों की निष्पत्ति के सम्बन्ध में बताया गया है 'ह्रौ बीजानि चोक्तानि स्वराः शक्तय ईरिताः' ॥३७७॥ अर्थात् ककार से लेकर हकार पर्यन्त व्यंजन बीजसंज्ञक हैं और अकारादि स्वर शक्तिरूप हैं। मन्त्र बीजों की निष्पत्ति बीज और शक्ति के संयोग से होती है।

सारस्वत बीज, माया, बीज, शुभनेश्वरी बीज, पृथिवी बीज, अग्नि बीज, प्रणव बीज, मारुत बीज, जल बीज, आकाश बीज, आदि की उत्पत्ति उक्त ह्रौ और अचो के संयोग से हुई है। यो नो बीजाक्षरों का अर्थ बीज कोश एवं बीज व्याकरण द्वारा ही ज्ञात किया जाता है परन्तु यहाँ पर सामान्य जानकारी के लिए ध्वनियों की शक्ति पर प्रकाश डालना आवश्यक है।

अ—अध्यय, व्यापक, आत्मा के एकत्व का सूचक, शुद्ध-बुद्ध, ज्ञान रूप शक्ति द्योतक, प्रणव बीज का जनक।

आ - अव्यय शक्ति और बुद्धि का परिचायक, सारस्वत बीज का जनक, माया बीज के साथ कीर्ति धन और आशा का पूरक।

इ—गत्यर्थक, लक्ष्मी प्राप्ति का साधक, कोमल कार्य साधक, कठोर कर्मों का बाधक व ह्री बीज का जनक।

ई—अमृत बीज का मूल कार्य साधक, अल्पशक्ति द्योतक, ज्ञान वर्धक, स्वम्भक, मोहक, जृम्भक।

उ—उच्चाटन बीजों का मूल, शक्तिशाली, श्वास, नलिका द्वारा जोर का धक्का देने पर मारक ।

ऊ—उच्चाटक और मोहक बीजों का मूल, विशेष शक्ति का परिचायक, कार्य ध्वंस के लिए शक्ति दायक ।

ऋ—ऋद्धि बीज, सिद्धि दायक, शुभ कार्य सम्बन्धी बीजों का मूल, कार्य सिद्धि का सूचक ।

लृ—सत्य का संचारक, वाणी का ध्वंसक, लक्ष्मी बीज की उत्पत्ति का कारण, आत्म सिद्धि में कारण ।

ए—निश्चल पूर्ण, गति सूचक, अरिष्ट निवारण बीजों का सूचक, पोषक और सबर्द्धक ।

ऐ—उदात्त, उच्च स्वर का प्रयोग करने पर वशीकरण बीजों का जनक, पोषक और सबर्द्धक, जल बीज की उत्पत्ति का कारण, सिद्धि प्रद कार्यों का उत्पादक बीज, शासन देवताओं का आव्हान न करने में सहायक, क्लिष्ट और कठोर कार्यों के लिए प्रयुक्त बीजों का मूल, ऋण विद्युत् का उत्पादक ।

औ—अनुदात्त—निम्न स्वर की अवस्था में माया बीज का उत्पादक, लक्ष्मी और श्री का पोषक, उदात्त, उच्च स्वर की अवस्था में कठोर कार्यों का उत्पादक बीज, कार्य साधक निर्जरा का हेतु, रमणीय पदार्थों के प्राप्ति के लिए आयुक्त होने वाले बीजों में अग्रणी, अनुस्वरान्त बीजों का सहयोगी ।

औ—मारण और उच्चारण सम्बन्धी बीजों में प्रधान, शीघ्र कार्य साधक निरपेक्षी अनेक बीजों का मूल ।

अं—स्वतन्त्र शक्ति रहित कर्माभाव के लिए प्रयुक्त ध्यान मन्त्रों में प्रमुख शून्य या अभाव का सूचक, आकाश बीजों का जनक, अनन्त मृदुल शान्तियों का उद्घाटक, लक्ष्मी बीजों का मूल ।

अः—शान्ति बीजों में प्रधान निरपेक्षा अवस्था में कार्य असाधक सहयोगी का अपेक्षक ।

क—शान्ति बीज, प्रभावशाली सुखोत्पादक, सम्मान प्राप्ति की कामना का पूरक, काम बीज का जनक ।

ख—आकाश बीज, अभाव कार्यों की मिद्धि के लिए कल्पवृक्ष, उच्चाटन बीजों का जनक ।

ग—पृथक् करने वाले कार्यों का साधक, प्रणव और माया बीज के साथ कार्य सहायक ।

घ—स्तम्भक बीज, स्तम्भन कार्यों का साधक, विघ्न विघातक, मारण और मोहक बीजों का जनक ।

इ—शत्रु का विध्वंसक, स्वर मातृका बीजों के सहयोगानुसार फलोत्पादक विध्वंसक बीज जनक ।

ख—प्रगहीन खण्ड शक्ति द्योतक स्वर मातृका बीजों के अनुसार फलोत्पादक-उच्चाटन बीज का जनक ।

छ—छाया सूचक, माया बीज का सहयोगी बन्धनकारक, आप बीज का जनक, शक्ति का विध्वंसक, पर मृदु कार्यों का साधक ।

ज—नूतन कार्यों का साधक, आधि व्याधि विनाशक, शक्ति का संचारक, श्री बीजों का जनक ।

झ—स्तम्भक और मोहक, बीजों का जनक, कार्य साधक, साधना का अवरोध माया बीज का जनक ।

ट—बहि बीज, आग्नेय कार्यों का प्रसारक और निस्तारक, अग्नि तत्व युक्त विध्वंसक कार्यों का साधक ।

ठ—अशुभ सूचक बीजों का जनक, क्लिष्ट और कठोर कार्यों का साधक, मृदुल कार्यों का विनाशक, रोदन कर्त्ता, अशान्ति का जनक साक्षेप होने पर द्विगुणित शक्ति का विनाशक, वह्नि बीज ।

ड—शासन देवताओं की शक्ति का प्रस्फोटक, निकृष्ट कार्यों की सिद्धि के लिए अमोघ संयोग से पञ्चतत्त्वरूप बीजों का जनक, निकृष्ट आचार-विचार द्वारा साफल्योत्पादक अचेतन क्रिया साधक ।

ढ—निश्चल माया बीज का जनक, मारण बीजों में प्रधान, शान्ति का विरोधी, शान्ति वर्धक ।

ण—शान्ति सूचक, आकाश बीजों में प्रधान, ध्वंसक बीजों का जनक, शक्ति का स्फोटक ।

त—आकर्षक बीज, शक्ति का आविष्कारक, कार्य साधक, सारस्वत बीज के साथ सर्व सिद्धिदायक ।

थ—संगल साधक, लक्ष्मी बीजों का सहयोगी, स्वर मातृकाओं के साथ मिलने पर मोहक ।

द—कर्म नाश के लिए प्रधान बीज आत्म शक्ति का प्रस्फोटक बशीकरण बीजों का जनक ।

ध—श्री और क्ली बीजों का सहायक, सहयोगी के समान फलदाता, माया बीजों का जनक ।

न—आत्म सिद्धि का सूचक—जल तत्व का स्फुट्टा, मृदुतर कार्यों का साधक, हितैषी आरम्भ नियन्ता ।

ष—परमात्मा का दर्शक जलत्व के प्राधान्य से युक्त समस्त कार्यों की सिद्धि के लिए ग्राह्य ।

फ—वायु और जल तत्व युक्त महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिए ग्राह्य स्वर और रेफ युक्त होने पर विध्वंसक, विघ्न विघातक, 'फट्' की ध्वनि से युक्त होने पर उच्चाटक कठोर कार्य साधक ।

ब—अनुस्वार युक्त होने पर समस्त प्रकार के विघ्नों का विघातक और निरोधक, सिद्धि सूचक ।

भ—साधक विशेषतः मारण और उच्चाटन के लिए उपयोगी, सात्त्विक कार्यों का निरोधक, परिणत कार्यों का तत्काल साधक, साधना में नाना प्रकार से विघ्नोत्पादक, कल्याण से दूर, कटु मधु वर्णों में मिश्रित होने पर अनेक प्रकार के कार्यों का साधक, लक्ष्मी बीजों का विरोधी ।

म—सिद्धि दायक, लौकिक और पारलौकिक सिद्धियों का प्रदाता सन्तान की प्राप्ति में सहायक ।

य—शान्ति का साधक, सात्त्विक साधना की सिद्धि का कारण, महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिए उपयोगी, मित्र प्राप्ति या किसी अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति के लिए अन्यन्त उपयोगी ध्यान का साधक ।

र—अग्नि बीज, कार्य साधक समस्त प्रधान बीजों का जनक, शक्ति का प्रस्फोटक और वर्द्धक ।

ल—लक्ष्मी प्राप्ति में सहयोग श्री बीजों का निकटत, सहयोगी और सगोत्री कल्याण सूचक ।

व—सिद्धि दायक आकर्षक हृ, र और अनुस्वार के संयोग से चमत्कारों का उत्पादक, सारस्वत बीज, भूत-पिशाच-शाकिनी बाधा का विनाशक, रोगहर्ता लौकिक कामनाओं की पूर्ति के लिए अनुस्वार मातृका सहयोगापेक्षी, मंगल साधक, विपत्तियों का रोधक और स्तम्भक ।

श—निरर्थक सामान्य बीजों का जनक या हेतु उपेक्षा धर्म युक्त शान्ति का पोषक ।

ष—आवृहान बीजों का जनक, सिद्धि दायक, अग्नि स्तम्भक, जल स्तम्भक, सापेक्ष ध्वनि ग्राहक, सहयोग द्वारा विलक्षण कार्य साधक, आत्मोन्नति से शून्य, रुद्र बीज का जनक, भयकर और वीभत्स कार्य के लिए प्रयुक्त होने पर साधक ।

स—सर्व समोहित साधक, सभी प्रकार के बीजों में प्रयोग योग्य शान्ति के लिए परम आवश्यक, पौष्टिक कार्यों के लिए परम उपयोगी, ज्ञानावरणीय-दर्शनावरणीय आदि कर्मों का विनाशक, वली बीज का सहयोगी, काम बीज का उत्पादक आत्म सूचक और दर्शक ।

ह—शान्ति पौष्टिक और माङ्गलिक कार्यों का उत्पादक, साधन के लिए परमोपयोगी स्वतन्त्र और सहयोगापेक्षी, लक्ष्मी की उत्पत्ति में साधक, सन्तान प्राप्ति के लिए अनुस्वार युक्त होने पर जाप में सहायक, आकाश तत्व युक्त कर्म नाशक सभी प्रकार के बीजों का जनक ।

मन्त्र निर्माण के लिये निम्नांकित बीजाक्षरों की आवश्यकता

ॐ ह्रा ही ह्रूं हः हा हसः क्लीं ब्लूं द्रा द्री दूं द्रः श्वी श्रीं क्लीं ग्रहं घं फट् । वषट् । संवीषट् । घे घे । ठः ठः खः ह्रस्वूं ब्रं द्रं य ऋ तं थ पं आदि बीजाक्षर होते हैं ।

बीजाक्षरों की उत्पत्ति

बीजाक्षरों की उत्पत्ति णमोकार मन्त्र से ही हुई है । कारण सर्व मातृका ध्वनि इसी मन्त्र से उद्भूत है । इन सब में प्रधान "ॐ" बीज है । यह आत्म वाचक है, मूल भूत है । इसको तेजो बीज, काम बीज और भाव बीज मानते हैं । प्रणव वाचक पंच परमेष्ठी वाचक होने से 'ॐ' समस्त मन्त्रों का सार तत्त्व है ।

श्री कीर्त्ति वाचक

ही कल्याण

श्री शान्ति

ह मंगल

ॐ मुख

ह विद्वेष रोष वाचक

प्री प्री स्तम्भन

क्ली लक्ष्मी प्राप्ति वाचक

सर्व तीर्थकरो के नाम मंगलवाचक

श्वी योग

यक्ष—यक्षणियों के नाम कीर्त्ति और प्रीति वाचक ।

मन्त्र शास्त्र के बीजों का विवेचन करने पर आचार्य ने उनके रूपों का निरूपण करते हुये बताया है कि—

अ आ ऋ ह श य क ख ग घ ङ

इ ई ऋ च छ ज झ ञ क्ष र थ

लृ ब ल उ ऊ त ट द ड ण

ए ऐ थ ध ठ ड ध न स

ओ औ अं अः प फ ब भ म

यह वर्ण वायु संज्ञक है ।

यह वर्ण अग्नि तत्त्व संज्ञक है ।

यह वर्ण पृथ्वी तत्त्व संज्ञक है ।

यह वर्ण जल तत्त्व संज्ञक है ।

यह वर्ण आकाश तत्त्व संज्ञक है ।

वर्ण के लिंग

अ उ ऊ ऐ ओ औ अं, क ख ग घ, ट ठ ड ढ, त थ, प फ ब, ज भ, य स ष ल क्ष—
इन वर्णों का लिंग पुल्लिंग है। (संज्ञक है)

आ ई च छ ल व इन वर्णों का लिंग स्त्री लिंग है। (संज्ञक है)

इ ऋ ॠ लृ लृ ए अः ध भ म र ह द ज ण ङ न, इनका नपुंसक लिंग है।

ध्वनि (उच्चार) के वर्ण, मन्त्र शास्त्रानुसार

स्वर और ऊष्म ध्वनि	बाह्य वर्ण संज्ञक
अन्तस्थ और क वर्ण ध्वनि	क्षत्रिय वर्ण संज्ञक
ख वर्ण और प वर्ण ध्वनि	वैश्य वर्ण संज्ञक
ट वर्ण त वर्ण ध्वनि	शूद्र वर्ण संज्ञक
वश्य आकर्षण और उच्चाटन में	हं का प्रयोग
मारण में	फट् का प्रयोग
स्तम्भन, विद्वेषण और मोहन में	नमः का प्रयोग
शान्ति और पीठिक में	वषट् का प्रयोग

मन्त्र के आखिर में 'स्वाहा' शब्द रहता है। यह शब्द पाप नाशक, मङ्गलकारक तथा आत्मा को अन्तरिक शान्ति दृढ़ करने वाला है। मन्त्र को शक्तिशाली करने वाले अन्तिम ध्वनि में।

स्वाहा—स्त्रीलिंग	} उन वर्णों के इस प्रकार लिंग माने गये हैं।
वषट्, फट्, स्वधा—पुल्लिंग	
नमः नपुंसक लिंग	

बीजाक्षरों का वर्णन

ॐ, प्रणव, ध्रुवं ब्रह्मबीजं, तेजोबीजं, वा ॐ तेजोबीजं,

ऐं—वाग्भव बीज,

हं—गगन बीज,

लं—काम बीजं,
 भीं—शक्ति बीजं,
 हं सः—विषापहार बीजं,
 क्षी—पृथ्वी बीजं,
 स्वा—वायु बीजं,
 हा—आकाश बीजं,
 ष्ठी—माया बीजं,
 भौ—अंकुश बीजं,
 ज—पाश बीजं,
 फट् विसर्जन बीजम्, चालनं बीजम्,
 वीषट् पूजा-ग्रहणं--आकर्षणं बीजम्,
 सर्वोपट् आमन्त्रणं बीजम्,
 ब्लू—द्रावण,
 क्लू—आकर्षणं,
 ग्लौ—स्तभन,
 ष्ठी—महाशक्ति,
 वृषट्—आह्वननम्,
 रं—जलनम्,
 क्ष्वी—विषापहार बीजम्,
 उ—चन्द्र बीजम्
 घे घं ग्रहण बीजम्,
 वे विद्यौ-विद्वेषणं बीजम्,
 टा ट्री क्ली ब्लू सः=रोष बीजम्
 वा पंच वाणीद्र,
 स्वाहा—शान्तिकं मोहकं वा—
 स्वधा—पोष्टिकं मोहकं वा
 नम—शोधन बीजम्

प्लू—ज्ञान बीजं,
 य—विसर्जन बीजं उच्चारणं,
 पं—वायुबीजं,
 जुं—विद्वेषण बीजं,
 क्ष्वी—अमृत बीजं,
 क्ष्वीं—भोग बीजं,
 ष्ठी—ऋद्धि सिद्धि बीजं,
 ष्ठीं—सर्वं शान्ति बीजम्,
 ष्ठी—सर्वं शान्ति बीजम्,
 प्लू—सर्वं शान्ति बीजम्,
 ष्ठी—सर्वं शान्ति बीजम्,
 ष्ठी—सर्वं शान्ति बीजम्,
 हे—दण्डं बीजम्,
 ख—स्वादन बीजम्,
 भौ—महाशक्ति बीजम्,
 हल्ब्यू—पिड बीजम्,
 ष्ठीं—मंगल सुख बीजम्,
 श्रीं—कीर्ति बीजम्, वा कल्याण बीजम्
 क्ली—घन बीजम्, कुबेर बीजम्,
 तीर्थङ्कर नामाक्षर—शान्ति, मांगल्य, कल्याण व
 विघ्नविनाशक बीजम्,
 अ—आकाश या धान्य बीजम्
 आ—सुख बीजम् तेजो बीजम्
 ई गुण बीजम् तेजो बीजम्
 वा उ—वायु बीजम् :

क्षो क्षी क्षुं क्षे क्षो क्षौ क्षं क्षः—रक्षा, सर्वं कल्याण, अथवा सर्वं शुद्धि
 बीज है ।

तं—यं—दं—कालुष्य नाशकं, मङ्गल वर्धकं, सुख कारकं मङ्गल

वं द्रवण बीजम् ।

यं रक्षा बीजम् ।

मं मङ्गल बीजम् ।

ज्ञं शक्ति बीजम् ।

सं शोधन बीजम् ।

मन्त्र सिद्धि के लिये जैन शास्त्रों में ४ प्रकार के आसन कहे गये हैं—

(१) इमशान पीठ ।

(२) शव पीठ ।

(३) अरण्य पीठ ।

(४) इयामा पीठ ।

णमोकार मन्त्र में से ही बीजाक्षरों की उत्पत्ति हुई है । जैसे—

(ॐ) समस्त णमोकार मन्त्रों से

(ह्रीं) की उत्पत्ति णमोकार मन्त्र के प्रथम चरण से—

श्री	”	”	”	”	द्वितीय चरण से
क्षी ध्वी	”	”	”	”	प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरण से
ग्ली	”	”	”	”	प्रथम पाद में से प्रतिपादित
द्रां द्री	”	”	”	”	चतुर्थ और पंचम चरण से
हं	”	”	”	”	प्रथम चरण से
हं	”	”	”	”	बीज हे तीर्थङ्करों के यक्षिणी द्वारा अत्यन्त शक्तिशाली और सकल मन्त्रों में व्याप्त है ।
ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं	”	”	”	”	प्रथम धरणी से उत्पन्न हुए हैं ।
ह्रीं क्षी क्षूं क्षे क्षौ क्षो क्षी क्षः	”	”	”	”	प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरण से उत्पन्न हुये हैं ।

बीजाक्षर मन्त्र

- (१) ॐ :—इसे 'प्रणव' नाम से ही प्रसिद्ध है। अरिहन्त अक्षरीर (सिद्ध) आचार्य, उपाध्याय, मुनि (साधु) इनके पहले अक्षर लेकर सन्ध्यक्षर ॐ बना है। यह परमेष्ठीवाचक है।
- (२) ह्रं :—यह मन्त्र राज, मन्त्राधिप, इस नाम से प्रसिद्ध है। सब तत्त्वों का नायक बीजाक्षर तत्त्व है। इसे कोई बुद्धि तत्त्व, कोई हरि, कोई ब्रह्म, महेश्वर या शिव तत्त्व या कोई सावं, सर्वव्यापी या ईशान तत्त्व इत्यादि अनेक नामों से पुकारता है। इसे 'व्योम बीज' भी कहते हैं।
- (३) ह्रौं :—मन्त्र का नाम 'माया वर्ण', माया बीज और शक्ति बीज ही कहते हैं।
- (४) ह्रीं :—मन्त्र का नाम सकल सिद्ध विद्या या महा विद्या है, इसे 'अमृत बीज' ही कहते हैं।
- (५) श्रीं :—मन्त्र का नाम शिवा मस्तक महाबीज है। इसे 'लक्ष्मी बीज' ही कहते हैं।
- (६) क्लीं :—मन्त्र का नाम काम बीज है।
- (७) ऐं :—मन्त्र का नाम 'काम बीज' और 'विद्या बीज' ही है।
- (८) 'अ' :
- (९) क्षीं :—मन्त्र का नाम क्षिति बीज है।
- (१०) स्वा :—मन्त्र का नाम वायु बीज है।
- | | | | |
|----------------|----------------|----------------|----------------|
| (११) 'ह्रां' | (१२) 'ह्रूं' | (१३) 'ह्रौं' | (१४) 'ह्रूं' |
| (१५) 'क्लं' | (१६) 'क्लौं' | (१७) 'क्षीं' | (१८) 'क्षूं' |
| (१९) 'क्षौं' | (२०) 'क्षीं' | (२१) 'क्षं' | (२२) 'क्षं' |

युग्माक्षरी

- (१) अहं (२) सिद्ध (३) ॐ ह्रौं (४) आ, सा

त्रयाक्षरी

- (१) अहंत (२) ॐ अहं (३) ॐ सिद्धं

चतुराक्षरी

- (१) अरहंत या अरिहंत (२) ॐ सिद्धेभ्यः (३) असिसाह

पंचाक्षरी

- (१) असि आउसा (२) ह्रां ह्रौं ह्रूं ह्रौं ह्रूं (३) अहंत सिद्ध

- (४) णमो सिद्धाणं (५) नमो सिद्धेभ्यः (६) नमो अर्हते
(७) नमो अर्हद्भ्यः (८) ॐ आचार्येभ्यः

षडक्षरी मन्त्र

- (१) अरहत सिद्ध (२) नमो अरहते (३) ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रीं ह्रः
(४) ॐ नमो अर्हते (५) ॐ नमो अर्हद्भ्यः (६) ह्रीं ॐ ॐ ह्रीं हं सः
(७) ॐ नमः सिद्धेभ्यः (८) अरहत सिसा

सप्ताक्षरी

- (१) णमो अरहताणं (२) ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः
(३) णमो आयरियाणं (४) णमो उवज्झायाणं
(५) नमो उपाध्यायेभ्यः (६) नमः सर्व सिद्धेभ्यः
(७) ॐ श्रीं जिनाय नमः

अष्टाक्षरी

- (१) ॐ णमो अरहताणं (२) ॐ णमो आयरियाणं
(३) ॐ नमो उपाध्यायेभ्यः (४) ॐ णमो उवज्झायाणं

नवाक्षरी

- (१) णमो लोणं सत्त्वसाहणं (२) अरहत सिद्धेभ्यो नमः

दशाक्षरी

- (१) ॐ णमो लोणं सत्त्वसाहणं (२) ॐ अरहत सिद्धेभ्यो नमः

एकादशाक्षरी

- (१) ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रीं ह्रः अमिआउसा
(२) ॐ श्रीं अरहंतं सिद्धेभ्यो नमः

द्वादशाक्षरी

- (१) ह्रां ह्रीं हूं ह्रीं ह्रः अमि आउसा नमः
(२) ह्रां ह्रीं हूं ह्रीं ह्रः अमि आउसा स्वाहा
(३) अर्हं सिद्धं सयोगं केवलं स्वाहा

त्रयोदशाक्षरी मन्त्र

- (१) ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रीं ह्रः अमि आउसा नमः

- (२) ॐ ह्रां ह्रीं हूं हौं हः असि आ उ सा स्वाहा
(३) ॐ अहं सिद्ध केवलि सयोग स्वाहा

चतुर्दशाक्षरी

- (१) ॐ ह्रीं स्वर्हं नमो नमोऽर्हताणं ह्रीं नमः
(२) श्रीमद् वृषभादि वर्धमानां तेभ्यो नमः

पंचदशाक्षरी

- (१) ॐ श्रीमद् वृषभादि वर्धमानान्तेभ्यो नमः ।

षोडाक्षरी

- (१) अहं सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वं साधुभ्यो नमः ।

द्वाविंशत्यक्षरी

- (१) ॐ ह्रां ह्रीं हूं हौं हः अहंसिद्धाचार्योपाध्याय सर्वं साधुभ्यो नमः ।

त्रयोविंशत्यक्षरी

- ॐ ह्रां ह्रीं हूं हौं हः असि-आ-उसा अहं सर्वं सर्वं शान्तिं कुरुः कुरु स्वाहा ।

पंचविंशत्यक्षरी

- ॐ जोगे मग्ने तच्चे भूदे भव्ने भविस्ते अक्खे पक्खे जिण परिस्से स्वाहा ।

एकत्रिंशत्यक्षरी

- ॐ सम्यकदर्शनाय नमः सम्यकजानाय नमः सम्यकचारित्र्याय नमः सम्यक् तपसे नमः ।

सत्ताईस अक्षरी मन्त्र ऋषि मण्डल

- ॐ ह्रां ह्रीं हूं हौं हः १ ब्रीजाक्षर

- असि आउसा सम्यकदर्शनं ज्ञानं चारित्र्येभ्यो ह्रीं नमः $\frac{१५}{२७}$ शुद्धाक्षर

णमोकार मन्त्र

- (१) पंच त्रिंशत्यक्षरी ३५ श्री णमोकार मन्त्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,

णमो उवज्जयाणं, णमो लोणं, सब्ब साहूणं ॥ १ ॥

एक सप्तत्यक्षरी ७१

(१) ॐ अहंमुख कमलवासिनि पापात्मभयंकरि श्रुत ज्ञान ज्वाला सहस्र-प्रज्वलिते सरस्वति ममपापं हन हन दह दह क्षी क्षी क्षू क्षू क्ष क्षीर धवले अमृत सम्भवे वं वं हं हं स्वाहा ।

षट् सप्तत्यक्षरी ७६

१ ॐ नमो अहंते केवलिने परमयोगिने अनंत शुद्धी परिणाम । विस्फुट दुरु शुक्लध्या-
नाग्नि निर्दग्ध कर्म बीजाय प्राप्तानंत-चतुष्टयाय सौम्याय शान्ताय मगलाय वरदाय, अष्टादश-
दोषरहिताय स्वाहा ।

२४ शत सप्त विंशत्यक्षरी १२७

चत्तारि मंगलं, अरहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवली पण्णत्तो धम्मो मंगलं ।

चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,

साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा ।

चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरहन्ते शरणं पव्वज्जामि,

सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,

केवलि पण्णत्तं धम्मं शरणं पव्वज्जामि ।

इस प्रकार मंत्र है जिसके यथाविध जपने से इह परलोक सुख की प्राप्ति आत्म सिद्धि कार्य सिद्धि के लिए उपयुक्त है ।

केवलि विद्या :—

ॐ ह्रीं अहंणमो अरिहंताणं ह्री नमः ॥ व

ॐ णमो अरिहताणं श्रीमद्बुधभादि वर्धमानान्तिमेभ्यो नमः ॥

या श्रीमद्बुधभादि वर्धमानान्तिमेभ्यो नमः ॥

विविधपिशाचो विद्या :—

ॐ णमो अरिहंताणं ॐ ॥ इति कर्ण पिशाचो ॥

ॐ णमो आयरियाणं ॥ शकुन पिशाचो ॥

ॐ णमो सिद्धाणं ॥ इति सर्वं कर्म पिशाचो ॥

फलम् :— इति भेदोऽङ्ग पठतो द्युक्त मानसो (सच्च) मुने ॥

सिद्धान्त — ज्ञानं जायते गणितादिषु ॥

वच्य पञ्जरम् :— ॐ ह्रिदि । ह्री मुले । 'णमो' नाभौ ।

'अरि' वामे । 'हंता' वामे । दक्षिणे णं ताहं शिरासि । ॐ दक्षिणे बाहौ । ह्री वामे बाहौ । णमो कवचम् । सिद्धाणं, अरनाय फट् स्वाहा ॥

फलम् :—विपरीत कार्येऽङ्ग न्यासः शोभन कार्ये वज्र पञ्जर स्मरेत् तेन रक्षा ।

अपररजित विद्या :—ॐ णमो अरिहंताण, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाण, णमो लोए सवसाहूण ह्रीं फट् स्वाहा ॥

फलम् :— इत्योषोऽनादि सिद्धोऽयं मंत्र—स्याच्चित्तचित्रकृत इत्येषा पञ्चाङ्गी विद्याध्याता कर्म क्षयं कुरुते ॥

परमेष्ठी बीज मंत्र :—ॐ तत्कथमिति चेत् अरिहता, असरीरा आयरिया तह उवज्झाया मुत्तिणो पडमकव (र) णिप्पणो (णो) ॐ कारोय पञ्च परमेष्ठी ॥ अकसेवी [] इति जैनेन्द्र सूत्रेण अ + अ इत्यस्य दीर्घाः अ आ पुनरपि दीर्घ उ तस्य पररूप गुणे कृते औमिति जाते पुनरपि मोदर्व चन्द्रः [ॐ] इति सूत्रेणानुसारेणाऽनुस्वारे सति सिद्ध पञ्चाङ्ग मन्त्र निष्पद्यते ॥

प्रथम रक्षा मन्त्र :—ॐ णमो अरहंताण शिखायाम् ।

यह पढ़कर सारी चोटी के ऊपर दाहिना हाथ फेरे ।

ॐ णमो सिद्धाण—मुखावरणो ।

यह पढ़कर सारे मुख पर हाथ फेरे ।

ॐ णमो आयरियाणं—अङ्ग रक्षा ।

यह पढ़कर सारे अंग पर हाथ फेरे ।

ॐ णमो उवज्झायाण—आयुधं

यह पढ़कर सामने हाथ से जैसे कोई किमी को तलवार दिखावे, ऐसे दिखावे ।

ॐ णमो लोए सवसाहूण—मौर्वी ।

यह पढ़कर अपने नीचे जमीन पर हाथ लगाकर और जरा हिलकर जो आसन बिछा हुआ है, उसके इधर-उधर यह ख्याल करे कि मैं वज्र शिला पर बैठा हूँ, नीचे से बाधा नहीं हो सकती ।

सव्वावप्पणासणो—वज्रमय प्राकाराश्चतुर्दिक्षु ।

यह पढ़कर अपने चारों तरफ अंगुली से कुण्डल सा खींचे यह ख्याल कर ले कि यह मेरे चारों ओर वज्रमय कोट है ।

मगलाण च मव्वेत्ति—शिखादि सर्वतः प्रखातिका ।

यह पढ़कर यह ख्याल करे कि कोट के परे खाई है ।

पडमंहवई मंगलं—प्राकारोपरि वज्रमय टकाणिकम् ।

इति महा रक्षा—सर्वोपद्रवविद्राविणी ।

यह पढ़कर वह जो चारों तरफ कुण्डली खींचकर वज्रमय कोट रचा है उसके ऊपर चारों तरफ चुटकी बजावे । इसका मतलब है कि जो उपद्रव करने वाले हैं वे सब चले जावे । मैं वज्रमयी कोट के अन्दर व वज्रशिला पर बैठा हूँ । इस रक्षा मन्त्र के जपने से जाप

करते हुए के ध्यान में सांप, शेर, बिच्छू, व्यन्तर, देव, देवी आदि कोई भी विघ्न नहीं कर सकते। मन्त्र सिद्ध करने के समय जो देव-देवी डरावना रूप धारण कर आवेगा तो भी उस वज्रमयी कोट के अन्दर नहीं आ सकेगा। अगर शेर बगैरह पास से गुजरेंगा तो भी आप तो उसे देख सकेंगे किन्तु वह जप करने वाले को मायामय वज्र कोट की ओर होने से नहीं देख सकेगा, जपने वाले को अगर कोई तीर-तलवार बगैरह से घात करेगा तो उस स्थान का रक्षक देव उसको वहीं कील देगा। वह इस रक्षा मन्त्र को जपने वाले का घात नहीं कर सकेगा। अनेक मुनि श्रावकों के घातक इस रक्षामन्त्र के स्मरण से कीले हैं, और उनकी रक्षा हुई है।

नोट—जो बगैर रक्षा मन्त्र से मन्त्र सिद्ध करने बैठते हैं वे या तो व्यन्तरों आदि की क्रिया से डर कर मन्त्र जपना छोड़ देते हैं या पागल हो जाते हैं। इसलिए मन्त्र साधन करने से पहले रक्षा मन्त्र जप लेना चाहिए। इस मन्त्र से हाथ फेरने की क्रिया सिर्फ गृहस्थ के वास्ते है। मुनि के तो मन से ही संकल्प हाता है।

द्वितीय रक्षा मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं हां हृदयं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा
 ॐ णमो सिद्धाणं ह्रीं शिरो रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा
 ॐ णमो आयरियाणं हूं शिखां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा
 ॐ णमो उवज्झायाणं हं एहि एहि भगवति वज्रकवच वज्रिणि रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।
 ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं हं क्षिप्रं साधय साधय वज्रहस्ते शूलिनि, दुण्डान् रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

जब कभी अचानक कही अपने ऊपर उपद्रव आ जाए, खाते पीते सफर में जाते, सोते बैठते तो फौरन इस मन्त्र का स्मरण करे, यह मन्त्र बार बार पढ़ना शुरू करे। सब उपद्रव नष्ट हो जावे, उपसर्ग दूर हो, खतरे से जान माल बचे।

तृतीय रक्षा मंत्र

ॐ णमो अरहताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं। एं सो पच्च णमोकारो सव्वपावपणासणो। मगलाणं च सव्वेसि पढमं हवइ मगलम ॐ हूं फट् स्वाहा।

चतुर्थ रक्षा मंत्र

ॐ णमो अरहताणं नाभी—यह पद नाभि में धारिए
 ॐ णमो सिद्धाणं हृदि—यह पद हृदय में धारिए
 ॐ णमो आयरियाणं कण्ठे - यह पद कण्ठ में धारिए

ॐ नमो उवज्झायाण मुत्ते—यह पद मुख में धारिए

ॐ नमो लोए सव्वसाहूण मस्तके यह पद मस्तक में धारिए

सर्वांगे मां रक्ष रक्ष मात्तगिनि स्वाहा ।

यह भी रक्षा मन्त्र है । जो अङ्ग जिसके सम्मुख लिखा है, वह मन्त्र का चरण पढ़कर उस अङ्ग का मन में चिन्तन करे जैसे वह उस में रखा हो ऐसा समझे । यह मन्त्र इस प्रकार १०८ बार पढ़े, रक्षा होगी ।

रोग निवारण मन्त्र

ॐ नमो अरहन्ताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाण नमो लोए सव्वसाहूणं ।

ॐ नमो भगवदि सुयदे वयाणवार सग एव यण । जराणीये सररु

ॐ नमो भगवदिण सुय देव वाए सव्व मुण मयाणीय सर स्सइए सव्व वाडणि सव्वण वणे ।

सदृ ए सव्ववाडणि सव्वगवणो ।

ॐ अवतर अवतर देवी मम शरीर प्रविश पुच्छं तस्स पविस सव्व जणमय हरीये :

अरहन् सिरिण परमे सरीए स्वाहा ।

यह मन्त्र १०८ बार लिखकर रोगी के हाथ में रखे, सर्व रोग जाँए ।

मस्तक का दर्द दूर करने का मन्त्र

ॐ नमो अरहन्ताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरियाणं, ॐ नमो उवज्झायाण ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं ।

ॐ नमो णाणाय, ॐ नमो दसणाय, ॐ नमो चरिताय, ॐ ह्रीं त्रैलोक्यवश्यकरी ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—एक कटोरी में जल लेकर यह मन्त्र उस जल पर पढ़कर, उस जल को जिसके मस्तक में पीड़ा हो, आध्यात्मशी हो उसे पिलावे तो उसके मस्तक के सर्व रोग जाये ।

ताप निवारण मन्त्र

ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं ।

ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं ।

ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं ।

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं ।

ॐ ह्रीं नमो अरहंताणं ।

जब यह मन्त्र पढ़े, पाँचवें चरण के अन्त में "ऐं ह्रीं" पढ़ता जावे, एक सफेद शुद्ध चदर लेकर उसके एक कोने पर यह मन्त्र पढ़ता जावे और गाँठ देने की तरह कोने को मोड़ता जावे, १०८ बार उस कोने पर मन्त्र पढ़कर उसमें गाँठ देवे, वह चदर रोगी को उढ़ा देवे। गाँठ शिर की तरफ रहे, रोगी का बुखार उतरे। जिसको दूसरे या चौथे दिन बुखार आता है। इससे हर प्रकार का बुखार चला जाता है। जब तक बुखार न उतरे, रोगी इस चदर को ओढ़े रहे।

बन्दीखाना निवारण मन्त्र

ॐ नमो अरहंताणं जम्बूयूँ नमः ।

ॐ नमो सिद्धाणं भस्मयूँ नमः ।

ॐ नमो आयरियाणं स्म्वयूँ नमः ।

ॐ नमो उवज्जायाणं हम्बयूँ नमः ।

ॐ नमो लोए सव्वसाहणं, क्षम्बयूँ नमः ।

(यहाँ नाम लेकर) अमुकस्य वन्दिमोर्खं कुए कुए स्वाहा ।

विधि :—यह प्रयोग है—जिस किसी का कोई कुटुम्बी या रिश्तेदार या मित्र जेल हवालात में हो जावे, उसके वास्ते उसका कुटुम्बी यह प्रयोग करे। एक पाठा कागज पर श्री पाश्र्वनाथजी की प्रतिमा माँड कर (लिखकर) पाँच सौ फूल लेकर यह मन्त्र पढ़ता जावे और एक फूल उसके ऊपर चढ़ाता जावे और उस पर जहाँ फूल चढ़ाया था, उस पाठ पर ही अंगुली ठोकता जावे, ऐसे ५०० बार मन्त्र पढ़े। ३-मुक की जगह मन्त्र से उसका नाम लिया करे, जिसे बन्दी में रखा हुआ है। इधर तो वह कार्यवाही करे, उधर उसकी अपील वगैरह जैसी कार्यवाही कानून की हो सो ही करे। बन्दीखाने में से, कैद से फौरन छूटे। यह मन्त्र उस पाठ पर चित्राम की प्रतिमा के सम्मुख खड़े होकर पढ़े। और खड़ा होकर ही फूल चढ़ावे, सब कार्य खड़ा होकर ही करे, इससे बन्दी मुक्त होय, स्वप्न में शुभाशुभ कहे।

नोट :—यह प्रक्रिया गृहस्थ के वास्ते है, मुनि के वास्ते इसके स्मरण मात्र से ही बन्दीखाना दूर हो, अपने आप ही बन्दीखाने के किबाड़ खुलें और जंजीर टूटे।

बन्दीखाना निवारण द्वितीय मन्त्र

गंहुसाववुसएलो मोण ।

णंयाज्ञाज्वउ मोण ।

णंयारिइआ मोण ।

णंढासि मोण ।

णंताहंरअ मोण ।

विधि:—चौथ, चौदस या शनिश्चर को धूल की घुटकी लेकर मन्त्र पढ़ता हुआ तीन बार फूँक मारकर जिस पर डाले सो वश में होय । यह मन्त्र नवकार मन्त्र के ३५ अक्षर उल्टे लिखने से बनता है, जब समय मिले, और जितनी देर तक इस मन्त्र का जाप करे । नित्य सात दिन तथा ग्यारह दिन तथा इक्कीस दिन तक जपे, अगर हो सके तो इसका सवा लक्ष जाप करे । इससे अधिक जितने हो सके करे, तो तुरन्त ही बन्दी छूट जावे । कंद मे ही वह तो यह मन्त्र जपे, और इसके हिनपरिवारी अदालत में मुकदमा की अपील वगैरह करे तो तुरन्त छूटे ।

मछली बचावन बन्दीखाना निवारण मन्त्र

ॐ नमो अरहंताणं ॐ नमो लोए सम्बसाहणं ।

हुलु हुलु कुलु कुलु बुलु बुलु मुलु मुलु स्वाहा ॥

विधि: यह मन्त्र दो कार्यों की सिद्धि में आता है :—

- १- यह मन्त्र कंकरी के ऊपर पढ़कर मुँह से फूँक देता जावे । इस प्रकार इक्कीस बार पढ़कर फिर उस कङ्कुर को किसी हिकमत से जाल पर मारे, जो मछली पकड़ रहा हो तो उसके जाल मे एक भी मछली न फँसे, सब बचें ।
- २- यह मन्त्र जितनी देर तक जप सके प्रतिदिन जपे, सवा लक्ष संख्या पूर्ण होने पर बल्कि उससे पहले ही बन्दी, बन्दीखाने मे छूटे । अगर मुमकिन हो सके तो मन्त्र जपते समय धूप जलाकर आगे रखे, मन्त्र का फल तुरन्त हो, बन्दीखाने से तुरन्त छूटे ।

अग्नि निवारण मन्त्र

ॐ अहं असि आ उ सा नमो अरहंताणं नमः ।

विधि:—एक लोटे में पवित्र शुद्ध जल लेकर उसमें मे हाथ की चुल्हू में जल लेकर यह मन्त्र इक्कीस बार पढ़े । जहाँ अग्नि लग गई हो उस स्थान पर इस जल का छीटा दे । पहले जो चुल्हू में जल है जिस पर इक्कीस बार मन्त्र पढ़ा है, उसकी लकीर खींचें, उस लकीर से आगे अग्नि नहीं बड़े और अग्नि शान्त हो जाये । इस मन्त्र को १०८ बार अपने मन में जपे तो एक उपवास का फल प्राप्त हो ।

चोर, बैरी निवारण मन्त्र

ॐ ह्रीं नमो अरहंताणं, ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं,, ॐ ह्रीं नमो आइरियाणं,
ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रीं नमो लोए सब्बसाहूणं ।

विधि :—इस मन्त्र को पढ़कर चारों दिशा में फूँक दो, तुरन्त चोर, बैरी नाशे (अर्थात् जिस दिशा में चोर, बैरी हो उस दिशा में फूँक दीजे यानि यह मन्त्र पढ़ता जावे और उस तरफ फूँक देता जावे तो तुरन्त चोर, बैरी भागे ।

नोट :—पहले इस मन्त्र का सवा लक्ष जप करे और इसे सिद्ध करे, फिर जरूरत पर थोड़ा स्मरण करने से कार्य सिद्ध होगा । किन्तु पहले थोड़ा भी नियम से जपकर जरूर सिद्ध करले, जिससे जरूरत पड़ने पर फोरन काम आवे ।

चोर नाशन मन्त्र

ॐ नमो अरहंताणं धणु धणु महाधणु महाधणु स्वाहा ।

विधि :—यह मन्त्र पहले सवा लक्ष जप कर सिद्ध करे, वक्त पर मन्त्र के अक्षरों को पढ़ता जावे और उन अक्षरों को अपने ललाट पर वतींग लिखने के हरफ-त्र-हरफ खयाल करता जावे और मन्त्र जपता जावे, तो तुरन्त चोर भाग जावे अथवा मन्त्र को बाँधे हाथ में लिखकर, मुठ्ठी बाँधकर ऐसा खयाल करे कि, मेरे बाँधे हाथ में धनुष है और मन्त्र जपता जावे तो चोर तुरन्त भाग जावे ।

दुश्मन तथा भूत निवारण मन्त्र

ॐ ह्रीं अ-सि-आ-उ-सा सर्वं दुष्टान् स्तम्भय-स्तम्भय मोहय-मोहय अन्धय-
अन्धय मूकवत्कारय कुरु कुरु ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः ।

इस मन्त्र की दो क्रिया हैं —

१—यदि किसी के ऊपर दुश्मन हमला करने आवे तो तुरन्त उसके मुकाबले को जावे । यह मन्त्र १०८ बार मुठ्ठी बाँध कर जप करता जावे, दुश्मन भागे ।

२ - यदि किसी बालक या स्त्री को कोई भूत-पिशाच, चुड़ैल, डायन सतावे तो यह मन्त्र १०८ बार मुठ्ठी बाँध कर पढ़कर उसे भाड़े । सुबह-शाम दोनों समय भाड़ा करे तो भूतादिक जावे, बालक स्त्री अच्छे हो जावे ।

नोट :— इस मन्त्र के नीचे के चरण में,—ह्रीं दुष्टान् ठ. ठ. ठ. मे दुष्टान् के स्थान पर दुश्मन का नाम जानता हो तो ले या भूतादिक कहे ।

वाद-जीतन मन्त्र

ॐ हूं सः ॐ अहं ऐं श्रीं अ-सि-आ उ सा नमः ।

विधि :—पहले यह मन्त्र पढ़कर एक लक्ष तथा सवा लक्ष जप सिद्ध कर लेवे, फिर जहाँ वाद-विवाद में जाना हो वहाँ यह मन्त्र इक्कीस बार पढ़ कर जावे तो वाद-विवाद में आप जीते, जय पावे ।

विद्या-प्राप्ति, वाद जीतन मन्त्र

ॐ ह्रीं अ-सि-आ-उ-सा नमो अहं वद वद वाग् वादिनी सत्य वादिनि
वद वद मम वचनं व्यक्तं वाचयाह्मीं सत्यं—ब्रूहि सत्यं ब्रूहि सत्यं वद सत्यं वद
अस्खलित प्रचारं सदैव मनुजा सुरसदसि ह्रीं अहं अ-सि-आ-उ-सा नमः ।

विधि :—यह मन्त्र एक लक्ष बार जपे तो सर्व विद्या प्राप्ति, और जहाँ वाद-विवाद करना पड़ जावे, तो वहाँ वाद के भगड़े में बोल ऊपर होय, जीत पावे ।

परदेश लाभ मन्त्र

ॐ णमो अरहंताणं, ॐ णमो भगवद्देव चन्दायईएसतद्दाए गिरे मोर मोर
हुलु हुलु चुलु चुलु मयूर बाहिनिए स्वाहा ।

विधि :—जब किसी परदेश में रोजगार के बास्ते धन प्राप्ति के लिए जावे तो पहले श्री पार्श्वनाथ भगवान् की प्रनिमा के सामने यह मन्त्र दस हजार जपे । फिर श्रेष्ठ मुहूर्त में गमन करे । जिस दिन, जिस समय गमन करने लगे, इस मन्त्र को १०८ बार जपे । जब उस नगर में पहुँचे तो यह मन्त्र १०८ बार जपे । जिस नगर में जावे, रोजगार करे, लाभ हो । सहाय धन मिले ।

नोट : जिस नगर में रोजगार के लिये जावे, वहाँ मंगलवार के दिन प्रवेश न करे । मंगलवार के दिन प्रवेश करे तो हानि हो । घर की पूँजी खोकर, कर्जदार हो, दिवाला निकाले, काम बन्द हो ।

शुभाशुभ कहन मन्त्र, बागबल मन्त्र

ॐ ह्रीं अहं क्ष्वीं स्वाहा ।

विधि :—किसी मुदकमे से या फिर किसी फिकर मे या अन्देश में या बीमारी मे, रात में सारे मस्तक पर चन्दन लगाकर, चन्दन सूख जाने के बाद १०८ बार यह मन्त्र पढ़कर सो जावे । जैसा कुछ होनहार होगा, स्वप्न द्वारा मालूम होगा । बृहस्पतिवार से ११००० जप करे ।

मन-चिन्ता कार्य-सिद्धि मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं हः अ-सि-आ-उ-सा-नमः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से मन-चिन्ता कार्य सिद्ध होय । अर्थात् जब यह मन्त्र जपे श्रागे धूप जला कर रखले । जिस कार्य की सिद्धि के वास्ते जपे, मन में उसे रखे कि अमुक कार्य को सिद्धि के वास्ते यह मन्त्र जपता हूँ । यदि कोई इस मन्त्र का सवा लक्ष जाप करे तो मन-चिन्ते कार्य होय, सब कार्य की सिद्धि होवे ।

द्रव्य-प्राप्ति मन्त्र

अरहंत, सिद्ध, आइरिय, उबज्झं, सब्बसाहूणं ।

विधि :—इस मन्त्र का सवा लाख जप विधि पूर्वक करे तो द्रव्य प्राप्ति हो ।

लक्ष्मी-प्राप्ति, यशकरण, रोग निवारण मन्त्र

ॐ नमो अरहंताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आमरियाणं ॐ
नमो उबज्झायाणं, ॐ नमो लोए सब्बसाहूणं ।

ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं हः नमः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का जप करने से लक्ष्मी बढ़े (वृद्धि को प्राप्त हो) लोक में यश हो, सब प्रकार के रोग जाये ।

नोट :—सवा लक्ष जप विधि पूर्वक जपने से कार्य पूर्ण सिद्ध होना है, फिर जिस मर्यादा में जपेगा, उतनी मदद देगा ।

सर्व-सिद्धि मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः ।

विधि :—इस महा मन्त्र का सवा लक्ष जप करने से सर्व कार्य सिद्धि होती है ।

द्रव्य-लाभ, सर्व सिद्धि दायक मन्त्र

ॐ अरहंताणं, सिद्धाणं आयरियाणं उबज्झायाणं साहूणं मम रिद्धिं
वृद्धिं समीहितं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—मनान करने के पश्चात् पवित्र होकर प्रभात, मध्यान्ह, अपरान्ह, तीनों समय इस मन्त्र का जाप करे, द्रव्य लाभ हो, सर्व सिद्धि हो ।

नोट :—२१ दिन तक तीनों समय के सामायिक के वक्त निर्भय होकर दो-दो षट्ठी जाप्य करे ।

पुत्र-सम्पदा प्राप्ति मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं असि आउसा चुलु चुलु हुलु हुलु मुलु मुलु इच्छिद्यं
मे कुरु कुरु स्वाहा । त्रिभुवन स्वामिनो विद्या ।

विधि :—जब यह मन्त्र जपने बैठे तो आगे धूप जला कर रख लेवे और यह मन्त्र २४ हजार फूलों पर, एक फूल पर एक मन्त्र जपता जावे । इस प्रकार पूरा जपे । घर में पुत्र की प्राप्ति हो और वंश चले ।

नोट :—धन, दौलत, स्त्री, पुत्र, मकान सर्व सम्पदा की प्राप्ति इस मन्त्र के जाप से होवे ।

राजा तथा हाकिम वशीकरण मन्त्र

ॐ ह्रीं नमो अरहंताणं, ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं । ॐ ह्रीं नमो
आयरियाणं । ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं । ॐ ह्रीं नमो लोए
सव्वसाहूणं । अमुकं मम वश्यं कुरु कुरु । वषट्

विधि :—जब किसी राजा या हाकिम या बड़े आदमी को अपने वश में करना हो तो, याने अमुक मेरे पर किसी तरह मेहरबान हो तो शिर पर पगड़ी या टुपट्टा जो बाँधता है यह मन्त्र २१ बार पढ़ कर उसके पल्ले में गाँठ देवे । जब मन्त्र पढ़ना शुरू करे, जब पल्ला हाथ में लेवे । २१ बार यह मन्त्र पढ़कर गाँठ देवे और शिर पर उस वस्त्र को बाँध कर उसके पाम आवे तो वह मेहरबानी करे, मित्र हो । जब मन्त्र पढ़े अमुक की जगह उनका नाम लेवे । राजा प्रजा सर्व वश्यम् ।

वशीकरण (मन्त्र)

ॐ नमो अरहंताणं । अरे (आरि) अर (अरि) निमोहिणी अमुकं
मोहय-मोहय स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से चावल तथा फूल पर मन्त्र पढ़कर जिसके शिर पर रखे वह वश में हो ।
१०८ बार स्मरण करने से लाभ होता है ।

सर्प भय निवारण मन्त्र

ॐ अहं अ सि आ उ सा अनाहत जयि अहं नमः ।

विधि :—यह मन्त्र नित्य प्रति टक ३ गुणीजे । बार १०८ दिवाली दिन गुणीजे । जीवन पर्यन्त सर्प भय न हो ।

दुष्ट निवारण मन्त्र

ॐ अहं अमुकं दुष्टं साधय साधय अ सि आ उ सा नमः ।

विधि :—इस मन्त्र को २१ दिन तक जपे, १०८ बार शत्रु ऊपर पड़े, क्षय होय ।

लक्ष्मी लाभ करावन मन्त्र

ॐ ह्रीं हूँ नमो अरहंताणं हूँ नमः ।

विधि :—१०८ बार पढ़े, लक्ष्मी लाभ हो ।

रोगापहार मन्त्र

ॐ नमो सख्यो सहि पत्ताणं ।

ॐ नमो खेलो सहि पत्ताणं ।

ॐ नमो सत्तो सहि पत्ताणं ।

ॐ नमो सख्योसहि पत्ताणं ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं क्लौं अहं नमः ।

विधि :—१०८ बार पढ़े, सर्व रोग जाय ।

व्रणादिक नाशन मन्त्र

ॐ नमो जिणाणं जावियाणं । घूसोणि अं (अ) एस (ऐ) णं (ण)

वणं (सक्कवाराणवणं) मा पच्चत्तु मां फुट् (य उ घ उ मा फुट्) ॐ ठः

ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—राख पढ़कर व्रणादिक पर लगावे, समाप्ति हो ।

आकाश गमन मन्त्र

ॐ नमो आगासगमणिज्जो स्वाहा ।

विधि —२५० दिन अन्नूणा भोजन कांजी सेती करीजे । २४६ बार मन्त्र पढ़ वक्त के ऊपर याद करे । आकाश गमन होय ।

आकाश गमन द्वितीय मन्त्र

ॐ नमो अरहंताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरियाणं,

ॐ नमो उवज्झायाणं, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं ।

ॐ नमो भगवोय सुं प्रदेवयानवर संगसबयन जननीयन जननी यस्य
स्सइ ये सर्ववाईने प्रवतर प्रवतर देखिम शरीरं पवित्ररतं जनम पहरये
अहंन्तशरीरं स्वाहा ।

विधि :—ये मन्त्र १०८ बार लड़ी मन्त्री हाथ में राखिजे ये को देखिजे ।

व्यापार लाभ व जयदायक मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अहं अ सि आ उ सा अनाहतविषेयं अहं नमः ।

विधि :—यह मन्त्र दिन में तीन बार जपिये । १०८ बार जपे तो व्यापार में लाभ हो
सर्वत्र जय पावे ।

भय नाशक मन्त्र

ॐ नमो सिद्धाणं पंचेणं ।

विधि : यह मन्त्र १०८ बार दिवाली के दिन जपिये, जीवै जगतां इस थकीं भय टले ।

सर्व रोग नाशक मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं क्लीं अहं नमः ।

विधि :—यह मन्त्र त्रिकाल बार १०८ बार जपे, सर्व रोग जाय ।

विरोधकारक मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा अनाहत विजे ह्रीं हूं असं कविश्रं
खं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—यह मन्त्र सात दिन १०८ बार जपे मसान के अङ्गारों की राख घोलकर कौवे के
पङ्क से भोज-पत्र पर लिखे । जिसका नाम लिखे वह मेरे विरोध उपजे ।

सर्व सिद्धि व जयदायक मन्त्र

ॐ अरहन्त सिद्ध आयरिय उवज्झाय सव्वसाह, सव्व धम्मति त्थयराणं
ॐ नमो भगवईए सुयदेवयाये शांति देवयाणं सर्व पवयणं देवयाणं
दसाणं दिसा पालाणं पंचलोग पालाणं । ॐ ह्रीं अरहन्त देवं नमः ।
(श्री सर्व जुमोहं कुरु कुरु स्वाहा) पाठन्तरे ।

विधि :—यह मन्त्र १०८ बार जपे उत्तम स्थान में । सर्व सिद्धि और जयदायक है । सात
बार मन्त्र पढ़कर कपड़े में गाँठ देने से चोर भय नहीं होता, सर्प भय भी नहीं होता ।

आत्म-रक्षा महासकलीकरण मन्त्र

पद्मं हृदयं मंगलं ब्रजमइ शिलामस्तकोपरि नमो अरहंताणं अगुठ्योः
नमो सिद्धाणं तज्जंयोः नमो आयरियाणं मध्यमयोः नमो उवज्झायाणं
अनामिकयोः नमो लोएसव्वसाहूणं कनिष्ठकयोः ऐसो पंच नमोयारो ब्रजमइ
प्राकारं, सव्वपावप्पणासणे जलभूतरवातिका, मंगलाणं च सव्वेसि छादिरांगार-
पूर्ण-खातिका ।

॥ इति आत्मनिश्चयन्ते महासकलीकरणम् ॥

आकाश गमन कारक मन्त्र

ॐ आवि ह्रीं होन पंचबीजपदंयुतं सर्वं सिद्धये नमः ।

विधि — पुष्प या फल से एक लाख जाप वृक्षे ह्रीं कृत्वा तणी—बद्ध तं आरुढोऽग्नि कुण्डो
होमचेत् । येका थातेन पादास्त्रोटयत्ते खे गमनम् ।

सर्व कार्य साधक मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अहं अ सि आ उ सा स्वाहा ।

विधि व फल — यह सर्व कार्य सिद्ध करने वाला मन्त्र है ।

अरहत सिद्ध आयरिय उवज्झाय साह ।

विधि षोडशाक्षर विद्याया जाप्य २०० चतुर्थ फलम् ।

रक्षा मन्त्र

ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं पादौ रक्ष रक्ष ।

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं कटि रक्ष रक्ष ।

ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं नाभि रक्ष रक्ष ।

ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं हृदयं रक्ष रक्ष ।

ॐ ह्रीं नमो लोएसव्वसाहूणं ब्रह्माण्ड रक्ष रक्ष ।

ॐ ह्रीं ऐसो पंच नमोयारो शिखा रक्ष रक्ष ।

ॐ ह्रीं सव्वपावप्पणासणो आसणं रक्ष रक्ष ।

ॐ ह्रीं मंगलाणं च सर्व्वेसि पद्मं हृष्य मंगलं आत्म चक्षु पर चक्षु
रक्ष रक्ष रक्ष रक्षामन्त्रोयम् ।

चोर दिखाई न देने अर्थात् चोर भय नाशन मन्त्र

ॐ नमो अरिहंताणं आमिरणी मोहणी मोह्य मोह्य स्वाहा ।

विधि:—२१ बार स्मरण करे, गाँव में प्रवेश करते हुए। अभिमन्त्र 'क्षीर वृक्षो हन्यते लाभा।' रास्ते में जाते हुए इस मन्त्र का स्मरण करने से चोर का दर्शन भी नहीं होता ।

वांछितार्थ फल सिद्धि कारक मन्त्र

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमः । (महामन्त्र)

अ सि आ उ सा नमः । (मूल मन्त्र)

ॐ ह्रीं अर्हते उत्पत् उत्पत् स्वाहा । (त्रिभुवन स्वामिनि)

विधि:—स्मरण करने से वांछितार्थ सिद्ध होता है ।

नवग्रह अरिष्ट निवारक जाप्य

सुयं मंगल—ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं ।

चन्द्रमा-शुक्र—ॐ ह्रीं नमो अरहंताणं ।

बुध-बृहस्पति—ॐ ह्रीं नमो उबज्जायाणं ।

शनि-राहु-केतु—ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहणं ।

प्रत्येक ग्रह की शान्ति के लिए उपरोक्त मन्त्र के दस हजार जाप करने चाहिए और सर्व ग्रहों की शान्ति के लिए ॐ ह्रीं बीजाक्षर पहले लगाकर पंच नमस्कार मन्त्र के दस हजार जाप करने चाहिए ।

एते पंचपरमेष्ठी महामन्त्र प्रयोगाः ॐ नमो अरिहउ भग वउ बाहुबलिसस पण्हसव-
णस्स मनेणिम्मल नाणपयासेणि ॐ नमो सव्व भासइ अरिहासव्वं भासइ केवल एग्गं सव्व-
वयणेण सव्व सव्व होउ में स्वाहा । आत्मानं शुचि कृत्य बाहु युग्मं सम्पूज्य कायोत्सर्गेण शुभा-
शुभं वक्ति । इति

ॐ नमो अरहंताणं ह्रीं स्वाहा ।

ॐ नमो सिद्धाणं ह्रीं स्वाहा ।

ॐ नमो आयरियाणं ह्रीं स्वाहा ।

ॐ नमो उवज्झायाणं ह्रीं स्वाहा ।

ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः स्वाहा ।

विधि :—सुगन्धित फूलों से १०८ बार जप कर लाल कपड़े से फोड़ा-फुन्सी पर घेरा देने से तथा गले में पहनने से फोड़ा न पक कर बँठ जाता है ।

ॐ वार सुवरे अ-सि-आ-उ-सा नमः

विधि :—त्रिकाल १०८ बार जपने से विभव करता है ।

जाप्य-मन्त्र

आवश्यक नोट :—माला के ऊपर जो तीन दाने होते हैं, सबसे अन्तिम जो इन तीनों में से है उससे जप आरम्भ करो । जपते हुए अन्दर चले जाओ । जब सारे १०८ जप कर चुको तब उन आखिर के तीन दानों को माला के अन्त में भी जपते हुए उसी आखिर के दाने पर आओ । जिसमें माला जपनी शुरू की थी । यह एक माला हुई । इन तीनों दानों के बारे में किसी आचार्य का मत ऐसा भी है कि ये तीन दाने रत्नत्रय के सूचक हैं इसलिए इन तीनों दानों पर सम्यक्दर्शन जान चारित्र्याय नमः ऐसा मन्त्र पढ़कर माला समाप्त (पूर्ण) करनी चाहिए ।

प्रथम मन्त्र—ॐ नमो अरहताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आर्यार्याणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व साहूणं ।

दूसरा मन्त्र—अरहंत, सिद्ध, आर्यार्या, उवज्झाया, साहू ।

तीसरा मन्त्र—अरहन्त, सिद्ध ।

चौथा मन्त्र—ॐ ह्रीं अ-सि-आ-उ-सा ।

पाँचवा मन्त्र—ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।

छठा मन्त्र—ॐ ह्रीं ।

सातवा मन्त्र—ॐ ।

अग्नाधि निधन मन्त्र—ॐ नमो अरहताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आर्यार्याणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व साहूणं ।

चत्तारि मंगल—अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवल पण्णतो धम्मो मंगलं

चत्तारि लोगुत्तमा—अरहता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवल पण्णतो धम्मो लोगुत्तमा ।

चत्तारि सरण पव्वजामि—अरहते सरणं पव्वजामि, सिद्धे सरणं पव्वजामि, साहू सरणं पव्वजामि, केवल पण्णतो धम्म सरणं पव्वजामि । ह्रीं सर्वं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।

१०८ जाप्यम्

ॐ भूः ॐ सत्यः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ।

ॐ मूर्ध्निः स्वः अ-सि-आ-उ-सा नमः मम ऋद्धिं वृद्धिं कुरु-कुरु स्वाहा । ॐ नमो अर्हद्भ्यः स्वाहा, ॐ सिद्धेभ्यः स्वाहा, ॐ सूरभ्यः स्वाहा । ॐ पाठकेभ्यः स्वाहा । ॐ सर्व साधूभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ-सि-आ-उ-सा नमः स्वाहा । मम सर्वं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा । अरहंत प्रमाणं समं करोमि स्वाहा ।

ॐ नमो अरहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आदरियाणं, नमो उवज्ज्ञायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं ह्रीं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा (नमः) ॐ ह्रीं श्रीं अ-सि-आ-उ-सा अनाहत विद्यायै नमो अरहंताणं ह्रीं नमः ।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अरहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधूभ्यः नमः ।

ॐ ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—१०८ बार पढ़कर छाती को छीटे देवे ।

ॐ ह्रीं अर्हं नमः । या ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः ।

सूर्य मंत्र का खुलासा

किसी काम के लिये ८००० जाप करने से फौरन काम होता है खासकर कैद बगैरह के मामले में अजमाया हुआ है ।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सव्वो सहिपत्ताणं ।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो खिप्पो सहिपत्ताणं ।

विधि :—दोनों में से कोई एक ऋद्धि रोज जपे । सर्व कार्य सिद्ध हो ।

ॐ ह्रीं बलीं श्रीं ऐं क्री ह्रीं नमो अरहंताणं नमः ॐ ह्रीं अर्हं नमो अरहंताणं नमो जिणाणं ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रति चक्रे, फट् विफट् विचक्राय ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र की नित्य १ माला जपे तो दलाली ज्यादा होवे धन ज्यादा होवे । राज द्वारे जो जावे तो दुश्मन भूटा पड़े, पुत्र की प्राप्ति होवे । बदन में ताकत आवे, विजय हो,

परिवार बढ़े, बुद्धि बढ़े, सौभाग्य बढ़े, जहाँ जावे वहाँ आदर सम्मान पावे। मूँठ करे तो भी नजदीक न भावे, जाप करे जितने बार धूप खेवे, पद्मासन होकर करना। नासाग्र दृष्टि लगाकर जाप करना चाहिये।

शांति मंत्र

ॐ नमो अरहंताणं, केवलपण्णतो धम्मो, सरणं पव्वजामि ह्रौं शांति
कुरु कुरु स्वाहा। श्रीं अर्हं नमः।

(१) विजयी या नारीयन १०८ बार इस मंत्र से मंत्र कर ७२ दिनों तक बन्ध्या को खिलावे तो पुत्र हो।

(२) नये कपड़े, मन्त्र से मन्त्रितकर रोगी को पहनावे तो दोष ज्वर जाय।

ॐ सिद्धेभ्यो बुद्धेभ्यो सिद्धिदायकेभ्यो नमः।

विधि :—जाप १०८ अष्टमी चतुर्दशी को पढ़कर धूप देना।

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं, नमो अरहंताणं नमो आचार्याणं नमो उव-
ज्जायाणं, नमो साहूणं, नमो धर्मेभ्यो नमः। ॐ ह्रीं नमो अर्हंताणं आरे अभिति
मोहनी मोह्य मोह्य स्वाहा।

विधि :—नित्य १०८ जपे। ग्राम प्रवेशे कंकर ७ मंत्र २१ क्षीर वृक्ष हन्यते नामो भवति। प्रथम मन्त्र जप दोष धूप से सिद्ध करना, पीछे अपने काम में लगना चाहिये।

सर्व शांति मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ-सि-आ-उ-सा सर्व शांति तुष्टि तुष्टि कुरु
कुरु स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं नमः। क्लीं सर्वारोग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि :—१०८ बार जाप गुरुवार में आरम्भ कर पूर्व दिशा को मुख करके बैठे। धूप से प्रारम्भ कर ११,००० जाप करे।

मंत्र :—ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा ह्रीं नमः।

विधि :—८ मन्त्र का त्रिकाल १०८-१०८ बार जाइ के फूलों से जप करे तो सर्व प्रकार की अर्थ सिद्धि को देता है।

मंत्र :—ॐ क्लीं ह्रीं ह्रं ऐं ह्रीं (ह्रौं ?) ह्रः अपराजितायै नमः।

विधि :—इस मन्त्र का ३ लक्ष जाप विधि पूर्वक करने से सिद्ध होता है इस मन्त्र के प्रभाव से साधक जो भी भोगोपभोग चीजों की इच्छा करता है वह सब साधक को प्राप्त होता है। स्त्रियाँ आदिक तो अपना होश ही भूलकर साधक के पीछे पीछे चलती है।

मंत्र :—ॐ पार्वतीनाथाय ह्री ।

विधि :—इस मन्त्र का १ लाख बार जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है । इस मन्त्र का दस दिन तक प्रयत्न पूर्वक आराधना करने से स्त्री, पुरुष, राजा आदिक वश में होते हैं । पञ्चभ्रष्ट होने वाला मनुष्य दस दिन तक प्रतिदिन १-१ हजार जप करे तो जल्दी से ही पद की प्राप्ति पुनः होती है ।

मंत्र :—ॐ ग्रीं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं ।

विधि :—चन्द्रग्रहण या सूर्य ग्रहण में या दीवाली के दिन इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिए साधक को देवे । इस मन्त्र को शुद्धता से ब्रह्मचर्य पूर्वक ६ महीने तक प्रतिदिन एक हजार (१ हजार) बार जप करने वाले को ये मन्त्र सिद्ध होता है । मन्त्र के प्रभाव से साधक को राजा, उन्नत हाथी, घोड़ा, सर्व जगत के प्राणी वश में होते हैं । सर्व कार्य की सिद्धि होती है ।

मंत्र :—ॐ ह्रीं श्री कलि कुण्डदण्डाय ह्री नमः ।

विधि :—पार्व प्रभ की मूर्ति के सामने सोने की कटोरी में १२००० (१२ हजार) जाड़ के फूल से इस मन्त्र का जप करे, मन्त्र सिद्ध हो जाने के बाद मनोवाञ्छित कार्य की सिद्धि होती है मन्त्र के प्रभाव से भूत, पिशाच, राक्षस, डाकिनी शाकिणी इत्यादिक सामने ही नहीं आते बाधा देने को तो अलग बात रही । मन्त्र के प्रभाव से युद्ध, सर्प, चौर, अग्नि, पानी, सिंह, हाथी इत्यादि बाधा नहीं पहुँचा सकते हैं । मन्त्र के प्रभाव से सन्तान की प्राप्ति होवे, वध्या गर्भ धारण करे, जिसकी सन्तान होते ही मरती होवे तो जीने लगे, कीर्ति की प्राप्ति, लक्ष्मी की प्राप्ति, राज्य, सौभाग्य की प्राप्ति होती है देवांगनायें सेवा में हाजिर रहती है । ऐसा इस विद्या का प्रभाव है ।

मंत्र :—ॐ नमो भगवति शिव चर्क मालिनी स्वाहा ।

विधि :—पुष्प नक्षत्र, सप्तमी या शनिवार के दिन या रवि पुष्पामृत में, पहले निमन्त्रण पूर्वक दूसरे दिन अपनी छाया बचा के, सफेद आकड़ों की जड़ को लाकर पार्व प्रभु की प्रतिमा बनावे, फिर उपर्युक्त मन्त्र से मूर्ति की प्रतिष्ठा करके इसी मन्त्र से मूर्ति की पूजा करे, तो जो जो कार्य साधक विचारें वह सर्व कार्य साधक के चित्त मात्र से ही होते हैं । न्यायालय वगैरह, विवाद में, धान्य संग्रह में सब में, विजय प्राप्ति होती है ।

मंत्र :—ॐ ह्रीं ला ह्रां प लक्ष्मीं श्रीं श्रीं कुः हुंसः स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र का विधिपूर्वक जाड़ के फूलों से १३००० (हजार) जप तीन दिन में करे तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है । इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिए स्वयं शुद्ध होकर विलेपन लगाकर सफेद वस्त्र पहनकर, अम्बिका देवी की मूर्ति को स्नान कराकर पंचामृत से पूजा करे, फिर देवीजी के सामने बैठकर भक्ति पूर्वक उपवास करके मन्त्र सिद्ध करे तो तीन दिन में मन्त्र सिद्ध हो जायेगा । फिर मन्त्र के प्रभाव से भूत, भविष्यत्

वर्तमान को बात को देव कान में आकर कहेगा, याने जो पूछोगे वही कान में आकर कहेगा ।

मंत्र :—ॐ ह्रीं ला ह्ला प लक्ष्मी हंस स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का दस हजार जाप जाइ के फूलों से करने से और दशांस होम करने से मंत्र सिद्ध हो जायेगा । मंत्र के प्रभाव से स्थावर या जंगम विष की शक्ति का नाश होता है ।

मंत्र :—ॐ ऐं ह्रीं श्री क्लीं ब्लूँ कलि कुण्ड नाथाय सौं ह्रीं नमः ।

विधि :—इस मन्त्र का ६ महीने तक एकासन पूर्वक १०८ बार जाप करे तो सो योजन तक के पदार्थ का ज्ञान होता है । उसके बारे में भूत, भविष्यत् वर्तमान का हाल मालूम पड़ता है, इस मन्त्र का कलिकुण्ड यत्र के सामने बैठकर जाइ के पुष्पों से १ लाख बार जाप करे और दशांस होम करे, मन्त्र सिद्ध हो जायेगा ।

विशेष :—पाच वर्ष तक ब्रह्मचर्य पूर्वक इस विद्या की जो आराधना करता है उसको प्रतिदिन विद्या के द्वारा १ पल भर सोना नित्य ही प्राप्त होना है । किन्तु नित्य ही जितना सोना मिले उतना खर्च कर देना चाहिए । अगर खर्च करके सचय करोगे तो विद्या का महत्त्व घट जावेगा ।

मंत्र :—ॐ हूं २ हे २ कूं चूं दूं तूं पूं पूं शूं ह्रीं हूं (भाई हूं) पद

विधि :—इस मन्त्र का एक लाख जाप करने से कार्य सिद्ध होता है । इस मन्त्र के प्रभाव से राज दरबार में, कचेरी में, वाद विवाद में, उपदेश के समय, पर विद्या का छेदन करने में, वशीकरण में, विद्वेषणादि कर्मों में, धर्म प्रभावना के कार्यों में अति उत्तम कार्य करने वाला है ।

पद्मावती प्रत्यक्ष मंत्र : २ ॐ आ क्री ह्रीं ऐं क्लीं ह्रीं पद्मावत्यै नमः ।

विधि :—सवा लाख जाप करने से प्रत्यक्ष दर्शन होते है या साढ़े बारह हजार जप करने से स्वप्न में दर्शन होते है ।

सरस्वती मंत्र : ३—"ॐ ऐं श्री क्लीं वद् वद् वाग्वादिनी ह्रीं सरस्वत्यै नमः ।"

विधि :—बाह्य मूर्त में रोज ५ माला जपने से बुद्धिमान होय । ॐ ज्यौं ज्यौं शुद्ध बुद्धि प्रदेहि श्रुत-देवी-महंतं तुभ्यं नमः ।

लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र ४—"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ठै । ॐ घटा कर्ण महावीर लक्ष्मी पुरय पुरय मुख सौभाग्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—धन तेरस को ४० माला, चौदस को ४२ और दीवाली के दिन ४३ माला उत्तर दिशा मुख, लाल माला से, लाल वस्त्र पहन कर करे, लक्ष्मी की प्राप्ति होय ।

श्री मणिभद्र क्षेत्रपाल का मंत्र . ५—ॐ नमो भगवते मणिभद्राय क्षेत्र पालाय कृष्ण रूपाय चतुर्भुजाय जिन शासन भक्ताय तव नाम महम्भ्र वास्ताय किन्नर किं पुरुष गंधर्व,

राक्षस, भूत प्रेत, पिशाच सर्वे शाकिनी नां निग्रहं कुरु कुरु स्वाहा मां रक्ष रक्ष स्वाहा : क्षेत्र पालनो मन्त्र : ६—ॐ क्षा श्री क्षू क्षः क्षी क्षः क्षेत्र पालायनमः ।

विधि :—साढ़े बारह हजार जाप करना ।

फौजदारी दीवानी दावा आदि निवारण मंत्र :—६

मूल मन्त्र :—ॐ ऋषभाय नमः ॥

विधि :—श्री आदीश्वर भगवान के ममक्ष स्त्रोत १०८ बार प्रतिदिन जाप करना । साढ़े बारह हजार जाप करे मूल मन्त्र का ।

चक्रेश्वरी देवी का मन्त्र १—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चक्रेश्वरी मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—सोते समय ५ माला जपना चाहिये ।

मन्त्र २—ॐ नमो चक्रेश्वरी चिन्तित कार्यं कारिणी मम स्वप्ने शुभाशुभं कथय २ दर्शय दर्शय स्वाहा ।

विधि :—शुभ योग, चन्द्रमा, तिथि वार से शुरु कर साढ़े बारह हजार जाप करे । स्वप्न में शुभा शुभ मालूम पड़ेगा ।

चतुर्विंशति महाविद्या

णमो अरिहंताणम्, णमो सिद्धाणं, णमो अइरियाणम् ।

णमो उवज्जायाणम्, णमो लोए सव्व साहूणम् ॥

विधि यह श्रुताधि मूल मन्त्र है । इस मन्त्र में भव्य जीव संसार समुन्द्र में पार हो जाता है और लौकिक सर्व कार्य की सिद्धि होती है । यदि मन, वचन, काय को शुद्ध करके त्रिकाल जपे ।

ॐ नमो भगवओ अरहउ ऋष भस्स आइतित्थ घरस्स जलंतं ग (च्छं)
तं चक्कं सव्वत्थ अपराजिय, आयावणि ऊहणि, थंभाणी, जंभाणी,
हिली-हिली धारिणी भंडाणं, भोइयाणं, अहीणं, दाढीणं, सिंगीणं, नहीणं,
वाराणं, चारियाणं, जक्खाणं, ररक्खसाणं, भूयाणं, पिसायाणं,
मुहबंधणं, चक्खु बंधणं, गइ बंधणं करेमी स्वाहाः ।

विधि :—इस विद्या से २१ बार धूल याने मिट्टी को मन्त्रित करके दशों दिशा में फेंक देने से मार्ग में किसी प्रकार का भय नहीं रहता है । संघ का रक्षण होता है । कुल का रक्षण होता है । गण का रक्षण होता है । आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधुओं का और

सर्व साधियों का रक्षण होता है। इससे सर्व प्रकार का उपसर्ग दूर होता है। मन्त्र पढ़ता जाय और मन्त्रित घूली को फेंकता जाय।

ॐ नमो भगवतः अरहन्तः अजित् जिह्वास्स सिद्धिस्तु मे, भगवद् महद् महाविद्या अजित् अपराजित् अनिह्य महाबले तोग सारे ठः ठः स्वाहा।

विधि:—इस विद्या का उपवास पूर्वक ८०० बार जाप्य करे तो दारिद्र्य का नाश, व्याधियों का नाश, पुत्र की प्राप्ति, यश की प्राप्ति, पुण्य की प्राप्ति, सौ अग्य की प्राप्ति, सम्पत्ति वर्ग में प्रीति की प्राप्ति होती है।

ॐ नमो भगवतः संभवस्स अपराजितस्स सिरस्याउवज्जस्तु मे भगवद् महद् महाविद्या संभवे महासंभवे ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि:—चतुर्थ स्थान याने दो उपवास करके जपे साढ़े बारह हजार मन्त्र, फिर इस मन्त्र से भोजन अथवा पानी अथवा अर्क अथवा पुष्प या फल को ऋतुसंयं (आठ सौ बार) मन्त्रित करके जिसको दिया जायगा वह वशी हो जायगा।

ॐ नमो भगवतः अभिनवणस्य सिद्धिस्तु मे भगवद् महद् महाविद्या-नंदणे अभिनन्दणे ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि:—दो उपवास करके फिर पानी को ऋतुसंयं (आठ सौ बार) जाप मन्त्रित करके जिसका मुख मन्त्रित पानी से धुलाया जायगा वह वशी हो जायगा।

ॐ नमो भगवतः अरहन्तः सुमहस्स सिद्धिस्तु मे भगवद् महद् महाविद्या समणे सुमणे से सोमणे से ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि:—दो उपवास करके ऋतुसंयं (आठ सौ बार) मन्त्र अरहन्तः प्रभु के सामने कोई भी कार्य के लिये अथवा दुकान की वस्तुओं के लिए जाप करके सो जावे तो भूत, भविष्यत, वर्तमान ये क्या होने वाला है, जो भी कुछ मन में है, सबका स्वप्न में मालूम पड़ेगा, सर्व कार्य सिद्धि होगी।

ॐ नमो भगवतः अरहन्तः पउमप्पहस्स सिद्धिस्तु मे भगवद् महद् महाविद्या, पउमे, महापउमे, पउमुत्तरे पउमसिरे, ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि:—इस मन्त्र को भी ऋतुसंयं (आठ सौ बार मन्त्र) दो उपवास करके करने वाले मनुष्य के सर्वजन इष्ट हो जाते हैं याने सर्व लोगों का प्रिय हो जाता है।

ॐ नमो भगवतः अरहन्तः सुपासस्स सिद्धिस्तु मे भगवद् महद् महाविद्या, पस्से, सुपस्से, अइपस्से, सुहपस्से ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से अपने शरीर को मन्त्रीत करने से जावे तो स्वप्न में शुभाशुभ का ज्ञान हो। मार्ग चलते समय स्मरण करने से सर्प, व्याध्र, बोर, आदिक का भय नहीं रहता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ, चंदप्पहस्स सिज्झण्यऊ में भगवइ महइ महाविद्या चंदे चंदप्प में अइप्पमे महाप्पमे ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि :—दो उपवास करके इस मन्त्र को आठ सौ बार जाप करके पानी सात बार मन्त्रीत करके उस पानी से जिसका मुँह धुलाया जायगा वह सर्वजन का इष्ट हो जायगा अथवा पानी का २१ बार मन्त्रीत कर स्त्री या पुरुष को देने से चन्द्र के समान सर्वजन का इष्ट होता है।

मन्त्र : ॐ नमो भगवऊ अरहऊ पुण्णदंतास्स सिज्झण्यऊ में भगवइ महइ महाविद्या पुण्फ, महापुण्फे, पुण्फमुइ ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को दो उपवास करके आठ सौ बार मंत्र जपे फिर इस मन्त्र से फल को अथवा पुण्फ को २७ बार मन्त्रीत कर जिसको दिया जाय वह वश में हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ सियलजिणस्स सिज्झण्यऊ में भगवइ महइ महाविद्या सीयले२ पसीयले पसंति निव्वुए निव्वाने निव्वुएस्सि नमो भवति ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि :—इस मंत्र को दो उपवास करके २१ बार पानी मन्त्रीत करके ग्रहों के रोग पर या सिरोरोग, पर आधा शिशी रोग पर, फोड़ा फुन्सी के रोग पर परीक्रमा रूप मन्त्रीत पानी को छोड़के तो रोग अच्छा हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ सिद्धसस्स सिद्धसव्याउ में भगवइ महइ महाविद्या सिज्जसे २ सेयं करे महासेयं करे पभं करे सुप्पभं करे ठः स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को उपवास पूर्वक रात्रि में पुष्पों से आठ सौ जाप करे। भूतेष्टायां रात्रौ सर जो बलि कर्म (साष्टशत) जापम्। कुर्यान्मोच्यं चबहिः स स्वस्थ इन्द्रराशि विद्या, उपद्रवं जगलं चाउदिसे सुगहेयव्वं सुद्धवलि कम्मं कायव्वं तवाहियं च चउदिसि परिकव्व कम्म कायव्वंतऊ मुहं होइ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ वासुपुज्यस्स सिज्झण्यऊ मे भगवइ महइ महाविद्या वासुपुज्ये २ महापुज्ये रुहे ठः स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को उपवास पूर्वक आठ सौ बार जप करके सो जावे फिर जो स्वप्न में शुभाशुभ दोखेगा, वह सब सत्य होगा। जं किंचि अप्पण द्ठाए पर द्ठाएवा नाउकामेणं

सेमंवा भयंवा नासंवा डमरवा मारिवा दुभिक्षंवा, मासयंवा, असासयवा जयंवा
अन्नयंवा पडिलेहिऊ कामेण अप्पाण सत्त वारं परिजवेज्जण सोयध्वं जं जंपासइ
सुमिणे तस्स फलं तारिस्स होइ ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ विमलस्स सिज्जण्णाय मे भगवइ महइ महा-
विद्या असले २ विमले कमले निम्मले ठः ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—सप्ताभि मन्त्रित सुमे प्रतिमा स पूज्य निष्ठानि स्व कृते । तत्रस्थ पश्यति यः सत्यार्थं
स इति विमलजित विद्या ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अणंत जिणस्स सिज्जण्णाय मे भगवइ महइ महाविद्या
अणंत केवलणाणे अणं पद्मवनाने अणंते गमे अणंत केवल दंसणे ठः ठः
ठः स्वाहा ।

विधि :—शाम्भारम्भे जपत्वा साष्टजन शयन पण्यम्बप्ने । पश्यति तत्सर्वं भिद तथैव तदन्त
जितविद्या ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ धम्म जिणस्स सिज्जण्णाय मे भगवइ महइ
महाविद्या धम्मे सधम्मे धम्मे चारिणी धम्म धम्मे उवण स धम्मे ठः ठः
ठः स्वाहा ।

विधि :—शिव्याचार्यावर्य कार्यालग्नं जान्ति मा विद्या । पश्यति जृणानि यदसी तत्पश्य सर्वमेव
पचदशी । कार्यारभे शिष्य श्रवणो विद्याभि मन्त्रितोऽष्ट जगम् । कार्यास्तः पारदर्शी,
विशेषतोऽप्य नशन ग्राही ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ संतिजिणस्स सिज्जण्णाय मे भगवइ महइ महा-
विजा संति संति पसंति उवसंति सध्वापावं एस मेहि स्वाहा ।

विधि :—इम मन्त्र का प्राठ सी वार जाण कर धूप गंध पुष्पादिक को मन्त्रीन करके धूप देने में,
ग्राम, नगर, देश, पट्टण में ग्रथवा स्त्रीघो में वा पुरुषों में वा पशुघो में का, मारि
रोग नष्ट हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ कुंथुस्स सिज्जण्णाय मे भगवइ महइ महाविद्या
कुंथुडे कुंथे कुंथुमइ ठः ठः ठः ॐ कुंथेश्वर कुंथे स्वाहा ।

विधि :—इम मन्त्र में धूलि को सात बार मलिन कर जहाँ डाल देवे वहाँ के सर्वज्वर सर्व रोग
नष्ट हो जाते हैं ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ अरस्स सिज्जण्णाय मे भगवइ महइ महाविद्या
अरणि आरिणी अरणिस्स पणिपले ठः ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—राजकुलं, देवकुलं वा देवा गन्तु मिच्छतां विद्याम् । परि जप्यपय, पेय वक्त्र वाऽभ्यज्य गद्य तैलेन । वदध्वा शिरसि शिक्षा वा सिद्धार्थान् वा स्वनिवसनं प्राप्ते । गन्तव्यं, यत्रेष्टं सुभग स्तत्रेति चन्द्रगज विद्या ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ मल्लिस्स सिज्झण्यउ में भगवइ महइ महाविद्या मल्लोसु मल्ली जय मल्लिपडि मल्लि ठः ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र मे वस्व माला अलंकारादिक मन्त्रीत करके जिसको दिया जावेगा वह वश मे हो जायगा ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ मुणिसुव्यस्स सिज्झण्यउ मे भगवइ महइ महाविजा सुव्वए अणुव्वए महव्वए व एमइ ठः स्वाहा ।

विधि :—व्याघ्र, चित्रक, सिंहादेः कस्य चिन्मास भक्षण । दग्धवा मास च केशिवा तद्रक्षा अक्षिताङ्गुलि । यस्यनाम्ना जपेद् विद्यामिमामष्टोत्तर शतम् । सहस्र वास वश्य स्यादिनि मुञ्चते विद्या ॥

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ नमिस्स सिज्झण्यउ में भगवइ महइ महाविद्या अरे रहावत्ते आवते वत्तेरिट्ठनेमि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र मे सात बार कल पुष्प वा अलंकारादि मन्त्रीत करके जिसको दिया जाय वह वश मे हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ अरिट्ठनेमोस्स सिज्झण्यउ में भगवइ महइ महाविजा अरेरहावते आवत्ते वत्तेरिट्ठनेमि स्वाहा ।

विधि :—हय, गज रथ नाव गाण्डणताभि मन्त्रितम् । आरोहेद् वाहनवश्य वैरी वा वशगो भवेत् ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ पासस्स सिज्झण्यउ में भगवइ महइ महाविजा उप्पे महाउप्पे उप्पज्जे पासे सुपासे एसस माणि स्वाहा ।

विधि :—देश पुरग्रामादे कोष्ठागारस्य धूप बलि कर्म । कार्यं शिव च सृज्या शान्ति, बहूधनमपधनस्य । द्विपद चतुष्पद षड् भिमन्त्रणाद् वश्यमपधनं निहितम् । सुपापयुधि विजय स्वार्थं कृतिः पार्श्वं विधेय ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ महइ महावीर वद्धमाण सामिस्स सिज्झण्यसउ में भगवइ महवइ महाविज्या वीरे २ महावीरे सेण वीरे जयंते अजिए अपराजिए अणिहए स्वाहा ।

विधि :—सुवासन नया जपान् शिष्य मुर्ध्नि गुरु क्षिपेत् । स्वकार्यं पारग स स्यादपविध्न मिहान्तिमा ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ बहूड माणाय सुर असुर तिलोय पूजिताय वेगे
महवेगे निवूँवरे निरालंबणे बिटि २ कुटि २ मुवरे पबिसामि कुहि २ उदरेतेपे
बिसिस्सामि अंतरिऊ भवामि मामेपावया ठः ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—पथियुद्धे द्युते वा स्मरणाद पराजितोऽथ चौराणाम् । व्याघ्रादीनां भीतो मुष्टेर्बधे
भवति शान्तिः ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ उसहस्स चरमबद्धं माणस्स काल संबोवस्सप, ह समणस्स,
विभां पुरीसस्स, सव्वपावाणं हिंसा, बंधंक रित्रा जे अठ्ठे सच्चे भूए भविस्से
से अठ्ठे इह वीसउ स्वाहा सवेसुं उं स्वाहा । कारो कायव्वो च उथेण साहणं
कायव्वं सव्वासि पंचमंगल नमुक्कारं करिता तऊ सव्वाऊ विभाऊ ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ इमं विभां पउं भामि ।

विधि :—सामे विजाए सिध्यऊ बार २ बार जाप्य ज जस्सतिथयरस्य जम्म नखतं तमिचेवतम
तवं कायव्व सव्वाऊ अनुसय जापेण ।

विधि :—ये चतुर्विंशति विद्या है इन विद्याओं का करने वाला गर्व से रहित होना चाहिए ।
शान्त चित्त होना चाहिए । ये चौबीस तीर्थंकर के मंत्र तीर्थंकर प्रभू के जो जन्म नक्षत्र
हो उस रोज से उसी तीर्थंकर के मन्त्र जाप करना चाहिये कौनसा दिन जिस तीर्थंकर
का जन्म नक्षत्र है ये अन्यत्र देखकर कार्य करे ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं द्रूं द्रः द्रावय २ हूं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से तेल को १०८ बार मंत्रित करके देने से सुख से प्रसव होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं नमः ।

विधि :—विधि पूर्वक सवा लाख जाप करके एक माला नित्य फेरने से सर्व काय सिद्धि होती
है । सर्व रोग शांत होते हैं । लक्ष्मी की प्राप्ति होती है इस मन्त्र को एकाक्षरी विद्या
कहते हैं । सात लक्ष जप करने से महान विद्यावान होता है ।

मन्त्र :—ॐ अंषिक्खि महाविसेण बिष्णु चक्रेण हूं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से चूर्ण २१ बार मंत्रित करके (सखानिकयोष्टि विकके कर्त्तव्ये) तो आँख
रोग शांत होता है ।

मन्त्र :—ॐ कालि २ महाकालि रौद्री पिंगल लोचनी सुलेन रौद्रोपशाभ्यंते उं
ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से सात बार (घरट्ट पुट लूहण) वस्त्र में बांधकर डोरे से, वामी भ्राँख दुखे तो दक्षिण की तरफ बाँधे और दक्षिण की तरफ आँख दुखे तो वामी की तरफ बाँधे, तो भ्राँख की पीड़ा शांत होती है ।

मन्त्र :—ॐ शांते शांते शांति प्रदे, जगत् जीवहित शांति करे, ॐ ह्रीं भगवति शांते मम शांतिं कुरु २ शिवं कुरु कुरु, निरुपद्रव कुरु कुरु सर्वभय प्रशमय २, ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रं : शांते स्वाहा ।

विधि :—स्मरण मात्र से शांति ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ वद्धमाणस्स वीरे वीरे महावीरे सेणवीरे जयंते अपराणिए स्वाहा ।

विधि :—उपाध्यायों के वाचन समय का मन्त्र है, परम्परागत है । प्रातः अवश्य ही २१ बार या १०८ बार स्मरण करना चाहिये, फिर भोजन करना चाहिये । इस मन्त्र के प्रभाव से सौभाग्य की प्राप्ति, आपत्ति का नाश, राजा से पूज्यता की प्राप्ति, लक्ष्मी की प्राप्ति, दीर्घायु, शाकिनी रक्षा, सुगति । (स्याद्रूवान्तरे चेन्न करोति तदोपवासोहृदः शक्त्यु गुरु पोवादण्डः जावन्नीव कालावधि अक्षर २७ मन्त्रेसति—मन्त्रो न कथ्याप्यग्रं कथनीयः गुरु प्रसादात् सर्वं सफलं भवति ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीया महाणस्स तर तर ॐ अक्खीण महाणस्स स्वाहा ॐ क्षीं क्षः क्षः क्षः यः यः यः लः ह्रं फट् स्वाहा ।

विधि :—अनेन वा साक्षता अभिमन्त्रय गृहादौ प्रशिप्ता दोषोनुपमंयन्ति (इस मन्त्र से अक्षत मन्त्रीत कर घर के अन्दर फेंक देवे तो सर्व दोष नाश हो जाते हैं ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ संतिजिणस्स सिज्जण्यउ मे भगवइ महाविद्या संति संति पसंति उवसंति सव्वपायं पसमेउ तउसव्व सत्ताणं द्वय चउप्पयाणं संति देशेगामागर नगर पट्टणखेडेवा पुरिसाणं इत्थीणं नपुंसगाणी वा स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से धूप १०० बार मन्त्रीत करके घर में अथवा देवदत्त के सामने उस धूप को खेने से भूत प्रेत डमर मारी रोगों की शान्ति होती है ।

मन्त्र :—ॐ नमो अणाइ निहणे तित्थयर पगासिए गणहरेहि अणुमन्निए द्वादशांग चतुर्दश पूर्वं धारिणी श्रुतिदेवते सरस्वति अवतर अवतर सत्यवादिनि ह्रं फट् स्वाहा ।

विधि :—अनेन सारस्वत मन्त्रेण पुष्पाकादी प्रारम्भ क्रियते प्रथमं मन्त्र पठित्वा ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं, ॐ ह्रीं नमः कृत्वासे से क्षमोशत सहस्र कोटी लक्षसिंह बाहने फं सहस्र वदने ह्रीं महावले ह्रीं अपराजिते ह्रीं प्रत्यंगिरे ह्रीं परसेन्य निर्नाशिनि ह्रीं पर कर्म विधवासिनि ह्रीं परमन्त्रो छेदिनियः सर्वशत्रू धाटिनि ह्रीं सर्व भूतदमनि वः सर्व देवान बंधय बंधय ह्रीं फट् सर्व विघ्नान छेदय छेदय सर्वानर्थान निकृतय निकृतय क्षः सर्व प्रदुष्टान् भक्षय भक्षय ह्रीं ज्वालाजिके ह्रीं करालव के ह्रीं पर यन्त्रान स्फोटय स्फोटय ह्रीं वज्रशृङ्खलां श्रोतय श्रोतय अमुर मुद्रां द्रावय द्रावय रोद्रमूर्त्त ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे मम मनश्चितित मंत्राय कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—२५ मन्त्र का स्मरण करने मात्र से सर्व कार्य की सिद्धि हो जाती है ।

मन्त्र :—ॐ विश्वरूपमहातेज नील कंठ विष क्षयः महाबल त्रिसूलेनगंडमाला छिद्र छिद्र निद्र निद्र स्वाहा ।

विधि . इस मन्त्र से आकड़े का दूध और तिल का तेल २१ बार या १०८ बार मन्त्रीत कर गण्डमाल के ऊपर लगावे तो गण्डमाल का रोग नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रः श्रीशेषराजाय नमः हं हः हः वं क्रे क्रे सः स्वाहा ।

विधि — यह धरणेन्द्र मन्त्र है, इस मन्त्र को कोई भी महान आपर्नि के समय दम हजार जाप करे तो अर्माष्ट फल दायक होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो महेश्वराय उमापतये सर्व सिद्धाय नमोरे वार्चनाय यक्ष सेनाधिपतये इदं कार्य निवेदय तद्यथा कहि कहि ठः ठः ।

विधि .—इस मन्त्र की क्षेत्रपाल की पूजा करके क्षेत्रपाल के सामने १०८ बार जाप करे फिर शुभल का २१ बार मन्त्रीत करके, स्वयं को धूप का धूवा लगाकर सोवे, तो स्वप्न में शुभाशुभ मालूम होता है ।

मन्त्र :—ॐ शुक्ले महाशुक्ले अमुक कार्य विषये ह्रीं श्रीं क्षीं अवतर अवतर मम शुभाशुभं स्वप्ने कथय कथय स्वाहा ।

विधि —काच कूर्च युक्त प्रधान श्रीवर्ण्ड नालिन्य मिवनि काष्ठ पट्ट के जाती पुष्प १०८ जाप्यो देय स्वप्ने शुभाशुभ कथयति ।

मन्त्र :—ॐ जंघ परिश्रम परिश्रम स्वाहा ।

विधि :—हस्त प्रमार्गं शर शहीत्वा रघणि ताडयेत् दिन २१ यावत् ततो रघणिर्नश्यति ।
हस्त प्रमाण शर (वाण) को लेकर इस मन्त्र से २१ दिन तक रघणि वायु का ताडन करने से रघणिवायु नष्ट होती है ।

मन्त्र :—ॐ शुक्ले महाशुक्ले ह्रीं श्रीं क्षीं अवतर अवतर स्वाहा ।

(सहस्रं जाप्यः पूर्व १०८ गुणते स्वप्ने शुभाशुभं कथयन्ति ।)

विधि :—इस मन्त्र को १००८ बार जाप करके, फिर सोने के समय १०८ बार जाप करके सो जावे तो स्वप्न में शुभाशुभ मालूम होता है ।

मन्त्र :—ॐ अंगे कुसंगे कुसंगे मंगे फु स्वाहा (बार २१ जलमभि मन्थपिवेत् शुलं नाशयति ।)

विधि :—इस मन्त्र में जल २१ बार मन्थित करके उस जल को पी जावे तो शूल रोग नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं कृष्ण वाससे सुधम सिंहबाहू ने सहस्र वदने महाबले प्रत्यंगिरे सर्वसैन्य कर्म त्रिध्वंसिनी परमंत्र छेदनी सर्वदेवाणाणी सर्वदेवाणाणी वधि नाधि निहंतय निहंतय ज्वालाजिह्वे कराल चक्रे ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे स्वाहा स्वाहा स्वाहा शेषाणंद देवकेरी आज्ञाफुरइ ४ घट फेरण मंत्र ।

विधि :—इस मन्त्र की विधि नहीं है ।

**मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अष्टादश-
वृश्चिकाणां विषं, हर हर, ओं कूं ह्रां स्वाहा ।**

विधि :—इस मन्त्र को पढ़ता जाय और विच्छ काटे हुए स्थान पर भाड़ा देना जाय तो विच्छ का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ शिवरि फुट् स्वाहाः ।

विधि :—स्ववाकु प्रमाजयेत् दाहस्य विष मुत्रगति ।

मन्त्र :—ॐ खुलु मुलु स्वाहाः ।

विधि :—वृश्चिक विद्ध आत्मनः प्रदक्षणी कारयेत् ।

मन्त्र :—ॐ कंखं फुट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र की विधि नहीं है ।

मन्त्र :—ॐ काली महाकाली वज्रकाली हनधुलं श्री त्रिभुलेन स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से कर्ण (कान) का दर्द नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ मोक्षनी मोक्षय मोक्षणि मोक्षय जीवं वरदे स्वाहा ।

ॐ तारणि तारणि तारय मोक्षनि मोक्षय मोक्षणि मोक्षय जीवं वरदे स्वाहा ।

विधि :—बार ७ विच्छु (खजुरा) डंक अभिमन्थ्य, विष उत्तरति ।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रयस्य आवदुक दारुकविवदुक दारुकविवदु विवदु विवदु दारुक स्वाहा । १२ कटो० फे० मं० नमः क्षिप्रगामिनि कुरु कुरु विमले विमले स्वाहा ।

विधि :—इन मन्त्रों से पानी मन्थित करके जिसके नाम से पीये, वह मनुष्य वश में हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ अरपचन धीं स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को १०८ बार तीनो संध्याओं में स्मरण करने से महान् बुद्धिमान हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ श्री वद वद वाग्वादिनि ह्रीं नमः ।

विधि :—इस मन्त्र का १ लाख जाप करने से मनुष्य को काव्य रचना करने की योग्यता प्राप्त होती है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्री वद वद वाग्वादिनि भगवति सरस्वति ह्रीं नमः ।

विधि :—देव भद्र नित्यं स्मरणीयं ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं सरस्वत्यै नमः ।

विधि :—तीन दिन में १२ हजार जाप करके १ साला नित्य फेरे तो कवि होता है ।

मन्त्र :—ॐ कृष्ण विलेपनाय स्वाहा ।

विधि :—१०८ बार नित्य ही स्मरण करने से स्वप्न में अतीत अनागत वर्तमान का हाल मालूम पड़ता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पाशर्वनाथाय क्षल क्षल प्रज्वल प्रज्वल हूं हूं महर्गिनि स्तंभय स्तंभय हूं फुट् स्वाहा । अग्नि स्तम्भन मन्त्रः ।

विधि :—इस मन्त्र से ७ बार कजिकं (कांजी) मन्थित कर दीपक के सामने क्षेपन करने से दीपक बन्द हो जायगा । और शरीर में लगा हुआ ताप शान्त हो जायगा ।

मन्त्र :—ऐं ह्रीं सर्वमय विद्रावणि भयायैः नमः ।

विधि :— इस मन्त्र का स्मरण करके मार्ग में चले तो किसी प्रकार का भय नहीं होगा ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्रीं ह्रीं हूं फट् स्वाहा ।

विधि :— इस मन्त्र से सुपारी मन्त्रित करके जिसको दिया जाय वह वश में हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो सुमति भुषाब्जाय स्वाहा ।

विधि :— इस मन्त्र का स्मरण करके धर्म कथा करने से प्रमाणित शब्द होते हैं । (एवं स्मृत्वा धर्मकथां कुर्वन् गृहीत्वाकयोभवः) ।

मन्त्र :—ॐ नमो मालिनी किलि किलि सणि सणि स्वाहा ।

विधि :— इस मन्त्र को १२ हजार विधि पूर्वक जाप करके १०८ बार नित्य जपे तो सरस्वती के समान वाक्य होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ भू भूवः इवेत ज्वालिनी स्वाहा ।

विधि :— अग्नि उतारक मन्त्र ।

मन्त्र :—ॐ चिली चिली स्वाहा ।

विधि :— सपौष्पाटन मन्त्र ।

मन्त्र :—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनी क्लीं नमो ॐ अमृते अमृत वर्षणि पट् पट् प्लावय प्लावय ॐ हंसः ।

विधि :— अग्नि उतारण मन्त्र ।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रयाय अमले विमले वर कमले स्वाहा ।

(बार २१ तैलममि संध्य वापयेत् विशल्यामवति गुविणी)

विधि :— इस मन्त्र से तेल २१ बार मन्त्रित कर गविणी स्त्री को देने से शीघ्र कष्ट से छूट जायगी ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ चंदप्पहस्तसिण्यउ मे भगवइ महइ महाविज्या चंदे चंदे चंदप्पमे सुप्पमे अइप्पमे महाप्पमे ठः ठः स्वाहा । (लाभ करण मन्त्र)

विधि :— इस मन्त्र का नित्य ही १०८ बार स्मरण करने से लाभ होता है ।

मन्त्र :—ॐ हः हूं हूं हः । (शिरोत्ति मन्त्र)

विधि :— इस मन्त्र से मस्तक को मन्त्रित करने से सिर का दर्द मिटता है ।

मन्त्र :—ॐ भूधर भूधर स्वाहा । (खड्गुरा मन्त्र)

विधि :—इस मन्त्र को पढ़ता जावे और नीम की डाली से झाड़ा दे तो बिच्छू का जहर नष्ट होता है ।

मन्त्र :—ॐ पद्मे महापद्मे अग्निं विध्यापय विध्यापय स्वाहा ।

(अग्नि स्तम्भन मन्त्र)

ॐ नमो भगवते पार्श्वचंद्राय गोरी गंधारी सर्व संकरी स्वाहाः ।

विधि :—(मुखाभि मंत्रेण १०८ बार प्रदियता) ।

मन्त्र :—ॐ हूं मम सर्वं दुष्टजनं वशी कुरु कुरु स्वाहा ।

(समरंड मरंमारि रोगं सोगं उवछवं सयलं घोरं चोरं पसमेउ सुविहि संघस्स संति जणो वार २१ शांतये स्मरणीया)

विधि :—युद्ध में मरने के समय में अथवा रोग, शोक, उपद्रव, सकल घोर चोरों के पास में पहुँच जाने पर अथवा चतुर्विध संघ की शांति के लिये शांत चित्त से २१ बार स्मरण करना चाहिये ।

मन्त्र :—ॐ ए हु सुउग्रइ सुरोए जिह्मंति तिमिर संघायां अणलिए वयणा सुद्धाए गंतरमापुणो एहि हं फुट स्वाहा । (एकान्तर उच्चर विद्या) ।

विधि :—इस मन्त्र से एकान्तर उच्चर वाले की झाड़ा देने से उच्चर दूर हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे महाविद्ये येनकेन चिन्मभोपरि पापं चितितं कृतं कारितं अनुमतं वातत्पापं तस्यैव मस्त के निपत्तउ मम शांति कुरु कुरु पुष्टिं कुरु शरीर रक्षां कुरु कुरु ह्री प्रत्यंगिरे स्वाहा । ॐ नमो कृष्णस्य मातंगस्य चिरि अहि अहि अहिणि स्वाहा । (अंगुल्यागृह्यते भूतं नाशयति)

विधि :—(इस मंत्र की विधि उपलब्ध नहीं हो सकी है) ।

मन्त्र :—ॐ चलमाउ एया चिटि चिटि स्वाहा । (कलवाणि मन्त्र)

विधि :—(इस मंत्र की विधि उपलब्ध नहीं हो सकी है) ।

मन्त्र :—ॐ विमिचि भस्मकरी स्वाहा । (विद्युच्चिका मन्त्र)

विधि :—इस मन्त्र से खजली दूर होती है ।

मन्त्र :—ॐ चन्द्रमौलि सुर्यमिलि कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र में भाड़ा अथवा पानी मन्त्रित कर देता जावे तो दृष्टि दोष दूर होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो धम्मस्स नमो संतिस्स नमो अजियस्स इलि मिलि स्वाहा ।

(श्रव भ्रुति मन्त्र)

विधि :—अनेन मंत्रेण चक्षुः कर्णोच्चाधिरास्य आत्मविषये परविषये च एकांत स्थीतो यद्
श्रुणोति तत्सत्यं भवति ।

**मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं जिनचंद्राचार्यं नाम गृहणेण अष्टोत्तर शतव्याधीः
क्षयं यां तु स्वाहा । (रोग क्षय मन्त्रः अत्यथ कंडकं क्रियते ।)**

विधि :—इस मन्त्र से पानी से मन्त्रीत करके देने से १०८ व्याधी नाश को प्राप्त होती है, पानी
१०८ बार मन्त्रित करना चाहिये । जब तक रोग न जाय तब तक मन्त्रित पानी देवे ।

मन्त्र :—ॐ क्षः क्षः । (कर्णरोगोपशमन मन्त्र)

विधि :—विधि नहीं है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ठः । (अग्नि स्तंभन मन्त्र)

मन्त्र :—ॐ ह्रीं नमः श्रीं नमः ह्रीं नमः स्वाहा ।

विधि :—अनेन मंत्रेण कांगुणि (माल कांगुणी) म्रक्षीता दृचणका अभिमन्त्र्यते ततो गुडेन
धूपयति गुडे नैव सवेण्य भक्षते विद्या प्रभवति । इस मन्त्र से मालकांगुणी और
चना मन्त्रित उन चना और कांगुनी को गुड की धूप लगावे फिर चना और कांगुनी
को गुड से वेष्टित करके खावे तो बहुत विद्या आती है ।

**मन्त्र :—ॐ नमो भगवते आदित्याय असिमसि लुप्तोसि स्वाहा ।
(अर्कोत्तारण मन्त्र)**

विधि :—इस मन्त्र की विधि उपलब्ध नहीं हो सकी है ।

**मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रयाय मणिमद्राय महायक्ष से नापतये ॐ कलि
कलि स्वाहा ।**

विधि :—अनेन दतकाष्टं सप्त कृत्वोऽभि मन्त्र्य प्रत्युषे भक्षयेत् अयाचितं भोजन लभते । दंतवन
के (दातुन) सात टुकड़े करके इस मन्त्र से २१ बार मन्त्रीत करके प्रातः खावे याने
दातुन करे तो अनमाये भोजन मिलता है । याने भोजन के लिये याचना नहीं करनी
पड़ती है ।

मन्त्र :—निरु भुनि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से भाडा देने से दांत की वेदना शांत होती है ।

मन्त्र :—निकडरि स्वाहा । (विश्रुचिका मंत्र)

विधि :—इस मंत्र से राख (भस्म) मन्त्रीत करके खुजली पर लगाने से खुजली रोग शांत
होता है ।

मन्त्र :—ॐ अजिते अपराजिते किलि २ स्वाहा ।

विधि :—ऐषा विद्या बर, व्याघ्र, दंष्ट्राणां वधं करोति कंकरिकां सप्ताभिमंत्रतां कृत्वा दिक्षु विदीक्षु क्षिपेत् । इस मंत्र से कंकरियों को ७ बार या २१ बार मंत्रीत करके दिशा विदिशाओं में फेंकने से बर, व्याघ्र, दात वाले जीवों को बंद कर देता है । याने इनका उपद्रव नहीं होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे ममस्वस्ति शान्तिं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—यह मंत्र सिर्फ स्मरण करने से सर्व प्रकार की शान्ति होती है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अंबिके उज्जयंत निवासिनी सर्वं कल्याण ह्रीं कारिणी नमः ।

विधि :—इस मंत्र को स्मरण करने से सर्व प्रकार का कल्याण क्षेम होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं कपिले लंगेपुंरो वः महामेघ प्रवर्षणस्य अनेक प्रवीपनकं विज्ञा-
पय २ स्वाहा ।

विधि :—जाति पुष्पे १०८ मूल साधन एक विंशति कृत्वोऽभिमंत्रनेन अंबिलेन धारादीयते प्रदी-
पन कंन क्रामति ।

मन्त्र :—इंदते प्रज्वलितं वज्रं सर्वं ज्वर विनाशनं अनेन अभुक्तस्य ज्वरं वज्रेण
चूर्णयामि यदि अद्यापि कुर्वसो ।

विधि :—इस मंत्र से जल को २१ बार मंत्रीत करके पिलाने से ज्वर का नाश होता है ।

मन्त्र :—धुंसि चंचुलीलवं कुली पर विद्या फट् स्वाहा हूं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र का स्मरण करने से पर विद्या का स्तम्भन होता है ।

मन्त्र :—ॐ अप्रति चक्रे फट् विचक्राय स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र का स्मरण करने से सर्व कार्य सिद्ध होता है ।

मन्त्र :—ॐ हंसः शिव हंसः हं हं हं सः पारिरेहंसः अ (क्षि) छि जांगुली
नामेण मंतु असुणं तहं पटि जइ सुणइ तो कीडउ मरइ अहन सुणइ तो
सत्त वासाइं निधिसो होइ ॐ जांगुलि के स्वाहाः ।

विधि :—इस मंत्र से बालु २१ बार मंत्रीत करके सांप की वामी अथवा सांप के बिल पर डाल
देवे तो सांप बिल छोड़ कर भाग जायेगा ।

मन्त्र :—ऐं क्लीं ह्रौं रक्त पद्मावति नमः सर्वं मम वशीं कुरु-२ स्वाहा ॐ अलू
मलू ललू नगर लोकूराजा सर्वं मम वशीं कुरु-२ स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र से लाल कनेर के पुष्प २१ बार मंत्रीत करके नगर के प्रवेश के समय अथवा
राजा के सम्मुख अथवा प्रजा के सम्मुख डाले तो राजा प्रजा नगरवासी सब वश में
होते हैं ।

मंत्र:—ऐं क्ली ह्रौः कुडलिनी नमः ।

विधि : - इस मंत्र का त्रिकाल १०८ बार जपने से कुभाग्य भी सीमाग्य हो जाता है ।

मंत्र :—यनरस सयता वसाणं दिवुं दितस्स गोयम मुनिस्स उवगरणं बहु वेइ धणऊ धन्नाण भव्वाणं ॐ नमो सिद्ध चामुं डे अजिते अपराजिते किल कलेश्वरी हूं फट् स्वाहा या कुं फट् स्वाहा : इत्यस्य स्थाने स्फुट् विकट करी ठः ठः स्वाहा ऐसा भी होता है ।

विधि : - इस मंत्र का स्मरण करने से मार्ग का श्रम दूर होता है ।

मंत्र :—ॐ नमो भगवते क्रोध रुद्राय हन २ बह २ पच २ हहः स्वन्नकेण अमु-
कस्य गृहं नाशय स्वाहा ।

विधि —इस मंत्र से डोरा को २१ बार मन्त्रित करके ५ गांठ लगावे फिर उस डोरे को हाथ में बांधे तो सर्व उपद्रव नाश हो जाते हैं ।

मंत्र :—ॐ आं क्रों प्रों ह्रीं सर्वं पुरजनं राजानं क्षोभय-क्षोभय आनय-आनय ममपादयोः पातय पातय आकषिणी स्वाहा ॐ नमो सिद्ध चामुं डे अजिते अपराजिते किली २ रक्ष २ ठः ३ स्वाहा ॐ नमो पार्श्वनाथाय ॐ नमो अरहं-
तार्णं ॐ नमो सिद्धाणं ॐ नमो आयरियाणं ॐ नमो उवज्झायाणं ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं ॐ नमो णाणाय ॐ नमो वंसणाय ॐ नमो चरिताय ॐ ह्रीं त्रैलोक्यवंशकरी ॐ ह्रीं स्वाहा जइतः ।

मंत्र :—ॐ व्रजसेणाय महाविधाय देव लोकाउ आगयाय महंघति उं इंद जालु
विशि बंधं विदिशि बंधं आया संबंधं पायालं बंधं सर्वं दिशाउ बंधं पंथे कुप्पय
बंधं, पंथे बंधं चउप्पयं घोरं आसोविसं बंधं, जाब गंधी न छुटइ ताव ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—वार ७ जपित्वा विपरितं ग्रंथी बद्ध्वा वामदिशि कुर्यात् तांचल धुनित्पादौ वर्जयेत् ।

मंत्र :—ॐ नमो भगवऊ वड्डमाणस्स जस्सेयं चक्कं जलंतं गच्छइ संयलं महि-
मंडलं पयासंतं लोघाणं भूयाणं भूवणाणं जूए वारणे वारायं गणे वा जंभणे
धंनणे मोहणे सव्वसत्ताणं अपराजिऊ भवामि स्वाहा । ॐ नमो ओहिजिणाणं
नमो परमोहिजिणाणं नमो खेलोसहि जिणाणं नमो अरहंतानं नमो सिद्धाणं
ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं श्रीं धरणेन्द्राय श्री पद्ममावति सहिताय ॐ मारुत २ महाबल
स्वाहा । ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय शिरोमणि विद्रावकाय स्वाहा ।

विधि :—पुरुषस्य दक्षिणेन स्त्रियावासेन बाह्वीया शिरोस्ति मंत्र ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं पांचाली २ जो इमं विजं कंठे धरिइ सो जाव जीवं अहिणा नड
सिम्हइति स्वाहा । बार २१ गुण सुष्पते

मन्त्र :—ॐ चंडे फुः ।

विधि :—इस मंत्र को २१ बार पढ़कर फूक देने से बिच्छू का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—आदित्यरथ वेगेन वासुदेव बलेनच गुरुड पंक्षिनिपात्रेन भूभ्यां गच्छ २
महाबलः ॐ उनीलउ कविलउ भमरु पंखालउ रतउ विछिउ अनंस्तरि
कालउ एउ मंत्रु जो मणि अवधारइ सो विछिउ डंक उत्तारइ ।

विधि :—इस मंत्र रूपमणि को जो जो धारण करता है । याने स्मरण करता है वह बिच्छू के
डंक के जहर को उतार देता है ।

मन्त्र :—ॐ जः जः २ कबिसी गाइ तणइच्छाणि तिणिउप्पस्सो विछिणि पंचता
हांलंगिउ अठारह गोत्र विछिणि मणइनिसुणिहो विछियि विसुपायाल हं
हं तउ आवइ जिम चंडंतु तिम पंडंतु छइ पायालि अभिय नव २
कुंड सो अभिउमइ मंत्रिहि आणिउं डंकह वीघउं तइं विसु जाणिउ
ॐ जः जः ३ ।

विधि :—इस मन्त्र को पढ़कर झाड़ा देने से बिच्छू का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—सइविट्ठी कल्पालिणी श्री उभयिणी मडा चोरंती ब्रह्माधी बिलवंती
तासुपसा इं मइं शिषव द्वीवलवंति त्रिभुवणु वसिकरउ ।

विधि :—विधान रक्षा मन्त्रः । यहाँ अभिप्राय कुछ समझ में नहीं आया है ।

मन्त्र :—काला बोला पहिरणी वामइ हथि कपालु हउं शिव भवणहनि सरी को
मम चंपइ बार वाली कपाली ॐ फूट स्वाहा । (र. वि. मंत्र)

मन्त्र :—बंधस्स मुख करणी वासर जावं सहस्स जावेण हिलि २ विभाण
तहारिउ बल दप्पं पणासेउ स्वाहा ।

विधि :—कृष्ण चतुर्दशो को उपवास करके शुद्ध होकर रात्री में इस मंत्र का १००० जप करके
सिद्ध कर ले, फिर १०८ बार प्रतिदिन जपने से शीघ्र ही बंधन को प्राप्त हुए मनु का
छटकारा होता है तुरन्त ही बंधि मोक्ष होता है ।

मन्त्र :—ॐ विधुजिह्वे ज्वालासुखी ज्वालिनी ज्वल २ प्रज्वल २ धय धग
धूमांध कारिणि देवी पुरक्षोभं कुरु कुरु मम मन शिचतितं मंत्रार्थं कुरु
कुरु स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र को कपूर चंदनादि से थाली में लिखकर सफेद पुष्प अक्षतादि (मोक्ष पूर्व) से १००० पहले जाप करे फिर नित्य प्रति स्मरण मात्र से सर्व कार्य सिद्धि होती है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्री क्लीं क्लीं कलिकुंड स्वामिन् सिद्धि श्रियं जगद्गश मानय स्वाहा।

विधि :—इस मंत्र को कपूर चंदन केशरादि से पाटा के ऊपर लिखकर २१ दिन में प्रतिदिन १०८ बार अनशननादि तप पूर्वक जाप करे आदर पूर्वक आराधना करे फिर निश्चित रूप से अभिष्ट सिद्धि होगी। यह मंत्र चिनामणी है।

मन्त्र :—ॐ आं फ्रीं ह्रीं ऐं क्लीं ह्रूं देवि पद्मे मे सर्व जगद्गशं कुरु सर्व विघ्नान् नाशय २ पुरक्षोभं कुरु कुरु ह्रीं संबोधत्।

विधि :—इस मंत्र को लाल कनेर के फूलों से १२००० हजार जाप करे फिर चने के बराबर मधु मिश्रित गुगुल की गोली १२००० हजार घनाकर होम करने से मंत्र सिद्ध हो जायगा। इस मंत्र के प्रभाव से राजादिक वश में होते हैं।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्लीं पद्मे पद्मावति पद्म हस्तेपुरं क्षोभय क्षोभय राजानं क्षोभय क्षोभय मंत्रीक्षोभय क्षोभय क्षोभय हूं फट् स्वाहा।

विधि :—इस मंत्र को भी लाल कनेर के फूलों से और लाल रंग में रंगे हुण चावल से १२००० हजार जाप करके मंत्र को सिद्ध करे। यह मंत्र भी वशोक्कण मंत्र है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पिशाच रुद्राय कुरु ३ यः भंज भंज हर हर दह दह पच पच गृह्ण गृह्ण माचिरं कुरु कुरु रुद्रो आज्ञापयाति स्वाहा।

विधि :—इस मंत्र से गुगुल, हिंगु मर्षय (सरसों) साप की केचुलि इन सब को मिलाकर मंत्र से १०८ बार या २१ बार मंत्रोक्त करे फिर रोगी के सामने इन चीजों की धूँ देवे तो तत्क्षण शाकिन्यादि दुष्ट व्यंजरादि, रोगी को छोड़कर भाग जाते हैं और रोगी निरोगी हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ इटिमिटि मस्सं करि स्वाहा।

विधि :—इस मंत्र से पानी १०८ बार मंत्रोक्त करके पिलाने से पेट का दर्द शांत होता है।

मन्त्र :—ॐ सिद्धिः चटक धाउ पटकी फूटइ फूँ जु न बंधइ रकुन बहइ वाट घाट ठः ठः स्वाहा। त्रिममादेवी चंडिका लिशिखर लोही पूकु सकि जाइ हरो हरः देवी कामाक्षा की आज्ञा फुरे जइ इहि पिंडिरहइ पीडा करहि।

विधि :—इस मंत्र को सरणी कंडो की राख को १०८ बार मंत्रोक्त कर आँख पर लगाने से आँख की पीड़ा शांत होती है।

मन्त्र :—समुद्रं समुद्रं माहि दीपु दीप माहि धनाड्यु जी दाढ़ की डडखाड दाढ़
कीडउ नरबाहित अमुक तणइ पापी लीजउ ।

विधि :—इस मंत्र से ७ बार या २१ बार (उ जने) मंत्रीत करने से दाढ़ पीड़ा दूर होती है ।

मंत्र :—ॐ उतुंग तोरण सर्प कुंडली गतुरी महादेवुन्हाइ कसणउ छलि जाइ
वलिछीनउ मूसलिछीनउ कारवविलाइ छीनउ ऊगमुखी पाठ मुखीछीनउ
थावरउछीनउ कालहोडोछीनउ बराहीछीनउ बाठसीछीनउ गडुछीनउ गुब-
मुछीनउ चउरासी दोषछीनउ अठ्ठासीसय व्यछीनउ छीनी-छीनी मीनी-
मीनी महादेव की आज्ञा ।

विधि :—शरणी कंडे की राख को मंत्रीत करके उस भस्म को ३ या ५-या ७ दिन फोड़े के
ऊपर बांधने से दुष्ट स्फोटिकादिक का नाश होता है ।

मंत्र :—आवइ हणवंतु गाजंउ गुड डंड वाजामोर्गिउ आछा कंद रखंड हाथमोडंड
पायमोडंड चउथि काटइ चउथि उतारइ रक्त श्रुल मुख श्रुल सवे श्रुल
समेति घालिवा पुप्रंचड हणुमंत की शक्तिः ।

विधि :—इस मंत्र से पानी २१ बार मंत्रीत करके पिलाने से श्रीर श्रुल प्रदेश में लगाने से
ग्रजणी विश्वचिका श्रुलादि की शांति होती है । स्त्री के प्रसव काल में इस मंत्र से
मंत्रीत पानी पिलाने से तत्क्षण प्रसव होता है ।

मंत्र :—एडा पिगला सुख मिना जडा बीया नाडी रामु गतु सेतु बंधि सुख बंधि
मुखा खारु बंधि नव मास थंभू दशमइ मुक्ति स्तंभू ३ ।

विधि :—इस मंत्र से कन्या कनित सुत्र को स्त्री के बराबर ताप कर ले फिर ६ नो लड करके
२१ बार मंत्रीत करके उस डोरे को स्त्री की कमर में बांधे तो गर्भ का स्तंभन होता
है और नो मास की पूति हो जाने पर कमर में बंधा डोरा को खोल देने से तुरन्त
प्रसव हो जाता है ।

मंत्र :—ॐ चक्रेश्वरी चक्रांको चक्र वेगेन घटं भ्रामय-भ्रामय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रै
ह्रौं ह्रः जः जः ॐ चक्रवेगेन घटो भ्रामय भ्रामय स्वाहा ॐ अक्रुटि
मुखी स्वाहा ॐ हिमल बज्र स्वाहा ।

विधि :—घट भ्रामण मंत्र —

मंत्र :—ॐ नमो चक्रेश्वरी चक्र वेगेन शंख वेगेन घटं भ्रामय भ्रामय स्वाहा ह्रीं
ह्रीं होरी सणरीसो अदमदपुरी सोडग मएव्याइउ विड दक्षिण दिशा

हागी लगा महादेवी किली २ शब्दं जंकार रूपीं अवमद चकि छिल्ली २ मडाशिनि छिल्लि २ कंवोडती छिल्लि २ अवमद सामिणि छिल्ली हो ही होरी सणरी सो पर पुरुष दिवायर भंजइ मुद्रयसयाइ तिहि बारि हिपइ संताइ कंषइ बहुविह साघरत्ते कम्मइ परिहरहुं रायकं पावंती चिगि चिगाइ कंवोडी डाइणि फाडइ सिहोही होरी सणरीसोविष नासणि हर चकि छिल्ली मुदरशणि ।

विधि :—इस मंत्र से गुगल मंत्रीन करके धूप देने से जो भी बाधा होगी वह प्रकट होगी । अगर भूत की बाधा होगी तो आग में मंत्रीन गुगल को डालने से कड़वी बदहू आयेगी, चमड़े की गंध आये तो शाकिनी बाधा, पुसरभि की गंध से योगिनी बाधा ।

मंत्र :—ॐ नमो भगवइ कालि २ मरुलि काक चंडालि ठः ठः ।

विधि :— इस मंत्र को ७ बार मंत्रीन (जप) करके गोबर से मंडल करे ।

मंत्र :—ॐ नमो ब्रह्मदेवश्चराय अरे हरहि मरि पुंडरि ठः ठः ।

विधि :— इस मंत्र को १०८ बार जप कर (शान्योदन सत्कामधु घृत) मिश्रित करके पीड ३ स्थापन करे फिर प्रथम डभ द्वितिये मृदु तृतीये अगारा : कल्पनीया : प्रथमे काक पाते घोघं वर्षन्ति द्वितीये पक्षेण तृतीये न वर्षन्ति ।

मंत्र :—ॐ ब्रह्मणि विश्वाय काक चंडालि स्वाहा । (काकाह्वान मन्त्रः)

मंत्र :—काम रूपी विपइ संताडावइ परवइ अछइ कोकिलउ मइखु अजिउ सुको-
किलउ मइखु पहिरइ पाऊचइइ हांसि चइइ कंहा जाइ श्री उजेणी नगरी जाइ
उजेणी नगरीछइ गंध वाम सणुता हंछइ सिद्धवटु सिद्धवट हे द्विवल इछइ
चिहाचिहां दाडइ मडउं महाहाथि छइ कपालु कपालियंतु यंजि मन्त्रु मन्त्रि
कामतुं कामइ नामतुं नामइ ऐं क्लीं शिरु धूणय २ कटिकंपय २ नामि चालय
चालय दोषतणा आठ इ महादेवी तणे वाणे हणि हणि खिलि खिलि
मारि मारि भांजि २ वायु प्रचंडु वीरु कोकिल उभइर बु जः जः ह्रः ह्रः ।

विधि :—इस मंत्र को सात बार जपने से दोष नहीं (प्रभवति) प्रकट होगा ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय आत्म चक्षु पर चक्षु भूत चक्षु पिश्रुन चक्षु २
डाकिनि चक्षु २ साकिनी चक्षु सर्वलोक चक्षु माता चक्षु पिता चक्षु अमुकस्य
चक्षु वह वह पच पच हन हन हूं फट् स्वाहाः ।

विधि :—यह मन्त्र २१ जपे (कलवाणी मन्त्र) ।

मन्त्र :—ॐ चिकिचि णि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से भस्म (राख) को २१ बार मन्त्रीत करके चारों दिशाओं में फेकने से मशका नश्यन्ति ।

मन्त्र :—ॐ ठों ठों मातंगे स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से सरसों २१ बार मन्त्रीत करके डालने से चूहे नष्ट हो जाते हैं ।

मन्त्र :—ॐ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से कन्या के हाथ का सूत कता हुआ ७ बार मन्त्रीत करके खटिया के बांध देने से खटमल नष्ट हो जाते हैं ।

मन्त्र :—ॐ हर हर भमर चक्षु स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से सपारी मन्त्रीत करके २१ बार, फिर खावे तो दांत के कीड़े नाश होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ क्ल्मू क्लीं क्लें शिनि सर्वं दुष्ट दुरित निवारिणि हूं फट् स्वाहा ।

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणी अमृत बाहिनी अमृतं श्रावय २ सं सं
हं हं क्लीं २ क्लुं २ द्रां द्रीं दुष्टान द्रावय २ मम शांतिं कुरु कुरु पुष्टिं
कुरु कुरु दुःखमपनय २ श्री शांतिनाथ चक्रेन अमृत वर्षिणी स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार जपे । (कलवाणी मन्त्र)

मन्त्र :—ॐ समरि समरि सिद्धो समरो आतुरि आतुरि प्ररि प्ररि नाग वासिणि
तं अग्नि वासिणी आकासु बंध पातालु बंधु दिशि बंधु अवदिशि बंधु डाकिणि
बंध शाकिणि बंध बंध बंधेण लंकादही तेण हणु एण लोहेन ।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार जपने से सर्व उपद्रव शान्त होते हैं । (कलवाणी कृते)

मन्त्र :—ॐ हिमवंतं स्योसरे पाश्वे कठ कटी नाम राक्षसी तस्यानूपुर शब्देन
मकुणा नश्यंतु ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से कीड़ा-कीड़ी नाश होते हैं ।

मन्त्र :—युधिष्ठिर उवाचेत्पङ्क्तिं च अने वते कार्यं सिद्धे विसंवतो अजीन मातृ
किलिकिनिपातेसु गुदिनिपातेसु वातहरिसेसु पीत हरीसेसु सिलेसम हरिसेसु

ब्राह्मणो चत्वारो माथा भणन्ती काली महाकाली लिपिसिपि शारदा भयं पंथे ।

विधि :—शर्श उपशम मन्त्रः हरिश् स्थानेषु श्रूलोचारणे सति श्रूलोपशम मन्त्रः ।

मन्त्र :—आउभूत जीव आकाशे स्थानं नास्ति ॐ असि आउसा ॐ नमः
(त्रैयामन्त्र)

मन्त्र :—ऐं क्लीं ह्रूं (योनी, नाभि, हृदय, स्थाने वामा नां वश्यं ललाट मुख
वक्षसि नृणां वश्यं)

मन्त्र :—ॐ नमो चामुडा फट्टे फट्टेश्वरी ।

विधि :—अनैनतं लं, मुं ट्ठी, च वार ७ प्रदक्षिणा वर्त ७ वामा वर्तं वामि मंथ्यत्तत स्तंलेन
टिक्ककं करणीयं सुठयां चूर्णि कृत्यान् नस्युर्देया।

मन्त्र :—ॐ ऐं ह्रीं अंबिके आं क्रां द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः ह्यक्लीं नमः ॐ ह्रीं
हूं श्रीं स्वाहा ॐ हूं मम सर्वदुष्ट जनं वशी कुरु कुरु स्वाहा ॐ नमो
भगवत्ते रिषमाय ह्मि ह्मि ते ।

विधि :—इम मन्त्र को प्रातः १०८ बार स्मरण करने से मुन्यतादि सर्व रोग शांत होते है ।

मन्त्र :—ॐ सां सूं सें सः वृश्चिक विषं हर हर सः ।

विधि :—ग्रनेन बार २१ खटिकायामभि मंत्रितायां वृश्चिकं उत्तरति ।

विधि :—इस मन्त्र से खटिया को २१ बार मन्त्रित करने से विच्छु का जहर उत्तर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ ऋषभाय हनि हनि हता हनि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार या १०८ बार जपने से कषायेन्द्रिय का उपशम होता है,
विशेष ती निद्रा, तन्द्रा का नाश करने वाला है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलिकुंडे २ अमुकस्य आपात् रक्षणे अप्रतिहत चक्रे
ॐ ह्रीं बीरे बीरे जयबीरे सेणबीरे वदुमाणे बीरे जयंते अपराजिए हं फट्
स्वाहा ॐ ह्रीं महाबिद्ये आर्हसि भागवति पारमेश्वरी शान्ति प्रशान्ति सर्व-
क्षुद्रोपशमेनि सर्वभयं सर्वरोगं सर्वक्षुद्रोपद्रवं सर्ववेला ज्वलं प्रणाशय २
उपशमय २ सर्व संघस्य अमुकस्य वा स्वाहा ॐ नमो भगवऊ संतिस्स
सिष्यउ में भगवइ महाबिद्या संति संति पंसति पंसति उवसंति सब्बपावं-
पसमेउ सब्बसंताणं दुपय चउपयाणं संति देश गामा नगर नगर पट्टण खेडेवा
रोगियाणं पुरिसाणं इत्थीणं न पुंसयाणं अट्टसयाणि मंतिएणं धूप पुष्प गंध
माला ल कारेणं संति । कायव्वा निरुबसणं हवइ ३ ।

विधि :— ऐते स्त्रिभिरपिवासा जलं च प्रत्येक मण्डोत्तर शत वारान् अभिमन्त्र्या यदा त्वत्कत्सुकं भवति तदा प्रत्येकं वार २१ अभिमन्त्र्यः हस्तवाहनं च ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पादर्वनाथाय वज्र स्फोटनाय वज्र वज्र एकाहिकं रक्ष रक्ष द्वाहिकं रक्ष रक्ष त्र्याहिकं रक्ष रक्ष चातुर्थिकं रक्ष रक्ष बात ज्वरं पित्त ज्वरं श्लेष्म ज्वरं संक्षिपात्र ज्वरं हर हर आत्म चक्षु परचक्षु भूत-चक्षु पिशाच चक्षु शाकिनि चक्षु डाकिनी चक्षु माता चक्षु पिता चक्षु ठठारिच भारि व रुडिकल्लालि वेसिणि, छोपिणि, याणिणि, खत्रिणि, वंमणि, सु नारि सवैषां र्षिष्ट वंधि वंधि गतिं वंधि २ ऊडोसिणि, पाडोसिणि, घरवासिणि, वृद्धियुवाणि, शाकिणिनां हन हन बह बह ताडय ताडय भंजय भंजय मुखं स्तंभय २ इलि मिलि ते पादर्वनाथाय स्वाहा ।

विधि :—अनेन प्रत्येक गुणणा पूर्वं पचसप्तवा ग्रन्थयो वध्यन्ते ।

मन्त्र :—ॐ क्षु ।

विधि :—इस मन्त्र से माथे का रोग दुखता शान्त होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं चंद्रमुखि दुष्ट व्यंतर रोगं ह्रीं नाशय नाशय स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से २१ बार शक्त (तन्दूल) श्वेत मन्त्रीत करे दुष्ट व्यतर कृत रोग शान्त होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते सुप्रियाय कपिल पिंगल जटाय मुकुट सहस्र योजनाय आकर्षणाय सर्वशाकिनिनां विध्वंशनाय सर्वभूत विध्वंशनाय हृणि २ दहि दहि पचि पचि छेदि छेदि दारि दारि मारि २ भक्षि भक्षि शोषि शोषि ज्वालि ज्वालि प्रज्वालि प्रज्वालि स्वर्गिं इंद्रु पाताली वासुगि अहट्ट कोडि भूताबलि जोहि जोहि मोहि मोहि उच्चाटि उच्चाटि स्तिंभि स्तिंभि बंधि बंधि हूं फट् स्वाहा ।

विधि :—७ बार स्मरण करने से आशान प्रभवति ।

मन्त्र :—ॐ अंगे बंगे चिर चंडालिनी स्वाहा ।

विधि :—अनेन वार ७ अभिमन्त्रीतयो गोमूत्र घृष्टया गुटिकया चक्षु रंजने वेलोय शाभ्यति ।

मन्त्र :—ॐ सोळाऊ सारू छिन्नउं तडाकु छिन्नउं पडडाकु छिन्नउं गद होडी फोडी छिन्नउं रक्त फोडि छिन्नउं रक्तफोडि कउणि उपाइ देवी नारायणि उपाइछिन्नउं

भिन्नउं अर्जुन कइवाणि नार सिंह कइ मंत्री म्हारइ हाथि शरीर विसइ
नाथि चउसट्टि सह दोष नाथि वावसइ लोट नाथि आणि आणि कट्टि कट्टि
सोखाम्हारउ कुतउं कीजइ काटि फोडी पासिधरजइ अइसउ सोखा तुं वलि
वंतउ तायउ लप्रइछदुवियउ छदु इ फूटउफटु उ घाइ लप्रइ वायुसोखाचेट की
शक्तिए एमंत्रेन जाहि भस्मेन लहुइउ हंसा ठाउउ उच्चरइ संमुद्रहतीरि
पंखपसारइविसुहइ अइ अहभरइ शरीरउ सरुविसपसरु हंस समुजीव
परिवसइ विदूनास्ति विसुज फोडी छिन्नउं काली फोडी छिन्नउं कवलि
फोडि छिन्नउं लोही फोडि छिन्नउं रस्ती फोडी छिन्नउं लुय छिन्नउं पाणि-
यलुय छिन्नउं ॐ सुकवण सुकु ॐ इतइ संकरु म्च्छइ बह्या दो+इ उट्टु
उट्टु वइसु वइसु सुकइ करइ कूडि सिरी नाइं गयउ देउ जय जया विजया
जेण तेण पंथेण कट्टि धल्लिरिवेडा जइन कट्टि घल्ल इंत महादेव की भार
संकल तूपइ फोडी वंशवानर तोडी नोस्वरिहि किनीस्वार हू कि वंशवानरि
प्रज्वालउं वज्र स्वादियउं भूलि जिस्व धूलि छलि छिदि छपि कालु रुद्र
अग्नि उम्पुड हइ बइ इधु पिडिरह इज फोडी सिवनास्तिविसु ।

विधि :—अनेन मन्त्रेण लूनादि फोडी बार ७/२१ (उजिता श्रुप्यति) मंत्रित करने से लुता-
दिक से होने वाले फोडे—फुन्सी शात होते है ।

मन्त्र :—हूं खे रक्षे खः स्त्रीक्षे हूं फट् ।

विधि :—लक्ष जाप्यात् मोक्षः ।

मन्त्र :—ॐ इति तिति स्वाहा ।

विधि :—१०८ बार भणित्वा त्रिकाल हस्त वाहनं कार्य कारव विलाद पीडा नाशयति ।

मन्त्र :—लूण लूणा गरिहि उत्पन्नउं जोगिणिहिउपायउ जाहि गलिनि उरत्ता-
विकलिजमण्यु देखिन सकइ सुवामिय पातालि ।

विधि :—इस मन्त्र को ७ बार मन्त्रीत करके जिसके नाम से खावे वह वशी होता है ।

मन्त्र :—ॐ अरहंत सिद्ध सयोगि केवल स्वहा । ॐ आइच्छु सोमु मंगल बुद्ध
गुरु सुखको शनि छरो राहु केतु सव्वे विगहा हरंतु ममविग्र्यरोग चयं
ॐ ह्रीं अछुप्ते मम श्रियं कुरु कुरु स्वाहा आहिय सराहिया हः म्हुः
यः यों हु वः ऊहः ।

विधि :—इस मन्त्र से धूनी (मिट्टी) को ५ या ७ बार मन्त्रीत करके, दुष्ट के सामने डालने से दुष्ट उपशम हो जाता है और वश में हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ हः हः हंसः सः सः हंसः षषः हंसः रः रः हंसः झः झः हंसः जागु हंसः हः हः ।

विधि :—अग्नेन ऊं जनेन कल्पातीये च कालदण्डो जिवति एते स प्रम्ययाः ।

मन्त्र :—ॐ भगमालिनी भगवते ह्रीं कामेश्वरी स्वाहा ।

विधि :—वस्त्र, पुष्प, पान आदिक मन्त्रीत कर देवे तो वश में होता है ।

मन्त्र :—ॐ जंमे थंमे दुटुसंथं भय मोहय स्वाहा ।

विधि :—वासाधूपो जलवा २१ बार अभिमन्त्र्यते ।

मन्त्र :—ॐ आत्म चक्षु पर चक्षु भूत चक्षु शाकिनी चक्षु डाकिनी चक्षु पिसुन चक्षु सर्व चक्षु ह्रीं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से भाडा देने से तजर लगने वाले का दृष्टि दोष दूर होता है ।

मन्त्र :—ॐ वोट्टि विसुअ डोट्टि विसुथावर विसु जंगम विसु विसु विसु उपविसु उपविसु गुरु की आज्ञा परमगुरु की आज्ञा स्फुरउ आज्ञा स्फुरत्तर आज्ञा तीव आज्ञा तीव्रतर आज्ञा खर आज्ञा खरतर आज्ञा श्री का जल नाथ देव की आज्ञा स्फुरउ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से दृष्टि दोष उतारा जाता है ।

मन्त्र :—पाश्चोर्ववउ त्रिशुलधारी श्रुल भंजइ श्रुल फोडइ तासुलय जय ।

विधि :—इस मन्त्र से पेट पीड़ा का नाश होता है ।

मन्त्र :—हिमवन्स्यास्तरे पाश्चै अश्वकर्णो महाद्रुमः तत्रैव श्रूला उत्पन्ना तत्रैव प्रलयं गता ।

विधि :—शूल नाशन मन्त्र ।

मन्त्र :—ॐ पंचात्माय स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार मन्त्रीत करके, ज्वर ग्रस्त रोगी की चोटी में गांठ देने से ज्वर बन्धन को प्राप्त होता है ।

मन्त्र :—ॐ हूं मुकुन स्वाहा ।

विधि :— इस मन्त्र से शाकिनी दोष से रक्षा होती है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पाश्र्वनाथाय सर्वं भूत वशं कराय किनर किपुरुष गरुड
गंधर्व यक्ष राक्षस भूत पिशाच शाकिनी डाकिनीनां आवेशाय आवेशाय
कट्टय कट्टय धुमंय धुमंय पात्रय पात्रय शीघ्रं शीघ्रं हूं हूं ह्रीं हूं
ह्रीं हूं फट् ५ यः ५ वज्रं तुंडोमहाकार्ये वज्रं ज्वलित लोचन वज्रवंड
निपातेन चन्द्रहास खड्गेन भूभ्यांगच्छ महाज्वर स्वाहा । (ज्वर
वाहन क० मन्त्रः)

मन्त्र :—ॐ नमो अप्रति चक्रे महाबले महावीर्ये अप्रतिहृत शासने ज्वाला
मालोद्भ्रान्त चक्रेश्वरे ए ह्वे हि चक्रेश्वरी भगवति कुल कुल प्रविश
प्रविश ह्रीं आविश आविश ह्रीं हन हन महाभूत ज्वाराति नाशिनी
एकाहिक द्वाहिक त्राहिक चातुर्थिक ब्रह्मराक्षस ताल अपस्मार उन्माद
ग्रहान् अपहर अपहर ह्रीं शिरोमुंच २ ललाटे मुंच मुंच भ्रूजं मुंच २
उदर मुंच २ नाभिमुंच २ कटि मुंच २ जंघां मुंच २ भूमि गच्छ २
हूं फट् स्वाहा ।

विधि :—अनेन ज्वरिणि हस्त भ्रामयित्वा ज्वर प्रमाणात्रि गुण कुमारीसूत्र दवरक अमुं
बार २१ जपन वेला ज्वरे ग्रन्थि मात एकात रादी २ दत्वा स्त्रीणां वामे वाही
पुरुषस्य दक्षिणे बधयेत् प्रथम दवर करय कुं कुम धूप पूजा कियते ।

मन्त्र :—ॐ यः क्षः स्वाहा कुमारी सूत्रस्य नवतं तवः पुरुषमानेन गृहीत्वाऽनेनाभि
मंथ्यस गुडां गुटिकां कृत्वा भक्षयेत् घृतं वा अनेन बार १०८ अभिमंथ्य-
पिबेत् बालको नश्यति ।

मन्त्र :—काच माचि केण्डिचि स्वाहा ।

विधि :—अणेन चणका वर्षोपलानि वा सूइ वाडभि मंथ्यते कामल वातं नाशयति ।

मन्त्र :—ॐ श्री ठः ठः (हिडु की मन्त्रः)

मन्त्र :—ॐ सीय ज्वर उष्ण ज्वर बेल ज्वरबाय ज्वरपमूह रोगे व उवसमेउ
संतित्तिथयरो कुणउ आरोमं स्वाहा । (बार २१ स्मरणीया)

विधि :—इस मंत्र को २१ बार जाप करने से हर प्रकार के ज्वर नाश होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्तांजिनदत्ताचार्य मंत्रेण अष्टोत्तर शत व्याधि
क्षयं यातु ह्रीं ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र से कन्या कक्षीत सुत्र को ७ बड़ करके १०८ या ७ या २१ मंत्रोत्तर करके
डोरे में ७ गांठ लगावे फिर ज्वर पीड़ा प्रसीत व्यक्ति के हाथ में या कमर में बांधने
से ज्वर गड़ गुमडादि सर्व दोष नाश को प्राप्त होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलिकुंड स्वामिन् अ सि आ उ साय नमः ।

विधि :—इस मंत्र से कुमांगी कक्षीत सूत्र को १०८ मंत्रोत्तर करके और डोरे में ६ गांठ लगावे
और कमर में बांधे तो गर्भ रक्षा भी होता है और गर्भ मोचन भी होता है । ध्यान
रखे कि गर्भ रक्षा के लिये डोग मंत्रोत्तर करना हो तो मंत्र के साथ २ गर्भ रक्षा २
बोले और गर्भ मोचन करना हो तो गर्भ मोचन २ मंत्र के साथ बोले तो कार्य हो
जाता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो अरहंताणं ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो अइरियाणं ॐ नमो
उवज्झायाणं ॐ नमो सत्त्वसाहूणं एय पंचणमोक्कारो चउबीसमण्यउ
आयरिय परं परागय चंदसेण खमासमणाणं अत्थेणं सुत्तेणं दाढीणं
वत्तीणं जरक्खणाणं रक्खसाणं पिसायाणं चोराणं मुख बंधाणं दिट्ठी
बंधाणं पहार करोमि ह्रीं ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र से पानी मंत्रोत्तर करके उस पानी को दिशोदिशा में फेंकने से दृष्टि दोष
शान्त होता है ।

मन्त्र :—ॐ उजेणि पाटणि को कासु नामवाडहिउ रक्तवाउ छिदउ ताउ छिदउ
सूधउली छिदउ फोडि छिदउ फोसली छिदउ हृष्टि छिदउ शोफु छिदउ
थंथि छिदउ २ अनादि वचननेन छिदउ रामण चक्रेण छिदं छिदं मिद
मिद ठः ठः शिरोत्ती शिरोत्ति छिदउ स्वाहा ।

विधि :—इय मंत्र का बोलना जाय और हाथ में छुरी पकड़ कर उस छुरी के अग्र भाग को
छेदानुसार से धुमावे तो माथे का रोग, फोड़े, फुन्सी का रोग शान्त होता है, किन्तु
छुरी को फोड़े के ऊपर धुमाना पड़ेगा ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्वनाथाय सत्तकण विभूषिताय अपराजिताय
ॐ भ्रम २ रम, वज्र वज्र आकट्ट आकट्ट अमुकस्य सर्वग्रहान् सर्वं

उबरान् सर्वं भूतान् सर्वं लूतान् सर्वं वात्तान् सर्वोपद्रवान् समस्त
वेडाकिन्यो हन हन त्राशय त्राशय क्षोभय क्षोभय विज्ञापय विज्ञापय
श्री पाश्वनाथो आज्ञापयति ।

विधि :—घनेन बार ७/७ गुण्या ग्रन्थि दीयन्ते अयं मन्त्र खटिकया प्रथमं नव सरावे लेख्यः
द्वितीय शरावे चान विच्छिन्न खटिकया एवं विषं ठ कारत्रयं लिखित्वा त्रं शरावं
अधोमुखं उपरि निवेश्य कुमारी सूत्रेण द्वयमपि वेष्टयित्वा सु विधानेन मंत्रकाष्ठो
धरणीयं धूपादिना पूजनीयं नैऋतं च दातव्यं सर्वरोग निवृत्तिः ।

मन्त्र :—ॐ श्रीं ह्रीं रक्ते रक्ते स्वर! इदं कटोरकं भ्रामय भ्रामय स्वाहा ।

विधि :—श्रावक गृहानीत भस्मना बार ७ परिमार्जयित्वा मंडले स्थाप्यत्ते पूजादिकं
विधियते ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवतेन कृताय ध्यात्र चर्म परिवर्त्तित शरीराय यो यो वा
जपेयो भवति सोऽस्मिन्पात्रे प्रवेशय प्रवेशय सर सर प्रसर प्रसर चल
चल चालय चालय भ्रम भ्रम भ्रामय भ्रामय यत्र स्थाने द्रव्यं स्थापितं
तत्र तत्र गच्छ गच्छ स्वाहा ।

मन्त्र :—रागाइरिउ जई जं जए जिणाणं नमो महं होउ एवं ऊहि जिणाणं
परमोहीणं पितं पितहा एव मणं तोहीणं णंताणं तोहि ऊजयजिणाणं
नमो सामन्न केवलिणं भवा भव थाणते सित्ता सित्ता उपतव चरण
वारीण मेवमितो नमो महं होउ चउ दस दस पुब्बीणं नमो तहिक्कार
संगंमि ।

विधि :—सव्वेसि ए ए सि एवं किच्चा अहं नमुक्कारं जभियं विज्जं पउं जेसामे विद्यापसि
जिज्जजा ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ बाहुबलि स्तेहपगह सबणिस्सं ॐ वपुं वपुं निवपु
मप्रां गयस्स सया सोमेविय सोमण सेम हम हुरे जिन वरे नमं सामि
इरिकालि पिरिकाली सिरिकाली तह महाकाली किरियाए हिरियाएय
संग एतिविह कलियं चिरए सुहुसाहण्ये सव्वे सांहेते साहुणो वंदे ॐ किरि
किरि कालि पिरि २ कालि चसिरि २ सकालि हिरि हिरि कालिपयं
पिय सरिध सरे आयरिय कालि ८ किरिमेरि पिरिमेरि सिरि मेरि

सरिय होइहिर मेरि आयरियमेरिपय मपि साहंते सूरिणो सरिमो ६
इयमंत पय समेया धुणिया सिरमाण देव सूरिहि जिणसिद्ध सूरि
पमुहा वितुयुण ताएण सिद्धिपयं ॥१०॥

मन्त्र :—ॐ नमो गायमस्ससिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीणं महाणिसस्स पत्तं पूरय
पूरय स्वाहाः । ॐ विट्ठी मखा बिलट्ठी श्री उज्जेणीमडं चरंती
ब्रह्मधीय बलबंती तामु पसाइ अम्ह सिद्धि लद्धि बलं त्रिभुवनं
वशीकरं (आत्मरक्षा मन्त्र) उच्चिट्ठीवर प्रसादात् सर्व सिद्धी तरकणा
होइ शान्तिदेव की आज्ञा फुरइ ।

मन्त्र :—ॐ एकवर्ती सोसवर्ती पंच ब्राह्मण पंचदेव गरुडनी कंचुली पहिरइ
मनुनि भंतु बालु बालिहि विंछिय हवालह नवी प्रवेसु हाथ रक्खउ
पागरक्खउ बलिशंकर जीउ राखउ नारसिंहणउ बंधु पडइ श्री
स्वामिनीणी आज्ञा फुरइ ।

विधि :—वज्र तारावर प्रसादात् सर्वसिद्धि तरकणा होइ शान्ति देवतणी आज्ञा फुरइ ।

मन्त्र :—कालीनागिणी मुहिवसइ को बिस कटउ रखाइ अंगि अंगि अम्हहू बसइ
कोसंमुहउ न टाइ ।

विधि :—इस मन्त्र को ३ बार पढ़कर अपने वस्त्र के अन्तिम छोर पर बाये हाथ से गाँठ लगावे
तो मार्ग में किसी प्रकार का भय नहीं होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ गीयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीण महाणसस्स त्तर २
ॐ अक्खीण महाणसस्स स्वाहा ।

विधि :—स्मरण मात्र से ही लाभ करना है ।

मन्त्र :—ॐ अट्टे मट्टे चोर घट्टे सर्व दुष्ट भक्षी भोहीनी स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से पत्थरो को मन्त्रीत करके दशो दिशाओं में फेंकने से चोरों का भय
नहीं होता है ।

मन्त्र :—आइबंसे चाइ बंसे अच्चप्रलियं पच्चप्रलियं स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को स्मरण करने से मार्ग में भय नहीं होता है ।

मन्त्र :—ॐ धनु धनु महाधणु २ कट्टि उजंतसयं न वेइ आरोपित गुणं ।

विधि :—धनुसाग्रे लिखित्वा एतं मन्त्रं मध्येविन्यस्य वामपादेनाहत्य गच्छेत् चोर भय न भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं गरुड ह्रीं हंस सर्वं सर्प जातीनां मुख बंधं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को ७ बार स्मरण करने से १ वर्ष तक साँप नही काट सकता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं सर्वप्रहाः सोम स्यांगारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु
केतु सहिताः सानु प्रहा में भवन्तु ॐ ह्रीं असि आजसा स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का स्मरण करने से प्रतिकूल ग्रह भी अनुकूल हो जाते हैं ।

मन्त्र :—इदस्स वज्जेण विष्णु चक्रशतेन च काका सकुठारेण अमुकस्य कंठान्
छिद छिद निद भिद हं फट् स्वाहा । (कांठा मन्त्रः)

मन्त्र :—ॐ शंख्यं अरुणोदय अमुकस्य सूर्यावर्तं नाशय नाशय ।

विधि :—कालातिलराती करडिदभरक्त चन्दन फूलः २१ सूर्यावर्त नाशयति ।

मन्त्र :—ॐ फों फां वो मों मों क्षों यों फट् स्वाहा ।

विधि :—भूतागदंभादीनां डाकिनीनां भूतपिशाचानां सर्वग्रहाणां तथा ज्वर निवर्तको मन्त्रः ।

मन्त्र :—हिमवन्तस्थोत्तरे पाश्वे सरधानामयक्षिणी । तस्मान्नूपुरशब्देन विशल्या
भवति गुविणी ।

विधि :—इस मन्त्र को ७ बार जल मन्त्रीत करके गर्भिणी को पिलाने से प्रसुति सुख से
हो जाती है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्र ह्रः लूह लूह लक्ष्मी स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से चना को मन्त्रीत करके खिलाने से कामल रोग नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो सबराय इलिलिलि स्वाहा । (शिरोति मन्त्रः)

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्षीं क्लीं आवेशय स्वाहा ।

विधि :—अनेन मन्त्रेण सर्वं विषये हस्त भ्रामण । इस मन्त्र को पढ़ता जाय और रोगी पर
हाथ फेरता जाय तो सर्व प्रकार के विष दूर होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्षः उद्धं मुखी छिद छिद भिद भिद स्वाहा । (कलबाणी मन्त्रः) ।

मन्त्र :—हुं गर उप्परिरि सिमुयड सो अप्पुन्नु वराड तसु कारण भइ पाणिड
विन्नड फिहड सूरिय वाड ।

विधि :—इस मन्त्र से सूर्यवात दूर होता है ।

मन्त्र :—ॐ क्षीं क्षीं क्षीं हः ।

विधि :—इस मन्त्र से सिर दुखना ठीक होता है ।

मन्त्र :—ॐ वः ॐ सः ॐ ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से मक्खियां उपद्रव नहीं होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो नमस्त्रितये ऊंवर ऊंवर हर हर कर कर चर चर भूवि देसि
देसि दास पुरलु ठः ठः अनगार से बितेकुर्वरसंहर संहर सर्व भूत
निवारिणी क्लीं स्त्रीं क्लीं उत्तालि कालि कालि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से अपस्मार रोग दूर होता है ।

मन्त्र :—ॐ वज्र दंडो महाकाय वज्रपाणि महाबलः तेन वज्र दंडेन भूमिं गच्छ
महाज्वरे ॐ नमो धर्माय ॐ नमो संघाय ॐ नमो बुद्धाय ॐ मने
मने एकाहिक द्वाहिकः त्र्याहिक चातुर्थिक वेलाज्वर वातिक पेतिक
दलेध्मिकः । संक्षिपातिक सर्व ज्वरान् अमुकस्य ज्वरं बंधामि ठः ठः ।

विधि :—इस मन्त्र से फल व पाना मन्त्रीत कर खिलाने से बुबार दूर होता है ।

मन्त्र :—ॐ हिमवतस्योत्तरे पादर्वे कपिलो नाम वृश्चिकः तस्य लांगुल प्रभावेन
भूम्यां शत उ महाविष ।

विधि :—इस मन्त्र से बिच्छू का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ इवीं श्रीं प्रदक्षिणे स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से भी बिच्छू का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षे क्षः ।

विधि :—इस मन्त्र से भी बिच्छू का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्रीं ठः ठः ठः अष्टादश वृश्चिकाणां जातिं छिद छिद मिद मिद
स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से श्याडा देने पर बिच्छू का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ अमृत सालिनीं ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से बिच्छू का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ खुर-खुर्बन हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—२१ बार फेरा चउसट्टिदातव्याः ।

मन्त्र :—ॐ क्षिय पक्षियः ३ निर्विषी करणं स्वाहा ।

विधि :— इस मन्त्र से विच्छू का जहर उत्तर जाता है

मन्त्र :—ॐ हवये ठः ।

विधि :—इस मन्त्र का ललाट पर ध्यान करने से विच्छू का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ आंगि संकरुं पाच्छी संकरुं चालि संकरुं हउंसिउं सिउं संकरुं
जहरे वीछिय अचल सिचल बलसि चंडिकादेवी पूजपाइ टालसि
बृश्चिक खी भरिवि खप्परु रुहिर मदमांस कर कुकरु डोरिय उडक्कस
हुने उरुगही रउतहि चडि मोरिलु नीसरइ जोगिणी नयणाणां दुत
खिखिणि खिरत्तं पालुखिणि खखीछिय खः खः ।

विधि :—इस मन्त्र से भी विच्छू का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पाशर्वनाथाय अमुकस्य कंठकं छिद छिद भिद भिद
ठः ठः स्वाहा । यह कंठक मन्त्र है ।

मन्त्र :—ॐ ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार पढ़े ।

मन्त्र :—ॐ विसुं धरो ठः ठः ।

विधि :—इस मन्त्र से १०८ बार हस्त वाहन श्वान विषोत्तार मन्त्रों ।

मन्त्र :—ॐ विश्वरूप महातेजः २ स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र से अर्क विष दूर होता है ।

मन्त्र :—आदिउ आदितपुत्रु अर्क जट मउडधरु लयउ मुष्टिह घउयष्टि रेजः ।

विधि :—इस मंत्र से अर्क विष दूर होता है ।

मन्त्र :—हिमवंत नाम पर्वतो तिणिहासिउ हलु खेडइ सुराहिका पुत्र तसु पाणिउ
देसु उरुलहि सिज्जमइं सुज्जावत्तउ ।

विधि :—अनेन बार ७ उज्जनमपि क्रियते ।

मन्त्र :—गंग बहंती को घरइ कोतहि मतउहयि मइ बइ संदरु धांभिय उमहु
परमेसर हयि ता ती सोयली ठः ठः ।

विधि :—इस मंत्र से अग्नि स्तभन (भवति) होती है ।

मन्त्र :—कुंतिकरो पांच पुत्र पंचहि चडहि केवारी तिणु तैंडतह महिपडइ लोहिहि
पडइ ऊ सार तातोसीयली ठः ठः ।

विधि :—इस मंत्र से दिव्य अग्नि भी शांत होती है ।

मन्त्र :—लइ मबिया वामह (य) छम्मि कहिया जाहि वव दंतिए मवीय क्रुद सएण
भाणिय भार सहस्तेण बंधोहि वसपविस पडिय मच्चडिय ॐ ठः ठः
स्वाहा ।

विधि :—अनेन वार २१ कुसरणी अभिमंत्र्यते ।

मन्त्र :—हिमवंतस्योत्तरे पारे रोहिणी नाम राक्षसी तस्यानाम ग्रहणेन बलिरोगं
छिदामि पणरोगं छिदामि ।

विधि :—गल रोहिणी मंत्र ।

मन्त्र :—ॐ कंद मूले वारण गुण बाणधनुह चडावणु ह चडावणु निक्कवाय सर
जावन छिप्पइराब ।

विधि :—यह सरवायु मंत्रः । (इस मंत्र से धनुर्वात ठीक होता है)

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं क्लीं क्लीं कलिकुंड दंड स्वामिन् सिद्धि जगदृशं आनय
आनय स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र को प्रातः अवश्यमेव २१ या १०८ बार स्मरण करके भोजन करे तो इस मंत्र के प्रभाव से सौभाग्य की प्राप्ति आपदा का नाश राजा से पूजित लक्ष्मी का लाभ, दीर्घायुः शाकिनी रक्षा मुगति की प्राप्ति । यदि जप करते हुए छूट जाय तो उसका प्रायश्चित्त, एक उपवास करना चाहिए । अगर उपवास करने की शक्ति न हो तो जैसी शक्ति हो उस मुताबिक प्रायश्चित्त अवश्य करना चाहिए और फिर अपना प्रारम्भ करे । जीवन भर इस मंत्र का स्मरण करे और गोप्य रखे किसी को बतावे 'नहीं' तो देव गुरु के प्रसाद से सर्व कार्य स्वयं सफल हो जायेंगे । और मुगति की प्राप्ति होगी ।

मन्त्र :—ॐ रक्ते बिरक्ते स्वाहाः ।

विधि :—(छेति उतारण मंत्र)

मन्त्र :—ॐ रक्ते विरक्ते तखाते हूं फट् स्वाहा । (लाबणोत्तारण मंत्रः)

मन्त्र :—ॐ(प) क्षिपस्वाहायः हूं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से दुष्ट वर्ण क्षान्त होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ वंक्षः स्वाहा (गड मन्त्रः)

मन्त्र :—नीलोपातलि कविलज्ज वज्रुयज्ज कालज्जकुब्जज्ज विष्णुभाण्डु पृथ्वी तण इपापी
लीजिसिज्ज गिडिसि पावसि ठः स्वाहा ।

विधि :—अनेन बार २१ गडोभिमन्त्र्यते एतद्भिमन्त्रितेन भस्मनाऽपि ब्रह्मयते ।

मन्त्र :—ॐ उदितो भगवान् सूर्योपघात वृक्ष के तने आवित्यस्य प्रसावेन
अमुकस्याहं भेटकं नाशय नाशय स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र को कुंकुंमों से लिखकर कान पर बांधने से आधा शिशी सिर की पीड़ा दूर होती है ।

मन्त्र :—ॐ चिगि भ्रां इं चिगि स्वाहा ।

विधि :—अनेन मन्त्रेण दम्भुं, सुइ, जीवण इ हाथि लेवा इ जइ डावइ हाथि सरावु करोटी
वाधियते सुइ पुणपाणी माहि घाली जइ खाट हेटिठघरी जइ कामल-वाउ फोटइ
पडियउ दीसइ ।

मन्त्र :—ॐ रां रीं रुं रौं रं स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से कामल वात (उज्यते) नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ इटिल मिटिल रिटिल कामलं नाशय नाशय अमुकस्य हूं अप्रतिहते
स्वाहा ।

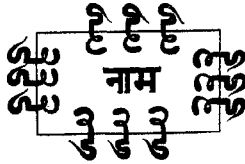
विधि :—इस मन्त्र से चना, कड़वा तैल, नमक, अजवाइन, मिर्च, सब चीज साथ में लेकर २१
बार मन्त्रीत करके खिलाने से कामल-वात नाश होता है ।

मन्त्र :—हिमवतं उत्तरे पार्श्वे पर्वतो गंध मावने सरसा नाम यक्षिणी तस्याने उर
सह्येण विशल्या भवति गुर्विणी ।

विधि :—इस मन्त्र से तेल २१ बार मन्त्रीत कर शरीर पर तथा मल स्थान पर लगाने से
गर्भिणी सुख से प्रसूति करती है ।

मन्त्र :—ॐ क्रां श्रीं ह्रीं सों नमो सुग्रीवाय परम सिद्धिं कराय सर्वं डाकिनीं गृहीतस्य ।

विधि :—पाटे पर यज्ञ लिखकर अन्दर नाम लिखे, फिर सरसों, उड़द, नमक से ताड़न करे तो डाकिनी आदि से आक्रंदित हुआ रोगी का रोग नाश होता है । इस प्रकार का यज्ञ बनावे—



मन्त्र :—ॐ ह्रीं वासादित्ये ह्रीं क्लीं स्वाहा ।

विधि :—सर्वं मूली उत्प्लुत्य मन्त्र ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्षीं ३ क्षः ३ लः ३ यः ३ हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—अनेन वासा अक्षत रक्षा वार २१ अभिमन्त्र्य चतुर्दिक्षु गृहादौ क्षिप्यते सर्वं दोषा उपशाम्यति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अप्रति चक्रेश्वरी नखाग्रह शिखाग्रह रक्षं रक्षं हुंफट् स्वाहा ।

विधि :—कलवाणी मन्त्र ।

मन्त्र :—ॐ दसा देवी केरउ आडउ अणंत देवी केरउ आडउ ॐ विद्धं विद्धेण विजाहरी विजा ।

विधि :—गो घृतेन हस्ते चोपडयित्वा विद्वगडोपरि हस्तो मन्त्रं अणित्वा वार २१ भ्राम्यते ततो विद्धं उपशाम्यति, यदा एता वतापिन निवर्त्तते तदा गोमय पुत्तलकम घो मुखम व लंब्य श्रुलाभि विध्यते ततो निवर्त्तते ।

मन्त्र :—ॐ उरगं उरगां सप्त फोडिउ नोसरइ रक्त बइमांसि रांघिणि । छिन्नउ सबाउ हायुसरीरि बाहयेत् ।

विधि :—अनेन उजिताराधिणि रूपशाम्यति ।

मन्त्र :—ॐ प्रांजलि महातेजे स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को गीरोचन से भोजपत्र पर लिखकर मस्तक पर धारण करने से जुँआ में जीत होती है ।

मन्त्र :—द्रोण पर्वतं यथा बद्धं शीतार्थे राघवेण उतं तथा बंधयिष्यामि अमुकस्य गर्भं मापत उमा विशीर्युः स्वाहा । ॐ तद्यथाधर धारिणी गर्भं रक्षिणी आकाश मातृ के हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—लाल डोरा को इस मन्त्र से २१ बार जपकर २१ गाठ देवे, फिर गर्भिणी के कमर में बांध देने से गर्भ पतन नहीं होता है, किन्तु नौ मास पूरे होने पर उस डोरे को खोल देना चाहिए ।

मन्त्र :—ॐ पद्मपादोव ह्रीं ह्रीं ह्रः फटु जिह्वा बंधय बंधय सवसे व समानय स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से वच मन्त्रीत करके मुँह में रखने से सर्व कार्य की सिद्धि होती है ।

मन्त्र :—ॐ स्क्ते रक्ता बते हुंफट् स्वाहा ।

विधि :—कन्या कयीत सूत्र गाठ देकर लाल कनेर के फूलों से १०८ बार मन्त्रीत करके स्त्री के कमर में बांधने से रक्त प्रवाह नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ अमृतं वरे वर वर प्रवर विशुद्धे हुं फट् स्वाहा । ॐ अमृत विलोकिनि गर्भं संरक्षिणि आर्काषिणि हुं हुं फुट् स्वाहा । ॐ विमले जयवरे अमृते हुं हुं फुट् स्वाहा । ॐ भर भर संभर सं इन्द्रियबल विशोधिनि हुं हुं फुट् स्वाहा । ॐ मणि धरि वजिणी महाप्रतिसरे हुं हुं फुट् फुट् स्वाहा ।

विधि :—इस पाँच मन्त्रों को चन्दन, कस्तूरी, कुंकुम अलकुक के रस में भोजपत्र पर लिखकर इस विद्या का जाप करे, फिर गले में बांधे या हाथ में बांधने से शाकिनी, प्रेत, राक्षसी वा अन्य का किया हुआ यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र प्रयोगादि का नाश होता है । विशेष बया कहे, विष भक्षण भी किया हो तो भी उस विष का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ काली रौद्रो कपाल पिडिनी मोरा दुरित निवारिणी राजा बंधु

**शक्तिका बंधउ नील कंठ कंठेहि बंधउ जिह्वादेवी सरस्वती बंधउ
चक्षुभ्यां पार्वती बांधउ सिद्धिभंग गुरु प्रसादेन ।**

विधि :—इस मन्त्र का सदैव स्मरण करना चाहिए । क्षुद्रोपद्रव का नाश होता है, विशेष पंडितों की सभा में स्मरण करे, चोरों का भय हो तो स्मरण करे, या राजद्वारे स्मरण करे ।

मन्त्र :—रंघणिरंघ वाइ विसलित्ती देखीतिण त्तिणि तिसु लिमिस्ती उट्टी उवहिली
जाइण्यडत्ति जावन संकर आवइ अप्पि ।

विधि :—गोबर की गुहली का करे, और एक स्वयं दूसरी गुहली का कि जिसको रंघणी होती है उसको करके अक्षत से मन्त्रोच्चारण पूर्वक ताड़न करे तो रंघणी अच्छी हो जाती है ।

मन्त्र :—ॐ घंटा कर्णो महावीरः सर्व व्याधि विनाशकः विस्फोटक भयं प्राप्तं
मां रक्ष रक्ष महाबल यत् त्वं तिष्ठ से देव लिखी तो विशदा क्षरः
तत्र बोधाःनुपशामि सर्वज्ञ वचने यथाः ।

विधि :—इस मन्त्र से कन्या कबीर सूत्र में ७ गांठ लगावे, मन्त्र को २१ बार पढ़े, फिर उस डोरे को कमर में बांधने से निगडादय उपशम होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं धनधान्य करि महाविघ्ने अवतर भम गृहे धनधान्यं कुरु कुरु
ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—२१ बार स्मरणीया ।

मंत्र :—सुवर्ण मण्डुरक्त आक्षि गील चक्षु स्वेन वर्णुं शरीरजडमाथइ धनंत पुलकुविहुकाने
कु डल तक्षकु शख जूइ बाहर रथइ वासुकिककोलु विह पाण नेउल शखद्वय पाय हे टिठ
अरक्कयुयानि ब्रह्मपुत्र खत्रु चरमि अखत्रुजिनवर सिजजाकारिजाइ विमुखर का खारि-
हिखाइ विमुलन्नाकारि येइ विमुलिहि किलिहि हँस किलिहिनि हि हँस जमु चंदुठा
इसोविमुखय हजाइ सोहिउ समप्पियउ तानु मइ जोवि उ समप्पियउ आदित्य कालि-
ज्जसमप्पियउ कालागणी रुद फोफस यरि रे उट्ठी २ ।

विधि :—यत्नेन । बार २१ अपराह्णे दिन ७ डाभिउ जिना दुट फोडी का वलु पीहउ चरहलु
रौधण्यादिक मुपशाम्यति गृहनि कट्टाय मध्येवा स्व पादादिक ध्रियते ।

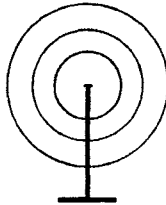
मंत्र :—ॐ वीरिणो विवात पित्तापि इति २ हम मम भक्षणे दास हरण व्याधि चूरणं दुगत
मासगन तेज गन गलगड गंड माला कुरु हृदिया रोगो रुधिर हरो गुरु कुंभ करणो

पंचमो नास्ति कलिंग प्रिये वात ह्रस्वां अघो मुखी देवी नव शिर-धरे छत्री हरिय भट्ट धरिय उसव्वसभावाइं खीलउ परमधि-आपणी पर मुद्र दी धी जंग वाउ भमर वाउ ह्दु वाउ रक्त वाउ रांघणि सव्ववाउ सिद्धिहि जाउ ।

विधि :—इस मन्त्र से प्रत्येक प्रकार के वात रोग ठीक होते हैं । मंत्र पढ़ते जाये और झाड़ा देते जाये ।

मंत्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय धरणेन्द्रपद्मावति सहिताय कि तर कि पुरुषाय गरुड गंधर्व महोरग यक्षराक्षस भूत पिशाच शाकिनीना सर्वमूल व्याधि विनाशाय काला दुष्ट विनाशाय वज्र सकल भेदनाय वज्र मुष्टि सं चूर्णनाय महावीर्य पराक्रमाय सर्व मन्त्र रक्षकराय सर्वभूत वंश कराय ॐ हन २ दह २ पच २ छिन्नय २ भिन्नय २ मुच्चय २ धरणेन्द्र पद्मावति स्वाहा ॐ नमो भगवते हनमताय कपिल पिंगल लोचनाय वज्रगममुष्टि उद्दीपन लंकापुरी दहन बालि सुग्रीव अजण कुक्षि भूषण आकाश दोष बंधि २ पाताल दोष बंधि २ मुद्गल दोष बाँधि एकाहिक द्वाहिक त्र्याहिक चातुहिक नित्य ज्वर वात ज्वर धातु ज्वर प्रेत ज्वर श्लेष्म ज्वर सर्व ज्वरान् सर्वदह २ सर्वहन २ ह्री स्वाहा कोइलउ कंट प्रलउ पुञ्जितउ कुत्तन ववानु आपणो शक्ति आगलो खेलावइ हीमवेत्तालु चत्तावइ एक जाति चालि छत्र चालि प्रकट चालि जर उल्लोडि बीउ लोडि चउरासी दोष कोइलउ हणउ वापुशक्ति कोइलावो रत्तणी ३ ।

विधि :—एभिस्त्रिभिर्मंत्रं प्रत्येकं कल्पानीये कृते पायित्ते सर्वे दोषा उपशाम्यसि, एकैकेन वार ७ अभिमन्त्रयन्त्या त्वटिकया नव शरावे, ठ, कारे लिखिते असोसाधोत च निद्रा समा-



याति ॐ संयुक्तं नमस्कार पद पञ्चक लिखित्वा चिटिका बद्धा नवर क्षति मातृका नमस्कार बाचक्रं लिखित्वा तच्चिष्टि काउ छोर्ष के धूतारात्रो सुप्तस्य सर्वोप द्रवाश्लायति । इस मन्त्र के विधि का भाव विशेष समझ में नहीं आता है ।

मन्त्र : ॐ खत्रिउ काला कुट विस वन्नउ सुद्धिका सद्धलित वन्नउ वाय ससउ' हरियालउ चन्नउ चारि विस चारि उवन्नउ अट्टारह जाति फोडी २ जानिविसी होइ शनैश्वर वारिउ हु जाय उरेविस खपनि का जानी पीगला पूत माह मासि अधारी चउदसिरे वति नक्षत्र घारउ जम्भु भयउ मूँटिठ हथउ दीटिठ तोलियउ खाउ अत्तोलियउ खाउ पल खाउ पलसउ खाउ भार खाउ भागसउ खाउ अदीट्ठउ खाउ हउ' खाउ तुहुन खाइ कउणुखाइ श्री सरडा मडेवु खाउ जरे विस फूटि होइ माटी चैत्रीस कोडि देवता खाधउ वाटि तिहु त्रिभुवन शिव नास्ति विमु ठ ठ श्री नील कठ की आज्ञा सोपाराउल की आज्ञा शिव शक्ति नास्ति वि मुजरे विस ज ज' ।

विधि : —विसत्रिभुवनि हि नास्ति विमु ।

मन्त्र : —ॐ नमो पास पत्ताय भम्म जटाय शमशान रचिताय वम्भ चम्म पहिरणाय चलु—२ रे चानु २ रे डाकिनी शाकिनी भूत प्रेत पिशाच छलु छिट्टु जानु विनाणु गुप्तु प्रकटु चउगसी यन्न चूरि २ चउगसी मन्त्र चूरि २ पराई मुद्रा चूरि २ आपणी मुद्रा प्रकट करि पाराइ भाजि घालि वापु श्री महादेव तगी आज्ञा बाधि भीडि आक्रसि सर्वेइ दोप जिकबगउ बाधि गुप्त प्रकटति सबइ बाधि आणिघालि महारा पाग हेटिठ ३ दीहउ रीस नीगसउ अद वद व पुगी मो दग मग चरितउ उटिइयद किन्वणादिसि हिम देव किनि २ शब्द जकार रुपिहि अदवद वक्रउ छिदि मडा सिणि छिदि अहमद साविणि छिदि कवाडनी छिदि २ ही हउगीस निरीमउ पग्गोरिसि दिवाकल' भुजसि मुंघ सामिते वार नइ पसता कण्ड व हुव वसायर ते कचापरिहृगियव की पान्ती चग भगउडी कम्मोडउ डाइणि फोडिसि होगी सणन विसमासण हरि छदि मुदणि सणि । ॐ नमो अग्निमय राजाय कुट्टितविट्टे वनाय अनन शक्ति रहिताय अण्ट कुल पवन वाणि आठार भाव वनस्पती बाधि नव कुल नाग वार्मि मान गम्भी बाधि अट्ठासी सहरन्न रिपि बाधि नवानवइ कोडियक्ष बाधि विण्णु रुद्र बाधि नव कोटि देव बाधि छप्पन्न कोटि चाउडा वार्मि अट्ठाग्रह पवणि बाधि छतिस राजकुली बाधि मालिणि बाधि कल्लालिणि बाधि तेलणी बाधि ब्राह्मणि वार्मि सर्वेइ दोप बाधि जिकबग दोष बाधि गुप्त प्रकटति सर्व दोप बाधि भीडि आक्रसि आणि घालि महारा पाग हेटिठ वडइ वेणि वाय २ अरि मन्त्रय वायण की शक्ति बाधि २ भिडि २ आक्रसि २ वड वेणि बाधि २ ।

विधि : —उस मंत्र से पानी मखीन करके देने से अथवा भ्लाडा देने से सर्व प्रकार के दोष चाहे व्यन्त्र डाकिनी शाकिनी राक्षस भूत प्रेतादि कृत हो चाहे दृष्टि दोष हो चाहे परकृत यत्र मन्त्रादि हो सर्व प्रकार के दोष इस महा मंत्र से शांत होते हैं ।

मन्त्र : —आय मानन तेज आइत्त मान पहिरणउ' हुंकारइ आवइ जकारइ जाइज: ३ ।

विधि :—स्नात्रं काराप्य अक्षते स्ताम्यते गुगुलं दीयते तृतीय ज्वरं नाशयति ।

मन्त्र :—जडुहुल त्रसनि वेसिय ॐ उप्पाइया सिरसि जडं हण वंति कलि काड
किउच तिन दुवकातत्ति कालु काले महाकाले ।

विधि :—एक श्वास में सान बार अथवा तीन श्वासमें इक्कीस बार हाथ पर सिर धरे तो सिर का दर्द शांत होता है ।

मंत्र :—ॐ नमो सुग्रीव सया कल विकुल जाटयागण गधर्व जरकर कस बेताल भूत प्रेत पिशाच
डाइणि सिर मूल पेट मूल आकाश पाताल कन्यका ॐ नमो पार्श्वनाथाय जस्तेय चक्रं
फुरतंगच्छइ तेण चक्केण जटुट्ठ वुट्ठ विस चउरासी वायाउछत्तीसं लूताय सत्तावीसं
अध गडाइ अट्ठावीस फुल्लियाऊं छिदी २ भिदि २ सुदरिसण चक्केण चंद्र हास
खज्जेने इन्द्र वज्जेण हूं पट् स्वाहा ।

विधि :—दर्भण गडवाउ उज्जितां वार २१ निवत्तेने क उप्पास कृत्वा संध्यायापयश्च पीत्वा
प्रभाते कृष्ण चनकान् भक्षयित्वा मृष्टि प्रमाण कुण्जक जटां पण्टिक तंदुलकेन पिष्टायः
पिबति तस्य श्रमणि निवत्ते ।

मन्त्र :—सोहया कारणी पहुया बालिरेऊं पजारे जरालं किली जइ हणुया नाउं
हर संगर की अगन्या श्री महाश्व भराडा की अगन्या देव गुरु की
अगन्या जरो जरालंकि ।

विधि :—डोरा को दश बड़ करके उस में दश गांठ लगावे मन्त्र १०८ बार पढ़े । मन्त्र पढ़ता
जावे और डोरे में गांठ लगाता जावे । उस डोरे को गले में या हाथ में बांधने से वेला
ज्वर, गंगातर ज्वर, द्रयातर ज्वर, त्रयतर ज्वर का नाश होता है । इसी प्रकार गुगुल
को भी मन्त्रीत कर जलाने से सर्व ज्वर का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ सिद्धि ॐ शंकरू महादेव देहि सिद्ध तेल ।

विधि :—इस मन्त्र से काच तेल अभिमन्त्रित (नश्यया) करके सू घे तो सर्व प्रकार के सिर
दर्द नष्ट होते हैं । और इस तेल से गुमडा, फोडा, घाव, अग्निदाह इत्यादिक अच्छे
होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ सद्यवाम अघोर ईसान तत् वक्तः ।

विधि :—इस मन्त्र को एक श्वास में ३ बार जपने से माथे का दर्द शांत होता है । और
बिच्छू का जहर उतर जाता है ।

विशेष :—अनेन श्वासेन वार मेक विधिना, एव वार त्रय जपिते शिरोस्ति वृद्धिक मुतरति
कालुवरी चूर्ण ग० ८ पल द्वय क्कापपलिका मध्ये अथा घाडा वावची वीज चूर्ण
अ्यगुली प्रक्षिप्त पीते सर्पिप तेले अय्यगेद भूत स्वेत कर्क टीनि वत्तयति, टंकण

स्वारस्य वासित जलेण लेपे सर्वमपि साङ्गं निवर्त्तयति, सुवर्णं माक्षिकं केलरसं पत्नी
हरियालं मणसिलं गन्धकं निबु या रसं पत्नी अभ्यगेनदं भूतं निवृत्तिः ।

मन्त्र :—ॐ हां आं क्रों क्षां ह्रौं क्लौं ब्लूं ह्रां ह्रौं पश्चावती नमः ।

विधि :—इस मन्त्र को सफेद पुष्पों से १००८ दस दिन तक जपे तो सर्व सिद्धि करने वाला होता है ।

मन्त्र :—ॐ रक्त जटु रक्त रक्त मुकुट धारिणि परवेध संहारिणी उदलवेधबन्ती
सल्लुहणि विसल्लुहुरी फटु पूर्वहि आचार्य की आज्ञा ह्रौं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का जप करने से परविद्या का छेदन होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रौं श्रीं हर हर स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को ३ दिन में १०८ पुष्पों से श्री पार्श्वनाथ भगवान के सामने जप करे तो सर्व सम्पदादि होती है । तीनों दिन १०८-१०८ पुष्प होने चाहिये ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय पश्चावती सहिताय हिलो हिलो
मिल मिल बिलो बिलो किली किली ह्रां ह्रौं ह्रूं ह्रौं ह्रः क्रौं
क्रौं क्रौं यां यां हंस हंस हूं फट् स्वाहा ।

विधि :—सर्व ज्वर नाशन मन्त्रः ज्वरान्तरं देव कुल दर्शनायाह ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्रीं श्रीं ह्रौं नमः ॐ तक्षकाय नमः उत्कट विकट
दाहो रुद्रा कराय नमः हन हन दहि दहि पचि पचि सर्वं ग्रहाणा वधि बंधि भूतानां
राशि राशि ज्वालि ज्वालि प्रज्वालि प्रज्वालि गोपि शोपि भक्षि भक्षि यः यः
ज्वलि ज्वलि प्रज्वलि प्रज्वलि वायु वीर ॐ नीलासूया कता ग्राया का हु जाणइ
आखु जाणइ आपट्टे ट्टि परट्टे ट्टि माय वाप केरी ट्टे ट्टि आडासी पाडासी की ट्टे ट्टि नाट्ट
केरी ट्टे ट्टि शिहरीउ मूलु अजीर्ण व्याधि हणुमंत तणी लातभम मांते हो जिउ ॐ
वीर हनोवता अतुल बल पराक्रमा सर्वव्याधि छिन्ति छिन्ति भिनि भिनि त्राशय त्राशय
नाशय नाशय त्रोटय त्रोटय स्फोटय स्फोटय बाधय बाधय बंधइ बधेण लंकादहि
तेण हुण्णण हू फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को ७ बार जपने से व्याधि बंध होती है ।

मन्त्र :—हन हन वह वह पच पच मथ मथ आस सागी सत्वयारे वछ नाग
नारो बोल घिमोर उपांग आचहु पुत आवहु सुणहु विचारहु हछि

हिसइ विसु विट्ठि हिमरुद्र कवि सबी सबावीस उपवीस जइ बारि
भार विस माटी करउ' संज्ञा ही नास्ति विसनाश य य क्षोभय क्षोभय
विक्षोभय विक्षोभय माविलाशय २ ।

विधि :—इस मन्त्र को ऊपर वाले मन्त्र के साथ जोड़कर पूरा मन्त्र ७ बार जपने से विष
उतर जाता है ।

मन्त्र :—श्रूल महेश्वर जइ द्वारि पबंत्ते माला चारि समुद्र माहि तु लंघि हंस
भस्म अधूली सिरि गंभारी परतु स लखुण पर जीवउ जिया स्वहि
कुमारीकं मकरेइ हंसु विनय पूतु गुरुडु सवास सहस्र भार पर-
विसुनि वट्टउ' ।

विधि :—इस मन्त्र को ७ बार जपने से विष बंधन को प्राप्त होता है अथवा नष्ट होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लीं सर्वं ज्वरो नाशय नाशय सर्वं प्रेत नाशिनी
ॐ ह्रीं ठः भस्वं करि फट् स्वाहा ।

विधि :—इस महामन्त्र को जपने से अथवा २१ बार पानी मन्त्रीत कर पिलाने से पेट दर्द,
अजीर्ण आदिक नष्ट होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ ह्री वातापिर्मन्त्रितोयेन पीनोयेन महोदधि समेपीत च भुक्तं च अग्न स्तिजंर यिष्यति
ह्री ॐ कारे प्रथम रूप निराकारे प्रसूत शिवशक्ति समं रूप विन्न काल भैरव
कालउ गोरउ क्षेत्रपालु जक्ख वइज नाथु कलि सुग्रीव करी आज्ञा फूर इ ज हो
महाज्वर २ जाल जलतो देवो पयावण वेगिव हति देवि सहर मारि पइठ्ठी देवी इ
वर्कुवभुइ वषवीस विस बावीस म बाघ विसुत हमहु वढ्ढी सिद्धि गठिलं कह
हु तउ नीसरउ गडयडं तु गाज तुटं जाहो महाज्वर २ ।

विधि :—नाग बल्ली पत्रपरि जप्य क्षरि तस्यदेयं कर्णं वा दृष्ट प्रथय' ।

मन्त्र :—ॐ नमो भेलि विखए गिन्हामिम दिया सध्व बुद्ध आमविद्या सध्व मुहमह
लविखया स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को १०८ बार १० ककर को मन्त्रीत करके दशों दिशाओं में फेंकने से
मार्ग में चोरादिक का भय नहीं होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अहं श्रीं शांतिजिनः शांतिकरः श्री सर्वसंघ शांतिं विदध्यात्
अहं स्वाहा ॐ ह्रीं शांते शांतये स्वाहा ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे महाविद्ये ।

विधि :—वार १०८ दिन ७ यस्य कार्यणादि दोषः संस्मरणीयः ततोयेन दोषः कृतः स्यात्तस्यैव पतति राजप्रसाद वैरिभ्यः तन्नास्ति यदि तो नस्यात् परं प्रयगिरादि यंत्राग्रतः कार्यः हिंगु भाग १ वचा भाग २ पिप्पली भाग ३ सूठि भाग ४ यवानी भाग ५ हरीतकी भाग ६ चित्रिक भाग ७ उपलोठ भाग ८ एत चूर्णं प्रातः रुखा योष्णोदकेन २१ पेयं कास, श्वास, श्वय रोग, मन्दाग्नि दोष प्रशमः कामर्षे चैत दोषः धातु प्रशमति ।

मन्त्र :—रे कालिया निष्य खिधलउं सहता लुया ठः ठः । (ये कीलणी मन्त्र हैं) ।

मन्त्र :—रे कालिया जिष्य मुक्को सहतालुयायः यः स्वाहा । (ये कीलणी मन्त्र हैं) ।

मन्त्र :—ॐ ज्रं ज्रां श्रीं हा हंसः बं हं सः क्षं हं सः हा हं सः स्थावर जंगम विष नाशिनी निर्जरण हंस निर्वाण हंस अहं हंस जुं ।

विधि :—जल अभिमंत्रयपाय येत् यदि जीर्यते तदा जीवति अन्यथा मृत्युः ।

मन्त्र :—ॐ हंसः नील हंसः महा हंसः ॐ पक्षि महापक्षि सर्पस्य मुखं बंध गति बंधं ॐ बं सं क्षं ठः । इस मन्त्र से सर्प का ग्रहण होता है ।

मन्त्र :—ॐ क्रों प्रों नूं ठः ।

विधि :—इस मन्त्र से वोच्छु ग्रीर साप का जहर बंध जाता है । वृश्चिक सर्प विषये कंडक बंध ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते ऋषभाय जैनमति मोनमति रोदन मति स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से वच सात, मन्त्रीन करके खावे तो महा बुद्धिमान, निरोगी होता है ।

मन्त्र :—ॐ श्रीं ह्रीं कीर्तिमुख मंदिरे स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को उपदेश देने के समय में प्रथम स्मरण करे तो श्रोतागण आकर्षण होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ यः रः लः त्यज दूरतः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का प्रातः नित्य ही १०८ वार स्मरण करने से कामर्षादि दोष नाश होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ नमो अरिहंते (उत्पति) स्वाहा । बाहुबलि चत्तारि सरणं पवज्जामी

इत्यादि । ॐ नमो अरहंताणं ॐ नमो सिद्धाणं ॐ नमो आइरियाणं
ॐ नमो उवज्झायाणं ॐ नमो लोए सव्वसाहणं ।

विधि :—इस मन्त्र का स्मरण करने से स्वप्न में शुभाशुभ मालूम होता है और दुस्वप्नों का नाश होता है ।

मन्त्र :—इति पिसो भगवान् अरिष्ट सम्म संबुद्धो विज्जावरण संपन्नो सुगतो
लोक विद्ध अनुत्तरो पुरुष दमसारथी शास्तादेवानां च मानुषाणं च बुद्धो
भगवाजयधम्मा हेतु प्रभवा तेषां तथागतो अब्बेतसांयो निरोधो
एवं वादो मह समणो ।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार जपकर दुपट्टे में गांठ लगाकर ओढ़ लेने पर किसी भी प्रकार के शस्त्रों का धाव नहीं लग सकता, रण में सर्व शस्त्रों का निवारण होता है । इस मन्त्र के स्मरण मात्र से जीव बन्धन मुक्त हो जाता है । चोर भय, नदी में डबने का भय, राज भय, सिंह व्याघ्र सर्पादि सर्व उपद्रव का निवारण होता है । यह मन्त्र पठित सिद्ध है, इस का फल प्रत्यक्ष होता है ।

मन्त्र :—ॐ अरिट्ट नेमि बंधेण बंधामि पर दृष्टि बंधामि चौराणं भूयाणं शाकिणीणं
डाकिणीणं महारोगाणं दृष्टि चक्षु अचलाणं तेसि सव्वेसिं समणं
बंधामिगड्बंधामि हुं हुं फट् स्वाहा ॐ ह्रीं सव्व अरहंताणं
सिद्धाणं सूरिणं उवज्झायाणं साहुणं मम् ऋद्धिं वृद्धिं सर्वं समीहतं
कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का प्रातः और शाम को उभय काल में बत्तीस २ बार स्मरण करना चाहिये ।

मन्त्र :—नमो अरहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं इत्यादि । ॐ नमो
भगवद्देवस्य देवयाए सव्व सुय भयाए सरस्सीए सव्व वाइणि
सुवन्न वन्ने ॐ अरदेवी मम शरीरं पविस्स पुच्छंतयस्स मुहंपविस्स
सव्वं गमण हरीए अरहंतं सिरिए स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का प्रातः १०८ बार जप करने से महाबुद्धिमान होता है ।

मन्त्र :—ॐ हूं मम् अमुकं वशी कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार स्मरण करने से इच्छित व्यक्ति वश में होता है ।

मन्त्र :—ॐ अब्बुप्ते मम् सर्वं मयं सर्वं रोगं उपशमय २ ह्रीं स्वाहा अहं स्वस्ति
लंकातः महाराजधिराज समस्त कौणाधिपतिः अमुक शरीस्थं अमुक
ज्वरं समाविशति यारे रे दुष्ट अमुक ज्वरं त्वयापत्रिका दर्शनादेव
शीघ्र मागतव्यं अथ नाग छसित दाते सिर श्रृं द्रहासखङ्गेन कर्त-
यिष्यामि हुं फट्: मा भणिष्यसि यन्नास्थात् ।

विधि :—इस मन्त्र को कागज पर लिखकर, रोगी के हाथ में उस कागज को वायने से वेवा
उबरादि भाग जाते हैं ।

मन्त्र :—ॐ हर हर हुं हः दूतां श्रुकि पृष्ठ कस्य प्रछादिकां ।

विधि :—प्रकुमिवात्तलोऽनेनमन्त्रेण वार १०८ जपित्वा पुनरापि मीयते वृद्धो वृद्धिः शुभं
च लाभानि वृद्ध्या ह्यनीय हानिर श्रुभं च ।

मन्त्र :—ॐ ब्राह्मणी २ अहो कहो बलिकंठकाः खविलाई लेऊ लेऊ हिव
जाहो ।

विधि :—अनेन वार ३२ हस्तस्य स्पर्श विधानेन बलि काठा काख विलाडउप शाम्यनि
दृष्ट प्रत्ययोऽयं ।

मन्त्र :—ॐ लावण लाइ बाधि थण लउ काख विलाइ अजुन कइ बाणी छोन
उतो ह्र इ अजुन भामि जाइ विलाइ ।

विधि :—प्रष्टोत्तर शत वेलं रक्षामभि मन्त्र दीयते ।

मन्त्र :—ॐ समुद्र अवगाहिनी मृगु चंडालिनी नव लुन जलु हुं फट् स्वाहा ।

कु ५ क्रुआइ ३ नु ५ तुआइ ३ ए ६ जः ३ तक्षकाय नमः ।

विधि :—देव पूजा पूर्वक जल, इस मन्त्र से मन्त्रोक्त करके देने से डंक का विष उतर जाता
है । गिथ्या दिशा एकान ज्वर, तृतीय ज्वर, भूत, शाकिनी का निग्रह होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीस्त्रां सिद्धिः गणनाम विद्येयं ।

विधि : इस मन्त्र को पत्र के पत्ते पर लिखकर रास्ते में उस पत्ते को फेंक देने से
शाकिन्यादि मार्ग से हट्ट जाते हैं । इस मन्त्र को नींव के पत्ते पर लिखकर, उस
पत्ते को पानी में फेंक देने से शाकिन्यादि जल तरंगि स न्रत्ययोऽयं ।

मन्त्र :—ॐ कल्व्यं ॐ मल्व्यं ॐ तल्व्यं ॐ इल्व्यं ॐ हल्व्यं
ॐ सल्व्यं ॐ ङल्व्यं ॐ णल्व्यं ॐ खल्व्यं ।

विधि :—इन नव कुटाक्षर को मंडल पर लिखकर पूजा करने वाले व्यक्ति की प्रत्यक्ष रूप से शक्तियाँ आकर सेवा करते हैं। और सब दुष्टादिक उपशमता को प्राप्त होते हैं।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं हर हर स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से १०८ सफेद पुष्पों से ३ दिन तक जप करने से श्री पार्वनाथ प्रभु की प्रतिमा के सामने, तो सर्व सम्पत्तिवान् होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवञ्ज गोयमस्स गण हरिस्स अक्षीण महाण सस्स सव्वाणं व छा थाणं सव्वाणं पत्ताणं सव्वाणं वयूणं ॐ अक्खिण महाणसिया लद्धिहवउ मे २ स्वाहा ।

विधि :—प्रातः उपयोग वेलाया बिहरण वेलाया चेतन वेलायां च स्मरणीय वार २१ मंत्रभि-मंत्रणीय देय वस्तु अभिमथ्य दातव्यं ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ला ह्वा प्लक्ष्मीं स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को १०८ बार स्मरण करने से स्वप्न में शुभा शुभ प्रकट करता है।

मन्त्र :—ॐ अरण भद्रे नदी-चारे स्वाहा ।

विधि :—गाव व नगर में प्रवेश करते समय मिट्टी को सात बार मन्त्री करके फेंकने से गाँव में मागे बिगर भोजन की प्राप्ति होती है। याने भोजन के लिए याचना नहीं करनी पड़ती है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति वागेश्वरी अन्नपूर्ण ठः ।

विधि :—इस मन्त्र को नगर में प्रवेश करते समय २१ बार जपे तो भोजनादिक का लाभ हो।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्रीं क्लीं क्लूं जंभे जंभे मोहे वषट् ।

विधि :—इस मन्त्र का हाथ से जाप करने पर सर्व प्रकार के ज्वर का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं नमः ।

विधि :—अनेन मन्त्रेण शीतलि का दोष हस्तो बाहनीय स्तान्नि वृत्ति भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अप्रति चक्रे फट् विचक्राय स्वाहा ॐ अ आवि सोषागजंति गड्डं तिमेघ जिम धउ हडंति मडा मसाण मखंतु ईणइं छंवइतुए परि चल्लइं फाटइ फूटइ धमाह लप्रइ भूत प्रेत भीडउ मारइ नव ग्रह तुट्ठा चालइ बाप बीर श्री परमेश्वरा एकल्ल बीर अहुट्ठ कोडि रूप फोडि निकहइ

एक रूप मेलिह उजेणि महि कालि गगन खाली भूत पंचास बांधि चेडउ
बांधि चेटकु बांधि एकंतरु बांधि बेतरउ बांधि त्रेयतरउ बांधि चालंतउ
बोधु चरडकइ काटि ।

विधि :—इस मन्त्र से कन्या कत्रिन मुत्र मे ३ गाँठ लगाकर उन तीनों गाँठ के मध्य मे (कोलिया पुट) डाले फिर उस डोरे को हाथ मे बांधे तो एकानरादि ज्वर का नाश होता है ।
प्रत्यक्ष बात है ।

मन्त्र :—यं रं लं वं क्षः ।

विधि :—बलि कृष्ण कंबल दव रकेनअनेन बार २१ जपित्वा वधयेत बलिर्यानि ।

मन्त्र :—ॐ तारे तु तारे वीरे २ दुर्गा दुत्तारय २ मां हूं सर्व दुःख विमोचिनी
दुर्गांतारीणी महायोगेश्वरी ह्रीं नमोस्तुते ॐ ह्रां ह्रीं हूं हूं सरसुं
सः हर हूं हः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का १०८ बार स्मरण करने से सर्व शांति होती है । सर्वे उपद्रव का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ पासनाहरसथं भेउ सध्वाउ ई ई ऊजिणा एमा इह अभि
भवंतु स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को १०८ बार जाप करने से, इति, का उपशम होता है । जिस क्षेत्र मे इस मन्त्र मे भग्म और प्रक्षत १०८ मन्त्रीत करके फेंकने से और इस मन्त्र को भोज पत्र पत्र लिखकर खंभे पर बांधने से किसी प्रकार की इति नहीं होती है ।

मन्त्र :—ॐ नमो शिवाय ॐ नमो चंड गरुडाय क्लीं स्वाहा श्री गरुडो आज्ञा पयति
स्वाहा विष्णुं क्लीं २ मिलि २ हर २ हरि २ फुर २ मूषकान् निवारय
निवारय स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से सरसो मन्त्रीत कर डालने से चूहे नहीं रहते हैं ।

मन्त्र :—ॐ प्रसन्न तारे प्रसन्ने प्रसन्न कारिणि ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का जाप करने से शांति मिलती है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं ब्रह्म शांते श्री मंदवि के श्री सिद्धाय के श्री अछुप्ते श्री सर्व
देवता मम् बांछितान् कुर्वन्तु सर्व विघ्नाग्निशंतु सर्व दुष्टान् वारयंतु ह्रीं
अहं श्री स्वाहा ।

विधि :—स्मरणादेव पूजापुरः सरं कर्तव्येति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं कुष्मांडि देवि मम् सर्वं शत्रुं वशं कुरु २ स्वाहा ॐ ह्रीं क्लीं सर्वं दुष्टेभ्यो मां रक्ष २ स्वाहा ।

विधि :—अश्वनी नक्षत्र में घोड़ के पाँव की हड्डी ४ अंगुल प्रमाण इस मन्त्र से मन्त्रीत करके शत्रु के गृह में डालने से शत्रु के सर्व कुल का उच्चाटन हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ खुर खुरीभ ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में कुत्ते के पाँव की हड्डी अंगुल ५ की लेकर ७ बार मन्त्रीत करके जिसके गृह में डाल देवे वह ग्रन्था हो जाता है और फिर उसको अतिसार रोग होकर मर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ भद्र यटा मल धरति सु ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—धनुषा क्ली ५ प्रमाण घुल इन दोनों को लेकर बूधम चूर्ण कर इस मन्त्र से मन्त्रीत कर शत्रु के घर में डालने से उच्चाटन हो जायेगा । आद्रा नक्षत्र में लाल कनेर की कील अंगुल ४ प्रमाण लेकर इस मन्त्र से ७ बार मन्त्रीत करके जिसके घर में डाल दी जाय वह वश में हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ हं स्वाहा ।

विधि :—मघा नक्षत्र में अया मार्ग की कील ४ अंगुल इस मन्त्र से सात बार मन्त्रीत करने के जिसके घर में गाड़ दिया जाय वह वश में हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ सिली खीली स्वाहा ।

विधि :—अनुराधा नक्षत्र में, गरीप की कील अंगुल ४ प्रमाण इस मन्त्र से सात बार मन्त्रीत करके जिसके घर में डाल दिया जाय, वह वश में हो जाता है यदा तस्य सत्कपुष्यो परिकीलिका मारीजते तदा स्वास्त्रियो वशी भवति ।

मन्त्र :—ॐ स्वदार दार स्वाहा ।

विधि :—स्वानि नक्षत्र में ब्राह्मि (बगीचा) की बील अंगुल ४ प्रमाण इस मन्त्र से ७ बार मन्त्रीत करके तेल में घृतन भरकर उस तेल में यह कील डाल कर तेल से युक्त वर्तन को जिस घर में गाड़ देवे तो तेल न भवति ।

मन्त्र :—ॐ तटमटय स्वाहा ॐ व्याघ्र वदने व्रज देवी सप्त पाताल भेदिनी यज्ञक्षस प्रतिक्षोभिणी राजा मोहिनी त्रैलोक्य वंश करणी परसभा जय २ ॐ ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा ।

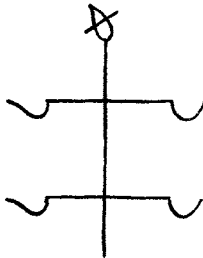
विधि :- इस मन्त्र को १०८ बार जपने से प्रतिवादि की जिह्वा का स्थंभन होना है ।

मन्त्र :- ॐ जहि हुंघरणि सरजिइतछ हु घरी सरत्ति जाहण बंत किल किब
जगइ न आबाईति ॐ फट स्वाहा । एकल्ल सुंदरि हेलिविसु संवर्ग
सुन्दरि हरहि विषु न दण्ठि विमु न अण्ठि विमु मन्त्र कह जं जंकार
इति निसाणक शब्द त्रिभुवने नास्ति विसु ।

विधि :- मध्यम हल मूल काण्टं बार ७ जपित्वा निशान च बार ७ जपित्वा निसाणं काण्टे ना
हन्वते यत्र २ शब्दः श्रुयते तत्र २ स्थावर विषं न प्रभवति ।

मन्त्र :- अस्ति तिउडि मइ चलति पत्ती ठी बहरी काल मेघ मइ आवत दीट्ठि
दाडिम हुत्ती सव्व कहा जग हिल्ली मोर तु त्रात्रु तोरतु भरकु मइ दी
एह उत्तइ लीयउ तु हु आगइ पाउ कहि जन जाइ आवि तउ अत
इदीन्हनु आथ वतइ लइ वात कहि वापु काल मेघ बहिरी की शक्ति
अ ल ल ल ल ल ।

विधि :- काच शरावे पूतलक श्मशाने कोइलेन लिखित्वा बार ७ पुण्य जपित्वा २ सप्तपुण्य



या वत्सूज्यते गगूल गुलिका चउ दाह्याने दिन ७ यावत् रात्री विधानं एक जाति
पुंसाणि याह्याणि ततोयन्तास्मा जप्स्ये य कण्टो भवति । पानीयस्थाने य शरावे क्षिप्ते
मृक्षो भवति । पर प्राक्प्रार्थ्यते जतु हतु स्वामिनि मेल्हा वतु तदामोक्ष्यः अन्यो
मोक्षयितु न शक्य ।

मन्त्र :—हिमगिरि पर्वतु त हाथि तु पवणु उचछलिपउ कवणु ऊछालइ हणवंतु
ऊछा लइ नीव की लकड़ी डालइ हिमगिरि पर्वति लेपाडइर चोरक्खु चार
रक्खु ए बोल जतु प्रमाण न करहीतउ ईश्वर पार्वती पूज ढालहि ठ
रे ठ : २ ।

विधि : नीव की लकड़ी हाथ में पकड़ कर रोगी के माथे पर ३ बार घुमावे और मन्त्र पढ़ते
जाये तां अगणी पात बार येत । नंदी मध्ये पूर्वोक्त वद्धं मान विद्यात्रि हृच्चरन् शिरसि
पूर्वामि मन्त्रित वामाग्निक्षिप्त ततस्त छिग्रमि ह्रीं कारं त्रिवलयित श्री कारांतं विन्यस्य
तदुपरि गुह्यम् ॥ ६५ ॥ कृत्वा ह्रीं कार मेकं विंशति बारान् ध्यायति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अहं स्वां क्रीं ज्रीं श्रीं सर्वं सूरं भवति महारि के महा
पराक्रम बले महाशक्ते क्षां क्षीं क्षूं मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

विधि : इस महा मन्त्र को प्रभात समय में २१ बार नित्य करने से सर्व प्रकार के रोग नष्ट
होते हैं । श्रेयश्चकर होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अहं नमि ऊण पास विसहर वसह जिण फुलिंग ह्री नमः ।
(इति मूल मंत्र)

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलि कुंड स्वामिनि अग्रति चक्रे जये विजये अजिते
अपराजिते नमः ।

विधि : —उपदेश के समय जप कर उपदेश करने से श्रोताजन आकर्षयति अगर मामने पर चक्र
भी आ रहा है तो भी इस मन्त्र का ३ दिन तक जप करने से पर चक्र भाग जायेगा,
दुष्ट जन का स्थभन करना है और मनुष्यों को बग में करता है । (स्मृतो मास ६
निरस्तार बार १०८ स्मर्यते तत ऊद्धं बार २१ चित्राग्रण ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं धरणेन्द्राय नमः ॐ ह्रीं सर्व विद्याभ्यो नमः ॐ ठः ३ ।

विधि : इस मन्त्र को ६ महीने तक निरन्तर १०८ बार जपने से मिद्ध हो जाता है । फिर ७
या २१ बार जपने से सर्प जाति का भय नहीं होता है । पञ्चसंग पारणा के पड़ पूजियइ-
पठ आगड बार १०८ स्मर्यते ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं पंचाली २ जोइ मंविज्जं कठे धारइ सो जावज्जीवं अहिणानड
सज्जइत्ति स्वाहा ।

विधि :—बार २१ गुणयित्वा सुप्यते ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं चामुंडे चक्रपाणे हुं फट् ठः ।

विधि :—गुप्ति मोक्ष विषये मामु १ सहस्रं उभय संध्यं गुणनीयः ग्रह विग्रहा दीव ।

मन्त्र :—ॐ सरल बिषात् सिरकती नाशय नाशय अर्द्ध शिरोतौ सिरकती स्थाने
अर्द्ध सिरकति ।

विधि :—ग्राह्य शुक्र वारयोरिमं अर्द्ध वट्टिकायां लिखित्वा कुमारी सूत्रेण वेष्टयित्वा पक्का
क्षर सयुक्त मर्द्ध श्रुनोदीयते ग्रन्थदद्धं शिरोतिमान् भक्षयति ।

मन्त्र :—ॐ इलवियक्ष ॐ सिलवियक्ष ।

विधि :—इस मन्त्र से लोहे की कील ७ बार मन्त्रित करके पूर्वाभिमुख लकड़ी के खंभे में
ठोके, स्वयं पश्चभाभिमुखेत् दाढ रोगिणः सकाशात् कीलिका खोटन च आनाय्यते
स्ताक निक्षिप्य पुनर्वार ७ जपित्वा निक्षिप्यते पुनर्वार ७ सकलानि क्षिप्यते तत्पार्श्व-
द्वस्तु १ परिहार्यते । इस प्रकार करने से दाढ पीड़ा नष्ट होती है ।

मन्त्र :—ॐ ठ्ठः ॐ हूं क्षूं जंमे ॐ हूं क्षूं स्तंमे ॐ हूं क्षूं अंधे
ॐ हूं क्षूं मंहे ।

विधि :—इस मन्त्र को कपड़े पर लिखकर धारण करना चाहिये । (इमवहि का पट्टे लिखित्वा
पार्श्वे धार्य) ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय हुं फट् ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रै ह्रीं ह्रः ।

विधि :—इस मन्त्र को पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा के सामने १०८ बार जपने से वेना ज्वर
का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ चंडि के चक्रपाणे हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—(उपकी विधि उपलब्ध नहीं हो सकी है ।)

मन्त्र :—ॐ नमो भगवतो पार्श्व चंद्राय गोरो गांधारी सर्ववशंकरी स्वाहा ।

ॐ नमो मुमति मुख मंडये स्वाहा ।

विधि :—ग्राह्यापृथक् बार १०८ मुखभासिमथ्य वाम हस्तेन बादा दी गम्यते ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अक्षुते मम धियं कुर कुरु स्वाहा ह्रीं मम दृष्ट बातादि रोगान्
सर्वोपद्रवान् बृहतो नु नावात् ठः ३ मक्षिका फुंसिका गुरुपादुके अमृतं
मयं ठः ३ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को ३ बार जाकर भोजन करने के लिये बैठने से मक्खियाँ नहीं आती हैं ।
और सर्व प्रकार के वात रोग नष्ट होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ एहि नंदे महानंदे पंथे खेमं भविस्सइ पंथे दुपयं बंधे पंथे बंधे चउपयं
घोरं आसोविसं बंधे जाव गंठी न छुटइ स्वाहा । ॐ नमो भगवड
पाश्र्वनाथाय द्वयं धरणेन्द्राय सप्तफण विभूषिताय सर्वं वातं सर्वं लूतं
सर्वं दुष्टं सर्वं विषं सर्वं ज्वरं नाशय २ त्रासय २ छिद २ मिद २
हं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से पानी २१ बार मन्त्रीत करके देने से दृष्टि ज्वरादिक शांत होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं विजय महाविजये सर्वं दुष्ट प्रणाशिनी महांत मुख भंजनि ॐ
ह्रीं श्रीं श्रीं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को १०८ बार जपे ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ज्वीं लाह्वापलःमीं चल २ बालय २ स्वाहा ।

विधि :—कृपाश्या चतुर्दश वा उरोमितेन सहस्र १००८ जाप्य.—ततासाधिते सर्वं
स्वाने कथयति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं बाहुबलि प्रलंब बाहु बलिगिरि २ महागिरि २ घोरबाहुवले
स्वाहा । ॐ बाहुबलि प्रचंड बाहुबलि क्षां क्षीं क्षूं क्षै क्षौ क्षः उर्ध्वं भुजं
कुरु २ सत्यं ब्रूहि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को कायोत्सर्ग १०८ जाप्यः ।

मन्त्र :—ॐ श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रे नमः ।

विधि :—बार ३३ जाप्ये राजकुले तेज आगच्छति ।

मन्त्र :—ॐ स्वैरिणी २ स्वाहा ।

विधि :—पूंगीफलादिकं बार १०८ जपित्वायस्य दीयत्ते स वश्यो भवति ।

मन्त्र :—ॐ नमो अरहंताणं अरेअरणि म्हारिणि मोहिणी २ मोहय २ स्वाहा ।

विधि :—जिन आयतन में इस मन्त्र को १०८ बार जपे फिर फलादिक को ७ बार मन्त्रीत कर
जिसको दिया जाय वह वश में हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ मातंग राजाय क्षिति २ मिलि मितकली अमुकस्य रक्तं स्तंभय २ स्वाहा ।

विधि :—शुक्ल (सफेद) रंग के डोरे को इस मन्त्र से २१ बार मन्त्रीत करे, फिर उस डोरे को बांधे तो स्त्रियों का रक्त श्राव बध होता है ।

मन्त्र :—करुणी वरुणी हुइव हिंगिरात मुहि रातपूठी पारे अछउ श्रीघोडो भेडु उतार उपहर मलाउमनु संचारउ जहिपहर उतेही पहरिसंसारउ ।

विधि :—वार २१ वातग्रस्थभ्य श्वभ्य हस्त वाहन घोडा हस्त वाहन मन्त्रः । मानुषस्यापि रक्तं निष्कासिते हस्तो वाहते ।

मन्त्र :—वज्रदंडो महादंडः वज्रकामल लोचनः वज्र हस्त निपातेन भूमीगच्छ महाज्वरः एकाहिक द्वाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक नश्यंतु त्रिभिः ।

विधि :—एष मन्त्रो बहुकरि तृणेन चूना रसेन् नाडा वल्लीदले लिखित्वा यस्य ज्वर आगच्छति तस्य पार्श्वोर्ध्वे क्षापनीयं ज्वर नाश्यति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं के नमः ।

विधि :—लक्ष जापेन बंधनात्मुच्यते ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं झौं झूं कोदंड स्वामिनि भम वंदि मोक्षं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—रोज सबेरे दोनो समय दक्षिण की तरफ मुख करके रौद्र भाव से १०८ बार इस मन्त्र को जपे तो वन्दि-मोक्ष ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं पद्म नंदेश्वर हूं ।

विधि :—इस मन्त्र को १०८ बार जपने से पाप से मुक्ति मिलती है । ५०० बार जपने से वह विशेष रूप, १००० जप से अपमृत्युं चालयति, २००० जप से सोभाय करोति, रात-दिन में ध्यान करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है । (वृद्धि होती है) और १ लाख जाप करने से वन्दि मोक्ष, सर्व प्रकार का दारिद्र्य नाश होना है ।

मन्त्र :—उद्धीध गधगंती प्रज्वलंती हणइ भाल गुरुपदेशो नामार्ज्जनपार्या ।

विधि :—ध्यायती सिद्धिः स्वभयति घात वात अग्नि दग्धलावणा दोषिष्ठादिना उज्ज्वल कल्पानीय सर्वमुप शमयति दृष्ट प्रत्यय ।

मन्त्र :—ॐ वीर नारसिंहाय प्रचंड वातग्रह भंजनाय सर्वदोष प्रहरणाय ॐ ह्रीं अम्ल व लूं श्रीं स्फीं शोऽय २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से दुष्टवातादि उज्ज्वल ।

मन्त्र :—लङ्घ्रेण कृतं द्वारं इन्द्रेण अकुटो कृतं भंजतो इः कपाटा नि गर्भं मुञ्च
सशोणितं हलु हलु मुञ्च स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से तेल २१ बार मन्त्रीत करके पेट के ऊपर मालिश करे, और पानी
मन्त्रीत करके पिलाने से मुख से प्रसव होता है ।

मन्त्र :—ॐ धनु २ महाधनु २ सर्वधनु धीरो पद्मावती सर्वदुष्ट निर्दल स्तम्भनीनि
मोहनी सर्वासु नामिराजा धीनामि सर्वासुनामि राजाधि नामि आउ
बंधउ दृष्टि बंधउ मुख स्तम्भउ ॐ किरि २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को दक्षिण हस्त से धनुष—बाण चलाने की मुद्रा से जपना, सर्व प्रकार से
दुष्ट जनों के मुख का स्तम्भन करने वाला वह सर्व उपद्रव दूर करता है ।

मन्त्र :—ॐ गगनधर मट्टो सूर्यालि संसारि आंवट्टो धरि ध्यानु ध्यायउ जुमप्रउ
सुपावउ आपणी भक्ति गुरु की शक्ति धरपुर पाटण खोमंतु राजा
प्रजाखोमंतु डाइणि कुरु खोमंतुवादी कुवादी खोमंतु आपणी शक्ति
गुरु की शक्ति उ ठः ३ ।

विधि :—इस मन्त्र से मिट्टी को मन्त्रीत करके माथे पर रखने से या पास में रखने से सर्व
जन वश होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ हूं हूं हूं हूं हूं महादुष्ट लूता दूष्ट फोडी व्रण ॐ हूं हूं सर्व
नाशय २ पुलि तखङ्गेन् छिन मिन्न २ हूं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से तेल २१ या १०८ बार मन्त्रीत करके लगाने से और राख (भस्म)
मन्त्रीत करके लगाने से सर्व प्रकार का गड गुमड फुसी आदि शांत होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ सिद्धि ॐ संकर महादेव देहि सिद्धि ।

विधि :—इस मन्त्र से तेल १०८ बार मन्त्रीत करके गडमाल उपर लगाने से गडमाल अच्छा
होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो अरहज भगवज मुखरोगान् कंठरोगान् जिह्वा रोगान् तालु
रोगान् दंत रोगान् ॐ प्रां प्रीं प्रूं प्रः सर्व रोगान् निवर्त्तय २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से पानी मन्त्रीत करके कुल्ला करने से सर्व प्रकार के मुख रोग शांत
होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ डाऊ चेडा उन्मन मोखी बावन बीर चउसट्टि योगिणि छिब २
मिब २ ईसर कइत्रि सूलीहण बंत कह खड्गि छिब २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि :— वार २१ उंजनेन कर्ण मूलादि उपशाम्यति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं हूं सेयउ घोडउ ब्राह्मणी कउ घोडउल कारे लागइ जकारे
जाइ भूत बांधि प्रेत बांधि राक्षस बांधि मेक्षस बांधि डाकिनि बांधि
शाकिनी बांधि डाउ बांधि वपालउ बांधि लहुडउ गरुडु वडउ गरुडु आसनि
भेदु २ सुबांधिकसु बांधि सकसु बांधि सकसु बांधि जइनें मेरउ वुतउ करहि
परिग्रह स चक्रु भीडो धरि मारि बापु प्रचंड बीर नार स्पंध बीर की
शक्ति धरी मारि बापु पूत प्रचंड सीह ।

विधि :—इस मन्त्र को धूप से मन्त्रीत करके जलाने से और रोगी पर हाथ फेरने से भूतादि
उपशमति ।

मन्त्र :—ॐ नमो अरहंताणं नमो सिद्धाणं नमो अणंत जिणाणां सिद्धयोग धाराणं
सव्वेसि विज्जाहरूत्ताणं कयंजली इमं विज्जारायं पज्जामि इमामे
विज्जापसिध्यउ आर कालि बालकालि पुंसं हररेउ आवत्तो चडि स्वाहा ।

विधि :— पृथ्वी पर सात बकर लेकर इस मन्त्र से २१ बार या १०८ बार मन्त्रीत कर विकसे
वाली दूकान की चीजों पर डाल देने से शीघ्र ही उस सामान की बिक्री हो जाती है

मन्त्र :—ॐ अरहं नमो भगवऊ महइ महावड्डं माण सामिस्सपणय सुरासुर से
हर वियलिय कुसु मुच्चिय कमस्स जस्स वर धम्म चक्कं दिणय रावि वं
व भासुर छांय ते एण पज्जलं तं गच्छइ पुरऊ जिणिदस्स २ आघसं
पायालं सयलं महि मंडलं पयासं तं मिळत मोह तिमिरं हरेइति एहं
पिलोयाणं सयलं मिविते तुक्के चित्तिय सितो करेइ सत्ताणं रक्खं रक्खस
डाइणि पिसाय गह जक्ख भूयाणं लहइ विवाए वाए ववहारे भावउ
सरं तीउ जुएय रणेरायं गणेय विजयं विसुद्धप्पा ।

विधि :—इस वड्डं मान विद्या स्त्रोत का पाठ करने वाले के रोग शोक आपदा शांति होती है ।

मन्त्र :— ॐ महावड्डेन भारय २ स्फोटय २ आवेशय २ शीघ्र भंज २ चूरि २
स्फोटी २ इंद्र ज्वरं एकाहिकं द्वाहिकं त्र्याहिकं चातुर्विकं वेला ज्वरं

**सम ज्वरं दुष्ट ज्वरं विनाशय २ सर्वं दुष्टानाशय २ ॐ ७ र ७ ह्रीं
स्वाहा २ य : ३ ।**

विधि :—इस मन्त्र को अष्टमी अथवा चतुर्दशी को उपवास करके १०८ बार जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है । और यह मन्त्र सर्व कार्य के लिए काम देना है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं मः ।

विधि :—इस मन्त्र से डोरा रंगीत बड़ करके २८ बार मन्त्रोत करके हाथ में बांधने से तृतीय ज्वर का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अप्रति चक्रे फट् विचक्राय स्वाहा । (सर्वं कर्म भरा मंत्र)

विधि :—विशेषतः शाकिनी गृहीतस्य सर्वापात् गृहीत्वा शाकिन्या कर्पयेत् । एकैकं सर्वप सप्ताभिमन्त्रीत कृत्वा जलभूत कटोरक मध्ये क्षिपेत् ये तरति ते शाकिन्यः समेन शाकिन्यः विपमेण भूत प्रथ न तदा भूत शाकिनी मध्याद् एकोपि ना अनेन मन्त्रेण सप्ताभि मन्त्रीत कृत्वा उदुपल ताडयेत् यथा २ नाडयेत् तथा २ आक्रंदति । एतेन चोवर सप्ताभि मन्त्रित कृत्वा उद्धी कृत्य स्फोटयेत् रुपिष्यो नश्यति अनेन मन्त्रेण युग्मगृहीत्वा सप्ताभि मन्त्रीता कृत्वा उद्धीकृत्य स्फोटयेत् रुपिष्यो नश्यति । अनेन मन्त्रेण अजा विजि कामे काकी विध्यात् शाकिन्या गृहीतस्य खट्वाधः शराय स पृष्ठ धारयेत् शाकिन्या नश्यति रक्षा बंधयेत् ।

मन्त्र :—ॐ कां क्रौं क्रौं क्षः हः रः फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से सरसों लेकर पड़ता जावे और रोगी के ऊपर सरसों डालता जावे तो भूतादिक रोगी को छोड़कर निश्चित ही भाग जाते हैं ।

मन्त्र :—ॐ चन्द्र मौलि सूर्य मौलि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से डोरे को २१ बार मन्त्रोत करके जिसकी आँख (चक्षु) दुखती हो उस मनुष्य के कान में उस डोरे को बांधने से चक्षु रोग पीडा नष्ट होती है ।

मन्त्र :—ॐ नमो आर्या व लोकिते स्वराय पक्षे फुः पद्म वदने फुः पद्म लोचने स्वाहा ।

विधि :—भस्म बार २१ जपित्वा त्रिलोक त्रिवेनतो दृष्टि दोगो निवर्तते हस्तबाह्वन च । इस मन्त्र से भस्म २१ बार जप कर तिलक करने से दृष्टी दोष याने नजर लगी हो तो ठीक हो जाती है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अग्र कुष्मांडिनी कनक प्रभेसिह मस्तक समाखडे अवतर २ अमोघ बाणेधरो सत्यवादिनी संत्यं कथय २ ॐ ह्रीं स्वाहा ।

विधि :— मासमेकं दशमी मारभ्य १०८ जपित्वा पंचमी दशम्योविशेषतः ततः कार्यं यामिन्याद्धि अविचलेन वार ७ जाप्य ।

अयं यंत्र लेखन विधि - वसन्तु १ शीघ्रम् २ प्रावृट् ३ शरद ४ हेमन्तु ५ शिशिर ६ एक दिन मध्ये पद्मिनको भवति दश २ घटिकाः प्रत्येक ऋतु प्रमाण अहोरात्रि मध्ये पद्म भवति घटिका ६० पादित्योदयात् वसन्त ऋतु घटिकाः १० नत्राहर्षण १ शीघ्रे, द्वेषण २ प्रावृटे, अपराह्णे उच्चाटण ३ लिखन् सर्वत्र योज्य शिशिरे मारण लिखत् ४ शरदे णादिक लिखत् ५ हेमन्ते पोष्टिक लिखत् ६ पञ्चमासिप शेषरा विपुलारूणा बुजविष्ट गकुटोदरग वाहनां अग्रण प्रभा कलला ननान्य विका वरदा कुशाग्रतप शादिव्य फलार्कित्वाचितयेत् पद्यावती जपता सतां फलदायिनी दिवकाल मुद्रासन पद्मवाना भेद पगिनाय अपेक्षमग्री न चान्यथा सिध्वाति तस्मिन् । कुर्वन् सदा तिष्ठति जाप्य होमं ।

मन्त्र :— ॐ ह्रीं महाविद्ये आहंति भागवति परमेश्वरी शान्ते प्रशान्ते सर्वक्षुद्रोप शामिनि सर्व भयं सर्व रोगं सर्वं क्षुद्रोपद्रवं सर्वं वेला ज्वरं प्रणाशाय २ उपशमय २ अमुकस्य स्वाहा ।

विधि :— वार ७४ ३ १०८ अनेन मन्त्रेण दवरक वासादिमभिमन्त्र्यते ।

मन्त्र :— ॐ ह्रीं श्रीं चंद्र वदनी माहेश्वरी चंडिका भूतप्रेत पिशाच विद्रापय २ वज्रदंडेन महेश्वर त्रिशूलेनदी वीर खड्गेन चूरय २ पात्र प्रवेशे २ ॐ छां छौं छूं छः फट् स्वाहा ।

विधि :— प्रथम १०८ वार दस मन्त्र का जाप्य करे, फिर डोरा को २१ वार मन्त्रीन करके बांध देने से सर्व प्रकार के ज्वर का नाश होता है ।

मन्त्र :— ॐ अतिशनेश्वराय ।

विधि :— इस मन्त्र का जाप करने से शनि की पीडा दूर होती है ।

मन्त्र :— लोहू खाहू लोहू पीयउ लोहू ही वरु दितु चंदसुर राजा अनुनाही कोइ राजा ।

विधि :— इस मन्त्र से फोडे को ७ वार मन्त्रीन करने से फोडा (पाव) अच्छा होता है ।

मन्त्र :— ॐ लक्ष्मीं आगच्छ २ ह्रीं नमः अरे ॐ नमः सोषा महाप्रचंड वीर भूतान् हन २ शाकिनी हन २ मुंच २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि :— इस मन्त्र से जाप करे तो सर्व दोष की शान्ति होती है ।

मन्त्र :—बहु पाणी ए पुर पट्टणमण्यि आणि एण वाउ पुत्रु तुह मछइ कामलु
चडियउ सोमे पोंछिलेउ छाडिउ १ उडु का मल संखपालु भणइ उडु
का मल संखु पालु भणइ ।

विधि :—रविशरे जोभने दिने (गोस नाडु) शब्द सत्कपाडलेत्वा खडि का १०८ एकैक वार
भणित्वा कुमारी मुख दवर केण सप्त वडेन ग्रंथि दत्तव्य. कंठे प्रक्षिप्तामाला यथा २
वर्द्धयते तथा २ कामल उपशाम्यति ।

मन्त्र :—ॐ रां रीं हं रः स्वाहा ।

विधि : इस मन्त्र से तीन दिन तक २१-२१ वार मन्त्र पढ़ता जावे और कामलवात रोगी
पर हथ फेरता जाय तो कामल वात नष्ट होती है ।

मन्त्र :—ॐ क्षीं रे हः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का जपना जावे और गिर पर हाथ फेरता जावे तो गिर का दर्द दूर
होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ग्रां हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का १०८ वार पढ़े और रंगी पर हाथ फेरे तो शाकिन्यादि दोष शांत
होते हैं । चाउ लोद केन महवाल जडापीपयित्वा पानथ्या मुनेन् प्रसूते ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रः श्रीं स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को दासी मुख ताभि मंत्रित करे तो—

मन्त्र :—जे चल्ल चल्लइ घाउ घल्लइ अष्ट कुल नाग पूजा पाए टालइ भोपरिभो
कुमारी काजा सांपहवाइ निवारी खील तुं बाट घाटजहि तउ आयउ
खीलउं माय वा पूजहिंतुहु जायउ खीलउं धरणि अनु आकासु मरसिरे
विषहर जइकाटि सिसासु ।

विधि :—सर्प विलग मन्त्र—अनेन् मन्त्रेण वात विषये दवर को ग्रंथि ६ सत्को कृत्वा दीयते
पर अष्टकुल नागस्थाने चउगसी वाय इति पदपठि तव्यं । जेथउ तेथउ ठरे स सर्प
कीलत मन्त्र ।

मन्त्र :—ॐ नमोहणु हणइ वज्रदंडेण वेदुप्रजालिगोपाला शाकिनी चेडउ डाउसो
ना समउ भेदु वहत्तरि साडा एहिरा गुगुल लीधउं हाथो पडुता सी
वल पासि गिरि टालइ भीम टालइ राहउ चडुं टालइ जमरातणी

पुजखड्डहंत पाडइ हिडव गंदिठ मोर गंदठेण बाप हणु वीरणी शक्ति
फुरइ सयं जर त्रेता जवर बेला जवर एकांतरऊ हणुवीरणी शक्ति फुरइ ।

विधि :—इस मंत्र से डोग मंत्रीत करके बांधने से जवर का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ भू ।

विधि :—इस मंत्र को भयानक स्थान में स्मरण किया करे ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं मायांगे सरस्वत्ये नमः ।

विधि :—बोध सारस्वत मंत्रः । चंद्रा ननां स्वरां भोघी वाङ्मयी च सरस्वती हं चंद्र मंडल
गताध्याये त्सारस्वत महत् ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ठः श्री वीस पारा उल केरी आज्ञा श्री घंट्टा कर्णकेरी आज्ञा
फुरइ ।

विधि :—उसरणी वात मंत्र ।

मन्त्र :—ॐ नमो लोहितगिलाय लघु २ हलु २ विलु २ ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—कमुंभल रक्तपुत्रं स्त्री प्रमाणं कृत्वा शिरस उपरी अंगुल ४ कृत्वा जेनू मन्त्रेणभि ।
मन्त्र्य व घ्रीयत् वा मपादल ध्वंगुलि कायां गर्भो न रक्षति पानीय चलुक ३ ग्रभि
मन्त्र्य दीयते गर्भो न क्षरति ।

मन्त्र :—ॐ तद्यथा गर्भरर धारिणी गर्भरक्षिणि आकाश मात्रिके हुं फट्
स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र से लाल डोरे को २१ बार मंत्रीत करके स्त्री के कमर में बांधने से रक्त स्त्राव
रुक जाता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो लोहित पिगलायः मातंग राजानो स्त्रीणां रक्तं स्तंभय २ ॐ
तद्यथा हुं मुरलघु २ तिलि २ मिलि २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से लाल डोरे को २१ बार मन्त्रीत कर ७ गांठ लगाकर स्त्रियों के वाम
पाव के अंगुठे में बांधने से रक्त स्त्राव रुक जाता है ।

मन्त्र :—ॐ रक्ते २ वस्त्रे पु फु रक्ते वाक्ते स्वाहा ।

विधि :—यनेन कमुंभ रक्त सूत्रेण अहट्ट हस्त दवरकं वटित्वा अथा पाडा मूल बंधित्वा वार
७ ग्रभि मन्त्र्यते रक्त बाहकं नश्यति ।

मन्त्र :—ॐ भोमाय भूमि पुत्राय मम् गर्भं देहि २ स्थिर २ माचल माचल ॐ
क्रां कीं क्रीं उं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का मंगलवार दिन को कुमारी कन्या को भोजनानि वस्त्रालंकार से सन्तुष्ट करे फिर इस मन्त्र का १ महिने में ५०:००० जाप पूरा करे, किन्तु मंगलवार को ही जाप्य शुरू करना चाहिये और याव जीवं (जीवम पर्यन्त) प्रत्येक मंगलवार को ब्रह्मचर्ये व्रत पाले और एकासन करे तो नि सन्देह सन्तान उत्पन्न होती है ।

मन्त्र :—ॐ हिमवतस्योत्तरे पार्श्वे पर्वते गंत्र मादने तस्य पर्वतस्य प्राग्दिग्विभागे कुमारो शुभ पुण्य लक्षणाए णेव चर्मवसना घोणसः कृत के ऊरन्नुपुरा सर्प मंडित मेखला आसौ विसर्चोभलि का वृष्टि विष कर्णा व तंतिका छादंती विषपुष्पाणि पिबंती मारुतां लतां समांल वेति लाबेति एह्येहि वत्से श्रुणोहि मे जांगुली नाम विद्याहं उतमा विषनाशिनी (यस्मिन्निमम नाम नातस्सर्वं नश्यते विषं) ।

मन्त्र :—ॐ इलबित्ते तिलवित्ते दुंवे दुवाल्लिए दुस्ते दुस्सालिए जक्के जक्करणे मम्ममे मम्मरणे संजक्करणे अघे अनघे अछायंतीए अपायंतीए इवेतं इवेते तुंडे अनानु रक्ते ठः २ ॐ इल्ला विल्ला चक्का वक्का कोरडा कोरडरति घोरडा घोरडति मोरडा मोरडति अट्टे अट्टरहे अट्टट्टोंडु रहे सप्पे सप्प रहे सप्प ट्टोंडु रहे नागे नागरहे नाग ट्टोंडु रहे अछे अछले विषत्तं डि २ त्रिडि २ स्फुट २ स्फोटय २ इंदविषम विषं गच्छतु दातारं गच्छतु भोक्तारं गच्छतु भूम्यां गच्छतु स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र विद्या को जो पढ़ता है, सुनता है, उसको सात वर्ष तक सांप दृष्टि में नहीं दिखेगा याने उसको सात वर्ष तक सर्प के दर्शन नहीं होंगे और काटेगा भी नहीं और काटेगा भी तो शरीर में जहर नहीं चढ़ेगा ।

मन्त्र :—अपसर्पं सर्पं भ्रदंते दूरं गच्छ महाविषु जनमेजय य ज्ञाते आस्तिक्य वचनं शृणु । आस्तिक्य वचनं श्रुत्वा यः सर्वेति निवर्त्तते । तस्यैव मिद्यते मुर्धा सं सृ वृक्ष फलं यथा ।

मन्त्र :—ॐ गरुड जीमुत बाहन सर्पं भयं निवर्त्तय २ आस्तिक की आज्ञा पर्यंत पदं ।

विधि :—इस मन्त्र को हाथ की ताली बजाता जावे और पढ़ता जावे तो सांप चला जाता है, किन्तु मन्त्र तीन बार पढ़ना चाहिये ।

मन्त्र :—ॐ कुरु कुल्ले २ मातंग सवराय सं खं वादय ह्रीं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से बालू २१ बार मन्त्रीत करके घर में डाल देने से सर्व सर्प भाग जाते हैं ।

मन्त्र :—ॐ नकुलि नाकुलि मकुलि माकुलि अ हा ते स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से बालू २१ बार मन्त्रीत करके घर डाल देने से घर में साँप नहीं होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ सुराबिंदु सः ।

विधि :—इस मन्त्र को पढ़ता जावे और सर्प उसने वाले मनुष्य को नीम के पत्तों से काड़ता जाय तो साँप का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ चामुंडे कुर्यम वंदे अमुक हृदय मम हृदय मध्ये प्रवेशाय ३ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को पढ़ता जावे और जिस दिशा में क्रोधी मानव हो उस दिशा में सरसों फेंकता जावे तो क्रोध नष्ट हो जाता है । (भस्म निसर्ग क्षिपते क्रोध)

मन्त्र :—वानरस्य मुखं घोर आदित्य सम तेजसं ज्वरं तृतीयकं नाम दर्शना देव नश्यति तद्यथा हन २ बह २ पच २ मथ २ प्रमथ २ विध्वंसय २ विद्रावय २ छेदय २ अन्यसीमां ज्वर गच्छ हनुमंत लांगुलः हारेण भेदय ॐ क्षां क्षीं क्षीं क्षः रक्ष रक्ष फट् स्वाहा । विष्णु चक्रेण छिन्न २ रुद्र श्रुतेण भिद भिद ब्रह्मकमलेन हन हन स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को केणर, गीरोचन से भोजपत्र पर लिखकर प्रातः गंगी को दिखाने से ज्वर का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ कुरु कुरु क्षेत्रपाल मेघनाद केरी आज्ञा ।

विधि :—अनेक बार २१ खटिकामभिमन्त्र्यस्य ज्वर आगच्छन्ति स ज्वर वेला या अग्रे उपवेश्य तत्पार्श्वतस्त्रि रेखाभिः कुण्डकं । श्रियते यावद्देवाया उपरिघटिका १ अतिक्रांता भवति तावत्कुण्डकं नमस्कारेण उत्तारणीयं कुण्डस्थेन न पातव्यं न भोक्तव्यं किन्तु नमस्कारा गुणनीया य र ल व व ल र य इति पूर्वत एव परावर्त्तनात् ३०० एकान्तरादि वेत्तोप शाम्भ्याति दृष्ट प्रत्ययोयं कस्यापि अग्रे न कथनीयः ।

मन्त्र :—ॐ पंचबाण हथे धनुषं बालकस्य अवलोकनं हनु अस्य सरूपेण नश्यत्तं धनुर्वातकं ॐ क्रां क्रीं ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—धनुष और पांच बाण लेकर मन्त्रीत करे, इस मन्त्र से फिर चारों दिशा में एक-एक बाण छोड़ देवे और एक बाण आकाश में छोड़े फिर धनुर्वीर रोगी के देखने से धनुर्वीर घात होता है। और कोई भी बालक को भी देखे।

मन्त्र :—हँ छाया पुरुषस्य क्षः क्षीः ३ क्षः क्षीः क्षीः क्षीः क्षीः क्षः।

विधि :—इस मन्त्र से अधाहेडा दूर होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते ईश्वराय गौरी चिन्ताय कषए मुष सहिताए कपाल मालाधराय चंद्र शोभिताय तृतीय ज्वर वर प्रदाय गमय गमय स्फोटय २ त्रोटय २ परमेश्वरीस्य आज्ञायाम रहिरे तृतीय ज्वर जड़ पीडा करइ।

विधि :—इस मन्त्र से गुग्गुल को १०८ बार मन्त्रीत करके, फिर रोगी के सिर पर महेश्वर है ऐसा विचार करता हुआ रोगी के सामने उस गुग्गुल को जलाने से तथा पानी कलवाती करके पिलावे तो तृतीय ज्वर जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवतः क्षेत्रपालं त्रिशूलं कपालं जटा मुकुट बद्धं शिरो डमरुक शोभितं उग्रनादं जियं गोगिणी जय जया बहुला संद विकट नै मुखं जयंतु कुण्डल विशालं।

विधि :—इससे दर्भ हाथ में लेकर रोगी का भ्राड़ा दे तो ज्वर का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते काश्यपपस्ताय वामुकि सुवर्ण पक्षाय वज्र तुंडाय महागुरुडाय नमः सर्वलोकन खातर्गताय तद्यथा हन २ हनि २ मन २ मनि २ सबलूतान ग्रस २ चर २ चिरि कुरु २ घोड़ासान गृह २ लोह लिंग छिद भिद २ गंडमाल कीटां भक्षे स्वाहा।

विधि :—तीक्ष्ण शस्त्रेण उज्येत गडमाला नश्यति।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय पद्मावती सहिताय शंशाक गोक्षीर धवलाय अष्टकर्म निर्मूलनाय तत्पाद पंकज निषेविनी देवी गोत्र देवति जलदेवति क्षेत्र देवति पाद्रदेवति गुप्त प्रकट सहज कुलिश अंतरीधयत्र स्थाने मटे आरा में नदी कुल संकटे भूम्यां आगच्छ २ आणि २ बांधि २ भूत प्रेत पिशाच मुद्गर जोटिग व्यंतर एकाहिक द्वाहिक चातुर्थिक मासिक वरसिक शीत ज्वर दाह ज्वर श्लेष्म ज्वर सर्वाणि प्रवेश २

गात्राणि भंज २ पात्राणि पूर २ आत्म मंडल मध्ये प्रवेशय २ अबतर २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से मुद्गलादि दोष नाश होते हैं ।

मन्त्र :—पर्वतु दुंगरु कर्कट वाडि तसुं केरि वंश कुहा हाडी छिद २ भिद २ सापून केरि शक्ति ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से विष कांटा ठीक होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रयाय तद्यथा हने मोहने अहं अमुकं अमुकस्यं उवरं बंधामि एकाहिक द्वयाहिक त्रयाहिक चातुर्थिकं नित्यं उवरं बंधामि वेला उवरं बंधामि स्वाहा ।

विधि :—केशर, गौरोचन से चौरिकां () ऊपर डम मन्त्र को लिखकर कंठ में धारण करने से ज्वर का नाश होता है । विदुक्त २० लिखित्वा द्वयोदिक शोर्माण-यिःवार परिमाज्यते ततो वृश्चिक विपयाति ।

मन्त्र :—घ घ घः घु घु घुः धरु धरु उ सुनील कंठु आउरे बाहुडि २ ।

विधि :—पाम हस्ते दुह अंगुलि अंगुठे, डक, गृहीत्वा अय मन्त्रो भास्ते वृश्चिक विप याति ।

मन्त्र :—ॐ सवरी स्वाहा ।

विधि :—जब अपने को बिच्छू काट ले तो वे इस मन्त्र को जपे, बिच्छू का जहर नहीं चढ़ता है ।

मन्त्र :—ॐ रौद्रं महारौद्रं वृश्चिकं अवतारय २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से सात प्रदक्षिणा करते हुये जपे तो वृश्चिक विप उतरति । अमं जपित्वा आत्म मन्त्रप्रदक्षिणादाय नीयामस्ततो वृश्चिक उतरति ।

मन्त्र :—अट्टारह जाति बिछी यह अरुणार उदे कुलावड महोदयउ उत्तारड खंभाक देव केरी आज्ञा फुरतु देव उतारउ ।

विधि :—इस मन्त्र से १०८ बार हाथ फेरना जाय और मन्त्र पढ़ता जाय तो बिच्छू का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—अट्ट गट्टि नव फोडि ३ तालि बीछतु ऊपरि मोरु उडिरे जावन गरुड भक्षइ ।

विधि :—इस मन्त्र से ७ बार हाथ से झाड़ा देने से बिच्छू का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—सुवर वाले हिगेर येहि अन्नु नेहि फलेहि अमुका बिछि उलप्रउ उत्तारिछइ एहि ।

विधि :—इस मन्त्र से प्रथम कपड़ा को मोड़ता जाये, तो बिच्छू का जहर उतर जाता है ।
मीन से मन्त्र पढ़ना चाहिये ।

मन्त्र :—ॐ कुरु कुल्ले ह्रीं फट् स्वाहा ।

विधि :—तृणाग्रेण वृश्चिक म्रंकुटक सप्तवार स्पृश्यते हस्ते गृह्यते न लगती यदापि पतति भूमौ नदा पुनस्तथैव स्पृश्यते शिरोष वृक्ष फले घषित्वा लगिते इकादपि वृश्चिक नुत्तरति ।

मन्त्र :—ॐ जः हः सः ।

विधि :—इस मन्त्र से सिर दर्द ठीक होता है ।

मन्त्र :—ॐ वैष्णवे हूं स्वाहा ।

मन्त्र :—ॐ क्षं क्षूं शिरोवेवनां नाशय २ स्वाहा ।

विधि :—ऊपर लिखे दोना ही मन्त्र सिर का दर्द मिटाने का है, इस मन्त्र को २१ बार पढ़ने से सिर वेदना ठीक होती है ।

मन्त्र :—ॐ पूं पूं हः हः दुःदुः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को केशर से भोजपत्र पर लिखकर कान में बांधने से अर्द्ध शिंसा रोग शान्त होता है ।

मन्त्र :—अध भेदकं सिरतो नाशय २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को गीरोचन से भोजपत्र पर लिखकर कान में बांधने से आधासोसी शान्त होता है ।

मन्त्र :—आवइ २ उद्धुं फाटिउमरि सिजा ३ चाउंड हणी आण जइ २ हइ ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं रीं रीं हं यः क्षः ।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार जपने से सिर पीड़ा की शांति दूर होती है ।

मन्त्र :—ॐ महादेव नील ग्रीव जटा धर ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से भी सिर पीड़ा शान्त होती है ।

मन्त्र :—ॐ ऋषभस्य किर २ स्वाहा ।

विधि :— इस मंत्र से भी सिर पीड़ा दूर होती है ।

मन्त्र :—पारे पारे समुद्रस्य त्रिकुटा नाम राक्षसी तस्याः किलो २ शब्देन
अमुकस्य चक्षु रोगं प्रणयति ।

विधि :— इस मंत्र से सप्तवड लाल डोरे को ७ गांठ देकर वाम कान पर डोरे को बांधने से
चक्षु पीड़ा दूर होती है ।

मन्त्र :—ॐ अं षि जले जलं धरे अन्धा घंधा कोडी देव पुआरे हिमवंतसारी ।

विधि :— इस मंत्र से २१ बार आरनाल जल मन्त्रीत करके चक्षु धोने से पीड़ा मिटती है ।

मन्त्र :—ॐ कालि २ महाकालि २ रौद्री पिंगल लोचनी श्रुतेन रौद्रोप शाम्यते
ॐ ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—बार ७ घर टुपुट लहणक वस्त्र दोरडउ यदि वामी तदा दक्षिणो कर्णे यदि दक्षिणा
तदा वामे बध्यते ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं पद्म पुष्पाय महापद्म पुष्पाय ठः ठः स्वाहा ।

विधि :— बार २१ हस्तो बाह्यते चक्षुगोभरण निवृत्तिः क्रियते ।

मन्त्र :—ॐ विष्णु रूपं महारूपं ब्रह्मरूपं महागुरुं शंकर प्रणिपादेयं अक्षि रोग
मा ह ह रौ हं हं हिरं सु स्वाहा ।

विधि :— इस मंत्र से पानी २१ बार मन्त्रीत करके जल छिड़के तो चक्षु पीड़ा शान्त होती है ।

मन्त्र :—ॐ क्षि क्षि प क्षं हं सः ।

विधि :— भस्म मन्त्रीत करके आँख पर लगावे तो चक्षु पीड़ा शान्त होती है ।

मन्त्र :—रे आकस हणाक आदित्य पुत्र थलि उत्पन्नउ खदणिया दारी उत्तर हि
कि उत्तारउं कि छात्तियाह कबार तुं (अवर्कोत्तारण मन्त्र) ।

मन्त्र :—ॐ भूर २ भूः स्वाहा । (खजूरा मन्त्र) ।

मन्त्र :—ॐ भूह २ स्वाहा ।

विधि :— इस इस मन्त्र को २१ बार पढ़ कर हाथ से भाड़ा दे तो खजूरा विष शान्त होता है ।
कथित बटिका पानीयेन घषित्वा डंके दीयते खजूरो विषोपशमः ।

मन्त्र :—हूं बु कु कुरु वंमणुराउ पंचय मिलहि तिपव्वय घाउ ।

विधि :— इस मन्त्र से मिट्टी को मन्त्रीत करके घाड़े के काटे हुये पर डालने से और हाथ से
भाड़ा देने से घृच्छा हो जाता है ।

मन्त्र :—वाग्धर्हि रहोज्जुतो सीहे हि परिवारिऊ एम्य नंढ गछा मोकु कुराणां
मुखं वंजामि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार पढ़ना जाय ओर काँडे में गाँठ देवे तो पागल कुत्ते का मुख
बंद हो जाता है, फिर किसी को भी नहीं काटता है ।

मन्त्र :—तूरे वाहि ऊर्हि महादेवो उपाइ ऊर्हि धरि गरुडि बच्चाइ ऊर्हि धरि
गरुडि गरुडि ।

विधि :—२१ बार जन्ममिमन्त्र पीयते धनूरउ चूरति ।

मन्त्र :—कालो पंचालो ह्यालि फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से मक्खियाँ भागती हैं ।

मन्त्र :—उडक वेडि जागलि जाहठर त्तिइ पारिपरै त्तिइ जाहः कालो कुरङ्गी
तु हु फिट् काल काले सरी उग्र महेसरी पछार साधणि शत्रु
नाशिनी ।

विधि :—रविवार को गोबर से मण्डल करके उसके ऊपर खड़ा रहे फिर दर्भ लेकर इस मन्त्र
में भाड़ा २१ बार देवे तो कृमि दोष मिटता है ।

मन्त्र :—समुद्र २ माहिदीपु दीप माहिधनाढ जीव दाढ़ कीड़उ खाउ दाढ़ कीड़उ
न चाहित अमुक तणइ पापिली जइ ।

विधि :—इस मन्त्र से दाढ़ को २१ बार मन्थीत करे तो दाढ़ पीड़ा शान्त होती है ।

मन्त्र :—ॐ इटि त्तिटि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को १०८ बार जप कर ७ बार हाथ से झाड़ा देवे तो काँव विलाई
नष्ट होती है ।

मन्त्र :—कुकुहा नाम कु हाडउ पलि घडि उपलासइ घडिउ भारि घडिउ
भारसइ घडिउ सबरासबरी मंत्रेण तासु कुहाडेण छिन्न बलि भूटे
व्याधि ।

विधि :—इस मन्त्र को ७ बार जपने से काग काँख विलाई नष्ट होती है ।

मन्त्र :—ॐ चक्रवाकी स्वाहा ।

विधि :—मनुष्य के प्रमाण सान बड़ डोरा बनावे, फिर इस मन्त्र से १०८ बार मन्थीत करे
गुड़ के अन्दर गुटिका भक्षापयेदु वालका नश्यति ।

मन्त्र :—ॐ यः क्षः स्वाहा । अनेनापि सर्वतथैव कार्यं बालको पशामो भवति ।

मन्त्र :—ॐ देवाधिपतो सर्व भूतादि पत्तो ह्रीं बालकं हन २ शोषय २ अमुकस्य
हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—दोरउ नवंततु नव गंडि बालकोपशमो भवति ।

मन्त्र :—ॐ धीं ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—पानी अमिमन्त्र्य १०८ बार पीयते हिडुकि नाशयति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—बार ३२ हिडकी नश्यति ।

मन्त्र :—ॐ क्षां क्षां क्षुं क्षं क्षौ क्षं क्षः ।

विधि :—गर्म पानी को २१ बार मन्त्रीत करके पीने से विश्रुविका नाश होती है ।

मन्त्र :—यस्म करी ठः ठः स्वाहा । ॐ इचि मिचि मस्म करी स्वाहा । ॐ इटि-
मिटि मम भस्मं करि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से जल मन्त्रीन करके धिलाने से श्रीर हाथ से भाडा देने से ग्रजीर्ण ठीक
होता है और अतिसार भी ठीक होता है । और पेट का दर्द भी ठीक होता है ।

मन्त्र :—अतोसारं बंधेमि महाभेरं बंधेमि न क्वाहि बंधेमि स्वाहा ।

विधि :—डोरा को ७ बार मन्त्रीत करे, फिर कमर मे बांधे तो नाक रक्त, अतोमार ठीक
होना है । और बहुत खट्टी कांजी नीमक के साथ पाने से भी अतिसार ठीक
होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ नमो ऋषमध्वजाय एक मुखी द्विमुखी अमुकस्य बलीहा व्याधि
छिदय २ स्व स्थानं गछ प्ली हे स्वाहा । यह प्लीहा मन्त्र है ।

मन्त्र :—ॐ क्रों प्रों ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का १०८ बार जाप करने से दुष्ट वर्ण (घाव) का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ इटि तुटि स्वाहा ।

विधि :—(बलि नाशः)

मन्त्र :—ॐ इज्जेविज्जे हिमवंत निवासिनी अमोविज्जे भगंदरे वातारिसे सिंभारि
से सोणि यारि से स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से पानी ७ बार मन्त्रीत करके पिलाने से बवासीर ठीक हो जाता है ।

मन्त्र :—अडी विणडी विहंडि विमडीवा कुंण कुंण कुंतय तीविण ट्टी विमडी वा कुंकुणा विद्यापसाए अम्हकुले हरि साज्जन् भवन्ति स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से किसी भी प्रकार के धान्य का लावा । (भाणी) को मन्त्रीत करके ७ दिन तक खिलावे तो हरिष रोग याने बवासीर ठीक होता है ।

मन्त्र :—अंजणि पुतु हणवंतु बालि सुप्पीउ मुहि पइसइ २ सोसइ २ हरि मंत्रेण हणवंत को आज्ञा फुरइ ।

विधि :—इस मन्त्र से सुगारी मन्त्रीत कर देने से ग्रीर नारियल को जटा कमर में बांधने से बवासीर रोग ठीक होता है ।

मन्त्र :—ॐ धानी धानी तुह सो बलि हालो बाबो होई बुबन्नी मासि बांहि बांधइ इ गांठिउ गांठि २ विस कंठउ पसरइ असुर जिणे विणऊभऊ ।
भाणऊ ।

विधि :—इस मन्त्र से पानी २१ बार मन्त्रीत करके पीने से बिष कंठक नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो द्राद्राव्य जस्स सरीखेर कारिणो तस्स छंडती नमो नमः श्री हनुमन्त की आज्ञा प्रवर्तते ।

विधि :—इस मन्त्र से थूक और भस्म दोनों को मन्त्रीत कर दाद के ऊपर लगाने से दाद ठीक होता है । प्रभु गदिनदशे चहिपा बलि तैलेन सह भेलयित्वा ऽभि मन्त्रिणा पूर्व दीयते दशदिक याति ।

मन्त्र :—कर्म जाणइ धम्म जाणई राका गुरु कउ पातु जाणइ सूर्य देवता जाणइ जाई रे विष ।

विधि :—इस मन्त्र से फोड़ा को मन्त्रीत करने से फोड़ा ठीक हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ दधी चिकतु पुत्तु तामलि रिषि तोर उपित्ता गावि जीम वाटि मारियउ तिथु वयरिहंतु लागउहंतु गावितु हु ब्राह्मणु छाडि २ न कीजइ अइसा ।

विधि :—इस मन्त्र से जल २१ बार मन्त्रीत करके उस पानी को मुख में लेकर, मुख में घुमाने से मसोड़ा ठीक होता है ।

मन्त्र :—ॐ घंटा कर्ण महावीर सर्व व्याधि विनाशनः खडुः पदानां मले जाते रक्ष
रक्ष महा बलः ।

विधि :—इस मन्त्र को सुगन्धित द्रव्यों से भोज पत्र पर लिख कर घण्टा में बांधे फिर उस घण्टा को जोर से बजावे जितने प्रदेश में घण्टे की आवाज जायेगी उतने प्रदेश के मल दोष नष्ट होंगे सर्व व्याधि नष्ट होगी ।

मन्त्र :—ॐ चन्द्र परिश्रम २ स्वाहा ।

विधि :—एक हाथ प्रमाण बाण (शर) को लेकर २१ दिन तक इस मन्त्र से रिंघणी वाय को ताड़न करे तो रिंघणी वाय नष्ट होती है ।

मन्त्र :—ॐ कमले २ अमुकस्य कामलं नाशय २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से चने मन्त्रीत करके खाने से कामल वाय नष्ट होती है ।

मन्त्र :—ॐ रां रीं रूं रीं रः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से २१ बार दिन ३४ तक हाथ से झाड़ा देवे तो कामल वात नष्ट होता है ।

मन्त्र :—ॐ कामली सामली विवहिन कामली चडइ सामली पडइ विहुसुइ
सारतणी ।

विधि :—इस मन्त्र से कामल वात नष्ट होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रयाय ॐ चलूट्टे चूजे स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को रोते हुये बच्चे के कान में जपने से बच्चा चुप हो जाता है रोता नहीं है ।

मन्त्र :—इष्टि महाइष्टि विद्विष्टि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से दृष्टि दूर होती है ।

मन्त्र :—ॐ मातंगिनी नाम विद्या उपब्रंडा महाबला लूतानां लोह लिंगानां
यच्चंहलाहलं विषं गरुडो ज्ञापयत (लूतागड गंडादि) ।

विधि :—इस मन्त्र से मकड़ी का जहर निकल जाता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ पार्श्व चंद्राय पद्मावतो सहिताय सर्व लूतानां शिरं छिद
छिद २ मिद २ मुँच २ जा २ मुख बह २ पाचय २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि : यह भी मकड़ी विष दूर करने का मन्त्र है ।

मन्त्र :—ॐ चंद्रहास खङ्गेन छिबि २ भिंबि २ हुंफद् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से फोड़ा को मन्त्रीत करने से फोड़ा ठीक होता है ।

मन्त्र :—ॐ हूं हां ह्रीं हूं हः महा दुष्ट सूता, दुष्ट फोडी, दुष्ट व्रण ॐ ह्रा ह्रीं सर्व नाशाय २ पुलित खङ्गेन छिंबि २ भिंबि २ हुं फद् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से १०८ बार फोड़ा, फुन्सी, व्रण, मकड़ी विष को मन्त्रीत करने से शान्त होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ हड होडि फोडि छिन्नं तल होडि फोडि छिन्नं विट्टा होडि फोडि छिन्नं बाहोडि फोडि छिन्नं सातग्रह चऊ रासी फोडि हणवंत कइ खांडइ छिन्नं जाहिरे फोडि वाय व्रण होइ ।

विधि :—कुमारी कन्या कर्त्रीत सूत में इस मन्त्र से गांठ १४ दे, फिर गले में या हाथ में बांधे तो सर्व प्रकार के फोड़े-फुन्सी इत्यादिक दूर होते हैं । और सर्व प्रकार की वायु नष्ट होती है ।

मन्त्र :—पवणु २ पुत्र, वायु २ पुत्रु हणमंतु २ भणइ निगवाय अंगज्ज भणइ ।

विधि :—इन मन्त्र से भी सर्व प्रकार की वात दूर होती है ।

मन्त्र :—ॐ नील २ क्षीर वृक्ष कपिल पिंगल नार सिंह वायुस्स बेबनां नाशाय नाशाय २ फुद् ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से भी वात रोग दूर होता है ।

मन्त्र :—ॐ रक्ते विरक्ते रक्त वाते हुं फद् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से स्त्रियों की या पुरुषों की लावण पड़ जाती है, वह दूर हो जाती है ।

मन्त्र :—ॐ महादेव आइ की दुट्टि विकि सर्व लावण छिंबि २ भिंबि २ जुलि २ स्वाहा ।

विधि :—यह भी लावण उतारण मन्त्र है ।

मन्त्र :—कविलउ कक्कडउ बंडवानर चालंतउ ठः ठः कारी नपज्जसइ न शीतलउ थाइ श्री दाहो नाथतणी आत्ता फुरइ स्वाहा ।

विधि :—बार १०८ पुरुष, स्त्री, वाग्निदध्धोत्तेन मंत्रेण धू धू कार्यते भव्यो भवति । यद्यने नोपायेननोपशाम्यति तदा तैल मभिग्रन्थ धीयते भव्यो भवति ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते हिमसीत लेहि मनुष्यारपातने महाशीतले ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से अग्नि उतारी जाती है ।

मन्त्र :—ॐ ज्वां ज्वां ज्वां ज्वां ।

विधि :—इस मन्त्र से अग्नि का स्तम्भन होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ठः ।

विधि :—इस मन्त्र से अग्नि का स्तम्भन होता है ।

मन्त्र :—ॐ अमृते अमृत वर्षाणि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से काँजि (मट्ठा) भरीत करके उस मट्ठा काँजी से धारा देवे तो अग्नि का स्तम्भन होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमः सर्व विद्याधर पूजिताय इति मिलि स्तम्भयामि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को पढ़कर अपनी चौटी में गांठ लगा कर अग्नि में प्रवेश करे तो जलेगा नहीं ।

मन्त्र :—गंग वहती को धरड़ कोकवालि विसुखाइ एणिहि विदि हि विदड वेसं नरु उलहाइ । ॐ शीतले ३ स्ये शीतल कुरु कुरु स्वाहा । (चारायां स्मर्यते) ।

मन्त्र :—वालेयः कर्व मेयः चिखित्यंष्ट कारं ठः ।

विधि :—इस मन्त्र से भी दिव्य स्तम्भन होता है ।

मन्त्र :—इंद्रे णरइय जुल्लिड वेण चाडा विषं तिल्लं महादेवेण थंभियं हिमजिस्व सीयलं ट्वाहि गोलक स्तंभ ॐ जं जे अमृत रुपिणी स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से (चारिका) दासी का स्तम्भन होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं स सूर्याय असत्यं सत्यं वद वद स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार स्मरण करके सिर पर हाथ धरे, फिर आग में प्रवेश करे तो आग में नहीं जलता है । यह मन्त्र भूटे को मृत्यु कहलाने वाला है । झूठा आदमी अगर शपथ करे कि मेरी अगर बात झूठी हो तो मैं आग में जल जाऊँगा नहीं तो जलूँगा नहीं । ऐसी शपथ करने वाला भूटा आदमी भी इस मन्त्र का आश्रय लेकर आग में प्रवेश करे तो झूठा होने पर भी अग्नि में नहीं जलेगा और सच्चा साबित

होगा निःसन्देह । वार २१ स्मरताय छिरसि हस्तो दीयते मो शुद्धोपि दिव्ये श्रुध्यनि न सदेहो । यावति क्षेत्रे दृष्टिः प्रसरति तावति क्षेत्रे एतं स्मरतो दिव्य श्रुद्धिः ।

मन्त्र :—ॐ श्री वीर हनुमन्त्र मेघ घर त्रय आवय सानर नानगण २ देवगण २ भेदगण जलंततो सावय सानर लहरि हिमाल जसुपाउदिय उतसु कछ मोथाइ जलं याह सीतलं जलत श्री हनुवंत केरी आज्ञा वापु वीर ।

विधि :—अयं मन्त्रो वार १०८ स्मृत्वा चूरि गृह्यते न दह्यते यदा अन्योगाहते तदा वार २१ चूरिसं मुख निरीक्ष्य स्मर्यते सोपि न दह्यते पर चुरी दृष्टि र्बन्धीया ।

मन्त्र :—ॐ सिद्धि ज्वाला मती मोघामती कालाम्नी रुइ शीतलं जलत श्री हनुवंत पयमय वज्र लोह मयो तिल्ल नास्ति अग्निः ।

विधि :—अयं मन्त्रो वार १०८ स्मृत्वा गोल को गृह्यतेऽन्य पार्श्वदि लोकायता ग्राह्यते सोपि न दह्यते ।

मन्त्र :—ॐ नमो सुग्रीवाय अनंत योग सहस्राय आखारणा आधिया हनुं बहुं २ जलुं २ प्रज्वलुं २ भेदउं २ छेदउं २ सोसउं २ आप विद्या राखउं पर विद्या छेदउं प्रत्यंगिरा नमोःस्तु सुग्रीव तणो आज्ञा फुरइ ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—वार २१ स्मृत्वा चूरि गोलक दिव्यो शुद्धि यति । अक्षतान् वार २१ जपित्वा ऽ पर पार्श्वचूरि गोलक धमने क्षेपते स्व परयोः श्रुद्धिः दृष्ट प्रत्यय ।

मन्त्र :—ॐ अणिउ बंछ उधार बंधउं बालिसउं हनुवंतु बंधउं हनुवंति मूकी लाल अणिउं बंधउं किधार ।

विधि :—अनेन मन्त्रेण वार २१ धारा जप्पते खड्ग की धारा बंधः ।

मन्त्र :—आर धार खांडउ कथर तुं अणिउ लोह बंधु बंधउ वाप प्रचंड नार-स्यंह की शक्ति ।

विधि :—वार ७ खड्गा दीना धारा बंधः ।

मन्त्र :—धुलि २ महा धुलि धुलि वर्षाणि न फट्टई घाउ मुमरंतह वज्रा सणि पाउ ।

विधि :—एक विंशति वार चतुष्पथ धूलिमभिमन्थ प्रहारे दीयते भद्रो भवीत न संशयः ।

मन्त्र :—अरकंड मंडलस चरा चरं तोणि पीहउ प्रलय नीयउ कालिग बई गणध
तुरकं ।

विधि :—वार १०८ भणित्वा चौर्यतेलीह को परि रविबारे प्लीह को यात्येव ।

मन्त्र :—ॐ भगवति भिराडी भाटस्तु तु कुरु कुटउतिणि भगवति भिराडी को
६ मास सेवा कीधी भगवति भिराडी तूसि करि वरू दीहुउ जुकणू जल
बटि थल बटि अम्हरउं नामु ले सइ तमुकु सवणु फ़ेडि ससवणु होसइ ।

विधि :—इस मन्त्र को घर से जाते समय ३ बार स्मरण करे तो अपशकुन भी शकुन हो जाते
हैं । बार ३ अस्तु वस्तु मार्गेऽपशकुनं सु सकुन भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अहं शासन देवते सिद्धायके सत्यं दर्शय २ कथय २ स्वाहा ।

विधि :—परदेश जाते समय इस मन्त्र का सात पाँच चक्कर ७ बार स्मरण करे तो मुहुर्त
बार शकुन अच्छे न हाने पर भी सर्व कार्य सफल हाने हैं । अशुभ मुहुर्त भी इस मन्त्र
के प्रभाव से शुभ हो जाता है ।

विशेष :—सरसों का चूर्ण करे, फिर अंकोल के तेल में आग पर औटावे, फिर उस तेल को
ऊंट के चमड़े से बने हुए जूतों पर लगावे, फिर चले तो एक मे सी योजन की शक्ति
आ जातो है और फिर सी योजन वापस लौट भी सकता है ।

मन्त्र :—ॐ कलय विकलाय स्वाहा ॐ ह्रीं क्षीं फट् स्वाहा ।

विधि :—कलपानिये मन्त्रो बार २१ गुणनियी सर्व कर्म करो च ।

मन्त्र :—नानउ बोलइ सूतली चाउ चउदिशी मोकली ।

विधि :—इस मन्त्र से तेल मन्त्रीत करके लगाने से सुख पूर्वक प्रगुति होती है ।

मन्त्र :—ॐ क्षां क्षं क्षं ।

विधि :—इस मन्त्र से कर्ण श्रूल (कान का ददे) मिटता है ।

मन्त्र :—ॐ भूलानाथ देव नास्ति सूल सखानाथ देव नास्ति श्रूल बह्य चक्रेण
योगिनी मंत्रेण श्रीं ५ ।

विधि :—इस मन्त्र से प्रसूति श्रूल का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं कल लोचने ल ल भी बलीं प्लीं २ अमुकस्या गर्भं स्तंभय स्तंभय
क्लां बलीं क्लूं ठः ठः स्वाहा ।

विधि :- इस मन्त्र को हरिद्रा (हल्दी) के रस से भोज पत्र पर लिखकर एक मटके में लिखित भोजपत्र को डाल कर जो रस्ते पर उस मटके को गाड़ देवे तो गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है। देहली का धोवन तलवार का धोवन पीवे तो गर्भ नहीं गिरता है। पंचांग कर्णवीरं पिवेत छउइ पतति ।

मन्त्र :-ॐ चिटि चांडालि स्वाहा ।

विधि :- इयं मुपोपितेन् वार १०८ जाप्याततः स्त्रीणां सुन्यं भवति । कुंकुं गौरोचनाभ्यांभूजं लिखित्वा कंठा दी वध्यते ।

मन्त्र :-ॐ चामुंडे एष कोस्थंयं मामि व्रज की लके न ठः ठः स्वाहा ।

विधि :- काले डोरे को उस्टा बट कर इस मन्त्र को २ बार बोलकर - गांठ डोरे में लगावे फिर कमर में बांधे मूल नक्षत्र या जेष्ठा नक्षत्र में तीं गर्भ गिरना रुक जाता है। जो महीने समाप्त हो जाने पर उस डोरे को छोड़ देना चाहिए तब ही बच्चा होगा। जब तक डोरा कमर में बन्धा रहेगा तब तक प्रसूति नहीं होगी ।

मन्त्र :-ॐ चक्रेश्वरी चक्रधारिणी शंख गदा हस्त प्रहरणी अमुकस्य बंदि मोक्षं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :- इस मन्त्र में तेज मान बार मन्त्रीत करके सिर पर डालने से बंदि मोक्षः ।

मन्त्र :-ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं कलिकुंड वंड स्वामिने मम् बंदि मोक्षं कुरु २ श्रीं ह्रीं क्लीं स्वाहा ।

विधि :- सात दिन तक संध्या के समय निश्चय से जप करे तो शीघ्र ही बंदी मोक्ष होता है एक माला नित्य फेरे ।

मन्त्र :-ॐ हरि २ तिष्ठ २ तस्करं बंधेमि माचल २ ठः ।

विधि :- इस मन्त्र से अपने वस्त्र को मन्त्रीत कर एक गांठ लगावे तो मार्गमें चोर का भय नहीं रहता ।

मन्त्र :-ॐ नमो सबराणं हिली हिली मिलि मिलि बाचायै स्वाहा ।

विधि :- इस मन्त्र का २१ बार स्मरण करने से वचन चातुर्य होता है ।

मन्त्र :-ॐ मालिनी कलि २ सणि २ ।

विधि :- इस मंत्र का स्मरण करने से सरस्वती की प्राप्ति होती है ।

मन्त्र :-ॐ कर्ण पिशाचो अमोघ सत्य वादिनी मम् कर्णे अवतर २ अतीताः नागत बर्त्तमानं दर्शय २ एहि ह्रीं कर्ण पिशाचिनी स्वाहा ।

विधि :—शुद्ध होकर रात्री में स्मरण करे ।

मन्त्र :—ॐ नमो नमो पसेय बुद्धाणं ।

विधि :—प्रतिवादि पक्ष की विद्या छेद होती है ।

मन्त्र :—ॐ नमो सयं बुद्धिणं ज्ञौं २ स्वाहा ।

विधि :—नित्य ही सिद्ध भक्ति करके इस मन्त्र का जाप करे तो कवि होता है और आगम वादि होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो बोहि बुद्धाणं ज्ञौं २ स्वाहा ।

विधि :—शत शत पंचविंशति दिनानि जपेत् एक संघो भवति ।

मन्त्र :—ॐ नमो आगास गमणां ज्ञौं २ स्वाहा ।

विधि :—अठ्ठावीस (२८) दिन तक नमक रहित काजि का भोजन करके प्रतिदिन १०८ बार मंत्र जपे तो आकाश में १ योजन तक गति होती है ।

मन्त्र :—ॐ नमो महातवाणं ज्ञौं २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से १०८ बार पानी मंत्रित करके पीने से अग्नि का स्तंभन होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो विष्णो सहिपत्ताणं ज्ञौं २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का जप करने से नर मारी का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो अमिया सवाणं ज्ञौं २ स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र का जप करने से सर्व प्रकार का उपसर्ग नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो खेलो सहिपत्ताणं ।

विधि :—सद्योऽपि मृत्यु मुक्तामयती इस मन्त्र को नित्य जपने से अपमृत्यु का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो जलो सहिपत्ताणं ।

विधि :—इस मंत्र से शुद्ध नदी का जल १०८ बार मंत्रित करके पीने से तीन दिन में ही अपस्मरादि रोग का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो धोर तवाणं ।

विधि :—विष सर्पादि रोग पर जप प्राप्त करता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते नमो अरहंताणं नमो जिणाणं ह्रां ह्रीं हूं ह्रूं हः
अप्रति चक्रे फट्चि चक्राय ह्रीं ह्रूं अ सि आ उ सा ज्ञौं २ ज्ञौं २
स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र का स्मरण करने से विसुचि (हैजा) रोग का स्तम्भन होता है ।

मन्त्र :—ॐ ज्वल २ प्रज्ज्वल २ श्रीं लंका नाथ की आज्ञा फुरइ ।

विधि :—इस मंत्र का स्मरण करने अग्नि प्रज्ज्वलित होती हैं ।

मन्त्र :—ॐ अग्नि ज्वलइ प्रज्ज्वलइ डमइ कट्टह भाइ मई वे सन रथं भियउ
अग्नि हि पडउतु सार ।

विधि :—अनेन मंत्रेण कटाहा मध्याह्निकाः कृष्यन्ते ।

मन्त्र :—ॐ पुरुषकाये अद्योराये प्रवेग तो जाय लहु कुर २ स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र से सरसो २१ बार जप करके सिर पर धारण करे तो सर्व कार्य सिद्ध होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो कृष्ण सबराय वल्गु २ ने स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र को हाथ से २१ बार स्वयं को मन्त्रीत करके जिसको भी स्पर्श करे वह वश में हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ भवगती काली महाकाली स्वाहा ।

विधि :—सबरे मुँह धोकर इस मंत्र से हाथ में पानी लेकर ७ बार मन्त्रीत करे और फिर जिस व्यक्ति के नाम से पीवे वह व्यक्ति वश में हो जाता है । सात दिन तक इसी प्रकार जल पीवे ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवती गंगे काली २ महाकाली स्वाहा ।

विधि :—वाम पाँव के नीचे की मिट्टी को वाम हाथ से ग्रहण करे फिर उस मिट्टी को ७ बार मन्त्रीत करे फिर अपने मुख पर लगावे (मुख खरछते) फिर राज कुल में प्रवेश करे और जैसा राजा को कहे, वैसा ही राजा करे ।

मन्त्र :—ॐ आकाश स्फाटिनी पाताल स्फोटिनी मद्य मांस मक्षणी अमुका जीभ
खिलि २ स्वाहा ।

विधि :—दक्षिण दिशं गत्वा, ठिकरकं गृहीत्वा, इमशानां गारेण, जलसह घृष्टेण अर्कपत्रे मन्त्रं लिखित्वा नाम श्रलविद्धं कृत्वा पत्र भूमौ निखन्या धोमुखं उपरिपाश्चाणं दत्त्वा धूल्या-स्थगपित्वा उपरि हृदनीय द्विर सानु कूलोनिः प्रतापश्च भवति गौरोचनात्मस्य पित्तो ना लोडय वामहस्त कनिष्ठां गुल्या तिलकं कारयेत् तैलोक्यं वशी भवति ।

मन्त्र :—ॐ नमो रुद्राय अगिधगि रंगि स्वाहा ।

विधि :—श्वेत सरसो को इस मन्त्र से ६० बार मन्त्रीत करके जिसके माथे पर डाले तो सबशी भवति महिला विशेषतः ।

मन्त्र :—ॐ जलिपाणिजं थलि पाणिजं मकरिमछिदं टोनीजं पाणिजं सूरग हणिजं
दिफ्जमु खुधावजं ज्ज जोयजं सुमोहजं ज्ज चाहजं सुवाहजं पंचकिरण
पंच धारि जो महु करइ रागुरो सु सुजाज अहुमइपा ताति फट् स्वाहा ।

विधि :—अनेत् सुर्योदय समये वाम हस्तेत् करोटक मध्य स्थितं उदकं गृहित्वा बार २१ अभि-
मन्थयत एकविंशति वारा मुष्ट प्रक्षाल्य राजकुले गंतव्यं श्वेत सर्वपा शिव निर्मात्य-
मेव च एकीकृत्य यस्य गृहे स्थापयेत् तस्यो ज्वाटनं भवति ।

मन्त्र :—ॐ पिशाच रूपेणालिग परिचुबयेत् भगंवि सिचयेत् स्वाहा ।

विधि :—अनेन मन्त्रेण उदकं बृलकमेक विंशतिवारा नृमूळ प्रक्षाल्य संध्या कालेऽनया
विश्रयायस्य नाम गृहीत्वा पानीयं पीयते एक विंशति रात्रेण नरेन्द्र पत्नी अपि वशी
भवति किं पुन सामान्य स्त्री । दूधी नी (लोकी) मूलं शुक्ल चतुर्दशी आदित्यवारे
गृहीत्वा आत्म मुखे प्रक्षिप्यते प्रकुपितमपि राजान पादयो ।
पातयति वशी करोति दृष्ट प्रत्यक्षः ।

मन्त्र :—ॐ तारे तु तारे तुरे मम कृते सर्वं दुष्टं प्रदुष्टानां जंभय स्थंभय मोहय
हुं फट् ३ सर्वदुष्टं प्रदुष्टानां स्तंभय तारे स्वाहा ।

विधि :—शुक्ल चतुर्दशी दिने १००० जाप्यसिध्यति प्रतिदिन वार ७ कार्य उपस्थिते वार १०८
वशी भवति दृष्ट मात्रे ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति रक्ता क्षीरक्त मुखी रक्त खशीरक्त मांस बलि ए ए
अमुकं उच्चाटय २ ॐ हूं हूं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को केशर से भोजपत्रपर लिखकर शत्रु द्वारे गाडे तो शत्रु उच्चाटन होजाता
है जहाँ जाता है वहा द्रोप ही होता है नीच जाति गृह सत्कानि सप्तम च वा नृणानि
मोन पूर्वकं गृहीत्वा कुमारो मुखेण वेष्टयित्वा पश्चात् सृष्टि संहार विरचितशरा
व युग्म लात्वा कपिलगोघृतेन एक वर्णं गोघृतेन भूत्वामलिन स्त्री पाश्चात् वृत्ति
दापयित्वा कज्जल पातयित्वा ते नैव घृतेन सहाजन कृत्वा तेन तिलक विद्याय राज-
कुलादौ गम्यते वशी कर्णमुत्तम ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति पद्मावती वृषभ बाहिनी सर्वजन क्षोभिणि मम चिंतित
कर्म कर्मकारिणी ॐ ॐ ह्रां ह्रौं ह्रः ।

विधि :—इस महा मन्त्र का स्मरण करने से सर्वजन वश करता है आदर से स्मरण करना
चाहिये । दृष्ट प्रत्यक्षः ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवतो रुद्राय ॐ चामुंडे अमुकस्य हृदयं पिबामि चामुंडिनी स्वाहा ।

विधि : इस मन्त्र से १०८ बार पानी मन्त्रीत करके जिसके नाम से पीवे तो वह वश में होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवती वशं करि स्वाहा ।

विधि इस मन्त्र से फलादिक २७ बार मन्त्रीत कर जिसको खिलाया जाय वह वश में होता है । अन्धा ब्रुलि के फूल और वाम पाव के नीचे की धूली, शमशान की राख (भस्म) सब मिलाकर चुर्ण करे फिर उस चुर्ण को जिसके माथे पर डाले वह वश में होता है ।

मन्त्र :—ॐ सुगन्धवती सुगन्ध वदन्ता कामिनी कामेश्वराय स्वाहा अमुक स्त्री वश मानय २ ।

विधि — इस मन्त्र का ३० दिन तक रात्री में १०८ बार जप करे तो अन्य की तो क्या बात इन्द्र की पत्नी भी वश में होती है ।

मन्त्र :—ॐ देवी चंद निरइ करइ हरु मंडइ राहुडि तीनइ त्रिभुवन बसि किया हूँ कियइ निलावि ।

विधि — इस मन्त्र से चन्दनादिक मन्त्रीत करके तिलक करने से सर्वजन वश में होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ काम देवाय काम वशं कराय अमुकस्य हृदयं स्तंभय २ मोहय २ वशमानय स्वाहा ।

विधि : — इस मन्त्र से कोई भी वस्तु मन्त्रीत कर चाहे जिसको देने से वह वश में होता है । सिन्दुर, चन्दन, कुकुम सम भाग लेकर इस मन्त्र से ७ बार मन्त्रीत कर माथे पर तिलक करने से अच्छा वशीकरण होता है ।

मन्त्र :—ॐ देवी रुद्र केशी मन्त्र सेसी देवी ज्वाला मुखी सूति जागा विसिबइट्टो लेयाविसी हाथ जोडंति पाय लागंति ठं ठलो वार्यति सांकल मोडंति ले आउ कान्हड नारसिह बीर प्रचंड ।

विधि : — इस मन्त्र को जिसका नाम लेकर १०८ बार ७ दिन तक जपे तो वह वशी होता है ।

मन्त्र :—ॐ समोहनी महाविद्ये जंभय स्तंभय मोहय आकर्षय पातय महा समोहनी ठः ३ ।

विधि :— इस मन्त्र का स्मरण मात्र से वशीकरण होता है ।

मन्त्र :— काँड़ करे सिलोउरे खुवा महु चउसट्टि जोगिणि केरीमुदा ।

विधि :— इस मन्त्र से अपने धुक को २१ बार मन्त्रीत करके फिर उस धुक से तिलक करे तो राज कुलादिक में सर्वत्र जय होती है ।

मन्त्र :—ॐ हं ३ ह्रीं ३ हूं व वा वि वो वु वू वे वं वो वौ वं वः ।

विधि :— रात्री को सोते समय प्रातः इस मन्त्र का एक एक श्वास में चितन करे फिर जो मन में चितन करे वह वश में होता है ।

मन्त्र :—ॐ काली आवी काला कपड़ा काला आभरण काला कनि ताडवन्न
केशकरी मोकला आवीचड़ बाहए कहाथि प्रज्वलंतो छापी एक हाथी
कुत्ता चाक ह्रिम हिल्ली तहि नगहिल्ली जहि अच्छइ मत्तबिलासिणि
घर फोड़ि पुर मोड़ि घर जर्मलि धरु वालिदा घुता पुसो सु अंगिलाइ
अमुकी मारइ पाइ पाडि ।

विधि :— अनेन मंत्रेण जल चलुक २१ अभिमन्थ्य स्वप्न काले सुष्यते यावन्निद्रा नागच्छति
तावन्न वक्तव्यंसा वशी भवति ।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रयाय नमो चार्या व लोकिते श्वराय बोधिसत्त्वाय महा
सत्त्वाय महा कारुणि काय चंद्रेण सूर्य मति पूतेन महा महा पूतेण
सिद्ध पराक्रमे स्वाहा ।

विधि :— इस मन्त्र से अपने स्वयं के कपड़े को २१ बार मन्त्रीत करके उस कपड़े से गाठ लगावे
फिर क्रोधी के आगे जावे तो वह शांत हो जाता है धतुरे के फल को लेकर अपने
मुख में भावना देवे, फिर उसको पान के साथ जिसको भी खिलावे तो वह वश में
हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं अमुकं अमुकीं वा स्तंभय २ मोहय २ वश
मानय स्वाहा ।

विधि :— इस मन्त्र से पुष्प अथवा फलादिक १०८ बार मन्त्रीत करके जिसको वश करना हो
उसको दिया जाय तो वह वश में हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं मम अमुकं वशी कुरु २ स्वाहा ।

विधि :— इस मन्त्र का १०८ बार स्मरण करने से वश में होता है ।

मन्त्र :—ॐ हूं सर्वं दुष्टं जन्मं वशीं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का भी १०८ बार स्मरण करने से वशीकरण होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं कृष्णाङ्गि देवि मम सर्वं शत्रुं वशं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का १०८ बार स्मरण करे, वशीकरण होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्रीं ह्रीं हूं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से सुपारी मन्त्रीत करके जिसको दिया जाय वह वशी होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो देवीए ॐ नमो मरणीय ठः ठः ।

विधि :—इस मन्त्र से काजल १०८ बार मन्त्रीत करके आँख में आंजने से सर्वजन वशी होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं सिद्ध बुद्ध माला अंबिके मम सर्वां सिद्धिं देहि देहि ह्रीं नमः ।

विधि :—पुत्र की इच्छा रखने वालों को नित्य ही १०८ बार स्मरण करना चाहिये ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं द्रूं द्रः द्रावय २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से तैल और चावल मन्त्रीत कर देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है ।

मन्त्र :—ॐ शुक्रकामाय स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से कन्या कथित सूत को २१ बार मन्त्रीत करे, फिर सात बार मन्त्र को पढ़कर उस सूत को कमर में बांधे तो शुक्र का (वीर्य) स्तम्भन होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवत गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अश्वघोष महाणसस्स अवतर अवतर स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से अन्न ५०० बार मन्त्रीत करके बिकने वाली चीजों पर डालने से त्रय विक्रय में लाभ होता है ।

मन्त्र :—सीता देलागउ घाउ फूकिउ मलउ होइ जाउ ।

विधि :—इस मन्त्र से तैल ७ बार मन्त्रीत करके घाव पर लगाने से और २१ बार मन्त्र पढ़कर घाव ऊपर (पुष्पा प्रदान विधियते) घाव भरने लगता है ।

मन्त्र :—सोवन कंचोलउ राक्षावुधु पियइ घाउ न अउघाइ भस्मांत होइ जाइ ।

विधि :—कुत्ते के काटने पर इस मन्त्र से भस्म मन्त्रीत कर, लगाने से अच्छा होता है ।

मन्त्र :—सीहू आकारणी पह्या घालिरे जंप जारे जरा लंकि लीजइ हणुया नांउं
हरसं करखी अगन्या श्री महादेव मराडाची अग.या देव गुरु ची अगन्या
जारे जरा लंकि ।

विधि :—दसवड सुत्र में दश गांठ लगावे, दस बार मन्त्र पढे, फिर उस सुत्र को गले में या हाथ में बांधे तो बेला ज्वर, एकान्तर ज्वर, द्वयान्तर ज्वर, त्रयंतर ज्वर, चतुर्थ ज्वर नष्ट होता है। इसी प्रकार गुगुल मन्त्रीत करके जलाने से भी ज्वर का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ चंड कपालिनी शेषान् ज्वरं बंध सइल ज्वरं बंध वेला ज्वरं बंध
विषम ज्वरं बंध महा ज्वरं बंध ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से कुसुम रंग के डोरे में मन्त्र २१ बार पढ़ना हुआ ७ गांठ लगावे फिर गले में या हाथ में बांधे तो सर्व ज्वर का नाश होता है।

मन्त्र :—कालिया ज्वर बेताल नारसिंह खय काल क्षीं क्षीणी अमुकस्य नास्ति
ज्वरः ।

विधि :—बार २१ चापड़ी वादने ज्वरोयाति ।

मन्त्र :—सप्त पातालु सप्त पाताल प्रमाणु छइ वालु ॐ चालिरे वालु जउ
लगि राम लाषण के बाणु छीनि घातिय हिलउ ।

विधि :—इस मन्त्र से जगली कडे की राख और ग्रहस्त मन्त्रीत कर देने से स्तन की पीड़ा ठीक होती है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते आदित्याय सर २ आगच्छ २ इमं चक्षुरोगं नाशय २
स्वाहा ।

विधि :—कुमारीकत्रीत सुत्र को लेकर ७ बड करे, फिर मयूर शिखा को केशर में रंग कर उस डोरा में मयूर शीखा को बांधे, फिर इस मन्त्र से २१ बार मन्त्रीत करके कान में बांधने से चक्षु रोग का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ ज्येष्ठ श्रुक्वारिणि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से कुमारी सुत्र को सात बड करके सात गांठ लगावे, फिर उस डोरे को कमर में बांधने से वीर्य का स्तम्भन होता है।

मन्त्र :—अं रं हं तं सिं छं आं यं रिं यं उं वं शां यं सां हुं च ।

विधि :—एयाणि विदु मत्ता सहियाणि हवन्ति सोलसवि १ सोलससु अवधरेसु इविक नवं

अक्षरेणुम ताजा सावरि सा वइ मेहं कुणइ सुभिक्षं न सन्देहो । एयाइ अक्षराइ
सोलस जो पढइ सम्म मुवउत्तो सोदुण्यिक्खु दुराउलपर चवव भयाइ हणइ सया ।

मन्त्र :—ऐं ह्रीं झूं वूं कूं दूं टयूं झूं हूं क्लें हलें हूं तां कों ह्रीं फें हूं
क्षमैक्षमः ।

विधि : यह अट्टारह अक्षर वाली त्रैलोक्य विजयादेवी नाम महाविद्या वार ३३ चांदल तीनों
काल ध्यान करने से सर्व इष्ट की सिद्धि होती है ।

मन्त्र :—ॐ अहं नमः ॐ ह्रीं ३ ॐ श्रीं ३ ॐ प्रीं २ ॐ त्रीं ३ ॐ श्रीं ३
श्रीं ३ ज्ञीं ३ लीं ३ क्षीं श्रीं ३ हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—यह विद्या ३१ अक्षर की महा विद्या है, सर्व कर्म करने वाली है प्रथम विद्या चौर
भय होने पर १६ बार जाप करना चाहिये । दूसरी विद्या शांति कर्म स्थापना,
प्रतिष्ठादिक में, राजा आदि के पस जाने के समय ३ बार जपना चाहिये । तुरन्त
ही राजा के दर्शन होते हैं । तीसरी विद्या शाकिन्यादिक में मुद्यानादि दोष में
और छोटा पीडा में १०८ बार कलपानी आदिक करना चाहिये । चतुर्थ विद्या जब
गर्भ गिरने लगे, तब पानी तेल को १०८ बार मन्त्रीत करे फिर लगावे । पंचम्या
राज शत्रु भयादिषु स्वयं जाप्या आतुर पार्श्वी च जपनीया इष्ट देवता दीनां च
भोग कार्यः । षष्ठ्या मनुष्यस्य धनुर्वति सति गुणं १०७६ दाह्यते कर्णे च जप्यते ।
सप्तम्या सर्पं दष्टस्य घन घृतं वार २१६६ जप्तापानीयं कृष्ण जीरकं च परि
जाप्यो द्राह्यते लहरी नाशः । अष्टम्योयदा मेयजानदि मार्गा दो विपमा भवति तदा
जात्रा कुकुमेन जलेन वा, हस्त पट्ट (द कादौ लिखित्वा कूर्पूरा गुह धूपा दिना
पूज्या वार १०८ नदी मुगमा भवति । नवमी जग्नीया खड्गादि सम्भः । दशमी
पदीप नादो ग्मरणीया एत वस्त्रं परि जाप्य स मुख स्तम्भः दिव्ये उज्जि जप्यवा
शुक्ल (सरसो) सर्पया अग्नौ क्षेप्याऽतिष्टोऽब्रुद्धो भवति ।

मन्त्र :—ॐ नमो धर्माजाय मृत्युस्थाने शुभं कराय काक रूपिणे ॐ ठः ठः
स्वाहा ।

विधि :—अयं सदावार ३ त्रयं जाप्यः यदापह ६ मासा वधिरायुर्भवति तदाऽयं विस्मरति
उक्तांततो दशानामेवाय देयः ।

मन्त्र :—ॐ अहं म्मुख कमल वासिनि पापात्म क्षयं करि श्रुत ज्ञान ज्वाला सहस्र
ज्वलिते सरस्वती मत्पापं हन २ वह २ क्षां क्षीं झूं क्षीं क्षः क्षोर
धवले अमृत संभवे वं वं हुं २ स्वाहा ।

मन्त्र :—ॐ नमो अरहंताणं नमो सिद्धाणं नमो अणंत जिणाणं नमो सिद्ध
जोग धराणं नमो सर्व्वेसि विज्जा हर पुत्ताणं कयंजली ।

विधि :—इमं विज्जारायं पठं जामि इमामे विज्जा पसिष्यऊ ।

मन्त्र :—आवडाति वालिडा लिपं सुखरे ॐ आवत वो चडि स्वाहा ।

विधि :—दियं वाय पत्त कक्कराऊ वा विपरति ताऊ मत्त दाराऊभिमति उण जो आहम्म
इसो वसो होइ ॥१॥ इस मन्त्र से सात ककर लेकर मन्त्रोत करे, फिर जो भी
बिकने वाली चीज है उसमें उन सात ककरो को डाल देवे तो वस्तु शीघ्र बिक
जाती है ॥२॥ गयाए तुलसी पत्ताणी सत्ताभि मतिउण कंहे कीरंति जं मग्रइ
त ल ह इ ॥३॥ सत्ताभि मतिऊ कुमारी सुत मऊ डोरो हस्ते वध्यते कुविऊ
पमीयइ ॥४॥ गयाए धरा, कक्कराऊ सत्तधि तुण सत्त वा राजा वियाहि गावी
सुण हीवा । आहम्मइ ॥ ५ ॥ अप्पणो सरोरे पज्जविऊण जं मोसो वड सो वसो
भवई ॥ ६ ॥ गयाए तिल्ल जविउण जरिऊ मक्खिज्जइ सस्यो ह्वइ ॥ ७ ॥
गयाए सणददुस्स पाणियं सत्ताभिमतियं पाइज्जइ सुही होइ ॥ ८ ॥

मन्त्र :—ॐ कौं प्रौं नरो सहि सहे नमः ।

विधि :—गोमय मडलं कृत्वा श्री खड कस्तुरिका कर्पूरं रणमडल वेधाय तस्यो परि दीपकः कुमारी
कान्तं सूत्रं द्रुति धृत भूतो दीयते वार १०८ वार मन्त्रो जप्यते पात्र मस्तके दीयते
जब निकालने मध्ये आत्मना मन्त्रो जप्यते श्रुभे श्रुकला वधरा नारी श्रुक्ल पुष्पं
गृहीत्वा श्रुभ वदती दृश्यते अश्रुभे रक्ता वरा श्रुभं वदती च अष्टम्यां चतुर्दश्या वा
अथवा प्रयोजनेऽनस्या तिथौ दृश्यते दीप शोखायां दृश्यते ।

मन्त्र :—ॐ अरिहंते उत्पत्ति स्वाहा ।

विधि :—इय मन्त्र का एक लाख जप करने पर सिद्ध होता है इस विद्या का नाम विभुवन
स्वामिनि है । सिद्ध हो जाने पर विद्या से जो पुछो वह सब कहेगी ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं अहं हूं ह्रीं हूं ह्रीं हूं अस्मि आउसा नमः ।

विधि :—इयं सप्ता दशाक्षरी विद्या अस्या फलं गुरुपदेशा देव जायते ।

मन्त्र :—ॐ रुधिर मालिनी स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को सात बार जप करके अपना रक्त निकाले फिर उस रक्त को करंज के
तेल में मिलावे फिर कमल पुष्प की डंडि का डोरा सूत्र निकाले फिर उस डोरे की
बत्ती बनावे उस बत्ती को रक्त मिला हुआ करंज के तेल में डाल कर बत्ती को जला
देवे फिर काजल ऊपाड कर आँख में अंजन करने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है ।

अदृश्य व्यक्ति सबको देखता है, किन्तु दूसरे व्यक्ति उस अदृश्य व्यक्ति को नहीं देख पाते हैं।

मन्त्र :—ॐ मातंगाय प्रेत रूपाय विहंग माय धून २ घस २ आकर्षय २ हूं फट
सिरि सूल चंडा घर प्रचंड सुप्रीवो आज्ञापयति स्वाहा ।

विधि :—सरसों लेकर इस मन्त्र से १०८ बार ताड़ित करने से ग्रह भूत डाकिन्यादि शीघ्र दूर होते हैं। कनेर के फूल, धनुरे के फूल, अश्व गन्ध, अपामार्ग इन वस्तुओं की धूप बनाकर जलाने से भूत बाधा नष्ट होती है।

श्लोक :—कण वीरस्य पुष्याणि कनकस्य तथैव च,
अश्व गधा स्वपा मार्ग मेघ धूपो विधियते ॥१॥
अनेन धूपि तागस्य भूता नश्यति वि चिन्हताः,
शाकिन्यो विविधा कारास्तथा च, रजनी चराः ॥२॥
वैताला श्वेव तृमाडा ज्वरा श्चातुधिकादयः,
सपश्चिव विशेषेण शिरोति विविधा तथा ॥३॥
धूप राजेन सर्वेपि धूपि ताया विनाशनं,
श्रृङ्ग जनावरो खड्ग हस्ते बद्ध ज्वरम पहरति ॥४॥
इन श्लोकों का अर्थ बहुत सरल है इसलिए यहाँ नहीं किया है।

मन्त्र :—ॐ क्लीं ॐ सः ।

विधि : पान ७ चूर्णेन खंडयित्वाऽलकते केन लिखित्वा भक्ष्यते तृतीः ज्वरः नाशः ।

मन्त्र :—ॐ कुमारी केन ह्रीं भगवति नमो हूं अनाथाय ठः ३ ।

विधि :—कालत्रय बार १०८ जाप्य सप्ताह वस्त्रं ददाति, योगेचनं तथा हिंगु कुं कुमं च मनः शिलाक्षौ द्वेण च समा युक्तं जात्य धोपि च पश्यति ।

मन्त्र :—ॐ किरि २ स्वाहा ।

विधि :—अर्द्धरात्री मे नमन होकर इस मन्त्र का जाप करने से स्वप्न में मन चिन्तित कार्य को कहना है।

मन्त्र :—हंषो बलाय सूर्यो नमः ।

विधि :—कन्या कत्रीत सूत्र मे ६ गांठ लगाकर पाव मे बाधने से बलियाति ।

मन्त्र :—ॐ गरुडाय विलि २ गरुडो ज्ञापयति तस्य विष्णु वचने न हिलि २
हर २ हिरि २ हर २ स्वाहा निरक्खे (निरंरके) व सुमण्य पारे ।

विधि :—इमेण मन्त्रेण सत्त परियते भूइ धराउ नाशति वित्त गजेण दुहुवि ।

मन्त्र :—ॐ सं वं रं यं क्षं हं सं मातंगिनी स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से जल को अभीमन्त्रीत कर पिलाने से सर्व रोग चला जाता है । चउ दश भक्वर विज्जा जविय जलं सत्त वाराऊ जल विस दाह विसाणं वाहि हर तोए पीएण ।

मन्त्र :—ग छ ह उ कुपाउ उरु छिदउ मुहुछिदउ पुंछु छिदउ छिदि २
मिदि २ त्रुटि २ जाहि ३ निसंस्तानु ।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार पढ़ता जाय और हाथसे झाड़ा देता जाय तो, गड दोष नष्ट हो।

मन्त्र :—ॐ पंचात्माय स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से २१ बार चोटि मन्त्रीत करके चोटी में गांठ लगावे तो ज्वर से छुटकारा मिलता है ।

मन्त्र :—ॐ आं क्रीं ह्रीं नित्ये कलं दे मद द्रवे इं क्लीं ह्रसौं पद्मावती देवी
त्रिपुराजि त्रिपुर क्षोमिनी त्रिलोक्यं क्षोमय २ स्त्री वर्गं आकर्षय २
क्लीं ह्रीं नमः ।

विधि :—इस मन्त्र का विधि विधान से जप करने से महादेवी पद्मावती जी का प्रत्यक्ष दर्शन होता है ।

मन्त्र :—ॐ आं क्रीं ह्रीं ऐं क्लीं ह्रसौं पद्मावती नमः ।

विधि :—यह पद्मावती मूल मन्त्र है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं पद्मे पद्मासने श्री धरणेन्द्र प्रिये पद्मावती भियं मम कुरु २
दुरितानि हर २ सर्वं दुष्टानां मुखं बद्धय २ ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का २१ बार स्मरण करने सर्व कार्य की सिद्धि होती है ।

मन्त्र :—ॐ क्लीं क्लीं लीं ध्रीं (ध्री) श्रीं कलि कुंड भगवती स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का १००८ बार ज्येष्ठ महीने में जप करे तो पद्मावती महादेवी जी प्रसन्न होती है ।

मन्त्र :—ॐ भगवति विद्या मोहिनी ह्रीं हृदये हर २ आउ २ आणि जोहि २
मोहि २ फ्रे ३ आकाष २ भैरव रूपिणी क्लूं ३ मम वशमानय २
स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का १०८ बार जप करने से आकर्षण होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति महा विद्ये चक्रेश्वरी एहि २ शीघ्रं द्रां भूँ गृह् २
ॐ ह्रीं सहस्र वदने कुमारि शिखंड वाहने भुक्ते भुक्ते गात्रे ह्रीं सत्य
वादिनि नमः ।

विधि :—हाथ के चुलु में पानी ७ बार मंत्रीन करके नित्य पीवे । ७ बार तो, ज्ञान की वृद्धि होती है ।

मन्त्र :—ॐ नमो देवाधि देवाय नमः सिंह व्याघ्र रक्ष वाहने कटि चक्र कृत
मेले चंद्राधि पतये भगवति घंटाधिपतये टणं २ शब्दाधिपतये
स्वाहा ।

विधि :—घण्टा को २१ बार इस मन्त्र से मंत्रीत कर वाधने से रोग मिटता है । (यहा घण्टा से मतलब छोटे घु घरू लेना ।)

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति महा मोहिनी जंभनी स्तंभनी वशी करणी पुर क्षोभिणी
सर्वं शत्रु विद्रावणी ॐ आं फ्रों ह्रां ह्रीं प्रों ज्रोहि २ मोहि २ क्षुभ २
क्षोभय २ अमुकं वशी कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का रात्री को सोते समय ३०८ बार नमन होकर जपने से महा वशी करण होता है ।

मन्त्र :—ॐ अरे अरुणु मोह्य २ देवदत्तं मम वश्यं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को कृष्ण पक्ष की चौदश को पाटे पर लिखकर लाल कनेर के फूलों में जप करे १०८ बार तो उत्तम वशीकरण होता है । देवदत्त मन्त्र में आया है । उस जगह पर जिसको वश करना चाहे उसका नाम ले ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति अप्रति चक्रे जगत्सं मोहिनी जगदुन्मादिनी नयन
मनोहरी हे हे आनंद परमानंदे परम निर्वाण कारिणी क्लीं कल्याण
देवी ह्रीं अप्रति चक्रे फट् विचक्राय स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का सतत जप करने से सीमाय की वृद्धि सर्व जनप्रियता, और उत्तम प्रकार से वशीकरण होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति अप्रति चक्रे रत्नत्रय तेजो ज्वलित सु वदने कमले
विमले अवतर देवि अवतर विबुध्य ॐ सत्यं मादर्शय स्वाहा ।

विधि :— इस मन्त्र से शीशा, दीप, तलवार, छूरी, लकड़ी, जल, दीवाल आदि मन्वीत करके दोषो को दिखाने से जैसा का तैसा कह देता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति अप्रति चक्रे जगत्संमोहन कारि सिद्धे सिद्धार्थे क्लीं
क्लिंन्ने मवद्वे सर्व कामार्थ साधिनी आं इं ऊं हितकरी यसस्करी
प्रभंकरी मनोहरी वशंकरी श्रूं ह्रूं स्रूं द्रूं कुं द्रां द्रीं अप्रति चक्रे
फट् विचक्राय स्वाहा।

विधि — इस मन्त्र का सतन् जप करने में तीनों लोको की स्त्रियां क्षुभित होती है। परम सोभाग्य की प्राप्ति होती है। राजकुल की स्त्रियों को देखकर जपने में नित्य ही दाम भाव से व्यवहार करती है। इन तीनों ही कार्य के लिये पहले लाल कनेर के फूलों से १००० जप करे सर्व कार्य सिद्ध होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः यः क्षः २ ह्रीं फट् फट् २ स्वाहा।

विधि — मन्त्राधि राजमन्त्र — पहले उपवास करे, फिर सायंकाल में दूध पीकर सवेरे, काले चनो को खाकर मूँटीप्रमाण कृन्पक जटां पण्डिक को चाँवल का धोया हुआ पानी या चावल माड को पीसकर पिलाने से मारी रोग की निवृत्ति होती है।

मन्त्र :—ॐ ह्रां चंद्रमुखि दुष्ट व्यंतर कृतं रोगोपद्रवं नाशय २ ह्रीं स्वाहा।

विधि — वागा ध्वेताक्षता अभिमन्त्र्य गृहादीक्षेप्या दुष्ट व्यंतर कृत रोगो नश्यति।

अब भूत तत्र विधान को कहते हैं।

[श्रीमद पूज्य पादाचार्य कृत]

प्राणिपत्य युगादि पुरुषं, केवल ज्ञानं भास्करं, भूत तन्त्र प्रवक्ष्यामि
यथावदनु पूर्वशः ॥१॥

अर्थ — श्री आदिश्वर प्रभु को नमस्कार करता हूँ जिनको की केवल ज्ञान रूपी सूर्य का उदय हुआ है। ऐसे आदि पुरुष को नमस्कार करके भूत तन्त्र को कहूँगा जैसे कि पहले पूर्वाचार्यों ने कहा है।

तत्र :— श्रुति विद्या ल कृतो मन्त्री पंचांग वद्ध परिकरः साधयेद्भूतान् कृत्वा किं पुनः
मनुजेश्वरान् ॥२॥

अर्थ — सर्व विद्या से अलंकृत साधक सकली करण पूर्वक पंच अंग का रक्षण करता हुआ साधन करे तो तीनों लोकों को साधने वाला होता है तो फिर मनुष्यों के राजा की

तो बात ही क्या, अब माये वाली विद्या का तीन बार उच्चारण करे।
 णमो अरि हंताणं णमो सिद्धाणं णमो आगासगामिणिण। ॐ नमः—
 अब पंच ग्रंथ न्यास करके विचक्षण बुद्धि वाला कार्य प्रारम्भ करे। पंचांग न्यास
 विधि :—ॐ अरहंताण नमः हृदयं। हृदय को हाथ लगावे। ॐ सिद्धाणं नमः शिरः।
 ऐसा कहकर शिर का स्पर्श करे। ॐ आचार्याणां नमः शिखा। शिखा का स्पर्श
 करे। ॐ उपाध्यायानां नमः कवच। ऐसा कहकर कवच धारण करे। ॐ लोके सर्व
 साधुनां नमः अस्त्रं। ऐसा विचार करके अस्त्र धारण करे। इस सकली करण को
 मुर, इन्द्र भी भेदन करने में असमर्थ है, फिर अन्य की तो बात ही क्या है। सुरा
 सुरेन्द्राणां अस्त्र त्रिसर्ग युक्तं वाक्करं सर्वं दुष्टानां। इस प्रकार अंग न्यास विधि
 करके आदि प्रभु की प्रतिमा के सामने या अन्य तीर्थंकर की प्रतिमा के सामने यथा
 शक्ति पूजा करके मन्त्र का जाप प्रारम्भ करे।

मन्त्र :—सवाय नमो भगवतो ऋषभाय नमो गुरु पादेभ्यो हुहु २ कल २ सिमि २ गृह्ण २
 धनु २ रभ २ आविश २ माविलव २ शीघ्रं कुरु २ मुह २ मुह २ वंश २ दह २
 छिद २ प्युंभ २ वीर २ भंज २ महावीर २ अन २ मर्द २ हे है हे धु धू मेरे वष २
 हस ३ केलि ३ महाकेलि ठः फट् २ फुर २ सर्वग्रहान धनु महासत्त्व वज्रपाणि
 दुर्दातानां दमक चर ३ कंक ३ यथा नृशास्त्रोस्ति भगवता ऋषभदेवेन तथा प्रति
 प्रद्य इदं ग्रहं ग्रह्ण सुवज्र भूधरान् फालग्य महा वन्त्राधिपति सर्वं भूतधिपति वज्र
 मेरवल वज्र काल हुं २ रौतु २ जयति वज्र पाणिमहाबल दुर्द्धर २ त्रोध चण्ड
 धुर २ धावे २ ही ह्र ही ह्र ह ह्र ह्रा क्षा क्षा हो २ क्षी २ है २ क्षुं २ क्ष २ क्ष। सोध
 भधिपति ऋषभ स्वामिराज्ञापयति स्वाहा।

विधि :—यह पठित सिद्ध मन्त्र है, केवल पुष्पों से जप करना चाहिये, तब सिद्ध हो जाता है।
 चाहे गृह से गृहित हो, चाहे अगृह से हो, सबको सिद्ध हो जाता है। इस मन्त्र को
 पढ़ने से गृहित व्यक्ति को आवेश आता है, छोड़ देता है, हसाता है, गवांता है,
 जिसको कि इन रोगों से गृहीत हो। अन्त, वायुकि, नक्षक, कर्कटिक, पय, महापय,
 शंखपाल, कुलिक, महानाग, इत्यादिकों के काट लेने पर आवेश में आते हैं। शीघ्र
 ही जहर उतर जाता है। तीन लोक में जो कान कुट बिप हैं उसका भी असर नहीं
 रहता, फिर सर्प के जहर की तो क्या कथा। इस प्रकार पूज्यादाचार्य का वाक्य
 है यहाँ किसी भी प्रकार की शंका नहीं करनी चाहिये। और पवन उवर, डाकिनी,
 शाकिनी, भूत, प्रेत, राक्षस, व्यंतर्, गर्दभ, सूता (मकड़ी बिपा) दिक को नष्ट करता
 है, कितने ही दुष्ट क्यों न हो (पूजादाचार्य कृत भूत तंत्र समाप्ताः)

मन्त्र :—ॐ कुरु कुले ह्रीं ठः ठः स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र का पहले १० हजार जाप करे, तब मन्त्र सिद्ध होता है। प्रतिदिन रात्रि
 में बालि देकर ननेश्वर की ओर जाये, फिर इस मंत्र से बरबाचल को १०८ बार मन्त्रित

करके गाठ देवें, फिर राजकुलादिक में जावे तो साधक जो कहे, सो मान्य होता है ।
 अग्नर १००० जाप नित्य करे तो सर्व स्त्रियों का प्रिय होता है, और अग्नर किसी को
 वश करना चाहे तो अनु को १०८ बार जाप करने से कार्य की सिद्धि होती है ।

मन्त्र :—बहुत दिवस की कुठाहल नान्ही करिपाणी मे विमुपाणी उलान्हइ
 कापडइ छाणि लीजइ पियण दीजइ ।

विधि :—इस मन्त्र से गेर के बाल का विष नष्ट होता है ।

शाकिनी उच्चारण धूप : सरसों, हिंगु, नींबू, के पत्ते बन्ध, सर्प की कांचली, इस सबकी धूप
 बनाकर रोगी के सामने जलाने से शाकिनी का उच्चाटन हो जाता है । वणि की जड़,
 हिंगु, सूँठ सबको समभाग लेकर जल के साथ पीस लेवे, फिर शाकिनी गृहीत रोगी
 को नाक में सु धाने से शाकिन्यादि, रोगी को छोड़कर भाग जाते हैं ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवतो माणि भद्राय कथिस लिंग लोचनाय वाताचल प्रेतां—
 चल डाकिनी अंचलं शाकिनी अंचल वंध्या बलं सार्वभलं ॐ ह्रीं
 ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—ग्रांचलवात मन्त्र ।

मन्त्र :—ह्रीं । इति उपरित नांगुलिद्वय मध्येअंगुष्ठकं निधाय गुण्यते मार्गे सर्वं
 भयं निवर्तयति ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवत्यं अप कुष्मांडि महाविद्ये कनक प्रभे सिंह रथ गामिनी
 त्रैलोक्य ओमनी एहो २ मम चिंतितं कार्यं कुरु २ भगवती स्वाहा ।

विधि :—सफेद गुलाब के फूल १०८ बार लेकर इस मन्त्र का जाप करे तो लाभालाभ
 शुभाशुभं जीवन मरणादिक का कहता है । इस मन्त्र का कर्ण पिशाची भी
 नाम है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं कर्ण पिशाचिनी अमोघ सत्यवादिनी भम कर्णे अवतर २ सत्यं
 कथय २ अतीत अनागत वर्तमानं दर्शय २ एहो २ ॐ ह्रीं कर्ण
 पिशाचिनी स्वाहा ।

विधि :—लाव चन्दन की एक पुतली बनावे, फिर उसको पुतली के आगे एक पट्टे पर इस मन्त्र
 को लिखकर सुगन्धित पुष्पो से १०,००० जाप करे तब यह मन्त्र सिद्ध होता है । अब
 यहाँ पर संज्ञेप से कहते हैं । शब्द होकर सिधे कान को ७ बार इस मन्त्र से मन्त्रित
 करे या १०८ बार अव्यय वस्त्रे सुप्पते, तब शुभाशुभ स्वप्न में कहता है या वचन से
 कहता है । शिवजी के लिंग पर २४ प्रकार इमशान के अंगारे से (कोयले) लिखे,

किर ज्वर ग्रसित रोगी को उस लिंग को दूध से धोकर पिलावे, तो ज्वर से रहित होता है ।

मन्त्र :—ॐ द्रां द्रीं ख्लीं ख्लूं क्ष ।

विधि :—इस मन्त्र से भस्म मन्त्रित करके खाने से, घटिका रोग नष्ट होता है ।

मन्त्र :—दिशां वंघ भगवान वंघ बाहतां चक्षु वंघः सर्वं मुख वंघः क्लीं मुखः
ॐ वातली २ वाराही २ वारामुखी २ सर्वं दुष्ट प्रदुष्टानां क्रोधं
स्तंभस्तंभे जिह्वां स्तंभस्तंभे शिष्ट स्तंभस्तंभे महि स्तंभस्तंभे सर्व
दुष्टान् प्रदुष्टे ॐ ठः ७ क्लीं गुरु प्रसादे ।

विधि :—इस मन्त्र का जाप करने से सर्वभूत होता है, लेकिन गुरु की कृपा होनी चाहिये ।

मन्त्र :—ॐ सुषोबाय वानर राजाय अतुल बल वीर्य पराक्रमाय स्वाहा ।

विधि :—मन्त्री लिख्यते ढाहु लीपते शोभने चूर्ण खरटिते अधोमुखपुच्छा श्रुलाया वा एक द्वित्रि लिख्यते । इस मन्त्र को सुपारि, फल मन्त्रीत करके खिलाने से सर्व प्रकार के ज्वर नष्ट होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवतां पार्श्व चद्राय महोर्ष पराक्रमाय अपराजित शासनाय मसार प्रमदनाय सर्वं शत्रु वश कराय कित्ति किं पुरुष गरुड गरुडं यक्ष, राक्षस, भूत, पिशाच, प्रमदनाय सर्वं भूत ज्वर व्याधि विनाशनाय काल दष्ट मन्त्रो ह्यादनाय सर्वं दुष्ट ग्रह छेदनाय सर्वं रिपु प्रणामनाय अनेक मुद्रा कोटा कांटी शत सहस्र लक्ष स्फोटनाय वज्र शृङ्खल छेदनाय वज्र मुष्टि सचूर्णनाय चद्र हासच्छेदनाय मुद्रशंन चक्र स्फोटनाय सर्वं पर मन्त्र छेदनाय सर्वात्म मन्त्र रक्षणाय सार्वार्थ काम साधनाय विशाकुणाय धर्मेन्द्राय पञ्चावति सहिताय हिलि २ मिलि २ किलि २ महि २ दिनि २ परमाय साधिनी पञ्च २ पञ्च २ धम २ धर २ छिद २ भिद २ मुञ्च २ पाताल वासिनी पञ्चावति ग्राज्ञापयती हु फटः स्वाहा ।

विधि :—सर्व विषय के कार्य में इस मन्त्र का जाप करना चाहिये ।

मन्त्र : ॐ नमो भगवतो वंघ पार्श्वाय भगवत एहि २ यक्षं यक्षी राक्षसं राक्षसी भूतं भूती पिशाच पिशाची कुम्भाडं कुष्माडि नाग नागी क्षर क्षरी अपस्मार अपस्मारी प्रेतं प्रेती कुमारं कुमारी ब्रह्म राक्षसं स्कद स्कदी विशाख विशाखी गाधवं गाधर्वी उन्माद उन्मादी काली महाकाली खेती मशखेती काय यिनी महा काट्यायिनी भूगी गिटी महा भूगीरिटी विनाय की महा विनाय की चामुडि महा चामुडि सप्त मात्र की ताट की महा ताट की डाकिनी महा डाकिनी सप्त रोहिणी महा सप्त रोहिणी

सूर्य ग्रहं गृह २ सोम ग्रहं गृह २ वन राज ग्रहं गृह २ नागेश्वर ग्रहं गृह २ माहेश्वर ग्रहं गृह २ नमोस्तुते भगवते पार्श्वनाथाय एकाहिकं द्वाहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं विषम ज्वरं सांवसारि कार्डं मासिकं वातिकं पित्तिकं श्लेष्मिकं सनिपातिकं ज्येष्ठाय गृह २ मुह २ मुंच २ धम २ रंग २ तिष्ठ २ पच २ त्रिष्ठि २ कय २ पर २ तरु २ पूरय २ भगवते भो २ शिष्ट २ अगच्छ २ आवेश २ हन २ दह २ पच २ छिद २ भिद २ कुरु २ लघु २ चल २ रिपु २ गडाली २ चंडपुरी २ अपस्मारति पर पुरी २ धरि २ करि २ कुरु २ भीन्तरपूर्ण २ कुंभ २ भंज २ र र र र रि रि रि रि रि रु रु रु रु फट् सर्वक्षर नाशिनी कालमुखीना वामुकीना तक्षकीना कपिलाना काल कीटानां अष्टादश वृश्चिकानां द्वादश मूषकानां व्यतर विषनाशिनी सर्व विष छेदनी सर्व रोग विनाशिनी हितंकरी यशस्करी सर्व लोक वशंकरी नमो स्तुते भगवते पार्श्व नाथाय तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः आज्ञापयति स्वाहा ।

विधि —यह मन्त्र सर्व रोग मे पड़ता जाय और भाड़ा देवे तो सर्व रोग नष्ट होते हैं ।

मंत्र :—ॐ नमो भगवतो पार्श्वनाथाय श्री कलि कुंड नाथाय सप्त फण चतुर्दश दंष्ट्रा कर्णालाय धरणेन्द्र पद्मावति सहिताय महाबलि पराक्रमाय अपराजित साशनाय अष्ट विद्या सहस्र परिवाराय सर्व भूत वशकराय वज्रमुष्टि चूर्णनाय अकाल मृत्यु नाशनाय संसार चक्र प्रमदनाय सर्व विष मोचनाय सर्व मुद्रा स्फोटनाय सर्व शूल रोग नाशनाय काल दृष्ट मृतको पथापनाय सर्ववध मोचनाय अनेक मुद्राशत सहस्र कोटा कोटि स्फोटनाय वज्र श्रंगोद्भेदनाय सुदर्शन चंद्र हास खड्ग नाशनाय सर्वात्म मन्त्र रक्षणाय सर्वार्थ काम साधनाय सर्व विष छेदनाय सर्व रोग नाशनाय किं पुरुष गरुड गान्धर्व यक्ष राक्षस भूत पिशाच डाकिनीना प्रनाशनाय एहि २ महाबलि पद्मावति साधनी देवी एकाहिक द्वाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक वातिक पैतिक श्लेष्मिक सनि पातिक सर्व ज्वरान् गंड पिटक विस्फोटिक शूल सूता ज्वाला गर्दभ अक्षि कुक्षि रोगाणां बाल ग्रह हन २ दह २ पच २ पाटय २ विध्वंसय २ गृह २ वध २ मोचय २ तिष्ठ २ वेधय २ उच्चाटय २ चल २ धम २ रंग २ कंप २ जल्प २ कुरु २ पूरय २ आवेशय कपिल धाति कुरु २ कपिल पिंगल लोचनाय कुरु २ भ्रामय २ शान्तिकर २ शुभकर २ प्रसांताय २ ह्रीं धरणेन्द्राय अमृतवर्षां ज्ञापयति हुं फट् स्वाहा । क्षि आं अं क्षः रः ७ कुरु २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से भी सर्व कार्य की सिद्धि होती है तथा सर्व रोग शान्त होते हैं । ये पठित सिद्ध मन्त्र है । मन्त्र नित्य १ बार पढ़ने से स्वयं सिद्ध हो जाते हैं ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवतो पार्श्वनाथाय तीर्थंकराय कालामुखीनां वामुकीनां कपिलिकानां कालकीटानां तक्षकानां अष्टादश वृश्चिकानां एकादश वेवतानां पंचावश विसर्पाणां द्वादश मूषिकानां सर्वेषां चित्रिकाणां सर्वेषां

आकिनीनां सर्वेषां सूतानां सर्वेषां वातानां सर्वेषां बिस्फोटकानां
सर्वेषां उबराणं सर्वेषां नां सर्वेषां पन्नगानां सर्वेषां ग्रहाणां सर्वं रोग
विनाशिनी सर्वं विद्या छेदिनी सर्वं मुद्रा छेदिनी अर्थकरी हितकरी यशः
करी सर्वं लोक वशंकरी हन २ वह २ पच २ मथ २ गृह्ण २ छिद २
शीघ्र २ आवेशय २ पार्श्वं तोर्यकराय ॐ नमो नमः हुं २ यः २
पार्श्वं चंद्रो शापयति स्वाहा ।

विधि :—सर्वं साधकोयं मन्त्र ।

मन्त्र :—ॐ नमो अरहंताणं ॐ नमो सिद्धाणं ॐ नमो आयरियाणं
ॐ नमो उवज्झायाणं ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं ॐ ऐसो पंच-
णमोकारो ॐ सव्वपावपणासणो ॐ भंगलाणं च सव्वेसि पढमं हवइ
भंगलं स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र के प्रभाव से सर्व कार्य सिद्ध होते हैं, और सब इच्छा सफल होती है । यह
सर्व मन्त्रों का सार है ।

मन्त्र :—ॐ थंभेउ जलं जलणं चित्तिव मित्तीय पंच नमुक्कारो अरि मारि
चोर राउल धोर वसप्र पणासेउमनसया स्वाहा मन समोहियथं-
पुण कुणइ ।

मन्त्र :—ॐ नमो पंचालए पंचालए ।

विधि :—इस विद्या का जो जीवन-पर्यन्त स्मरण करता है । उनको जीवन पर्यन्त कभी सर्प
नही काट सकता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो सिद्धाणं आउवंसि चाउवंसि अच्चप्रलं पच्चप्रलं स्वाहा ।

मन्त्र :—ॐ नमि ऊणपास विसहर वसह जिण फुलिग ह्मी नमः ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं गह भूय जक्ख रक्ख सड़ाणि चोरारि बुद्धराय मारि धरागय
रोग जलणाइ सव्व भयाउ रक्खउ सिरियं भणयट्ठिऊ पासा स्वाहा ।

नोट : ऊपर लिखे मन्त्रों की विधि नहीं है ।

मंत्र . ॐ नदे भद्दे जए विजये अपराजिते स्वाहा ३ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमो बद्धमान स्वामिने
वां श्री वृद्धः स्वाहा ॐ ऐं ह्रीं नमो बद्धमान स्वामिनि महाविद्ये मम शान्ति कुरु
कुरु पुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं कुरु २ हृष्टि कुरु २ जीव रक्षां च कुरु २ ह्रीं क्षूं जंभे मोहे

हुं फट् ठः ५ बलि गृह् २ वृषं गृह् २ पुष्पाणि गृह् २ नैवेद्यं गृह् २ नानाविधं बलिं
गृह् २ सर्वं रोगं अपहर २ वां श्री वूं वः वर्द्धमान स्वामिने स्वाहा । ॐ पन्नती
गंधारी बड़ोटा माणवी महाजाला अम्बुत्ता पुरिसदत्ता काली गौरी महाकाली
अप्पडोहया रोहणी बज्र कुसा वज्रसिखला माणसी महामाणसी एयाउ मम सन्ति
कराले मकरा लाभकरा हवंतु स्वाहा ॐ अट्टे वय अट्टे सया अट्ट सहस्संय अट्ट
कोडोऊ रक्खंतु में सरीर देवा सुरपणमिया सिद्धा स्वाहा ।

विधि :- मस्तके वाम हस्तं चालयद्भिः स्वस्परक्षात्रियते ।

मन्त्र :- ॐ नमः देवपास सामिस्स संसार भय पारगा मिस्स ॐ ह्रीं श्रीं
लक्ष्मी में कुरु २ देवी पद्मावति भगवती ह्रीं स्वाहा ॐ चोराणि
मारि वितहर गर भयरिण रायवुट्ट जलणेय गहभूय जरक्ख रक्खस
साइणि दोसं पणासेउ मम देवोपास जिणो स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं आं
लक्ष्मी स्वाहा ।

विधि :- सात धान्य को इस मन्त्र से २१ बार मन्त्रीत करके सातों धान्यों को पृथक-पृथक
तोलकर पृथक-पृथक पुड़िया बांध लेवे फिर २१ बार मन्त्रीत करके सिराणे
रखकर सो जावे फिर प्रातः उठकर उन धान्यों की पुड़िया को तोल लेवे, जो
धान्य वजन में बढ़ जायगा वह धान्य ज्यादा पैदा होगा वर्षाकाल में ।

मन्त्र :- मुहि चंदप्पह उज्जियइ जिणुम थइ पारस वथु ईण इमु छ इं मुछकिय
को ही लणह समुथु ।

मन्त्र :- ॐ शान्ते शान्ति प्रदे जगज्जीव हित शान्ति करे ॐ ह्रीं भयं प्रशम २
भगवति शान्तेमम शान्ति कुरु कुरु शिवं कुरु कुरु निरुपद्रवं कुरु कुरु
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं हः शान्ते स्वाहा ।

विधि :- इस मन्त्र को तीनों समय (टाइम) जपने से निरुपद्रव होता है ।

मन्त्र :- ॐ नमोअ रहो बीरे महावीरे सेणवीरे वर्द्धमान बीरे जयंते अपराजिए
भगवज्ज अरहस्स जिणिव वरवीर आसणस्स कु समय मयप्पणा सणस्स
भगवज्ज समण संघरस में सिद्धासिद्धाइया सासण देविनि विग्घं कुणउ
सानिष्णं स्वाहा ।

विधि :- इस मन्त्र का नित्य ही स्मरण करने से किसी प्रकार का उपद्रव नहीं होता है ।

मन्त्र :- ॐ ह्रीं क्लीं ह्रूं श्री गज मुख यक्षराज आगच्छ मम कार्यं सिद्धि
कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रां क्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रूं व्रां व्रीं क्ष्म्वयूं

हस्तव्यं हस्तव्यं हस्तव्यं हस्तव्यं हस्तव्यं हस्तव्यं हस्तव्यं
 छस्तव्यं हस्तव्यं हस्तव्यं हस्तव्यं ज्वालामालिनी सर्व कार्याणि
 कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का नित्य ही स्मरण करने से सर्व उपद्रव शान्त होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ वीर वीर महावीर अजिते अपराजित अतुल बलपराक्रम त्रैलोक्य
 रण रंग मल्ल गजित मवारि मल्ल ऊं दुष्ट निग्रहं कुरु कुरु भूर्दानं
 मा कष्य सर्वं दुष्ट ग्रह भूत पिशाच शाकिनी योगिनी रिपुयक्ष राक्षस
 गंधर्व नर किनर महोरग दुष्ट ध्याल गोत्रप क्षेत्रप दुष्ट सत्त्व ग्रहनि
 ग्रहाण निग्रहीया २ ॐ कुरु कुरु मरु मरु इह वह पच पच सर्वं २
 त्राड्य २ सर्वं दुष्ट ग्रहं ॐ अहं-द्रुगवद्बीरो अतुलबल वीरो निह्मिया
 दत्र स्वाहा ।

विधि — इस मन्त्र से अक्षत २१ बार मन्त्रित कर घर में डालने से घर में किसी प्रकार का
 उपद्रव नहीं होता है ।

मन्त्र :—अरहंताणं जिणाणं भगवंताणं महापद्मावाणं होउ नमो ऊ माई साहिं
 तो सव्व दुक्ख हरो, जोहि जिणाणपद्मावो पर मिट्ठीणं च जंच
 माहपं संघामिजोणु भावो अवयर उजलं मिसोइथ ।

विधि :—इस मन्त्र से २१ बार पानी मन्त्रित कर पीलाने से सर्व प्रकार के उपद्रव शान्त होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ असि आउसा नमः स्वाहा ॐ अरिहोति लोय पुज्जो सत्त भय
 विवडिज्ज परम नाणी अमर नर नाग महिज्ज अणाइ निह्णो सिवदेउ
 ॐ वियये जंमे थंमे मोहे हूः स्वाहा ।

विधि — इयं विद्या यस्य विभस्य वध्यते तस्य वंता मुक्ते नायाति ।

धन्त्र :—ॐ ह्रीं ल्रीं क्ष्रीं श्रीं ह्रीं हे हे हर २ अमुकं महाभूतेन गृन्हापय २ लय
 २ शीघ्रं भक्ष २ छाहि २ हुं फटी ।

विधि :—मसान के कपड़े पर विप और खून से इस मन्त्र को धनु के नाम सहित लिखे फिर
 उस कपड़े को चार रास्ता फाँटता हों वहाँ गाड़ देवे तो शत्रुभूत बाधा से ग्रसित हो
 जाता है और उसको हटाने में कोई भी समर्थ नहीं होता है । जब गड़ा हुआ कपड़ा
 निकाल दिया जाय तब अच्छा होता है ।

मन्त्र :—ॐ घटो ॐ वज्राय स्वाहा ।

विधि :—रुद्राक्ष, गुडुल, भूत केशी, हिगु बिल्ली की टट्टी (मल) (वीराल वृष्टि) मोर पंख, गो शृंगु, मुलोढी, सरसों बच, इन सब चीजों को एकत्र करे फिर ये मंत्र पढ़ता जाय और इन सब चीजों को धूप देवे तो प्रेत ज्वर का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ लुं च मुं च स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से पानी को मन्त्रीत करे २१ बार फिर रोगी को पिलावे तो (अरिशोपशमः) बवासीर रोग शान्त होता है । इस मन्त्र को जो पढ़ता है सुनता है उसको बवासीर रोग नहीं होता ।

मन्त्र :—ॐ इले नीले २ हिमवन्त निवासिने गलगंधे विसगंधे अनघटे भगंदरे न कोरसा वातारसा हता कृष्णा हता श्वेता स्फटिक रसा मणि सन्त्र ऊषधीनां वर्णरातं जीवेत् । जो इमां न प्रकाशयेत् चतुर्थब्रह्म घातक ।

मन्त्र :—ॐ कालि महाकालि अवतरि २ स्वाहा लुं चि मुं चि स्वाहा ।

विधि :—जो इमा विद्यां न प्रकाशयेत् तस्य कुले हरिसा नाशयति । सवेरे दुरा मन्त्र को २१ बार द्व्यपलिका प्रमाण जल को मन्त्रीत कर ७ दिन तक पीवे तो उस व्यक्ति को हरस, (बवासीर) पीडा नहीं होती है । इस मन्त्र को प्रतिदिन भी स्मरण करना ।

मन्त्र :—अमीकऊ कुंडु तहि न्हाइ देव्या हाथि लउडातुपरि जविउ तेलु छीनीबराही पीड करइ फाडइ फूटइ जइ फुसइ ई पीड नहीं जान ही कइ गजहि गंड भमरइ नवउ सोषउ प्रचंडु गाजइ चारिमास मसाणि जागइ फाडइ पूटइ धावि लागइ काली-पन्नाली काली चउदसि उपश्री महादेव कइ मुहि पर्ज ति नीकली फाट फूटइ जइ फुसइ महादेवपूज पायल इधू धुरी वुचइ वानरी काली वूचइ कूकरी जाफोडी वाउ बियालु होउ जउल गिखडी कादव इन छीपइ सन होडी छिन्नउ बाय होडि छिन्नउ हाडहोडी छिन्नउ गुप्तहोडी छिन्नउ पाठ उछीन उधर वर उ छी न उ ऊग मुछी नउ ग्रह चउगसी नव फोडि छिनि छीनि हगु मन्त कइ खांडई महादेव कइ त्रिशुलितगु ब्रह्म राम सक संधि बाय जिणीकी जाय नव उचेडउ महादेव कउ काहुल उग उविसु लल्ल कारइ सीं गिय उवयणानु आकु तेलु घतुर उइधु घरि नि.धु घरि पिगलि माइदिठउ दोट्टि पराय ऊटकारी गयछ पुक्कारी ब्रह्मपुतु काज ला विसुजारे का दवा पुक्कार हिट्ठु टीबाइ ग्राछइ दुठु हतुन जाणउ मनदा पूछिका मलदे लारु खाइ भारउ खाइ ब्रह्म खाइ महादेउ खाइ तेतीस कोडि देवता न्हाइ जा फोडि वाउ बियालु होइ जउ लगि खडीका ध्वइन छीपइ ।

विधि :—इस मन्त्र से ३७ बार तैल मन्त्रित करके फोड़े पर लगाने से दुष्ट फोड़ा नष्ट होता है ।

मन्त्र :—ॐ आं क्रौं प्रौं ह्रीं सर्वं पुरं जनं क्षोभय २ आनय २ पादयोः पातय २ आकर्षणी स्वाहा ।

विधि :—अनेन मन्त्रेण बार २१ जपित्वा हस्तो बाह्यते तथा कुमारसूत्र दवर के अमु मन्त्र वा ७/७ जपित्वा सप्त ग्रन्थो दीयते ततो गढतर मलाना वस्था यां रोगिणः कटि प्रदेशे दक्षिण हस्ते वा दवर का वक्ष्यते बार ७।२१ अनेन मन्त्रेण वासा अभि-मन्थ्य रोगिणा शरीरे लभ्यते भ्रातृ सपुत्रं च रोगिणः खट्वा घस्यात् स्थाप्यते तस्य नित्य भोगादि कार्यं ते स्वयं च नित्य स्मर्यते ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं कृष्ण वाससे शत वदने शत सहस्रं सिंह कोटि बाहने पर विद्या उद्यादने सर्वं दुष्ट निकंदने सर्वं दुष्ट भक्षणे अपराजिते प्रत्यंगिरे महा-बले शत्रु क्षये स्वाहा ।

विधि :—इस महामन्त्र का नित्य ही १०८ बार जप करने से सर्व दुःखादिक का उपशम होता है और सर्वमन चिंतित कार्य की सिद्धि होती है ।

मन्त्र :—ॐ नमो इंद्र भूद गणहरस्स सद्यः लद्धि करस्स मम ऋद्धि वृद्धि कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को नित्य लाभ के लिए सदास्मर्य करना चाहिए । बकरे का मूत्र, टिपु, वच, इनको पानी के साथ पीसकर पिलाने से यदि वामु की सर्प भी काट लिया होतो भी निर्विष हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ भाले शाले हर विषये वेगं हाहासरो अंबेलं चे सर्वेक पोत गेद्वः माह्वं अर्चटः मः हुं २ लसः स्वाहा ।

विधि :—इस विद्या का स्मरण करने से विष निर्विष हो जाता है ।

अब कुरगिणी नाम की गारुड़ी विद्या को लिखते हैं ।

मन्त्र :—ॐ अकलु स्वाहा

विधि : इस मन्त्र से, शंख को सात बार मन्त्रित करके सर्प खाया हुआ मानव के कान में शंख को बजाने से तत्क्षण निर्विष हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ चिदि पिदि निक्षीज ३ ।

विधि :—अनया सप्त वारंपरिजप्य दष्टस्यै परि निक्षिपेत्प्रक्षणा निविधौ भवति ।

मन्त्र :—ॐ बलि चालिनी नीयतेज ३ ।

विधि :—इस मन्त्र को ७ बार जप कर हाथ को सँ खाये हुये व्यक्ति के ऊपर (दापयेत्) फिर पानो को माथे पर डालने से निविध हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ चंद्रिनी चंद्रमालिनीयते ज ३ ।

विधि :—इस मन्त्र से पानो को ५ बार मन्त्रोक्त करके सर्वेष्टा को स्नान कराने से १०० योजन चला जाता है और निविध हो जाता है ।

मन्त्र :—उत्तरापय पिप्पिलि संहि वसंहि ज (ग) पडरक्वसि विसऊ डइ विमुप धरइ विमु आहारि करेइ जे जं चक्खइ सयतु विमुतं सयतु निह विमु होइ अरे विस दीठु उदिठ्ठि बंधउ गंठि लयउ मुठ्ठि ॐ ठः ठः ।

मीणा मन्त्र :—छ हार कारनेछार ठं ठं ठं ठं कार ठः ठः ठरे विष ।

विधि :—उद्ध स्वासेन सोतजार कुर्वताऽनेन मन्त्रेण वार १०८ जल मभि मन्त्र्य भक्षित भक्षतर विंग्य पुण्यादि पानीयं पाप्यते सिञ्चतेऽवश्यं विष वमति अस्य मन्त्रस्य पूर्व साधना ।

विधि :—प्रतिवर्षं वार १/१ पुनः कियन्ति निव काटे नट्टि काया नि व चन्दना क्षरे मन्त्रो लिख्यते निव पुष्पे निव चन्दने न पूज्यते निव छाविक्ष्को द्राह्मने वार १०८ मन्त्रो जप्यन् प्रतिवर्षं वार १/१ अनेन विधिना पठित सिद्धिरुपात ।

मंत्र :—अह घोणसविज्जा ए मंतोह जयंति सत्तवाराउ पच्छापि बंति तोयं पटंति अह घोणसा विज्जा १ मंतोयं ॐ नमो श्री घोण से हरे २ वरे २ तरे २ वः २ वल २ लां २ रां २ रीं २ वं २ रौं २ रस २ क्षूं २ ह्रीं २ ह्रूं हां भगवतो श्री घोण से घः ५ सः ५ हः ५ वः ५ ङ ५ ठः ५ गः ५ वर विहंगम नुजे क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मो क्ष्मः क्ष्मां रो शोष य २ ठः ३ श्री घोण से स्वाहा ।

विधि :—यह पठित सिद्ध मन्त्र है इस मन्त्र से सर्व कार्य की सिद्धि होती है । सर्व प्रकार के विष दूर होते हैं । सर्व प्रकार के रोग दूर होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं महा संमोहिनी महाविद्योभय दर्शनेन अमुकं जू भय स्तंभय

**मोहय मूर्छय कछय आकछय आकर्षय पातय ह्रीं महा संमोहिनी ठः
ठः स्वाहा ।**

विधि :—इस मन्त्र का स्मरण करके उपदेश देने से सब श्रोता गण आकृष्ट होते हैं । स्त्र्यादि विषये तन्नाम् च यः कोपि रोचते तन्नाम खटिकया लिख्यो पर वाम पादं दत्वा वार १०८ स्मर्य तेन तस्तन्मृष्ट्वा वाम हस्तेन तिलकः क्रियतेऽधोमुखः ततो राजादिर्व-
शोऽस्यात् । स्त्र्यादि विषये च दक्षिण पादं दत्वा वार १०८ जप्त्वा च दक्षिण पाणिनोद्धं मुखस्तिलकः क्रियते परं तस्यानामोपरि पूगो फलं ध्रियते त तस्या दीयते ततः सा वशीकरण स्यात् ।

मंत्र :—ॐ ब्रह्म कुण्डि के दुर्जन मल २ मुखी स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से ७ या २१ बार चन्दन मन्त्रीत करके उल्टा तिलक करे तो संसार को वश करने वाला होता है ।

मन्त्र :—ॐ जंभे स्तंभे मोहे अंबे सर्वं शत्रु वंश करि स्वाहा ।

विधि :— इस मन्त्र को पहले १०० माला जप करके सिद्ध करले फिर जिसके नाम वार १०८ जन मन्त्रोंन करके तीन चुलु पानी छोटे और तीन चुलु पानी पिलावे तो वशी हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ अर्धयाडा पिटु वाडा जिथुथानक स्तेति आइ तिथु थानक जाह
महादेव की केरो आत्तारा ठः ठः ।

विधि :—अनेन् मंत्रेन तृयानि सप्त वार १०८ अभि मंत्र्ये बिले प्रक्षिप्यते कीटि का न नी सरंती ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं कलि कुंडे अमुकस्य आपत्त रक्षणे अप्रतिहत चक्रे ॐ
नमो भगवज्ज महा महावीर बद्धं माण सामिस्स जस्सोयं चक्रं जलतं
गच्छइ आयांसं पायालं लेयाणं भयाणं जोएवा रणेवा रायंगणेवा
जाणे वा वाहणे वा बंधणे वा मोहणे सब्बेसि अपराजिज्ज होमि होमि
स्वाहा ।



जयपुर निवासी, गुरु भक्त, संगीताचार्य श्री शान्ति कुमार गणवान, व उनकी धर्मपत्नि
 मेमदेवी ग्रन्थ प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ कराने हेतु श्री १०८ आचार्य गणधर कु धुसागर जी
 महाराज व श्री गणनी १०५ आश्रित विजयमनी मानाजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये ।

शारदा दंडक

ऐ जय २ जगदेक मात्तर्नम चन्द्र चूडेइ सोपेन्द्र पद्योद्ध बोध्यां श्रुशोतां श्रुशिखि पवन
यम धनद दनुजेन्द्र पनि वहाण मुख सकज मुर मुकुड मणि निचय कर निकर परिजनित वर
विविध रुचिर चित नव कुपुम चय-वुद्धि लुंछव भ्रमझूमर मालानि नादा नुगत मुंजुसि जान
मन्त्रोर कनस हनक मयकिकिगो क्काण्णजित्तपुडुछामर सनि भूतपद किरण गण-किंकरात्तगत
सुचक्रामण लो लेडु लो ले स्वया भावोम चरण नरवरन्न किरण कांति छलेन हरन यम
हृव्याशनः प्रतिकृतानग विजय श्रियो सोमवत्या भये नेव शरणागतः पादमूले सुमूलेसमालीन
इव नश्यते लजिन लाभ्य तहहंदनो मुयग जंगलान गजान कलवीत रजत प्रभोरुद्यते विद्यु-
दुद्योत मारिण्णवयो ज्वत्तावध्य काचो कला पानु सयमिन मुनि तव विवस्म रद्धिरद परि-
रचित नव रोमराज्यं कुशे निरंकुशे दक्षिणा वर्तनाभि भ्रम त्रिवलितर लुट्टित लावन्यरस निम्नगा
भूषित मध्यदेशे सुशेरे स्फुरतार हारावचं गान गंगा तरंग ध्व जालिगि तो तुंगनिविडस्तन
मगं गिरि शिवर यमे उमे दुरारो कर हुरे डानुतार कंठोडे सुपीडे लसित सरस सुविलास
भुज युगल परिहृमित कोमल मृणाल नव नाले सुनाले महानर्घ्यमणि वलय जमयूख मुख
मामनिन कर कमल आवरण किरण जित तरणि किरणे सुशरणे स्फुरत्यर्ध रागेन्द्र मणि कुंडलो
लसित कांति छटा हरिन गल्लस्थलो रचित कस्तुरिका पत्र लेखा समुत् खाल सुरताथ नामी
व जम्भे महासिद्ध गन्धर्व गण किनरो तुवर प्रमुख परिरचित विविध पद मगला नंद संगीत
मुख सम्पूर्ण कर्णेमु कर्णे जय जय स्वामिनि शशि सकल सुगन्धि तांबुल परिपूर्ण मुख बाल प्रवाल
प्रभावर दनोपाव विमान दंत छुनि द्योतिता शोक नव पल्लवा सक्त शरदिदु सांद्र प्रभेसु प्रभे
विश्वनाथादि निनाण विजि मन्त्र सूत्र सुस्पाट नासाप्र रेखे सुरेखे करोल तल कांति विभवेन
विभाति तस्यनि यावनि तेजामि चतनां सिच विमल तर तार तर संवर तार का नग लीला
विनासो त्तसित कर्ण पूतान विमान विपुलेशणा क्षेप विक्षेपे विक्षिप्त रुचिर २ नव कुंदली
नांजुज प्रकर भूरिताजा व काशे मुकागे चन्द्र लता विजित कंदर्प को दण्ड भंगे सुभंगे
मिलनमध्ये मृगनाभिमय बिन्दु पद चन्द्र निलकाय मानेक्षणालकृताब्जं दुरोचिर्ल लाटे सुलोडे
लसित वंश मणि जालि कान्ति चलय कुंतांतानुगत नव कुंद माला नुपक्त भ्रम द्भ्रमरपंक्ते
सुपंक्ते वह द्रुहल परिमल मनोहारि नव मालिका मल्लिका मालती केतकी चंपकं दीवरोदार
माला नुसंगयित धम्मिल्ल मुद्धविन द्वेदु कर संचयो गगन तल संचरोयं वशास्त्र वरुपः सदा
दृश्यते पावर्ष नाथे यस्य मधुर स्मीत ज्योतिषा पूर्ण हरिणांक लक्ष्मक्षणादेदेव विशिष्य ते तस्य

मुग्ध मुख पुण्डरी कस्य कविभिः कदा कोप माकेन कस्मै कथदीयतां सस्फुट स्फटिक घटिताक्ष
सूत्र नक्षत्र चय लक्ष्मि वति पद विनोद संदर्शिताहनिशा समय चारे सुचारे महाज्ञान मय पुस्तकं
हस्तपद्मेऽथ वामे दधत्वा भवत्वा स्फुटं वाम मार्गस्य सर्वोत्तम त्वं समुपदिश्यते दिव्य मुख सौरभे
योग पर्यंक बद्धास ने सुवदने सुखदने सुहसने सुवसने सुरसने सुवचने मुजघने सुसदने सुमदने
सुचरणे सुशरणे सुकिरणे सुकरुणे जननि तुभ्यं नमः ऐं अ इ उ ऋ लृ इति लघु तथा तदनु
दैर्घ्येण पंचैव योनि स्थिता वाग्भवेः प्रणवः ॐ बिन्दु रू बिन्दु रू क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स हे ति सिद्धं रुद्रात्मिक काममृत
कर किरण गण वषिणी मात्रि कामुद्दिगर्तितव मन्ति रस तीस संती हसती सदा तत्र कमल
भव भवन भूमौ भवति भय भेदिनि भवानि नद भजनी सुभुम्बः स्वभुम्बन भूति भव्ये सुहृद्व्ये
सुकव्ये सुक्त तितायेन सभाव्यसे तस्य जर्जरित जरसो विरजसो विपुत्री कुन्दादस्य सत्तर्क पद
वाक्य मय सु शास्त्र शास्त्रार्थ सिद्धांति सौरादि जैन पुराणेति हास स्मृति गारुडं भूत तंत्र
शिरोदय ज्योतिषायुर्विधाना ह्य पाताल शास्त्रार्थ शस्त्रस मन्त्र शिक्षा दिक् विविध विद्या
कुलं ललित पद गुफं परिपूर्णं रस लसित कान्ति सो दार भणिति प्रगल्भार्थ प्रबन्ध साल कृता
शेष भाषा नहा काव्य लोलोदय सिद्धि मुपयाति सद्योबिके वाङ्मये नैक के नैव वाग्देवी
वागीश्वरो जायते किञ्च कामा धरेण सक्त दुर्वारितेन तव साव को बाध को भवतु भूवि सर्व
शृंगारिणां तन्नय न पथ पथि मतिर नेत्रं निलोत्पलत् भटिति सिद्ध गंध वर्णन किनरी प्रवर
विद्याधरी वासुरी मरी वामही नाथ ना गांग ना वा तदा ज्वलन मदन शरि भिकर सक्षोभिता
विगलितेव दलि तेव छलिते व कवलितेव विलिखि तेव मुखितेव मुद्रितेव व पुयि संगद्य ते शक्ति
बीजेषु संख्यायिना योगिना भोगिना रोगिणा वैनतेयाप्यते नाहि नातत् क्षणाद मृते मेधाप्यते दुः
सह विषाणां शशांक चूडाप्यते ध्यायते येन बीज त्रय सर्वदा तस्य नाम्नेवप श्रु पाशमल पजर
द्वुष्टाति तदाज्जथा सिद्धयति गुणाष्टकं भक्ति भांजा महा भैरवि । ऐं ॐ हूं कवलिन सकलन
त्वात्मके मुख रूपे परिणताया त्वयि तदाक परि शिष्य ते शिष्यते यदि तर्हि वल्लक्ति होनस्य तस्य
कार्य क्रिया कारिता तदिति तस्मिन् विधौ तदा तस्य कि नाम कि शर्म कि कर्म कि नर्म कि
वर्म कि मर्म कामतिः कागतिः कारतिः काधृतिः कास्थिति पर्यप्यति यदि सर्व श्रुत्यांत भूमौ
निजे स्थास मुन्मेष समय समासाश्च बालाय कोयं शरूपापि गर्भ कृत. शेष ससार बीजानु
वज्जासि कंत तदा स्वबिकागीय मे तदनुगरिजनित कुटिलाप्र तेजो कुराजन निबामेति सस्तु
से बद्ध सस्पष्ट रेखा जिह्वावा ज्येष्ठेति संभाव्यसे संब श्रुंगा टका कारिना मागता रौद्रि
रौद्रिति विख्यायमे ताश्चवामादि कास्व त्क लक्ष्मीना गुणान् संदधत्यः त्रियाज्ञानमय बांक्षा
॥ मात्रामरस जगम मधु मथ पुर ररिः बीज भावं भजत्य सृजत्य स्त्रि भुवनं त्रिपुर

भैरवी तेन् संकीर्ण से तत्र शृंगार पीठे लसत् कुंडलोत्का कलामा कुला प्रोल्लसती शिवार्क
समास्क द्य चांद्रं महामण्डल द्रावयन्ति पिबन्ति मुधा कुल वधु व्रतं परित्यज्य पर पुरुषमकुलीन्
मवलम्ब्य सर्वस्व मात्रम्य विश्वं परि भ्रम्य तेनैव स्वार्गेण निजकुल निवासं समागत्य सन्तुष्य
सीतितदाकः पतिक प्रियः कः प्रभुः कोस्तिते नैव जानी महे हे महे स्थानिरम से च कामेश्वरी
काम काम गर्जा लये अनंग कुसुमादिभिः सेविताः पर्यट सि जाल पीठे तदनु चक्रेश्वरी परिजेता
नवसि भगमालिनी पूर्णा गिरि गह्वरे नग्न कुसुमा वृता विलससि मदन क्षरमधु विकासित कदंब
बिपिने त्रिपुर सुंदरी सो घ्राणे नमस्ते ३ अरहंते ।

इति त्रिपुर सुंदरी चरण कि करोडरीरचन् महा प्रणति दीपकं त्रिपुर दंडकं दीपकः
हमं भजति भक्ति मान् पट्टितयः सुधी साधकः सर्वाष्ट गुण संपदा भवति भाजन सर्वदा ॥१॥

इस त्रिपुर सुंदरी शारदा दंडक को जो कोई पढ़ता है, सुनता बुझिमान तो सम्पूर्ण
गुणरूपी सम्पदा को प्राप्त होता है । सम्पूर्ण दुःखों को दूर करता है । कीर्ति की प्राप्ति होती
है और सम्पूर्ण विद्याओं का स्वामी बनता है ।

॥ इति शारदा दण्डकः समाप्तः ॥

मन्त्र :—संयत्ते सीह भएसंतं मणि ऊष धगुह खूलेण किञ्जड तह कुंडलयं वहि
एते सयल संघस्स धगु हस्सरे हमध्येन कुणइ कुणइ चलयणंपि सीह
संघाऊ मंतप हाम्णेण कुडं संघस्स बिबल्लणं कुभई मंत्रोपया नंटायणु
पुत्रा सायरि उपडि हास मोरी रक्खा कुकुर जिम पुछी उल्ल वेइ उर
हइ पुछी पर हइ मुहि जाहि रे जाह अट्ठ संकला करि उरु बंधउ
वाघ वाघिणी मुहु बंधउ कति व्याणि खिणी की दुहाइ महादेव श्री
ऋषभदेव की पूजा पाइटा लहि जइ आगल्ही बीर बवेहि ।

विधि :— धनुष लेकर डोरी चढाकर आवाज करे धनुष का फिर इस मन्त्र से सात बार मन्त्र
पढ़ कर सात रेखा करे । मन्त्र के प्रभाव से व्याघ्र भी उस रेखा को उलंघन नहीं
कर सकता है ।

अनेन मन्त्रेण धगुह अदणि ना कुंडला कार सघात बाह्ये रेखा सप्तक क्रियते
मन्त्र प्रभावेन सिंहा सघात मध्ये नायाति रेखा नोल्लंघते ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रस्वलो पद्मे पद्मे कटिनी व्हे नमः ।

विधि :—इस मन्त्र का त्रिकाल १ माला फेरने से सर्व कार्य की सिद्धि होती है। विशेष जप करना हो तो गुरु की पहले आज्ञा प्राप्त करे तब ही सिद्ध हो सकता है। अन्यथा नहीं।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं सर्वं कार्यं प्रसाधि के भट्टारिके सत्कन् वयणर सस्य सम सव्वाऊ रिद्धिऊ सं पज्जंतु ह्रां ह्रूं क्रो नमः सर्वार्थ साधिनी सौभाग्य मुद्रया स्म० ॐ नमो भगवती यामये महा रौद्र काल जिह्वे चल चल भर भर धर धर क्रां क्रां ब्रौं ब्रौं हुं हुं य भालेनो हर हर ज्वीं हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से भूत प्रेतादि नष्ट होते हैं। इस मन्त्र को १०८ बार नित्य ही स्मरण करे।

मन्त्र :—ॐ इरि मेरि किरि मेरि गिरि मेरि पिरि मेरि सिरि मेरि हरि मेरि आयरिय मेरि स्वाहाः ।

विधि :— इस मन्त्र का साठ्ठा में ७ दिन तक १०८ बार जपे सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

मन्त्र :—श्री सह जाणंद देव केरी आज्ञा श्री गुरु याणंद केरी आज्ञा श्री पिगडा देव केरी आज्ञा अचलान् चालि चालि वेऊ कारि चालि चालि स्वाहाः ।

विधि :—पुष्प धूपाक्षत श्री खड युक्तो घट, सखो जपेत् चार १०८ तन शिलाया प्रत्य परे पुरुषोनि वेदया क्ष तै हंन्य ते ततः स्फिरत यह घट, शख भ्रामण मन्त्र है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं चक्र चक्रेश्वरी मध्ये अवतर २ ह्रीं चक्र चक्रेश्वरी घंट चक्रवे गेन भ्रामय २ स्वाहा ।

विधि :—नये घड़े को चन्दनादिक से मन्त्र से पूजा करके फिर घड़े के ऊपर कुम्हार को स्थापन करके इस मन्त्र का १०८ बार जाप करे फिर अक्षत से उस घड़े को ताड़न करे अगर घटा ससार में भ्रमण करे तो शुभ है और घड़ा टूट जाय तो हानी होगी। नूतन घट चंदनादि ना पूजीय त्वा मन्त्र भगन पूर्व मुपनि कुमार विवेच्य प्रथम बार १०८ अभि मन्त्रित रक्षितै स्ताडयत् सृष्टि भ्रमणे शुभ सहाये हानि ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं चक्रेश्वरी चक्र रूपेण घटं भ्रामय २ मम वंशय २ ॐ ह्रीं फट् स्वाहा ।

विधि :—नये घड़े के अन्दर चन्दन से ही लिखे फिर उस घड़े को मडल अन्दर स्थापन करे, फिर चारों दिशाओं में उस घड़े की पूजा करे फिर अक्षत लेकर मन्त्र पढ़ता जाय और घड़े का अक्षतों से ताड़न करता जाय तो घड़ा घुमेगा ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं चक्रेश्वरी चक्र धारिणी वज्र धारिण चक्र बेगेन कटोर कं
धामय २ दध्यं दर्शय २ शल्यं दर्शय २ चौरं दर्शय २ सिद्धि स्वाहा ।

विधि :—एक कटोरा को गाय के मूत्र में धोकर पत्थर के चकले पर स्थापन करे फिर कुंदरू
और गुगुल की धूप देकर इस मन्त्र से हाथ में सरमा लेकर उस कटोरा का मन्त्र
पढ़ता जाय और ताड़न करता जाय तो वह कटोरा जल कर जहाँ पर चोर होगा,
अथवा चोरों द्वारा जहाँ पर धन गड़ा होगा वहाँ पर पढ़ेगा ।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रय धाय नमो आचार्य विलोकिते स्वरात्थ बोधि सत्वाय
महा सत्वाय महा कारुणि काय चन्द्रे २ सूर्ये २ मति पूतने सिद्ध
पराक्रमे स्वाहा ।

विधि :—अपने कपड़े की इस मन्त्र से २१ बार मन्त्रीत करके गाँठ लगावे फिर क्रोधित मनुष्य
के सामने जावे तो तुरन्त वश में हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रयाय मोचिनि २ मोक्षिणी २ मिली २ मोक्षय जीवं
स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का त्रिकाल १० माला २ फेरे तो तुरन्त ही बंदी बंदी खाने से छूटता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अघोर घंटे स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का १ लक्ष जाप करने से तुरन्त बंदी बंदी मोक्ष होता है ।

मन्त्र :—ॐ लिं विं विं विं स्वाहा अलइ नलइ तलइ गलइ हेमंतु न वास इरसा
वाता रसा होता किं स्वामि लोमिता सप्त सिंगार केरउ मणि मंतु
ए विद्या जेन प्रकाश इतेह चत्वारि ब्रह्म हृत्या ।

विधि :—इस मन्त्र का बार २१ या १०८ बारस्य श्रुचिकया कटोर कस्था लगत्या जल-
मभिमश्र्यते तज्जल मद्धं पीयते शेष ध्रुवं जल मध्ये श्रुचिकानिधाय टारकं भव्य
परिणामम स्थोद्य भव्य स्थाने रात्रौ मुच्यते तत्र हरीपा पतति प्रमाते कटोर
कस्थ जल रक्तं भवति ।

हिपु, वच दोनो समान मात्रा में लेकर चूर्ण करे उस चूर्ण को बकरी के मूत्र के साथ
मिलाकर पिलाने से सर्प का विष दूर होता है ।

मन्त्र :—हउं सिठ हउं संकरू हउं सुपर मत्तान् विसुरं जउं विसुखाउं
विसु अवले विणि कर उं जादि सिवा हुउं सादिशि निविस कर उं
हरो हर शिव नास्ति विसु ।

विधि :—यावर विष भक्षण मन्त्र : भक्षितो वा कल पानीयं पातय्यं वार ७ अग्निमन्त्र्य निर्विघ्नो भवति ।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रयाय अमले विमले स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को १०८ बार पढ़ता जाय और हाथ से झाड़ा देता जाय और पानी को १०८ बार मन्त्रीत करके पिलाने से सर्प का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ह्रीं ह्रूं ह्रः ।

विधि :—इस मन्त्र से झाड़ा देवे १०८ बार तो किसी के द्वारा खिलाया हुआ जहर दूर होता है । तथा क्ष. इति स्मर्यसे सर्पों न लगति ।

मन्त्र :—ॐ कुरु कुत्से मातंग सवराय शंखं वादय २ ह्रीं फुट् स्वाहा ।

विधि :—बालु को २१ बार इस मन्त्र से मन्त्रीत करके घर में डालने से सर्प घर से भाग जाते हैं ।

मन्त्र —ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं कलि कुंड स्वामिने अप्रति चक्रे जये जये अजिते अपराजिते स्तंभे मोहे स्वाहा ।

विधि . कन्या कथित सुत्र को मनुष्य के बराबर लेकर १०८ बार मन्त्रीत करे, फिर उस सुत्र का टुकड़ा करके खावे तो (बालका न भवति) सन्तान नही होवे ।

मन्त्र :—वस्तव्यं क्षुत्तव्यं त्वस्तव्यं ।

विधि :—इस मन्त्र को पान ऊपर हाथी के मद से अथवा सुगन्धित द्रव्य से निखकर खिलावे तो वश होय ।

मन्त्र :—ॐ नमो ह्रां ह्रीं श्रीं चमुंड चंडालिनी अमुका मम नामेण आलिङ्गय २ ज्वय २ भय संवय २ ॐ क्रीं ह्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्वं फट् फट् स्वाहा ।

विधि :—रात्रि को सोने के समय इस मन्त्र को १०८ बार जपना, फिर पानी को २१ बार मन्त्रीत करके पीना, सोती समय इस प्रकार २६ दिन तक करना, शनिवार से प्रारम्भ करना, जिस स्त्री के नाम से जपा जायगा वह अवश्य वश में होगी ।

मन्त्र :—ॐ गुहिया वैतालाय नमः ।

विधि :—काली गाय का गोबर जब भूमि पर न पड़े उससे पहले ही रविवार को प्रभात ही अथवा ले लेवे, फिर जंगल में एकान्त जगह में जाकर उस गोबर का ४ कंड़े बनाना, फिर उसी दिन से नमक रहित गाय के दूध के साथ भोजन करना, उसी दिन से ब्रह्मचर्य का पालन करना, जब शौच लगे तब जंगल में जहाँ कंड़े पड़े थे

वहाँ जा कर एक कंड़े पर दाहिना पैर रखना दूसरे कंड़े पर बाया पैर रखना, एक कंड़े पर शौच करना, एक कंड़े पर पेशाब करना, शौच करते समय इस मन्त्र का एक हजार जाप करना। इस प्रकार तीसरे रविवार तक करना, जब तीसरा रविवार आये तब शमशान की अग्नि लाकर मल वाला कंड़ा और पेशाब वाला कंड़ा दोनों को अलग-अलग जलावे, फिर जलाकर दोनों कंड़ों की भस्म अलग-अलग रख लेवे। जब प्रयोग करना हो तो शत्रु के घर में विष्टा के कंड़े वाली भस्म को डालने से शत्रु के घर में खाने पीने की वस्तु में भोजन में सब जगह विष्टा ही विष्टा हो जायगा, शत्रु भोजन भी नहीं करने पावेगा। जब शत्रु चरणों में आकर पड़े तो पेशाब वाले कंड़े की राख को शत्रु के घर में डलवाने से विष्टा होना बन्द हो जायगा। तब शान्ति होगी।

मन्त्र :—ॐ उच्चिष्ट चांडालिनी देवी अमुकी हृदयं प्रविश्य मम हृदये प्रवेशाय २
हन २ देहि २ पच २ हुं फट् स्वाहा।

विधि :—शनिवार से रविवार तक ७ दिन इस मन्त्र को शौच पेशाब बैठते समय २१ बार जपे तो ७ दिन में वाञ्छित स्त्री वश में होती है।

मन्त्र :—ॐ नमो आदेश गुरु को ॐ नमो उद्यणी मोहिनी द्यौय बही नडीं
चालोकंत वन माही जान जलंती आगी बुझा दीदों जल मोही थल
मोही आकाश मोही पाताल मोही पाणी की पणि हारी मोही
बाट घाट मोही आवता जाता मोही सिंहासन बैठो राजा मोही गोखे
बैठी रानी मोही चौशठ जोगिनी मोही एता न मोहै तो कालिका
माता को दूध हराम करि हनुमंतनी वाचा फुरे गुरु की शक्ति हमरो
भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि :—रविवार के दिन इस मन्त्र को १०८ बार नमन होय जपे पान, फूल, सिन्दूर, गुगुल इन चीजों का सात बार होम करे। जिसको वशी करना चाहे उसके आगे वही पूजा मे का सिन्दूर को सात बार मन्त्रीत करके सिधा तिलक अपने माथे पर करे। वह जिसके नाम से सिन्दूर मन्त्रीत करके तिलक लगाया हो। वश्य होता है। अगर वशाकरण को छोड़ना चाहे तब पूर्वोक्त क्रिया करके पूजा में का सिन्दूर से उल्टा तिलक करे।

मन्त्र :—ॐ काला कलावा कालीरात मेसासुर पठाऊ आधी रात जेरुन आवे
आधीरात ताल मेलु करे सगलारात वाप हो काला कलवा वीर
अमुकी स्त्री बैठाकू उठाय लाय सूता कू जगाम ल्याव छडी कू

चलाय ह्याव पवन वेग आणि मिलाय आपण बलि मुक्ति लीजें
अमुकी स्त्री आणि दिजें आबें तो जोवें नहीं तो उद्धं फाटि मरै ।

विधि :—भेसहा गुप्पुल को गाली एक सो घ्राड घृत के साथ बर की लकड़ी को जलाय कर
इस मन्त्र से होम करे । (बलि देवे)

मन्त्र :—सर्प सर्प भद्रं ते वूरं गवड महर्षिषः जन्मेजयस्यय भीते आस्तिक
वचनं स्मर ॥१॥ आस्तिक वचनं श्रुत्वा यस्सर्पान निवर्त्तते । शत-
धामिष्ठते मून्दि शीर्षं वृक्ष फलं यथा ।

विधि :—अगर सर्प सामने चला आ रहा हो तो दोनो श्लोक रूप मन्त्र को पढ़कर ताली
बजा देना और सर्प के सामने मिट्टी फेंक देना, सामने से सर्प हट जायगा, अगर
नहीं मानेगा और जबरदस्ती सामने आवेगा तो सर्प के दो टुकड़े हो जावेगा ।
सवेरे और शाम को तीन-तीन बार इस श्लोक को नित्य ही स्मरण करे तो सर्प
जीवन में कभी भी नहीं काटेगा ।

मन्त्र :—ॐ नमो काला भेरु कल वा बीर में तोहि मेजु समदा तीर अंग
चटपटी मांघें तेल काला भेरु किया खेल कलवा किलकिला भेरु
गजगजाधर में रहे न काम सवारे रात्रि दिन रौव तो फिरें तो जती
मसान जहारें लोह का कोट समुद्रसी खाई रात्रि दिन रौवता न फिरें
तो जती हणमंत की दुहाई सवदशा चापिडका चा फूरो मन्त्र ईश्वरो
वाचा ।

विधि :—इमशान की भस्म को ७ बार इस मन्त्र से मन्त्रीन करके जिसके ऊपर डाल दिया
जाय वह उन्मन होकर फिरे, याने पागल हो जाय, भूकना फिरे ।

मन्त्र :—ॐ महा कुबेरेश्वरी सिद्धि देहि २ ह्रीं नमः ।

विधि : इस मन्त्र को तीन दिन तीन रात्रि अहनिश जपे एकान्त जगह में, जहाँ स्त्री-
पुरुष का मुख भी नहीं दिखाई पड़े ऐसी जगह जाकर जपे यहाँ तक कि भूख लगे
चाहे प्यास लगे तो भी जपता ही रहे । टट्टी लगे तो भी जपे । और पेशाब लगे
तो भी जपत रहे । एक मुरदे की खोपड़ी को सिन्दूर का तिलक लगावे फिर दीप
धूप, नैवेद्य चढ़ाय कर उस खोपड़ी के सामने जप करे निर्भय होकर चौथे दिन
साक्षात् भगवती सिद्ध होगी और वरदान देगी फिर नित्य ही ४० सुवर्ण मोहर
का, फिर ४० सुवर्ण की मोहर नित्य मिलेगी ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं एतु वामुण्डे कुरु कुरु अमुकं मे वश्य मे वदयमानय स्वाहा ।

विधि :—लाल कनेर के फूल, लाल राई, कडुवा तेल का होम करे, दश हजार जाप करे अवश्य ही वशीकरण होय ।

मन्त्र :—ॐ नमो वश्य मुखीराज मुखी अमुकं मे वश्य मानय स्वाहा ।

विधि :—सवेरे उठकर मुंह धोते समय पानी को सात बार मन्त्रित करके मुंह धोने से जिसके नाम से जपे वह वशी होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो कट विकट घोर रूपिणी अमुख मे वश्य मानय स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को भोजन करते समय एक २ ग्रास के सात एक बार मन्त्र पढता जाय और खाता जाय तो पाँच सात ग्रास में ही वशीकरण होता है । अमुक की जगह जिसकी वश करना चाहे उसका नाम ले ।

मन्त्र :—ॐ जल कंपै जलधर कंपै सो पुत्र सौ चंडिका कंपै राजा रुठो कहा करे सिंघासन छाडि बंटे जब लगई चंदन सिर चडाड तब गोत्र भुवन पांव पडाड ह्रीं फंट स्वाहा ।

विधि :—चंदन को १०८ बार मन्त्रित करके तिलक लगाने से राजा प्रजा सर्व ही वश में होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं करी धन करी धान्य करी मम सौभाग्य करी शत्रु क्षय करी स्वाहा ।

विधि :—अगर, तगर, कृष्णागर, चन्दन, कपूर, देवदारु इन इन बीजों का चूर्ण कर इस मन्त्र का १०८ बार जाप करे और १०८ बार मन्त्र की आहुति देवे तो तुरन्त राजगार मिले चाहे व्यापार चाहे नौकरी ।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं नरसिंह चेट की ह्रां ह्रीं दृष्टया प्रत्यक्ष अमुकी मम वश्यं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को रात्रि को १०८ बार जपने से स्त्री तुरन्त वश में होती है ।

मन्त्र :—ॐ नमो ॐ ह्रीं श्रीं ॐ नमां भगवति मोहिनी महामोहिनी जूंभिनी स्तंभिनी पुर ग्राम नगर संक्षोभिनी मोहिनी वंश्य करिणी शत्रु विडारनी ॐ ह्रां ह्रां ह्रूं मोही २ जोहि २ मोहि २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को सातों बार १०८ बार जपे और मुख पर हाथ फेरें तो राजा प्रजा सर्व वश्य ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं वद् वद् वाग्वादिनी सप्त पाताल भेदिनी सर्व राज मोहिनी
अमुकं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का १०८ बार नित्य ही जाप करने से बड़ा प्रतापी होता है और जगद्वश्य होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो राई रावै धनि आधावे खारी नोन चटपटी लावे मिरचै
मारि दुश्मनै जलावे अमुक मेरे पांव पडता आवै बंठा होय तो उठावै
सूता होय तो मार जगावै लट गहि साटी मार मेरे बांये पायें तले
आनि घाल दषों हनमंत वीर तेरो आज्ञा फुरै ॐ ठः ठः ठः
स्वाहा ।

विधि :—राई, धनिया, नमक, मिरच, इन चारो चीजों को मिलाकर इस मन्त्र से १०८ बार
अग्नि में होम करे तो इच्छित व्यक्ति आकर्षित होता है ।

मन्त्र :—ॐ जुं सः अमुकं मे वश्य मानय सः जुं ॐ ।

विधि :—इस मन्त्र का एक लक्ष जप करने से वशी करण होय ।

मन्त्र :—ॐ जुं सः अमुक आकर्षय २ सः जुं ॐ ।

विधि :—इस मन्त्र का एक लक्ष जप करने से आकर्षण होता है ।

मन्त्र :—ॐ जुं सः अमुकी आकर्षय २ सः जुं ॐ ।

विधि :—इस मन्त्र का एक लक्ष जप करने से स्त्री का आकर्षण होता है । पुरुष के लिये करे
तो पुरुष भी आकर्षण हो ।

मन्त्र :—ॐ जुं सः अमुकं स्तम्भय २ ठः ठः सः जुं ॐ ।

विधि :—इस मन्त्र का एक लक्ष जप करने से भी स्तम्भ होता है ।

मन्त्र :—ॐ जुं सः अमुकं मोहय २ सः जुं ॐ ।

विधि :—इस मन्त्र का एक लक्ष जप करने से मोहनी करण होता है । अमुक की जगह साध्य
व्यक्ति का नाम लेवे ।

मन्त्र :—ॐ जुं सः अमुकं उच्चाटय २ सः जुं ॐ ।

विधि :—इस मन्त्र का एक लक्ष जप करने से उच्चाटन होता है ।

मन्त्र :—ॐ जुं सः अमुकं मारय २ घे घे सः जुं ॐ ।

विधि :—इस मन्त्र का एक लक्ष जप करने से मनुष्य मरण को प्राप्त हो जाता है

मन्त्र :—ॐ नमो चीटी २ चांडाली महाचांडाली अमुकं मे वश्य मानय स्वाहा ।

विधि :—दूध, घी को एक हजार आठ बार होम करे तो स्त्री या पुरुष वश में होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो नगन कीटि आ वीर हूं, पुरों तोरी आशा तूं पुरों मोरी आशा ।

विधि :—भूने हुए चावल एक सेर, शक्कर १ पाव, घी आधा पाव इन सब चीजों को एकत्र करके रखना फिर प्रातःकाल जहाँ चींटियों का बिल है वहाँ जाकर मन्त्र पढ़ता जाय और वह एकत्र करी चीज को थोड़ी २ चींटियों के बिल पर डालना जाय । इस प्रकार ४० दिन तक करने से तुरन्त रोजगार मिलता है ।

मन्त्र :—ॐ चंदा मोहन चंदा वेली नगरी माहि पान की चेली नागर वेली की रंग चढ़ प्रजा मेरे पाय पडै । यहाँ नाम देवें ।

विधि :—बार ७ या २१ मन्त्रित पान खाने से सर्वलोक देखकर प्रसन्न होय ।

मन्त्र :—ॐ नमो हन २ रह २ पच २ मथ २ अमुकं मे वश्य मानय २ कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से मूर्खादय के समय पानी को १०८ बार मन्त्रित करके पीने से वश्य होता है ।

तन्त्र :—दो मुह वाले साप मरे हुये को ७ दिन तक नमक में गाड़ देना फिर आठवें दिन उस साप को नमक के अन्दर से उठा लेना । लेके पानी से धो लेना, फिर नदी या तालाब में जाकर कमर तक पानी में जाकर साप के हड्डी की गुरीआ एक २ पानी में छोड़ते जाना जो हड्डी की गुरीआ पानी में सर्पाकार चले उसे ले लेना । लेके उस गुरीआ को चांदी या तांबे के ताबीज में डालकर पास रखे तो मनुष्य अदृश्य होता है ।

तन्त्र :—काली बिल्ली को तीन दिन उपवास करवा के घाप कर घी उस भूखी बिल्ली को पिलावे फिर जब वह बिल्ली उलटी करदे तब उस घी को उठाय लेना, उस घी का दोपक जलाकर मनुष्य की खोपड़ी पर काजल पाटना उस काजल को आँख में अंजन करने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है । अपने तो सबको देखता है । किन्तु स्व को कोई भी नहीं देख पाता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो आदेश गुरु कूं काला भैरुं कपिली जटा भैरुं फिरे चारों दिशा कह भैरु तेरा कंसा भेष काने कुंडल भगवा हाथ अंगोछी ने माथे ममडो मरे मशाने भैरु खडो जह २ पठॐ तह २ जाय हाथ भी जी खड़ २ छाया मेरा बरी तंरा भख काठ कलेजा वेगा चख

डाकिनी का चख शाकिनी का चख भूत का विगार सध्या रहे तो काली
माता की सेज्या पर पाव धरे गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र
ईश्वरो वाचा ।

विधि :—अर्घं रात्रि मे काली माला, काला वस्त्र पहनकर १०८ बार जपना, नित्य भुक्त भैंरों
को बलि देना २१ दिन तक, तो कार्य हो ।

मन्त्र :—ॐ माहेश्वरी नमः ।

विधि :—इस मन्त्र सो बेर की लकड़ी चार अंगुल की एक हजार बार मन्त्रित करके जिसके
घर में डाल देवे तो सर्व परिवार वश होय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अमुकी में प्रयच्छ ठं ठः ।

विधि :—इस मन्त्र सो पाडर जाहि की लकड़ी पांच अंगुल की कील बनाकर एक हजार बार
इस मन्त्र सो मन्त्रित करके देवता के मन्दिर मे बास तरफ मकान हो उसमें गाड़
देवे, कन्या जल्दी मिलती है ।

मन्त्र :—ॐ कै कां किं कीं अमुकं हुं कुं कूं कैं कैं कीं कौं कं कः ठः ठः ।

विधि :—इस मन्त्र मे खैर की लकड़ी की आग जलाकर उसमें घी की मन्त्र से आहुति देने से
शत्रु को ज्वर चढ़ता है और जब शत्रु आकर चरणों में पड़े तो उसकी शान्ति के
लिये इस मन्त्र ॐ सो सः, को जपने से ज्वर टूटता है ।

मन्त्र :—ॐ हूं खं खां हिं विं खुं खूं खैं खैं खों खों खं खः ठः ठः ।

विधि :—भीलावे की लकड़ी छ अंगुल की एक हजार बार मन्त्रित करके शत्रु के दरवाजे मे
गाड़ने से शत्रु महान कष्ट पाता है । जब गड़ी हुई लकड़ी को निकाले तब शांति ।

मन्त्र :—ॐ क्षौं धं धां धिं धीं धुं धूं धैं धैं धों धों धं धः अमुकं ठः ठः ।

विधि :—हारि ६ की लकड़ी चौदह अंगुल की एक हजार बार मन्त्रित करके चौराहे पर
रात्रि को गाड़ देने से शत्रु को राक्षस आकर बाधा पहुंचाता है । जब उस लकड़ी
को चौराहे पर से निकाले तो शांति हो ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं हूं जं जां जिं जीं जुं जूं जैं जैं जों जों जं जः अमुकं ठः ठः ।

विधि :—घीयल की लकड़ी पांच अंगुल की हजार बार मन्त्रित करके अपने घर गाड़ देने से
वश होय ।

मन्त्र :—ॐ शं शां शौं शिं शुं शूं शैं शैं शों शों शं शः अमुकं ठः ठः ।

विधि :—समी की लकड़ी की कील ११ अंगुल की इस मन्त्र से १००० बार मन्त्रित करके जिसके घर में गाड़ दी जाय उसके घर में के सर्व भय राक्षस, भूत, प्रेतादिक कृतोपद्रव शान्त हो ।

मन्त्र :—ॐ क्षूं क्षौं अमुकं ठः ठः ।

विधि :—लोहे के त्रिशूल को विष और रक्त से लिप्त करके १००० धार मन्त्रित करे और फिर उस त्रिशूल को भूमि में गाड़ देवे तो शत्रु का निश्चय से मरण हो ।

मन्त्र :—ॐ कुरु कुध्वो ह्रां स्वाहा ।

विधि :—सहस्रत्रैक जप्त्वा पूर्वस्यैव कर्तव्य मनास्मरे तु सर्वमाकर्षयति ।

मन्त्र :—ॐ प्रचंड ह्रीं ह्रीं फट् ठं ठः ।

विधि :—इस मन्त्र से मनुष्य की हड्डी सात अंगुल की एक हजार बार मन्त्रित करके जिसके घर में गाड़े उसके घर में महान् उत्पात होता है उसको निकाल देवे तो शांति हो ।

मन्त्र :—ॐ हूं क्षौं अमुकं फट् स्वाहा ।

विधि :—चूटका मसं संयुक्तं कटुत्तलेन जुहुयात् मन्त्रसहस्रेण मन्त्रीत्वात् शत्रुनिपातो भवति ।

मन्त्र :—ॐ हूं क्षौं अमुकं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से चिउटा मसा कड़वा तैल में १००० बार होमे तो शत्रु का निश्चित मरण हो ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अमुकं ठः ठः ।

विधि :—मनुष्य के हड्डी की अठारह अंगुल कील को इस मन्त्र से हजार बार मन्त्रित करके जिसके घर में गाड़ दिया जाय उसके कुटुम्ब में महान् उत्पात हो । निकाले तब अच्छा हो ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रां ह्रूं महाकाल कराल बदन गृहं भिबि २ त्रिशुले न ठं ठः ।

विधि :—इस मन्त्र से विभिन्न काष्ठ की कील एक इस अंगुल की एक हजार बार मन्त्रित करके जिसके घर के द्वार पर जिसके नाम से गाड़े वह सब मरे ।

ॐ ह्रीं ह्रां अमुकं ठं ठः ।

विधि :—इस मन्त्र सेतु () काष्ठ की लकड़ी नव अंगुल प्रमाण १ हजार बार मन्त्रित करके जिसके नाम से घर में गाड़े तो वश्य होय ।

मन्त्र :—ॐ मातं गिनी ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—राई, नमक दोनों को धी के साथ होम करने से जिसके नाम से होम करे वह वश में हो आकर्षित हो ।

मन्त्र :—ॐ जलयं जुल ठ ठ स्वाहा ।

विधि :—उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में वट धृक्ष की तीन अंगुल लकड़ी को सात बार मन्त्रित करके जिसके घर में डाल दिया जाय उसके घर में श्मशान हो जाय ।

मन्त्र :—ॐ मनु ऊं ठं ठः स्वाहा ।

विधि :—हस्त नक्षत्र में जास्त्रि की कील चार अंगुल सात बार मन्त्रित करके कुम्हार के घावा में (बरतनी के भट्टे में) डाल देवे तो सर्व बरतन फूट जाय ।

मन्त्र :—ॐ मरे घर मुह मुह ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—विशाखा नक्षत्र में विष काष्ठ की चार अंगुल की कील को सात बार मन्त्रित करके जिसके घर में डाल देवे तो उस घर का सर्वनाश हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ मिली २ ठं ठः स्वाहा ।

विधि :—ज्येष्ठान नक्षत्र में हिगोष्ट की लकड़ी एक अंगुल की सात बार मन्त्रित करके जिस वैश्या के घर में डाल देवे, तो वैश्या के घर में अन्य पुरुष प्रवेश नहीं करेगा ।

मन्त्र :—ॐ नां नौं नुं ठं ठः स्वाहा ।

विधि :—मूल नक्षत्र में नील (ताल) काष्ठ की लकड़ी नौ अंगुल की सात बार मन्त्रित करके वैश्या के घर में डाल देने से दुर्भाग्य होती है वैश्या ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं ठं ठः स्वाहा ।

विधि :—पूर्वाषाढा नक्षत्र में अपामार्ग की कील और भृगराज आता सहित मन्त्रों के जिसके घर में डाले तो वह पुरुषहीन हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ जं जां जिं जूं ठं ठः स्वाहा ।

विधि :—उत्तराषाढा नक्षत्र में काग की हड्डी सात अंगुल इस मन्त्र से मन्त्रित करके जिसके घर में डाल देवे तो उसका उच्चाटन हो जाता है ।

अदृश्य अंजन विधि :—बैला द्राज्या ततो ग्राह्यं वाराहं वस सजुतं । प्रिय पित र्यया देवि कज्जलं यस्तु कारयेत् । इस प्रकार अंजन बनाकर ग्राल में आंजने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है ।

**मन्त्र :—ॐ ठं ठां ठिं ठीं ठूं ठूं ठें ठें ठो ठौं ठं ठः अमुकं गृह २ पिशाच
हूं ठं ठः ।**

विधि :—शाखोटक की कील नौ अंगुल एक हजार बार मन्त्रित करके जिसके नाम से चीराहे पर रखे साथ में मद्य, मांस, नख, रक्त, फूल भी रखे तो शत्रु को पिशाच लग जायगा। जमीन में गाड़ना चाहिये। जब अच्छा करना हो तब वापस निकाल देवे तो अच्छा हो जायगा।

मन्त्र :—ॐ जं जां जिं जीं जुं जूं जें जें जों जों जं जः अमुक ठं ठः ।

विधि :—अनेन मन्त्रेण लोह कील केन राक्ष नाशन मन्त्रः ।

मन्त्र :—ॐ हूं अमुकं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को सो कपास के बीज और छई मुई (नजालु) कड़वा तेल (सरसो का तेल) मिलाकर जिसके नाम से होम करे उसके शरीर में फोड़ा फुंसी निकल आवे। अगर अच्छा करना चाहे तो ॐ स्वाहा मन्त्र की धून दूब की आहुति देवे तो अच्छा हो।

कर्ण पिशाची देवी सिद्ध करण मन्त्र :—ॐ घँठ स्वाहा ।

विधि :—लाल फूल से एक लक्ष इस मन्त्र का जाप करे तब मन्त्र सिद्ध होता है। जो बात पूछो भूत, भविष्य, वर्तमान की सब कान में कह देवे।

मन्त्र :—ॐ खं ऊं खः अमुकं हन हन ठं ठः ।

विधि :—इस मन्त्र से, जाऊ की लकड़ियों से जो नदी के किनारे हों, उन लकड़ियों से होम करे तो शत्रु का निपात हो।

मन्त्र :—ॐ खं डूं खः अमुकं ठं ठः ।

विधि :—अनेन मन्त्रेण ह्याऊ काण्ट समिधि होमियात् सर्व शत्रु निपातो भवति ।

मन्त्र :—ॐ कीं कीं कीं हूं ह्रीं हूं ऊं दक्षिण कालिके कां ह्रीं हूं स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से मयूर की बिष्टा, कबूतर की बिष्टा, मुरगा की बिष्टा, घतूरे का बीज ताल मलाना इन पांचो चीजों को बराबर लेना, फिर मन्त्र का जप १ हजार करना और दश मास होम करना तब वह होम की भस्म लेके जिसके माये पर मन्त्रित कर डाल दिया जाय वह उन्मत्त हो जाता है। शरठो वृश्चिको भृंगो कर्करा च क्षतुष्टय, चत्वारः पक्काय तैले तल्लेपं कष्ट कारक ।

मन्त्र :—ॐ मर २ ठं ठः स्वाहा ।

विधि :—पूर्वा काल्युणी नक्षत्र मे राक्षस वंतालादि उपद्रव करे।

मन्त्र :—ॐ नमः कामेश्वरीय गव २ नम उन्माद अमुकी ह्रीं ह्रः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का २०००० जाप करे फिर दस मास होम करे । जिस स्त्री का नाम लेते हुये करे तो वह स्त्री वश में होती है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्रीं ऐं ह्रीं परमेश्वरी स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का एक लक्ष जाप करने से पुरुष वश में होता है ।

मन्त्र :—ॐ आं ह्रीं ओ एहि २ परमेश्वरी स्वाहा ।

विधि :—लाल वस्त्र पहिनकर लक्ष जाप अपने से पुरुष वश में होता है ।

मन्त्र :—ॐ क्षौं ह्रीं आं ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—लाल कपड़े पहिनकर काप में कुंकुम लगाना, लाल रंग का फूल धर माला पहिनकर एकांत निर्जन वन में १ लक्ष जप करने से स्त्री आकर्षण होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रं अमुकं हन २ स्वाहा ।

विधि :—लाल कनेर के फूल, सरसो का तेल, १ हजार जप कर एक हजार होम प्रत्येक पुष्प के प्रति मन्त्र पढ़कर होम करे तो शत्रु का नाश हो जाता है । विधि में थोड़ी सी कमी रहने पर स्वयं का नाश हो जाता है । सावधान रहे ।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं लां ह्रीं लीं ह्रीं लीं लीं लः ह्रीं अमुकं ठं ठः ।

विधि :—सरसों की भस्म को इस मन्त्र से मन्त्रित करके शत्रु के घर में डाल देवे तो शत्रु की भुजा का स्तम्भन हो जाता है, ग्रीर सेना के सामने डालने से सेना का स्तम्भन हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ श्रीं क्षं का मातुरा काम खेला विधेसिनी लवनी अमुकं वश्यं कुरु २ ह्रीं नमः ।

विधि :—इस मन्त्र को भोजन करते समय अपने भोजन को ७ बार मन्त्रित करके जिसके नाम से खावे वह सातवें दिन तथा बारहवें दिन वश में हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ जुं सः ।

विधि :—इस मन्त्र को त्रि संध्याओं में अपने से शत्रु का नाश हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ हुं नमः ।

विधि :—तीनों संध्याओं में नित्य ही लक्ष लक्ष जप करे तो पादुका सिद्धि होती है । उस पादुका को पहिन कर, जल पर तथा आकाश में गमन करने की शक्ति आती है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रां ह्रां ॐ ह्रूं ह्रूं अमुकं हन हन खंडेन फुट स्वाहा ।

विधि :—गोबर को अघर ले लेना फिर उस गोबर की प्रतिमा बनाना (पुतला) बन की, फिर श्मशान में जाकर रात्रि के अन्तर एक हजार मन्त्र का जप करना, जप करके उस गोबर वाले पुतले का जो अंग छुरी छेदन करे उसी अंग का छेदन शत्रु का हो जाता है। विधि में कमी रही तो अपना हो जाता है। गोबर लेते समय मंत्र को पढ़ता जाय।

मन्त्र :—ॐ हूं क्षूं ह्रीं अमुकं ठं ठः

विधि :—विष रक्त, से लोहे के त्रिशूल को लिप्त करके इस मन्त्र का एक हजार जप कर त्रिशूल को मन्त्रित करे। फिर जमीन में गाड़ देने से शत्रु की तत्काल मृत्यु हो जाती है।

मन्त्र :—ॐ ॐ ॐ हः हः ऐं नमः ।

विधि :—इस मन्त्र का आठ लाख जप करने से महा विद्वान् कवि पंडित होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं ठं ठः ।

विधि :—जाऊ काष्ठ की बारह अंगुल कील को एक हजार बार मन्त्रित करके जिसके घर में डाल देवे वह मर जाता है, विधि में कमी रही तो स्वयं मर जाता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं श्रें सः स्वाहाः नमः ।

विधि :—इस मन्त्र का जप करने से सिद्ध जन होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो आदि योगिनी परम माया महादेवी शत्रु टालनी दैत्य मारनी मन वांछित पूरणो धन वृद्धि मान वृद्धि आन जस सोभाग्य आन न आनं तौ आदि भेरवी तेरी आज्ञा न फुटे गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुटो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

विधि :—मंत्र जपे निरन्तर १०८ बार विधिपूर्वक लक्ष्मी की प्राप्ति होय। सर्व कार्य सिद्धि होय। बार २१-१०८ चौथा मंत्र जिस वस्तु में रखे तो अक्षय होय।

मन्त्र :—ॐ नमो गोमय स्वामी भगवत ऋद्धि समो वृद्धि समो अक्षयिण समो आण २ भरि २ पुरि २ कुरु २ ठ : ठ : ठ : स्वाहा ।

विधि :—मंत्र जपे प्रातः काल शुद्ध होकर लक्ष्मी प्राप्त होय। बार २१-१०८ सुपारी चावल मंत्रित कर जिस वस्तु में धाले सो अक्षय होय। यह मंत्र पढ़ कर दीप, धूप, खेवे भोजन वस्तु भंडार में अक्षय होय। उज्ज्वल वस्त्र के धारी शुद्ध आदमी भीतर जाय।

**मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः ॐ नमो भगवतु गोयमस्त सिद्धस्त
बुद्धस्त अखीणस्त मास्वरो ह्रीं नमः स्वाहा ।**

विधि :—मंत्र नित्य प्रातः काले गुचिभूत्वा दीप धूप विद्यानेन जपे, लाभ होय, लक्ष्मी प्राप्त होय ।

**मन्त्र :—ॐ नमो गोतम स्वामोने सर्व लब्धि सम्पन्नाय नमः अभीष्ट सिद्धि कुरु
कुरु स्वाहा ।**

विधि :—वार १०८ प्रतिदिन जपिये, जय हो, कार्य सिद्ध होय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं प्रत्यंगरे महाविद्ये स्वाहा ।

विधि :—फल अनेन मंत्रेण लवणं च तुण्य धूलिं च पृथक् पृथक् एकविंशति वारान् परिजप्य
आनुरस्य पाश्वन्ती ध्रामयित्वा एकविंशति वारान् परिजप्य तत्रादिमध्ये स्थापयित्वा
आनुर पस्यकस्याधो धारयेत् यथा २ लवण विलीयते तथा तथा दृष्टिदोषणे मुच्यते
लवण मंत्र दृष्ट मय्य ।

**मन्त्र :—ॐ अमृते अमृतोद्भव अमृत वर्षिणी अमृतं स्नावय २ अमकरस्य सर्व
दोषान् स्नावय प्लावय स्वाहा ।**

विधि :—औषधादि मंत्रण मंत्र ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं धरणेन्द्र पाशवनाथाय नमः निधि दर्शनं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—जप मन्त्र अथ तु मन्त्रस्य जपात् हस्त नेत्रयोः स्पर्श्य मन्त्र निधिस्तभन प्राप्तत्वा दर्शनं
कार्य नेत्राभ्यां स्पष्टं भवति दर्शनम् ।

**मन्त्र :— ॐ नमो ह्रीं जय जय परमेश्वरी अम्बिके आम्न हस्ते महासिंह जानु स्थिते ककणी
तूपुरा रावकयूर हारा गदानेक सम्दूषणे भूषितागे जिनेन्द्रस्य भवते कले निष्फले
निर्मले नि. अपचे महोद्यनने सिद्ध गधर्व विद्याधरे रचिते मन्त्र रूपे शिवे शक्रे मिद्धि
वृद्धि वृत्ति कीर्ति वृद्धि स्थिते शान्ति पुष्टि निधि स्तुष्टि दृष्टि प्रिये शोभने मुख हासे
ज्वरे जभिनी स्तम्भिनी मांहनी दीपनी, शोषिणी, भासनी, दुष्ट निर्वाशिनी क्षुद्र
विद्रावणी धर्म सराशिणी देवी अम्बे महा विक्रमे भीमनादे मुनादे अशोरे सुधोरे रोद्रे
रोद्रानने चडिके चडिरूपेमुचक्रं मुनेत्रे मुगात्रे, सुपात्रे, तनु मध्यभागे जयति २ पुरंध्री
कुमारो मुभद्रे पवित्रे सुवर्णे महामूल विद्यास्थिते गौरि गाधारी गधर्व जक्षेश्वरी
काली २ महाकालि योगीश्वरी जैनमार्गे स्थिते सुप्रशस्ते शक्रे धनुनाद दंडाभि
चक्रके वक्राकुशावेक शाम्भोदिते सुष्टि सहार कांतार नागेन्द्र भूतेन्द्र देवेन्द्र स्तुते
किन्नरै यक्ष रक्षा धिपै ज्योतिषैः पन्नगेन्द्रं सुरेन्द्राद्यचित् वदिते पूजिते सर्व सत्वोत्तमे**

सर्वं मंत्राधिष्ठते ॐ कार वषट्कार हुंकार ह्रींकार सुधाकार बीजान्विते दुःख दौर्भाग्य निर्वाशिनी रोग विध्वंशनी लक्ष्मी धृति, कीर्ति काम्नी विस्तारिणी सर्वं दुर्गुणेषु निस्तारणी दुस्तरोत्तारणी ॐ श्री ह्रीं नमो यक्षिणी ह्रीं महादेवी कुष्मांडिके ह्रीं नमो योगिनी हूं सदा सर्वं सिद्धिं प्रदे रक्ष मां देवी अम्बे अम्बे विवादे रणे कानने शत्रु मध्ये समुद्र प्रवेशागमे गिरौ कृष्ण रात्रौ घने संध्याकाले निहस्त निरस्त निहीन निशान्तं प्रशन्नं प्रनष्टं प्रहृष्टं ग्रहं रक्ष रक्षो रुग्ं देव्यभूतः पिशाचं ग्रहीतं ज्वरेणाभिभूतं गजैर्ध्याघ्निसिंहैः निरुद्धं व्याल वेताल प्रस्तं खगेन्द्रेण नीतं कृतानं न यस्त मृतं चापि संरक्ष मा देवी अम्बालये त्वत्प्रसादात् शान्तिकं पौष्टिक वश्यमाकर्षणोच्चटौ न स्तभन मोहन दीपन चैव एतन्महा तांडकं एतानि सर्वं कार्याणि सिद्धिं नयति सक्षेपतः सर्वरोगाः प्रणश्यन्ति । न सशय भवेदिह ॐ हूं फट् स्वाहा इति “आम्र कृष्माडिनी मालामत्र” । ॐ ह्रीं कुष्मांडिनी कनक प्रभेसिह मस्वक समारुदे जिनधर्मं भुवत्सले महादेवी मम चितितं कार्यं शुभाशुभ कथय-कथय अमांष वागीश्वरी सत्यवादिनी सत्य दर्शय-दर्शय स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र का विधान भगल के दिन से आरम्भ करे । गुलाब का इत्र अपने शरीर पर लगावे । गुलाब के फूल चढ़ावे । एक चौकी पर या आले में चमेली के फूलों का चौकोर चबूतरा बना ले । वहां देवी की स्थापना करे । धूप बत्ती जलावे, घूप खेवे, धूप में जावित्री अवश्य मिलावे, गाय के घी का दीपक जलावे, मिष्ठान्न चढ़ावे और आम्रफल विशेष रूप से चढ़ावे । निम्न प्रति प्रथम नेमिनाथ स्वामी की पूजा करके देवी की पूजन करना ।

मन्त्र :—ॐ कुरु कल्लो हां स्वाहा ।

विधि :—नाल वस्त्र पहिनुकर एकान्त में एक लाख जप करे तो आकर्षण होता है ।

मन्त्र :—ॐ हूं हूं सं सं अमुकं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र का एक हजार जप करने से सिद्ध होता है तब खयर की लकड़ी के एक हजार टुकड़े-टुकड़े बिप और रक्त से लिप्तकर मंत्रपूर्वक अग्नि में होम करे तो शत्रु को ज्वर चढ़े । विधि में कमी रही तो स्वयं को चढ़े और फिर कभी भी अच्छा नहीं होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो काल रूपाय अमुकं भस्मीं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र का जप इमशान में तथा एकान्त में जपे तो शत्रु कभी नहीं जीवे । विधि चूके तो स्वयं का मरण निश्चित होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो विकराल रूपाय महाबल पराक्रमाय अमुकस्य भुजवत्सलं बंधय २ दृष्टि स्तंभय २ अंगानि धुनय २ पातय २ महीतले हूं ।

विधि : इस मंत्र का एक हजार जप करे और शत्रु का मंत्र में नाम डाल दे तो शत्रु की शक्ति का छेद हो जाता है। जड़ के समान हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो कालरात्री त्रिशूलधारिणी मम शत्रु सेन्यं स्तंभनं कुरु २ स्वाहा ।

विधि : भी बारे गृहीत्वा तु काकोल्लूकपक्षयो, भूर्ध्वपत्रे लिखेन्मन्त्र, तस्य नाम समन्वितं गोगोचरं गले बध्वा, काकोल्लूकपक्षयो सेनाता संमुखं गच्छेत् नान्यनाशं करोदितं शब्द भावे संन्य मध्ये, पलायतेति निश्चितं राजा, प्रजा, गजा इक्ष्व, नान्यथा च महेष्ट्वरी । तथा :—

मन्त्र :—ॐ नमो भयंकराय परम भय धारिणे मम शत्रु संन्य पलायनं कुरु २ स्वाहा ।

विधि : इस मंत्र को भीमवार कु काला कौवा और उल्लू के पंख लेकर इस मंत्र को भोजपत्र पर लिखकर गले में बांधना। उन दोनों पंखों के साथ, फिर शत्रु की सेना के सम्मुख जाये तो सेना देखते ही भाग जावे।

मन्त्र :—ॐ सुं मंघी महापिशाचिनी ठः ठः ठः फट् स्वाहा ।

विधि : अपमृग मे गये हुये मनुष्य के मुँह पर इस मन्त्र का जाप २१ हजार बैठ कर करे और मुँह के मुँह में पारा दो ताला डाल देवे। जब जप समाप्त हो जावे तब सहु १ साप १ शराब, उबड़ का होम करे। दशांश । तब वह मुँह उठ जावेगा, उस मुँह को पकड़ कर उसके मुँह में पारा की गोली निकाल देना और उस मुँह को जला देना। इसी मन्त्र से उन पारा की गोली की पूजा करके २१०० सो जाप करे। फिर उस गोली का पाय में या मुँह में धारण करने से मनुष्य आकाश में उड़ने लगता है, जहाँ जाना चाहे वहाँ जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो आदेश गुरुं कु सेदुरिया चलं अंसा वीर नरसिंह चलं असं वीर हनुमंत चलं लट छोड़ मरे पाय परं मेरी भगती गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

विधि : शुभ भूतों गुरुवार के दिन अपने शरीर में उबटन लगावे, फिर उबटन उतारे। उस शरीर के मेल का एक मनुष्याकार पुतला बनावे। उस पुतले के माथे में सिन्दूर की टीकी चाला लगाता, भालह २ बार एक टीकी लगाते समय सोयह २ बार मन्त्र पढ़ना, उस प्रकार सोयह दिन तक करना प्रत्येक दिन का मन्त्र व टीकी २५६ हुई। इस प्रकार करने से वारआ, यक्ष प्रत्यक्ष होता है। प्रत्यक्ष होते ही उससे वचन ले लेवे जो आज्ञा करो सो ही करे।

मन्त्र :—थल बांधौ हथौडा बांधौ, अहरन माही, चार खूटं कडाही बांधो, बांधो

आज्ञा साही तीन सबब मेरे गुरु के चालियों चढ़ियौ लहरस बाई अनौ
बांधी सूई बांधौ बांधी सारा लोहा निकलियो न लोहू पकियो न धाव
जिसकी रक्षा करे गुरु नाथ ।

विधि :—एक मन्त्र को एक श्वास में सात बार पढ़ कर नाक कान छेदन करने से पीड़ा भी
नहीं होगी और पकेगा भी नहीं ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय चंद्र महिताय चन्द्र कीर्ति मुख रंजनी
स्वाहा ।

विधि :— इस मन्त्र का चन्द्र ग्रहण के दिन रात्रि में जपने से विद्या की प्राप्ति अच्छी होती है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवती पद्मावती सर्व जन मोहिनी सर्व कार्य कारणी विघन
संकट हरणी मन मनोरथ पूरणी मम चिन्ता क्षुरणी ॐ नमो पद्मावती
नमः स्वाहा ।

विधि :— इस मन्त्र का साढ़े बारह हजार जप करना चाहिए, त्रिकाल जाप करे ! अखण्ड दीप
धूप रखना, गुद्ध भूमि, गुद्ध वस्त्र प्रीत शरीर शुद्धि का पूरा ध्यान रखे, पार्व प्रभु
के गुण के सामने अथवा पद्मावती के सामने सफेद माला पूर्व दिशा की तरफ मुख
रखना, एकत्रिंशत् में जप कर सिद्धि करना, इस मन्त्र का सवा लक्ष जप भी कहा है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवती पद्मनेत्रे पद्मासने लक्ष्मी दायिनी वाञ्छा पूर्ण भूत प्रेत
पश्चिमाय उत्तराय, आण पूरय, सर्व जन वश्यं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :— इस मन्त्र का सवा लक्ष जप करना तब मन्त्र सिद्ध हो जावेगा, फिर प्रातःकाल एक
माला गन्य फेरना जिसमें श्राय बड़ेगी, बेकार का कार्य मिटेगा । मन्त्र, दीप, धूप,
विधान से जपना सकली करण पूर्वक । भगवान के सामने ।

मन्त्र :—ॐ पद्मावती पद्मनेत्रे पद्मासने लक्ष्मी दायिनी वाञ्छा पूर्ण भूत प्रेत
निग्रहणी सर्व शत्रु संहारिणी, दुर्जन मोहिनी, ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु
स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं पद्मावत्यै नमः स्वाहा ।

विधि :— इस मन्त्र का जप दीप धूप विधान में भगवान के सामने बैठ कर सवा लक्ष जप
करना, धूप में गुग्गुलु, गोरोचन, छाड़ लड्डीला, कपूर, काचरी इस सबको कूट कर
गोली बना लेवे, शनिवार अथवा रविवार की रात्रि को लाल वस्त्र, लाल माला
लाल आम्र, लाल वस्त्र पर स्थापना करके जाप एक २ गोली अग्नि में डालते हुए
एक २ मन्त्र के साथ खेवे और एक २ मन्त्र के साथ लाल पुष्प भी रखना जाय,

इस प्रकार सवा लक्ष जप एक महीने में पूरा करे, मन्त्र जपने के समय एक महीने तक ब्रह्मचर्य पाले तब मन्त्र सिद्ध होगा। फिर नित्य ही प्रातः काल ११ या २१ बार मन्त्र का नित्य ही स्मरण करे, आय बढ़ेगी, लक्ष्मी प्रसन्न होगी, सुख शान्ति मिलेगी।

मन्त्र :—ॐ पद्मावती पद्म कुंशी वज्र वज्र कुशी प्रत्यक्ष भवन्ति २ स्वाहा ।

विधि .—इस मन्त्र का जाप इक्कीस तिन में एक २ हजार नित्य करके पूरा करे, जाप दीप धूप विधान पूर्वक अर्द्ध रात्रि में एकाग्रता से करे तो मन्त्र सिद्ध होगा। फिर एक माला नित्य हो। फेर लक्ष्मी की प्राप्ति होगी। वस्त्र शुद्धि का पूरा २ ध्यान रखें।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ह्रः ऐं नमः स्वाहा ।

विधि .—इस मन्त्र को नव रात्रि में सिद्ध करे। सिद्ध करते समय ब्रह्मचर्य व्रत पाले। एकासन करे, कषायों का त्याग करे, मन्त्र एकान्त में अखण्ड दीप, धूप, पूर्वक साढ़े बारह हजार जप करता, फिर एक माला नित्य फेरने से आनन्द से दिन जायगा, रोजी मिलेगी। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर कार्य काल में इस मन्त्र का २१ बार जाप कर व्याख्यान देवे तो थोता मोहिन होते हैं। २१ बार जप कर वाद विवाद करे तो जय प्राप्त हो। कोर्ट में मजिस्ट्रेट के सामने इस मन्त्र का २१ बार जप कर बोले तो मुकाम में अपनी विजय हो। पर गाव में रोजी के निमित्त जाने के पहले प्रवेश के समय जलाशय के किनारे बैठ कर एक माला फेर कर प्रवेश करे तो व्यापार में लाभ मिले। सर्व कार्य सिद्ध हो। इस मन्त्र का ७ बार जाप करते हुए अपने मुह पर हाथ फेरने से शत्रु की पराजय होती है। मन्त्र के अन्त में स्वाहा पूर्वक शत्रु का नामोच्चारण करता जाय। इस मन्त्र से २१ बार सिर को मन्त्रित करे तो सिर दर्द दूर होता है। इस मन्त्र से २१ बार पानी मन्त्रित कर पिलाने से पेट का दर्द दूर होता है। इस मन्त्र को पहना जाय और भस्म उतारता जाय तो बिच्छू का जहर दूर होता है। मार्ग में चलते समय जप करता जाय तो व्याघ्रादिक का भय नहीं होता है।

मन्त्र :—ॐ अहं मुख कमल वासिनी पापात्म क्षयं कारी वद २ वाज्वादिनी सरस्वती ऐं ह्रीं नमः स्वाहा ।

विधि .—इस मन्त्र का शुद्धिपूर्वक ब्रह्मचर्यव्रत पालते हुए अखण्ड दीप धूप विधान पूर्वक एक लाख जप करना, फिर दशांश होम करना, होम करने में धूप इस प्रकार की चीजों का बनाना - नारियल, खोपरे के टुकड़े, १ कपूर, खोरक, (छुहारा), मिथी, गुग्गुलु, अमररत्नाञ्जणी धूत, गुड, चन्दन। इस प्रकार की सामग्री की धूप बना कर हवन करे तब स्वप्न में देव अथवा देवी आकर वरदान देगा। मन्त्र सिद्ध हो जाने के बाद विद्या द्रुत आती है। व्याख्यान में चतुरता होती है।

मन्त्र :—नमि उण असुर सुर गरुल भुयंग परिवंदिये गय किले से अरि हे
सिद्धापरिय उवज्झाय सध्व साहूणं नमः ।

विधि :—इस मंत्र का जप निय एक सौ इक्कीस बार उत्तर दिशा की ओर मुख करके करे, दीप धूप रखने से मन्त्र की शक्ति बढ़ती है । जतन पूर्वक उपयोग स्थिर रखना, जब जप पूरा हो जाय तब २१ बार णमोकार मन्त्र को जप लेना, इस तरह करने वाले को सर्व प्रकार के भय नष्ट होते हैं और आनन्द मगल हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं णमो जिणाणं, ॐ ह्रीं अहं आगासगामीणं, ॐ ह्रीं श्रीं वद २
वाग्वादिनी भगवती सरस्वती मम विद्यासिद्धिं कुरु कुरु ।

विधि :—इस मंत्र का अधिक जाप करने से ऐसा लगेगा कि मैं आकाश में उड़ रहा हूँ । जाप करने के बाद भगवान की व सरस्वती देवी की पूजा करे, जप श्राव्य मीच कर करे तब मंत्र सिद्ध होगा, । उसके पश्चात् कोई भी मंत्र या विद्या सिद्ध करने में देर नहीं लगेगी तत्काल सिद्धि होगी । आयु का ज्ञान होगा, कष्ट निवारण होगा ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्लीं क्रौं २ वटु काय आपव, उद्धारणाय कुरु २ वटु काय ह्रीं
हम्स्वर्ण नमः ।

विधि :—इस मन्त्र का साठे बारह हजार जप विधि पूर्वक करे, विशेष पूजन करे, तब देव प्रत्यक्ष होगा अथवा स्वप्न में दीखेगा और स्पष्ट उत्तर देगा । इस मन्त्र का जाप अत्यन्त सावधानी पूर्वक करना नहीं तो पागल कर देता है ।

सहदेवी कल्प

सहदेवी के पेड़ के नीचे शनिवार की रात्रि को जाकर १ मुपारी रखे, सहदेवी को धूप दिखा कर हाथ जोड़ विनय पूर्वक प्रार्थना करे कि हे सहदेवी प्रातः मैं तुमको अपने यहाँ पधराऊंगा, ऐसा कह कर घर आ जावे, रविवार को प्रातः होने के पहले जा कर फिर १ फल भेंट कर ये मन्त्र इक्कीस बार पढ़े ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवती सहदेवो सद्गत ह्या नोसद्वेबद्ध कुरु २ स्वाहा ॥

विधि :—इस मंत्र से मंत्रित कर जड़ सहित सहदेवी को बाहर निकाले और मोन बने अपने स्थान पर जाकर एक पाटे पर स्थापन कर धूप, दीप, फल भेंट करे और फिर उसका रस निकाले, और उस रस में गोरोचन व केसर डाल कर गोली बनावे, जब कभी काम हो तब गोली को घिस कर तिलक कर के जावे तो इच्छित व्यक्ति वश में होगा । विजय होगी, सहदेवी की जड़ हाथ में बाँधने से रोग नष्ट होता है । इसके चूर्ण को पीस कर गाय के धी में मिला कर पीने से बन्ध्या स्त्री गर्भ धारण करती है ।

प्रसूति के समय कष्ट हो रहा हो तो इसको कमर से बांधने पर शान्ति से प्रसव होता है। कण्ठ माला रोग होने पर हाथ में बांधे, हाथ में बांध कर प्रस्थान करे तो जप पावे। शत्रु के सामने विवाद पड़ जाने पर जड़ जाने पर जड़ को पास में रखे तो जय पावे।

लोगस्स कल्प

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं नमः नोमजिणं च बन्दाभिरिट्ठ नेमि पासं तह बड्ढ माणं चम नोवाच्छिट्ठं पूरय २ ह्रीं स्वाहाः ।

विधि :—किसी प्रकार का भय उत्पन्न हुआ हो साधु संग में अथवा गृहस्थियों में तो इस मंत्र का पीले रंग की माला से जाप करना चाहिए और किसी प्रकार की मिथ्या वृत्तियों द्वारा उपद्रव आने वाला हो तो लाल रंग की माला से जप करने में सब प्रकार का भय मिट जाता है, शांति होती है। इष्ट देव का स्मरण करे।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं ऐं लोगस्स उज्झोअ (य) गरेधम्म तित्थपेरीज्जण अरिहेते किति इस्सं चउर्व्विस्संपि केवलि मम मनो अभिण्ठं कुरु २ स्वाहाः ।

विधि :—इस मंत्र का जाप पूर्व दिशा में मुख करके खड़े हो कर करना चाहिए। सम्पत्ति मुख के लिए स्वेत वस्त्र, सफेद माला, सफेद आसन चक्रेश्वरी देवी के सामने दीप धूप रख कर करे। साधु करे तो दीप धूप की आवश्यकता नहीं है। अन्तिम पहर रात्रि का बचे तब मंत्र की आराधना करना। खड़े होकर जप करने में शीघ्र लाभ होता है। सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

मन्त्र :—ॐ क्रीं कीं ह्रीं ह्रीं उसम जिअं च वन्दे संभवमीभणं दणं च सु मइं व पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वन्दे स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र का जाप पद्मासन से उत्तर मुख होकर सकल्पपूर्वक एकान्त स्थान में अथ विन व्रत करते हुए २१ हजार जप करे। फिर एक माला नित्य फेंके जिग्मे शीघ्र ही कार्य की सिद्धि होती है। दीप धूप अवश्य सामने रखे।

मन्त्र :—ॐ ऐं ह्रीं (हसी) भों भों सुबिहिं चपुप्फ दन्तं सोयलं तिज्जं सवा सु पुजं च विमलनणत च छम्मं संति च वंदामि कुंथुं अरं चमल्लि वन्दे मुणि सुव्वयं (च) स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र का विधिपूर्वक दीप धूप दान पूर्वक सवा लक्ष जप करने से आपस के झगड़े अहं कंसा वगैरह सब शांत होते हैं। सब प्रकार के बोर भाव मिटते हैं। फिर एक माला

तित्य फेरनी साधू संध में अथवा गृहस्थों के घर में सर्व प्रकार का मन मुटाव दूर होता है। सम्पत्ति सुख की प्राप्ति होती है। जाप न्यून्याधिक नही करे।

मन्त्र :—ॐ ऐं ह्रां ह्रीं एवं मऐ अभि शुआवि हुपर यमला पहीण जर मरणा चउविवसंषि जिणवरा तित्थयरा में पसीयंतु स्वाहा।

विधि :—इस मंत्र का साढ़े बारह हजार दीप धूप विधान पूर्वक करने से सर्व प्रकार के अपवाद मिटते हैं यश फैलता है। सर्व कार्यों में जय विजय प्राप्त होती है। शत्रु स्वयं ही शांत हो जाते हैं।

मन्त्र :—ॐ आं अम्बराय (उछंवराय) कित्तिय वंदिय महिया जे लोगस्य उत्तमा सिद्धा आरोग्य बोहिलाभं सनाहि वर मुत्तमं दिन्तु स्वाहा।

विधि :—इस मंत्र का स्मरण मनुष्य जब रोगी हो जाय किसी प्रकार से रोग ठीक नहीं होता हो ओर दिनों दिन वेदना बढ़ती जाय तो जाप करे अथवा दूसरा व्यक्ति रोगी मनुष्य को सुनावे तो, आयुष्य अगर बाकी है तो शांति मिलती है। आयु का अगर आयु अन्त है तो इस मंत्र को सुनाने से समाधि ठीक होगी। सद्गति की प्राप्ति होती है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ऐं आं जां जीं चन्दे मुनिम्मल यरा आइच्चे मु अहियं पयासयरा सागर वरगंभीरा सिद्धा सिद्धि ममवि सन्तु मम मनोवाछित पूरय पूरय स्वाहा।

विधि : यश प्रतिष्ठा के इच्छुक व्यक्तियों को इस मंत्र का जाप करना चाहिए। यह मंत्र अत्यन्त चमत्कारी है। मंत्र का जाप साढ़े बारह हजार करे तो सर्व कार्य की सिद्धि होगी। यश प्रतिष्ठा बढ़ेगी, उपद्रव शांत होंगे।

मन्त्र :—ॐ चंडिनि चले २ चित्ते चपले चपल चित्तेरेतः स्तम्भय २ ठः ठः स्वाहा।

विधि :—३ हजार जाप इस मंत्र का दीप धूप विधान पूर्वक जपने से सिद्ध होता है। फिर इस मंत्र से सात बार शक्कर मन्त्रीत कर, बोनी, में रखने से स्त्रियों का प्रदर रोग शांत होता है।

मन्त्र :—ॐ ओं ओं अं अः स्वाहा।

विधि :—इस मंत्र को जप कर काजल बनावे काजल आँख की रई और लाख का रस अथवा भ्राक की रई धीरे कमल के धामे की बत्ती बना कर काजल बना आँखों में अंजन करने से वश्य होता है।

मन्त्र :—ॐ वाचस्पतये नमः ।

विधि :—इस मन्त्र का जाप १ वर्ष तक करे तो बुद्धि बहुत बढ़ेगी ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते श्री पादबर्नाथाय ह्रीं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अद्वे
मुदु क्षुद्र विघ्नद्वे क्षुद्रान् स्थम्भय २ दुष्टान् चरय २ मनोवाञ्छित पूरय २
स्वाहाः ।

विधि :—दीवाली के दिन १००० जाप करे, पीछे एक मासा नित्य करे तो मनोवाञ्छित कार्य हो ।

मन्त्र :—ॐ नमो ज्वाला मालिनी देवी शशंवति रक्त रोहिणी ॐ क्षांः क्षीं
क्षम्भ्यूं ह्रीं ह्रीं रक्तू वाशसी अथ वर्ण दुहिते अधेरे कर्म कारके
अमुकस्य मनुः दह २ उपविष्टाय मुखं दह २ सुप्ताय मनः दह २ पर
बुद्धाय हृदयं दह २ पच २ मथ २ अथ तावद हन्यात् ॐ हम्भ्यूं
हूं हूं हूं फट् स्वाहाः ।

विधि :—इस मन्त्र का १०८ बार जाप नित्य करे तो सर्व कार्य की सिद्धि होती है ।

मन्त्र :—ॐ रक्ते रक्तावते हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—कुमारिका सूत्रेण कंटक कुत्वा कणवीर पुष्प १०८ जाप्य दत्त्वा कटी वधये दत्त
प्रवाहं नाशयति ।

मन्त्र :—ॐ अंगे कुमंगे मंगे फु स्वाहाः ।

विधि :—१००८ बार जाप पूर्व १०८ मुण्डिने स्वप्ने शुभानुभ वक्ष्य ।

मन्त्र :—ॐ अंगे कुमंगे फु स्वाहा ।

विधि :—फल व जल अभिमन्त्र्य पिबेत् शूल नाशयति ।

मन्त्र :—ॐ नमः क्षिप्त गामिनो कुरु २ विमले स्वाहा ।

विधि :—अने नाम्बु सप्ताभि मन्त्रित कृत्वा यस्य नाम्नि पिबेत् स वश्यो भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं कीं ह्रीं हूं फट् स्वाहाः ।

विधि :—पुंगी फलादि यस्य दीयते स वश्यो भवति ।

मन्त्र :—ॐ ऐं ह्रीं सर्वभय विद्रावणि भयार्थं नमः ।

विधि :—एत ध्यापत् पथानं व्रजेत् भयं न भवति ।

मन्त्र :—ॐ कृष्ण गन्ध विलपे नाय स्वाहा ।

विधि :—१०८ बार स्मरणं ना तीता नागत वर्तमान स्वप्ने कथयति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं त्रिशुलिनीं प्रेत कपालस्तां नमुण्ड मुक्तावलि बद्ध कंठां कृतान्त-
हारां रुधिरौघं संप्लुतां तामेव रोद्रीं शरणं प्रपद्ये अमुकं विस्फोटक
मया द्रक्ष २ स्वाहा ।

विधि :—ये मन्त्र केजर, कपूर, गोरोचन से लिखकर भुजा के बांधने से शीतला का दोष जाता है ।

मन्त्र :—ॐ काम देवाय काम वशं कराय अमुकस्य हृदयं स्तम्भय २ मोहय २
वशं मानय २ स्वाहा ।

विधि :—ग्रनेन मनेणाभिमन्त्र्य यद्वस्तु यस्य कस्याऽपि दीयते स वशी भवति ।

मन्त्र :—ॐ सम्मोहिनी महाविद्यै जंभय स्तम्भय मोहय, आकर्षय पातय महा
संमोहिनी ठः । स्मरण मात्रेण सिद्धिर्भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अरहंत देवाय नमः ।

विधि :—१०८ बार बाद के समय जपने से तथा और कार्य में लो जय होय । मन्त्र के कपडा
मे गाठ दीज तो चोगी न कर सके तथा सर्पादि वस्त्र से दूर रहे ।

णमोकार मन्त्र उल्टा जपे बन्दी मोक्ष होय बिना कार्य उल्टी नाही
जपि जै ।

णमोकार मन्त्र ३ बार पढ़कर धूल चूटी के फूंक दै इके जे के माथे डारे सो
वश्य होय ।

चौथ तथा बीस दिनवार को णमोकार मन्त्र पढ़ि के सम्मुख तथा दाहिने
बाई तरफ फू कि दीज पढ़ि पढ़ि के बेगी देखते ही भागि जाय ।

मन्त्र :—ॐ णमो अरहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आयरियाणं, ॐ णमो
उब्झायाणं, ॐ णमो लोए सच्च साहूणं ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय अपराजित शासनाय चमर महा भ्रमर
भ्रमर भ्रमर रुज २ भुंज २ कड २ सर्वं ग्रहान् सर्वं ज्वरान् सर्वं
वातान् सर्वं पीडान् सर्वं भूतान् सर्वं योगिनीन् सर्वं दुष्टान्नाशय क्षोभय
२ ऊँ कः घः मः यः रः क्षि क्षं सर्वोपस गर्भाशय २ हुं फट्
स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से कलवाणी करके पिलावे सर्व रोग दोष पीड़ा भूत उपद्रव जाय सही ।

मन्त्र :—ॐ नमो अरहंताणं ॐ नमो भगवत्क पास जिणदस्स अलवेसर २
आगच्छ २ मम स्वप्ने शुभाशुभं दर्शय २ स्वाहा ।

विधि :—प्रथम पूर्व मुख, दीप, धूप विधानेन १०००८ वार जपे । कार्य काले २११०८ जप सोवे, शुभ शुभ आदेश स्वप्न में होय सही ।

मन्त्र :—ॐ नमो णाणाय, ॐ नमो दंसणाय, ॐ नमो चरिताय, ॐ नमो
त्रिलोक वरं करीह स्वाहा ।

विधि :—सर्व कर्म करो मन्त्रोऽयम् । कालायानी येन घटन पायन चलावथ्य च छ् सिरोधी
सिरोत्पातादिषु कार्येषु योज्यं ॥

मन्त्र :—ॐ ह्रूं ह्रूं ह्रूं ठं ठं ठं स्वाहा ।

विधि :—आद्रा नक्षते राता कनीर की कील आंगुल चार वार ७ इस मंत्र मूँ मन्त्रि, जिको
नाम लोजे सो वश्य भवति ।

मन्त्र :—अनेन कील सयनाल स्वाहा ।

विधि :—उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रे खेर की कील अंगुल ८ वार ७ मन्त्रि जे जिका घर माहि
गाढ़े सो उच्चाटन भवति ।

मन्त्र :—ॐ गर्दभ हृदये स्वाहा ।

विधि :—चित्रा नक्षते गर्दभ अस्थिमयं कीलक पचांगुलम् सप्तभि मन्त्रये यस्य गृहे निखनेत
गर्दभ समं भ्रमति ।

मन्त्र :—ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिकोतरी मम चितितं कथय २ संत्यं ब्रूहि २
स्वाहा ।

विधि : अनेन मन्त्रेण आजानुजल मध्ये प्रविश्य १०८ कनेर का फूल जपिजै, चन्दन,
केशर, कपूर, कस्तूरी मूँ हाथ लेप कीजै अग्र धूप दीजै सफेद घोडे चढ़ी कन्या दीस ।
जो पूछो सो कहे ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं अचले प्रबलौ चल चल अमुकी गर्भ चाल २ स्तंभय २
स्वाहा ।

गर्भ स्थंभनं मन्त्र

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रस्व्यं महादेवी पद्मावति मह्यं हि मम दर्शनं देहि स्वाहा ।

विधि :—ग्रन्थ १०,००० (दस हजार) जाप्यं क्रियते पद्मावति प्रत्यक्षो भवति अथवा आदेशं ददाति ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवोक्त गोमयस्त सिद्धस्त बुद्धस्त अक्षीण महानसो लब्धि लक्ष्मी आनय २ पूरय २ स्वाहा ।

विधि :—वार २१ अक्षत पर जाप्ये । धनधान्य मध्ये क्षिप्यते अक्षय भवति । किन्तु उस स्थान को उठाइजै नहि ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं नमो महायम्मा पत्ताणं जिणाणं ।

विधि :—अनेन मन्त्रेण द्वादश सहस्र जाप्य कृतेन लक्ष्मी सिद्धति लक्ष्मी कथयति निधि स्थान ।

मन्त्र :—ॐ नमो इदं भुइ गण हरस्त सम्बलद्धिकरस्त मय ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—वार १०८ लाभाय सदा स्मरणीया ।

मन्त्र :—ॐ श्रीं ध्वी श्रीं बलीं श्रीं क्षीं श्रीं ह्रीं श्रीं क्षीं क्षूं श्रीं क्रौं श्रीं स्वाहा ।

विधि :—मंत्रोयं लक्ष जपतः सप्त श्रिया वश्यं करोति च धन्य धान्यं समं दीप्तं दानं ददाति वृद्धयति ।

मन्त्र :—ॐ अम्बे अम्बाले भूतान् कूरात् सर्पान् द्वूरी कुरु २ निधि दर्शय २ श्रीं क्षीं स्वाहा ।

विधि :—मंत्रोऽयं द्वादश सहस्र जपतो कथयति, वशति निधानं स्फुट ।

मन्त्र :—ॐ ह्रं उ ह्रूं ह्रूं व वा वि वी वु वू वे वैं वो वौ वं वः ।

विधि :—रात्रौ स्वाप समये प्रत्युषे च वार १-१ श्वासेन स्मरणं कार्यां यो मनसि चिन्तये तस्य वशी भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रं इले तीले नीले हिमवंत निवासिनी गल गंधे विश्व गंधे दुष्ट भंगवरि, वा तारिशा नाशारिशा स्फटिकारिशा हता कृष्ठा, हतानिर्धूताय ।

विधि :—इमां विद्यां पठति, शृणोति, तस्य कुले अरिण वाना नाहि । ग्रनेन मंत्रेण वार २१ कलपानीयेन ग्रशोपशमं ।

मन्त्र :—ॐ कालि महाकालि अबतारि २ स्वाहा लुं चि मुं चि स्वाहा ।

विधि :—वार २१ स्मरणात् हरण पीडा न भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्री कृष्ण वाससे शत वदने शत् सहस्र सिंह कोटि वाहने पर विद्या उछादने सर्व दुष्ट निकंदने सर्व दुष्ट भक्षणे अपराजिते प्रत्यंगिरे महाबले शत्रु क्षये स्वाहा ।

विधि :—एतस्य महा मन्त्रस्य नित्य वार १०८ जापने सर्व दुष्ट दुरितोपशमने सर्व समिहित सिद्धि भवति ।

मन्त्र :—ॐ नमो अरहउ भगवउ मुख रोगान् कंठ रोगान् जिह्वा रोगान्, तालु रोगान् दन्त रोगान् ॐ प्रां प्रीं प्रूं प्रः सर्व रोगान् निवर्तय २ स्वाहा ।

विधि :—पानीयमभि मन्त्र्य कुरला क्रियन्ते मुख रोगा. निवृत्ति । तत्र कर्णे बध्यते ततोऽक्षि दोषा न निवर्तते ।

मन्त्र :—ॐ नमो लोहित पिंगलाय मातंग राजानो स्त्रीणां रक्तं स्तंभय २ ॐ तद्यथा हुमु २ लघु २ तिलि २ मिरालि स्वाहा ।

विधि :—रक्त सूत्र दूवर के ग्रन्थि ७ कृत्वा वार २१ जापित्वा स्त्रीणां वाम पादागुष्ठे बधयते रुधिर प्रशमयेत ।

मन्त्र :—ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं कलि कुंड दंड स्वामिने मम वंदि मोक्षं कुरु रक्षीं ह्रीं क्लीं स्वाहा ।

विधि :—नित्य जाप्येन यदि मोक्षः दिन ७ सन्ध्या समय निश्चयतः जापः ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं चन्द्रमुखी दुष्ट व्यंतर कृतं रोगोपद्रवं नाशय नाशय ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—इवेनाक्षत अभिमन्त्र्य ग्रहादी ध्येया. दुष्ट व्यंतर रोगो नश्यति । वानर मृत्वं चोर आदित्य सम तेज स ज्वर तृतीयक नाम दर्शनादेव नश्यति ।

मन्त्र :—तद्यथा हन २ दह २ पल २ मथ २ प्रमथ २ विध्वंशय २ विद्रावय २ छेदय २ अन्य सीमां ज्वर गच्छ २ हनुमंत लांगुल प्रहारेण भेदय २ ॐ क्षां क्षीं क्षू क्षौ क्षूं रक्ष २ स्वाहा ।

विष्णु चक्रैव छिन्न २ रुद्र शूलेन भिद २ बह्म कमलेन हन २ स्वाहा ।

विधि :—कुम्भकुम्भ गौरोचन भूर्ये लिखित्वा प्रत्यवेला या हस्ते बंधनीया ।

मन्त्र :—ॐ भस्मकरी ठः ठः स्वाहा । ॐ इचि मिचि भस्मकरि स्वाहा ।
ॐ इटि मिटिमम भस्मकारि स्वाहा ।

विधि :—एभि मन्त्र जलमभिमन्त्र्य पीयतेऽजीर्णं मुदशाम्यति । अति सारादि रोगानपि निवर्तते उदर पीडा च उपशाम्यति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं श्रूं ह्रः कलिकुंड स्वाभिने जये विजये अप्रति चक्रे अर्थ सिद्धि कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इद मन्त्र लिखित्वा वस्तु मध्ये क्षिप्यते वियाण विजियते रक्षायां ।

मन्त्र :—ॐ णमो भगवते श्री पाशर्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय एकाहिक
द्वयाहिक त्रयाहिक चातुर्थिक पण मासिक वात पित्त कफ श्लेष्म
सन्निपातिक सर्व रोगानां, सर्व भूतानां, सर्व प्रेतानां, सर्व दुष्टानां,
सर्व शाकिनीनां, नाशय २ त्रासय २ क्षोभय विक्षोभय २ ॐ हूं फट्
स्वाहा ।

विधि :—वार १०० भाडा दीजे व डोग कर गले बाधे सर्व रोग ज्वर दोष जाये ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते अवहयत सासनाय संसार चक्र परि मर्दनाय आत्ममंत्र
रक्षणाय पर मंत्र छेदनाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय सर्व ज्वरं, विषम
ज्वर, महा ज्वरं, ब्रह्म ग्रहकं, नाग ग्रहकं, भूत ग्रहकं, प्रेत ग्रहकं पिशाच
ग्रहकं, सर्व ग्रह, सर्व दुष्ट ग्रह सहस्र शूल विनाशनाय, अमृत राई
केशर की पीडा, ज्वर विनाशनाय, यक्ष राक्षस, भूत पिशाचादि
भवनादि दोषं नाशय २ हिलि २ हल २ दह २ पच २ मर्दय २
विध्वंसय २ ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं हः सर्व ग्रह उच्चाटनं ह्म्ल्व्यूं
ह्म्ल्व्यूं ह्म्ल्व्यूं ह्म्ल्व्यूं ह्म्ल्व्यूं ह्म्ल्व्यूं ॐ हूं फट्
स्वाहा ।

विधि :—रक्षा मन्त्रोप झाडां दीजे सर्व रोग दोष जाय ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पाशर्वतीर्थ नाथाय वज्र स्फोटनाय, वज्र महावज्र,
सर्व ज्वरं, आत्म चक्षु, पर चक्षु, प्रेत चक्षु, भूत चक्षु, डाकिनो चक्षु,

शाकिनी चक्षु, सिंहारी चक्षु, माता चक्षु, पिता चक्षु, बटारी, क्षमारी,
एतेषां सर्वेषां दृष्टि बंधय २ अथलते श्री पार्श्वनाथाय नमः ।

विधि : इस मन्त्र से भाड़ा दे, नजर जाय । बालक का दृष्टि दोष न रहे ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पद्मे ह्रीं ह्रीं क्लीं ह्लूं गीय २ अमुकस्य अपत्यवा-
नाय, अपत्यं सुपुत्रं सर्वाययेन युतं, शोभनं दीर्घायुषं पुत्रं देहिया
विलम्बय ह्री श्री पद्मावती मम कार्यं सिद्धि कुरु कुरु ठः ठः
स्वाहा ।

विधि :—गोली बीज (पारम, पीपन बीज) मन्त्रीतटतु समये सूर्य सन्मुख होय खाय, सन्तान
होय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं पद्मे पद्मासने श्री धरणेन्द्र प्रिये पद्मावती मम त्रियं कुरु २
दुरितानि हर २ सर्वं दुष्टानां मुख बंधय २ ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—यह मन्त्र स्मरण करे २१ बार लाभ होय ।

मन्त्र :—ॐ नमो पार्श्वनाथाय भगवते सप्तकणी मणि विभूषिताय, क्षिप्र २
अमर २ महाभूमि सर्व भूतान सर्व प्रेतान, सर्व ग्रहान, सर्व रोगान,
सर्व शाकिनी, मेवान् आं क्रौं ह्रीं आहूय आह्वानया छेदय २ भेदय २
ॐ क्रौं ह्रीं फट् स्वाहा ।

विधि :—पानी मंत्र पिनावे तथा भाड़ा दे, सर्व दोष रोग शान्ति करे ।

मन्त्र :—ॐ नमो पद्मावती मुख कमल वासिनी गोरी गांधारी स्त्री पुरुष मन
क्षोभिनी, त्रिलोक मोहनी स्वाहा ।

विधि :—ये मन्त्र दीवाली के दिन १०० जाप करे सर्व कार्य सिद्ध होय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं ह्लूं क्लीं अ सि आ उ सा ध्रुव २ कुलु २ सुलु २ अक्षयं मे
कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—पंच परमेष्ठी मन्त्रोष्मं त्रिभुवन स्वामिनी विद्या अनेन लाभो भवति जाप १०८ नित्य
करे गुरुवात्मनायेन सिद्धम् ।

मन्त्र :—ॐ णमो भगवते विश्वचिन्तामणि लाभ दे, रूप दे, जश दे, जय दे,
आनय २ महेश्वरी मन वांछितार्थ पूरय २ सर्वं सिद्धि ऋद्धि वृद्धि
सर्वं जन वश्यं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—चिन्तामणि मन्त्रोऽयम् नित्यं जपे सर्वं सिद्धिं होय, प्रभात सन्ध्या जपे । धूप लेवे ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते वज्र स्वामिने सर्वार्थं लब्धि सम्पन्नाय वस्तार्थं स्थान भोजनं लाभ वे ह्रीं समीहितं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—अनेन मन्त्रेण ग्राम प्रवेशे कंकर ७ बार २१ क्षीर वृक्षे स्थाप्यते सिद्धिर्भवति ग्रामे सुखं भवति लाभं च भवति । लाभ मन्त्रोऽयम् ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते गोमयस्स, सिद्धस्स, बुद्धस्स अक्खीणस्स ह्रीं गौतम स्वामिने नमः अनेन मन्त्रेण ग्राम प्रवेशे कंकर ७ बार २१ अमिमंज्य क्षीर वृक्ष दक्षिण दिशा हन्यते । प्रभूत लाभो भवति । लाभ मन्त्रोऽयम् ।
ॐ तारे तुतारे ह्रीं तुरे स्वाहा ।

विधि :—प्रथम ग्रामे प्रवेशे १०८ जपे सर्वं जन शोभनं लाभ मन्त्रः ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं आरे अभिणी मोहनी मोहय २ स्वाहा ।

विधि :—नित्य १०८ बार जाप जपे ग्राम प्रवेशे ७ कंकर बार २१ क्षीर वृक्ष हन्यते लाभो भवति । प्रथम मन्त्र जप दीप, धूप से सिद्ध करना पीछे अपने कार्य में लगना ।

मन्त्र :—ॐ हूं क्षूं फट् किरिटं धातय २ पर बिह्वान सफोटय सहस्त्र खण्डान कुरु २ पर मुद्रां छिद २ पर मंत्रान् भिद २ ह्रां क्षां क्षं व फट् स्वाहा ।

विधि :—पटकर सिद्धार्थं क्षेपण करना । इसको ब्रह्मचर्य से जपना । शुद्ध भोजन करे, रात्री को भोजन न करे रक्षा मन्त्रोऽयम् ।

मन्त्र :—ॐ नमो अघोर घंटे मम वन्दि मोक्षं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—जाप १२००० श्याम विधानेन ।

मन्त्र :—वन्दि मोक्ष मन्त्रोऽयम् ।

विधि :—यह मन्त्र रोज १०८ बार भस्म पर लिखे श्याम विधानेन ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं तुर २ आगच्छ २ सुर सुन्दरी स्वाहा ।

विधि :—शाक आहारो, भुवि सेज्या, शुचि भूत्वा जितेन्द्रिय, पंचोपचार योगेन अर्चये ।

चन्द्र मण्डल श्वेताम्बर शुक्ल वस्त्र धरो भूत्वा मन्त्र गुणिये श्वेत गन्धानुलेपने लिए करति आगे गुणी को होम कीजे साठ सहस्र गुणिये तिल, घृत होमये तो सिद्ध । भवति याक्षिणी । स्वर्ण पाद सहस्र च प्रयच्छति । दिने २ भगिनी मानेती वक्तव्यं अथवा चेटी च जल्पयेत् । अथ भार्या शोभने खेव तेन भावने पश्यते भागिनी इत्युक्ते नेता

सिधिया शृणु ददाति पादुकांग हूँ देव कन्या प्रयच्छति । सर्व काम करा सास्तु
सालिका भोग दायिनी निधानाति विचित्राणि आनये चेटिका सदा इति सुर मुन्दरि
साधन विधि ।

मन्त्र :—ॐ उच्चिष्ट चांडालिनी सुमुखी देवी महापिशाचिनी ह्रीं ठः ठः
स्वाहा ।

विधि :—बार १०८ दिन ६ पहले दिन जीमने बैठता प्रास १ बार ३ जीमनां बीच झूठे मुँह
बार १०८ जपे । पानी ३ मन्त्र कर पीता फिर भोजन करे दिन ६ जप कर पीछे से
परवाने बँठा बार १०८ जाप करना पीछे ६ दिन ३ मसान ऊपर जाप करना
प्रत्यक्षी भवति ।

मन्त्र :—ॐ णमो गोमय स्वामी भगवज् श्रद्धि समो, वृद्धि समो, अक्षीण समो,
आण २ भरि २ पुरि २ कुरु २ ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—मन्त्र प्रातःकाल नित्य जपे, शुचि होय, लक्ष्मी प्राप्त होय । बार १०८, २१ मुफारी,
चावल मन्त्रित कर जिस वस्तु में धाले सो अक्षय होय । यह मन्त्र पढ़ दीप धूप खेवे ।
भोजन वस्तु भंडार में होय । उज्ज्वल वस्त्र पहनकर श्रद्धादमी भीतर जाय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः । ॐ नमो भगवज् गोमयस्त,
सिद्धस्त, बुद्धस्त अक्षीणस्त मास्वरी ह्रीं नमः स्वाहा ।

विधि :—मन्त्र नित्य प्रातः काले शुचि भूत्वा दीप, धूप यिद्यानेन जपे, लक्ष्मी प्राप्त होय,
लाभ होय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं पद्मनी स्वाहा ।

विधि :—घर मध्ये मुन्दर स्थान केशर में एक हाथ लीपे, पद्मनी की पूजा करे ।
जाप १०,००० गूगल खेवे । दीप पुष्प नैवेद्य चढ़ावे । श्रद्धा रात्रि में करे । १,०००
रोज गेमे हो १ मास करे । देवी प्रसन्न होय । लक्ष्मी देवे । लाभ मन्त्रोप्यम् ।

मन्त्र :—ॐ कमल वासिनी कमल वासी महालक्ष्म्यै राज्य में देव रक्षे स्वाहा ।

विधि :—त्रिकाल जाप कीजे मनोरथ सिद्धि लक्ष्मी प्राप्ति होय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ऐं पद्मे पद्मावती पद्म हस्ते राज मंत्र क्षोभिनी शीघ्र मम
वश्य मानय २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—राज द्वार जाय जाप करे बार २१ तथा १०८ राजा वश्य होय ।

मन्त्र :—ॐ मुखी, राजा मुखी, राजा वश्य मुखी, सर्व वश्यं कुरु २ पद्मावती
क्लीं फट् स्वाहा ।

विधि :—बार २१ तथा १०८ पानी को चुल्हू मन्त्र मुख धोवे राजद्वार जाय सर्व सभा वश्य ।
कार्य सिद्धि होय ।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रयाय अमले विमले स्वाहाः ।

विधि :—हस्त बाहू नात् अभि मन्त्रय जल दानात् सर्प विष जाय ।

मन्त्र :—ॐ क्लीं क्लीं सा दुग्ध वृद्धि कुरु २ स्वाहाः ।

विधि :—चावल की खीर मन्त्रित कर खिलावे, दुग्ध स्तनों में बढे ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलिकुण्ड स्वामिन् अमुकस्य गर्भं मुंच २ स्वाहा ।

विधि :—अनेन मन्त्रेण तैलमभिमन्त्रय ऋष्यन्ते मुखेन प्रसवति ।

मन्त्र :—ॐ रक्ते रक्तवतो हूं फट् स्वाहा ।

विधि :—रक्त कण वीर गुण २१ जाप्यं कृत्वा देव रक्तं स्त्री कण्ठे बंधनीय । रक्त छावे हरति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं कमले कमलोद्भवे स्वाहा ।

विधि :—बार २१ चने की दाल, खारक मन्त्री दीयते कमल वाय जाय ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्वनाथाय अपराजित शासनाय चमर महा भ्रमर-
भ्रमर रुज रुज भुंज २ कड़ सर्वं ग्रहान् सर्वं ज्वरान् सर्वं वातान् सर्वं
पीडान् सर्वं भूतान् सर्वं योगिनी सर्वं दुष्टान्नाशय क्षोभय २ ॐ कः घः
मः घः रक्षि क्षं सर्वोपसर्गांशाय २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—इम मन्त्र से गल वाणी करके पिलावे सर्व रोग दोष पीड़ा भूत उपद्रव जाय सही ।

मन्त्र :—ॐ नमो अरहंताणं ॐ नमो भगवतः पास जिणंदस्स अलवेसर २
आगच्छ २ मम स्वपते शुभाशुभं दर्शय २ स्वाहा ।

विधि :—प्रथम पूर्व मुख, दीप, धूप विद्यानेन १८००८ जपे । कार्य काले २१, १०८ जप
सोवे, शुभाशुभ आदेश स्वप्न मे होय सही ।

श्रष्ट गंध श्लोक

मन्त्र :—चन्दनो सीर कर्पूरा गुरु काश्मीर काम दे ।

गोरोचन जर। मांसी युक्तै गंधाष्टकं विदुः ॥

ॐ नमो भगवते चन्द्र प्रभावाभित् सर्व मुख रंजनि स्वाहा ।

प्रभाते उदकमभिमन्त्रय अमुकं प्रक्षालयेत् ॥

सर्वं जनं प्रियो भवति ।

ॐ नमो कपाली ज्वलिते लोहित पिंगले स्वाहा ॥

विधि :—इस मन्त्र से कंकर १२ लिखें, रोगी कूँ गिनावने पूरे देखे तो रोगी जीवे । ज्यादा देखे तो रोग बढे । कम देखे तो रोगी मरे । इति रोग परीक्षा ।

मन्त्र :—ॐ अप्रति चक्रं फुट् विचक्राय स्वाहा ।

विधि :—सरसो के दाने आठ पानी से धोय सुखावे, पीछे १०८ बार पढ़ि (गन्ध) पानी के कटोरे में डाले, एक दाना तिरें तो भूत दोष, दो तिरें तो क्षेत्र पाल दोष, तीन तिरें तो शाकिनी दोष, चार तिरें तो भूतनी दोष, पांच तिरें तो आकाश देवी दोष, छः तिरें तो जल देव दोष, सात तिरें तो कुलदेव दोष, आठ तिरें तो गौत्रज देवी दोष, सर्व डूबे तो किसी का दोष नहीं । इति दोष ज्ञान मन्त्रोऽयम् ।

मन्त्र :—ॐ चक्रेश्वरी चक्र धारिणी कटोरे चालय २ चोरं ग्रहाण २ स्वाहा ।

चिट्ठी जुवा नाम ।

विधि :—लिख बार २१ मन्त्र पढ कटोरे मुथाई नाम चिट्ठी मन्त्र पढता ऊपर मेल जे जे नाम कटोरो सो चोर जानिए । वा चिट्ठी जलावे सो जले नाही इति चोर ज्ञान मन्त्रोऽयम् ।
ॐ नमो श्री आदेश गुरु को धल बाधू, जल बाधू, बाँधू जल की तीर । नगरी सहित राजा बाँधू जाल सहित कीर । जे रण जाल मे जीव माछली आवे, तो श्री पार्श्वनाथ छप्पन छप्पन कोड जादू की दुलाई । बार ७ ककरी मन्त्र जाल में डाले । जाल बंधे मछली आवे नहीं ।

मन्त्र :—ॐ पद्मावती पद्मनेत्रे शत्रु उच्चाटनी महा मोहिनी सर्वं नर नारी मोहनी जयं विजयं श्रद्धि वृद्धि कुरु २ ।

विधि :—राजा प्रजा मोहन होय, श्रद्धि बढे ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ज्ञं श्री चक्रेश्वरी मम रक्षां कुरु २ ह्रीं अरहंताणं सिद्धाणं सूरौणं उवज्झायाणं, साहूणं मम श्रद्धि वृद्धि समोहित कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—बार १०८ नित्य जपे धन धान्य वृद्धि होय । कामधेनु मन्त्रोऽयम् ।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं क्लीं अ सि आ उ सा च ल २ कुल मुल इच्छियमं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—नित्य बार १०८ जपे दोनों समय लाभ होय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं कलिकुंड स्वामिन् आगच्छ २ आत्म मंत्रान रक्ष रक्ष पर मंत्रान छिद छिद मम सर्वं समोहितं कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—ये मन्त्र १२००० जपे श्वेत तथा रक्त पुष्पे । सर्व सम्पदा प्राप्त होय ।

मन्त्र :—ॐ नमो वृषभनाथाय मृत्युं जयाय सर्व जीव शरणाय, परम त्रयी पुरुषाय, चतुर्वेदाननाय अष्टादश दोष रहिताय, श्री समवशरणे द्वादश परोषह वेष्टिताय ब्रह्म, नाम भूत, यक्ष भूत, राक्षस सर्व शान्ति कराय स्वाहा ।

सर्व शान्ति कर मन्त्रोऽयम्

मन्त्र :—ॐ कर्ण पिशाचिनी देवी अमोघ वागीश्वरी, सत्यवादिनी, सत्यं ब्रूहि २ यत्वं चितेसि सप्त समुद्राभ्यन्तरे वर्तते तत्सर्वं मम कर्ण निवेदय २ ॐ वोषट् स्वाहा ।

विधि :—जाप १००० करे, जल मध्ये होम १००८ गुभा शुभ कथयति ।

मन्त्र :—ॐ रक्तोत्पल धारिणी मक्ष हाजर रिपु विध्वंशनी सदा सप्त समुद्राभ्यन्तरे पद्मावती तत्सर्वं मम कर्ण कथय । शीघ्र शब्दं कुरु २ ॐ ह्रीं ह्रां ह्रूं कर्ण पिशाचिनी के स्वाहा ।

विधि :—सहस्र जाप होम १०८ पश्चात्तिद्रि ।

गोरोचन कल्प

मन्त्र :—ॐ ह्रीं हन् ३ ॐ ह्रीं वहे वहे ॐ ह्रीं हन् हनां ॐ हन् २ ॐ ह्रीं हः हः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से गोरोचन २१ बार मन्त्रीत कर माथे पर तिलक करे तो राज दरबार में विवाद में वशीकरण होता है । रोगी मनुष्य हृदय पर तिलक करे तो स्त्री वश होय । बाह्य तिलक करे तो व्याघ्र चित्त वश होय । गर्दन पर तिलक करे तो सर्प वशी होय । पग (पैर) में तिलक करे तो चौरादिक वश होय । अंगुठे में तिलक करे तो सर्व विद्या सिद्धि होय । जीभ में तिलक करे तो कवि पंडित विद्वान होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो काली वज्रा कुंशा को आणं जो अमुका कीखिसं कब ही देवी कालि की आण ।

विधि :—बार २१ या १०८ बार बेल मन्त्री जे धरण ठीकाने आवे ।

मन्त्र :—ॐ नमो आदित्या भगवती सूर्य संसयस वृष लोचन श्री शक्र प्रसादेन
आधासीसी सूर्य नाशय २ स्वाहा ।

विधि : बार ६ मन्त्रीत धूग खेने से आधा सीगी गेम नष्ट होता है ।

मन्त्र :—ॐ जल कंपई जल हर कंपइ सय पुत्र सुं चंडिका कंपे राजा रूवो (चो)
कहा करे सि आसन छांडि वैदेसि जब लगई चंदन सिर चढ़ा बुं तब
लग त्रिभुवन पाप पठाबुं ह्रीं कुट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से चन्दनादि १०८ बार मन्त्रीत करके माथे में तिलक करे तो राजा का
वशीकरण हो, सत्य है ।

मन्त्र :—ॐ नमो आदेश गुरु कूं उंचो खेडो डिग डिगे लोः तवें ने मोर मुछालो
ज्यों २ मोर करे पुकार तुं तुं बिछु चढ़े कणाल ।

विधि :—इस मन्त्र को एकान्त में खड़े रह कर २१ बार जपे तो बीछू काटे हुए आदमी को
ज्यादा जहर चढ़ना है ।

मन्त्र :—ॐ नमो आदेश गुरु कूं घाइ गाइ गोबर जिसमें ऊपना च्यार बिछु
चार काला चार काबरा चार भवरा पाखा लाल तारूं उतर बिछू नहीं
तरे कें नील कंठ मोर हकारू मोर खासी तोड़ें जारे बिछू मंकरे खी
छोड गुं ह० फु० ।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार पढ़ कर हाथ से भाड़ा देने पर बिछू का जहर उतर
जाता है ।

मन्त्र :—ॐ धु लुः दे उ लः धुल पुरः तिहानें में दायण देव कुकर विस कुनर ई
माण माणस के ही मातरीख मंत्री बंधो जै सगला ई स्वान रो विषल-
त्तरई सही ।

विधि :—इस मन्त्र से ३ रविवार तक पागल कुत्ते का काटा हुआ आदमी को मन्त्रीत करे
२१ बार, तो कुत्ते का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ छौं छौं छौं छः अस्मिन् यात्रे अवतर स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र ने पेडा, २ बार मन्त्रीत कर प्रातः ही खावे तीन दिन तक, तो आधा
सीसी (आधा माथा का दर्द दूर हो) ।

मन्त्र :—मेरु गिरी पर्वत जहाँ बसे हणमंत वीर कांख विलाई अंग थण मुरड
तीनु मस्मा भूक गुः० हः० फुरीः० ।

विधि :—७ नमक की डली लेकर ७ बार मन्त्रीत करे, २१ बार फूंक दे तो कांख विलाई ठीक
होनी है गण्डेस वगे बार २१ तिणाथी मन्त्री जे तिण - तेई एक २ का तिणाथी
बार ३ मन्त्री जे फूंक दीजे थणस से जाय । मुरड गई होय तो तेनो लोहनी कडछी
की डंडी बार २१ मन्त्र कर २१ बार फूंक देने पर पेट दर्द, उदर शूल, श्वरण पीडा,
वाय काम्ब विलाई । इतने रोग ठीक होते है ।

मन्त्र :—ॐ नमो इंद्र पूत इंद्राणी हणई राधणी हणइ वायसूल हणइ हर्षा हणई
फीहा गोला अंतगलि वायगोला हणई नहीं तर इंद्र माहाराजा नी
आजा ।

विधि :—इम मन्त्र से १०८ बार साढे तीन आटा की तावा की रीग मंत्र कर चाँवल से
रक्त वस्त्र सवा गज कपड़े को मंत्र तो गोला, फीहो ठीक होय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं श्री करि धन करि धान्य करि रत्न वर्षणी महा-
देव्यै पद्मावत्यै नमः ।

विधि :—इस मन्त्र का १०८ बार नित्य ही जाप करे तो देवीजी प्रत्यक्ष हो ।

नारि केल कल्प

श्लोकः—द्वि जटी एक नेत्रस्तुः नालि केरो मही तले ।

चिंतामणि समोप्रोक्तं सर्व बांछित वायक ॥ १ ॥

यस्य पूजन मात्रेण समृद्धि कुरु ते सदा ।

राजद्वारे जयेप्राप्तेः लाभः आकस्मिक तथा ॥ २ ॥

वेशानिपूज्य मानेय दद्यात्यमीष्ट बांछितं ।

प्रजाल नपयध्याना । द्वध्याज नयतेसुतं ॥ ३ ॥

गंधाद्रातेनय स्यासु गूढ गर्भाप्रसुतये ।

स्वगारेपूजितेयस्मिन् इष्टसिद्धि स्थिरा भवेत् ॥ ४ ॥

सांयुगी तरणे घोरे । विवादे नृप वेस्मनि ।

अर्चयेन्नेक नेत्रयत् । अजय्यो जायतेपुमान् ॥ ५ ॥

वृद्धिस्पादिवसायस्य । विदेसेपूजनाद्विषः ।

पूजनात्संदिरे स्वीये क्षुद्रानस्यंत्यु पदबा ॥ ६ ॥

शाकनी भूत प्रेतादि क्षेत्रपाल पिशाचकाः ।

मुद्गलादि महादोषाः क्षयंयाति क्षणे नते ॥ ७ ॥

सर्वं शांति भवेयस्मिन् मही तेज गती भले ।

आयु वृद्धि महासिद्धिः तीव्र बुद्धि समुद्रय ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लूं स्वरूपायः क्लीं चकामाक्षये नमः

स्वति त्रैलोक्य नाथाय सर्वं काम प्रदाय च ॥ ९ ॥

सर्वात्मगूढ मंत्राय नालिके रेक चक्षुषेविना मणि समानाय प्रसत्याय
नमो नमः ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लूं क्लीं एकाक्षराय भगवती स्वरूपाय सर्वं युगेस्वराय
त्रैलोक्य नाथाय सर्वं काम प्रदाय नमः ।

विधि :—अनेन मन्त्रेण चैषाष्टम्या रक्त कुसु मेवा १०८ लक्ष्मी बीज जप पुरस्सरं गृहे पूजयति
तस्यस बार्ध्वा भीष्ट सिद्धिर्भवती । एतस्य प्रक्षाल नांद केन वध्या मुतजनयति ।
ऋतु रमानानतर एतस्य गंधा द्वातेन गूडगर्भा प्रसूतय । गृहे पूजिते सर्वा भिष्टार्थं
सिद्धि स्थिरा भवति । एतस्य पूजना द्वादेव्यवस्थिपिते व्यवसाय वृद्धि भवति । इदं
माया बीजपूर्वं स्वेत पुष्प १०८ पूजनात् गृहेस गोणसा द्युपद्रवो न स्यात् । एतस्य
पूजनात् गृहे शाकिनी भूत प्रेत पिशाच क्षेत्र पालादि दोषो न भवति । एतस्य गृहे
पूजनात् क्षुद्रोप द्रवानस्युः । एतस्य पूजनात् सर्वं शांति भवति । एतस्य गृहे पूजनात्
मुद्गलाद्याः मानिध्यः कदा भवति, किं बहुनायस्यैक नेन्नाद्विजटी सपक तं नालिकेरं
कृति साप्ति गेहे । चिना मणि प्रस्तर तुल्य नावं सम चितं धन्य त मस्य चित्तं ।

॥ इति ॥

मन्त्र :—ॐ क्लीं क्लीं क्लूं क्लूं क्लीं क्लूं यस्तीस्तं सुगनी बीय शाकिनी दोष
निग्रहं कुरु २ स्वाहाः ।

विधि :—कोरा मटका या हंडिया मे खडी चूना मे अक्षर लिखे फिर उडव मुठ्ठी, १५ कपूर,
फूल ७, बार मन्त्रीत कर हंडिया में डालकर हक्कन लगा देवे फिर नीचे आग लगा
कर ऊपर हंडिया धर देवे । बिस्ली को आने नहीं देवे तो, शाकिनी पुकारती आवे ।

मन्त्र :—ॐ नमो महाकाय योगिणि योगिणि नाथाय शाकिनी कल्प वृक्षाय वृष्ट
योगिणी संधिरू हाय कालडेडेशाधय २ बंधय २ मारय २ चूरय २

अपहर शाकिनी संधूमवीरात् ॐ उं न्नीं न्नीं न्नां उं ह्रीं ह्रां २
होत्फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से गुग्गुलु ७ बार मन्त्रित कर उखल में डाल कर मुंसल से कूटे तो शाकिनी को प्रहार लगता है । गोडो मूंडे शाकिनी मस्तक मूंडा बैलामीनी चेष्टा । पेद दर्द हो, उबाक आवे, उच्चांट उपजै, सूल आवे, वेटि करे, मांठि दिठाउ चाट उबाट उपजै, सूल आवे, सासरे न रहे, मावी भंगरै, देह लूणपाणि हो बई । घगुं बोलने नहीं, सूहणो भीलडो रूप देखे । सुती डरे, छोरू आवद रहे, लोहि पडे, छोरू न हुवै । इतनी बात हो तो शाकिनी की चेष्टा जानना ।

मन्त्र :—काली चीडी चग २ करं मोर विलाइ नाचै हणमंतो यती कीं हाक
माने अमुका की धरण ठीकाण ।

विधि :—इस मन्त्र को १०८ बार प्रभात ही रविवार को बेलघडाइ आटा की मन्त्री धूप देइ हाथ में राखिजै धरण ठीकाने आवे ।

मन्त्र :—ॐ नमो अ जैपाल राजा आजया देराणी तेहने सात पुत्रा प्रथम पुत्रः एकान्तरो,
बेलाज्वर, शीतज्वर, दाह ज्वर, पक्ष ज्वर, नित्य ज्वर, तृतीय ज्वर, ग सात ज्वर
माहिपीडा करे तो श्री जैपाल राजा अजया देराणी की ग्रु० में फु०

विधि :—क या कत्रीत मूत्र को सात बड कर के गांठ ७ लगावे उसको २१ बार मन्त्रीत करे हाथ में बांधे तो सर्व प्रकार के ज्वर दूर होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ नमो रुद्र २ महारुद्र २ बुद्धिक विनाशय नाशय स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र में १०८ बार मन्त्रीत करे बैसे बीछु का जहूर उतरे ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं हिमवन्तस्योतरे पार्श्वे अश्व कर्णो महादुमः तत्र सूलसमुत्पन्ना
तन्नेव विलयंगता ।

विधि :—इस मन्त्र से पानी कलवाणी कर पीलाने से सूल मिट जाता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो लोहित पींगलाय भातंगराजाय उतस्पथा लघु हिली २ चिली २
मिलि २ स्वाहा ।

विधि :—कन्या कत्रीत मूत्र को सात बड करके गांठ २१ देवे फिर २१ बार मन्त्रीत कर कमर में बांधने से गर्भ का स्तम्भन होता है ।

मन्त्र :—ॐ आणूं गंग जमण चीबेली लूं खीलूं होठ कंठ सरसा बालू खीलूं
जीभ मुखं संभा लूं खीलूं मावापजिण तूं जाया खीलूं बाट घाट जिण
तूं आया खीलूं धरती गयण अकाश मरहो बिसहर जो मेलूं सास ।

विधि :—इस मन्त्र से धूलि, अथवा कंकर, अथवा भस्म, १०८ मन्त्रीत कर साप के ऊपर डालने से साप की लीत होती है ।

मन्त्र :—ॐ गंगयमण उंची पीपली जारे सर्थ निकलि वीर ।

विधि :—इस मन्त्र से भस्म १०८ बार मन्त्रीत कर सर्प पर डालने से कीलित किया हुआ सर्प छुट जाता है ।

मन्त्र :—ॐ काली कंकारुं वाली महापत्र राली हूं फट् स्वाहाः ।

विधि :—इस मन्त्र से भस्म १०८ बार मन्त्रीत कर आँख (चक्षु) पर पट्टी बांधने से नेत्र अच्छे होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ नमो गया जमुना की आसु बल खीनु होठ कठ मुख खीनु तेरी वाट घाट जोतु आया तर धरती ऊपर आकाश मगीत सकै काहिसा सलवा २ कोयला करी कर कहा काल राजारि रुधोच्यार दुआर हाली चाली कुतरी पछारी लख गम्हदसर अफीरि फुरो मन्त्र ईश्वरो बाचा ।

विधि :—इस मन्त्र से सर्प का मुँह स्थभन किया जाता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो सु उखिलनभई बाचा भई विवाच दसर गोरी नयनस जो बे मिर मुकलाया केस कमर धोवती करै बाभण का बेस मइ तो सरपा छोडि फिर करि आरु दसर अफिरि फुरो मन्त्र ईश्वरो बाचा ।

विधि :—इस मन्त्र से सर्प का मुख स्तम्भन किया हुआ छूटता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो लोह में तालु लोह में जडीउ वज्र में जडीउ तालों उघडि तालों न उ घडे तो वज्र नाथ की आज्ञा न उघडे तो राम मोना की आज्ञा फुरे तत्त उघडे तो नार सिंह वीर की आज्ञा फुरे ठ ठ स्वाहा ।

विधि :—बार ७ वा २१ ताला को मन्त्रीत कर तीन बार ताला को हाथ से ठपका लगावे तो ताला खुल जावे ।

मन्त्र :—ॐ नमो कामरू देश कानध्या देवी लकामाहि चावल उपाय किसका चोर किसका चावलपीरकानुगाधीरमे रामनुकाचाउल चिछा चोर को मुख लागे साह उ गण उवा वे चोर के मुख लोही नी कावे चोर छुटे तो महादेव को पत्र फुटे फुरा मन्त्र ईश्वरो बाचा द्रव्या वा च विष्णु वाच सूर्य च द्रवा वाच पवन पाणी वाणी वाच ।

विधि :—इस मन्त्र से चावल २१ बार मन्त्रीत कर चवावे तो चोर के मुँह में खून निकले ।

मन्त्र :—ॐ नमो ब्राह्मण फीटि योगी हुया दोर ज नोइ नासकीय फुटकिर गलइ पछा नारसिंह कोर की आण फिरइ ए ।

विधि — इस मन्त्र से गुड (गुन) २१ बार मन्त्रीत कर खिलाने से ७ दिन तक तो बाला का रोग दूर होता है। बाला माने नेहरुवा रोग।

मन्त्र :—ॐ नमो उज्जेन नगरी सोपरा नदी सिद्धवड् गंधरप मसान तहां बसे
जापरो जापरार्णं बं बेटा भूतिया, मेलिया अहो भूतिया अहो मलिया
अमुकाने घर पाखान नाख २ ॐ अहो मलिया अमुकाने घर बिष्टानाख
२ ॐ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि :— भगी के मशान मे से पत्थर डंठ लाकर, एकान्त स्थान में चोका लगा कर जगह पवित्र करे, फिर उस लाये हुवे ईंट या पत्थर को उस चोके में रख देवे, फिर उस ईंट या पत्थर पर बैठकर, सामने एक बरतन में अग्नि रख कर, कनेर के फूलों से १०८ बार भैंसा गुगल के साथ आहुति पूर्वक जप करना, पूर्व दिशा में बैठकर करना इस प्रकार सात दिन तक जप करना तो शत्रु के घर में निश्चय से पत्थर और बिष्टा बरमेगा, अगर सात दिन में प्रत्यक्ष न हो तो मात दिन फिर करना तब तो जरूर ही बरमेगा। इस प्रकार की क्रिया समाप्त हो जाने के बाद मद् की धार देना। जो होम की भस्म थी, उस भस्म को पोटली में बांध कर मन्त्र से मन्त्रीत कर, जिसके घर में डाल दी जाय उसके घर में पत्थर बरसे सत्य है, किन्तु मन्त्र रात्रि में जप करे।

मन्त्र :—ॐ टे टें टें मार टें स्वाहा।

विधि :— जहां चौरस्ते की धूनि को लेकर मध्याह्न समय में लेकर इस मन्त्र से १०८ बार मन्त्रीत करके, घर में डालने से चूहे सब भाग जाते हैं। एक भी बूहा नहीं रहता है।

मणि भद्रादि क्षेत्रपालों का मन्त्र

ॐ नमो भगवते ह्स्त्व्यूं ह्रा ही हूं ह्रीं ह्र मणि भद्र देवाय भेर वाय कृष्ण
वर्णाय रक्तोष्णाय, उग्र दंष्ट्राय त्रिनेत्राय, चतुर्भुजाय, पार्श्व कुशफल वरदे हस्ताय नागकरां
कुण्डलाय, शिखा यक्षोपवीत मण्डिताय ॐ ह्रीं श्रीं २ कुरु २ ह्रीं २ आवेशय २ ह्रीं स्तोभय २
हर २ शीघ्रं २ आगच्छ २ खलु २ अवतर २ ह्स्त्व्यूं ह्स्त्व्यूं भ्स्त्व्यूं चन्द्रनाथ ज्वालामालिनी,
चंडोय पार्श्वनाथ तीर्थङ्कर धरणेन्द्र पथावनि आज्ञादेव नाग यक्ष, गधर्व, ब्रह्म राशस रग भूता
दीनृ रति काम, बलि काम, हनु काम, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र, भवातर, स्नेह, वैर, सबधीसर्व
ग्रहान्नावेशय २ नाग ग्रहान्नावेशय २ गधर्व ग्रहान्नावेशय २ आकर्षय २ व्यंतर ग्रहान्नाकर्षय २ ब्रह्म-
राक्षस ग्रहान्नाकर्षय २ चेटक ग्रहान्नाकर्षय २ सहस्र कोटि पिशाच ग्रहान्नाकर्षय २ अवतर २ शीघ्रं २
धनु २ कम्पय २ कम्पावय २ लीलय २ लालय २ लोलय नेत्र चालय २ गात्र चालय २ सर्वांग
चालय २ ओं क्रो ह्रीं गगनगमनाय आगच्छ २ कार्य सिद्धि कुरु २ दुष्टानां मुखं स्तभय २ सर्व

ग्रह भूतवेताल व्यंतर शाकिनि डाकिनी नां दोष निवारय २ सर्व पर कृत विद्यानाशय २ हूं फट् घे घे ठः ठः वषट् नमः स्वाहा ।

विधि :—इस मणि भद्र क्षेत्रपाल के महामन्त्र को दीप घूपपूर्वक क्षेत्रपाल की धूमधाम से पूजा करके, ब्रह्मचर्यपूर्वक, एकासन करता हुआ सिद्ध करे १००० बार तो ये मन्त्र सर्व कार्य सिद्ध करने वाला है । जो भी रोगी भूत प्रेत बाधा से दुःखी हो उसको बैठाकर इस मन्त्र से १०८ बार भाड़ा देने पर उसकी व्यंतर बाधा हट जायगी । रोग से मुक्त हो जायगा । किन्तु पहले सिद्ध करना पड़ेगा । मन्त्र सिद्ध करे तो डरे नहीं, इस मन्त्र से मणि भद्र भैरव प्रत्यक्ष भी आ सकते हैं ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं अहं चन्द्र प्रभपाद पंकज निवासिनी ज्वाला मालिनी तुभ्यं नमः ।

विधि :—इस मन्त्र का ६ दिन तक पिछली रात्री में शुद्ध होकर ३ माला जप करे नित्य त ज्वालामालिनी देवी जी प्रत्यक्ष दर्शन देवे ।

मन्त्र :—ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षं क्षीं क्षः भगवति सर्व निमित्ति प्रकाशिनी वाग्वादिनि अहिफेनस्य भासं ध्रुवां कं कथय २ स्वप्नं दर्शय २ ठः ठः ।

विधि :—इस मन्त्र का खूब जप करने से सर्व चीजों के भाव क्या खुलेंगे सो स्वप्न में दिखेगा ।

अनोत्पादन

मन्त्र :—ॐ तद्यथा आधारे गर्भ रक्षणे आस मात्रिके हूं फट् ठः ठः ठः ठः ठः ठः

विधि :—अनेक मन्त्रेण रक्त कुसुम सूत्रे स्त्री प्रमाणे ग्रन्थि ७ रत्री के कटि बांधे गर्भ थमे अधूरा जाय नहीं । मन्त्र १००८ प्रथम जपे । दीप घूप विघानेन जपे ।

मन्त्र :—ॐ उदितो भगवान् सूर्य सहस्राक्षो विद्वन् लोचन आदित्यस्य प्रसावेन अमुकस्य अर्द्ध शिरोर्द्ध नाशय २ ह्रीं नमः ।

विधि :—डोरा करि १०८ बार मन्त्र गांठ दे कर्ण बांधे ग्रंथां गींजी जाय ।

मन्त्र :—ॐ नमो स्त्वय्य मेघ कुमाराणां ॐ ह्रीं श्रीं क्षमस्त्वय्य मेघ कुमाराणां वींष्टि कुरु २ ह्रीं संबौषट् ।

विधि :—प्रथम १ लाख विधि पूर्वक जपे । जब पानी बरसावना होय तब उपवास कर पाटा पर लिख पूजा कर जपे पानी बरसे । जब रोकना होय तो ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्षीं सों क्षं क्षं मेघ कुमार केम्यो वृष्टि स्तंभय २ स्वाहा ।

विधि :—श्मशान मे प्यासो जाप जपे मेघ का स्तंभन होगा ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते विश्व चिन्तामणि लाभ दे रूप दे, जश दे जय दे आनय
२ महेसरिमनवांछितार्थ पूरय २ सर्व सिद्धि वृद्धि श्रद्धि सर्व जन वश्यं
कुरु-कुरु स्वाहा ।

विधि :—चिन्तामणि मंत्रोपम, नित्य जपे सर्व सिद्धि होय प्रभात संध्या जपे धूप सेवं ।

मन्त्र :—ॐ नमो ह् स्तुभ्यु मेघ कुमारणां ॐ ह्रीं श्रीं नमो स्तुभ्यु मेघ कुमारि-
काणां वृष्टि कुरु कुरु ह्रीं संबोधत ।

विधि :—सहस्र १२ जपेत वृष्टिकृत्सद्यः ।

मन्त्र :—ॐ स्फारक्त कम्बले देवी द्यूत मृतं उत्था पय २ आकाशं भ्रामय २ जलव-
मानय २ प्रतिमांचालय २ पर्वत कंपय २ लीला विलासं ओं ओं ओं नमः ।

विधि :—अनेन मंत्रेण कुम्-कुम् मिश्रिते जवात्से रभिता नभि मन्त्रायाङ्गे सरक्त पादौ क्षिप्यते
जलदागम । इदं मन्त्र इदं हरिताल कुम् कुमाद्यं लिखेत् । इस मन्त्र को इंट के ऊपर
हरिताल और केशरादि से लिखकर भूमि के अन्दर गाडे तो वृष्टि रुक जाती है ।
याने पानी बरसना बंध हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो सुप्रीवाय हनुमन्ताय सर्व कीटकका मक्षि काय विपीलिका विले
प्रवेश २ स्वाहा ।

विधि :—यदा रविवारे सूर्य सत्रमण मवति तदा रात्रौ वार १०८ सहस्रो जपित्वा कीटी नगरे
क्षिप्यते सर्वथा कीड़ी जाय ।

मन्त्र :—ॐ चिकि २ ठ : ३ ।

विधि :—बार २१ अनेन जप्त सूत्रं शय्या बद्धं मत्कुगा नाशयति । इस मन्त्र को २१ बार जप
कर सूत्र को शय्या में बांधने से खटमल कम होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ नमो आवी टीडी हु अ ऊ उ काम छाड्यज मंदिर मेरु कवित्र हाकाइ
हनुमंत हूकई भीम छां-छिरे टीडी हमारी सीम ।

विधि :—बार १०८ अभिमन्त्रय सरसप ने बालू सेत में चोकर छोटे टीडी जाय बार १०८
अभिमन्त्रय सरसप ने बेजू सेतलने चोकर छोटे टीडी जाय ।

मन्त्र :—ॐ ॐ ॐ ठ सहफल नव सह भुज पंच ग्राम कूठ तनइ पापिली जइ
जउइणि कणि कीडउ पडइ ।

विधि : चिट्ठी लिखवान कण मध्ये अथवा जीर्णधान कण ममिमन्त्र्य अन्न मध्ये क्षिप्यते ।
धान मुलं नाही ।

मन्त्र :—ॐ नमो भुंज नायाय तद्यथा हर-हर ससि-ससि मिलि-मिलि सर्वेषां
प्राणिनां मुं डं बंधं करोमि स्वाहा ।

विधि :—तीन सें गुणी जें सरसप वेलुमन्त्र्य सस्य मध्ये क्षिप्यते धान मुलं नाही ।

मन्त्र :—ॐ नमो नार सिंघ तू घूँ घरियालो सबह वीरह खरड पियारउ ॐ तलो
धरती ऊपर-आकाश भरहि मृगी जइ लहइ प्रकाश ।

विधि :—जि बार मृगी आवै ति बार श्याही मसि सूँ माथे लिख जें, मन्त्र भणि औपधि नाख
दीजें मृगी जाय ।

मन्त्र :—ॐ नमो आदेश गुरु कूँ तेरह सरसी, चौदह राई, हाट की धूलि, मसान
की छाई पढ़कर मारुँ मंगलबारे तो कदई नाबह रोग द्वारे फुरई मंत्र
ईश्वरो बाचा ।

विधि :—बारई मंगलबारे इण मन्त्र सूँ मंत्रि तेरइ महिला ७ सरसप ७ राई, १ चुटकी
चौराहे की धूलि, एक चुटकी मसान की छाई (राख) एकटा कर मन्त्रइ मंगल बारे
दोषाहत में नाखिजे अवरता गले मन्त्र बाधिये आदित्य बारे । एकटा करिए मंगलबारे
कीजें मृगी जाय ।

मन्त्र :—ॐ नमो ऊँचा पर्वत मेष विलास सुवरण मृगा चरइ तसु आस-पास
श्री रामचन्द्र धनुष बाण चढ़ाया आजि रे मृगा तुभको रामचन्द्र
मारने आया गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि :—वर्षाकाले रवि दिने धनुषं भवति तदा कुमारी सूत्र नो डोरो नव लड कीजें धनुष
सामा जो इने बार ७ मंत्रि गाठि दशक दीजें ।

इस गांठ दीजें कार्य काले रवि दिने गांठ ।

ताबीज मांहि घालि गले राखिए मृगी जाए ।

मन्त्र :—ॐ खन्ध परिश्रम २ स्वाहा ।

विधि :—१०८ जप सरसी से ताड़िजें रोगन बाय जाय ।

मन्त्र :—समरा समरी इम मणइ गंङ्ग गर ऊपर माल रबणई बलि रोगण
फाग विलाई लूण पानी जिमि हेम गलाई भारा अमृत-२ प्रकुम्भ
फुद स्वाहा ।

विधि :—पानी मन्त्र्य बार २१ प्याइजे भाडो दीजे रोगनवाय जाय ।

मन्त्र :—ॐ तारणि तारय मोक्षनि मोक्षय मोक्षणि मोक्षय जीव वरदे स्वाहा ।

विधि :—पानी बार २१ मन्त्रित कर पीलावे भाडो दीजे सर्व वायु जाय ।

मन्त्र :—ॐ प्रह जउ गाइ सूरौ ए ए मिमंत तिमिर संघाया अनिल, वयण,
निबद्धो अमुकस्य सूतवातं, रक्त वा तं अंगिवातं, अडनीवातं विगच्छिया
वातं, वृद्धिवातं, संतिवातं, पणासरा स्वाहा ।

विधि :—कुमारी का मूत्र बार १०८ गाठ १२ मन्त्रि दीजे देह प्रमाण डोरो करिए तो वायु
जाय ।

मन्त्र :—ॐ मोहिते ज्वालामालिनी महादेवी नमस्कृते सर्वभूत देवी स्वाहा ।

विधि :—जिसपर शंका हो उसके नाम की चिट्ठी मंत्र तेल में चोपडि अग्नि माहि होमिये बले
ते चार जागवे ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते श्री वज्र स्वामिने सर्वार्थ सिद्धि सम्पन्नाय भोजन
वस्त्रार्थ देहि-देहि ह्रीं नमः स्वाहा ।

विधि नगर प्रवेशे काकरा ७, बार २१ मन्त्रि वट वृक्ष के सामने डाले गांव में प्रवेशकरे तो
सर्व कार्य सिद्ध होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवज्ज गोमयस्य सिद्धस्य, बुद्धस्य अक्खीण महाणसस्य. मास्करी
श्रीं ह्रीं मम चित्तित्तं कार्य आनय-आनय, पुरय-२ स्वाहा ।

विधि :—१०८ बार पुनिये तो लाभ होय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं वयर स्वामिस्त मम भोजनं देहि-देहि स्वाहा ।

विधि :—बार १०८ गुणि काकरी २१ मन्त्रि वट वृक्ष उपर छाटिये तत ग्रामे लाभ भोजन
भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं वलीं कलि कुंड स्वामिने अप्रति चक्रे जये-विजये अजिते
अपराजिते जम्भे स्वाहा ।

विधि: देशना काले स्मृत्वा देशनाकार्यं युवति जनान् आकर्षयति सर्वं वशीर्भवति दिन त्रयं यस्यां दिशि पर चक्रं भवति । तत्सम्मुख स्मरयते निर्विघ्नहो भवति ।

मन्त्र:—ॐ नमो अरिहं ताणं आस्मिणी मोहनी मोहय-मोहय स्वाहा ।

विधि:—एष मार्गं गच्छद्भिः स्मरतः तत्कर । दर्शनमपि न भवति ।

मन्त्र:—ॐ नमो सयं बुद्धाणं श्रीं श्रीं स्वाहा ।

विधि:—प्रति दिवसं सिद्ध भवित कृत्वा अष्टोत्तर शत दिनानि यावदष्टोत्तर जपेत् कवित्ता गमादितय, पाडित्यं च भवति ।

मन्त्र:—ॐ ह्रीं नमो पुरुषोत्तमाणं अर्लिं अपौरुषाणम् ग्रहं असि आ उ सा नमः ।

विधि:—जाप्य १०८ कृत्वा असवलित मुख सौभाग्य कृद्धि इव भवति ।

मन्त्र:—ॐ ह्रीं अहं नमो जिणाणं लोगुत्तमाणं लोग पड्वाणं लोग पज्जोयगराणं मम् शुभाशुभं दर्शय-२ कर्ण पिशाचिनी स्वाहा ।

विधि:—जाप १०८ सस्तर के उपर मौनेन शयनीय स्वप्ने आदेशः ।

मन्त्र:—ॐ नमो अहिहंताणं अमय दमाणं चक्खू दयाणं मंगा दयाणं शरण दयाणं एं ह्रीं सर्वमय विद्रावणाय नमः ।

विधि:—जाप १०८ सर्व भयानि विशेष तो राजकुल भयं पर चक्र गय निवर्तयति ।

मन्त्र:—ॐ नमो अरंहताणं अप्पडिबहय वरनाणं दसणं धराणं विउट्ट छडमाणं एं स्वाहा ।

विधि:—निरतर जापा दतीन वर्तमानागत ज्ञान स्वप्न शकुन निमित्तादीनामपि तथा देशत्व च भवति ।

मन्त्र:—ॐ नमो जिणाणं जावयाणं केवलियाणं केवलि जिणाणं सर्वं रोष प्रशमनि जंभिनी स्तंभिनी मोहनी स्वाहा ।

विधि:—पट्टे मंत्र लिखित्वा जापो १०८ वार दीयते तत् कार्य काले वस्त्रं खंड मयूर शिखां सयुक्तं पश्चिज्य वाम पार्श्वे ध्रियते राजा वश्यो भवति ।

मन्त्र:—ॐ नमो जिणाणं जावयाणं मुत्ताणं मोयगाणं असि आ उ सा यं नमः बंदि मोक्षं कुरु-कुरु स्वाहा ।

विधि:—रात्रौ दश हजार जापो वदि मोक्षः ।

मन्त्र :—ॐ चक्रेश्वरो चक्रधारिणो शंख चक्र गदा प्रहरिणी अमुक्तस्य बंध मोक्षं
कुरु-कुरु स्वाहा ।

विधि :—बार २१ तैलं जपित्वा मस्तके क्षिपेत् यदि मोक्षः ।

मन्त्र :—ॐ नमो वोहि जिणाणं धम्मविद्याणं धम्मदेसियाणं अरिहंताणं, नमो भगवद्
सुय देविया सम्बु अतापरावार संग जणणि अहं सोरोए इवी क्वी स्वाहा ।

विधि :—१०८ जपिये । देखना समये वाक्य रस होय, ध्याख्याने सत्य प्रत्ययः ।

मन्त्र :- ॐ नमो जिणाणं लोगुत्तमाणं लोगनिहाणं लोग हियाणं लोग पइवाणं लोग
पज्जुगाराणं नमः शुभाशुभं दर्शय २ करण पित्तावति स्वाहा ।

विधि :—रात सूता जापिये १०८ बार शुभाशुभं कथयति ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवद् गोयमस्स, सिद्धस्स, बुद्धस्स, अक्खणि महाणसी, अस्य
संयोगो गोयमस्स भगवान् मास्करीयम् ह्रीं आणय २ इमं स भयबं
अक्षोण महालब्धि कुरु कुरु सिद्धि, वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—तन्तुल १०८ मंत्र मुखडी घृत माहि मूकिये । अदृषाय सही । अक्षय होता है ।
ॐ चिन्तामणि-२ चितितार्थ पूरण-२ स्वाहा ।

चिन्तामणि मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं अहंते नमः ।

विधि :—पान ७ ऊपर लिखे, १ सांसे लिखि बीडा चबाइये, केशर सूं लिखि स्त्री पुरुष
सर्व वश्य ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलिकुंडं स्वामिन आगच्छ २ पर विद्यां छेवं कुरु-कुरु
स्वाहा ।

विधि :—बार १०८ तथा २१ तेल मंत्र प्रसूति काले नाभि लेप सर्व डोल (शरीर) मर्दन मुखे
प्रसव होई ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्री बाहुबलि शीघ्रं चालय उद्धं बाहुं कुरु-कुरु स्वाहा ।

विधि :—प्रथमं यस्मिन् दिने बाहुबलि साधन प्रारम्भ्यते तस्मिन् दिने उपवास विधाय, संध्या
समये स्नान कृत्वा शुभ वस्त्राणि परिधारय श्री खण्ड, कपूर, कस्तूरिकाया, सर्वाङ्ग
लिप्त्वा ततो पविश्य मंत्र—१०८ जप्यते ततोर्द्धो भूय कायोत्सर्गं मंत्र स्मरणीयं
शुभाशुभं कथयति । इति ।

मन्त्र :—सकलं लक्षणं लक्ष्यते च पयसा संशुद्ध मानोजलम क्षीणे दक्षिण पश्चिमोत्तर
पुरः षट्म त्रयद्वये मासकम् ।

मध्ये क्षिद्रंगतं भवे दश दिनं, धूमाकुले तछिने सर्वज्ञं परिभाषितं,
जितमते आयुर्प्रमाणं स्फुटं ॥१॥

अर्थ :—निर्मल भोजन में जल भर गम ठामे (वर्तन) में रोगी ने दिखावी जे जो सूर्य दक्षिण
हीन दीखे तो छ. मास जीवै । पश्चिम हीन दीखे तो ३ मास जीवै, उत्तरहीन दीखे
तो २ मास जीवै, पूर्वहीन दीखे तो २ मास जीवै । जो मडल सछिद्र देखे तो १०
दिन जीवै । धूमाकुलित देखे तो तिहि (उसी) दिन मरे । यह मृत्यु जीवित ज्ञान
सर्वज्ञ देय कहो ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवतः कूष्मांडिनो ज्ञां ह्यो र्वीं शसरोधरा अवतत् २ दीपे
दर्पणे शक्ति बूहि २ स्वाहा ।

विधि :—वार १०८ मंत्रि पढी जे विधि सँ पूजा कीजे माता प्रत्यक्षा भवेत् ॥

मन्त्र :—ॐ नमो चक्रदेवरी, चक्रवेगेन दाम हस्ते अचलं चालय २ घंट भ्रामय २
श्री चक्रनाथ केरी आज्ञा ह्यो आवर्त स्वाहा ।

विधि :—पूर्व जाप १०८ चावल मन्त्र घडा माहि (डाले) नां खिजे घटो-भ्रमति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं नमो आइरियाणम् मन्त्र्युं पश्चिम द्वार बंधय २ ।

ॐ नमो उवज्झायाण मन्त्र्युं उत्तर द्वार बंधय-बंधय ।

ॐ ह्रीं नमो लोए सव्व साहूण मन्त्र्युं अधोद्वार बंधय-बंधय ।

ॐ ह्रीं नमो अरिहताण मन्त्र्युं अग्रद्वार बंधय-बंधय ।

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाण मन्त्र्युं नैऋत्य द्वार बंधय-बंधय ।

ॐ ह्रीं नमो प्रायसियाण मन्त्र्युं पवन द्वार बंधय-बंधय ।

ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाण मन्त्र्युं ईशान द्वार बंधय २ ।

ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूण मन्त्र्युं उत्तर द्वार बंधय-बंधय आत्म विद्यां
रक्ष-रक्ष ।

ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं ह्रः क्षां क्षीं क्षः मन्त्र्युं पर विद्यां छिद छिद
देववत्त स्वाहा ।

क्षां क्षीं क्षीं क्ष्यः क्षीं क्षूं क्षीं क्षः क्षेत्र पालाय बन्दि मोक्षं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—बार १० जाप कीजें वन्दन छूटै । सही सब सिद्धि करे । सर्व सिद्धि करं मंत्रं सर्व दुःख हरं परं पठनीयं ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं पद्मावती सर्वजन वशंकरी सर्व विघ्न प्रहारणी सर्वजन गति मति, जिह्वा स्तंभिनी ।

ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं हः ह्रस्व्यूं, ह्रस्व्यूं गति मति जिह्वा स्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—७ बार व तीन वन्दन, केशर, कपूर, कस्तूरी, गोरोचन, पीस, गुटका त्रियते, तदुपरि जाप १०८ दीयते पुष्प दीयते, तिलक कृत्वा गम्यते, शाकिनी भूत राजादि वश्यं भवति ।

मन्त्र :—ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं क्रौं ह्रौं नमः ।

विधि :—नित्य जाप पीत मालाया पञ्चशत त्रियते । पीनवसनानि धारयते सर्वसिद्ध मनो भिलास पूर्णिता भवति सकल भूषणाचार्यं ग्वालेयां कृता लक्ष्मी लाभः स्यात् ।

कलश भामण मन्त्र विधि

मन्त्र :—ॐ नमो चक्रेश्वरी चक्रवर्तिन्यै वाम हस्तेन अक्षरं चालय २ घटं धामय धामय धी चक्रनाथ केरी आज्ञा ह्रीं आद्यर्तय स्वाहा ।

विधि :—गोमयेन चतुष्कोणं मण्डलं लिप्य गौ धूमादि अन्तोपरि कलशं स्थाप्य तन्मध्ये पुष्प १०८ मन्त्रेण मन्त्रित्वा कलशे निवेशयेत् । परं पुरुषं हस्ताख्ये अक्षतेन घटं भ्रमति तदा अशुभं स्वहस्ताख्ये मति घटं भ्रमति तदा कार्यं सिद्धिः । महत्तरं कार्यं विधिः कार्या राजादि विचारे व वर्षं मुमिक्षाए विचारेण रोगादि विचारे स्त्री पुत्रादि विचारेऽपि विचारणाय ॥ “चमत्कृते व्यापारे वस्तु विक्रय प्रयोग भूयं पत्रे लिखेद् यत्र” ।

अष्टगंधेन नरः शुचिः पुनः सुश्वेतं पुष्पेण मंत्रं जाप्यं शक्तोत्तरं ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं पद्मे पद्मासने श्री धरेणन्द्र प्रिय पद्मावती श्रियं मम कुरु कुरु दुरितानि हन २ सर्वं दुष्टानां मुख बंधय २ स्वाहा ।

इदं जप्त्वा वस्तु मध्ये यंत्रं क्षिपित्वा विक्रीयते । तत्क्षणायपि अन्य प्रकारः ॥१॥

रम्भापत्रे लिखेन्नाम । कर्पूरेण मयेन त्रि रात्रि मचनं कृत्वा केशरं समं ।

तद्बुले मस्तके लोप्यं । दारिद्र्यं तस्य नश्यति, देवि तस्य प्रसादेन धनवान् जायते नरः ॥ २ ॥

यंत्र च भक्षय विशं वारिद्रयं तस्य नश्यति ॥ ३ ॥

पुनः द्वितायुतं जपेन्मंत्रं होमयेत् पायसं कृतं, नश्यते तत्क्षणादेव वारिद्रयं
बुष्ट बुद्धिना ॥ ४ ॥

पद्मावती सिद्धि मन्त्र

महारजते ताम्रपत्रे कदली त्वचि व पुनः ।

अष्टगंधेन, दुग्धेन, श्वेत पुष्पं रक्त पूजनं ॥१॥

ताम्र पत्रे पयः क्षिप्त्वा यंत्र स्नानं समाचरेत् ।

आदौ च वर्तुलं लेख्यं, त्रिकोणकं षट् कोणकं ॥२॥

वर्तुल चं व पश्चाश्चतुद्वारेण शोभितं ।

मध्ये क्रों लिखेद्धीमान् । कोणे क्लीं सदा बुधः ॥३॥

त्रिकोणे प्रणवं कृत्वा तद्वाहये च फुट् उच्यते ।

चतुर्द्वारि लिखे श्री धरणेन्द्र पद्मावती नमः ॥४॥

क्रों कारेण वेष्टयेत् रेखां बन्धिमानं च बाहुभिः ।

एवमेव कृते यंत्रे । गोपीनाथ पुनेः पुनेः ॥५॥

पीताम्बर धरो नित्यं पीत गंधानु लेपनं ।

ध्यायेत् पद्मावती देवीं भक्ति मुक्ति वर प्रदां ॥६॥

प्रथमं क्रों बाहु क्षेत्रपाल संपूज्य यंत्र पूजनमाचरेत् । ततो जापः ।

मन्त्र :—ॐ क्रों क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं पद्मे पद्मासने नमः ॥ लक्ष मेकं जपेन्मंत्रं ।

होमयेत्पायसं घृतं ॥ तावत्पात्रे घृतं क्षीरं । अथवा द्रव्य विमिश्रितं
होमयेद्वर्तुले कुंडे । देवीनुवशाग भवेत् । दुग्धाहार यव भोज्यं निरा-
हारश्च आह्वयो । एवमेव जपेन्मंत्रं भूमिशायि नरः शुचिः । प्रत्यक्षो
देवीमा विश्य, वरं दत्ता भवेन्तदा । त्रिगुणं सप्त रात्रि च । जपं कृत्वा
प्रशांत धी । प्रथमं द्विसे देवीं । कन्यकां दशवर्षकीं ।

भैरवीं भीम रूपा च । सावधाने जितेन्द्रियः ॥

द्वितीय दिवसे शक्ति कन्यकां द्वादशाब्दिकां भैरवेण समायुक्तां भयं
दृष्ट्वा च रीरवं । तृतीये दिवसे मायां वरं ब्रूहि मम प्रभो एवमेव
प्रकारेण त्रिकालशो भवेन्नरः ।

मन्त्र :—ॐ नमो ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं त्वं चक्रेश्वरी चक्रधारिणी, शंख चक्र, गवा-
धारिणी मम स्वप्न दर्शनं कुरु २ स्वाहा ॥

विधि :—१०८ बार मौनेन शयनीय जपतः स्वप्ने आदेशः सत्यः ॥

मन्त्र :—ॐ अमुकं तापय २ शोषय २ भास्करो ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—आदित्य सम्मुखो भूत्वा, नामगृहित्वा, रात्रौ सहस्रं मेक जपेत् सप्ताहे म्रियते, रवौ
कर्त्तव्यं । घोड़ा वच स्त्रीणी दाए हाथ की चिटली अगुली प्रमाण तंतु दूध सूँ
घिसिरित्वंतर प्याइये पेट माहि रहे तो पुत्र होय, न रहे तो न होगा ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं नमो जिणाणं लोगुत्तमाणं लोगनहाणं लोगहियाणं, लोग
पाइवाणम्, लोग पज्जो अगराणं, मम शुभाशुभं दर्शय २ कर्ण
पिशाचिनी स्वाहा ।

जाप्य १०८ संस्कार के मौनेनशयनीयम स्वप्ने आदेशः ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अहं सखजीवानां मत्तायां सर्वेसिसत्तूणं अपराजिउं भवामि
स्वाहा ।

विधि :—श्वेत सरसप (सरसो) बार २१ मन्त्रिजे जल मध्ये क्षिप्यति तरति तदा जीवति,
ब्रूति तदा मरति । रोगी आयुर्जानम् ॥

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूँ वस्त्रांचल वृद्धि कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—बार १०८ सध्याएँ मन्त्रि जे पछे बडी (चादर) सिरहाने दीजे प्रभाते नापिये बड़े तो
शुभ घटे तो अशुभ ।

मन्त्र :—ॐ गजामनाय नमः ।

विधि :—जाप सहस्रं घृत मधु एक ठाकर का टवका १०८ होमिये । वस्तु तौल सिरहाने
दीजे । प्रभाते नापिये बड़े तो मदी, घटे तो तेज होय ।

मन्त्र :—ॐ नमो वज्र स्वामिने सर्वार्थं लब्धि सम्पन्नाय स्नानं, भोजनं, वस्त्रार्थः
लाभं देहि-देहि स्वाहा ॥

विधि :—कांकरा ७ बार २१ मन्त्रि क्षीर वृक्ष हेठ भू किये लाभ होय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं सूर्याय नमः ॥

विधि :—जल मन्त्रि नेत्र प्रक्षालिते नेत्र दूखता न रहे ।

मन्त्र :—ॐ विश्वावसु नाम गन्धर्व कन्या नामाधिपति सरुपा सलक्ष्मात देहि मे
नमस्तस्मै विश्वावसवे स्वाहा ॥

विधि :—मन्त्र मणि ७ अजुलि जल दीजे ए मन्त्र स्मरण १००० जाप कीजै नित्य १०८ कीजै,
१ मास अथवा ६ मास में कन्या प्राप्त होय ।

मन्त्र :—ॐ धूम-धूम महा धूँ धूँ स्वाहा ।

विधि :—वार १०८ राख मन्त्र नाखिये उंदरा (चूहे) जाय । (सत्य)

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रां ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रं ह्रः ॥

विधि :—सार बेर काकरा मंत्रि चार दिशिना खिये (डाले) टीडी जाय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं ह्रूं ह्रूं वद् वद् वागेश्वरी स्वाहा ।

विधि :—सरस्वती मंत्र वार २१ जपिये श्वेत पाटा लिखि घोल प्यावे वाचा स्फुटा भवति ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय महति महावीर्य पराक्रमाय सर्वसूल
रोग ध्याधि विनाशनाय काल दृष्टि विष ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्व-
कल्याणकर दुष्ट हृदय पाषाण जीवन रक्षा कारक दारिद्र्य विचंशक
अस्माकम् मनोवांछिकं (तं) भवतु स्वाहा ।

विधि :—इमा पार्श्वनाथाय सप्तादिका विद्या यक्ष कर्दमेन स्थाली लिखित्वा शुभा दिने जाती
पुष्प १२००० जपेत । त्रिकोण कुंडे जाप द्वादशशत समभूगल गुटिका १२००० सित-
धूत मिश्रित होयिये । तत्र प्रत्यक्षा भवति ॥ द्रव्य ददाति, बाधे दिन, प्रतदिन १०८
बार करिये सर्वकार्य सिद्धिकर हृषं ददाति ॥

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते (दो) वो सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीण महाण लब्धि मम
आणय २ पूरय २ ह्रीं भारकरी स्वाहा ।

विधि :—जाप १२००० चावल अखण्ड दिवानी की रात जपिये । रोज १०८ जपिये भोजन
अक्षीण लब्धि मन सतोय शरीरं सौम्य आलय मागत्य भवति ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते आदित्य रूपाय आगच्छ २ अमुकस्य अक्षिरोगं, अक्षि-
पीडा नाशय स्वाहा ।

विधि :—वार १४ आँख पर जपिये पीड़ा जाय ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते विश्व रूपाय कामाख्याय सर्वं चितितं प्रदाय मम लक्ष्मीं
प्राप्त कराय स्वाहा ।

विधि :— (इस मंत्र की विधि नहीं है) ।

मन्त्र :—ॐ नमो अर्हते भगवते प्रक्षोणाशेष—कलमषाय दिव्य—तेजो—मूर्तये
श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्वं विघ्न विनाशनाय सर्वं क्षामर डामर
विनाशनाय ॐ हूं ह्रीं लूं ह्रौं हः अ सि आ उ सा देवदत्तस्य सर्वं
शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—अनेन मंत्रेण वार ३ व ७ गंधोदक पट्टि शिरसि निक्षिपेत् ।

मन्त्र :—ॐ उच्चिष्ट चण्डालिनो सुमुखो देवः महा विशाखिनो हूं ठः ठः
स्वाहा ।

विधि —वार १०८ दिन पहले जीमने बैठता ग्रास १ वार ३ जप धरती मेलना पानी च्लु ३
धरती मेलना दूजे दिन ग्रास ३ जीमना वोज भूरे मुह वार १०८ जप पानी च्लु ३
मंत्र पठि गोता । फिर भोजन करे दिन ६ इस प्रकार कर पीछे से पाखाने बैठता,
वार १०८ जा करना । पीछे दिन ६ मशान ऊपर बैठ जप करना प्रत्यक्ष भवति ।

मन्त्र :—ॐ क्लृप्त्यै, ॐ क्लृप्त्यै, ॐ क्लृप्त्यै, ॐ क्लृप्त्यै, ॐ क्लृप्त्यै,
ॐ ह् क्लृप्त्यै, ॐ क्लृप्त्यै, ॐ क्लृप्त्यै, ॐ क्लृप्त्यै, ॐ क्लृप्त्यै ।

विधि —ये मंत्र अष्टगंधे विख गूजा पूर्वक मस्तक पर रखे, लाभ हो जाये, जाप करे विधि
पूर्वक लक्ष्मी की प्राप्ति होय ।

मन्त्र :—ॐ नमो आदि योगिनो परम माया महादेवी शत्रु टालनी, वैश्य मारिनी
मन बांछित पूरणी, धन आन वृद्धि आन जस सौभाग्य आन आनं तो
आदि भैरवी तेरी आज्ञा न फुरे । गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति फुरो ।
ईश्वरो मन्त्र वाचा ।

विधि :—मंत्र जब निरंतर १०८ वार विधिपूर्वक लक्ष्मी की प्राप्ति होय । सर्वकार्य सिद्ध
होय । वार २१-१०८ चोखा मंत्रि जिस वस्तु में राखे अक्षय होय ।

मन्त्र :—ॐ नमो गोमय स्वामी भगवत ऋद्धि समो अवलीण समो आण २
मरि २ पुरि २ कुरु २ ठः ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—मंत्र जपे प्रातः काल शुद्ध होयकर लक्ष्मी प्राप्त होय । बार २१-१०८ सुपारी, चावल, मंत्र जिस वस्तु में चालीं सो अक्षय होय । ये मंत्र पढ दीप, घूप खेव भोजन वस्तु भांडार में अक्षय होय । उज्ज्वल वस्त्र के शुद्ध आदमी भीतर जायें ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः ॐ नमः भगवतः गोमय मस्तसिद्धस्तसिद्धस्त, अक्लीणस्त भास्वरी ह्रीं नमः स्वाहा ।

विधि :—मंत्र नित्य प्रातः काले शुचिर्भूत्वा दीप-घूप विधानेन जपे लाभ होय । लक्ष्मी प्राप्त होय ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते गौतम स्वामिने सर्व लब्धि सम्पन्नाय मम अभीष्ट सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—बार १०८ प्रतिदिन जपिये । जय होय । कार्य सिद्धि होय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं ह्रः ज्वां ज्वीं ज्वालामालिनी चोर कंठं ग्रहण २ स्वाहा ।

विधि :—शनि रात्रि चौखा (चावल) धोय, बार २१ मंत्र कोरी हांडी मांही धालिये (रवि प्रभाते गुहली देय बार २१ मंत्र चावल खवावे चोर के मुख लोह पडें ।

मन्त्र :—ॐ चक्रेश्वरी चक्रवेगेन कटोरकं भ्रामय २ चोरं गृह्य २ स्वाहा ।

विधि :—कटोरकं भ्रमना पूर्वं मन्त्र चोरमेव गृह्णाति कटोरा चलावन भ्रमना पूर्वं मन्त्र चोरमेव गृह्णाति कटोरा चलावन मन्त्रम् ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं हूं क्लीं असि आ उ सा धुलु २ कुलु २ सुलु २ अक्षयं मे कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—पंच परमेष्ठी मन्त्रोयं त्रिभुवन स्वामिनी विद्या । अनेन लाभो भवति जप १०८ बार नित्य करे । गुरु भ्राम्नायेन सिद्धम् ।

काक शकुन विचार

जिस समय अपने मकान की हद में काक बोलै उसी समय अपने पैरों से अपनी परछाईं नाप ले जितने पैर हों उसमें ७ का भाग दे । शेषफल का शकुन इस प्रकार है । पहले पगले अमृत फल लावें, द्वितीय पगले मित्र घर आवें, तीसरे पगले मित्र हान, चौथे पगले श्री कष्ट जान । पांचवे पगले (जीये न कोय) सुख सम्पत्ति लावें, छठवे पगले निशान व आवें, सातवे पगले जीया न कोय । काक बचन नहीं शूंठा होय ।

जीवन मरण विचार

आत्मदूत तथा रोगी त्रिगुण्यं नामकाक्षरं सप्त हृते समे मृत्यु विषमे जीवति ध्रुवं ॥

इति ॥ १ ॥

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं हूं ह्रीं ह्रः ॐ ह्रीं नमः कृष्ण वा ससे क्ष्मी शत सहस्र
लक्ष कोटि सिंह बाहने फ्रं सहस्र वदने ह्रीं महाबले ह्रीं अपराजिते ह्रीं
प्रत्यंगिरे ह्यौ पर संन्य निर्णाशिनी ह्रीं पर कार्यं कर्म विध्वंशनीह्यः पर
मन्त्रोच्छेदिनि यः सर्वं शत्रूच्चाटनीह्यौ सर्वभूत वमनि ठः सर्वदेवान्
बंधय बंधय हुं फट् सर्वं विघ्नान् छेदय २ यः सर्वानर्थान् निकृत्य २
क्षः सर्वं दुष्टान् भक्षय २ ह्रीं ज्वाला जिह्वे ह्रौ कराल वक्त्रे ह्यः पर
यंत्रान् स्फोटय २ ह्रीं वज्र भृंखलान् श्रोटय २ अमुर मुद्रां द्रावय २
रौद्र मूर्ते ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे मम् मनश्चिचति तं मंत्रार्थं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—अस्य स्मरणात् सर्वसिद्धिः ।

मन्त्र :—ॐ नमो महेश्वराय उमापतये सर्वं सिद्धाय नमो रे वाचंनाय यक्ष
सेनाधिपते इदं कार्यं निवेदय तद्यथा कहि २ ठः २ ।

विधि :—एन मंत्रं वार १०८ क्षेत्रपालस्याग्रे पूजा पूर्वं जपेत् । ततो वार २१ गुग्गुलेनाभि-
मन्थ्य आत्मान धूपयित्वा सुष्यते स्वपने शुभाशुभं कथयति ।

मन्त्र :—ॐ विधुज्जिहे ज्वालामुखी ज्वालिनी ज्वल २ प्रज्वल २ धग २ धूमां-
धकारिकी देवी पुरक्षोभं कुरु कुरु मम मनश्चितितं मंत्रार्थं कुरु कुरु
स्वाहा ।

विधि :—अमृं मंत्रं कर्पूर चन्दनादिभिः स्थालादौ लिखित्वा श्वेत गुप्पाक्षनादि मोक्ष पूर्वं
सहस्र जाप्येन प्रथम साध्य पञ्चाह्नित्य स्मर्यमाणासिद्धिः ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पिशाच रुद्राय कुरु २ यः भंज २ हर २ वह २ पच २
गृह्ण २ भाचिरं कुरु रुद्रो आज्ञां पयति स्वाहा ॥

विधि :—अनेन मंत्रेण वार १०८ गुग्गुल, हीग (हिगुल) सर्षप सरकं चुलिका एकत्र मेनयित्वा-
गर्भन्थ्य धूपोदेयः तत्क्षणं शाकिन्यादि दुष्ट व्यंतरादि गृहीत पात्र सद्यो विमुच्यते
स्वस्य भवति ।

मन्त्र :—ॐ इति मिति मस्मं करि स्वाहा ।

विधि :—अनेन बार १०८ जलमभिमन्त्र्य पाय्यते उदर व्यधोपशान्भ्यति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं सर्वे ग्रहाः सोम सूर्यागारक बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनिश्चर, राहु, केतु, सहिता सानुग्रहा मे भवन्तु । ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा स्वाहा ।

विधि :—अस्यां स्मृतायां प्रतिकूला अपि गृहा अनुकूला भवन्ति ।

मन्त्र :—ॐ रक्ते रक्तावते हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—कुमारी मूलेण कंटकं कृत्वा रक्त कण बीर पुष्प १०८ जाप्य दत्त्वा कटीबंधयेत् रक्त प्रवाहं नाशयति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं धनधान्य करि महाविष्टो अवतर २ मम गृहे धन धान्यं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—बार ५०० अक्षताभिमन्त्र्य त्रयाणके क्षिप्यते त्रयो वित्रयो लाभश्च भवति ।

मन्त्र :—ॐ शुक्ले महाशुक्ले ह्रीं श्रीं श्रीं अवतर २ स्वाहा ।

विधि व फल :—१००८ नाप पूर्व १०८ गुणिते स्वप्ने शुभाशुभं कथयति ।

मन्त्र :—ॐ नमोर्हते भगवते बहुरुपिणी जम्भे मोहिनी स्तंभे स्तंभिनी कुक्कुट उरग वाहिनी मुकुट कुण्डल केयूर हारा मरण भूषिते चण्डोपशर्बनाथ, यक्षी लक्ष्मी पद्मावती त्रिनेत्रेपाशांकुश फलामय वरद हस्ते मम अभीष्ट सिद्धि कुरु २ मम चितित कार्यं कुरु २ ममोषध सिद्धि कुरु २ वषट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का त्रियोग शुद्ध कर श्रद्धापूर्वक जपने से सर्वकार्य सिद्ध होते हैं । सर्व औषधियों की सिद्धि होती है । इस मन्त्र की सिद्धि पुण्यपादाचार्य को थी, और इससे ही प्रभाव से देवी जी श्रीपद्मावती माताजी ने पुण्य पादाचार्य के पाव के तलबों में दिव्य औषधियों का लेप कर दिया था, उन औषधियों के प्रभाव से विवेक क्षेत्र में उन आचार्य का आकाश मार्ग से गमन हुआ था ।

पुत्रोत्पत्ति के लिये मंत्र

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अहं असि आउसा नमः ।

विधि :—सूर्योदय से १० मिनट पूर्व उत्तर दिशा में, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, उध्वं, अधो दिशाओं में क्रमशः २१-२१ बार जप करे । पुनः १० माला फेंरे, मध्याह्न में १० माला, सांय काल १० माला जपे । पुनः स्वप्न आवेगा, तब निम्न प्रकार की दवाई देवे, मयूरपंख की चाद २, शिवलिंगी का बीज १ ग्राम, दोनों को बारीक खरल करे, ३ ग्राम गुड में मिलाकर रजो धर्म की शुद्धि होने पर खिलावे, पहले या दूसरे माह में ही कार्य सिद्ध हो जायेगा ।

— — — —

। अथ बृहद् शांतिमंत्रः प्रारभ्यते ।

इस शांति मंत्र को नियमपूर्वक पढ़ने से अथवा शांति धारा करने से सर्व प्रकार के रोग शोक व्यंतरादिक बाधाये एवं सर्व कार्य सिद्ध करने वाला और सर्व उपद्रवों को शांत करने वाला है अतः इसे नित्य ही स्मरण करना चाहिये ।

ॐ ह्री श्री क्लीं ऐं अहं वं मं हं सं तं पं वं रं मं रं हं रं सं रं तं रं पं रं झं रं
झ्वीं रं क्ष्वी रं द्रां रं द्री रं द्रावय रं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ॐ ह्रीं श्रीं [+ देवदत्त नामधेयस्य] पापं
खण्ड रं हन रं दह रं पच रं पाचय रं कुट रं शीघ्र रं अहं इवी क्ष्वी हं सः ऋ व ऋः पः हः क्षां
क्षी क्षूं क्षे क्षै क्षीं क्षीं क्षाः क्षीं हा ह्रीं ह्रूँ ह्रँ ह्रौं द्रां द्री द्रावय रं नमोऽर्हते भगवते
श्रीमते ठ ठ ठ ठ [* देवदत्त नामधेयस्य] श्रीरस्तु । सिद्धिरस्तु । वृद्धिरस्तु । तुष्टि-रस्तु । पुष्टि-
रस्तु । शान्ति रस्तु । कान्तिरस्तु । कल्याणमस्तु स्वाहा ॥

ॐ निखलभुवनभवनमंगलीभूतजिनपतिसवनसमयसम्प्राप्ताः । वरममिनवकर्पूरकाला-
गुरुकुं कुमहरिचदनाद्यनेकमुगन्धिवन्धुरगन्ध द्रव्यसम्भारसम्बन्धवन्धुरमखिलदिगन्तरा- लव्याप्त-
सौरभातिशयसमाकृष्टसमदसामजकपोलतलविगलित - मदमुदितमधुरक- निकराहृत्स्परभेद-
पवित्रतरगात्र-स्पर्शनमात्रपवित्रिभूत - भगवदिदंगन्धोदकधाराः वर्षमशेष हर्ष निबन्धनं
भवतु [देवदत्त नामधेयस्य] शान्तिं करोतु । कान्तिमावि० करोतु । कल्याण
प्रादुः करोतु । सौभाग्यं सन्तनोतु । आरोग्यं भातनोतु । सम्पदं सम्पादयतु । विपद-

मवसादयतु । यशोविकासयतु । मनः प्रसादयतु । आयुर्दाधयतु । श्रियं श्लाघयतु । शुद्धिं विशुद्धयतु । बुद्धिं विवर्द्धयतु । श्रेयः पुष्पातु । प्रत्यवायं मृष्णातु । अनभिमतं निवारयतु । मनोरथं परिपूरयतु । परमोत्सवकारणमिदं । परमभंगलमिदं । परमपावनमिदं । स्वस्थयतु नः । स्वस्त्यस्तु वः । इवी क्षवी ह सः असिआउसा स्वाहा ॥

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते त्रैलोक्यनाथाय धातिकर्मविनाशनाय अष्टमहाप्रातिहार्य-
सहिताय चतुस्त्रिंशदतिशयसमेताय । अनन्तदर्शनज्ञानवीर्यमुख्यात्मकाय । अष्टादशदोषरहिताय । पञ्चमहाकल्याणसम्पूर्णाय । नवकेवललब्धिसमन्विताय दशविशेषणसंयुक्ताय । देवाधिदेवाय । धर्मचक्राधीश्वराय । धर्मोपदेशमकराय । चमरवरोचनाच्युतेन्द्र प्रभृतीन्द्रशतेन मेरुगिरिशिखरशे-
खरीभूतपाण्डुकशिलातलेन गन्धोदकपरिपूरितानेक — विचित्रमणिमय — मंगलकलशैर-
भिषिक्त—मिदानीमहं त्रैलोक्येश्वरमहं परमेष्ठिनमभिषेचयामि ह भू इवी क्षवी ह सः द्रा द्री ऐं
अहं ह्रीं क्लीं ह्रूं द्रा द्री द्रावय २ स्वाहा ॥

(यहाँ जिस २ भगवान् के नाम के साथ

जो जो द्रव्य का नाम है उन्हें चढ़ाता जावे)

ॐ ह्रीं शीतोदकप्रदानेन शीतलो भगवान् प्रसीदतु वः । शीता आप पान्तु । शिवमाङ्ग-
ल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥१॥ गन्धोदकप्रदानेन अभिनन्दनो भगवान् प्रसीदतु । गन्धाः पान्तु ।
शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥२॥ अक्षतोदक प्रदानेन अननो भगवान् प्रसीदतु अक्षतः
पान्तु । शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥३॥ पुष्पोदकप्रदानेन पुष्पदन्तो भगवान् प्रसीदतु ।
पुष्पाणि पान्तु । शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥४॥ नैवेद्यप्रदानेन नेमिनाथो भगवान् प्रसीदतु ।
पौष्पपिष्टः पान्तु । शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥५॥ दीपप्रदानेन चन्द्रप्रभो भगवान्
प्रसीदतु । कर्पूरमाणिक्यदीपाः पान्तु । शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥६॥ धूपप्रदानेन धर्म-
नाथो भगवान् प्रसीदतु । गुग्गुलादिदशाङ्गधूपाः पान्तु । शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥७॥
फलप्रदानेन पार्श्वनाथो भगवान् प्रसीदतु । क्रमुक - नारिंग—प्रभृतिफलानि पान्तु । शिवमाङ्ग-
ल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥८॥ अर्हन्तः पान्तु वः । सद्धर्मश्रीबलायुषारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु वः ॥
सिद्धा पान्तु वः । हृदयनिर्वाणं प्रयच्छन्तु वः ॥ आचार्याः पान्तु वः । शीतलसौगन्ध्यमस्तु वः ॥
उपाध्यायाः पान्तु वः । सौमनस्यं चास्तु वः ॥ सर्वसाधवः पान्तु वः । अन्नदानतपोवीर्यं विज्ञान-
मस्तु वः ॥ (यहाँ २४ बार पुष्प चढ़ावे)

ॐ वृषभस्वामिन श्री पादपद्मप्रसादात् अष्टविधकर्म विनाशनं चास्तु वः ॥१॥ श्रीमन्-
जितस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादज्यशक्तिर्भवतु वः ॥२॥ शम्भस्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादा-

दनेकगुणगणाश्चास्तु वः ॥३॥ अमिनन्दनस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादभिमतफलं प्रयच्छन्तु वः ॥४॥ सुमतिस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादभूतं पवित्रं प्रयच्छन्तु वः ॥५॥ पद्मप्रभस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादाद्यो प्रयच्छन्तु वः ॥६॥ सुपाश्वर्क स्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् कर्मक्षयश्चास्तु वः ॥७॥ श्रीचंद्रप्रभस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादाश्चन्द्रार्कैतेजोऽस्तु वः ॥८॥ पुष्पदत्तस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् पुष्प सायकातिशयोऽस्तु वः ॥९॥ शीतलस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादशुभ-
कर्ममलप्रक्षालनमस्तु वः ॥१०॥ श्रेयांसजितस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् श्रेयस्करोऽस्तु वः ॥११॥ वामुपुज्यस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादाद्भक्तत्रयावासकरोऽस्तु वः ॥१२॥ विमलस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् सद्धर्मवृद्धिर्वै माङ्गल्य चास्तु वः ॥१३॥ अनन्तनाथस्वामिनः श्रीपादपद्म-
प्रसादादनेकधनधान्याभिवृद्धिरक्षणमस्तु वः ॥१४॥ धर्मनाथस्वामिनः श्रीपादपद्म-
प्रसादात् शर्मप्रचयोऽस्तु वः ॥१५॥ श्रीमदहंत्परमेश्वरसर्वज्ञपरमेष्ठिरान्तिनाथ स्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् शान्तिकरोऽस्तु वः ॥१६॥ कुन्धुनाथस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् त्रिभि-
वृद्धिकरोऽस्तु वः ॥१७॥ अरजिनः स्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात्परमकल्याणपरम्पराऽस्तु वः ॥१८॥ मल्लिनाथस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादाच्छल्यविमोचनकरोऽस्तु वः ॥१९॥ मुनिसुब्रत-
स्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात्सम्यग्दर्शनं चास्तु वः ॥२०॥ नमिनाथस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादा-
त्सम्यग्ज्ञानं चास्तु वः ॥२१॥ अरिष्टनेमिस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् अक्षयं चारित्र्यं ददातु वः ॥२२॥ श्रीमत्पार्श्व भट्टारकस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात्सर्वविघ्नविनाशनमस्तु वः ॥२३॥ श्रीवर्धमानस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात्सम्यग्दर्शनाद्यष्टगुणविशिष्टं चास्तु वः ॥२४॥

श्रीमद्भगवदहंत्सर्वज्ञ परमेष्ठी-परम-पवित्र-शान्तिभट्टारक स्वामिनः श्रीपादपद्म-
प्रसादात्सद्धर्मं श्रीबलायुरोगमैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु । वृषभादयो महति महावीर वर्धमान पर्यन्त
परम तीर्थं करदेवाश्चतुर्विंशतिर्हन्तो भगवन्त सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः सन्निभन्तमस्का वीतरागद्वेष-
मोहाभिलोकनाथाः सिलोकमहिताः स्त्रिलोकप्रद्योतनकरा जातिजराभरणविप्रमुक्ता सकल भव्य-
जनसमूहकमलवनसम्योघनकराः । देवाधिदेवाः । अनेकगुणगणशतसहस्रालङ्कृतदिग्देहधरा ।
पञ्चमहाकल्याणाष्टमहाप्रातिहार्यचतुस्त्रिंशदतिशयविशेषसम्प्राप्ताः । उन्मच्चक्रधरवलदेववासुदेव-
प्रभृतिदिव्यसमानभव्यवर पुण्डरीकपरमपुरुषमुकुटतटनिविडनिवद्धमणिगणकर निकरवारिधारा-
भिषिक्तचारुवरणकमनयुगलाः । स्वशिष्य पर शिष्यवर्गा प्रसीदन्तु वः ॥ परममाङ्गल्यनामधेयाः ।
सद्धर्मकार्योप्विहामुत्र च सिद्धि सिद्धि प्रयच्छन्तु वः ॥

ॐ नृपातिशतसहस्रालङ्कृतसार्वभौमराजाधिराज परमेश्वरवलदेववासुदेवमण्डलीक
महामण्डलीकमहामात्यसेनानाथराज्येष्टिपुरोहिताधीशकराञ्जलिनमितकर कुड्मलमुकुलालङ्क

कृतपादपद्याः । कुलिशनालरजत भृणालमन्दारकणिकारातिकुलगिरिशिखरशेखरगगन मन्दाकि-
नीमहाह्लादनदनदांशतसहस्रदलकमलवासिन्त्यादि सर्वाभरणभूषिताङ्गः गसकलसुन्दरीवृन्दवन्दित-
चारुचरणकमलयुगला ॥ आमौषधयः । क्वेलौषधयः जल्लौषधाय विप्रुषौषधयः । सर्वौषधयश्च
वः प्रीयन्ताम् २ ॥ मतिस्मृति संज्ञाचिन्ताभिनिबोधज्ञानिनश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं नमो जिणाणं ह्रा ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रं अति आउसा अग्रति चक्रं फट्
विचक्राय ह्रीं ओ स्वाहा ॐ ह्रीं अर्हं नमो ओहि जिणाणं सिरो रोग विनाशनं कुरु २ ॐ ह्रीं
अर्हं नमो परमोहि जिणाणं नासिका रोग विनाशनं कुरु २ ॐ ह्रीं अर्हं नमो सव्वोहि जिणाणं
अक्षिरोग विनाशनं कुरु २ ॐ ह्रीं अर्हं नमो अणंतोहि जिणाणं कर्ण रोग विनाशनं कुरु २
ॐ ह्रीं अर्हं नमो कुट्टं बुद्धीणं ममात्मनि विवेकज्ञानं कुरु २ शुल उदर गड गुमड विनाशनं
कुरु २ ॐ ह्रीं अर्हं नमो बीज बुद्धीणं मम सर्वं ज्ञानं कुरु २ श्वास हेडकी रोग विनाशनं कुरु
२ ॐ ह्रीं अर्हं नमो पादाङ्गु सारीणं परस्पर विरोध विनाशनं कुरु २ ॐ ह्रीं अर्हं नमो
संभिन्न सौदराणं श्वास कास रोग विनाशनं कुरु २ ॐ ह्रीं अर्हं नमो सय बुद्धिणं कवित्वं पांडित्यं
च कुरु २ ॐ ह्रीं अर्हं नमो पत्तोय बुद्धिणं प्रतिवर्दी विद्या विनाशनं कुरु २ ॐ ह्रीं अर्हं नमो बोहिय
बुद्धिणं अन्य गृहीत श्रुत ज्ञानं कुरु २ ॐ ह्रीं अर्हं नमो अक्कुमदीणं बहु श्रुत ज्ञानं कुरु २ ॐ
ह्रीं अर्हं नमो विउल मदीरा सर्वं शान्तिं कुरु २ ॐ ह्रीं अर्हं नमो दश पुब्बीणं सर्वं वेदिनो
भवतु ॐ ह्रीं अर्हं नमो चउ दस पुब्बीणं त्वं समय परसमय वेदिनो भवतु ॐ ह्रीं अर्हं नमो
अट्ठाङ्ग महाणिमित्त कुसलाणं जीवित मरणादि ज्ञानं कुरु २ ॐ ह्रीं नमो विषणं यट्ठि पत्ताणं
कामित वस्तु प्राप्तिं भवतु ॐ ह्रीं अर्हं नमो विज्जा हाराण उपदेश प्रदेश मात्र ज्ञानं कुरु २
ॐ ह्रीं अर्हं नमो चारणाणनष्ट पदार्थं चित्ता ज्ञानं कुरु २ ॐ ह्रीं अर्हं नमो पण्ण समणारं
आयुष्यावसानं ज्ञानं कुरु २ ॐ ह्रीं अर्हं नमो आगासगामीणं प्रतग्धि गमनं कुरु २ ॐ ह्रीं
अर्हं नमो ग्रामीविसाणं विट्ठे प प्रति हनं भवतु ॐ ह्रीं अर्हं नमो दिट्ठि विसाणं स्थावर जंगम
कृत विघ्न विनाशनं कुरु २ ॐ ह्रीं अर्हं नमो उगा तवाणं वचस्तम्भणं कुरु २ ॐ ह्रीं अर्हं
नमो दित्त तवाणं सेना स्तम्भनं कुरु २ ॐ ह्रीं अर्हं नमो तत्तवाणं अग्नि स्तम्भनं कुरु २ ॐ
ह्रीं अर्हं नमो महा तवाणं अलस्तम्भनं कुरु २ ॐ ह्रीं अर्हं नमो घोर तवाणं विपरोगादि
विनाशनं कुरु २ ॐ ह्रीं अर्हं नमो घोर गुणाणं दुष्ट मृगादि भय विनाशनं कुरु २ ॐ ह्रीं अर्हं
नमो घोर गुण परक्कमाणं लता गर्भादि भय विनाशनं कुरु २ ॐ ह्रीं अर्हं नमो घोर गुण
वम्भ चारीणं भूतप्रेतादिभय विनाशनं भवतु ॐ ह्रीं अर्हं नमो विपो सहि पत्ताणं जन्मान्तर
देव वैर विनाशनं कुरु २ ॐ ह्रीं अर्हं नमो खिल्लो सहिपत्ताणं सर्वाप मृत्यु विनाशनं कुरु २

ॐ ह्रीं अहं' णमो जल्लोसहिपत्ताणं अपस्मार रोग विनाशनं कुरु २ ॐ ह्रीं अहं' णमो विष्णोसहि पत्ताणं गजमारि विनाशनं कुरु २ ॐ ह्रीं अहं' णमो सव्वोसहि पत्ताणं मनुष्यं मरोप सारं विनाशनं कुरु २ ॐ ह्रीं अहं' णमो मण वल्लीण गो अश्व मारि विनाशनं कुरु २ ॐ ह्रीं अहं' णमो वच वल्लीणं अजमारि विनाशनं कुरु २ ॐ ह्रीं अहं' णमो काय वल्लीणं महिष गोमारि विनाशनं कुरु २ ॐ ह्रीं अहं' णमो खोर सवीण सर्प भय विनाशनं कुरु २ ॐ ह्रीं अहं' णमो सप्पि सवीणं युद्ध भय विध्वंसकं कुरु २ ॐ ह्रीं अहं' णमो अक्खीणं महण साण कुष्ट गंड मालादि विनाशनं कुरु २ ॐ ह्रीं अहं' णमो महुर सवीण मम् सर्वं सोख्यं कुरु २ ॐ ह्रीं अहं' णमो असीय सवीण मम् सर्वं राज भय विनाशनं कुरु २ ॐ ह्रीं अहं' णमो वड्डमाणं बंधन विमोचनं कुरु २ ॐ ह्रीं अहं' णमो वड्ड माणाणं अस्स शस्त्रादि शक्ति निरोधनं कुरु २ ॐ ह्रीं अहं' णमो सव्व साहणं सिद्धिं कुरु २॥

कोष्ठबुद्धिबीजबुद्धिपदानुसारिबुद्धिसम्भिन्नश्रोत्रश्रवणाश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥
जलचारणजङ्घाचारणतनुचारणभूमिचारणश्रेणिचारणचतुरङ्गुलचारणआकाशचारणाश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ मनोबलिवचोबलिकायबलिनश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ उग्रतपोदीप्त-
तपोमहान्तपोधोरतपोऽनुतपोमहोद्यतपश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ मतिश्रुतावधिमतःपर्यय केवलज्ञानितश्च वः प्रीयन्ताम् ॥ यमवरुणकुबेरवासवाश्च वः प्रीयन्ताम् ॥
अनन्तवासुकीतक्षककर्कोटकपद्ममहापद्मशङ्खपालकुलिशजयविजयादिमहोरगाश्च वः प्रीयन्ताम् ॥ इन्द्राग्निमर्त्यं त्वरुणवायुकुबेरईशानधरणेन्द्रसोमाश्चेतिदशदिक्पालकाश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ मुरमुरोरगेन्द्रचमरचारणमिद्धविद्याधरकिन्नर किम्पुरुषगरुडगन्धर्वयक्ष-
राक्षसभूतपिशाचाश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ बुधशुक्रबृहस्पत्यर्केन्दुशनैश्वराङ्गारकरा-
हुकेतुतारकादिमहाज्योतिष्कदेवाश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ चमरवैरोचनधरणानन्दभूतानन्द वेणुदेव वेणुधारिपूर्णवशिष्ठ जलकान्तजल - प्रभुघोषमहाघोषहरिपेणहरिकान्तप्रमितगतज-
मितवाहनवैलाञ्जनप्रभञ्जन अग्निशिविअग्निवाहनाश्चेति विंशतिभवेन्द्राश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ गीतरति गीतकान्तसत्पुरुषमहापुरुषमुरूपप्रतिघोषपूर्णभद्रमणिभद्र पुष्प-
चुलमहाचूलभ्रीममहाभीमकालमहाकालाश्चेति षोडशव्यन्तरेन्द्राश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ नाभिराजजितशत्रुद्वंद्वराजस्वयं नरमेघराजधरणराजसुप्रतिष्ठमहासेनसुग्रीवदृढरथविष्णुराजवसु—
पूज्यकृतवर्मसिंहसेनभानुराजविश्वसेनसुदर्शनकुम्भराजसुमित्राविजयमहाराजसमृद्धविजयविश्वसेन सिद्धार्थाश्चेतिजिनजनकाश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ मरूदेदीविजयासुषेणासिद्धार्थामङ्गला-
सुसीमापृथ्वीलक्ष्मणाजयराामनुन्दाविपुलानन्दाजयावतीआर्यव्यामालक्ष्मीमतिमुप्रभाऐरादेवी—
श्रीकांतामित्रसेनाप्रभावती सोमार्वापिलाशिवदेवीब्राह्मी प्रियकारिण्यश्चेति जिनमातृकाश्च

वः प्रीयन्ताम् २ ॥ गोमुखमहायक्षत्रिमुखक्षेत्रतुम्बकुसुमवरनन्दविजयअजितब्रह्म
ईश्वरकुमारषण्मुख पातालकिन्नरकिम्पुकुण्डगङ्गवर्धमहेन्द्रकुबेरवरुणविद्युत्प्रभसर्वाण्डधरणेन्द्रमा-
तङ्गनामश्चेतिचतुर्विंशतियक्षाश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ चक्रेश्वरीरोहिणीप्रज्ञप्तिवज्रशृङ्खला-
पुरुषदत्तामनोवेगाकालीज्वालामालिनीमहाकालीमानवीगौरीगान्धारीवीरोटीअनन्तमतिमानसी-
महामानसोजयाविजयाप्रपराजिताबहुरूपिणीचामुण्डीकुष्माण्डोपदमावतीसिद्धायिन्यश्चेति चतु-
विंशतिजिनशासनदेवताश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ कुलगिरिशिखरशेखरीभूतमहाहृदादिस-
रोत्तरमध्यस्थितसहस्रदलकमलवासिन्योमानिन्य सकलसुन्दरीवृन्द वन्दितपादकमलाश्च
देव्या व प्रीयन्ताम् २ ॥ यक्षवैश्वनरराक्षसनवृत्तपद्मअसुर सुकुमारपितृविश्वमालिनी-
चमरवैरोचनमहाविद्यमारविश्वेश्वरपिण्डासनाश्चेति पञ्चदशतिथिदेवताश्च व प्रीयन्ताम्
२ ॥ हिट्टिमहिट्टिम हिट्टिममज्जम हिट्टिमोपरिम मज्जमहिट्टिम मज्जम मज्जम मज्जम
मोपरिम उपरिमहिट्टिम उपरिममज्जम उपरिमोपरिमाश्चेति त्रयश्रेयःवासिनोऽह्मि-
न्द्रदेवाश्च व प्रीयन्ताम् २ ॥ अर्च्यार्च्यमालिनीवैरोचनसोमसोमकाङ्क्षा स्फटिकादित्यादि
नवानुदिशवासिनश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ विजयवैजयन्तजयन्तअपराजितसर्वायंसिद्धिना-
मधेयपञ्चानुत्तरविमानविकल्पानेकविधिगुणसम्पूर्णानुष्टुपास्युक्ताः सकलसिद्धिसमूहाश्च व
प्रीयन्ताम् २ ॥ सर्वकालमपि [+ देवदत्त नामधेयस्य] सम्पत्तिरस्तु । सिद्धिरस्तु ।
वृद्धिरस्तु । तुष्टिरस्तु । पुष्टिरस्तु । शान्तिरस्तु । कान्तिरस्तु । कल्याणमस्तु ।
सम्पदस्तु । मनःसमाधिरस्तु । श्रेयोऽभिष्टुद्धिरस्तु । शाम्यन्तु घोराणि । शाम्यन्तु
पापानि । पुण्यं वर्धताम् । धर्मो वर्धताम् । आयुर्वर्धताम् । श्रीवर्धताम् । कुल गोत्र चाभिवर्ध-
ताम् । स्वस्ति भद्रं चास्तु व । ततो भूयो भूयःश्रेयसे ॥ ॐ ह्रीं इवीं क्षवीं हं स स्वस्त्यस्तु वः ।
स्वस्त्यस्तु मे स्वाहा । ॐ पुण्याह २ प्रीयन्ताम् २ । भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञः सर्वदर्शिनः सकलवीर्या
सकलसुखान्निलोकप्रद्योतनकरा जातिजरामरण विप्रमुक्ताः सर्वविदश्च ॐ श्रीह्रीं-धृतिकीर्तिबुद्धि
लक्ष्म्यश्च व प्रीयन्ताम् २ ॥ ॐ वृष-भादिवर्षमानान्ताः शान्तिकरा सकलकर्मरि-
पुकान्तार-दुर्गविपमेषु रक्षन्तु मे जिनेन्द्राः । आदित्यसोमाङ्गारक-बुधबृहस्पतिशुक्रशनिश्चर
राहु केतुनामनवग्रहाश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ तिथिकरण नक्षत्रवार मुहूर्तलग्नदेवाश्च द्रह्मयज्ञ
ग्रामनगरधिदेवताश्च ते सर्वे गुरुभक्ता अक्षीपकोशकोष्ठगारा भवेयुर्दानतपोवीर्यधर्मानुष्ठानादि
नित्यमेवास्तु । मातृपितृभ्रातृपुत्रपौत्रकलत्र गुरुमुहूर्तवज्रनसम्बधि बन्धुवर्गसहितस्यास्य
यजमानस्य [+ देवदत्त नाम धेयस्य] धनद्रान्द्रैश्वर्यंस्तु तिलयशःकीर्तिबुद्धिवर्धनं भवतु सामोद-
प्रमोदो भवतु । शान्तिर्भवतु कान्तिर्भवतु । तुष्टिर्भवतु । पुष्टिर्भवतु । सिद्धिर्भवतु । वृद्धिर्भवतु ।
अविघ्नमस्तु । आरोग्यमस्तु । आयुष्यमस्तु । सुभक्त्यस्तु । कर्मसिद्धिरस्तु । शास्त्रसमृद्धिरस्तु

इष्टसंपदस्तु । धरिष्टनिरसनमस्तु । धनधान्यसमृद्धिरस्तु । काममाङ्गल्योत्सवाः सन्तु । शान्म्यन्तु पापानि, पुण्यं वर्धताम् । धर्मो वर्धताम् । श्रीर्वर्धताम् । आयुर्वर्धताम् । कुलं गोत्रं चाभिवर्धताम् । स्वस्ति भद्रं चास्तु वः । स्वस्ति भद्रं चास्तु नः । इवी इवीं हं सः स्वस्त्यस्तु ते स्वस्त्यस्तु मेस्वाहा ॥

ॐ नमो ऽहंते भगवते श्रीमते श्रीमत्पास्वर्तीर्थङ्कराय श्रीमद्रत्नत्रयालङ्कृताय दिव्य-
तेजोमूर्तये नमः प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगणपरिवेष्टिताय शुबलध्यानपवित्राय सर्वज्ञाय
स्वयम्भुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्यहिताय । अनन्तसंसारचक्रपरि-
मर्दनाय । अनन्तज्ञानाय । अनन्तदर्शनाय । अनन्तवीर्याय । अनन्तसुखाय । सिद्धाय
बुद्धाय । त्रैलोक्यवशंकराय । सत्यज्ञानाय । सत्यब्रह्मणे । धरणेन्द्रफणामण्डलमण्डिताय ।
उपसमंविताशनाय । घातिकर्मक्षयंकराय । भ्रजराय । अमराय । अपवाय । [देव-
दत्त नामधेयस्य] मृत्युं छिदि २ भिदि २ ॥ हन्तुकामं छिदि २ भिदि २ । रनिकामं
छिदि २ भिदि २ ॥ बलिकामं छिदि २ भिदि २ ॥ क्रोधं छिदि २ भिदि २ ॥ पापं
छिदि २ भिदि २ ॥ वैरं छिदि २ भिदि २ ॥ बायुघातं छिदि २ भिदि २ ॥
अग्निभयं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं शत्रुभयं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वोपसर्गं छिदि २
भिदि २ ॥ सर्वं विघ्नं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं भयं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं राज भयं
छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं चोर भयं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं दुष्ट भयं छिदि २ भिदि २ ॥
सर्वं सपं भयं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं वृषिक भयं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं ग्रहभयं छिदि २
भिदि २ ॥ सर्वं दोषं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं व्याधिं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं क्षाम डामरं
छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं पगमंत्रं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वात्मघातं छिदि २ भिदि २ ॥
सर्वं परघातं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं कुक्षि रोगं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं शूलरोगं छिदि २
भिदि २ ॥ सर्वाक्षिरोगं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं शिरोरोगं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं
कुष्ठ रोगं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं ज्वररोगं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं नरमारिं छिदि २
भिदि २ ॥ सर्वं गजमारिं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वाश्वमारिं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं गोमारिं
छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं महिषमारिं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वाजमारिं छिदि २ भिदि २ ॥
सर्वं सग्यमारिं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं धान्यमारिं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं वृक्षमारिं छिदि २
भिदि २ ॥ सर्वं गुल्ममारिं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं लतामारिं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्व-
पत्रमारिं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं पुष्पमारिं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं फलमारिं छिदि २
भिदि २ ॥ सर्वं राष्ट्रमारिं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं देशमारिं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं
विषमारिं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं क्रूररोगवेतालशकिनीडाकिनीभयं छिदि २ भिदि २

सर्वं वेदनीयं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं मोहनीयं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वापस्मारं छिदि २ भिदि २ ॥ सर्वं दुर्भगं छिदि २ भिदि २ ॥

ॐ मुदशनं महाराज चक्र विक्रम तेजो बलशौर्यं वीर्यं वशं कुरु २ । सर्वं जनानन्दं कुरु २ । सर्वं जीवनन्दं कुरु । सर्वं राजानन्दं कुरु २ । सर्वं भव्यानन्दं कुरु २ । सर्वं गोकुलानन्दं कुरु २ । सर्वं ग्राम नगर खेट खर्वट मटम्ब पत्तन द्रोणमुख जनानन्दं कुरु २ । सर्वं लोक सर्वं देशं सर्वं सत्त्व वशं कुरु २ । सर्वानन्दं कुरु २ । हन २ दह २ पच २ पाचय २ कुट २ शीघ्रं २ । सर्वं वशं मानय हू फट् स्वाहा ।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याघ्रिर्व्यसनं वर्जितं । अभयं क्षेमं मारोग्यं स्वस्तिरस्तु विधीयते ॥ श्री शान्तिरस्तु शिवमस्तु जयोस्तु नित्यमारोग्यमस्तु तव दृष्टिस्सुप्तिरस्तु कल्याणमस्तु सुखमस्त्वभि वृद्धिरस्तु दीर्घायुस्तु कुलगोत्रधनं धान्यम् सदास्तु ।

॥ इति ॥

इस वृहत् शान्ति मंत्र का उच्चारण करते हुए मन्त्र साधक जितेन्द्र प्रभु पर जल धारा अवश्य करे । तब मन्त्र साधन करने में किसी प्रकार का भय उत्पन्न नहीं होगा ।

पद्मावती आह्वाननमंत्रः

ॐ तमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत् पाश्वं चन्द्राय त्रैलोक्य विजयालङ्कृताय, मुवर्णं वर्णं धरणेन्द्र नमस्कृत्याय नीलवर्णाय, कर्मकान्तारोन्मूलन मल-मलङ्गजाय, संसारोतीर्णाय, प्राप्त परमानन्दाय, तत्पादारविन्द सेवा हे वाक् चचरीकोप मे मानव देव-दानव त्रितम्र मोलि मुकुट मण्डली मयूख मजरी रजिताघ्रीपीठे सेवक जन वाञ्छितार्थ पूरणाधरीकृतकचिन्तामणि काम धेनु कल्प लते विकण्जपाकुमुमोदितार्क पद्मरागारुण देह प्रभाभामुरीकृत समस्ता-काशादिक चक्रवाल लीला निर्दलित रौद्र दाग्निद्रोपद्रवे शरणागत त्राणकारिणी, दैत्यैपसर्ग निवारिणी भूत-प्रेत-पिशाच-यक्ष राक्षसाकाश जल, स्थल देवता दोष निर्णाशिनी मातृ मुग्दल चेटकोप ग्रहण शाकिनी योगिनी वृन्द वेताल रेवती पीडा प्रमदित परविद्या मन्त्र यन्त्रोच्छेदिनी पर सैन्यविध्वंसिनी स्थावर जगम विष सहारिणीसह शार्दूलव्याघ्रोरग प्रमुख दुःसत्त्व भयापहारिणि कास-श्वास, ज्वर भगन्दर श्लेष्मवातपित्त कङ्कामल क्षयौ दुष्पूर प्रसूति प्रमुख रोग विध्वंसिनी चोरानल जल राजग्रहविच्छेदिनी एकाहिक द्वाहिक त्र्याहिक चातुहिक भौतिक बानिक मान्निपातिक पैत्तिक ज्वरोच्चाटिनी त्रिभुवन जन मोहिनी भगवती

श्री पद्मावती महादेवी एहि एहि आगच्छ आगच्छ प्रसाद कुरु कुरु (वषट्) सर्व कर्म करी (वषट्) ।

इस आह्वानन् मन्त्र का स्मरण जब करे, जहाँ देवीजी को आकर्षण करना हो ।

पद्मावती माला मन्त्र लघु

ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय पद्मावती सहिताय धरणोरणेन्द्र नमस्कृताय सर्वोपद्रव विनाशनाय, परविद्याच्छेदनाय, परमन्त्र प्रणालनाय सर्वदोष निर्दलनाय आकाशान् बंधय-२ पातालान् बंधय-२ देवान् बंधय-२ चाण्डाल ग्रहान् बंधय-२ भगवन् क्षेत्र पालग्राम बंधय-२ डाकिनी बंधय-२ नाकिनी बंधय-२ जाकिनी बंधय-२ ग्रहीत मुक्तकाम बंधय-२ दिव्य योगिनी बंधय-२ वज्र योगिनी बंधय-२ खेचरी बंधय-२ भूचरीम् बंधय-२ नागान् बंधय-२ वर्ण राक्षसान् बंधय-२ जोटिगान् बंधय-२ सुन्दल ग्रहान् बंधय-२ व्यन्तर ग्रहान् बंधय-२ आकाश देवी बंधय-२ जल देवी बंधय-२ स्थल देवी बंधय-२ गोत्र देवी बंधय-२ एकाहिक द्वाहिक- त्र्याहिक चानुत्थिक नित्य ज्वर रात्रि ज्वर सर्व ज्वर मध्यान्ह ज्वर वेना ज्वर वातिक-पैतिक श्लेष्मिक-सान्निपातिक-सर्व दोष देव कृत-मानव कृत यत्कृत कार्मण उच्छेदय-२ विस्फोटय-२ सर्व दोषान् सर्व भूतान् हन-हन दह-दह पच-पच भस्मी कुरु-२ स्वाहा धे धे ।

ॐ ह्री पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय क्लृप्त्यै १ क्षमा क्षमी क्षम क्षमी क्षय क्षम. कलिवुण्ड दण्ड स्वामिन्नतुल बलवीर्य पराक्रम मम शाकिन्पादि भयोपशमन कुरु २ आत्म-विद्या रक्ष २ पर विद्या छिदि २ भिदि २ हूं फट् स्वाहा ।

विधि :- इस मन्त्र का साठे बारह हजार विधि से जप करे, दसास होम करे तो सर्व प्रकार के उपद्रव शांत होते हैं ।

पद्मावती माला मन्त्रः (वृहत्)

ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र सहिताय पद्मावती सहिताय सर्व लोक हृदयानन्द कारिणि भृंगी देवि सर्व सिद्धि विद्या विधायिनि कालिका सर्व विद्या मन्त्र यन्त्र मुद्रा स्फोटनिकरालि सर्व पर द्रव्ययोग चूर्ण मयिनि सर्वविष प्रमादिनि देवि । अजितायाः स्वकृत विद्या मन्त्र तंत्र योग चूर्ण रक्षिणि जम्भे पर सैन्य मदिनि तामोदानन्द दायिनि सर्वा रोग नाशिनि सकल त्रिभुवानन्द कारिणि भृंगी देवि सर्वसिद्ध विद्या विधायिनि महामोहिनी त्रैलोक्य संहार कारिणि

षामुण्डि ॐ नमो भगवती पद्यावती सर्वग्रह निवारिणि फट् २ कम्प २ शीघ्रं चालय २ बाहुं
 चालय २ गात्रं चालय २ पादं चालय २ सर्वाङ्गं चालय २ लोलय २ धनु २ कम्प २ कम्पय २
 सर्वं दुष्टान् विनाशय २ सर्वं रोगान् विनाशय २ जये, विजये, अजिते, अपराजिते, जम्मे मोहे
 स्तम्भे, स्तम्भिनि, अजिते ह्री २ हन २ दह २ पच २ पाचय २ चल २ चालय २ आकर्षय २ आकम्प
 २ विकम्पय २ क्ष्म्व्यं ० खां क्षीं क्षूं क्षौ क्षः हू फट् फट् फट् निग्रह ताडय २ क्ष्म्व्यं ० खां स्त्री हूं
 क्रीं क्षं क्षौ क्षः क्ष हः २ सः २ धः २ स २ क्ष्म्व्यं ० हूं २ धर २ कर २ हू फट् फट् फट् ॐ शंख
 मुद्रया धर २ क्ष्म्व्यं ० पुर हूं फट् कठोर मुद्रया मारय २ ग्राहय २ क्ष्म्व्यं ० हर हर स्वस्तिक
 मुद्रया ताडय २ २ र्क्ष्म्व्यं ० पर २ प्रज्वल २ प्रज्वालय २ धग २ धूमान्धकारिणि रा रां प्रा
 वली हः २ वः २ आं नद्यावर्तं मुद्रया त्रासय २ १ क्ष्म्व्यं ० शस्त्र चक्र मुद्रया छिदि २ भिदि २
 र्क्ष्म्व्यं ० गः त्रिशूल मुद्रया छेदय २ भेदय २ क्ष्म्व्यं ० धः चन्द्र मुद्रया नाशय २ क्ष्म्व्यं ०
 मुशल मुद्रया ताडय २ पर विद्यां छेदय २ पर मन्त्र भेदय २ क्ष्म्व्यं ० धम २ वन्धय
 २ भेदय २ हलमुद्रया पः २ वः २ यं कुरु २ क्ष्म्व्यं ० वां श्री ब्रूं बौत्रः समूद्रे मज्जय २
 क्ष्म्व्यं ० छां छी छी छः यंत्राणि छेदय २ पर सैन्यमुच्चाटय २ पर रक्षां क्षः क्षः क्षः हूं ३
 फट् फट् पर सैन्य विध्वंसय २ मारय २ दारय २ विदारय २ गति स्तम्भय २ क्ष्म्व्यं ० भ्रां श्री
 भूं भ्रौ भ्रः श्रवय २ श्रावय २ १ क्ष्म्व्यं ० यः प्रेषय २ पं छेदय २ द्वेषय २ विद्वेषय २ क्ष्म्व्यं ०
 खां स्त्री खूं स्त्री खः श्रावय २ १ मम रक्षां रक्ष २ पर मन्त्रं क्षोभय २ छेद २ छेदय २ भेद २ भेदय २
 सर्वं यन्त्रं स्फोटय २ मं म क्ष्म्व्यं ० भ्रां श्री भ्रूं श्री छः जम्भय २ स्तम्भय २ दुःखय २ दुःखाय २
 क्ष्म्व्यं ० खां स्त्री खूं स्त्री खः हाः ग्रीवां भंजय २ मोहय २ क्ष्म्व्यं ० वां श्री ब्रूं बौत्रः त्रासय ०
 नाशय २ क्षोभय २ सर्वाङ्ग स्तम्भय २ चल २ चालय २ भ्रम २ भ्रामय २ धूनय २ कम्पय २ आक-
 म्पय २ क्ष्म्व्यं ० स्तम्भय २ गमनं स्तम्भय २ सर्वभूत प्रमदय २ सर्वं दिशां बधय २ सर्वं विघ्नान्
 छेदय २ निकृन्तय २ सर्वं दुष्टान् निग्राहय २ सर्वं यंत्राणि स्फोटय २ सर्वं शृंखलान् त्रोटय २
 मोटय २ सर्वं दुष्टान् आकर्षय २ क्ष्म्व्यं ० ह्रा ह्री हूं ह्रौ हः शान्ति कुरु २ तुष्टि कुरु २ पुष्टि
 कुरु २ स्वस्ति कुरु २ ॐ आं क्री ह्री ह्री ह्र पद्यावति आगच्छ २ सर्वं भयान् माम रक्ष २ सर्वं
 सिद्धि कुरु २ सर्वं रोगं नाशय २ १ किन्नर कि पुरुष गरुड महोरग गंधर्व यक्ष राक्षस भूत प्रेत
 पिशाच वेताल रेवती दुर्गा चण्डी कूष्माण्डिनी डाकिनी बन्ध सारय २ सर्वं साकिनी मर्दय २ सर्वं
 योगिनी गणं चूर्णय २ नृत्य २ गाय २ कल २ किलि २ हिलि २ मिलि २ सुलु २ मुलु २ कुलु २ कुरु
 २ अस्माकं वरदेः पद्यावती हन २ दह २ पच २ सुदर्शन चक्रेण छिदि २ ह्री २ क्लीं प्लीं प्लुं प्लुं
 हां ह्रीं श्रीं हूं भूं खूं खं हूं ग्रीं प्रीं श्रीं श्रीं श्रीं हां ह्रीं प्रां प्रीं प्रूं प्रः पद्यावती धरेणन्द्र
 माज्ञापयति स्वाहा ।

यह पञ्चावती माला मन्त्र पढ़ने मात्र से सिद्ध होता है नित्य ही दिन मेत्रिकाल पढ़ें।
सर्व कार्य की सिद्धि होती है, भूत प्रेतादि व्याधियां नष्ट होती हैं।

‘श्री ज्वालामालिनी देवी माला मन्त्रः’

ॐ नमो भगवते चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय शशाक शस्त्र गोक्षीर हार नीहार विमल धवल
गात्राय घाति कर्म निर्मूलोच्छेदन करायजाति जरा मरण शोक विनाशन कराय संसार कान्ता-
रोन्मूलन कराय अचिन्त्य बल पराक्रमाय अप्रतिहत शासनाय अप्रतिहत चक्राय त्रैलोक्य वशंकराय
सर्व सत्त्व हितकराय भव्यलोक वसंकराय सुग सुरोरेन्द्र मणिगण खचित मुकुट कोटि तट
घटित पादपीठाय त्रैलोक्यमहिताय अष्टादश दोष रहिताय धर्म चक्राधीश्वराय सर्व विद्या
परमेश्वराय कुविद्या अध्नाय चतुस्त्रिंशदतिशय सहिताय द्वादशगण परिवेष्टिताय शुक्लध्यान
पवित्राय अनन्त ज्ञानाय अनन्त दर्शनाय अनन्तवीर्याय अनन्त सुखाय सर्वज्ञाय सिद्धाय बुद्धाय
शिवाय सत्यज्ञानाय सत्यब्रह्मणे स्वयंभुवे परमात्मने अच्युताय दिव्यमूर्ति प्रमामण्डलमहिताय
कण्ठात्कण्ठ पुटव्यापार रहित तत्तदभीष्टं वस्तु कथकं निशेषभाषा प्रतिपालकाय देवेन्द्र
घरणेन्द्र चक्रवर्त्यादि शतेन्द्र वदित पादार विदाय पंच कल्याणष्ट महा प्रतिहार्यादि विमवाल-
कृताय वज्रवृषभनाराच सहनन चरम दिव्य देहाय देवाधिदेवाय परमेश्वराय तत्पादपंकजाश्रय
निवेशिनि देविशासन देवते त्रिभुवन जन सक्षोभिणी त्रैलोक्य संहार कारिणि स्थावर जंगम कृत्रिम
विषम विषसंहार कारिणि सर्वाभिचार कर्मापहारिणि पर विद्या छेदिनि पर मन्त्र प्रणाशिनि अष्ट-
महानाग कुलोच्चादिनि कालदष्ट मृतकोत्थापिनि सर्व रोगापनोदिनी ब्रह्मा विष्णु रुद्रे चन्द्रा
दित्य ग्रह नक्षत्र तारा लोकोत्पाद..... भय पीडा प्रमर्दिनी त्रैलोक्य महिमे भव्यलोकहितंकरि
विश्वलोक वशंकरि महाभैरवि भैरव रूपधारिणि भीमे भीम रूपधारिणि महारौद्र रूपधारिणी
सिद्धे सिद्ध रूपधारिणि प्रसिद्ध सिद्ध विद्याधर यक्ष राक्षस गरुड़ गधर्व किन्नर किं पुंक्ष
दैत्योरेन्द्रामर पूजिते ज्वाला माला कराले तत्तदिगन्तराले महामहिष वाहिनि विशूल
चक्र भूष पाश शर शरासन फलवरद प्रदान विराजमान षोडशार्ध भुजे छेटक कृपाण हस्ते
त्रैलोक्याकृत्रिम चैत्यालय निवासिनि सर्व सत्त्वानुकम्पनि रत्नत्रय महानिधि सांख्य सौगत
चार्वाक मीमांसक दिगम्बरादि पूजिते विजयवर प्रदायिनि भव्यजन संरक्षिणि दुष्ट जन
प्रमर्दिनि कमल श्री गृहीत गर्वावलिप्त ब्रह्म राक्षस ग्रहापहारिणि शिवकोटि महाराज प्रतिष्ठित
भीम लिगोत्पादन पटु प्रतापिनि समस्त ग्रहाकर्षिणि (ग्रहानुबन्धिनि ग्रहानुछेदिनि ग्रह काला
मुखि) नगर निवासिनि पर्वत वासिनि स्वयंभूरमण वासिनि वज्र वेदिकाधिष्ठित व्यतरावास
वासिनि मणिमय सूक्ष्म घंटनाद किंचिद्रणित नूपुर युक्त पादार विन्दे वज्र वैडूर्य मुक्ताफल

हृदिन्मणि मयूरमाला मण्डित हेम किंकिणि भणत्कार विराजित कनक ऋजुसूत्र भूषित
 नितम्बिनि वारद नीरद निर्मलायमान सूक्ष्म दुकूल परीत दिव्य तनुमध्ये संध्यापरागारूण मेघ
 समान कौसुम्भ वस्त्र धारिणि बालार्क रूक् सन्निभायमान तपनीय वसनाच्छादिते इन्द्र
 चन्द्रकादि मौक्तिकाहार विराजित स्तन मण्डले तारा समूह परितोत्तमांगे यमराज लुलायमान
 महिषासुर मर्दन दक्षभूत महामहिष बाहिनि ताराधर तारे नीहार पटीर पयः पूर कर्पूर
 शुभ्रायमान विमल धवल गात्रे भयकाल रुद्र रौद्रावलोकिता भाल नेत्रानल विस्फुलिग समूह
 सन्निभ ज्वालावेष्टित दिव्य देहिनि कुल शैल निर्भेदिनि कृत सहस्र धारायुक्त महा प्रभा मण्डल
 मण्डित कृपाणि भ्राज दोर्दण्डे देवि ज्वालामालिनि अत्र एहि २ २ पिण्ड रूपे एहि २ नव तत्त्व
 देहिनि महामहित मेखला कलित प्रतापे एहि २ ससार प्रमर्दिनि एहि २ महामहिषवाहने
 एहि २ कटक कटि सूत्र कुण्डलाभरण भूषिते एहि २ घनस्तनि किंकिणि नूपुरनादे एहि २
 महामहित मेखला सूत्रे एहि २ गरूड गंधर्व देवासुर समिति पूजित पादपङ्के एहि २ भव्यजन
 संरक्षिणि एहि २ महादुष्ट प्रमर्दिनि एहि २ मम ग्रहाकर्षिणि एहि २ ग्रहानुबन्धिनि एहि २
 ग्रहानुच्छेदिनि एहि २ ग्रहकाल कालामुखि एहि २ ग्रहोच्चाटिनि एहि २ ग्रह मारिणि एहि २
 मोहिनि एहि २ स्तम्भिनि एहि २ समुद्रधारिणि एहि २ धनु २ कम्प २ कम्पावय २ मण्डल
 मध्ये प्रवेशय २ स्तम्भ २ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रं ग्राह्यान्मन गृह्ण २ जन गृह्ण २ गन्ध
 गृह्ण २ अक्षतं गृह्ण २ पुष्प गृह्ण २ चरु गृह्ण २ दीप गृह्ण २ धूप गृह्ण २ फलं गृह्ण २
 आवेशं गृह्ण २ ॐ ह्रस्व्यं महादेवि ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ध्रूं प्रां ह्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं
 ह्रः हा देव ग्रहान् आकर्षय २ ब्रह्मा विष्णु रुद्रेन्द्रादित्य ग्रहान्नाकर्षय २ नाग ग्रहान्नाकर्षय २
 यक्ष ग्रहान्नाकर्षय २ गन्धर्व ग्रहान्नाकर्षय २ ब्रह्मराक्षस ग्रहान्नाकर्षय २ भूत ग्रहान्नाकर्षय २
 व्यन्तर ग्रहान्नाकर्षय २ सर्व दुष्ट ग्रहान्नाकर्षय २ शतकोटिदेवतानाकर्षय २ सहस्रकोटि
 विशाख देवतानाकर्षय २ कालराक्षस ग्रहानाकर्षय २ प्रेतसिनो ग्रहानाकर्षय २ वंतालो
 ग्रहानाकर्षय २ क्षेत्रवासी ग्रहानाकर्षय २ हस्तुकाम ग्रहानाकर्षय २ अपस्मार
 ग्रहानाकर्षय २ क्षेत्रपाल ग्रहानाकर्षय २ भैरव ग्रहानाकर्षय २ ग्रामादि देवतानाकर्षय २
 गृहादि देवतानाकर्षय २ कुलादिदेवतानाकर्षय २ चण्डिकादि देवतानाकर्षय २ शाकिनि ग्रहान्-
 आकर्षय २ डाकिनी ग्रहानाकर्षय २ सर्व योगिनी ग्रहानाकर्षय २ रणभूत ग्रहानाकर्षय
 रज्जुनिग्रहानाकर्षय २ जलग्रहानाकर्षय २ अग्नि ग्रहानाकर्षय २ मूक ग्रहानाकर्षय २ मूर्ख-
 ग्रहानाकर्षय २ छल ग्रहानाकर्षय २ चोरचिताग्रहानाकर्षय २ भूत ग्रहानाकर्षय २ शक्ति-
 ग्रहानाकर्षय २ जाडाली ग्रहानाकर्षय २ मातंगग्रहानाकर्षय २ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रभव
 भवान्तर स्नेह वैर बन्ध सर्व दुष्ट ग्रहानाकर्षय २ कम्प २ मृत्योरक्षय २ ज्वरं भक्षय २

अनलविषंहर २ कुमारीगृक्ष २ योगिनीभक्ष्य २ शाकिनी भर्दय २ डाकिनी भर्दय २ पूतनी
कम्पय २ राक्षसी छेदय २ कोलिकामुद्रा दर्शय २ सर्व कार्यकारिणी सर्व ज्वर मर्हिनसर्व
शिखाजन प्रतिपादिनि एहि २ भगवति ज्वालामालिनि एकाहिकं द्वाहिकं त्र्याहिकं
चातुर्थिकं वास्तिकं श्लेषिक पौष्टिक २ श्लेषिक साप्ताहिक (वेला) ज्वरादिकं पात्रे
प्रवेशय २ ज्वलि ज्वलि ज्वालावय २ मुंच २ मुंचावय २ शिरं मुंच २ मुखं मुंच २
ललाटं मुंच २ कंठं मुंच २ बाहूं मुंच २ हृदय मुंच २ उदर मुंच २ कटि मुंच २ जानू
मुंच २ पादं मुंच २ आछेदय २ क्रीं भेदय २ ह्रीं भर्दय २ क्षी बोधय २ ह्मन्त्यूं धूमय २
२ र २ र २ रा ग स घ पतय २ पर मंत्रान् स्फोटय २ ॐ हां ह्रीं लूं ह्रीं हः धे वे फट्
स्वाहा । अस्मिन् दलमध्ये प्रवेशय २ पात्रे गृहण २ आवेशय २ प्रासय २ पूरय २ खण्ड २
कट कट कंपावय २ ग्राह्य २ शीघ्रं चालय २ भालं चालय २ नेत्रं चालय २ वदन चालय २
कण्ठं चालय २ बाहूं चालय २ हस्त चालय २ हृदयं चालय २ गात्रं चालय २ सर्वांग
चालय २ लोलय २ कंप २ कम्पावय २ शीघ्रं अवतर २ गृह २ ग्राह्य २ ग्रथेलय १
आवेशय २ ॐ ह्मन्त्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्वी क्षा क्षीं झूं क्षो क्षः हाः सर्वं
दुष्ट ग्रहान् स्तभय २ हा पूर्वं बध्य २ दक्षिण बध्य २ पश्चिम बंधय २ उत्तरं बंधय २
ठः ठ हु फट् २ धे धे ॐ ह्मन्त्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्वी ज्वल २ र २ र २
२ र २ रा रा प्रज्वल २ ह ज्वल ज्वल धग २ धूं धूं धूमाधकारिणी ज्वल ज्वल ज्वलित शिखे
प्रलय धग धगित वदने देव ग्रहान् दह २ नाग ग्रहान् दह २ यक्ष ग्रहान् दह २ गंधर्व ग्रहान्
दह २ वज्र २ क्षम ग्रहान् दह २ सर्व भूत ग्रहान् दह २ व्यस्तर ग्रहान् दह २ सर्व दुष्ट ग्रहान्
दह २ शतकोटि देवनान् दह २ सहस्र कोटि पिशाच राजान् दह २ धे धे स्फोटय २ मारय २
दहनाधि प्रलय धग धगित मुखि ॐ ज्वालामालिनि हा ह्रीं लूं ह्रीं हः हाः सर्वं दुष्ट ग्रह
हृदय हू दह दह पच पच छिदि २ भिदि २ ह हः हाः हाः हे हे हू फट् २ धे २ ॐ ह्मन्त्यूं
ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्वी आ भीं भूं औं ओं भ्रः हाः सर्वं दुष्ट ग्रहान् ताडय २
हू फट् २ धे २ ॐ ह्मन्त्यूं ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्वी आ भीं भूं औं ओं भ्रः हाः
सर्वं दुष्ट ग्रहाणा वज्रमय सूच्या अधिष्ठाणी स्फोटय २ अवश्यं २ हूं फट् २ धे २ ॐ ह्मन्त्यूं
ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्वी हा यां की क्षी यां यी यूं यी यः हाः सर्वं दुष्ट ग्रहान्
प्रेषय २ धे २ हूं जः ज ज ॐ ह्मन्त्यूं ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां दीं घ्रां घ्रीं घूं
घौं घ्रः हाः घ घ खं ख खङ्गां रावण सद्विद्या घायय २ सच्चन्द्रहासः शस्त्रेण छेदय २ भेदय २
जठरं भेदय २ भं भं खं ख हू हूं २ फट् २ धे २ ॐ ह्मन्त्यूं ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं
ब्लूं द्रां द्वी झां क्षीं झूं क्षीं झ हाः सर्वं दुष्ट ग्रहान् वज्रपाशेन बध्य २ मष्टि बधेन बंधय २

हूं फट् २ घे २ । ॐ ह्म्ल्यं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं खां खीं खूं खीं खः हाः सर्वं दुष्ट ग्रहाणां भ्रगंभंग कुरु २ ग्रीवां भञ्जय २ हूं फट् २ घे २ । ॐ ह्म्ल्यं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं छीं छीं छूं छीं छः हाः सर्वं दुष्ट ग्रहाणां अन्त्राणि छेदय २ ।

हूं फट् फट् घे घे । ॐ ह्म्ल्यं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं ठां ठीं ठूं ठीं ठः हाः सर्वं दुष्ट ग्रहान् विद्युत्पाषाण अस्त्रेण ताडय २ भुम्यां पातय २ फट् फट् घे घे । ॐ ह्म्ल्यं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं भां बीं बूं बीं बः हाः सर्वदुष्ट ग्रहान् समुद्रे भञ्जय २ हूं फट् फट् घे घे । ॐ ह्म्ल्यं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं डीं डीं डूं डीं डः हाः सर्वं डाकिनी मर्दय २ हूं फट् फट् घे घे क्षीं भूः सर्वं शाकिनि मर्दय २ हूं फट् फट् घे घे सर्वं योगिनिस्तर्जय तर्जय सर्वं शत्रून् ग्रासय २ खं खं खं खं खं खं खादय खादय सं तं वं मं हां भं सर्वं ग्रहान् उत्थापय २ नट नट नृत्य नृत्य स्वाहा यय सर्वं दैत्यान् ग्रास ग्रास विध्वंसय २ दह दह पच पच पाचय २ धर २ धम २ धुरु २ धुरु २ धुरु २ सर्वोपद्रव महामय स्तभय २ भम् २ हं हं दर दर पर २ खर २ खड्गरावण सद्विद्या घातय २ पातय २ चन्द्रहास शस्त्रेण छेदय २ भेदय २ भं झ हं हं खं खं घं घं दं दं फट् फट् घे घे हां हां आं क्रौ क्षीं क्षीं ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं क्रौ क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं ज्वालामालिन्या ज्ञापयति स्वाहा ॥ अयं प ति सतिद्धि ... ।

॥ इति ॥

इस ज्वालामालिनीपठति सिद्ध माला मन्त्र को ७२ दिन तक दीप धूप रखकर नित्य ही १ बार पढ़ने मात्र से सिद्ध हो जायगा, फिर प्रत्येक व्याधि में पानी भ्रित करके देने से अथवा भाडा देने से सर्व व्याधि दूर हो, और भूत, प्रेत, शाकिनि आदि तथा परविद्या का प्रभाव नष्ट होता है ।

सरस्वती मन्त्रः

मन्त्र :—ॐ अहं न् मुख कमल वासिनी पापात्म क्षयंकरी धृत ज्ञाना ज्वाला सहस्र उज्ज्वलने सरस्वती मत्पापं हन २ बह २ पच २ क्षां क्षीं क्षूं क्षीं क्षः क्षीर वर धवले अमृत संभवे (पल्लवे) अमृतं आचय २ खं वं वं वं हं हूं फट् स्वाहा ।

विधि :—केशर विसकर गोली ३६० बनाकर दीपोत्सव के दिन अथवा शरद पूर्णिमा के दिन अहन्त प्रतिमा के सम्मुख साधन करे । १००० जप करे । उपरोक्त से १ गोली को

२१ बार मंत्रित करके प्रातः उस गोली को खावे, इस प्रकार ३६० दिन में ३६० गोली खावे तो महान विद्यावान् हो। किन्तु खट्टा खारा नहीं खावे। प्रतिदिन स्मरण करने से बुद्धि का वैभव बढ़ता है।

द्वितीय विधि :—इस मंत्र को कांसी की धाली में लिखे सुगन्धित द्रव्यों से, फिर सुगन्धित पुष्पों से १००८ बार मंत्र का जाप करे, शरद पूर्णिमा के दिन मेवा की खीर बनाकर रखे। दूसरे दिन वही मेवा की खीर खावे और कुछ नहीं खावे, तो सरस्वती प्रसन्न रहे। बुद्धि प्रबल होनी है। यह प्रयोग शरद पूर्णिमा के दिन करें। जप सुगन्धित पुष्पों से करे।

। शांतिमन्त्र लघू ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्री शांति नाथाय जगत् शांति कराय सर्वोपद्रवशांतिं कुरु २ ह्रीं नमः स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र का जाति पुष्प से नित्य ही १०८ बार जप करने से सर्व मनो वांछित प्राप्त होता है।

शांति मन्त्र

मन्त्र :—ॐ नमोऽर्हंते भगवते श्री शांति नाथाय सकल विघ्न हराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अमुकस्य सर्वोपद्रव शांतिं लक्ष्मी लाभं च कुरु २ नमः (स्वाहा)

विधि :—इस मंत्र का सोलह दिन में १६००० जप करके दशास होम करे, शुक्ल पक्ष के पखवाड़े में १६ दिन का जो पखवाड़ा हो, उसमें प्रत्येक दिन १००० जप सुगन्धित पुष्पों से करे तो सर्व कार्य की सिद्धि हो। उपसर्ग, उपद्रव, सर्व दूर हो, सर्व शांति होती है। लक्ष्मी लाभ, यश लाभ होता है।

नवग्रह जाप्य

१ रवि महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हंते भगवते श्रीमते पद्मप्रभतीर्थं कराय कुसुलयश मनोवेगा यक्षी सहिताय ॐ आं क्रो ह्रीं ह्रः आदित्यमहाग्रह (मम कुटुंबवर्गस्य) सर्व

दुष्टग्रह रोग कष्टनिवारणं कुरु कुरु सर्वशांति कुरु कुरु सर्व समृद्धि
कुरु कुरु इष्ट संपदा कुरु कुरु अनिष्ट निश्सनं कुरु कुरु धनधान्य समृद्धि
कुरु कुरु काममांगल्योत्सवं कुरु कुरु हूं फट् ।

इस मंत्र का जप ७००० हजार करे, तो रवि गृह शांत होते हैं ।

२ सोम महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते चंद्रप्रमतीर्थं कराय विजय यक्ष ज्वाला-
मालिनी यक्षी सहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रः सोममहाग्रह मम
दुष्टग्रह रोगकष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट् ॥

इस मंत्र का ११००० हजार जप करे ।

३ मंगल महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते वासुपूज्यतीर्थं कराय षष्ठमुखयक्ष गांधारी यक्षी
सहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रः मंगलकुज महाग्रह मम-दुष्टग्रह रोगकष्ट
निवारणं सर्वशांति च कुरु कुरु हूं फट् ॥

इस मंत्र का जप १०००० करे ।

४. बुध महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मल्लीतीर्थं कराय कुवारेयक्ष अपराजि-
ता यक्षी सहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रः बुधमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट
निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट् ॥

इस मंत्र का जप १४००० करे ।

५. गुरु महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते वर्षमान तीर्थं कराय सातंगयक्ष सिद्धा-
यिनीयक्षी सहिताय ॐ क्रौं ह्रीं ह्रः गुरुमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोगकष्ट निवा-
रणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट् ॥

ग्रह की शांति के लिये इस मन्त्र का जप १६००० हजार करे ।

६. शुक्र महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽहंते भगवते श्रीमते पुष्पदंत तीर्थंकराय अजितयक्ष महाका-
लीयक्षी सहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रः शुक्रमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोगकष्ट
निवारणं सर्वं शांति च कुरु कुरु हं फट् ॥

इस मन्त्र का जप १६००० हजार करे ।

७. शनि महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽहंते भगवते श्रीमते मुनि सुव्रततीर्थंकराय वरुणयक्ष बहुह-
पिणीयक्षी सहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रः शनिमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोगकष्ट
निवारणं सर्वं शांति च कुरु कुरु हं फट् ॥

इस मन्त्र का जप २३००० हजार करे ।

८. राहु महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽहंते भगवते श्रीमते नेमितीर्थंकराय सर्वाण्यक्ष कुष्मां-
डोयक्षी सहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रः राहुमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोगकष्ट
निवारणं सर्वं शांति च कुरु कुरु हं फट् ॥

इस मन्त्र का १८००० जप करे ।

९. केतुमहा ग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽहंते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थंकराय धरणेंद्रयक्ष पद्मावती-
यक्षी सहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रः केतुमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोगकष्ट
निवारणं सर्वं शांति च कुरु कुरु फट् ॥

इस मन्त्र का ७००० जप करे ।

नोट — प्रत्येक ग्रह के जितने जप लिखे हो उनना जप करके नवग्रह विधान करे । दशमास
होम करे तो ग्रह की शान्ति होती है ।

शान्ति मन्त्र

ॐ नमोऽहंते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष कल्मषाय दिव्य तेजोमूर्तये नमः

श्री शान्तिनाथाय शान्ति कराय सर्व पापप्रणाशनाय सर्व विघ्न विनाशनाय
सर्व रोगाय मृत्यु विनाशनाय सर्वपरकृत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्व क्षाम क्षामर
विनाशनाय ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आजसा मम सर्व शान्ति कुरु
कुरु स्वाहा ।

विधि — इस शान्ति मन्त्र को शुक्ल पक्ष के सोलह दिन के पखवाड़े में प्रत्येक दिन १००० जप करे । सोलह दिन में सोलह हजार जप दीप, धूप विधि से करे, फिर शान्ति विधान कराकर, १६००० जप का दशास होम करे, तो सर्व प्रकार के रोग, सर्व प्रकार के डाकिनी, शाकिनी, भूत, प्रेतादि वाधा दूर हानी है । लक्ष्मी लाभ होता है, मनवाञ्छित सिद्धि प्राप्त होती है ।

वर्द्धमान मन्त्र

ॐ नमो भय बधो बड्ड माणस्त रिसहस्स चक्कं जलंतं गच्छइ
आवासं पायालं लोयाणं भूयाणं जये वा विवादे वा थंमणेवा रणांगणेवा
रायं गणेवा मोहेण वा सच्च जीवसत्ताणं अपराजिदोमम् भवतु रक्ख २
स्वाहा ।

विधि :— इस वर्द्धमान महाविद्या को उपवास करके एक हजार जप सुगन्धित पुष्पों से जप करे, दशमास होम करे, तो ये मन्त्र सिद्ध हो जाता है । फिर कहीं से भय आने वाला हो अथवा आ गया हो, तो सरसों हाथ में लेकर सर्व दिशाओं में फेंक देने से आगत उपद्रव, भय, परकृत विद्याएँ सर्व स्तम्भित हो जायेंगे । घर में स्मरणा मात्र से ही शान्ति हो जायगी । विशेष फल गुरु गम्य है ।

जिनेन्द्र पंच कल्याणक के समय प्रतिमा के

कान में देने वाला सूर्य मन्त्र

ॐ ह्रीं क्षूं ह्रूं सुं सुः क्रौं ह्रीं ऐं अहं नमः सर्व अर्हन्त गुणभागी
भवतु स्वाहा ।

विधि :— प्रतिष्ठाचार्य इस मन्त्र को २१ बार कान में पढ़े ।

मन्त्र :— ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं ह्रौं श्रीं श्रीं जय जय द्रां कलि द्रा क्ष सां
सृं जय जिनेभ्योः ॐ भवतु स्वाहा ।

विधि :— इस मन्त्र को दर्पण सामने रखकर ५ बार कान में पढ़े ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र्यातर गात्राय चतुरशिति गुण गणधर
चरणाय अष्टचत्वारिंशत गणधर वलाय षट्त्रिंशत गुण संयुक्ताय जम्भो
आइरियाणं हं हं स्थिरं तिष्ठ २ ठः ठः चिरकालं नंदतु यंत्र गुण
तंत्र गुणं वेद्युतं अनंत कालं वद्धं यन्तु धर्माचार्या हुं हं कुरु २ स्वाहा,
स्वाधा ।

विधि :—इस मन्त्र को भी प्रतिमा के सामने सात बार पढ़े ।

प्रत्येक शासन देव सूर्य मन्त्र

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रां श्रीं वं सर्वज्ञाय प्रचण्डाय पराक्रमाय वटुक भंर
बाय अमुक क्षेत्रपालाय अत्र अवतर २ तिष्ठ २ सर्व जीवानां रक्ष
२ हं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से जिस क्षेत्रपाल की प्रतिष्ठा करनी हो, उस क्षेत्रपाल की मूर्ति के कान
में २७ बार पढ़े ।

पद्मावती प्रतिष्ठावायक्षिणी प्रतिष्ठा सूर्य मन्त्र

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं श्रीं पद्मावती देवी (व्यं) अत्र अवतर २
तिष्ठ २ सर्व जीवानां रक्ष २ हं फट् स्वाहा ।

विधि :—कोई भी देवी की प्रतिष्ठा करनी हो तो इस मन्त्र को जिसकी प्राण प्रतिष्ठा होनी
है, उस मूर्ति के दोनों कानों में २७-२७ बार पढ़ना चाहिये ।

धरणेन्द्र अथवा यक्ष प्रतिष्ठा सूर्य मन्त्र

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं श्रीं धरणेन्द्र देवताये अत्र अवतर २ अत्र तिष्ठ २ सर्व
जीवानां रक्ष २ हं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को यक्ष मूर्ति के कान में २७-२७ बार कान में पढ़ने में प्रतिष्ठा हो
जायगी ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं वद् २ वाग्वादिनीभ्योनमः ।

विधि :—कुमकुम कपूर के साथ सूर्य ग्रहण में जिह्वाग्रे लिखितस्थ नरस्य वाग्वादिनी संतुष्टा
भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं वद् २ वाग्वादिनी भगवति सरस्वती ह्रीं नमः ।

विधि :—१२००० जप इस मन्त्र का करके दशांश होम करे, सूर्य या चन्द्र ग्रहण में वेला, वक्त्र, मालकांगणी, इन चीजों को १०८ बार मन्त्रीत करके जिम बालक को खिलावे उसकी बुद्धि का विकास होता है ।

॥ ० ॥

गणधर वलय से सम्बन्धित

ऋद्धि मंत्र व फल

ॐ नमो अरहंताणं नमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रौं ह्रः अतिचक्रे फट् बिचक्राय स्वाहा ॐ ह्रीं अहं असि आउ सा ह्रौं २ स्वाहा । एतन् सर्वं प्रयोजनीयम्, विसूचिकाशान्तिं भवति ॥ १ ॥

ॐ नमो अरहंताणं नमो जिणाणं ह्रां पुष्प १०८ जपेत्, ज्वरनाशनम् ॥ २ ॥

नमो परमोहिजिणाणं ह्रां शिरोरोगनाशनम् ॥ ३ ॥

नमो सव्वोहिजिणाणं ह्रां अक्षिरोगनाशनम् ॥ ४ ॥

नमो अणंतीहिजिणाणं कर्णरोगं नाशयति ॥ ५ ॥

नमो कुट्टबुद्धीणं शूल-गुल्म-उदररोगं नाशयति ॥ ६ ॥

नमो बोजबुद्धीणं श्वास-हिककादि (हीचकी) नाशयति ॥ ७ ॥

नमो पद्माभुसारोणं परैः सह विरोधं कलहं नाशयति ॥ ८ ॥

नमो संभिन्नसोयाणं कासं नाशयति ॥ ९ ॥

नमो पत्तयबुद्धाणं प्रतिवादिविद्याच्छेदनम् ॥ १० ॥

नमो सयंबुद्धाणं कवित्वं पाण्डित्यं भवति ॥ ११ ॥

नमो बोहिबुद्धाणं अन्यतरगृहीते श्रुते एक संघो भवति ५२ दिनं यावज्जपेत् ॥ १२ ॥

नमो उज्जुमईणं शान्तिकं भवति, दिन २४ यावज्जपेत् ॥ १३ ॥

नमो विउलमईणं बहुश्रुतत्वम्, लवणाम्लवर्जं भोजनम् ॥ १४ ॥

णमो दसपुष्पीणं सर्वाङ्गवेदी भवति ॥ १५ ॥

णमो चऊदसपुष्पीणं जापः १०८ स्वसमय-परसमयवेदी ७ भवति ॥ १६ ॥

णमो अट्टाङ्गनिमित्त कुसलाणं जीवित-भरणादिकं जानाति ॥ १७ ॥

णमो विउव्वणरिट्ठिपत्ताणं काम्यवस्तूनि प्राप्नोति, दिन २८
जापः ॥ १८ ॥

णमो बिज्जाहराणं उद्देशप्रदेशमात्रं खे गच्छति ॥ १९ ॥

णमो चारणाणं त्रिन्तामुष्टिपदार्थं स्वरूपं जानाति ॥ २० ॥

णमो पण्हसमणाणं आयुर्वसानं जानाति ॥ २१ ॥

णमो आगासगामीणं अन्तरिक्षे योजनमात्रं गमयति ॥ २२ ॥

णमो आसीबिषा (सा) णं विद्वेषणं पाश्चष्टकमंत्रकमेण ॥ २३ ॥

णमो दिद्वीबिसाणं स्थावर जङ्गम-कृत्रिमविषं नाशयति ॥ २४ ॥

णमो उग्गतवाणं वाचास्तंभनम् ॥ २५ ॥

णमो वित्ततवाणं रविवाराद् दिनत्रयं मध्याह्ने जापः, सेना-
स्तम्भ ॥ २६ ॥

णमो तत्ततवाणं जलं परिजप्य पिबेत् अग्निस्तम्भं ॥ २७ ॥

णमो महातवाणं जलस्तम्भनम् ॥ २८ ॥

णमो धोरतवाणं विष-सर्प-मुत्तरोगादिनाशः ॥ २९ ॥

णमो धोरगुणाणं लूतागर्मपिटकादि नाशयति ॥ ३० ॥

णमो धोरगुणपरक्कमाणं दुष्टमृगादीनां भयं नाशयति ॥ ३१ ॥

णमो धोरगुण बंभचारीणं ब्रह्मराक्षसादि नाशयति ॥ ३२ ॥

णमो आमो सहिपत्ताणं जन्मान्तखेरेण पराभवं न करोति ॥ ३३ ॥

णमो खेलोसहिपत्ताणं सर्वानपमृत्यूनपहरति ॥ ३४ ॥

णमो जल्लोसहिपत्ताणं अपस्मारमवलेपं चित्तविप्लवं नाशयति ॥ ३५ ॥

णमो बिप्पोसहिपत्ताणं गजमारी शाश्वति ॥ ३६ ॥

‘णमो सव्वोसहियत्ताणं’ मनुष्यमरकं नाशयति ॥ ३७ ॥

‘णमो मणवलीणं’ अश्वमारी शाम्यति ॥ ३८ ॥

‘णमो वचोवलीणं’ अजमारी शाम्यति ॥ ३९ ॥

‘णमो कायवलीणं’ गोमारी शाम्यति ॥ ४० ॥

‘णमो अमयसवीणं’ समस्तभुपसर्गं शाम्यति ॥ ४१ ॥

‘णमो सप्पिसवीणं’ एकाहिक-द्वयाहिक-त्रयाहिक चातुर्थिक-पाक्षिक मासिक-सांवत्सरिक-वातादिसमस्तज्वरं नाशयति ॥ ४२ ॥

णमो खीरसवीणं गोक्षीरं परिजत्यपिबेत् दिन २४ क्षयं कांसं गण्डमाला-
दिकं च नाशयति ॥ ४३ ॥

‘णमो अवखीणमहाणसाणं’ आकर्षणं ॥ ४४ ॥

‘णमोलोए सव्वसिद्धायदणाणं’ राजपुरुषादिवश्यं ॥ ४५ ॥

ॐ नमो भगवदो महदि महावीर बड्ढमाणबुद्धिरिसीणं चेतः समाधिम्
व स्थायां प्राप्नोति ॥ ४६ ॥

ॐ णमो जिणे तरे उत्तरे उत्तिण्णभवणवे सिद्धे २ स्वाहा ।

पूर्वसेवा—करजापः ११००० ततः । १००८ अथवा जघन्यतः १०८
उभयं गरुडाक्षतं जपिः इति सिद्धा भवति । ततो महति संघादि कार्ये प्रयुज्यते
अनागाढे न प्रयोज्यम् । रौद्रकर्मणि ‘ॐ णमो जिणे चक्कवाले’ इति विशेषः ।
शेषं समानमेव ।

प्रयोगश्चेत्यम् x x x x x

३ तथा स्वकार्येऽध्यादौ जलदोः स्यूये जापः शतत्रयं तन प्रतीक्षते । ततः
स्वोत्सङ्गाच्छ्वेता मार्जारिका निर्गच्छति । सा च गच्छन्ती धीरं रनुगम्यते ।
यत्र झटादौ गत्वाः तर्घते तत्र एकहस्ते खनिते अस्मिन्

अनुसन्धानाय

कृत्वा मध्ये चंदन टिक्ककं कृत्वा गरुडाक्षतैर्जातिक लिङ्गाभिर्वा १०८ जाप दिन ६ न प्रतीक्षते कार्य सिद्ध्यति ।

अथ अप्रस्तुता अपि मन्त्रा नान्दीपदगर्मत्वात् प्रकाशयन्ते केचित्—नमो 'अरहस्ताणं इत्यादि नमो लोए सव्वसाहूणं' पर्यन्तमादौ पठ्यते ॐ नमो ।

जिणाणं २ नमो ओहिजिणाणं ३ नमो परमोहिजिणाणं ४ नमो सव्वो-
हिजिणाणं ५ नमो अणंतोहि जिणाणं ६ नमो कुट्टुबुद्धीणं ७ नमो बीज(य)बुद्धीणं
८ नमो पयाणुसारीणं ९ नमो संमिन्नसोयाणं १० नमो सयंबुद्धाणं ११ नमो
पत्तेयबुद्धाणं १२ नमो उज्जुमईणं १३ नमो विउलमईणं १४ नमो वसपुव्वीणं
१५ नमो चउदस- पुव्वीणं १६ नमो अट्ठंगमहानिमित्तकुसलाणं झौं झौं
सत्यं कथय कथय स्वाहा । अष्टोत्तरशतजापेन यत्किञ्चित्पुच्छयते तत् सर्वं
कथयति भवति च ।

अत्रापि पूर्वपाठः । १ ॐ नमो आमोसहिपत्ताणं २ नमो जल्लोसहिप-
त्ताणं ३ नमो खेलोसहिपत्ताणं ४ नमो विप्पोसहिपत्ताणं ५ नमो सव्वोस-
हिपत्ताणं झौं २ स्वाहा ।

गुल्म-शूल-प्लोह-दद्रु (दादु) गड-गण्डमाला-कुष्ठ-सर्वज्वरातिसार लूता
व्रण विषाणि अन्येऽप्यष्टोत्तरशत व्याघ्रय उज्जनेन जलपानेन नश्यति ।

पूर्ववत् पाठः । १ ॐ नमो उगगतवाणं २ नमो दित्तवाणं ३ नमो
तत्ततवाणं ४ नमो महातवाणं ५ नमो धोरतवाणं ६ नमो धोरगुणाणं ७ नमो
धोरपरक्कमाणं ८ नमो धोरगुणबभयारीणं झौं झौं स्वाहा । युद्ध तस्कराविषो-
ऽशमयनाशो युद्धे विजयश्च ।

पूर्ववत् पाठः । १ ॐ नमो खीरासवीणं २ नमो सट्ठिपरासवीणं ३ नमो
महुसवीणं ५८ नमो अमयसवीणं स्वाहा । सबौ वधी (धि) उत्पावन-बंधन-
विमो-आमिममन्त्रज कला पानीय स्वावरजङ्गमजाठरयोगज कृत्तिमादिसर्बविष

विमहरणं अस्सपावामृतध्यानेन ॥ १० ॥

स्तुतिपदानि ३२, २४, १८—१६—१३—१२—८ यावत् पक्ष
भविष्यति इहचात्यन्तगोप्यान्वाभ्यान्तराण्यपि सन्तीति बृद्धाः ।

तथाहि [ॐ नमो अरिहंताणं ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट्
विचक्राय ह्रीं अहं असिआउसा झौं झौं स्वाहा ॐ नमो भगवते अरिहंताणं
नमो ओहि जिजाणं ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रीं अहं
असिआउसा झौं झौं स्वाहा । पूर्वोक्तयंत्रस्वरूपं ध्यात्वा कायोत्सर्गेण दत्त्वा एतं
मंत्रमष्टोत्तरशतवारं जपेत् । ज्वरस्तम्भनं भवति ॥ २ ॥]

ॐ नमो बीज (य) बुद्धीणं । एतन्मंत्रमष्टोत्तरशतवारं कायोत्सर्गेण
यन्त्रस्वरूपं ध्यात्वा जपेत् । काशश्वासहृक्कारोगोऽपयाति ॥ ३ ॥

ॐ नमो परमोहिजिजाणं । एतन्मंत्रं ध्यात्वा कायोत्सर्गेण तिष्ठेत् ।
शिरोरोगोऽपयाति ॥ ४ ॥

ॐ नमो नमो सत्वोहिजिजाणं अक्षिरोगोऽपति ॥ ५ ॥

ॐ नमो-नमो अणंतोहिजिजाणं कर्णरोगनाशः ॥ ६ ॥

ॐ नमो-नमो कुट्टबुद्धीणं शूल-गुल्म-कृमिनाशः ॥ ७ ॥

ॐ नमो-नमो पत्तेयबुद्धाणं । प्रतिवादि पक्षस्थ विद्याच्छेद ॥ ८ ॥

‘ॐ नमो सयंबुद्धाणं’ झौं झौं स्वाहा । प्रतिदिवसं सिद्धभक्तिं कृत्वा
अष्टोत्तरशतदिनानि यावत् अष्टोत्तरशतं जपेत् कवित्वमागमवेदित्वं च
भवति ॥ ९ ॥

ॐ नमो बोहिबुद्धाणं झौं-झौं स्वाहा । पञ्चविंशतिदिनानि यावच्छतं
जपेत् एक संधौ (१) भवति ॥ १० ॥

ॐ नमो दसपुष्पाणं झौं झौं स्वाहा । एकान्तर भोजनं कृत्वा दिनास्त-
समये दिन ८० यावज्जपेत्, परसमयागमवेदित्वं भवति ॥ १३ ॥

ॐ नमो अट्टंगमहानिमित्तकुसलाणं झौं झौं स्वाहा । त्रिधा ब्रह्मचर्येण
दिन २४ चतुर्विंशतितीर्थंकरस्तवानन्तरं श्री खंडकुं कुमसितसर्षपकुण्डोगोक्षीरेण

पिष्टा सव्यकरेणालिह्य पश्चादुपरिसुगन्धपुष्पैरेकान्तेऽधरात्रवेलायां जपेत्
नष्ट-विनष्टचिन्ता सुख-दुःख जीवित-मरणादीन् सम्यग् जानाति ।

ॐ नमो विडम्बणइडिडपत्ताणं झौं झौं स्वाहा । दिन २८ पञ्चोपवा
स्क्रमेण रक्तकणवीरपुष्पैर्जपेत् १०८ । काम्यवस्तूनि प्राप्नोति ॥ १५ ॥

ॐ नमो विज्जाहराणं झौं झौं स्वाहा । दिन २५ यावत् जाती पुष्पैः
१०८ जपेत् देशतोऽन्तरिक्ष गामो ॥ १६ ॥

ॐ नमो चारणाणं झौं झौं स्वाहा । स्नात्वा नदी तीरे वार २५
जपेत् । कायोत्सर्गं कृत्वा नष्टमुष्टिचिन्तास्वरूपं जानाति ॥ १७ ॥

ॐ नमो पण्हसमणाणं झौं झौं स्वाहा दिन २८ यावत् श्वेतकणवीर
पुष्पैः १०८ जिनगृहे चन्द्रप्रभपादभूले जपेत् । आयुरवसानं कथयति ॥ १८ ॥

ॐ नमो आगासगमणाणं झौं झौं स्वाहा । दिन २८ जपेत् । अलवणका-
ज्जिकेनभोजनम् । योजनमेकं ले याति ॥ १९ ॥

ॐ नमो विट्ठी विसाणं झौं २ स्वाहा । गमनस्तम्भः ॥ २० ॥

ॐ नमो दिव्रतवाणं झौं २ स्वाहा २वौ मध्याह्ने दिन ३ जपेत्
चौरस्तयः ॥ २१ ॥

ॐ नमो महातवाणं झौं २ स्वाहा । शुद्धजलं १०८ अभिमन्त्रय पिबेत्,
अग्निस्तम्भः ॥ २२ ॥

ॐ नमो मणोबलीणं झौं २ स्वाहा । दिन २ जपेत् १०८, जल-
स्तम्भ ॥ २३ ॥

ॐ नमो धोरतवाणं झौं २ स्वाहा विष विषर्पादिरोगजयः ॥ २४ ॥

ॐ नमो महाधोरतवाणं झौं २ स्वाहा । दुष्टा न प्रभवन्ति ॥ २५ ॥

ॐ नमो धोरपरक्कमाणं झौं २ स्वाहा । लूतादिवोषायनयः ॥ २६ ॥

ॐ नमो धोरबन्धारोणं झौं झौं २ स्वाहा । बह्वाराक्षसनाशः ॥ २७ ॥

ॐ नमो आमोसहिपत्ताणं जन्मान्तरावस्थायां वैरकारणेन प्राप्तग्रह—
मेकदिन—मात्रेण न स्पृशति ॥ २८ ॥

ॐ नमो खेलोसहिपत्ताणं । सद्योऽपमृत्युनाशः ॥ २९ ॥

ॐ नमो जल्लोसहिपत्ताणं । शुद्ध नदीजले १०८ जपित्वा तज्जलं पिबेत्,
दिनत्रयेणापस्माराविरोगनाशः ॥ ३० ॥

ॐ नमो विष्णोसहिपत्ताणं श्रौं २ स्वाहा नरमारीशमः ॥ ३१ ॥

ॐ नमो मणोबलीणं (श्रौं श्रौं स्वाहा) दिन २ जपेत्, अजमारीशमो-
अष्टशतम् ॥ ३२ ॥

ॐ नमो वयणबलीणं श्रौं २ स्वाहा दिन ३ जपेत्, गोमारी-
शमः ॥ ३४ ॥

ॐ नमो अमयासबाणं (श्रौं २ स्वाहा,) समस्तोपसर्गनाशः ॥ ३५ ॥

ॐ नमो सप्पिरासवलद्धीणं श्रौं २ स्वाहा । एकाहिक—द्वयाहिक—
त्रयाहिक—चानुराहिक—षण मासिक वार्षिक—वातिका—पेत्रिक—श्लेष्मि-
कादीनां दिनत्रयेण शमः ॥ ३८ ॥

ॐ नमो खीरासबलद्धीणं श्रौं २ स्वाहा कायोत्सर्गे स्थित्वा १०८ जपेत्,
ततः शीरमभिमन्त्रय दिन २४ पिबेत्, अष्टादशकुष्ठव्रणोपशमः ॥ ३७ ॥

ॐ नमो जिणाणं जायमाणानं न य पूर्वे न य सोणियं न य पच्चइ
न य फुट्टइ वृणं ठः ठः । रक्षा लवणं जलक्किन्नंवार २१ अभिमन्त्र्य
बध्यते ॥ ३८ ॥

ॐ नमो जिणाणं नमो पण्हसमणां नमो वेसमणस्स नमो रयण चूडाए
नमो पुण्य भद्दमाणिभद्दाण नमो सव्वागुभूईणं रयजुतर पुप्फचूलाणं नमो अट्ठण्हं
वाईणं सिद्धिसंतिपुट्टिसिद्धाणुवयणं आणाइक्कमणिज्ज स्वाहा । गोरोयणा १०
मणसिलापत्तं कुंकुम च पोसपुण्णिमाए चउत्थेण ११ अट्ठसयं जाओ दायत्तो
पुस्तजोगे वा परिजवित्तेण गुलिया समालभिन्ना सव्वकज्जसाहणी होइ विसाणं
असज्जइया होइ ॥ ४४ ॥

अण्डकोष वृद्धि व खाख बिलाई मन्त्र

मन्त्र :—ॐ नमो नलाई-ज्यां बंठ्या हनुमंत आई पके न फुटे चले बाल जति

**रक्षा करे । गुरु रखवाला शब्द सांचा पिंड काचा चलो मन्त्र ईश्वरो
वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को ।**

विधि :—नीम की डाली से २१ बार झाड़े तो अण्डकोष वृद्धि तथा खाख बिनाई ठीक हो ।

मस्सा नासक मन्त्र

मन्त्र :—ॐ उमती उमती चल चल स्वाहा ।

विधि :—शुभ मुहूर्त में ११०० जाप कर इस मन्त्र को सिद्ध करने । फिर २१ बार पढ़कर लाल सूत में एक गांठ दे, और हर २१ बार पढ़कर एक गांठ दे । इस तरह तीन गांठ देने पर ६३ बार मन्त्र पढ़ लिया जायेगा । इस सूत्र को दाहिने पैर के अंगूठे में बांध देने से खूनी बवासीर की पीड़ा दूर होती है ।

व्रणहर मन्त्र

**मन्त्र :—ॐ णमो जिणाणं जावयाणं पुसोणि अं ए एणि सव्व पायेण वणमा
पच्चं उमा धुव उमा फुट् ॐ ॐ ठः ठः स्वाहा ।**

विधि :—इस मन्त्र से राख अभिमन्त्रित कर व्रण जिनको वण भी कहते हैं । जो बालको के शरीर पर हो जाते हैं उन पर अथवा शीतला के बर्णों पर लगावे, तो मिट जाते हैं ।

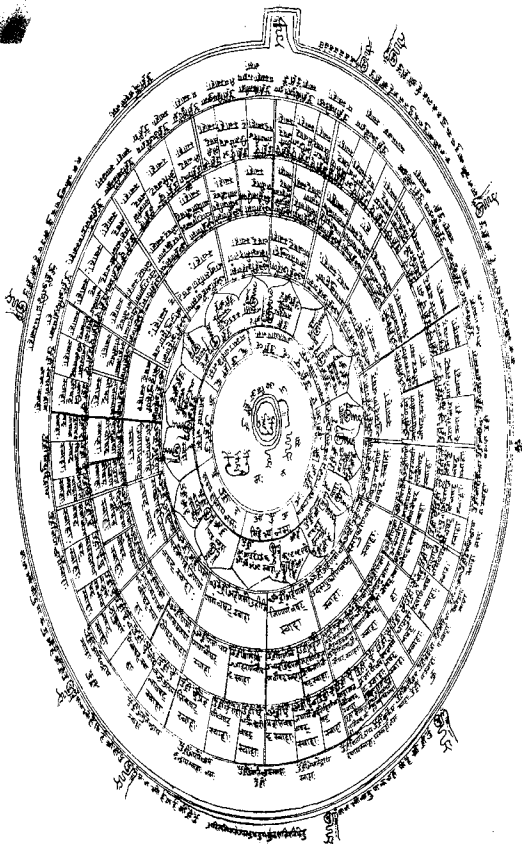
बाला (नहरवा) का मन्त्र

**मन्त्र :—ॐ नमो मरहर दे शंक सारी गांव महामा सिधुर चांद से बाले कियो
विस्तार बालो उपनो कपाल भांय या हुंतियो गींहु ओ तोड़ कीजं न
उबाला किया पावे फुटे पीड़ा करे तो विप्रनाथ जोगी रो आज्ञा फुरे ।**

विधि :—कुमारी कन्या के हाथ में लीने सूत की डोरी करके ७ गांठ मन्त्र पढ़कर दे, पैर के बाध दे । बाला ठीक हो जायगा ।

धाव की पीड़ा का मन्त्र

**मन्त्र :—सार सार बिजं सार बांधू सात बार फूटे धन्न उपजे धाव सीर राखे श्री
गोरखनाथ ।**



२४२

न हिमरो

रिंके हो।

बार पड़कर
हल ललह नील
रिंके के क पुरे

वेण बणमा

ते बानकी के
मे, ओ मिह

लं किपो
कोरं मे
हा कुरे।
दे, वेर के

रासे श्री

विधि :—इस मन्त्र को ७ बार पढ़कर घाव पर फूँके तो पीड़ा कम हो घाव भरे ।

कर्ण पिशाचिनी देवी का मन्त्र

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अहं णमो जिणाणं लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिद्याणं,
लोगपईधाणं, लोगपज्जोयगराणं मम शुमाशुभं दशंघ कर्णपिशाचिनी

नमः स्वाहा ।

विधि :—प्रतिदिन स्नान कर, शुद्ध वस्त्र पहनकर पूर्व की ओर मुँहकर रुद्राक्ष की माला से जाप शुरू करे । दसो दिशाओं में एक एक माला फेरे २१ दिन तक । फिर जब जरूरत हो तो रात के समय एक माला फेर कर जमीन पर सो जाय, चन्दन घिस कान पर लगावे । स्वप्न में प्रश्न का सम्पूर्ण उत्तर प्राप्त होगा, कान में बीज में चटका चलेगा, घबराये नहीं ।

क्लीं बीजमन्त्र

आकर्षण तन्त्र में सबसे पहले क्ली बीजमन्त्र को सिद्ध कर लेना चाहिए । इसके सिद्ध होने के बाद ही आकर्षण मन्त्रों व तन्त्रों का प्रयोग करना चाहिये । उसके अभाव में



सफलता प्राप्त करना सम्भव प्रतीत नहीं होता । क्ली बीज मन्त्र को काय बीज याति काय कला बीज कहते हैं । त्रिकोण की ऊर्ध्वमुख तथा अधोमुख स्थापन से जो आकृति बनती है ।

उसे योनि मुद्रा कहते हैं। इसके बीच में क्ली बीजाक्षर की स्थापना करके ध्यान करना चाहिये। इस मन्त्र का जाप करते समय निम्न बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है :—

१. सर्व प्रथम भृकुटी के बीच में योनि मुद्रा की कल्पना करके उसके बीच में क्ली बीजाक्षर की स्थापना कर उसका ध्यान करना चाहिये।
२. ध्यान में इसका वर्ण लाल रंग का बनाकर ध्यान करना चाहिये।
३. प्रातःकाल दो घण्टे तक इसका ध्यान करना चाहिये।
४. स्वस्थ मन शीत चित्त होकर ही ध्यान व जप किया जाना चाहिये।
५. दाहिने दाढ़ की कनिष्ठा अंगुली पर माला फेरनी चाहिये।
६. दण्डासन का उपयोग व दक्षिण दिशा की ओर मुंह रखना चाहिये।
७. प्रवाल (मूंगा) की माला का प्रयोग करना चाहिये।
८. ६ महिने में यह बीज मन्त्र सिद्ध हो जाता है। उसके बाद वशीकरण व आकर्षण आदि मन्त्र का प्रयोग करना चाहिये।

वाक् सिद्धि मन्त्र

मन्त्र :—ॐ नमो लिंगोद्भव रुद्र देहि में वाचा सिद्धिं बिना पर्वतं गते, द्रां, द्रीं, द्रूं, द्रौ, द्रः।

विधि - मस्तक पर बाया हाथ रखकर एक लक्ष जाप करे तो वचन सिद्ध हो।

मन्त्र :—ॐ णमो अरिहंतानं धम्म नाय गाणधम्म सार हीणं धम्म वर चाउरंण चक्क पट्ठीणं मम् परमैश्वर्यं कुरु कुरु ह्रीं हंसः स्वाहा।

विधि — पूर्व की ओर मुख करके सफेद आसन, सफेद माला व सफेद वस्त्र पहनकर शुभ मुहूर्त में जाप शुरू करें। मस्तक पर बाया हाथ रखकर एक लक्ष जाप कर, फिर एक माला रोज अर्पे तो वाक् सिद्धि होती है।

दाद का मन्त्र

मन्त्र :—गुरुभ्यो नमः देव देव पूरी दिशा मेहनाथ दलक्षना भरे विशाह तो राजा वरधिन आज्ञा राजा वासुकी के आन हाथ बगे चलाव।

विधि :—इस मन्त्र में पानी २१ बार मन्त्रोप कर पिलाने से दाद का रोग दूर होता है।

卐 भजन 卐

— संकलन कर्ता—श्री शान्ति कुमार गंगवाल

कुंधु सागर, गुरुवर हमारे, हमको दर्शन दे रहियो ।

मन मन्दिर में आजइयो ॥ टेक ॥

रेवा चन्द्र के राज बुलारे, माता के हो प्राण पियारे ।

हमको दर्शन दे रहियो, मन मन्दिर में आजइयो ॥१॥

बीस वर्ष में दीक्षा धारी, छोड़ी है धन दोलत सारी ।

शरण हमें स्वामी ले रहियो, मन मन्दिर में आजइयो ॥२॥

भेष दिगम्बर तुमने धारा, सकल भेष विज्ञान संवारा ।

भेद ज्ञान दरशा जइयो, मन मन्दिर में आजइयो ॥३॥

मंडल को है शरण तुम्हारी, पूरी करना आश हमारी ।

मोक्ष मार्ग बतला जइयो, मन मन्दिर में आजइयो ॥४॥

॥ आरती ॥

सतीषी लाल की बुलारी, मैं आरती उतारू तुम्हारी ॥टेक॥

कामा नगरी में जन्म लियो हे, जन्म लियो हे माता जन्म लियो है ।

माता जी हो प्यारी-प्यारी, मैं आरती उतारू तुम्हारी ॥१॥

यह संसार दुःखमय जाना, दुःखमय जाना, माता दुःखमय जाना ।

भारत देश उजियारी, मैं आरती उतारू तुम्हारी ॥२॥

बालापन में दीक्षा धारी, दीक्षा धारी, माता दीक्षा धारी ।

मुक्ति दीजे भव पारि, मैं आरती उतारू तुम्हारी ॥३॥

आप विदुषि हो माता जी, जय माता जी, जय माता जी ।

ज्ञान का है भण्डार भारी, मैं आरती उतारू तुम्हारी ॥४॥

गणनी विजयमती माता जी, जय माता जी, जय माता जी ।

मंडल है शरण तुम्हारी, मैं आरती उतारू तुम्हारी ॥५॥

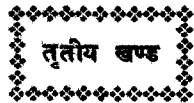


दि० जैन मन्दिर, जयसिंहपुरा खोर पर १०८ आचार्य गणधर श्री कुन्धसागर जी महाराज प्रवचन करने हुये । श्री लल्लूलाल गोधा महाराज श्री का करबद्ध प्रवचन सुनते हुए ।



दि० जैन मन्दिर, जयसिंहपुरा खोर की मूल वेदी में बैठे हुये १०८ आचार्य गणधर श्री कुन्धसागर जी महाराज एवं गणती १०५ आचार्य श्री विजयमती माताजी, प्राचीन भव्य मूर्तियों के दर्शन करते हुये, पास में श्री लल्लूलाल गोधा सम्पादक जयपुर जैन डायरेक्टरी मन्दिर व मूर्तियों के बारे में जानकारी देते हुए ।

लघु विद्यानुवाद



(पृष्ठ २४६ से ५६०)

इस खण्ड में

❖ मंत्र लिखने की विधि व बनाने की विधि	२४६
❖ यत्र महिमा वर्णन	२५१
❖ अथ यत्र महिमा छन्द का भावार्थ	२५२
❖ शत्रुन्दा पन्दरिया यत्र	२५६
❖ विभिन्न कष्ट निवारण यन्त्र (चित्र सहित)	२६०
❖ जय पताका यन्त्र	२६१
❖ सकट मोचन यन्त्र व विजय यन्त्र	२६३
❖ चौसठ योगिनी यन्त्र	२६६
❖ दूसरा चौसठ योगिनी यन्त्र	२६८
❖ चौबीस तीर्थंकरों का यत्र	३०१
❖ सर्व मनोकामना मिद्ध यन्त्र	३०३
❖ विभिन्न कष्ट निवारण यन्त्र	३०५
❖ श्री महालक्ष्मी प्राप्ति यन्त्र	३०७
❖ मनोकामना पूर्ण एवं कष्ट निवारण विभिन्न यन्त्र	३०८
❖ पद्मागुली महा यन्त्र का फल (चित्र सहित)	३६५
❖ यन्त्र व मन्त्र की साधन विधि	३६७
❖ महामन्त्र का पूजा विधान, पद्मावती स्तोत्र का यन्त्र, मन्त्र का साधन विधान (३० यन्त्र चित्र सहित)	४००
❖ श्री पद्मावतीदेवी स्तोत्र यन्त्र-मन्त्र, विधि सहित (१८ चित्र सहित)	४५३

❖ श्री लक्ष्मीदेवी स्तोत्र, यन्त्र-मन्त्र, विधि सहित	४८०
❖ विभिन्न प्रकार के रोग एवं कष्ट निवारण यन्त्र	५०३
❖ अथ घण्टाकर्ण मन्त्र, संक्षेप विधि सहित	५२६
❖ पुष्पागुली यन्त्र-मन्त्र की साधन विधि (चित्र सहित)	५३५
❖ ज्वाला मालिनी यन्त्र विधि	५३८
❖ ऋषि मण्डल यन्त्र विधि	५४२
❖ विभिन्न कष्ट निवारण यन्त्र (छुहारा गुण यन्त्र एवं धन्य यन्त्र)	५४३
❖ अजब	५६०



तृतीय यंत्राधिकार

मन्त्र लिखने की विधि व बनाने की विधि

६ १६ ७ ८

श्लोक :—इच्छा कृताद्धं कृत रूप हीनं । धने गृहे, षोडश सप्त चाष्टौ ।

१५ १०-० १ २ ७ ६ ३ ८ १ ४ ५

तिथि दशांशे प्रथमे च कोण्टे । द्वि सप्त षट् त्रि अष्ट कु वेद वाण ।

अर्थ - जितने का यन्त्र बनाना हो उस सख्या का आधा करना, उसमें से एक कम करना, पुनः एक-एक कम कर लिखना, धने गृहे—६ वा कोण्टे में लिखना, फिर १६ वे कोण्टे में लिखना, फिर ७ वे कोण्टे में लिखना, फिर ८ वे कोण्टे में लिखना, फिर १५ वे कोण्टे में लिखना, फिर १० वे कोण्टे में लिखना, इतना लिख जाने के बाद जो कोण्टे खाली कु वेद-वाण

रह जाये उन कोण्टों में क्रमशः २, ७, ६, ३, ८, १, ४, ५ ।

उदाहरणार्थ यन्त्र नीचे मुजब देखो जैसे कि हमको बनाना है ८४ का यन्त्र—

यन्त्र ८४ का

३४	४१	२	७
६	३	३८	३७
४०	३४	८	१
४	५	३६	३६

८४ — २ = ८२ - १ = ४१ इस ४१ सख्या को कोण्टक का जो प्रथम खाना है चार लाइन वाला, उसके दूसरे खाने में ४१ सख्या को रखे। फिर श्लोक में लिखा है कि, धने गृहे, राशियों में सबसे अन्तिम वाली गणी धन राशी है। इसलिए धन राशि को ६ वा न० दिया है। सो कोण्टक में भी नांवा खाना है उसमें एक सख्या घटा कर ४० रख देवे। इस प्रकार श्लोक में जो जो नंबर पूर्वक संकेत दिया है, उन २ खाने में एक २ सख्या को कम करते हुए रख देना। इस प्रकार रखते हुए यन्त्र बना लेना। इसी विधि से अन्य प्रकार जिसको जितनी सख्या का यन्त्र बनाना हो वह इसी प्रकार बनावे। ये १६ खाने वाले यन्त्र की विधि है।

नौ खाने वाले यन्त्र की विधि —एक नौ खाने वाला कोष्टक बनावे फिर उसको विधि के अनुसार सख्या भरे देवे ।

यन्त्र १५ का

८	१	६
३	५	७
४	९	२

उदाहरणार्थ : — जैसे हमको १५ का यन्त्र बनाना है तो हमने नम्बर कोठे में १ लिखे फिर ९ नम्बर के कोठे में २ लिखे, फिर ४ नम्बर के कोठे में ३ लिखे, फिर ७ नम्बर के कोठे में ४ लिखे फिर ५ नम्बर के कोठे में ५ लिखे, फिर ३ नम्बर के कोठे में ६ लिखे, फिर ६ नम्बर के कोठे में ७ लिखे, फिर १ नम्बर के कोठे में ८ लिखे, फिर २ नम्बर के कोठे में ९ लिखे, इस प्रकार यन्त्र कोष्टक भरने में १५ का यन्त्र तैयार हो जाता है। इसी प्रकार नौ कोठे के यन्त्र लिखने की विधि है। अन्य १८ या २१ का या ३३ जो भी जरूरत हो, वह इसी प्रकार लिखकर तैयार करे।

यन्त्र १८ का

९	२	७
४	६	८
५	१०	३

यन्त्र २१ का

१०	३	८
५	७	९
६	११	४

यन्त्र २४ का

११	४	९
६	८	१०
७	१२	५

में ७ लिखे, फिर १ नम्बर के कोठे में ८ लिखे, फिर ८ नम्बर के कोठे में ९ लिखे, इस प्रकार यन्त्र कोष्टक भरने में १५ का यन्त्र तैयार हो जाता है। इसी प्रकार नौ कोठे के यन्त्र लिखने की विधि है। अन्य १८ या २१ का या ३३ जो भी जरूरत हो, वह इसी प्रकार लिखकर तैयार करे।

यन्त्र लेखन विधि समाप्त ।

यन्त्र महिमा वर्णन

जिण चौबीसेपय प्रणमेवि, सह गुरु तणा वचन निमुणेवि ।
यंत्र तणो महिमा अतिघणो, भावे बोलूं भविषण सुणो ॥ १ ॥
सोले कोठे लखियें वीश, सघला भय टाले जगदीश ।
अठावीसवां रोग भय हरें, छत्रीशे छुति जय करे ॥ २ ॥
त्रीशे बलि सायंणि (शाकिनी) नाशंति, वत्रीशे सुख प्रसवते हुंति ।
देवध्वजा जो लखिये इसे, पर चक्र भय न होवे किमे ॥ ३ ॥
घर वारणे जो लखिये एह, कामण नव पराभवे तेह ।
शाकणि संहारनि हुवे तिहां, चौतीसो यंत्र लखिये जिहां ॥ ४ ॥
चालीशे शीश रोग टले, पागे वयरी हेला दले ।
अनेवली ठाकरवे बहुमान, वसुधाबलि वाधारे मान ॥ ५ ॥
वासठे बंध्या गर्भ जु धरें, ऐसा वयण सद्गुरु उच्चरें ।
चौसठ रो महिमा छे घणो, मार्गे भय न होवे कोई तर्णो ॥ ६ ॥
वारिभय रिपू शाकिणी तणा, चौसठना नहीं प्रण ।
बावत्तरी भूरु भूरि जेह, भुंके नर जय पाये तेह ॥ ७ ॥
पन्चासी पंथे भय हरे, अठयोत्तरि सो शिव सुख करे ।
वीशोत्तर सौ नयणे निरखंत, प्रसव वेदन तेब विहुत ॥ ८ ॥
बावनशोनो ऊलो नीर, मुख धोवे होवे बाहलो वीर ।
सत्तरि भय नो महिमा अनन्त, तुच्छ बुद्धि किम जाणे जंत ॥ ९ ॥
एक सो बहुत्तरो यंत्र प्रभाव, बालक ने टाले दुष्ट भाव ।
बिहुमोनो यंत्र लखिये वाट, वाणिज्य घणा होय हाट मझार ॥ १० ॥
त्रणशें नर नारी नो नेह, विणठो बांधे नहीं सन्देह ।
चारशे घर भय न बिहोय, कण उत्पत्ति घणी खेत्रे जोय ॥ ११ ॥
पाँच सैं महिला गर्भज धरें, पुरुष हने पुत्र संतति करे ।
छशे यन्त्र होय सुखकार, सातशे भगड़े होय जयकार ॥ १२ ॥

नवसे पंथे न लागे चोर, दश में बुख न परमवें घोर ।
 इग्यारसे छेजे जीव बुष्ट, तेहना भय टाले उत्कृष्ट ॥ १३ ॥
 बन्दी मौख बार से होय, दश सहसे पुनः तेहिज होय ।
 बली सयलनी रक्षा करे, एम यन्त्र तणी महिमा बिस्तरे ॥ १४ ॥
 पञ्चास से राजा विक मान, शाकिनि दोष निवारण जान ।
 कण्ठे तथा मस्तक जे धरे, अशुभ कर्म तें शुद्ध जे करे ॥ १५ ॥
 बावनना मो मस्तके तथा, कंठे क्षेत्रपालनो हित सदा ।
 पणयालीस सिर कण्ठे होय, सब वश्य धापें तस जोय ॥ १६ ॥
 कुंकुम गोरोचन्दन सार, मृग मद सों चौदस रत्नवार ।
 पवित्र पणे पुण्य मूल नक्षत्र, एकमना लखिये जो यन्त्र ॥ १७ ॥
 पार्श्व जिनेश्वर तणे पसाय, अलिय विघन सब दूर पलाय ।
 पंडित अमर सुन्दर इम कहे, पूजे परमारथ सब लहे ॥ १८ ॥
 ॥ इति छन्द महिमा ॥

अथ यंत्र महिमा छंद का भावार्थ :

बीसा यंत्र सोलह कोठे में लिखकर पास में रखने से तमाम तरह के भय का नाश होता है । २८ (अट्ठाइसा) यंत्र रोग भय को नष्ट करता है । ३६ (छत्तीसा) यंत्र छुत्ति सट्टा करने वाले पास रखकर करे तो विजय होती है । ३० (तीसा) यंत्र से शाकिनी भय नष्ट होता है । ३२ (बत्तीसा) यंत्र से कण्ठ के समय उपयोग करने से मुख में प्रसव होता है । ३४ (चौतीसा) यंत्र देवध्वजा पर लिखा जाय तो शुभकारक है । पर चक्र अथवा किसी के द्वारा भय प्राप्त होने वाला हो तो उसे मिटाता है । मकान के बाहर दीवार पर लिखने से पराभव नहीं होता । कामण दुमण का जोर नहीं चलता । शाकिनी आदि पलायण हो जाती है । ४० (चालीसा) यंत्र से सिरदर्द मिट जाता है । बैरी पावो में गिरता है । गांव में परगने में मान-सम्मान बढ़ता है । ६२ (बासठ) के यंत्र से बन्ध्या स्त्री भी मान-सम्मान गर्भ स्थिर धारण करती है । चौसठिया यंत्र की महिमा बहुत है । मार्ग में सर्व प्रकार के भय से बच जाता है । ७२ (वहत्तरिया) यंत्र से भूतप्रेत का भय नष्ट होता है,

संग्राम में विजय पाता है। ८५ (पिच्चासिये) यंत्र से मार्ग का भय मिटता है। अट्टोत्तरिये यंत्र से शिव मुख दाता सर्व कष्ट को नष्ट करने वाला है। २० (विशोत्तर) सो यंत्र बड़ा होता है जिससे प्रसव मुख रूप होता है। वेदना मिटती है। ५२ (बावन सी) यंत्र को पानी से धोकर मुख धोवे तां भाईचारा स्नेह बढ़ता है। भाई बहिन के आपस में प्रेम रहता है। १७० (एक सौ सत्तरिये) यंत्र की महिमा बहुत है। इसका वर्णन तुच्छ बुद्धि से मनुष्य नहीं कर सकता। १७२ (एक सौ बहत्तरिया) यंत्र से बालक को लाभ होता है, भय मिटता है। २०० (दो सौ) का यंत्र दूकान के बाहर दीवार पर या मांगलिक स्थापना के पास लिखने से व्यापार बढ़ता है। ३०० (तीन सौ) के यंत्र से नर नारी का प्रेम बढ़ता है और दूटा हुआ स्नेह फिर जुड़ जाता है। ४०० के यंत्र से घर में भय नहीं होता। खेत पर लिखने से वा लिखकर खेत में रखने से उत्पत्ति अच्छी होती है। ५०० के यंत्र से स्त्री का गर्भ धारण हो जाता है, और साथ ही पुरुष भी बांधे तो सतति योग भी होता है। बनता है। ६०० (छ. सौ) के यंत्र से मुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। ७०० के यंत्र वाधने से झगड़े टटो में विजय करता है। ९०० (नौ सौ) के यंत्र से मार्ग में भय नहीं होता, तस्कर का भय मिटता है। १००० (सहस्रिये) यंत्र से पराजय-भय नहीं होता और विजय पाता है। ११०० (ग्यारह सौ) के यंत्र से दुष्टात्मा की ओर से भय क्लेश होता हो तो वह मिट जाता है। १२०० (बारह सौ) के यंत्र से बन्दीवान् मुक्त हो जाता है। १०००० (दस सहस्रिये) यंत्र से बन्दीवान् मुक्त हो जाता है। ५०००० (पचास सहस्रिये) यंत्र से राज मान मिलता है, कष्ट मिटता है। इस तरह प्राचीन छन्द का भावार्थ है। इसमें बताये बहुत से यंत्र हमारे संग्रह में नहीं हैं, लेकिन यंत्र महिमा और उनमें होने वाले लाभ का पाना छन्द भावार्थ से समझ में आ सकेगा। जिनको आवश्यकता हो यंत्र शास्त्र के निष्णात से लाभ उठावे।

यंत्र लेखन गन्ध ॥ यंत्र अष्ट गंध से और यक्ष कंदम से लिखे जाते हैं और कलम के लिए भी अलग विधान है ॥ अनार की चमेली की और सोने की कलम से लिखना बताया है सो यंत्र के बयान में जिस प्रकार की कलम या गंध का नाम आवे वैसी तैयारी कर लेना चाहिये। लिखते समय कलम टूट जाय तो यंत्र से लाभ नहीं हो सकेगा और लिखते समय गवादि भी कम न हो जाय जिसका उपयोग पहले ही कर लेना चाहिये ॥ अष्ट गंध में अगर, तगर, गोरोचन, कस्तूरी, चन्दन, सिन्दूर, लाल चंदन कपूर इनको एक खरल में घोट कर तैयार कर लेना चाहिये। स्याही जैसी रस बना लेनी चाहिये ॥ २॥ अष्ट गंध का दूसरा प्रकार कपूर, कस्तूरी, केशर, गोरोचन, सधरफ, चन्दन और गेहूँला। इस तरह आठ वस्तु का बनता

है। अष्टगध का तीसरा विधान केशर, कस्तुरी, कपूर, हिगुल, चन्दन, लाल चन्दन, अगर, तगर लेकर घोटकर तैयार कर लेना। पंच गध का विधान केशर, कस्तुरी, कपूर, चन्दन, गोरोचन इन पांच वस्तु का मिश्रण कर रस बना बना ॥=॥ यक्ष कर्दम का विधान, चन्दन, केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तुरी, गोरोचन, हिगुल रस्ता जणी, अम्बर साने का वर्क, मिरच, ककोमु इन सबको लेकर म्याही जैसा रस बना लेवे ॥ ऊपर बनाए अनुसार म्याही जैसा रस तैयार कर पवित्र कटोरी या अन्य किसी स्वच्छ पात्र में लेना। ध्यान रखिये कि जिसमें भोजन किया हो अथवा पानी पिया हो तो वह कटोरी काम में नहीं आ सकेगी। स्याही यदि तत्कालिक बनाई हो अथवा पहले बनाकर मुखाकर रखी हो तो उसे काम में ले सकते हैं। सब तरह के गध या स्याही की तैयारी में गुलाब जल काम में लेना चाहिये और अनार की या चमेसी की कलम एक अंगुल से याने ग्यारह तेरह अंगुल लम्बी होनी चाहिए और याद रखिये कि ग्यारह अंगुल से कम लेना मना है। सोने का निब हो तो वह भी गया होता चाहिए जिसमें पहने कभी न लिखा हो। जिस हॉल्डर में निब डाला जाय उसमें लोहे का कोई अंश नहीं होना चाहिए। इस तरह की तैयारी व्यवस्थित रूप में की जाय ॥ भोजपत्र स्वच्छ हो, दाग रहित हो, फटा हुआ नहीं हो ऐसा स्वच्छ देखकर लेना और यत्र जितना बड़ा लिखना हो उसमें एक अंगुल अधिक लम्बा, चौड़ा लेना चाहिए। भोजपत्र न मिले तो अभाव में आवश्यकता पूरी करने को कागज भी काम ले सकते हैं ॥=॥ यत्र लेखन योजना ॥=॥ जब यत्र का साधन नया मिट्टि करने के लिए बैठे उसमें पहले यन्त्र को लिखने की योजना को समझ ले। बिना समझे या अभ्यास किये बगैर यत्र लिखोगे तो उसमें भूल हो जाना गम्य है। मान लो भूल हो गयी लिखे हुए अक्षरों को काट दिया या मिटा दिया और उसकी जगह दूसरा लिखा हो वह भी यंत्र लाभदायक नहीं होगा यदि अक्षर लिखते समय अधिक या एक के बदले दूसरा लिखा गया तो वह भी एक प्रकार की भूल मानी गयी है। अतः इसी तरह में लिखा गया हो तो उसका कागज या भोजपत्र, जिस पर लिख रहे हों उसको छोड़ दो और दूसरा लेकर लिखने लगो इस तरह एक भी भूल न होने पाए। इसीलिए पहले लिखने का अभ्यास कर लेना चाहिए ॥ यत्र लिखते समय यत्र में देख लो कि सबसे छोटा या कम गिनती वाला अक्षर किस स्थान में है ॥ और जिस खाने में हो उसी खाने से लिखना शुरू किया जाय और वृद्धि वाले अक्षर से लिखते जाओ। जैसे यत्र में सबसे छोटा अक्षर नञा है तो पांच का अक्षर जिस स्थान में है उसी स्थान से लिखने की शुरुआत करो और बाद में वृद्धि पाते हुए याने छ सात, आठ, जो भी सट्टा लिखे हुए को पहली अधिक हो उसे लिखते हुए यत्र पूरा लिख लो। ऐसा कर्म सत करना कि यंत्र के स्थाने अक्षरों का प्रथम के स्थाने में जो अक्षर हो उसे लिखकर बाद में जो खाने है

उनमें लाइन सिर लिखते जाओ। यदि इस तरह से यंत्र लिखा गया हो तो वह यंत्र लाभ नहीं पहुँचा सकेगा। इसलिए यंत्र लिखने की कला बराबर सीख लेनी चाहिए। श्रीर लिखते समय बराबर सावधानी से लिखना योग्य है "यंत्रों की योजना" यंत्र में जो विविध प्रकार के खाने होते हैं जिसमें से कई यंत्र तो ऐसे होते हैं कि जिनमें लिखे अंकों को किसी भी तरह से गिनते हुए अन्त की सख्या एक ही प्रकार की आवेगी। बहुधा इस प्रकार के यंत्र आप देखेंगे इस तरह की योजना से यह समझ में आता है कि यंत्र अपने बल को प्रत्येक दिशा में एकता रखता है और दिशा में भी निज प्रभाव को कम नहीं होने देता ॥ यंत्रों में भिन्न भिन्न प्रकार के खाने होते हैं, और वह भी प्रमाणित रूप में व अंकों से अंकित होते हैं। जिन प्रकार प्रत्येक अंक निज बल को पिछले अंक में मिला दश गुना बढ़ा देता है। तदनुसार यह योजना भी यंत्र शक्ति को बढ़ाने के हेतु की गयी, समझना चाहिये। जिन यंत्रों में विशेष खाने हैं और उन खानों में अंकित किए हुए अंकों को कियर में भी मिलान करने में एक ही योग की गिनती आती हो तो उस तरह के यंत्र अन्य हेतु में समझना चाहिए और ऐसे यंत्रों का योगांक करने की भी आवश्यकता नहीं होती है। ऐसे यंत्र इस तरह देवों से अधिष्ठित होते हैं कि जिनका प्रभाव चरित होना है—जैसे भक्ताक्षर प्रादि के यंत्र हैं। इसलिए जिन यंत्रों में योगांक एक मिलना हो उनके प्रभाव में या लाभ प्राप्ति के लिए अंक करने की आवश्यकता नहीं है ॥ यंत्र लेखन विधान ॥ ॥ यंत्र लिखने के ठेके तब यदि यंत्र के साथ विधान लिखा हुआ मिलेगा तो उस पर ध्यान देना चाहिए और खासकर यंत्र लिखने सीन रहना उचित है। मुख्यतः से आभन पर बैठना सामने थोड़ा बड़ा पाठिया या बाजोठ हो तो उस पर रखकर लिखना परन्तु निज के घुटने पर रखकर कभी न लिखना चाहिए। क्योंकि नाभि के नीचे का अंग ऐसे कार्यों में उपयोगी नहीं माना है।

प्रत्येक यंत्र के लिखते समय धूप, दीप आदि अवश्य रखना चाहिए और यंत्र विधान में जिस दिशा की तरफ मुख करके लिखना बताया हो देख लेंगे। यदि न लिखा मिले तो मुख-सम्पदा प्राप्ति के लिए पूर्व दिशा की तरफ और सकट-कण्ट, आधि-व्याधि के मिटाने को उत्तर दिशा की तरफ मुख करके बैठना चाहिए। तमाम क्रिया करें तो शरीर शुद्धि कर स्वच्छ कपड़े पहिन करके विश्रान पर पुरा ध्यान रखना ॥ ॥ यंत्र चमत्कार ॥—यंत्र का बहुमान कर उसमें लाभ प्राप्त करने की प्रथा प्राचीन काल से चली आती है। वार्षिक पर्व दिवाली के दिन दुकान के दरवाजे पर या श्रद्धर जहाँ देव स्थापना हो वहाँ पर पन्द्रहिया चाँदीस पैसेठिया यंत्र लिखने की प्रथा है। जगह-जगह बहुत देखने में आती है। विशेष में यह भी देखा है कि गर्भवती स्त्री कट पा रही हो या श्रद्धा न होना होता विधि सहित यंत्र दिखकर उस

स्त्री को दिखाने मात्र से ही छुटकारा हो जाता है। और किसी स्त्री को डाकिनी शाकिनी सताती हो तो यंत्र को हाथों पर या गले में बाँधने मात्र से या सिर पर रखने से व दिखाने मात्र से आराम हो जाता है ॥ प्राचीन काल में ऐसी प्रथा थी कि किले या गढ़ की नींव लगाने समय अमूक प्रकार का यंत्र लिख दीपक के साथ नींव के पास में रखते थे। इस समय भी बहुत से मनुष्य यंत्र को हाथ में बाँधे रहते हैं, और जैन समाज में तो पूजा करने के यंत्र भी होते हैं जिनका नित्य प्रति प्रक्षाल कराया जाता है। और चंद से पूजा कर पुष्प चढ़ाते हैं। इस तरह से यंत्र का बहुमान प्राचीन काल से होता आया है जो अब तक चल रहा है ॥ साथ ही श्रद्धावान लोग विशेष लाभ उठाते हैं। श्रद्धा रखने से आत्म विश्वास बढ़ता है। साथ ही श्रद्धा भी फलती है। जिस मनुष्य को यंत्र पर भरोसा होता है उसे फल भी मिलता है। एक निष्ठ रहने की प्रकृति हो जानी है और इतना हो जाने से आत्म बल, आत्म गुण भी बढ़ता है। परिणाम मजबूत होते हैं और आत्म शुद्धि होती है। इसलिए विश्व से रखना चाहिए।

यंत्र लेखन कैसे करवाना ॥—। जो मनुष्य मन्त्र शास्त्र यंत्र शास्त्र के जानकार और अक गणित जानने वाले ब्रह्मचारी, शीलमान, उत्तम पुरुष हो, उनसे लिखवाना चाहिए और ऐसे सिद्ध पुरुष का योग न पा सके तो जिस प्रकार का विधान प्रति मन्त्र के साथ लिखा हो उसी तरह से तैयारी कर मन्त्र लेखन करे। और लिखते ही यंत्र को जमीन पर नहीं रखना और जिसके लिए बनाया हो उसे सूर्य स्वर या चन्द्र स्वर में देना चाहिए ॥ लेने वाला बहुमान पूर्वक ग्रहण करते समय देव के निमित्त फल भेट करें तो अच्छा है। यंत्र लेने के बाद सोने के चाँदी या ताँबे के माद लिए मे यंत्र को रख देना भी अच्छा है। यदि माद लिया न रखना हो तो बैसे ही पास में रख सकते हैं। यंत्र को ऐसे ढग से रखना उचित है कि वह अपवित्र न हो सके मृत्यु प्रसंग में लोकाचार में जाना पड़े तो वापसी आने पर धूप खेने से पवित्रता आ जाती है ॥ - ॥

शकुनदा पन्वरिया यन्त्र ॥१॥

पंदरिया यन्त्र आपके सामने है इसमें एक से नौ अंक तक की योजना है। इसलिए इसको सिद्ध चक्र यन्त्र भी कहते हैं। इस यन्त्र पर शकुन लिए जाते हैं। ताँबे के पत्रे पर या कागज पर अष्ट गद्य से अच्छे समय में यंत्र लिख लिख लिया जाय और जहाँ तक हो सके (आम) आँबे के पाटिया का बना हुआ पाटला हो उस पर स्थापित करे। आँबे का पाटिया न मिल सके तो जैसा भी मिले उस पर स्थापित कर धूप से निज हाथों को स्वच्छ कर नवकार मन्त्र नौ बार बोलकर तीन चावल या तीन गेहूँ के दाने लेकर ऊपर छोड़ देवे। जिस अंक पर

कण अर्थात् दाने गिरे उसका फल इस तरह समझ लेंगे । चोके छक्के दीसे नहीं । शकुन बीचारी

यन्त्र नं. १

४	३	८
९	५	१
२	७	६

आवे, बीये अट्टे सात तिये बात मुनावे । रुके पञ्जे नव निधि पावे ॥ इस तरह फल का बिचार कर कार्य की सिद्धि को समझ लेना ॥१॥

द्रव्य प्राप्ति पन्वरिया यन्त्र ॥२॥

इस यन्त्र से बहुत से लोग इसलिए परिचित हैं कि दिवाली के दिन दुकान में पूजन विधान में लिखते हैं । जब कार्य की सिद्धि के लिए लिखना है तो सिन्दूर से लिखना चाहिए ।

यन्त्र न. २

४	३	८
९	५	१
२	७	६

पहले छोटे खाने शुद्ध कलम से बनाकर एक अंक छट्टे खाने हैं वहा से शुरुआत करे । सातवें खाने में दो का अंक दूसरे में तीन का अंक इस तरह चढते अंक लिखना चाहिये और बाद में चन्दन या कु कुम से पूजा कर पुष्प चढाना धूप खेय कर नैवेद्य फल चढा कर हाथ जोड़ लेना चाहिये यही इसका विधान है । यत्र लिखते समय जहाँ तक हो सके श्वास स्थिर रख मौन रहकर लिखना चाहिए और हो सके तो नित्य धूप खेव कर नमन कर लेना चाहिए ॥२॥

वशीकरण पंढरिया यन्त्र ॥३॥

यह पंढरिया यंत्र भोज पत्र या कागज पर पच गध से लिखना चाहिए। विशेषकर शुक्ल पक्ष में पूर्वं तिथि के दिन शुभ नक्षत्र में घी का दीपक सामने रख, धूप खेयकर चमेली की

यन्त्र नं० ३

६	७	२
१	५	९
८	३	४

यन्त्र नं० ४

२	७	६
९	५	१
४	३	८

कलम से लिखना और इस यंत्र को पास रखना चाहिए। शीघ्र से सिद्ध करना है तो जिस काम पर कायू करना है प्रातः काल में यन्त्र को धूप से खेवे और कार्य का नाम लेवे। यन्त्र को नमन कर पास में रख ले कार्य सिद्धि हो जाती है ॥३॥

उच्चाटन निवारण पंढरिया यन्त्र ॥४॥

यह यन्त्र उच्चाटन या उपद्रव को नाश करने में सहायक होता है। प्राचीन समय से ऐसी पद्धति चली आती है कि इस यंत्र को दिवाली के दिन दुकान के दरवाजे पर लिखते हैं और इस यंत्र को लिखने का कारण यही है कि भय का नाश हो और मुख सम्पदा आवे। लिखते समय धूप दीप रखना और सिन्दूर से चमेली की कलम से लिखना चाहिए। दरवाजे के सिरे पर कोई मांगलिक स्थापन हो तो उसके दोनों तरफ लिखना। स्थापना न हो तो दरवाजे में जाते दाहिनी तरफ ऊपर के भाग में लिखना चाहिए। इस यन्त्र को जब किसी मनुष्य को भय उत्पन्न हुआ हो और उसे वास्तविक भय के सिवाय बहम भी हो रहा हो तो उसके निवारण के लिए भोज पत्र पर अष्ट गध से लिखकर पास में रखने से स्थिरता आयेगी, बहम दूर होगा। यंत्र को दशांग धूप से खेना चाहिए ॥४॥

प्रसूति पीड़ा हर यंत्र (पंदरिया यंत्र)

प्रसूति को प्रसव के समय पीड़ा हो और शीघ्र छुटकारा न हो तो कुटुम्ब में चिंता बढ़ जाती है। जब ऐसा समय आया हा तो इस यंत्र को सिन्दूर से या चन्दन से अनार की

यन्त्र नं० ५

८	३	४
१	५	६
६	७	२

कलम से मिट्टी की कोरी ठीकरी जो मिट्टी के टूटे हुए वर्तन की हो। इसमें लिखकर लोबान से लेब्रकर प्रसूति वाली को बताने से प्रसव शीघ्र हो जायगा। प्रसूति स्त्री यंत्र को एक दृष्टि से कुछ देर देखती रहे, और इतने पर से प्रसव शीघ्र नहीं होवे तो चंदन से लिखे हुए यंत्र को स्वच्छ पानी से उस ठीकरी पर के यंत्र को धोकर वह पानी पिला देवे तो प्रसूति पीड़ा मिट जायगी ॥५॥

मृत्यु कष्ट दूर पंदरिया यन्त्र ॥६॥

यह यंत्र उन लोगों के काम का है जो जीवन को जोखिम का काम करते हैं। जल में, स्थल में, व्योम में या बराल यंत्र से आजीविका चलाते हो या ऐसा कठिन काम हो कि

यन्त्र नं० ६

८	१	६
३	५	७
४	६	२

जिनके करते समय आपत्ति आने का अनुमान किया जाता है। इस यंत्र की तरह के कार्य करने

वाले इस यंत्र को यक्ष कर्दम से लिखकर अपने पास रखे तो अच्छा है। इस यंत्र को अनार की कलम से लिखना चाहिए और दिवाली के दिन मध्य रात्रि में लिखकर पास में रखे तो और भी अच्छा है। दिवाली के दिन नहीं लिखा जाय तो अच्छा दिन देखकर विधान के साथ लिख मादलिये में रख पास में रखे ॥६॥

पिशाच पीड़ा हर यंत्र नं. ॥७॥ (सत्तरत्रिया यंत्र)

पिशाच, भूत-प्रेत, डाकिनी-शाकिनी इत्यादिक कष्ट पहुंचाना हो तो उसे निवारण करने के लिये ऐसे यंत्र को पास में रखना चाहिये। भोजपत्र या कागज पर यक्ष कर्दमसे अनार या चमेली की कलम से अमावस्या, रविवार और मूल नक्षत्र इन तीनों में एक जिस दिन हो

यंत्र नं० ७

॥	७	२	७॥
४	५॥	२॥	५
६॥	१	८	१॥
६	३॥	४॥	३

स्वच्छ होकर मौन रह कर इस यंत्र को लिखे लोबान व धूप दोनों का धुआं चलता रहे। उत्तर दिशा या दक्षिण दिशा की तरफ लाल या श्याम रंग के आसन पर बैठ कर लिखो। विशेष बात सात रंग के रेशम का धागा से यंत्र को लपेट देवे और मादलिये में रख ले या कागज में लपेट अपने पास रखे। विशेष जिसके लिये बनाया हो उसका नाम यंत्र के नीचे लिखे कि “शाकिनी पीड़ा निर्वाणार्थ या भूत पीड़ा निर्वाणार्थ। जिसकी ओर से पीड़ा होती हो उसका नाम लिखे। किसी मनुष्य को कोई शत्रु या क्रूर मनुष्य सताता हो, कष्ट पहुंचाना हो, हैरान करता हो, परेशान करता हो तो यंत्र लिखे अमुक द्वारा उत्पन्न पीड़ा के निवारणार्थ ऐसा लिखाना चाहिए और तैयार करने के बाद पास में रखे तो कष्ट हो रहा होगा उससे शांति मिलेगी। दोनों विधान में यक्ष कर्दम में लिखना चाहिए ॥७॥

सिद्धिदाता बीसा यन्त्र ॥८॥

बीसा यन्त्र बहुत प्रसिद्ध है और यह कई तरह के होते हैं जैसा कार्य हो वैसे यन्त्र बनाया जाय, तो लाभ होता है। इस यन्त्र को अष्ट गद्य से भोज पत्र चमेली की या सोने की कलम से लिखना चाहिए। भोजपत्र स्वच्छ लेकर गुरु पुष्पवार विपुष्य योग हो। उस दिन या पूर्णा तिथि

यन्त्र नं० ८

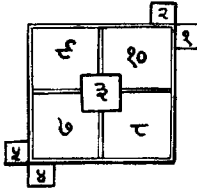
६	४	७
५	७	८
६	६	५

को लिखे और पूर्व दिशा या उत्तर दिशा की तरफ मुंह करके लिखे। दीपक धूप सामने रखे। यन्त्र तैयार होने के बाद जिसको दिया जाय वह खड़ा हो दोनों हाथों में लेकर मस्तक चढ़ावे और पाख रखे तो संसार के कामों में सिद्धि मिलती है ॥८॥

लक्ष्मीदाता विजय बीसा यन्त्र ॥९॥

इस यन्त्र को लिखना हो तब ग्राम्बे के पटिये पर गुलाल छोड़कर उस पर चमेली की कलम से एक सौ आठ बार यन्त्र लिखे वही गुलाल या दूसरी गुलाल छांटता रहे।

यन्त्र नं० ९

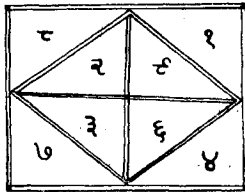


बारीक कपड़े में गुलाल रखकर पोटली बनाने से छांटने में सुविधा होगी। जब एक सौ घाठ बार लिख ले तब उसी समय अष्ट गंध से भोज पत्र पर या कागज पर यन्त्र को लिख कर पास में रखे तो उत्तम है। व्यापार या क्रय विक्रय का कार्य पास में रख कर किया करे और हो सके तो नित्य धूप भी देवे ॥६॥

सर्व कार्य लाभ दाता बीसा यन्त्र ॥१०॥

यह यन्त्र तमाम कार्य को सिद्ध करता है। इस यन्त्र को तांबे के पत्रे पर या भोज पत्र पर लिख कर तैयार कर अष्ट गंध और चमेली की सोने की कलम से लिखे। शुक्ल पक्ष शुभ

यन्त्र नं० १०



वार पूर्णा तिथि या सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग हो उस दिन लिख कर रख लेवे और अमृत धूप दीप रख लेवे प्रातः काल से यन्त्र की स्थापना कर सामने सफेद आसन पर बैठकर नीचे लिखे मन्त्र का जाप करे। जाप कम से कम साढ़े बागहू हजार और अधिक करे तो सवा लाख जाप पूरा कर, फिर यन्त्र को पास में रख कर कार्य करे ॥

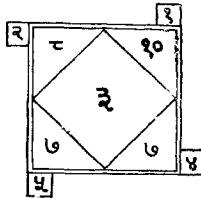
मन्त्र :— ॐ ह्रीं श्री सर्व कार्य फलदायक कुरु कुरु स्वाहाः। यन्त्र तैयार हो जाने के बाद जब पास में रखा जाय और अनायास प्रसूति ग्रह या अत देह दाह क्रिया में जाना हो तो वापस आकर यन्त्र को धूप मोखने मात्र से शुद्ध हो जायगा ॥१०॥

शांति पुष्टि दाता बीसा यन्त्र ॥११॥

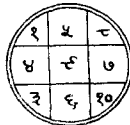
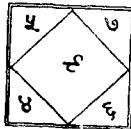
शांति पुष्टि मिलने के लिये यह यन्त्र बहुत उत्तम माना गया है। जब इस तरह का यन्त्र तैयार करना हो तो स्वच्छ कपड़े पहिन कर पूर्व दिशा की ओर देखता हुआ बैठकर धूप दीप

रख कर इष्ट देव का स्मरण कर इस यन्त्र को आवे के पटिये पर एक सी आठ बार गुलाब छोड़कर लिखी और विधि पूरी होने पर भोज पत्र या कागज पर, अष्ट गन्ध से लिखकर यंत्र

यन्त्र नं० ११



को अपने पास में रखे। जिसके लिये यन्त्र बनाया हो उसका नाम यन्त्र में लिखे अर्थात् मनुष्य के श्रेयार्थ ऐसा लिख शुभ समय में हाथ में चावल या मुपारी ले कर यंत्र सहित देवे। लेने वाला लेते समय तो आठर से लेवे, और कुछ लेने वाला भेंट यन्त्र के नाम से कर धर्मार्थ खर्च करे। यह यन्त्र शुभ फल देने वाला है। जाति पुष्टि प्रदायक है। श्रद्धा रख कर पास में रखने से फलदायक होता है।



बाल रक्षा बीसा यन्त्र ॥१२॥

इस यन्त्र की योजना में एक अक्षर वायं में दाहिने ओर का एक खाना बीच में छोड़कर दो बार आया है जो रक्षा करने में बलवान है। इस यन्त्र को शुभ योग में भोज पत्र या कागज पर अष्ट गन्ध से अनार की कलम से लिखी और लिखने के बाद भेंट कर ऊपर रेशम का धागा लपेटते हुए नां आटे लगा देवे। बाद में धूप खवे भादलिये में रखे। गले में या कमर पर जहाँ

यन्त्र नं० १२

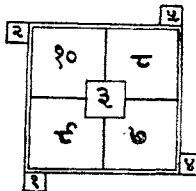
२	६	२	७
६	३	६	५
८	३	८	१
४	५	४	७

सुविधा हो बांध देके वास्तव में गले में बांधना अच्छा होता है। इसके प्रभाव में बालक बालिका के लिये भय, चमक, डर आदि उपद्रव नहीं होते और हर प्रकार से रक्षा होती है ॥१२॥

आपत्ति निवारण बीसा यन्त्र ॥१३॥

मनुष्य के लिये आपत्ति तो सामने खड़ी होती है। संसार आधि-ध्वाधि उपाधि की खान है। जब जब कष्ट आते हैं तब मित्र भी बैरी बन जाते हैं। ऐसे समय में इस यन्त्र द्वारा शांति मिलती है। आपत्ति को आपत्ति मानता रहे और हताश होता रहे तो अस्थिरता बढ़ती

यन्त्र नं० १३



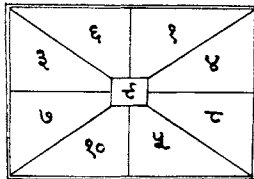
है। अतः इस यन्त्र को पंच गंध से बमेली की कलम से अक्षरों या कायज पर लिख कर धार में रखो और जिस मनुष्य के लिये यन्त्र बनाया हो उसका नाम यंत्र में लिखो अनुक की आपत्ति

निवारणार्थ ऐसा लिख कर समेट कर चावल, सुपारी, पुष्प और यंत्र हाथ में दे देवे। लेने वाला मंत्र को पास में रखे और चावल सुपारी आदि जल में प्रवेश करा देवे। आपत्ति में बचाव होगा और आपत्ति को नष्ट करने में हिम्मत पैदा होगी। विभाग में स्थिरता आवेगी साथ ही अपने इष्ट देव के स्मरण को भी करता रहे। इष्ट का आराधना ऐसे समय में बहुत सहायक होता है। और दान, पुण्य करने से आपत्ति का निवारण होता है। इस बात का ध्यान रखे। इष्ट सिद्धि होगी ॥१३॥

गृह क्लेश निवारण बीसा यन्त्र ॥१४॥

ग्रह क्लेश ग्रहस्थ के यहाँ अनायास छोटी बड़ी बात में हुआ करता है और सामान्य क्लेश हुआ हो तो जल्दी नष्ट हो जाता है परन्तु किसी समय ऐसा हो जाता है कि उसे दूर करने में कई तरह की कठिनाईयाँ आ जाती हैं और क्लेश, दिन-दिन बढ़ता रहता है। और ऐसे समय में यह बीसा यंत्र बहुत काम देता है। इस यंत्र को भोज पत्र या कागज पर यक्ष कदम से

यन्त्र नं० १४

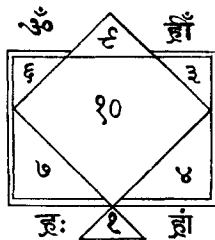


लिखना चाहिये और लिखने के बाद एक यंत्र को ऐसी जगह लगा देना कि जिस पर सारे कुटुम्ब की दृष्टि पड़ती रहे और एक यंत्र घर का मुखिया पुरुष निज के पास में रखे और पहला यंत्र जिस जगह लगाया हो वह शरीर भाग से ऊँची जगह पर लगावे और नित्य धूप सोय कर उपसम होने की प्रार्थना करे तो क्लेश नष्ट हो जाएगा। प्रत्येक कार्य में श्रद्धा रखनी चाहिये। इष्ट देव के स्मरण को कभी नहीं भूलना, जिससे कार्य की सिद्धि होगी ॥१४॥

लक्ष्मी प्राप्ति बीसा यन्त्र ॥१५॥

संसार में लक्ष्मी की लालसा अधिक रहा करती है। इसीलिये लक्ष्मी प्राप्ति के लिए अनेक उपाय संसार में गतिमान हों रहे हैं और ऐसे कार्यों की सफलता के लिये यह यंत्र काम में आता है। जिसको इस यंत्र का उपयोग करना हो तब उत्तम समय देखकर अष्ट

यन्त्र न० १५



गंध से या पंच गंध से लिखले। कलम मोने की या अनार की अथवा चमेली की जैसी भी मिल सके लेकर भोजपत्र या कागज पर लिखे और यंत्र को अपने पास में रखे। हो सके तो इस तरह का यंत्र ताबे के पत्र पर तैयार करा, प्रतिष्ठित करा, निज के मकान में या दुकान में स्थापना कर नित्य पूजा कर। सुबह शाम घी का दीपक कर दिया करे तो लाभ मिलेगा। इष्टदेव के स्मरण को न भूले। पुण्य सचय करे पुण्य से आशाएँ फलती हैं और दान देवे तो लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ॥१५॥

भूत-पिशाच-डाकिनी पीड़ा हर बीसा यन्त्र ॥१६॥

जब ऐसा बहम हो जाय कि भूत पिशाच-डाकिनी पीड़ा दे रही हो तब यंत्र-मन्त्र-तंत्र वाले को तलाश की जाती है। और इस तरह के बहम अक्सर स्थियों को हो जाया करते हैं और ऐसे बहम का यमग हो जाने से दिन भर सुस्ती रहती है रोना है, रुग्णता रखती है और ऐसे बहम का असर और पाचन शक्ति कम हो जाती है। और भी कई तरह के उपद्रव

हो जाने से घर के सारे मनुष्य चिन्तानुग हो जाते हैं और यत्र मन्त्र वालो की तलाश करने में बहुत साधन खर्च करते हैं ऐसे समय में यह बीसा यंत्र काम देता है। यंत्र को यक्ष कर्दम से अनार को कलम से लिखना चाहिये लिखते समय उत्तर दिशा की तरफ मुह करके बैठना और

यन्त्र नं० १६

८			६
	१	४	
	७	८	
३			२

यंत्र भोज पत्र पर अथवा कागज पर लिखवा कर दो यत्र कर लेना। जिसमें से एक यंत्र को मादलिया में रखकर गले में या हाथ में बांध देना। दूसरा यंत्र नित्य प्रति देखकर डब्बो में रख देना और जिस समय पीडा हो तब दो-चार मिनट तक आखे बन्द किये वगैर यंत्र को एक दृष्टि से देखकर वापस रख देना, सो पीडा दूर हो जायेगी, कष्ट मिटेगा और धन व्यय से बचन होगी। धर्म नीति को नहीं छोड़ना ॥१६॥

बाल भय हर इक्कीसा यन्त्र ॥१७॥

बालक को जब पीडा होती है, चमक ही जाती है तब अधिक भय पुत्र की माता को

यन्त्र नं० १७

१०	३	८
५	७	९
६	११	४

हुआ करता है और जिस प्रकार से हो सके पीड़ा मिटाने का उपाय किये जाते हैं, और घर के सब लोग ऐसा अनुमान करते हैं कि किसी की दृष्टि लगने से या भय से अथवा चमकते यह पीड़ा हो गयी है। इस तरह की पीड़ा दूर करने में यह यंत्र सहायक होता है। जब यंत्र तैयार करना होता तब भोजपत्र अथवा कागज पर यक्ष कर्दम से अनार की कलम लेकर लिखना चाहिये। जत्र यत्र तैयार हो जाय तब समेट कर कच्चे रेशमी धागे से सात अथवा नौ आंटे देकर मादलिये में रख गले में या हाथ में बांधने से पीड़ा मिट जाती है। आपत्ति चिंता का नाश हो जाता है। बालक आराम पाता है। नित्य इष्टदेव के स्मरण को नहीं भूलना चाहिये ॥ १७ ॥

नजर दृष्टि चौबीसा यन्त्र ॥१८॥

बालक को दृष्टि दोष हो जाता है। तब दूध पीने या कुछ खाते समय अरुचि हो जाने से वमन हो जाता है। पाचन शक्ति कम हो जाने से मुखाकृति रक्त रहित दिखने लगती

यन्त्र नं० १८

७	६	११
१२	८	४
५	१०	९

है। इस तरह की हानत हो जाने से घर में सबको चिंता हो जाती है। इस तरह परिस्थिति में चौबीसा यंत्र भोजपत्र अथवा कागज पर अनार की कलम लेकर यक्ष कर्दम ने लिखना चाहिये और मादलिये में रख गले में या हाथ पर बाधना और जिस ममुष्य का या स्त्री की दृष्टि की दृष्टि दोष हुआ हो उसका नाम देकर दृष्टि दोष निर्वाणार्थ लिखना चाहिये यदि नाम स्मरण न हो तो केवल इतना ही लिखना कि दृष्टि दोष निर्वाणार्थ यत्र तैयार हो जाय तब समेट कर कच्चे रेशमी धागे में आंटे देकर यंत्र के पास में रखे या गले पर या हाथ पर पर बांधे तो दृष्टि दोष दूर हो जाता है ॥ १८ ॥

प्रसूती पीड़ा हर उन्तीसा यन्त्र ॥१६॥

यह यन्त्र उन्तीसा और तीसा कहलाता है। ऊपर के तीन कोठे और बायीं तरफ के तीन कोठों में तो उन्तीस का योग आता है। और मध्यभाग के तीनों कोठे और नीचे के

यन्त्र नं० १६

१५	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

तीन कोठे और ऊपर से नीचे तक मध्य विमाना व दाहिनी ओर के तीन कोठों में तीस का योग आता है गर्भ प्रसव के समय में यदि पीड़ा हो रही हो तब इस यन्त्र को कुम्हार के अवाड़े की कोरी कोठरी पर अष्ट गंध से लिखकर बताने से प्रसव सुख हो जाएगा। बताने के बाद भी पीड़ा होती है तो यन्त्र को पीतल या तांबे के पत्र पर या थाली में अष्ट गंध से अनार की कलम से लिख कर धूप देकर धोकर पिलाने से पीड़ा मिटती है और प्रसव सुखपूर्वक हो जायगा ॥ १६ ॥

गर्भ रक्षा तीसा यन्त्र ॥२०॥

यह यन्त्र जब प्रसव का समय निकट नहीं और पेट में दर्द या और तरह की पीड़ा

यन्त्र नं० २०

१६	२	१२
६	१०	१४
८	१८	४

होती है तो उस यन्त्र को अष्ट गंध से लिखकर पास में रखने से पीडा मिटेगी । अकाल में प्रसव नहीं होगा और शरीर स्वस्थ रहेगा ॥ २० ॥

गर्भ रक्षा पुष्टि दाता बत्तीसा यन्त्र ॥ २१ ॥

यह यन्त्र गर्भ रक्षा के लिए उत्तम पाना गया है । जब महिने दो महिने तक गर्भ स्थिर रहकर गिर जाता हो अथवा दो चार महिने बाद ऋतुआव हो जाता हो तो इस यन्त्र को अष्ट गंध से तैयार करके पास में रख लेने से या कमर पर बाधने से इस तरह के दोष

यन्त्र नं० २१

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	६	८	१
४	५	१०	१३

मिट जाते हैं । गर्भ की रक्षा होती है और पूर्ण काल में प्रसव होता है । विशेष कर गर्भ स्थित रहने के पश्चात् बाल बुद्धि से जो स्त्री ब्रम्हचर्य नहीं पालती हो अथवा गर्भ पदार्थ खाती पीती हो उसी गर्भ स्थाव होता सम्भव है । और दो चार बार इस न ह हो जाने से प्रकृति ही ऐसी बन जाती है । इसलिये ऐसे अमंगल करने वाले कार्य को नहीं करना चाहिये और यत्र पर विश्वास रखकर शुद्धता से रखेगे तो लाभ होगा ॥ २१ ॥

भयहर सुख व्यवसाय वर्धक चौतीसा यन्त्र ॥ २२ ॥

इस यन्त्र को निज जगह व्यवसाय की रोकड़ रहनी हो या धन-सम्पत्ति रखने का स्थान हो या निजोगी के अन्दर दीवाली के दिन शुभ समय लिखकर दीप, धूप, पुष्प से पूजा करते रहना । यदि नित्य नहीं हो सके तो आपत्ति भी नहीं है । इस यन्त्र को अष्टगंध से लिख-

यन्त्र नं० २२

१	१०	४	१५
८	११	५	१०
१२	२	१६	३
१२	७	६	६

कर पास में रखा जाय तो उत्तम है। ताँबे के पत्र पर नैयार कर प्रतिष्ठित करके तिजोरी में रखना भी अच्छा है। जैसा जिसको अच्छा मानुम हो करना चाहिए ॥ २० ॥

मंत्राक्षर सहित चौतीसा यन्त्र ॥ २३ ॥

यह चौतीसा यन्त्र बहुत चमत्कारी है। धन की इच्छा करने वाले और ऋद्धि सिद्धि जय विजय के इच्छुक लोगों की मनोकामना सिद्ध करने वाला यह यन्त्र है। इस यन्त्र को ताँबे

यन्त्र नं० २३

ॐ	ह्री	श्री	क्ली	घ	न
कुरु	६	१६	८	१	दा
कुरु	६	३	१२	१२	य
द्धि	१५	१०	२	७	म
सि	८	५	११	१८	म
य	ज	द्धि	वृ	द्धि	ऋ

के पतडे पर तैयार कर प्रतिष्ठित करा लेवे और हो सके तो मंत्र एक लाख जाप यन्त्र के सामने धूप, दीप, रख कर लेवे। यदि इतना जाप नहीं हो सके तो साढ़े बारह हजार जाप तो अवश्य कर लेना चाहिये। जाप करते मंत्र बोला जाय उसमें एक गुरु कम है वह यह है कि मंत्र के अन्त में स्वाहा पल्लव से जाप करना जाय अर्थात् कुरु कुरु स्वाहा करना चाहिये जिसमें मंत्र शक्ति बढ़ेगी और यत्र-मंत्र नव पल्लवति जैसा होकर लाभ पहुँचायगा। जाप करते समय एक यंत्र भोज पत्र पर तैयार कर जाप करते समय तांबे के पतडे वाले मंत्र के पास ही रखें। जब जाप सम्पूर्ण हो जाये तब भोजपत्र वाले यन्त्र को नित्य अपने पास में रखें और तांबे के यत्र को, दुकान में या मकान में स्थापित कर नित्य दीप, पूजा किया करे। इतना कर लेने के बाद हो सके तो मंत्र को एक माला नित्य फेर लवे। और नहीं हो सके तो कम से कम २१ जाप तो अवश्य करना चाहिये। श्रद्धा रख कर इष्ट देव का स्मरण करता रहे। नीति से चले और दान पुण्य करता रहे तो लाभ होगा ॥ २३ ॥

प्रभाव प्रशंसा वर्धक चौतीसा यंत्र ॥ २४ ॥

चौतीसा यंत्र बहुत प्रसिद्ध है। और व्यापारी वर्ग तो इस यंत्र का बहुमान विशेष प्रकार से करते हैं। मेदा पाट मरु भूमि और मालव प्रांत में व्यापारी लोग अपनी दुकान पर

यन्त्र नं० २४

६	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	१	१४

दीवाली के दिन लिखते हैं प्राचीन काल में ऐसी प्रथा चलती है। कि शुभ समय में सिन्दुर से गणपति के पास लिखते हैं। दरवाजे पर, मकान की दीवार पर लिखना हो तो हड़मची से लिखना चाहिए। इस यंत्र को लिखने के बाद धूप, पूजा कर नमस्कार करने से व्यापार चलता रहता है। और व्यापारियों में इज्जत बढ़ती है प्रशंसा होती है और ऐसे यत्र भोज पत्र पर लिख-

कर पास में रखने से व्यापारी वर्ग में आगे वान की गिनती में आ जाता है। हर एक कार्य में लोग सलाह पूछने दायेंगे। परन्तु साथ ही कुछ योग्यता, बुद्धिमान, धैर्यता और निष्पक्षता भी होना चाहिये। सस्कार न हों और मिलन सार भी न हो तो यंत्र से साधारण फल मिलेगा। और परोपकारी स्वभाव होगा तो विशेष फल मिलेगा ॥ २४ ॥

धन प्राप्ति छत्तीसा यंत्र ॥२५॥

इस छत्तीसे यंत्र को दीवाली के दिन रात्रि में लिखना चाहिये। शुभ में दुकान के अन्दर सामने दरवाजे या मंगल स्थापना के दाहिनी और अथवा दुकान के अन्दर सामने की

यंत्र न. २५

१०	१७	२	७
६	३	१४	१३
१६	११	८	१
४	५	१२	१५

दीवार पर सिन्दूर से लिखे तो व्यापार बढ़ता है। व्यापार करते समय किसी प्रकार का भय, सकट आता हो तो मिट जायगा, प्रभाव बढ़ेगा और इस यंत्र को भोज पत्र पर लिख कर पास में रखना भी शुभ सूचक है ॥२५॥

सम्पत्ति प्रदान चालीसा यंत्र ॥२६॥

चालीसा यंत्र दो प्रकार का है। दोनों उत्तम हैं जो सामने है इस यंत्र को किसी भी महिने की सुदी पक्ष की एकादशी के दिन अथवा पूर्णिमा के दिन पंच गंध से लिखना चाहिये पंच गंध (१) केसर (२) कस्तूरी (३) कर्पूर (४) चन्दन (५) गोरोचन इन पांचो को मिश्रित कर उत्तम गंध बनाकर स्वच्छ भोजपत्र पर लिखना चाहिये। यह यंत्र पास में हो तो जोर, भय, मिटता है और नदी के किनारे या तालाब की पाल पर बाव आस आदि शिखर बैठें।

शुभ समय में यत्र लिखे । लिखते समय दृष्टि जल पर भी पड़ती रहे और लिखते समय धूप, दीप, अखड़ रखे तो मने डबड़ा पूर्ण होती है । इतना स्मरण रखना चाहिये कि ब्रह्मचर्य पालन

यत्र नं. २६

१२	१६	२	७
६	३	१६	१५
१८	१३	८	१
४	५	१४	१७

में सभ्यता का व्यवहार करने में और शुद्ध सम्पक वृत्ति से रहने में किसी प्रकार में कमी नहीं होनी चाहिये । आचरण शुद्ध रखने में क्रिया साधन फल देती है ॥२६॥

ज्वर पीड़ा हर साठिया यंत्र ॥२७॥

यह साठिया यंत्र ज्वर ताप एकान्तरा तिजारी आदि के मिटाने के काम में प्राता है इस तरह के डोरे धागे व यंत्र बनवाने की प्रथा छोटे गांवों में विशेष होती है और जो लोग

यत्र नं. २७

१	६	१	१८
६	१३	१७	४
१६	२	८	११
३	१६	१४	७

जिसमें थड़ा रखते हैं उनको मंत्र तंत्र यंत्र फलते भी हैं इस तरह के कार्य में इस यंत्र को अष्ट

गंध से तैयार कराके पास में रखने से पीड़ा दूर होती है शांति मिलती है। भोजपत्र पर अथवा कागज पर लिख पीड़ित के गले या हाथ पर बांधने से अथवा पास में रखने से लाभ होता है। इस यंत्र को कांसे के स्वच्छ पात्र में अष्ट पत्र से लिखकर पी सकता है, उत्तम पानी से धोकर पानी पिलाने से सभी ज्वरादि पीड़ा नष्ट हो जाती है ॥२७॥

चोबीस जिन पेसठिया यंत्र ॥२८॥

अथ पंच पण्डित यत्र गमितं चतुर्विंशति जिनस्तोत्रम् । वन्दे धर्मे जिनंसदा मुखं कं
चन्द्र प्रभ नाभिज । श्री मन्दिर जितेश्वर जय करं कुण्डं च शान्ति जिनम् । मुक्ति श्री फल
दायनन्त मुनिप बधे सुपाश्वं विभुं । श्री मन्मथ नृपात्म जयं सुखद पाश्वं मनादे भीष्टदम् ॥१॥
श्री तेमोश्वर सुव्रताच विमल पद्म प्रभ सावर सेवे समभव शं गूर नमि जिन मलिन जया नदनम् ।
वदे श्रीजिन शीतल च मुविष सेवेड जित मुक्ति द श्री संघ धतपञ्च विंशति नभ साक्षा दरं
वैष्णवम् ॥२॥ स्तोत्र सर्व जिनेश्वरे रमितं मन्त्रेषु मय वर एतत् म सङ्गत यत्र एव विजयो
द्रव्यो लिखित त्वाशु भः पाश्वं सन्निग्रह भाणा सब सुखदो माङ्गन्यभाला प्रदो वामागे वनिता
नारास्न दितरे कुर्वन्तुये भावतः ॥३॥ प्रस्थाने स्थिति युद्धवाद करगो राजादि मन्दर्शनं ।
वश्यार्थं सुत हेत वैधन कृते रक्षन्तु पाश्वं सदा । मार्गं सविण मे दवाग्नि उबलिते
चिन्ता दिनि नशितं । यत्नोऽय मुनि नेत्रसिंह कविता सङ्गत स्थित सौख्यदः ॥४॥
इति पंच पण्डित यत्र स्थापना ॥२८॥ उपर बताया हुआ स्तोत्र धोलते जाइये और
जिन तीर्थंकर भगवान के नाम का अंक धावे, उनका अंक मलया लिखने से
पेसठिया यत्र तैयार हो जाता है। इस तरह के यंत्र को, ताबे के पतडे पर तैयार करणुछ

यत्र न. २८

२२	२६	२	७
६	३	२६	२५
२८	२३	८	१
४	५	२४	२७

कराने के बाद घर में स्थापित कर ऊपर बताया हुआ स्तोत्र नित्य पढ़े, स्तुति धोल कर नमन करना चाहिये। इस तरह के यंत्र को भोजपत्र पर लिखवा कर पास में रखने से परदेश

जाते समय अथवा परदेश में रहते समय में लाभ होता रहेगा। किसी के साथ वाद विवाद करने से जय प्राप्त होगी राजा के पास अथवा और किसी के पास जाने से आदर होगा। निःसन्तान को पुत्र प्राप्ति होगी निर्धन को धन प्राप्त होगा। मागे में किसी प्रकार का भय नहीं होगा चोरो के उपद्रव से बचाव होगा। अग्नि प्रकोप से पीडा न होगी और अकस्मात् भय में

यंत्र नं. २६

१५	८	१	२४	१७
१६	१४	७	५	२३
२२	२०	१३	६	४
३	२१	१६	१२	१०
६	२	१५	१८	११

रक्षा होगी चिन्ता नाष्ट होगी प्रत्येक कार्य में विजय प्राप्त होगी इसीलिये जो अपना भविष्य उज्ज्वल बनाना चाहते हैं उन पुरुषों को इस यंत्र का आराधना करनी चाहिये। हमरा चोवीस जिन पेसठिया यंत्र ॥२६॥

पंचा षष्टि यंत्र गर्भित ॥२६॥

श्री चतुर्विंशति जिन स्त्रोत्रम् । आदि नेमि जिन तीर्था सभवा सुविध तथा, धर्म नाथ महादेव शान्ति शक्ति कर सदा ॥१॥ अनन्ते सुव्रतं भक्त्या नमि नाथ जिनोत्तमम् । अजित जिन कन्दर्प चन्द्र चन्द्र समप्रभम् ॥२॥ आदिनाथ तथा देवं सुपार्श्व विमलजितं । मल्लि नाथ गुणोपेतं धनुषा पद्म विशतिम् ॥३॥ अरुनाथ महावीर सुमति च जगद गुरुम् श्री प्रभ प्रभ भान । वामपूज्यं सुरनन्तम् ॥४॥ शीतलं शीतलं लोके श्रेयासं श्रयसेसदा । कुन्धु नाथ चवामेय श्री अभिनन्दन जितम् ॥५॥ जिनानां नामभिर्वन्दः पञ्चषष्टि समुद्भवा । यन्त्रोऽयं राजते लोके धेयांस यत्र तत्र सोऽयम् निरन्तरम् ॥६॥ यस्मिन् गृहे महा भक्त्या यन्त्रोऽयं पूज्यते बुधैः । भूतप्रतिपिशाचादि भय तत्र न विद्यते ॥७॥ सकल गुण निधानं यंत्र मेन विशुद्धम् । हृदय

कमल कोषे धी मतां ध्येय रूपम् । जयतिलक गुरु श्री सूरि राजस्य शिष्यो वदति सुख निदानम् ।
मोक्ष लक्ष्मी निवासम् ॥८॥ दूसरे पेसठिये यंत्र की स्थापना ॥२६॥ इस यंत्र का जो स्तोत्र
प्राठ श्लोक का बताया है उसका पाठ करते समय जिन तिर्यंकर का नाम आवे उनकी सख्या का
अंक लिखने से पेसठिया यंत्र तैयार हो जाता है । इस यंत्र का महात्मय भी बहुत है । यंत्र के

यंत्र न. २६

२२	३	६	१५	१६
१४	२०	१९	२	८
१	७	१३	१८	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

विधानानुसार ही तैयार करना चाहिये । जिस घर में ऐसे यंत्र की स्थापना पूजा हुआ करती
है उस घर में आनन्द मगल रहा करता है जो मनुष्य इस यंत्र की आराधना करते हैं उनको
प्रत्येक प्रकार के सुख मिलते हैं । और जिस मकान में स्थापना की हो वहाँ पर भूत-प्रेत
पिशाच का भय नहीं होता । अगर हुआ हो तो नष्ट हो जाता है । इस यंत्र का जितना आदर
करेंगे उतना ही अधिक सुख पा सकेंगे । इस यंत्र को निज के पास रखना हो तो भोज पत्र पर
तैयार कराके रखना चाहिये । ऐसे यंत्र शुद्ध अष्ट गंध से लिखने से लाभ देते हैं ॥२६॥

लक्ष्मी प्रदान अडसठिया यंत्र ॥३०॥

यह अडसठिया यंत्र बहुत प्रसिद्ध है । कई लोग दीवाली के दिन शुभ समय दुकान के
मंगल के स्थान पर लिखते हैं । इस यंत्र में यह खूबी है कि लक्ष्मी प्राप्ति के हेतु चमेली की

यंत्र नं० ३०

२	२८	८	३०
१६	२२	१०	२०
२६	४	३२	६
२४	१४	१८	१२

कलम लेकर अष्टगंध से लिखना चाहिये। और समेट कर रेशम लपेट कर निज के पास रखना और ध्यापार करते समय तो यंत्र को पास में रख कर ही करना चाहिये ॥३०॥

नित्य लक्ष्मी लाभ दाता बहतरिया यन्त्र ॥३१॥

बहतरि यंत्र के लिये कई मनुष्य खोज करते हैं। मंत्र का मिल जाना तो सहज बात है परन्तु विधान का मिलना कठिन बात है। इस यंत्र को सिद्ध करने समय जहा तक हो सके सिद्ध पुरुष की सानिध्यता में करना चाहिये और सिद्ध पुरुष का योग नहीं मिल सके तो किसी यंत्र के जानकार की सानिध्यता में करना चाहिये शुभ दिन देख कर शरीर व वस्त्र

यंत्र नं० ३१

२५	२०	२६
२६	२४	२३
२१	२८	२३

शुद्धता का उपयोग कर अधिष्ठाता देव को सान्ध्य समभ कर प्रातः काल में ढाई घड़ी कच्ची दिन चढ़े पहले अष्ट गंध से कागज पर बहतरि यंत्र लिखना चाहिये। कलम जैसी अनुकूल

आवे चमेली की या सोने की निव से लिखे जब यंत्र लिखने बैठे तब तक पूर्व दिशा की ओर मुख रखना चाहिये, आसन सफेद लेना चाहिये, उत्तम बताया है लिखते समय मौन रख कर लिखने के विधान को पूरा करते, वे जब यंत्र लेखन पूरा हो जाय जब यंत्र को एक स्वच्छ पट्टे पर स्थापन अगर बत्ती लगा देवे दीपक स्थापन करे और ढाई घड़ी दिन वाकी रहे तब अर्थात् सूर्यास्त से ढाई घड़ी पहले लिखे हुये यंत्रों को ऊंचे रख कर पानी से धोकर कागज भी जलाशय में डाल देवे। यह सब क्रिया समय पर ही करने का पूरा ध्यान रखे। एक विधान ऐसा भी है कि बहत्तर यंत्र अलग-अलग कागज पर लिखना चाहिये। और कोई एक कागज पर लिखना बताते हैं। जैसा जिसको ठीक मालूम हों सुविधा अनुसार लिखे। इस प्रकार से बहत्तर दिन तक ऐसी क्रिया करना चाहिये। और बहत्तर दिन ब्रह्मचर्य पालना चाहिये सत्य निष्ठा से रहना और कुछ तपस्या करे जिससे क्रिया फलवती होगी। इस प्रकार से बहत्तर दिन पूरे हो जाय और तिहत्तरवें दिन १ प्रातः काल ही बहत्तर यंत्र लिखकर एक डब्बी में लेकर दुकान में रख देवे या गल्ले में, तिजोरी में या ताक में रखकर नित्य पूजा कर लिया करे। इस तरह करते रहने से धन की आय और उज्ज्वल, मान, सम्मान की वृद्धि होगी। सुख और सौभाग्य बढ़ता है। दृष्ट देव के स्मरण को चीनः सत्य, निष्ठा धर्म नीति को नहीं छोड़ना चाहिये १ तिहत्तर दिन प्रातः काल यंत्र लिख कर डब्बी में रख देवे यंत्र की पूजा कर धूप, दीप, रखना, कुछ भेंट भी रखना और दिन रात अखंड जोत रखना ॥३१॥

सर्प भय हर अस्सीया यन्त्र ॥३२॥

इम यन्त्र का विंशेण करके सर्प के उपद्रव में काम आता है। जब सर्प का भय

यन्त्र न० ३२

३२	३६	२	७
६	३	२६	३५
३८	३३	८	१
४	५	३४	३७

उत्पन्न हुआ या मकान में बराबर निकलता हो ग्रथवा घर नहीं छोड़ता हो तो अस्सीयां यंत्र सितूर से मकान की दीवार पर लिख कर और जहाँ तक हो ऐसी जगह लिखना चाहिये कि जहाँ सर्प की दृष्टि यंत्र पर गिर जाय अथवा कांसी को थाली में लिखा हुआ तैयार रखें सो जब सर्प निकले जब उसे थाली बता देवे सो सर्प का भय मिट जायेगा। और उपद्रव नहीं करेगा। विधान तो बताता है कि सर्प उस मकान को छोड़कर ही चला जायगा। किन्तु समय का फेर हो तो इतना फल नहीं देता है तो भी उपद्रव भय तो नहीं रहेगा। ऐसा समय घर में सर्प हर नाम की श्रौषधि जो काश्मीर जिले में बहुतायत से मिलती है मंगवा कर घर में रखने से सर्प तत्काल निकल जायेगा। लेकिन सर्प को मारने की बुद्धि नहीं रखना चाहिये। सर्प को सताने से वह क्रोध कर के काटता है वह समझता है मुझे मारते है और सताया न जाय तो वह अपने प्राण चला जाता है ॥३२॥

भूत प्रेत हर पिच्छासिया यंत्र ॥३३॥

अक्सर (प्रायः) जब मकान में कोई नहीं रहता हो और बहुत समय तक बेकार सा पड़ा हो तो ऐसे मकान में भूत प्रेत अपना स्थान बना लेते हैं और भूत प्रेत नहीं भी बसते हो और मकान में रहने लगे उसके बाद कुछ अनिष्ट हो जाय तो उस मकान में परिवार

यन्त्र नं० ३३

३४	४२	२	७
६	३	३६	३७
४१	३५	८	१
४	५	३६	४०

के लिये बहम सा हो जाता है और मकान को खाली कर देते हैं। लोकबाणी फैल जाती है और ऐसे मकान में कोई बिना किराये भी रहने को तैयार नहीं होता है। ऐसी अवस्था

में यंत्र को पक्ष कर्दम से मकान की दीवार पर अन्दर के भाग में लिखें। और आवश्यकता हो तो प्रति मकान में लिखना भी बुरा नहीं है। यंत्र लिखने के बाद हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें कि हे देव स्वस्थान गच्छ: इस तरह करने से उपद्रव शांत हो जायगा और सुख पूर्वक मकान में रह सकेंगे। देव धूप दिल से प्रसन्न होते और प्रार्थना स्वीकार करते हैं। इसलिये इक्कीस दिन तक सायंकाल के समय एक घोंका दोपक कर धूप खेंव देनी चाहिये ॥३३॥

सुख शांति दाता: इक्ष्वाणु के का यन्त्र ॥३४॥

कभी कभी ऐसा बहम हो जाता है कि इस मकान में आये बाद घर में से बीमारी नहीं निकलती है या सुख से नहीं रहने पाते हैं। कोई न कोई आपत्ति आ ही जाती है। इस तरह के कारण से उस मकान को छोड़ने की भावना हो जाती है। ऐसा प्रसंग आ जाय तो इस यंत्र को पक्ष कर्दम से मकान के अन्दर व दरवाजे के बाहरी भाग पर लिखना चाहिये। सायंकाल को धूप खेव कर प्रार्थना करना चाहिये कि यन्त्राधिष्ठायक देव मुख स्नाति कुरु २ स्वाहा: इस तरह से इक्कीस दिन तक करने से सुख-शांति रहेगी और बहम मिट जायगा ॥३४॥

यन्त्र नं० ३४

३७	४५	२	७
६	३	४२	४०
४४	३८	८	१
४	५	३६	४३

गृह क्लेश हर निन्यानबे का यन्त्र ॥३५॥

गृहस्थी के गृह संस्कारों व्यवसाय के लिये अथवा विशेष कुटुम्ब के कारण या यों कह दीजिये कि मित्रियों के स्वभाव के कारण जरा सी बात पर मन मुटाव हो जाता है और उसे न संभाला जाय तो घर में क्लेश बढ़ जाता है। जिस घर में इस तरह के क्लेश होते हैं उनकी

आजीविका भी कम हो जाती है और व्यवसाय व व्यवहार में शोभा भी कम हो जाती है। बाहर के दुश्मन से मनुष्य सम्भल के रह सकता है किन्तु घर का दुश्मन खड़ा हो तो आपत्ति रूप हो जाती है। धन, वैभव, मकान मिलकियत वही दस्तरे, खत, खुनु जिसके हाथ आई हो दबा देता है। और ऐसी अवस्था हो जाने से घर की इज्जत कम हो जाती है। इस तरह की परिस्थिति हो तब इस यंत्र को यक्ष कदम से मकान के अन्दर और खास कर पणिहारे पर और चूल्हे के पास बाली दीवार पर लिखे और अगरवत्ती या धूप सायकाल को कर दिया करे। इस तरह से इक्कीस दिन तक करे और बाद में आपस में फँसला करने बैठे तो कार्य निपट जायगा। साथ ही स्मरण रखना चाहिये कि न्याय नीति और कर्तव्य पूर्वक कार्य करोगे तो सफलता मिलेगी। घर की बात को बाहर नहीं फैलाने देना चाहिये। इसी में शोभा है इज्जत की रक्षा है। जो लोग स्त्रियों के कहने में आकर भ्रात प्रेम कुटुम्ब स्नेह और कर्तव्य को भूल जाते हैं। उनका दिन मान बिगड़ा समझना। प्रत्येक कार्य में इष्ट देव को न भूलना चाहिये ॥३५॥

यन्त्र नं० ३५

३६	२६	३४
३१	३३	३५
३२	३७	३०

पुत्र प्राप्ति गर्भ रक्षा यन्त्र ॥३६॥

यह साँ का यंत्र है और इसको आशा पूर्ण यंत्र भी कहते हैं। जिसको सन्तान नहीं हो या गर्भ स्थिति के बाद पूर्ण काल में प्रसन्न होकर पहले ही गिर जाता है तो यह यंत्र काम देता है। इस यंत्र को अष्ट गंध से लिखना चाहिये। अष्ट गंध बनाने में (१) केशर (२) कपूर (३) गौरोचन (४) सिन्दुर (५) हींग (६) खैरसार, इन सब को बराबर लेना परन्तु केशर विशेष डालना, जिससे लिखने जैसा रस तैयार हो जायगा इतना कार्य शुद्धता पूर्वक करके भोज पत्र पर दीवाली के दिन मध्यरात्रि में तैयार कर स्त्री गले पर या हाथ पर जहाँ ठीक मालूम हों बाध देवे। पुत्र के इच्छुक हो तो पति-पति दोनों को बांधना वैसे तो कर्म

यन्त्र नं० ३६

४२	४६	२	७
६	३	४६	४५
४८	४३	८	१
४	५	४४	४७

प्रधान है। जैसे कर्म उपार्जन किये होंगे वसा ही फल मिलेगा - परन्तु उद्यम उपाय भी पुरुषों को बताए हुए है, करने में हानि नहीं है। अपने इष्ट देव को स्मरण करते रहे पुण्य प्राप्त करना सो क्रिया फल देगी। स्त्री गर्भ धारण करेगी, पूर्ण काल में प्रसव होगा अपूर्ण समय में गर्भ-नाश नहीं होगा ऐसा इस यन्त्र का प्रभाव है। श्रद्धा विश्वास रखने से सर्व कार्य सिद्ध होते हैं। पुण्य धर्म साधन नीति व्यवहार से आशा फलती है ॥३६॥

ताप ज्वर पीड़ा हर एक सौ पांचवा यन्त्र ॥३७॥

यह एक सौ पांचवा यन्त्र है। ताप ज्वर एकांतरा तिजारी को रोकने से काम देता है।

यन्त्र नं० ३७

५६	७	४२
२१	३५	४६
२८	६३	१४

भोज पत्र पर या कागज पर लिख कर धागे डोरे से हाथ पर बांधने से ताप ज्वरादि मिट जाते

जाते हैं। यन्त्र तैयार हो जायेगा तब धूप से खोव कर इक्कीस बार ऊपर कर पीड़ा वाले को बांधने से ज्वर पीड़ा मिट जाय तब यन्त्र को कूँए के पानी में डाल देना, विश्वास रखना और इष्ट देव को स्मरण करते रहना ॥३७॥

सिद्धि दायक एक सौ आठवां यन्त्र ॥३८॥

इस यन्त्र को अष्ट गंध से भोज पत्र या कागज पर लिखना चाहिये। कलम चमेली की लेना चाहिए। सोने की नीब हो तो और भी अच्छा है। यंत्र तैयार कर बाजोट पर रखकर धूप,

यन्त्र न० ३८

४६	५३	२	७
६	३	५०	४६
५२	४७	८	१
४	५	४८	५१

दीप, पुष्प चढ़ा कर पूजन वास क्षेप तप से पूजा कर सामने फल नैवेद्य चढ़ा कर नमस्कार कर यंत्र को समेट कर पास में रखो। यंत्र जिस कार्य के लिये बनाया हो उसका संकल्प यंत्र की पूजा करने के बाद खयाल कर नमस्कार कर लेवे और जहां तक कार्य सिद्ध न हो तब तक प्रातःकाल में नित्य प्रति धूप से या अगरबत्ती से खेव लिया करे। इष्ट देव का स्मरण कभी न भूले। कार्य सिद्ध होगा ॥३८॥

भूत प्रेत कष्ट निवारण एक सौ छत्तीस यन्त्र ॥३९॥

इस यन्त्र को मकान के बाहर भी लिखते हैं और पास में भी रखने को बताया जाता है। वैसे तो लिखने का दिन दीवाली की रात्रि को बताया है। परन्तु आवश्यकता अनुसार जब चाहे लिखते और हो मके तो अमावस्या की रात्रि में लिखना जिसमें यन्त्र लाभ दायक होगा।

जब भूत प्रेत डाकिनी का भय उत्पन्न हुआ हो तो इस यन्त्र को बांधनेसे मिट जायगा और इसी

यन्त्र नं० ३६

४	५६	१६	६०
३२	४४	२०	४०
५२	८	६४	१२
४८	२८	३६	२४

तरह के कष्ट होंगे तो वह भी इस यन्त्र के प्रभाव से कम हो जायेंगे और सुख प्राप्त होगा। इस तरह यन्त्र को भोज पत्र पर या कागज पर अष्ट गंध से लिखना चाहिये और मकान की दीवार पर सिन्दूर से लिखना चाहिये ॥३६॥

पुत्रोत्पत्ति बाता एक सौ सत्तरिया यन्त्र ॥४०॥

यह सौलह कोठे का यन्त्र एक सौ सत्तरिया है। इस यन्त्र से धन प्राप्ति में जय विजय

यन्त्र नं० ४०

७७	८४	२	७
६	३	८१	८०
८३	७८	८	१
४	५	७६	८२

म, पुत्र प्राप्ति के हेतु बनाना हो तो अष्ट गंध से लिखना चाहिये। भोज पत्र पर कागज दाग न हो और स्वच्छ हो। कागज पर लिखे तो अच्छा कागज लेवे और शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा (पूर्णा) तिथि पंचमी दशमी पूर्णिमा को अच्छा होगा देख कर तैयार करें। लेखनी चमेली की या सोने की नीब से लिखे और पास में रखे तो मनोकामना सिद्ध होगी और सुख प्राप्त होगा। धर्म पर पाबन्द रह पुण्योपाजित करने से आशा शीघ्र फलती है। इष्ट देव के स्मरण को नहीं भूलना चाहिये ॥४०॥

एक सौ सत्तरिया दूसरा यन्त्र ॥०१॥

इस यन्त्र को लक्ष्मी प्राप्ति हेतु जय विजय के निमित्त इस यन्त्र को भी काम लेते हैं। गर्भ रक्षा और अन्य प्रकार की पीड़ा मिटाने के लिये भी काम लेते हैं गर्भ रक्षा करने के लिए इस यंत्र को अच्छे दिन शुभ समय में अष्ट गंध से भोजपर पत्र अथवा कागज पर लिखना चाहिये।

यन्त्र नं० ४१

४५	३६	५०	३६
४२	४७	३७	४४
३५	४६	४०	४६
४८	३१	४३	३८

ये एक सौ सत्तरिया दोनों यन्त्र लाभदायी हैं। नीति न्याय पर चलना चाहिए और इष्ट देव को स्मरण करते रहना जिससे यन्त्राधिष्ठायक देव प्रसन्न होकर मनोकामना सिद्ध करेगा। यन्त्र मादलिया में रखे या मोम के कागज में लपेट कर पास में रखें ॥४१॥

व्यापार वृद्धि दो सौ का यंत्र ॥४२॥

इस यंत्र का दो विधान है। पहला विधान तो यह है कि दीवाली के दिन अर्ध रात्रि के समय सिन्दुर या होगुल से दुकान के बाहर लिखे तो व्यापार की वृद्धि होती है। दूसरा

विधान यह है इस यंत्र को भोज पत्र पर अथवा कागज पर पंच गंध से लिखे जिसमें केसर, कस्तूरी कपूर, गोरोचन और चंदन का मिश्रित हो उत्तम पात्र में पंच गंध से तैयार कर चमेली की कलम से लिखें। यह यंत्र विधेय कर दीवाली के दिन अर्घ रात्रि के समय लिखना चाहिये

यंत्र न० ४२

६२	६६	२	७
६	३	६६	६५
६८	६३	८	१
४	५	६४	६७

और ऐसा समय निकट नहीं हो और कार्य की आवश्यकता हो तो अमावस्या के अर्घ रात्रि के समय लिख, और जिसके लिये बनाया गया हो, उसी समय प्रातः काल दे देवे। यंत्र को पास में रखने से ऋतु वीर्य का स्वाव नहीं रुकना हो तो रुक जायेगा। गर्भ धारण करेगा और रक्षा होगी इष्ट देव का स्मरण नित्य करना चाहिये ॥४२॥

लक्ष्मी दाता पांच सो का यंत्र ॥४३॥

इस यंत्र को पास में रखने से लक्ष्मी प्राप्ति होगी और विधान इसका यह है कि

यंत्र न० ४३

२४२	२४६	२	७
६	३	२४६	२४५
२४८	२४३	८	१
४	५	२४४	२४७

पुत्र की इच्छा वाले पति-पत्नी पास में रखे तो आशा फलेगी। शुभ कामना के लिये अष्ट गंध से लिखना और बेरी, पुष्प पराजय के हेतु यक्ष कंदम से लिखना चाहिये। कलम चमेली की लेना और यंत्र मादलिया में रख पास में रखना अथवा कागज में लपेट कर जब में रखना। धर्म के प्रताप से आशा फलेगी। दान पुण्य करना धर्म निष्ठा रखना ॥४३॥

सात सो खोबीस यंत्र ॥४४॥

इस यंत्र को एक सो इक्यासिया यंत्र भी कहते हैं। इस यंत्र को वशीकरण यंत्रको

यंत्र नं० ४४

१८१	१८१	१८१	१८१
१८१	१८१	१८१	१८१
१८१	१८१	१८१	१८१
१८१	१८१	१८१	१८१

बाँदी के पतड़े पर तैय्यार करा कर प्रतिष्ठा कराकर पूजा कराने से भी लाभ होता है जिसको जैसा योग्य माजूम हो करा लेवे। धर्म पर श्रद्धा रखे। इष्ट देव का स्मरण किया करें ॥४४॥

लक्ष्मिया यंत्र ॥४५॥

इस यंत्र को सोना गेरू से लिख कर अपने पास रखने से अग्निभय से बचाव होता है। जिन लोगों को मातेहाती में काम करना पड़ता है और उपरी अधिकारी बार २ नाराज होते हैं। तो इस यंत्र को पंच गंध से लिखकर अपने पास रखे तो अधिकारी की कृपा रहती है अक्सर कई जगह पति पत्नि के आपस में वैमनस्व हो जाया करता है। वहमी भी अल्प समय में हो तो दुःखदायी नहीं होता। परन्तु बार २ क्लेश होता हो तो इस यंत्र को कुंकुम से लिख कर पुरुष पास में रखे तो पतिन के साथ प्रेम बढ़ता है। अक्सर ऐसे यंत्र दीवाली के दिन मध्य

यंत्र नं० ४५

४६६६२	४६६६६	२	७
६	३	४६६६६	४६६६५
४६६६८	४६६६३	८	१
४	५	४६६६४	४६६६७

रात्रि में लिखते हैं और धन प्राप्ति अथवा दूसरे किसी काम के लिये बनवाना हो तो पंच गंध से लिखते हैं, जिसमें केसर, कस्तूरी चंदन, कपूर, मिश्री का मिश्रण होना चाहिये ॥४५॥

संख्या यंत्र दूसरा ॥४६॥

इसको भी दीवाली के दिन मध्य रात्रि में लिखते हैं और अष्ट गंध से लिख कर यंत्र जिसके लिये बनाया हो अथवा उसका नाम लिखकर पास में रखने से अय विजय होता है

यंत्र नं० ४६

४२०००	४६०००	२०००	७०००
६०००	३०००	४६०००	४५०००
४८०००	४३०००	८०००	१०००
४०००	५०००	४४०००	४७०००

व्यवसाय करते समय जिस गद्दी पर बैठते हैं उसके नीचे रखने से व्यवसाय में लाभ होता है। ऊपर बताया हुआ लिखिया यंत्र भी ऐसे कार्य में लाभ देता है। जिसको जो यंत्र ठीक लगे उसी

का उपयोग करे। इस यंत्र का एक विधान और भी है। वह हमारे संग्रह में नहीं है। परन्तु विधान यह है कि दीवाली की मध्य रात्रि में लिखकर उसके सामने एक पहर तक यंत्र का ध्यान करे। और फिर वन खंड में या बाग में अथवा जलाशय के किनारे बैठकर यंत्र के सामने एक पहर तक यंत्र का ध्यान करे। जिससे यंत्र सिद्ध हो जायगा क्रिया करते समय लोभान का घूप बनाकर रखना चाहिये तो यंत्र सिद्ध हो जायगा और भी इन दोनों यंत्र के कई चमत्कार हैं। श्रद्धा रखकर इष्ट देव का स्मरण करते रहना चाहिये जिससे कार्य सिद्ध होगा ॥४६॥

यन्त्र नं० ४७

५१	८	५३	६४	१	४६	६६	६	७१
४६	४४	६२	१६	३७	५५	२४	४२	६०
३५	८०	१७	२८	७३	११०	३३	७८	१५
६६	३	४८	६८	५	५०	७०	७	५२
२१	३६	५७	२३	४१	५६	२१	४३	६१
३०	७५	१२	३२	७७	१४	३४	७६	१६
६७	४	४६	७२	६	५४	६५	२	४७
२२	४०	५८	२७	४५	६३	२०	३८	५६
३१	७६	१३	३६	८१	१८	२६	७४	११

जयपता का यंत्र ॥ ४७ ॥

यह जयपता का यंत्र है जिस व्यक्ति को महात्माओं की कृपा प्राप्त हो जाती है उसीको इस यंत्र की आम्नाय मिलती है । सामान्य से इस यंत्र के लिये कहा है कि इस यंत्र को पंच गंध अथवा अष्ट गंध से लिखे और किसी खास काम पर विजय पाने के लिये बनाना हो तो यक्ष कर्दम से लिखे । लिखते समय इक्कीसी कोठे में पांच का अंक बनाकर चढ़ते अंक से लिखने को शुरू करे जैसे प्रथम पंक्ति के पांचवा कोठे में एक का अंक लिखे । सातवी लाइन के आठवे कोठे में दो का अंक लिखे । चौथी लाइन के पांचवे कोठे में पांच का अंक लिखे । प्रथम लाइन के आठवे कोठे में ६ का अंक लिखे । चौथी लाइन के आठवे कोठे में सात का अंक लिखे । प्रथम लाइन के दूसरे कोठे में आठ का अंक लिखे । सातवी लाइन के पांचवे कोठे में नौ का अंक लिखे और तीसरी लाइन के छठे कोठे में दस का अंक लिखे । इस तरह से सम्पूर्ण अंक को चढ़ते अंक से लिखकर पूर्ण करे और तैयार हो जाने पर जिम मनुष्य के लिये बनाया हों उसका नाम व कार्य का संक्षेप नाम यंत्र के नीचे लिखे । इस तरह से तैयार कर लेने के बाद यंत्र को एक बाजोटे पर स्थापन कर अष्ट द्रव्य से पूजा कर यथा शक्ति भेट भी रखे और बहुत मान से यंत्र को लेकर पास में रखें तो लाभदायी होता है । नीति न्याय को नहीं छोड़े । चरित्र शुद्ध रखे । जिससे सफलता मिलेगी ॥ ४७ ॥

विजयपता का यंत्र ॥ ४८ ॥

इस यंत्र के लिखने का विधान जयपताका की तरह समझना चाहिये । विशेष इस यंत्र में यह विशेषता है कि प्रत्येक पंक्ति के पांचवे खाने में अक्षर एक है चौथे में अनुस्वर है और छठे पंक्ति के प्रत्येक खाने में अक्षर दो का है आठवे कोठे में अक्षर तीन का है कहीं ६ का, कहीं आठ का अंक अधिक बार आया है । इस यंत्र को विधि से लिख कर पास में रखने से विजय मिलती है । वाद विवाद करते समय मुकदम की बहस करते समय और सग्राम में अथवा इसी तरह के दूसरे कामों में प्रयास प्रमाण या प्रवेश किया जाय तब इस यंत्र को पास रखने से सहायता मिलती है इस यंत्र का लेखन अष्ट गंध या पंच गंध अथवा यक्ष कर्दम से हो सकता है बाकी विधान जयपताका यंत्र की तरह समझ लेना चाहिये श्रद्धा से कार्य सिद्ध होता है विजय पाते हैं हिम्मत रखने से आशा फलती है ॥ ४८ ॥

यन्त्र नं० ४८

४७	५८	६९	८०	१	१२	२३	३४	४५
५७	६८	७९	९०	११	२२	३३	४४	५५
६७	७८	८	१०	२१	३२	४३	५४	६५
७७	७	१८	२०	३१	४२	५३	६४	७५
८	१७	१९	३०	४१	५२	६३	७४	८५
१६	२७	२९	४०	५१	६२	७३	८४	९५
२६	२८	३९	५०	६१	७२	८३	९४	१५
३६	३८	४९	६०	७१	८२	९३	१४	२५
३७	४८	५९	७०	८१	९२	१३	२४	३५

संकट मोचन यंत्र ॥ ४९ ॥

इस यंत्र से यह लाभ है कि शरीर अस्वस्थ हो गया हो या पेट दर्द हो गया हो तो उस समय अष्ट गंध से कासो की वाली मे यंत्र निज्जल, धोकर पिलाने से दर्द मिट जाता है। इस तरह के विधान है, सो समझ कर उपयोग करे ॥ ४९ ॥

यन्त्र नं० ४६

११५	१५५	१५६	१३२	१५४	१५३	१२७
१३८	११६	१५१	१३१	१५२	१२६	१३७
१३३	१३४	११७	१३०	१२५	१३५	१५६
१३६	१४०	१२४	११८	१४१	१४३	१४३
१४४	१२३	१४५	१२६	११६	१४६	१४७
१२२	१४८	१४६	१२६	१५०	१२०	१२१

विजय यंत्र ॥ ५० ॥

इस यंत्र को विजय यंत्र और वर्द्धमान पताका भी कहते हैं हमारे संग्रह में इसका नाम वर्द्धमान पताका है, परन्तु इस यंत्र को विजय राम यंत्र समझना चाहिये क्योंकि यही नाम इस यंत्र के मंत्र में आया है। इस यंत्र को रविवार के दिन लिखना चाहिये। और ऐसा भी लेख है कि केपुसंडिया तारा का उदय हो तब लिखना चाहिये। जब यंत्र तैयार हो जाय तब एक बाजोर पर स्थापन कर धूप दीप की जयणा सहित रखकर कुछ भेंट रखकर और नीचे बताये हुये मंत्र की एक माला फेरना ॥ मंत्र ॥ ॐ ह्रीं श्री क्लीं नमः विजय मंत्र राज्यधार कस्य ऋद्धि वृद्धि जयं सुखं सौभाग्य लक्ष्मी मम् सिद्धि कुरु २ स्वाहाः ॥ जिसको जैसा ध्यान मालूम हो, उपयोग करे। इस तरह की माला फेरते पंचामृत मिश्रित शुद्ध वस्तुओं का हवन करना भी बताया है। इस यंत्र के तीन विभाग बताये हैं प्रत्येक विभाग के अलग-२ यंत्र भी हैं। जिसका वर्णन इस प्रकार है—

- (१) प्रथम विभाग के यंत्र से दृष्टि दोष, डाकिनी शाकिनी, भूतप्रेत आदि का भय नष्ट होता है ।
- (२) दूसरे विभाग के यंत्र से अधिकारी आदि को प्रसन्नता रहती है ।
- (३) तीसरे विभाग के यंत्र से अग्नि भय, सर्प का भय या उपद्रव नष्ट होता है ।
- (४) चौथे विभाग के यंत्र से ताप एकान्तरा, तिजारी आदि नष्ट होती है ।
- (५) पाँचवे विभाग के यंत्र से नवग्रह आदि पीडा नष्ट होती है ।
- (६) छठे विभाग के यंत्र से विजय पाते हैं ।
- (७) सातवें विभाग के यंत्र से मन्दिर आदि के दरवाजे पर लिखने से दिन-दिन में उन्नति होती है ।
- (८) आठवें विभाग के यंत्र से धनुष आदि शस्त्र पर बाधने से विजय पाते हैं ।
- (९) नवें विभाग के यंत्र से दीवालों के दिन दीवार पर लिखने से जय विजय होती है । इस तरह से नौ विभाग के यंत्रों का वर्णन है । प्रथम विभाग के ग्रन्थ गिनती के अनुसार, प्रथम पंक्ति के मध्य का समझना, इसी तरह से दूसरा, तीसरा आदि चढ़ते हुए ग्रन्थों से समझना चाहिए । इस यंत्र का दूसरा विभाग इस प्रकार है कि बिधि सहित यंत्र तैयार करके एकान्त स्थान में शुद्ध भूमि बनाकर कुम्भ स्थापना कर अखण्ड ज्योत रखे और चोकोर पाटे पर नन्दी वर्धन साधिया करे । चावल सवा सेर, देशी तेल के केसर से रंगे हुये अखण्ड हो, उनसे साधिया कर फल नैवेद्य और रुपया, नारियल चढ़ावे फिर सामने बैठकर साढ़े बारह हजार जाप यंत्र के सामने पूरे करले । वे नियमित जाप की संख्या प्रतिदिन एक सी हो इस तरह से विभाग कर जाप पांच दिन अथवा आठ दिन में पूरा कर लेवे । जाप करने के दिनों में चढ़ने से पहले पूजा कर लेवे । भूमि सयन ब्रह्मचर्य पालन और आरम्भ का त्याग कर नित्य स्थापना कर स्थान में ही करे । जिसदिन जाप पूरे हो जाय साधिया में से चावल चूटि भर कर लेवे । और सिरहाने रखकर एक माला यन्त्र की फर कर सो जावे । रात्रि के समय स्वप्न में शुभा शुभ कथन देव द्वारा मालूम होंगे और धन वृद्धि होगी । कार्य सिद्ध होगा । आशा प्रद्व्या से और पुण्य से फलती है । पुण्य, धर्म साधन से उपार्जित होता है । इसका पूरा स्थाल करे । ॥५०॥

ਯਨ੍ਰ ਨੰ० ੫੦

੭੧	੬੪	੬੨	੮	੧	੬	੫੩	੪੬	੫੧
੬੬	੬੮	੭੦	੩	੫	੭	੪੮	੫੦	੫੨
੬੭	੭੨	੬੫	੪	੬	੨	੪੯	੫੪	੪੭
੨੬	੧੬	੨੪	੪੪	੩੭	੪੨	੬੨	੫੫	੬੦
੨੧	੨੩	੨੫	੩੬	੪੧	੪੩	੫੭	੫੬	੬੧
੨੨	੨੭	੨੫	੪੦	੪੫	੩੮	੫੮	੬੩	੫੬
੩੫	੨੮	੩੩	੮੦	੭੩	੭੮	੧੭	੧੦	੧੫
੩੦	੩੨	੩੪	੭੫	੭੭	੭੯	੧੨	੧੪	੧੬
੩੧	੩੬	੨੯	੭੬	੮੧	੭੪	੧੩	੧੮	੧੧

यन्त्र नं० ५१

२५८	१
३६९	२
४७०	३
३६९	४
४७०	५
५८१	६
४७०	७
५८१	८
६९२	९
५८१	०

सिद्धा यन्त्र ॥ ५१ ॥

यह सिद्धा यन्त्र, सिद्धा सटोरियों के काम का है। इस यन्त्र को पास में रखने की आवश्यकता नहीं है। न ही दीप, धूप रखकर भोज पत्र में लिखने की आवश्यकता है। यह यन्त्र तो जो इसकी गिनती के अनुभवों हैं उन्ही के काम का है। जो पुरुष इसका उपयोग समझ सकेगा, वही लोग ऐसे यन्त्रों से लाभ उठा सकेंगे और बिना अनुभव से कार्य करने वाला हानि उठाता है ॥ ५१ ॥

चौसठ योगिनी यन्त्र ॥ ५२ ॥

यह चौसठ योगिनी यन्त्र कई तरह के कार्य सिद्ध करने में समर्थ है। इस यन्त्र के लिखने में यह खूबी है कि एक का अंक लिखे बाद दो अंक तिरछे कोठे में, तिरछे एक कोठे के बीच में छोड़ कर लिखा गया है। इसी तरह के तमाम अंक तिरछे कोठे में एक-एक छोड़ते हुए लिखे हैं और अन्त में चौसठवें अंक पर समाप्ति की है। इस यन्त्र की लेखन विधि को अच्छी समझ लेना चाहिये और यन्त्र लिख कर जिस कार्य की पूर्ति के लिए बनाया हो उसकी बिगत

यन्त्र नं० ५२

४६	७	२०	३३	४४	५	१८	३१
२१	३४	४५	६	१६	३२	४३	४
८	४७	६०	५७	६२	५३	३०	१७
३५	२२	६३	५४	५६	५६	३	४२
४८	६	५८	६१	५२	४१	१६	२६
२३	३६	५१	६४	५५	५८	१३	२
१०	४६	३६	२५	१२	१५	४०	२७
३७	२४	११	५०	३६	३६	१	१४

और जिसके लिये बनाया हो उसका नाम यन्त्र में लिखना चाहिए। जब यन्त्र, विधि सहित तैयार हो जाये तब शुभ समय में पास में रखे और हो सके वहाँ तक कार्य सिद्धि तक धारण करना चाहिए। धूप लिये देने से प्रभाव बढ़ता है कष्ट भी शीघ्र मिटता है और भावना फलती है। इष्ट देव देवी की पूजा करना और दान पुण्य करना सो कार्य ठीक होगा ॥५२॥

दूसरा चौसठ योगिनी यंत्र ॥५३॥

२६० का यह यन्त्र बहुत से कार्य में काम आता है। लिखने का विधान सर्वत्र समझना चाहिये। इस यन्त्र को तांबे के पतले पर बनवा कर पूजा करने से भी लाभ होता है। इष्ट देव की सहायता से कार्य सिद्ध होता है। मनुष्य का प्रयत्न करने का काम है ॥५३॥

यन्त्र न० ५३

७	८	५६	६०	६१	६२	२	१
१६	१५	५१	५२	५३	५४	१०	६
४२	४१	२२	२१	२०	१६	४७	४८
३३	३४	३०	२६	२८	२७	३६	४०
२५	२६	३८	३७	३६	३५	३१	३२
१७	१८	४६	४५	४४	४३	२३	२४
५६	५५	११	१२	१३	१४	५०	४६
६४	६३	३	४	५	६	५८	५७

उदय अस्त अंक ज्ञाता यंत्र ॥५४॥

यह उदय अस्त अंक ज्ञाता यन्त्र है। इसका ज्ञान जिसको है वह जान सकता है कि

भाव क्या खुनेगे ? और क्या बन्द होंगे ? इस यन्त्र की गिनती किस प्रकार से करना चाहिए । इस यन्त्र की आम्नाय गुरु नाम से प्राप्त हो जाय तो कार्य सिद्ध होते देर नहीं लगती । इस यन्त्र को ब्रह्म्य प्राप्त हेतु चित्तामणि यन्त्र भी कह देना तो अतिशयोक्ति नहीं है । नसीब जोरदार हो तो देर नहीं लगती । यह यन्त्र विशेष करके सटोरियों के काम का है । इसकी गिनती का अभ्यास करने से जानकारी होगी । इष्ट देव के स्मरण को नहीं भूलना चाहिये । दान-पुण्य करने से इच्छाएँ फलती है ॥५४॥

यन्त्र नं० ५४

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	४००४ ७४३७	२६६२ ६८८१	४६२५ ०३३७	२५५२ ६३४२	२५५२ ६८६७	६३४१ ५७२५	६६५१ ५०६७	७४६७ ५२२५	६३३५ ०६२६	२५३७ ६६७४
२	६००५ ३६७८	७३५७ ४०००	६६०२ ८१४०	४७६६ ३०७०	८०७६ ५३५५	७३५३ ६५६१	४१६३ ६६७६	८३४६ ७०६७	६२१६ ३१०३	४६७६ २५४०
३	३६०४ ०१००	६७७६ २०२४	४३२६ ७५०४	४११५ ६३७०	०५५३ ६१६६	५०८१ २८८२	५६३५ २४०४	६०६४ १६८२	६८६३ ७१०३	३७६० ७३६६
४	५६६६ ३५८०	५७७५ ३००३	२८८६ ६६४४	६४४१ ५७७३	४५०४ ३३६८	७३३७ २८६१	१५१७ ६००७	२५६६ ३१३७	७३७५ ६५४६	३५३७ २६२४
५	६६०२ ३८८१	८००५ ७५६२	६००६ ५३८४	५५६० ८६७१	६५३७ ४१७०	६४६६ ६२३५	६३७६ ४६३५	५५३६ ६४५२	८७०० १५२६	६५०६ ७३५३
६	८३७० ६६१८	७३३१ ८५०५	६६३७ २६७१	७६०७ ३००३	६६७७ ५३६८	७००७ ३६६६	७५६४ ३६६३	७२५७ २५४१	४१७५ ६२०४	५३६६ ३६४२
७	४००४ ४७६६	३७०२ ४२०८	४००७ ७३६५	१८८१ ३७०२	२६०७ ६६१७	१८२८ ०३८६	३६६२ १६७३	३६७२ १६३१	३७०७ १०७४	३७४० ६३१६
८	५०८६ ७८३५	३००३ २६७३	४००५ ६६६७	८६३० ५७८०	३१२६ ६००६	२५५२ ५८६६	७००७ ६४४६	२५५७ २३४७	३७२६ ००७६	२५२६ ७६६३
९	१४०६ ६५६६	४५२८ ६०५७	४७७१ ११३६	८००४ २१६७	२५५२ ७००७	४१७० १३३६	४५०८ १८०१	७४३५ ६६०३	६२८६ ५२६०	८१६६ २६०४
१०	७१६४ ४६५२	६४२४ २०६६	३७०० ६२०६	६३६६ ४००८	३००४ ३६४६	२१६४ ५३१६	६२०५ ३१८३	६३७१ १८६०	५७०६ ५०३६	०१३० २५५३

यन्त्र नं० ५५

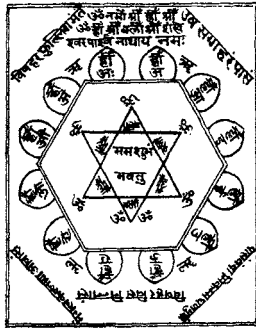
इन दोनों यन्त्रों को रवि पुष्य, वा रवि हस्त को शुभ योग में सोना, चांदी, ताँबे के पत्रे पर खुदवा कर अनार की कलम से सुगन्धित द्रव्यों से लिखकर सफेद कपड़ा पहन कर उत्तर या पूर्व दिशा में बैठ कर यन्त्र लिखें यन्त्र भोज पत्र पर भी लिख कर यन्त्र ताबीज में डाल कर गले में या हाथ में बांधे तो घाट भय से तथा सर्व रोग शांत होते हैं। भूत, प्रेतादिक की पीड़ा

श्री	रं	ख	र	प	खी	न	य	न	मः	न	य	था	ना	खी	प	ल	वा	जी	श्री									
न									ष										जग									
व								अ	को	हिं									व									
प								य	स	भ	सि	अ							अ									
स								अ	हि	र	पा	अं	ति	अ					भ									
अ								न	र	सि	रि	र	सु	खि	जी	बा			पा									
पा								म	मु	ओ	त	ख	ग	हु	श	ग	मा	री	खी									
खी								ब	या	स	ह	र	मि	स	सि	णा	सं	मं	तुं	बा								
ना								अ	हो	स	मि	गा	हु	१	८	५	रं	पा	ग	हु	ले	खि						
पा								हा	य	जा	ओ	कं	स	४४	२६	४३	५	४७	कं	ज	अ	ति	मो	र				
य								वि	म	का	फ	ह	सु	५	१५	२१	७४	३६	२८	१	क	रा	ण	पं	मि	अ		
न																												
मः	जि	व	ओ	प	हु	रे	पा	८	४६	३८							४२	५५	८	जु	अं	बु	जी	का	ध	कं	मः	
न																												
य																												
पा																												
ना																												
खी																												
पा																												
पा																												
न																												
र																												
व																												
श्री	अ	मी	रु	रा	पा	खी	ना	पा	य	न	मः	न	य	था	ना	खी	प	ल	वा	जी	श्री							

शांत होती है। लक्ष्मी लाभ, सम्मान, यश, राज्य मान्यता, कोटों में विजय होती है कुष्ठ, ज्वर, वायु रोग भी इस यन्त्र को घों कर पिलाने से नष्ट हो जाता है, सर्प का जहर उतर जाता है। एक वर्ण की गाय के दूध से यन्त्र का प्रक्षालन कर पिलाने से बंध्या गर्भ धारण करती है।

जय माला सोना, चांदी, प्रवाल रेशमी, सूत अथवा लीला, सफेद, रंगनी रखना। शुभ चन्द्र में मूल मन्त्र की छ. मास में सवा लाख जाप करना चाहिए। यथा शक्ति ब्रह्मचर्य पालना। जाप पूर्ण होने पर प्रतिदिन ६-१०८, २७ या १०८ बार जप करना। यथा शक्ति सप्त क्षेत्रों में पूजन आदि में द्रव्य खर्च करना। पाचों माथाओं का १०८ बार प्रतिदिन जाप करने से सर्व कार्यों की सिद्धी, सर्व रोगों का नाश सुख संपत्ति की प्राप्ति होती है ॥५५-५६॥

यन्त्र ५६ का

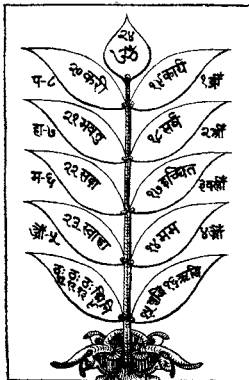


चोबीस तीर्थंकरों का यंत्र

इस यंत्र को सुवर्ण या चाँदी के पतले पर बनावे रविपुष्प नक्षत्र में। यंत्र में दिये हुए अंकों के समान उन २ भगवान को नमस्कार करे। यंत्र में लिखे यंत्र का प्रातः कम से कम पांच माला जपे। घर में अटूट धन, घर में शान्ति रहती है ॥ ५७ ॥

यन्त्र नं० ५७

१६	१२	८	५	३	२
१	१४	१३	६	१०	४
६	७	११	१८	१६	२०
२१	२२	२३	२४	१७	१५
ऊ	ही	थी	क्ली	न	मः

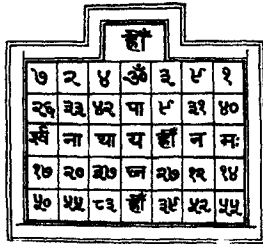


—यन्त्र नं० ५८

कल्प वृक्ष यंत्र

इस यन्त्र को रविपुष्प गुरुपुष्प रवि हस्त या रवि मूल में शुभो प्रयोग में सोना चांदी के पतले व भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखें, हमेशा पूजन करें, अक्षत से उन्हें अपने सिर पर डालें। मनुष्य मान सम्मान सत्कार पावे। रोजगार वृद्धि लक्ष्मी प्राप्ति। यन्त्र के एक एक अक्षर में चौबी तीर्थकर देवी का निवास है ॥ ५८ ॥

यन्त्र नं० ५६



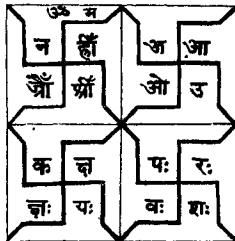
इस पार्श्वनाथ यन्त्र को पार्श्वनाथ भगवान के जन्म कल्याण के दिन तांबे के पतले पर खुदवावे । मुगन्वी द्रव्य से लिखे एक धान का एकासन करे । फूल जाइके से पूजन करे । धरणेन्द्र पद्मावती प्रसन्न होय मन वांछित फल देवे ॥ ५६ ॥

सर्व मनोकामना सिद्ध यन्त्र

इस यन्त्र को पास में रखने से सर्व मनोकामना सिद्ध होती है ॥ ६० ॥ ६१ ॥

यन्त्र नं० ६०

यन्त्र नं० ६१



१३० को सर्वतो भद्र यन्त्र सिद्ध यन्त्र

मन्त्रः—ॐ ह्रीं श्रीं चतुर्वसु पूर्वभ्यो नमो नमः

विधिः—इस यन्त्र को रविपुण्य में, शुभ योग में बनावे। मन्त्र का सवालाख जाप करे। इससे महाविद्यावान तथा सर्व प्रकार सुखी होवे ॥ ६२ ॥

यन्त्र नं० ६२

१३०	१३०	१३०	१३०	१३०	१३०	१३०
१३०	३४	४८	२	१६	३०	१३०
१३०	४६	१०	१४	२८	३२	१३०
१३०	८	१२	२६	४०	४४	१३०
१३०	२०	२४	३८	४२	६	१३०
१३०	२२	३६	४०	४	१८	१३४
१३०	१३०	१३०	१३०	१३०	१३०	१३०

अद्भुत लक्ष्मी प्राप्ति यन्त्र

इस यन्त्र को सोना चाँदी या ताँबे के पत्रे पर खुदाकर पूजन करे तथा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ग्रहं नमः महा लक्ष्म्यैः धरणेन्द्र यथावती सहिताय ह्रीं श्रीं नमः ॥ इस यन्त्र का १२५०० जाप करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ॥ ६३ ॥

यन्त्र नं० ६३

ॐ	ह्री	श्री	क्लीं	महा
अ	हं	न	मः	लक्ष्मी
ध	र	णे	न्द्र	पद्मा
स	हि	ता	य	वती
ली	श्री	न	मः	नमः

यन्त्र नं० ६४

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
६	६	१५	४

इस यन्त्र को सोना व चाँदी, ताँबा के पत्रे पर खुदावे। अष्ट गंध से रविपुष्प में लिखकर पूजें। व्यापार वृद्धि होय। लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ॥ ६४ ॥

यन्त्र नं० ६५

४२	७	५६
४६	३५	२१
१४	६३	२८

इस यन्त्र को सुगन्धी द्रव्यों से भोजपत्र
पर लिखकर पूजे, विद्या बहुत आवे ॥६५॥

यन्त्र नं० ६६

बलीं स्वाहा ॐ स्वाहा ह्रीं			
पा	तु	श्रीं	स्वाहा
श्रीं	पा	तु	श्रीं
पा	तु	श्रीं	पा
तु	श्रीं	पा	तु

यह यन्त्र लक्ष्मी दाता चमत्कारी है ।
रविपुण्य में सोने चांदी के भोजपत्र पर
लिखकर हमेशा पूजन करे ॥ ६६ ॥

यन्त्र नं० ६७

१	०	०	०
०	०	०	१
०	०	०	०
१	०	०	०

इस यन्त्र को अष्ट गंध से लिखकर दीवाली के दिन रोहिणी नक्षत्र में इसे घड़े में रखकर, घर के भण्डार में रखने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है । इसे कुंभ में लिख, कुंभ का पानी रोगी को पिलाने से रोग नष्ट होता है ॥ ६७ ॥

यन्त्र नं० ६८



श्री महा लक्ष्मी प्राप्ति यन्त्र

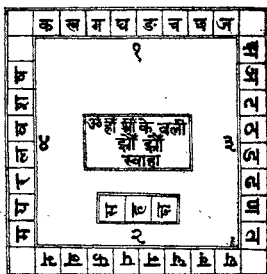
यह त्रिक (तीन) का यन्त्र लक्ष्मी पूजन का है । चांदी के कलश में लिखकर घर में स्थापित करे तो लक्ष्मी की प्राप्ति अवश्य होती है ॥ ६८ ॥

॥ अद्भुत विद्या प्राप्ति यन्त्र नं. ६९ ॥

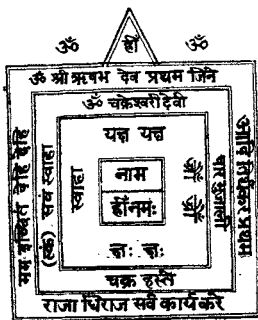
इस यन्त्र को रविपुष्य में कांसी की धाली में तैयार कर सुगन्ध द्रव्य से सुदी पंचमी से दशमी तक, चांदनी रात्रि में, धाली में पानी भर कर रखे । प्रातः उस पानी को पीने से अज्ञान दूर होता है विद्या बहुत आती है ॥ ६९ ॥

यन्त्र नं० ६६

अक्षुत विद्या प्राप्ति यन्त्र नं



यन्त्र नं० ७०



६६ यन्त्र को दीवाली के दिन गुरु
पुण्य में घण्ट गन्ध में जाई की कलम से
लिख कर पूजन करे तो सर्व प्रकार की
ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त हो। गंध में पूजकर
निलत करे मान सम्मान प्राप्त
हो ॥ ७० ॥

यन्त्र नं० ७१



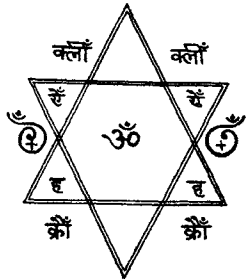
इस यन्त्र को तालड पत्र या भोज पत्र सोना, चांदी व ताँबा के पत्र पर गोरोचन, सिन्दूर, लाल चन्दन, कंकु और अपनी अनामिका अंगुली के रक्त से यन्त्र लिखना। भक्ति से पूजन कर निम्न मन्त्र से "हम ह्री कह ह्री सह ह्री" ॥ का सवालाख जप करना चाहिए। जप अभावस्था से शुरू कर तीन पक्ष में पूरे करे ॥ ७१ ॥

यन्त्र नं० ७२



इस यन्त्र को अपने रक्त से भोज पत्र पर लिखकर कंठ या बाहु में बांधे विद्यार्थी को विद्या की प्राप्ति होती है। ॥ ७२ ॥

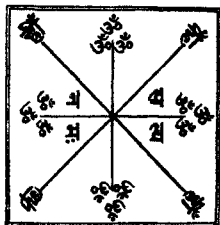
यन्त्र नं० ७३



सर्व कार्य सिद्धि यन्त्र आचक्रेश्वरी नमः

इस यन्त्र को रविपुष्य, गुरु पुष्य दीवाली में भोजपत्र सोना चांदी पर लिख पूजे, सर्व कार्य सिद्धि होय ॥ ७३ ॥

यन्त्र नं० ७४



इस यन्त्र की विधि यन्त्र नं. समान है ॥ ७४ ॥

यन्त्र नं० ७५

४३	५०	२	७
६	३	४७	४६
४६	४४	८	१
४	५	४५	४८

इस ऋद्धि सिद्धि यन्त्र को कुंकुम, गोरोचन, केशर से आविया (आम) के पाटे पर लिखकर पूजन करे, ऋद्धि वृद्धि होय ॥ ७५ ॥

॥ चितित कार्य सिद्धि यन्त्र ॥ ७६ ॥

१	३२	३४	१२	६	२४	४२	५५
३८	५५	५	२८	४१	५१	१३	२८
३१	८	१४	३३	२३	१७	५३	४१
१७	३७	२७	१	५२	४५	१६	१४
३	३७	३१	६१	११	१२	४४	५६
४०	५७	७	२६	४६	४६	१५	१८
२६	४	६६	३५	२१	१२	६४	१८
५८	३६	२५	८	५७	४७	१७	१६

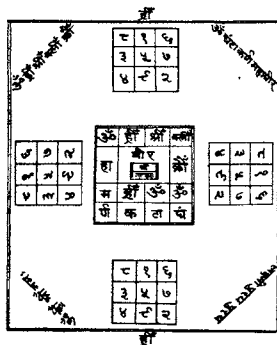
इस यन्त्र को रविपुष्ट्य में ग्रथवा अपने चन्द्रस्वर में भोजपत्र पर चाँदी, सोना या ताँबे के पत्रे पर सुगन्धी द्रव्य से लिखे। जो पूजन करता है उसका चितित कार्य सिद्ध हो जाता है ॥ ७६ ॥

श्री घंटाकर्ण महावीर अद्भुत जमत्कारिक यन्त्र॥७७॥

ॐ	बं	टा	क	णों	य	हा	वी	र	स	वें	व्या
तो	क्ष	र	पं	क्ति	मि:	रो	गा	स्त	त्र	अ	मि
खि	त्क्ष	यं	शा	कि	नी	भू	त	वें	तत	ण	वि
लि	पा	स	पें	गा	द	श्य	ते	अ	ल	स्व	ना
व	ज	च	धं	टा	क	णों	न	मि	रा	ति	श
दे	णों	न	ह्री	र	ठ:	ठ:	मो	चो	क्ष	वा	क
सि	क	स्य	झू	वी	स्वाहा	ठ:	स्तु	र	सा	त	वि
ष्ठ	न्ति	त	क्लो	र	न	ॐ	ते	भ	प्र	पि	स्फो
ति	या	शं	धी	ह्रीं	ॐ	स्ति	ना	यं	भ	त	ट
वं	स्ति	र	म	ले	का	ना	न	न्ति	व	क	कं
त्र	ना	यं	भ	ज	रा	त्र	त	वा:	य	को	भ
य	ल	व	हा	म	क्ष	र	क्ष	र	प्ते	प्रा	य

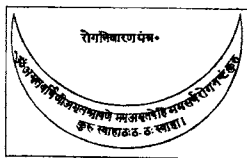
इस यन्त्र को रवि पुष्प व शुभयोग में भोजपत्र, चांदी, तांबा के पतरे पर व कांसी की थाली में खूदावे। रवि हस्त अथवा मुला गुरु पुष्प में भी दीवाली के दिन बन सकता है। यन्त्र का पंचामृतनामिषेक कर, चन्दन पुष्पादि से पूजा करना चाहिये। जाई जुई के १०८ पुष्प रखे। मन्त्र बोल कर एक—एक फूल थाली में चढ़ावे। एक टुकड़ा अग्रबत्ती का लगावे और लकड़ी से एक टंकोर थाली में लगावे (बजावे)। १०८ बार होने पर थाली में श्री फल, पंचरत्न की पोटली तथा हरया एक चांदी का रख दे। एक कांसी की थाली में यन्त्र लिखले। इन दोनों यन्त्रों को एक ही विधि है। ७७—७८ ॥

यन्त्र नं० ७८



यन्त्र नं० ७६

इस चन्द्र यन्त्र को रूपा (चांदी) के पत्रे पर खुदवाना, अष्टगन्ध से, चन्द्र ग्रहण में लिख कर अपने घर में रखे, फिर आवश्यकता पड़ने पर तीन दिन तक धोकर पिलावे तो रोग मिट जाये। शनिवार, रविवार, गुरुवार को इसे धोकर सबेरे पिलावे, कफ, गुल्म नष्ट हो जाये। इसका पूजन करने से जहाँ जाये, वहाँ जय होय सब काम सफल होय ॥ ७६ ॥



सर्वे रोगनिवारण यन्त्र नं० ८०

ॐ	ह्री	वि	स	ह	र	पा	स	नाह
ह्री	ॐ	ह्री	कु	लि	ग	क	म	ठ
श्री	श्री	ध	र	णे	न्द्र	प	पा	व
क्ली	श्री	ती	मा	तृ	दे	वी	मम	विस
भौ	श्री	रोग	शोक	भय	द्वेष	जरा	मरण	विघ्न
झी	श्री	विघ्न	रा	जा	दि	भ	य	चो
ह्री	श्री	श	दि	भ	य	व्या	घ्रा	दि
ह्री	श्री	भ	य	सि	हा	दि	भ	य
ह	क्षः	स	वं	कु	ट	कु	ट	स्वा
हः	क्षः	हा	ठः	ठः	ठः	ठः	ठः	स्वाहा

इस यन्त्र को रवि पुण्य या शुभ योग में कांसी की धाती में खुदवाना । अष्टगंध या केशर में अक्षर अक्षर की पूजन कर सुखाना, पीछे उसे पानी से धोकर उस पानी को दिन में तीन बार पिलाने से गर्व प्राधि, व्याधि रोग, पीड़ा भय, मिट जाता है ॥८०॥

यन्त्र नं० ८१

३६	३६	३६
३६	३६	३६
३६	३६	३६

इस छत्तीस यन्त्र को मुगंधित द्रव्य से लिख कर धारण करने से आधा शीशी नष्ट हो जातो है ॥८१॥

यन्त्र नं० ८२

७	६	०	१	०	०
८	०	०	३	०	०
२	०	०	०	०	०
५	६	७	८	९	१०
४	०	०	०	०	०
५	३	२	१	०	८

इस यन्त्र को भोजपत्र या साधा कागज पर लिख कर मादलिया ताबीज में रख कर भुजा या गले में बांध दे तो आधा शीशी जाये ॥८२॥

यन्त्र नं० ८३

द्रीं	श्री	श्री	श्री
द्री	दे	व	द्री
श्री	द	त्त	श्री
द्रीं	द्री	द्री	द्री

इस यन्त्र को किसी भी प्रकार के रोग के लिए तथा वश करने के लिए सुगन्धित द्रव्य से लिखे । देवदत्त के स्थान पर अपना नाम लिखे ॥८३॥

गुमड़ा होने का यन्त्र

यन्त्र नं० ८४

हा क	ख पा
स्वा ७	छ ईर्व
घ	३ ग
८	
र ६	२ घ
म ५	१ य
भ	क्ष
त	ध

इस यन्त्र को भोजपत्र या कागज पर सुगन्धित द्रव्य से लिख कर भुजा में बाधने से सर्व प्रकार के फोड़े गुमड़े मिट जाते हैं ॥८४॥

यन्त्र न० ८५

३८	४६	२६	७७
३	८	४	७
१	८	२	३
११	७	२०	६

इस यन्त्र को रविवार के दिन भोज पत्र पर लिख कर बांधने से आंधा शीशी का रोग जाय ॥८५॥

यन्त्र न० ८६

३	७	८
१		१०
ॐ पा श्व ६	१ २ ३ ४	के श व ०
५	८	७
२		७

इस यन्त्र को हर ताल से बड़ के पत्ते पर मंगलवार के दिन लिख कर अपनी भुजा में बांधे तो दुखता (मसा) हरस मिट जाय रक्त लाव ॥८६॥

यन्त्र न० ८७

२	१०	३
३	२	१०
१०	३	२

इस पदहरिया यन्त्र को लिख कर घोकर पिलाने से तुरन्त ही ज्वर-ताप उतर जाता है। भूत प्रेत वगैरह जाय। यह बड़ा चमत्कारी है ॥८७॥

यन्त्र न० ८८

१	कली
खी ह्री	३ ४
२	३३
७	हुन
हा खा	६ ५
८	क्ष

इस यन्त्र को मंगलवार, गुरुवार या शनिवार को जाई की कलम से ब्राह्म के पत्ते पर लिख कर भुजा या गले में बांधे या सिरहाने रखे तो सभी प्रकार का ताप ज्वर उतर जावे ॥८८॥

भूत प्रेत पिशाच डाकिन वगैरह निवारण यन्त्र ॥८९॥

५	कली	ह्री	कली	४
२	शंतिनाथाय	१		
कली	पार्वनाथाय	धरणेन्द्राय	कली	
	महावीरस्वामी			
१	चक्रेश्वरीदेवी	२		
५	कली	ह्री	कली	५

इस यन्त्र को हरताल मनसिल हिंगुल तथा गोरोचन से आंकड़ा के पत्ते पर लिख, घुप देकर जिसके गले, भुजा या कमर में बांधे तो भूतादि बाध नष्ट हो जाय ॥८९॥

व्यापार वर्द्धक यन्त्र नं० ६०

“ॐ ह्रीं श्री अर्हं नमः” इस मंत्र को १० माला रोज २१ दिन तक सफेद माला,

ह्रीं	ह्रीं	ह्री	ह्रीं	ह्री
ठः	४२	३५	४०	फु
ठः	३७	३६	४१	फु
ठः	३८	४३	३६	फु
है	भुर	भुर	भुर	फु

सफेद भासन और सफेद पुष्पों से जपे। यंत्र को चांदी, सोना, तांबा के पत्रे पर खुदवा कर रखे। वही चतुर्दशी से जाप करे, रात के समय जपे ॥ ६० ॥

यन्त्र नं० ६१

५६२	५६६	२	७
६	३	५६६	५६५
५६८	५६३	८	१
४	५	५६४	५६७

इस यंत्र को चांदी के पत्रे पर रवि गुरु पुष्य या रविहस्त मूला अथवा दिवाली के दिन जत्र अपना सूर्य स्वर चलता हो उस समय खुदवा कर प्रतिष्ठा कर रोज पूजन करे तो कोई कचहरी आदि विषय में जीत होय। यंत्र को जेब में रखना ॥ ६१ ॥

यंत्र नं० ६२

इस यंत्र को रवि पुष्य के दिन सोना, चांदी, तांबा या भोजपत्र पर लिख प्रतिष्ठा कर लो। यंत्र को ५, १०, १५ तिथि से प्रारम्भ कर साढ़े बारह हजार करना फिर रोज एक

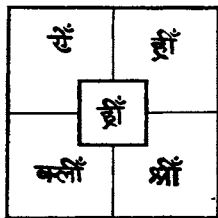
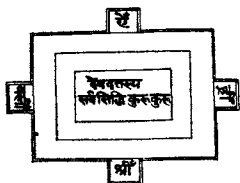
ॐ	ह्रीं	श्रीं	क्लीं	ब्लूं	न	मि
उ	ण	सुर	अ	मुर	ग	रु
ल	झु	यं	ग	प	रि	वं
दि	ये	ग	ए	कि	ले	से
अ	रि	हे	सि	ढा	य	रि
ये	उ	व	उभा	ये	स	व्व
सा	हू	णं	न	मः	स्वा	हा

माला जपना। मन्त्र प्रारम्भ और अंत करने वाले दिन उपवास करना। सफेद वस्त्र, माला, आसन सफेद, एकाग्रचित्त से जप करे, मन बाह्यित कार्य सिद्ध हो, गृह देव प्रसन्न होय ॥ ६२ ॥

पूर्व दिशा की ओर मुखकर ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एकाक्षय भगवते विश्व रुपाय सर्व योगे-
श्वराय त्रेलोक्य नाथाय सर्व काम प्रदाय नमः दीवाली के दिन १२,५०० हजार जप पचासन से

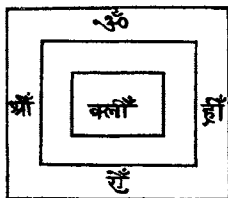
यंत्र नं० ६५

यंत्र नं० ६६



करे। माला प्रवाल की होनी चाहिये। पीछे होम करे, होम की विधि.—वादाम १०८—अखोल ()
१०८—सुपारी १०८ लोबान सेर ११॥, काली मिरच सेर ११॥, दाख सेर ०१—गोला ०१—जव

यंत्र नं० ६७



सेर ०१—घी सेर—२ बेर की लकड़ी, अर्द्ध रात्रि में उत्तर दिशा मुखकर हवन करना। चैत्र
सुदी ८—घ्रासोद सुदी ८ दीवाली, होली और प्रहण के दिन में नारियल की पूजन करना। यंत्र में
देव दत्त की जगह अपना नाम देना। तीनों यंत्रों की विधि एक ही है ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

यंत्र नं० ६८

इस पंवरिया यंत्र को रवि पुष्य, रवि मूल, रवि हस्त, गुरु पुष्य, दिवाली के दिन अपने चन्द्र स्वर के साथ । सोने, चांदी के पत्रव भोजपत्र पर लिखे । "ॐ ह्रीं श्रीं ठः ठः ठः क्रीं

	श्रीं	ॐ	श्रीं	
	८	१	६	
३		५		७
४		९		२
	श्रीं	ॐ	श्रीं	

स्वाहा" साठे बारह हजार बार यंत्र लिखना और मंत्र भी इतना ही जपना । प्रतिदिन एक हजार जप करना । सफेद वस्त्र पहनना, लवण, खट्टा मीठा, नही खाना, ब्रह्मचर्य पालना, जमीन पर सोना, एक बार भोजन करना पान खाना ॥ ६८ ॥

यंत्र नं० ६९ नवग्रह शान्ति पंवरिया के साथ यंत्र

यंत्र नं० १०० विजयपता का यंत्र

	हा	ऊँ	ह्रीं	श्रीं	
स्वा	८	१	६		
	३	५	७		क्रीं
	४	९	२		
	ठः	ठः	ठः		

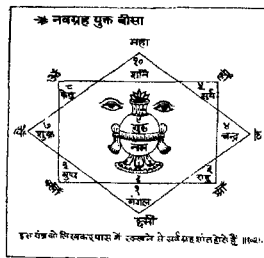
	ईशान	दक्षि	अग्नि	
	८ मंगल	१ सूर्य ॐ	६ केतु	
उत्तर	३ बुध कली	५ शनि स्वाहा	७ शुक्र श्रीं	दक्षिण
	४ राहु	९ गुरु ह्रीं	२ चन्द्र	
	वायव्य	पश्चिम	नैऋत्य	

इस यंत्र की विधि नहीं है ॥ ६९ ॥

इस यंत्र की विधि नहीं है ॥ १०० ॥

यंत्र न १०१

इस यंत्र को लिखकर पास में रखने से सर्वग्रह शांत होते हैं ॥ १०१ ॥



यंत्र न० १०२

मूल यंत्र — ॐ श्री ह्रीं क्लीं "महा लक्ष्मी नमः" भोजपत्र पर रोज एक यंत्र लिखना
 अष्टगव से उस पर २१०० जाप करना धूप दीप फूल फल नैवेद्य परना पीला वस्त्र पिली माना

महा लक्ष्मी	५	नमः
८	श्रीं	६
ॐ	१	४
ॐ	७	८
३	क्लीं	२

रखनी चाहिये । इस प्रकार ६२ यंत्र ६२ दिन में लिखना । ६३वाँ यंत्र चाँदी के पत्ते का बनवाना ।
 उसके पीछे ६२ यंत्र भोजपत्र के रखना । श्री मुक्त () से पूजा करनी चाहिये ॥ १०२ ॥

यन्त्र नं १०५

बत्तीसा : लक्ष्मी प्राप्ति यन्त्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	६	८	१
४	५	१०	१३

व्यापार तथा लक्ष्मी प्राप्ति के लिए चालू विधि से तैयार करना ॥ १०५ ॥

चौतीसा यन्त्र नं० १०६

१६	६	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

* लक्ष्मी तथा व्यापार वर्द्धक यन्त्र है ।

चौतीसा यन्त्र नं० १०७

४	१४	१५	१
६	७	६	१२
५	११	१०	८
१६	२	३	१३

व्यापार तथा लक्ष्मी वर्द्धक यन्त्र है ।

छत्तीसा यन्त्र नं० १०८

१०	१७	२	७
६	३	१४	१३
१६	११	८	१
४	५	१२	१५

व्यापार तथा लक्ष्मी वर्द्धक यन्त्र है ।

उपरोक्त तीनों यन्त्रों को चालू विधि से लिखना ॥ १०६ १०७—१०८ ॥

६५ या यन्त्र नं० १०६

१०	१८	१	१४	२२
११	२४	७	२०	३
१७	५	१३	२१	६
२३	६	१६	२	१५
४	१२	२५	८	१६

६५ या यन्त्र नं० ११०

२४	३२	२	७
६	३	२६	२७
३१	२५	८	१
४	५	२६	३०

इस यन्त्र को कुलड़ी में रख, सुपारी, रुपया, हल्दी, धनियां डालकर दुकान की गद्दी के नीचे गाढ़ना, उस पर बैठना, तो व्यापार अधिक चलता है ॥ ११० ॥

यन्त्र नं० १११

२२	३	६	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१६	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

यन्त्र नं० ११२

१५	८	१	२४	१७
१६	१४	७	५	२३
२३	२०	१३	६	४
३	२१	१६	१२	१०
६	२	२५	१८	११

६५ या यन्त्र का जप मन्त्र :-

(१) ॐ भौ भौ श्री क्ली स्वाहा ।

(२) ॐ ह्रीं ह्रीं नमो देवाधिदेवाय अरिष्टनेमिय अचिन्त्य चिन्तामणि त्रिभुवन

जगत्रय कल्पवृक्ष ॐ ह्रीं ह्रीं समीहित सिद्धये स्वाहा ।

विधि :—पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्र में जाप करना, १२,५०० (साठे बारह हजार) जाप करे । फिर बाद में एक माला रोज जाप करते रहना ॥ ११०-१११-११२ ॥ इन तीनों ६५ या यन्त्र की विधि एक ही है ।

यन्त्र नं० ११३

६	८	७	६	५	४	३	२	१
८	८	७	६	६	२	२	१	२
७	३	३	३	३	३	३	३	३
६	४	४	४	४	४	४	४	४
५	५	५	५	५	५	५	५	५
४	६	६	६	६	६	६	६	६
३	७	७	७	७	७	७	७	७
२	८	८	८	८	८	८	८	८
१	९	९	९	९	९	९	९	९

इस यन्त्र को अष्ट गन्ध से भोज पत्र पर लिखे । काटे में बांधे के नाभि ठिकाने आये ॥११३॥

यन्त्र नं० ११४

ह २५	र ८०	क्षी	कुं १५	हः ५०
स २०	र ४५	प	सुं ३०	सः ७५
लि	प	ॐ	स्वा	हा
ह ७०	र ३५	स्वा	कुं ६०	हः ५
स ५५	र १०	हा	सुं ६४	सः ४०

इस यन्त्र को आंघे बालक के गले में बांधे तो सर्व रोग जाये, नजर न लगे ॥११४॥

यन्त्र नं० ११५

३८	३१	२६
३१	३१	३७
३४	३७	३२

इसे अष्ट गन्ध से लिखकर,
पास रखे तो दुश्मन वश में होय ॥११५॥

यन्त्र नं० ११६

४	७	२	७
६	३	८	३
६	५	८	१
४	५	२	६

यन्त्र नं० ११७

२	६	२	७
६	३	६	५
८	३	८	१
४	५	४	७

इस यन्त्र को बांधने से कागलों अच्छो होय ॥११६॥

इस यन्त्र को कमर में बाधे तो वायुगोला की पीड़ा न रहे
तथा गले में बांधे तो सांप का जहर उतर जाता है ॥११७॥

यन्त्र नं० ११८

२४	३१	२	७
६	३	२८	२७
३०	२५	८	१
४	५	२६	२६

इस यन्त्र को लिख कर चरखे
में बांध कर उल्टा घुमावे, परवेश
गया हुआ वापस आता है ॥११८॥

नोट:—पेज नं० ३२७ पर यंत्र नं० १०६ की विधि नीचे दी हुई है ।

“ॐ नमो गौतम स्वामिने सर्वं लब्धि सम्पन्नाय मम अभीष्ट सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।
प्रतिदिन १०८ बार जपिये । जय होय, कार्य सिद्धि होय ।

“ॐ ह्रीं धरणेन्द्र पार्श्वनाथाय नमः ।

विधि :— दर्शनं कुरु २ स्वाहा । १२ हजार जप कर हाथ मुख पर, नेत्रों पर फेरे,
जहाँ धन गड़ा होगा स्पष्ट दिखेगा ।

यन्त्र नं० ११६

४	११	२	७
६	३	८	७
१०	५	८	१
४	५	६	६

यन्त्र नं० १२०

७७	१	१	५
२	७	५	१३
७	१३	१	५
१	५	१३	७

इन दोनों यंत्रों को कुंकुम गोरोचन
से भोजपत्र पर लिख कर गले में बांधे,
गर्भ स्तम्भन होय ॥११६, १२०॥

यन्त्र नं० १२१

४३	४२
३११	७०

इस यन्त्र को स्वाही से लिखकर
माथे पर बांधे तो आधा शीशी का
जाय ॥१२१॥

यन्त्र नं० १२२

४२	४६	१४०	४३
६	३३	४६	४५
४६	४४	६	१
४१	४०१	देवदत्त	४१७

लोहे के डोलने में तांबोज घाल
कर स्त्री के गले में बांधे, गर्भ रहे ॥१२२॥

यन्त्र नं० १२३

४४	५१	२	८
७	३	४८	४८
४०	४४	६	१
४	६	४६	४६

कुमारी कन्या के हाथ पूर्ण कत्ताकर
यह यन्त्र कागज पर दूध से लिखे । स्त्री के
गले में बांधे, दूध घनो घनो होय ॥१२३॥

यन्त्र नं० १२४

ह्री	ह्री	ह्री	ह्रीं
ह्रीं	देव	दत्त	ह्री
ह्री	मन्त्र	पुरं	ह्री
ह्री	ह्री	ह्री	ह्री

यह मन्त्र पास रखे राजा, गुरु प्रसन्न
होय अष्ट गंध से लिखे ॥१२४॥

यन्त्र नं० १२५

१३३	३	१२	१६
८	१५	११	६
४१८	१३	१०	१६
१	१३	४	४

यन्त्र बांधे शीतला जाय ॥१२५॥

यन्त्र नं० १२६

७	१४	२	७
६	३	११	१०
१३	८	८	१
४	५	४	१२

यन्त्र नं० १२७

मं	क्षं	जं	वं
क्षं	तं	जं	हं
हं	जं	हं	वं
नं	क्षं	जं	हं

इस यन्त्र को पान के उपर चूने से लिख, सभा वश्य होय ॥१२६॥

भोज पत्र पर लिख, सिरहाने रखे तो स्वप्न न आवे ॥१२७॥

यन्त्र नं० १२८

ळ	एँ	श्री	हीं
घ	हु	वा	च
र	ज	ग	म
वा	ली	न	नमः

यन्त्र नं० १२९

१३२	३	१२	१६
८	१५	११	६
४१८	२	१०	१९
१	१३	४	४

अर्क के पत्त लिखात्वा यस्य द्वारे स्थापत्य तस्योच्चाटनं भवति ॥१२८॥

इस यन्त्र को कागज पर लिख कर हाथ में बांधे शीतला आवे ॥१२९॥

यन्त्र नं० १३०

१२	१४	१६	१८
१३	१५	१७	२०
२१	१३	१५	२७
१२	१४	१६	१८

इस यन्त्र को रविवार
के दिन चूना से पान पर लिख
कर लिलावे, दण्ड होय ॥१३०॥

यन्त्र नं० १३१

५०	५७	२	७
६	३	५४	५३
५६	५१	८	१
४	५	५२	५५

इस यन्त्र को घर के दरवाजे पर गाढ़े, तो अति उत्तम व्यापार चले ॥१३१॥

यन्त्र नं० १३४

८	१	४७	४२
४३	४६	४	५
२	७	४१	४८
४५	४४	६	३

गले की गांठ नाशक यंत्र भोज पत्र पर अष्ट गन्ध से लिख कर, गले में बांधे, तो गले की गांठ का नाश होता है ॥१३४॥

यन्त्र नं० १३५

८	११	१४	१
१३	२	७	१२
३	१६	६	६
१०	५	४	१५

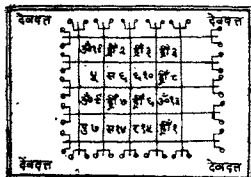
हृदय धबराहुट नाशक यन्त्र ॥१३५॥

यन्त्र नं० १३६

२	७	६
६	५	१
४	३	८

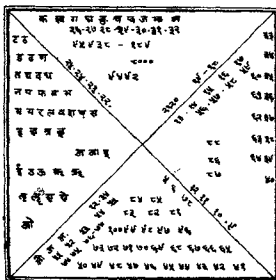
उच्चारण निवार यन्त्र ॥१३६॥

यन्त्र नं० १३७



इस यन्त्र को तांबे के पत्र पर
खुदवा कर मकान के चारों दीवार में
लगा देवे, तो धन की प्राप्ति, उपद्रव को
शांती होती है ॥१३७॥

यन्त्र नं० १३८



श्री मणिभद्र महा यन्त्र से यन्त्र
नं० १०० का है। मणिभद्र महाराज का
का है। जो मनुष्य ये यन्त्र दीवाली के
दिन छट्ठ तप कारी मुग्धि द्रव्य से रात
में लिखे, जो चणोटी का जड हो वहां जा
कर यन्त्र को गाड़े, फिर दूसरे दिन सुबह
ब्राह्म मुहूर्त में निकाल लेना। मौनपूर्वक
घर आकर इस यन्त्र का हमेशा थड़ा से
पूजन करे, तो उसके घर में लीला लहेर
और मंगलाचार होता रहे। छट्ट लक्ष्मी
का प्रावागमन होता है ॥१३८॥

यंत्र नं० १३६

यंत्र नं० १४०

शत्रुनामघ्नः



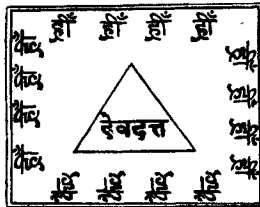
१२	१६	२	७
६	३	१६	१५
१८	१३	८	१
४	५	१४	१७

विधि :—गुगल गोली १०८ होमयेत शत्रु, नांदाहं ।
इस यंत्र को मशान की ठीकरी वी ✕
नीयत दोय परि लिखत्वाऽग्नि मध्ये
प्रज्वाल्य तदोपरिकुर्यात् ॥१३६॥

यह यंत्र रविवार के दिन लिख कर,
माथे में राखें, तो मंधवाय आये तथा
यह यंत्र पृथ्वी में गाडे तो टिड्डी खेत
को नही खावे ॥१४०॥

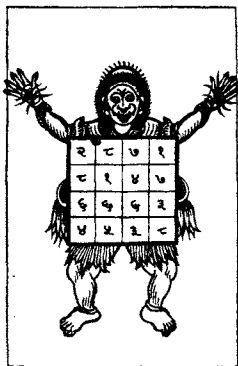
यंत्र नं० १४१

या यंत्र रविदिन ग्राक का दूध, सो आमकी लेखनी से लिखें । पानी ५१—घालिजें



४ उड़द ५१ लीजें । हांडी में जंत्र डाले, ओंटावे । मुड़े, मुड़े हाकिनी आवें सही ॥ १४१ ॥

यन्त्र नं० १४२



पलीतो मली भूत को स्वाही सों लिख
कर धूप दीजै, डोल में आवै सही । सत्य ॥१४२॥

यन्त्र नं० १४३

यह यन्त्र होली दीवाली में लिखै, पास राखे सर्व वश्य होय ॥ १४३ ॥

ॐ ह्रीं	क्ष	स्वा	हा	प	क्षीं
हा	क्षं	स्वहं	क्षं	प	क्ष्मीं
ॐ	ज	ह्रीं	कं	स्वा	कली

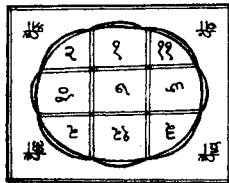
यन्त्र नं० १४४

यह यन्त्र अष्टगंध सूँ भोजपत्र पर लिखें । कनै राखै, तो घाव लगे नाहीं । फते होवै सही ॥ १४४ ॥

६६	५५	२२	११
५५	११	२२	६६
२२	६६	५५	११
११	५५	६६	२२

यन्त्र नं० १४५

राजा रानी मोहन को नव प्रकर्ण यन्त्र है सत्य । इस यन्त्र को अष्टगंध से लिख कर, पास में रखने से, राजा-रानी वश में होते हैं ॥ १४५ ॥



यन्त्र नं० १४६

२७	२७	२७	२७
२७	२७	२७	२७
२७	२७	२७	२७
२७	२७	२७	२७

इस यन्त्र को अष्ट गन्ध से, भोजपत्र पर लिखकर, डाकिनी के गले में बांधे, तो जिसको डाकिनी की बाधा है, वह दूर होगी ॥ १४६ ॥

यन्त्र नं० १४७

६७८	६८५	२	७
६	३	६८२	६८१
६८४	६७६	८	१
४	५	६८०	६८३

इस यन्त्र को सुगन्ध द्रव्यवासूँ लिखकर गले में बाँधना चाहिये, इस यन्त्र से भूत-प्रेत का डर कभी नहीं होय ॥ १४७ ॥

यन्त्र नं० १४८

२०	२७	२	७
६	३	२४	२३
२६	२१	८	१
४	५	२२	२५

यन्त्र नं० १४९

२३	१	२१	८
२	२६	८	२७
५	१८	२	२५
२२	६	२४	७

इस यन्त्र को थाली में लिखकर, धोकर तिसावे सर्व ज्वर ठीक हो जावे ॥१४८॥

यह यन्त्र भोज पत्र पर अष्टगन्ध से लिखे, दीतवार (रविवार) के दिन पास में रखे तो राड जीत कर घर आवे । सत्यं व तथा यन्त्र को बालक के गले बांधे तो नजर न लगे ॥१४७॥

विजय यन्त्र नं० १५०

ॐ	ह्रीं	दे	व	द	त	स्वा	हा
भै	ॐ	२८	३५	२	७	ॐ	भ
र	हा	६	३	३२	३१	हां	वा
की	ॐ	३४	२६	८	१	ॐ	नी
न्म	ह्रीं	४	५	३०	३३	हां	जी
श्री	प	द	मा	व	ती	स्वा	हा

यन्त्र रविवार के दिन आटे की गोली बनाकर मछलियों को खिलावे, तो जिस नाम से खिलावे, वह वश में होता है। इस यन्त्र को सवा लाख बार लिखने से मनचिन्तित कार्य की सिद्धि होती है ॥ १५० ॥

यन्त्र नं० १५१

४८५	४८२	२	७
६	३	४२६	४८८
४६१	४२६	८	१
४	५	४८	४६०

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर पास में रखे तो शस्त्र नहीं लगे, विजय हो ॥ १५१ ॥

यन्त्र नं० १५२

८	१	६८१	१०
११	६८०	४	५
२	७	६	६८२
६७६	१२	६	३

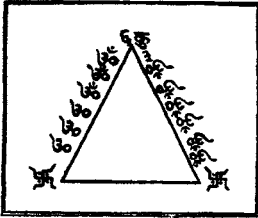
ग्रहण में लिख बाँधे, मृगी जाय ॥ १५२ ॥

यन्त्र नं० १५३

१४	२१	२	७
६	३	१८	१७
२०	१५	८	१
४	५	१६	१६

जन्म नजर निवारण को, भोजपत्र पर सुगन्ध सौ लिखकर गले में बाँधें ॥ १५३ ॥

यन्त्र नं० १५४



इदं यन्त्र राई भर दीवा बालें तो जिन्द
भूत जाय । निश्चय सेती इदं भूत नाशन
यन्त्रम् ॥ १५४ ॥

यन्त्र नं० १५५

ही	हीं
हीं	ही
ही	७
	४ही

रविवार के दिन यन्त्र लिख,
हाथ मे बाधे, तिजारी चढे
नही ॥ १५५ ॥

यन्त्र नं० १५६

१०४	१०११	२	७
६	३	१०८	१०७
१०२	१०५	८	२
४	५	१०६	१०९

यह यन्त्र लिख पास राखे, काख अलाई अच्छी होय । विष न रहे ॥ १५६ ॥

यन्त्र नं० १५७

२५	२२	१२	५५	१५	८७	८७
३७	४५	५५	३५	३७	८१	५५
८१	१७	५७	४३	५५	२५	४५
७७	८५	८७	८७	३५	३७	२५
५५	४७	२५	२५	५५	२५	३७
२५	२५	४२	१७	८७	२५	४५

यह यन्त्र अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर पास में राखे, तो भूत मैली बीजासण लागे नहीं, कभी याको दखल होय नहीं ॥१५७॥

यन्त्र नं० १५८

३	८	२
२	६	७
१	३	८
६	३	१

यह यन्त्र रविवार के दिन भोजपत्र पर लिखकर हाथ में बांधे, तो बेला जजर चढ़े नहीं ॥ १५८ ॥

यन्त्र नं० १५९

	माँ	माँ	माँ	माँ	
८	६	७	२	६	३
५	१०	५	८	७	४
७	१२	२	३	८	६
७	८	२	३	६	५
	काँ	काँ	काँ	काँ	

इहं यंत्रं अष्टगन्धेन भोज पत्रे लिखित्वा स्थापय, भरतार वश्यं ।

इस यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर, पास में रखे या स्थापन करे, तो भरतार वश में होता है ॥ १५६ ॥

यन्त्र नं० १६०

११	७४	२	३
३	७	५	१०
३	८	४	५
४	५	६	५

यन्त्र नं० १६१

१२६	४१	६०	२७
२६	६१२	१६	३५
१४१	१२	४३	४५
१२	१५१३	२१	४१

यन्त्र रविवार के दिन भोजपत्र पर लिखें, दुष्ट मूठ को भय कभी भी नहीं होय ॥ १६०—१६१ ॥

यन्त्र नं० १६२



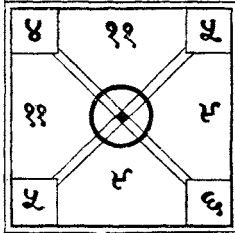
यन्त्र को पीपल के पान पर स्याही से लिखिये । इससे एकांतरा ज्वर जाय ॥ १६२ ॥

यन्त्र नं० १६३

६६	८८	७७	६६	५५
१०	६६	८८	७७	६६
१११	११०	१०६	१०८	१०७
६००	३००	६	७	६००
१०१	६६	६६	६७	८६

इस यन्त्र को लिखकर काजल कीजे, पाछे ७ दिन लीजै, अ जनि को करि भरतार कर्न जावै बश्यं भवति ॥ १६३ ॥

यन्त्र नं० १६४



यह यन्त्र भोजपत्र पर लिख, माथा में राखे, सभा वश होय सही ॥ १६४ ॥

यन्त्र नं० १६५

	१२	३	१६	१५	१६
	१४	२०	२१	२	५
	१	७	१३	१८	२५
	१५	२४	५	६	१२
	१०	११	१७	१३	४

हनुमन्त की आज्ञा फुरे

हनुमन्त की आज्ञा फुरे

यह पञ्चावती यन्त्र लिखकर विलोवनी के बाँधने से घी ज्यादा होता है ॥ १६५ ॥

यन्त्र न० १६८

केशर से थाली में लिख धोय ॥ १६८ ॥

४	५	३१	३६
३५	३२	८	१
७	२	३४	३३
३०	३७	३	६

यन्त्र न० १६९

यन्त्र जाप मे स्त्री के सिरहाने राखे तो कोई बात का बिधन नहीं
सही ॥ १६९ ॥

५४	६१	२	६
७	३	४६	५७
६०	५५	६	१
४	६	५६	५६

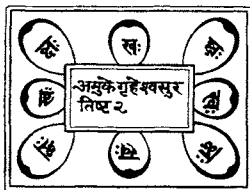
यन्त्र न० १७०

यन्त्र सुगन्धित द्रव्यों से लिखकर मकान कि देहली के ऊपर नीचे गाडे और उसको उलावे तो स्त्री सासरे रहे सही ॥ १७० ॥

६२	६६	२	८
७	३	६६	६५
६८	६३	६	६
४	६	६४	६७

यन्त्र न० १७१

इस यन्त्र को केशर, सिन्दुर, से लोटा के नीचे लिख कर पानी पीलावे तो वध होता है ॥ १७१ ॥



चौतीसा यन्त्र नं० १७२

यह यन्त्र क्रियाण मध्ये रखे, लाभ होय। कच्ची ईंट में लिख, गद्दी के नीचे गाडे, लाभ अवश्य होय ॥ १७२ ॥

	चं	चं	चं	चं	
८	२७	२१	८	७	५
८	१	१५	१८	२८	५
८	२३	२५	५	११	५
८	१३	३	३१	१७	५
	८	८	८	८	

यन्त्र नं० १७३

२	७	२४	४१
२२	२७	६	३
८	१	४०	२५
३६	३४	४	५

यन्त्र नं० १७४

५	६	६
७	१०	६
४	१	५

शाकिनी, डाकिनी, भूत भेसासुर लगै नही, पीपल के पान पर लिखि धूप दे, ताबीज में मडि गले में बांधे ॥ १७३ ॥

यन्त्र नं० १७५

२१	१८	१८	२५
२६	१७	३१	२०
२६	३२	२४	१६
१६	२७	२१	२

यन्त्र नं० १७६

३७	४४	२	७
६	३	४१	४०
४३	३८	८	१
४	५	३६	४२

ॐ तमो आदेश गुरु को आधाशीशी आध
(कपाली) कमल माँग सवारो सारी रात
एकून आया, हनुमंत आया कोई लाया सहसा-
मर्णा को मुवगर लाया, सबाहाय की धुरी हांक
सुनीं हनुमंत की (आधा शोशो) जाय ॥ १७५ ॥ १७६ ॥

जन्त्र पीड को कागज पर रयाही
से लिखें तो पीडा मिटै ॥ १७६ ॥

यन्त्र नं० १६६

यन्त्र बालो में लिख स्त्रो को मिलावे, तो गर्भ ६ माह पोठै खलास होय ॥ १७७ ॥

यः	यः	य	यः	यः	य	यः
यः	२४	३१	२	७	६	यः
यः	६	६	२	८	२७	य
यः	३	२५	८	१	३	यः
यः	६	५	२	६	२६	यः
यः	यः	यः	यः	यः	यः	यः

यन्त्र नं० १७८

२६	३६	२	८
७	३	३३	३२
३१	३०	६	१
४	६	३१	३१

यन्त्र लिख थल में गाढ़े। रविवार के दिन उलघा तो गर्भ जाता है ॥ १७८ ॥

यन्त्र नं० १७९

६७७	६८४	२	७
६	३	६८१	६८०
६८३	६७८	८	१
४	५	६७६	६८२

यन्त्र सुगंध से लिखे। गाय के गले बांधी, बछड़ा होगा तथा स्त्री के गले में बांधे तो भरतार वश्य होय ॥ १७९ ॥

यन्त्र नं० १८०

३३	४०	२	८
७	३	३७	३६
३६	३४	६	१
४	६	३५	३८

यन्त्र माल कांगनी का रस सूँ जाका घर में गाढ़े ताके सर्प भय होय नाहीं ॥ १८० ॥

यन्त्र न० १८१

३७	४४	२	८
७	३	४१	४०
४३	३८	६	१
४	६	३६	४२

इस यन्त्र को मुर्गा की बीट से कागज पर लिख कर माथे पर रखे, तो वश में हो ॥ १८१ ॥

यन्त्र न० १८२

३४	४१	२	८
७	३	३८	३७
४०	३५	६	१
४	६	३६	३६

यन्त्र घर के सम्मुख हिरमिच से मांडे, तो डाकिनी शाकिनी का भय नहीं होय ॥ १८२ ॥

यन्त्र नं० १८३

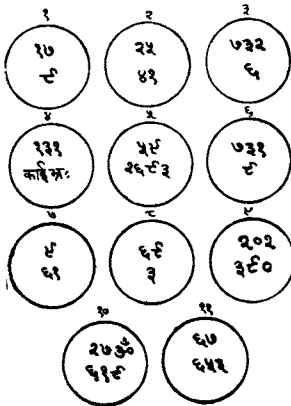
३६	४३	२	८
७	३	४०	३६
४२	३७	६	१
४	६	३८	४१

यन्त्र औच का रस सूँ निख, भोज-पत्र,
ऊपर घर में राखें तो सर्प, आवे नहीं ॥ १८३ ॥

यन्त्र नं० १८४

४२	४८	२	६
७	३	४६	४५
४८	४३	६	१
४	६	४४	४७

यन्त्र पौल के दरवाजे निखे, शत्रु देख
जल मरे । शत्रु वश होय सही ॥ १८४ ॥
यन्त्र नं० १८५



गेहूँ की रोटी आदित्यवार के दिन
करावे । ११ तिह ऊपर यह यन्त्र लिखिये
ते रोटी छाया में सुखावे, पुरुष कुत्ती—
स्वाननी ते खिलावे तो स्त्री वश्य होय
और स्त्री स्वान में खिलावे तो पुरुष
वश्य हो ॥ १८५ ॥

यन्त्र नं० १८६

४४	५१	२	८
७	३	४८	४७
५०	४५	६	१
४	६	४६	४६

कुमारी कन्या के हाथ पूती २॥ को कतार कर ये यन्त्र कागज में दूध से लिखें ।
स्त्री के गले बांधे, दूध ज्यादा होय ॥ १८६ ॥

यन्त्र नं० १८७

४५	५२	२	८
७	३	४६	४८
५१	४६	६	१
४	६	४७	५०

यन्त्र भोजपत्र पर दिवाली की रात लिख, गले में राखें । मनुष्य व स्त्री, तो कामण
इमण लागे नाही ॥ १८७ ॥

यन्त्र नं० १८८

४२	४६	२	८
७	३	४६	४५
४८	४३	८	१
४	६	४४	४७

यंत्र, वावरा का पान पर साडे, जाका नाम को सो यन्त्र बन में गाडे, तो वह भ्रमता फिरै ॥ १८८ ॥

यन्त्र नं० १८९

५४	६१	२	८
७	३	५८	५७
६०	५५	६	१
४	६	५६	५६

यन्त्र जापा में स्त्री के तिरहाने रखै तो कोई बात का विघ्न नही, सही ॥ १८९ ॥

यन्त्र नं० १६०

६१	६८	२	८
७	३	६५	६४
६७	६२	६	१
४	६	६३	६६

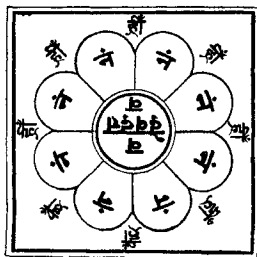
यंत्र बुझारी के माहि लिखकर के
मशान में गाड़े, तो स्त्री की कूँख
बन्द होय ॥ १६० ॥

यन्त्र नं० १६१

६५	७२	२	८
७	३	६६	६८
७१	६६	६	१
४	६	६७	७०

यंत्र आक को जड़ सूँ लिख, माथे
राने, तो देवता प्रसन्न होय ॥ १६१ ॥

यन्त्र नं० १६२



यह यन्त्र गर्म पानी में रखिये। तीन दिन में शीत ज्वर जाय। शीतल पानी में रखे शी
ज्वर जाय, हाथ में बाँधे बेला ज्वर जाय धूप खेवै, भूखों को जिमावै ॥ १६२ ॥

यन्त्र नं० १६३



१ यन्त्र चौराहे में और १ यन्त्र शत्रु के द्वारे गाड़े १ आक के वृक्ष में बांधें। पहले दस हजार जपना, दशाश होम करना, उवाटन होय यन्त्र मन्त्र में है ॥ १६३ ॥

यन्त्र नं० १६४

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	२७५	२७५	२७५	२७५	ॐ
ॐ	२७५	२७५	२७५	२७५	ॐ
ॐ	२७५	२७५	२७५	२७५	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

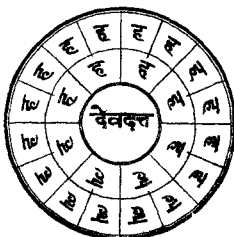
नोट— इसकी बिधि उपलब्ध नहीं हो सकी है।

यन्त्र नं० १६५

४२	४८	२	६
७	३	४६	४५
४८	४३	६	१
४	६	४४	४७

यन्त्र लोहे के ताबीज में घाल कर स्त्री के गले में बांधे गर्भ रहे ॥ १६५ ॥

यन्त्र नं० १६६



यह यन्त्र श्मशान के कोयले से धतूरे की लेखनी से लिखे । मनुष्य की खोपड़ी पर अग्नि में तपावे, शत्रु को ज्वर चढ़े । निकासे छुटे ॥ १६६ ॥

यन्त्र नं० १९७

१०	२	८	८
३	७	६	६
४	६	१	१
६	५	८	८

जत्र भोजपत्र ऊपर द्विगुल से लिख, गले में धाये तो ताव रोग जाय बालक का सही छै ॥१९७॥

यन्त्र नं० १९८

२८	३५	२	८
७	३	३२	३१
३४	२६	६	१
४	६	३०	३३

जत्र थाली के ऊपर मांड स्त्री को दिखावे । उलंघी घोनी प्यावे तो कण्ठी का कण्ठ छूटे ॥१९८॥

यन्त्र नं० १९९

६०	६७	२	८
७	३	६४	६३
६६	६१	६	१
४	६	६२	६५

जत्र स्त्री ने दूध में घोल पिलावे, पुष्य नक्षत्र में पावा आन पड़े ॥१९९॥

यन्त्र नं० २००

ही	ही	ही	ही
ही	देव	दत्त	ही
ही	मन्त्र	कुरं	ही
ही	ही	ही	ही

यह यन्त्र पाम राखे, राजा गुरु, प्रसन्न होय अष्ट गन्ध सूं लिखे ॥२००॥

यन्त्र नं० २०१

४३	४२
३११	७०

इस यन्त्र को स्याही से लिख कर भाँचे पर बाँधे,
तो आँधा शीशी जाय ॥२०१॥

यन्त्र नं० २०२

५	२
३	७

इस यन्त्र को रविवार के दिन पीपल
के पत्र पर लिख, हाथ में बाँधे तो अन्तरा ज्वर
जाता है ॥२०२॥

यन्त्र नं० २०३

१२	११	६६	१
६	११	॥॥	॥॥

रवि दिन घोघ पिलावे, स्त्री
पुरुष बरय होय ॥२०३॥

यन्त्र नं० २०४

७७	१	१	५
२	७	५	१३
७	१३	१	५
१	५	१३	७

गर्भे स्तम्भन यन्त्र कुंकुम गौरोचन सूं भोज
पत्र पर लिखे कंठ में बाँधे तो गर्भ का
स्तम्भन होता है ॥२०४॥

यन्त्र नं० २०५

७	४५	१	७
२	४६	८	४४
४६	३	४३	५
४३	६०	४५	४

यह यन्त्र केशर सूं लिख धाली में लिख
कर धोल कर पिलावे, तो प्रसव की
वेदना में छुटे ॥२०५॥

यन्त्र नं० २०६

१६	२	१२
६	१०	१४
८	१८	४

ये यन्त्र धोय पिलावे कण्ठी छूटे ॥२०६॥

यन्त्र नं० २०७

यः	नः	२प्रः
ॐ	घः	घः
सः	सीः	दः

पीपल के पत्ते पर लिखे, सिर पर बांधे,
सिर दर्द जाय ॥२०७॥

यन्त्र नं० २०८

ॐ १	न ४	नः ४
२म ८	त ८	२६
द ७	ल ८	ज ३

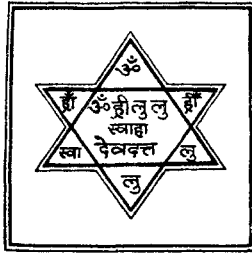
बांधा शीशी जाय ॥२०८॥

यन्त्र नं० २०९



इदं यन्त्रं कुम कुमादिभि लिख्यते कंठेघ्नियते शिरोति रोगं निवारयति रक्षां करोति ॥२०९॥

यन्त्र नं० २१०



इस यन्त्र को बालक के गले में बांधने से रोना दूर होता है ॥२१०॥

यन्त्र नं० २११

८	१	६
३	५	७
४	९	२

एक च धन लाभ च । द्वितीयं च धनं क्षय ॥
 त्रितिय मित्र संयुक्तं । चतुर्थं च कलहं प्रिय ॥१॥
 पच मे मुख लाभाय । षष्ठमे कार्यं नाशन ।
 सप्तमे धन धान्य च । अष्टमे मरणं ध्रुव ॥२॥
 नव में राज सन्मान । कश्चित् जिन भाषितं ।
 केवली समाप्तं ॥२११॥

यन्त्र नं० २१२

४	६	२
३	५	७
८	१	९

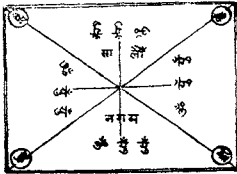
यह यन्त्र १०८ बार मीन सो लिखि भजिमे
पुष्ट बेदी भाजि पड़े ॥२१२॥

यन्त्र नं० २१३

८	३	४
१	५	६
९	७	२

यह यन्त्र खड़ी सू धाली मे लिखि
स्त्री ने दिखावे तो कष्ट सू छूटे ॥२१३॥

यन्त्र नं० २१४



यह यन्त्र घृत पात्र के नीचे
राखे । पात्र चालने तो माय माहि घृत
बहे टूटे नही अष्ट ग घ सो लिख ॥२१४॥

यन्त्र नं० २१५

ॐ पादो नाथाय नमः

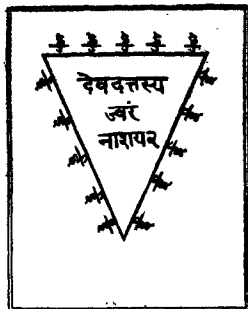
८	१०	१३	१
७४	२	७२	७१
२	७५	६८	६
३५	५	४	१४

अमृत मार्ग पर चक्र पागत स्तंभ
भवति स्वाहा । सत्य कुरु स्वाहा प्रबल
स्थभो भवति । भोज पत्रे लिख शत्रु दारे
प्रवेशे स्थाने वा लिख तथा भोज पत्रे लिखि
त्वा सूत लपेटे आटा की गोली मध्ये
धालिये मनुष्य कृपाले ॥२१५॥

यन्त्र नं० २१६

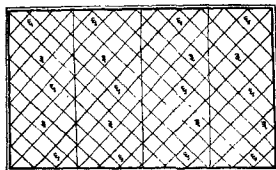


यन्त्र नं० २१७



ये यन्त्र शीत ज्वर बुझने के पूर्व अग्नि में तपावें। जब तक वक्त टल जाय पानी के कटोरे में डाल देवे सिरहाने राखें ज्वर जाय ॥२१६, २१७॥

यन्त्र नं० २१८



यन्त्र जंजीरे का सिन्दूर से लिखे। दिखावें जलावें भूत व कारे सही ॥२१८॥

यन्त्र नं० २१६

यन्त्र नं० २२०

४५	४१	५	२
५४	५४	४६	४२
४२	५१	४४	४१
४५	४२	५२	४१

२७	३४	२	७
६	३	३१	३०
३३	२८	८	१
४	५	२६	३२

इस यंत्र को पात पर लिख स्त्री को खिलाने से प्रसूति में कष्ट नहीं होता ॥२१६॥

इस यंत्र को बच्चे के गले में बाँधने से दृष्टि दोष निवारण होता है ॥२२०॥

यंत्र नं० २२१

८	१	४६८॥	४६३॥
४६४॥	४६७॥	४	५
२	७	४६३॥	४६९॥
४६६॥	४६५॥	६	३

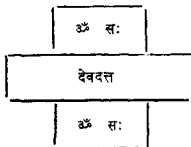
इस यंत्र से गर्भ स्तम्भन होता है ॥२२१॥

यन्त्र नं० २२२

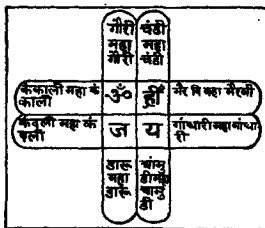
४	३	८
६	५	१
२	७	९

जमीन में लिखे भेटे शत्रु उच्छादन होय ॥२२२॥

यन्त्र नं० २२३

इस यन्त्र को पान में रख
खिलावे वश्य होय ॥२२३॥

यन्त्र नं० २२४



इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिख कर कमर में बांधे, तो सर्व वायु जावे ॥२२४॥

यन्त्र नं० २२५

८२१	८२४	८२६
८२६	८२८	८३०
८२७	८३२	८२५

मृत वत्सा के मरे हुये बच्चे होना
बंध हो ॥ २२५ ॥

यन्त्र नं० २२६

३८	३८	३८	३८
३८	३८	३८	३८
३८	३८	३८	३८
३८	३८	३८	३८

इस यन्त्र को गले बांधे, शाकिनी
जाये ॥ २२६ ॥

यन्त्र नं० २२७

३७	४४	२	७
६	३	४१	४०
४३	३८	८	१
४	५	३६	४२

पीपल के पत्ते पर लिख बांधे,
ज्वर जाय ॥ २२७ ॥

यन्त्र नं० २२८

६	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

यह यन्त्र लिख कर, सीमा में गाढ़े तो
ढीढ़ी नष्ट हो जाय ॥ २२८ ॥

यन्त्र नं० २२६

१	८	१०	८२
८१	११	५	४
७	२	८३	६
१२	८०	३	६

यन्त्र लिख कर बांधे बांधा शीशी जाय ॥ २२६ ॥

यन्त्र नं० २३०

१२॥	१२॥	१२॥	१२॥
१२॥	१२॥	१२॥	१२॥
१२॥	१२॥	१२॥	१२॥
१२॥	१२॥	१२॥	१२॥

यन्त्र बांधे जुआ जीते ॥ २३० ॥

यन्त्र नं० २३१

४	३२	७	३७
३८	६	३५	१
३३	३	३६	८
५	३९	२	३४

यन्त्र लिख बांधे शूल जाय ॥ २३१ ॥

यन्त्र नं० २३२

१०	१७	२	७
६	३	१४	१३
१६	११	८	१
४	५	१२	१५

यन्त्र लिख नीले छोरे मे बांधे, सिर पीड़ा मिटे ॥ २३२ ॥

यन्त्र नं० २३३

१४	२१	२	७
६	३	१८	१७
२०	१५	८	१
४	५	१६	१६

यन्त्र नं० २३४

१८	२५	२	७
६	३	२२	२१
२४	१६	८	१
४	५	२०	२३

यह यन्त्र लिख धीय गिलावे, सुख से प्रसव होय, कष्ट छूटे ॥ २३३ ॥

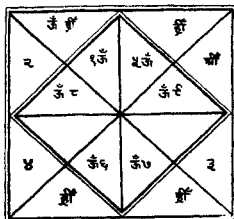
पोसल के पत्ते पर लिख कर चर्खे से बांध उल्टा घुमावे, परदेश गया हुआ आवे ॥ २३४ ॥

यन्त्र नं० २३५

य	अं	जं	बं
क्ष	तं	जं	लं
हं	जं	लं	बं
नं	क्षं	अं	लं

भोज पत्र पर लिख सिरहाने रखे तो स्वप्न आवे नहीं ॥ २३५ ॥

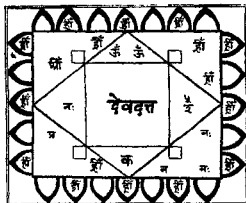
यन्त्र न० २३६



ॐ नमो पञ्चांगुलि २ परम सरिसता मय गल वशीकरण लोहमई डंड मोहिणी वज्रमयी कोटा फाटनी चौषट कामन निह डगरीरण मध्ये रावल मध्ये शशु मध्ये डाकिनी मध्ये नाम मध्ये जिको मुंड ऊपर विराट करावई जडई जडावई चिन्ते चिन्तावई मन धरई धरावई तीन मध्ये पञ्चांगुलि तणुवज्रनिर्घात पढ़ई सत्यम् ।

ये मन्त्र यन्त्र के चारो तरफ लिखे । ये मन्त्र सर्वकार्य ऊपर श्रेष्ठ है । भुजा अथवा गले में बांधे तो भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी की बाधा दूर हो । राजा प्रजा सर्व वश्य होते हैं धूप से पूजा करे ॥२३६॥

यन्त्र नं० २३७



यह मन्त्र लिख बांधे शाकिनी, डाकिनी छाया भूतादि दोष जाये । वशी होय सही ॥२३७॥

यन्त्र नं० २३८

५०	५७	२	७
६	३	५४	५३
५६	५८	८	१
४	५	५२	५५

इस यन्त्र को घर के दरवाजे पर गाढ़े तो उत्तम व्यापार चले ॥२३८॥

यन्त्र नं० २३९

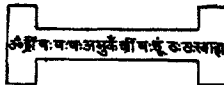
ॐ

	८	१	६	
श्री	३	५	७	ह्री
	४	९	२	

क्ली

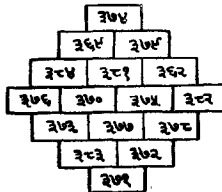
इस यन्त्र को पान पर, अथवा पीपल के पत्ते पर, भोज पत्र पर केशर से लिखे ।
ॐ ह्री क्ली श्री नमः का आप करें, दोप धूप रखकर प्रभात, संध्या, सोते समय यंत्र
सिरहाने राखे, शुद्ध पवित्र होकर रहे, अर्द्ध रात्री के पीछे सब शुभाशुभ मालूम हो ॥२३९॥

यत्त्र नं० २४०



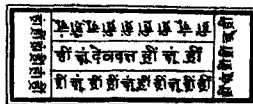
किसी पर चलाना होय तब शील संयम तथा त्रियोग शुद्धि के साथ लाल वस्त्र पहन कर उत्तर दिशा में मुख करके खड़ा हो। लाल माला से १२००० माला सवा पांच ग्रंथुल की तावे की कील बाँये हाथ में लेकर ॥२४०॥

यंत्र नं० २४९



इस यंत्र को दुकान के तथा घर के दरवाजे पर लिखकर चिपका देवे तो चोरी कभी नहीं होती है, चोर भय मिटता है ॥२४१॥

यत्प्र नं० २४२



इस यन्त्र को अष्ट गंध से भोज पत्र पर लिखकर गले में बांधे तो सन्तान पुत्र होता है। और होकर मर जावे तो जीवे, मूल नक्षत्र रविवार के दिन पूजा के रस से भोज पत्र पर यंत्र लिखकर पास में रखे तो शत्रु मित्र हो जाय। सत्यं ॥२४२॥

यन्त्र नं० २४३



इस यन्त्र को अष्ट गंध से भोज पत्र पर लिख कर, गले में बांधे तो राजा के बंधन से छूट जाय, बन्धि मोक्ष यन्त्र है ॥२८३॥

यन्त्र न २४४

ॐ १६	ह्रीं २	ह्रीं ३	ह्रीं १३
सु ५	स ११	व १०	ह्रीं ८
ॐ ६	ह्रीं ७	ह्रीं ६	ह्रीं १२
सः ४	सः ४	ठः १५	ह्रीं १

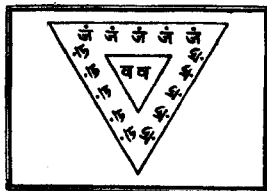
इस यन्त्र को भोज पत्र पर अष्ट गंध से लिखकर घर में बांधे तो शाकिन्यादि नष्ट हो और ध्वजा पर लिखे तो राजा शत्रु भागे, घर में रखे तो घर का सर्व उपद्रव नाश हो, सबेरे नित्य ही इस यन्त्र का दर्शन करे तो शुभ हो ॥२४४॥

यन्त्र नं० २४५



इस यन्त्र को अष्ट गन्ध से भोज पर लिखकर बांधे, तो निर्धन को धन की प्राप्ति हो ॥२४५॥

यन्त्र नं० २४६



चन्दन कस्तूरी, सिन्दूर, गोरोचन, कपूर, इस बीजों से थाली में यन्त्र लिखे, फिर थोड़ा सा एक बरनी गाय का दूध डालकर रुई से उस यन्त्र को पोंछ लेवे, फिर उस रुई की बत्ती बनाकर दीपक में जलाना । जिसको प्रेत लगा हो वह आता है ॥२४६॥

यन्त्र नं० २४७

हीं हीं	ही ही	हीं हीं	हीं हीं	हीं हीं	हीं हीं
हीं हीं	हीं हीं	हीं हीं	हीं हीं	हीं हीं	हीं हीं
हीं हीं	हीं हीं	हीं हीं	हीं हीं	हीं हीं	हीं हीं

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अमुकं उच्चाद्य वषट् ।

विधि :—इस मन्त्र का, १० हजार जप करके दशांश होम करने से सिद्ध होता है, फिर इस यन्त्र को १०६ बार लोहे की कलम से जमीन पर लिखना और पूजन करना तब जंत्र मन्त्र सिद्ध हो जायेगा । फिर एक चिमगादड़ पक्षी को पकड़कर लावे । उस चिमगादड़ के पंख पर पीपल, मिरचु घर का धुआं, वन्दर का बिण्टा, नमक, समुद्र फेन इनका चूर्ण कर स्याही बनावे । उस स्याही से यंत्र मन्त्र लिखकर उस चिमगादड़ पक्षी को उड़ा देवे, चिमगादड़ जिस दिशा में उड़ेगा, उसी दिशा में शत्रु भाग जायेगा । उसका उच्चाटन हो जाएगा ॥२४७॥

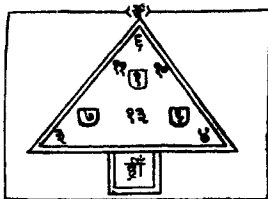
यन्त्र नं० २४८

ह्रीं ह्रीं ह्रीं म्र ह्रीं

देवदत्त	अ अ

ये यन्त्र अष्ट गन्ध से लिखकर दरवाजे के चौखट में बांधने से बहुत सासरे नहीं रहती हो तो रहे ॥२४८॥

यन्त्र नं० २४६



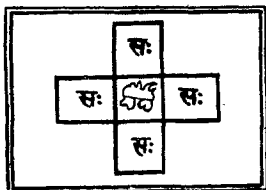
इस यन्त्र को भोज पत्र पर अष्टगंध से लिखे और पगड़ी में अथवा टोपी में रखने तो छत्रधारी होता है ॥२४६॥

यन्त्र नं० २४०

८	२	१०
९	७	४
३	११	६

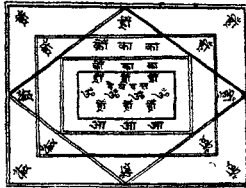
इस यन्त्र को १ लाख बार लिखकर सिद्ध करे । फिर कार्य पडे तब प्रयोग करे ॥२४०॥

यन्त्र नं० २५१



हस्त नक्षत्र रविवार के दिन भोज पत्र पर अष्ट गन्ध से लिखकर फिर पास में रखे, राजा वश्य, शत्रु मित्र होय ॥२५१॥

यन्त्र नं० २५२



इस यन्त्र को लिखकर हंडिया में डाले, फिर उस हंडिया में पीपल की छाल, संखा होली आधा सेर पानी डालकर बबून की लकड़ी से चूले पर उवालना तो शाकिनी की जो बाधा हो, तो दूर होती है, शाकिनी पुकारती आवे सर्व दोष मिटे। आवेश उतारन यत्र है ॥२५२॥

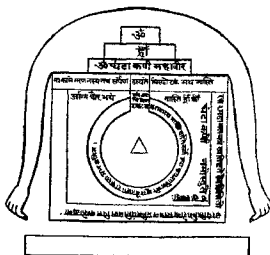
यन्त्र नं० २५३



ॐ नमो लडी लडगीही में ब्रह्म मसाणं हिडई नागी पडर केसी मुहई विकराली
अमकडा बी अंगई पीडा चालई माजी मराती केर उरभ सई अमकडा के अंगई पीडा करे
सही मात लडी लडगी तोरी शक्ति फुरई मेरी चाडमरई हुं फट् स्वाहा ॥२५३॥

विधि :—मोम का मनुष्याकार पूतला बनावे फिर जैसा यत्र में है वैसा ही पूतले पर अक्षर
स्थापन करे, फिर पूतले पर सिन्दूर चढाकर स्वयं नग्न हो, लाल कनेर के फूल से
मंत्र १०८ बार जपकर पूजा करे, फिर पूतला के जिस अंग में सूई चुबावे, शत्रु के
उसी अंग में पीड़ा होती है। दूध दही से स्नान करावे तब अच्छा होता है। इसकी
साधना एकान्त में तथा इसमान में व रात्रि को निर्जन स्थान में करे। विधि चूके
तो वह स्वयं मरे।

यन्त्र नं० २५४



यह यंत्र घंटा कर्ण कल्प का है। इस यन्त्र को अष्ट गन्ध से भोजपत्र पर लिखकर
मंत्र का साढ़े बारह हजार जप विधिपूर्वक करे तो सर्व कार्य की सिद्धि होती है। विशेष विधि
घंटा कर्ण कल्प में देख लेवे ॥२५४॥

यन्त्राधिकार पन्द्रहिया यंत्र का विधि विधान

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ॐ
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ॐ
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ॐ

मूल मन्त्र :—ॐ ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः

यन्त्र साधना के समय मूल मन्त्र की हर रोज एक माला का जाप करना चाहिए।

विधि —योग्य शुद्ध व एकान्त स्थान में पूर्व दिशा को ओर भगवान् पार्श्वनाथ की मूर्ति की स्थापना करनी चाहिये। दशांग धूप या गुग्गुलु की धूप करना चाहिए, घृत का दीपक होना चाहिए। प्रत्येक यन्त्र लिखने के बाद उसकी पूजन करे। चावल, पुष्प, खोपरे का टुकड़ा, पान, सुपारी अनुक्रम से चढ़ाने चाहिए। उपरोक्त यन्त्रों को गिनती में लिखने से अलग-अलग फल की प्राप्ति होती है।

- (१) १० हजार—केसर कर्तूरी या गोरोचन की स्याही व चमेली की कलम से लिखे तो वशीकरण हो।
- (२) २० हजार—चिता के कोयलों की स्याह व लोहे की कलम से श्मशान की भूमि पर लिखे, तो शत्रु का उच्चाटन हो, विनाश हो और घटूरे के रस व कौए की पांख से लिखे तो शत्रु की मृत्यु हो।
- (३) ३० हजार—हल्दी की स्याही व सेह की शूल से लिखे, तो शत्रु का स्तम्भन हो।
- (४) ४० हजार—केसर की स्याही व चांदी की कलम से लिखे, तो देव दर्शन हो प्रसन्न हो।
- (५) ५० हजार—अष्टगन्ध स्याही व सोने की कलम से लिखे तो मोह न हो।

- (६) ६० हजार—अष्टगन्ध स्याही व चाँदी की कलम से लिखे, तो खोई अचल सम्पत्ति वापस प्राप्त हो ।
- (७) ७० हजार—अष्टगन्ध स्याही व चमेली की कलम से लिखे, तो द्रव्य प्राप्त हो ।
- (८) ८० हजार—अष्टगन्ध स्याही व चमेली की कलम व ग्राम केला, वटवृक्ष के पत्ते पर लिखे तो महान् बने ।
- (९) ९ लाख—अष्टगन्ध स्याही, चाँदी की कलम से लिखे तो भगवान की कृपा हो, सर्व कार्य सिद्धि हो ।

इन यन्त्रों के ग्रंथ भरने की अलग-अलग विधि है उसका फल भी अलग-अलग है जो निम्नलिखित हैं ।

- (१) १ से ९ तक के ग्रंथ भरे, तो देव दर्शन हो, १ लिखे तो वशीकरण हो ।
- (२) २ के अक से शुरू कर ९ तक लिखे, फिर १ लिखे तो वशीकरण हो ।
- (३) ३ से लेकर ९ तक लिखे, फिर १-२ लिखे तो भूमि प्राप्त हो । व्यापार वृद्धि हो ।
- (४) ४ से ९ तक लिखे, फिर १-२-३ लिखे, तो द्रव्य प्राप्त हो, देव दोष दूर हो ।
- (५) ५ से लेकर ९ तक लिखे, फिर १-२-३-४ लिखे, तो यह अशुभ है । अतः इसे न लिखे ।
- (६) ६ से लेकर ९ तक लिखे, फिर १-२-३-४-५ लिखे तो कन्या प्राप्त हो । उस पर कोई मारण का प्रयोग नहीं कर सकेगा ।
- (७) ७ से लेकर ९ तक लिखे, फिर १ से ६ तक लिखे, तो मोह न हो, अनेक लोग वश हो ।
- (८) ८ से लेकर ९ तक लिखे, फिर १ से ८ तक लिखे तो शत्रु के उन्नाटन हो, अशुभ चिंतन करने वाला विपत्ति में पड़े ।
- (९) ९ से प्रारम्भ करे, फिर १ से ८ तक के ग्रंथ लिखे, तो सर्व कार्य सिद्ध हो ।

पन्द्रहिया यंत्र कल्प

यह अति प्रसिद्ध व प्रभावशाली यन्त्र है । यह यन्त्र एक से लेकर नौ के अंक तक, नौ कोठों में ही भरा जाता है । इसको अधर से भी गिना जावे, योगफल १५ ही आयेगा । यह पन्द्रहिया यंत्र मुख्यतया चार प्रकार का बनता है । इसकी अलग-अलग वर्ण व संज्ञा होती है ।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

वर्ण— ब्राह्मण संज्ञा :—वादी के नाम से पहचाना जाने वाला यह यन्त्र मिथुन, तुला, कुम्भ के चन्द्र में लाल चन्दन, हिंगुल या अष्टगन्ध से लिखा जाना चाहिए।

वर्ण— क्षत्रिय संज्ञा :—म्यालमी के नाम से पहचाना जाने वाला यह यन्त्र धन व मेघ के चन्द्र में काली म्याट्टी व ब्रगस (कपूर) मिला कर लिखा जाना चाहिए।

४	३	८
९	५	१
२	७	६

२	९	४
७	५	३
६	१	८

वर्ण— वैश्य संज्ञा :—रवाखी के नाम से पहचाने जाने का यह यन्त्र वृषभ के चन्द्र में अष्टगन्ध से लिखा जाना चाहिए।

वर्ण— शुद्ध संज्ञा : आवी के नाम से पहचाना जाने वाला यह यन्त्र वृश्चिक और मीन के चन्द्र में काली रथाही से लिखा जाना चाहिए।

६	७	२
१	५	६
८	३	४

इन चारों यन्त्रों के अलग २ फल हैं। ब्राह्मण जाति वाले यन्त्र का फल सर्वश्रेष्ठ माना गया है। श्रत उन्हीं के विधि विधान का यहाँ उल्लेख किया गया है। उसे सिद्ध करने में निम्नलिखित वस्तुओं की आवश्यकता होती है।

लापसी, पूरी, अंतर की कलम, अष्ट गन्ध, रथाही, चावल, गुग्गुलु, पुष्प, खोपर के टुकड़े २१, ताम्र बेज के पान २१, सुपागी २१, घृत का दीपक, एक कोरा घड़ा।

विधि :- योग्य शुद्ध व एकान्त स्थान में पहले पूर्व दिशा की ओर घड़े की स्थापना करनी चाहिये। उसके सामने भोज पत्र बिछाना चाहिये। उसके ऊपर के भाग में घृत का दीपक हो, तोच के भाग में घूप का धूँया हो, जिसमें गुग्गुलु का घूप करना चाहिए। लापसी, पूरी आदि की भोज पत्र के बाँगे याधा आधा रखना चाहिये। तलश्चाम् अंतर की कलम में भोज पत्र पर अष्ट गन्ध से यन्त्र लिखना चाहिये। यह यन्त्र लिखते समय "ह्रीं या ॐ ह्रीं श्रीं" मन्त्र का जाप करने रहना चाहिये। यन्त्र लिखने के बाद उसका पूजन करे। फिर मन्त्र का ६,००० जाप करे। इस प्रकार २१ दिन करे, जिसमें सवा लाख जाप पूरा हो जायेगा। मन्त्र और यन्त्र की सिद्धि हो जायेगी, अन्न में, हवन, तर्पण आदि विधि पूर्वक करे।

इन यन्त्रों के अक भरने की अलग अलग विधि है। उसका फल भी अलग अलग है जो निम्नांकित है—

- (१) १ से ६ तक के अक भरे, तो हनुमानजी के आकार का यक्ष दर्शन दे।
- (२) २ के अक से शुरू कर ६ तक लिखे, फिर १ लिखे तो राज्याधिकारी वंश में हो।
- (३) ३ से ६ तक लिखे, फिर १-२ लिखे तो व्यापार वृद्धि हो।
- (४) ४ से ६ तक लिखे, फिर १-२-३ लिखे तो जिसके ऊपर देवी-देवता का दोष हो गया या किसी उच्चाटन आदि कर दिया हो वह दूर हो जायेगा।

- (५) ५ से ६ तक लिखे, फिर १-२-३-४ लिखे तो यह अणुभ है। स्थान भ्रष्ट कगता है। अतः इसे न लिखे।
- (६) ६ के अंक से शुरू कर ६ तक लिखे, फिर १ से ५ तक लिखे, उस पर कोई मारण का प्रयोग नहीं कर सकेगा।
- (७) ७ के अंक से शुरू कर ६ तक लिखे, फिर १ से ६ तक लिखे, तो अनेक मनुष्य बचेंगे।
- (८) ८ के अंक से शुरू कर ६ तक लिखे, फिर १ से ८ तक लिखे, तो धन की वृद्धि होगी।

इसको गिनती में लिखने से अलग अलग फल की प्राप्ति होती है।—

१००० लिखने से सरस्वती प्रसन्न होती है। विप का नाश होता है।

२००० लिखने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है। दुःख का नाश होता है। शत्रु बश में होता है। उत्तम खेती होती है। मन्त्र तन्त्र की सिद्धि होती है।

३००० लिखने से वशीकरण होता है। मित्र की प्राप्ति होती है।

४००० लिखने से भगवान् व राज्याधिकारी प्रसन्न होते हैं, उद्योग धन्धा प्राप्त होता है।

५००० लिखने से देवता प्रसन्न होते हैं, बध्या के गर्भ रहता है।

६००० लिखने से शत्रु का अभिमान टूटता है, खोई वस्तु वापिस मिलती है, एकान्तर उबर मिटता है, निर्गम रहता है।

१५००० लिखने से मनवाञ्छित कार्य में सफलता मिलती है।

शुभ कार्य के लिए श्रावण में उत्तर दिशा की ओर मुंह करके यन्त्र लिखना चाहिए। सफेद माना, सफेद वस्त्र तथा सफेद आसन होना चाहिये। साधना के दिनों में ब्रह्मचर्य का पालन, सात्विक भोजन, शुद्ध विचार रखे जाने चाहिये।

लिखने के बाद एक यन्त्र को रखकर बाकी सभी को आटे की गोलियों में भरकर मछलियों को खिला देना चाहिये या नदी में बहा देना चाहिये।

चादी या सोने के मछलियों में डालकर पुरुष को दाहिने हाथ और स्त्री को बाये हाथ में या गले में धारण करना चाहिये।

विधि :— यह चाँसठ यौगिनियों का प्रभावक यन्त्र है। यह यन्त्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी रविवार या चतुर्दशी रविवार को सूर्य दिशा की ओर मुंह कर, अष्ट गन्ध से भोज पत्र पर लिखना चाहिए। अथवा सोने, चादी या ताँबे के पत्र पर खदबा कर घर में पूजन के लिये रखा जा सकता है। पूजन में रखने के बाद नित्य धूप, दीप करना चाहिये। शरीर की दुर्बलता, पुराना ज्वर तथा किसी भी प्रकार की शारीरिक व्याधि के लिये

सात दिन तक नित्य एक बार चांदी की थाली में अष्ट गन्ध से मिलाकर जल प्रक्षालित कर पिलाने से पूर्ण लाभ मिलता है। दस यन्त्र को धारण करने से भूत, प्रेत, पिशाच

चौसठ योगिनी महायंत्र

चौ स ठ यो गि नी म हा यं त्र
श्री च उ स ठ दि व्या रै न मः

१ दिव्ययोगिनी	२ महायोगिनी	६२ घोरा	६३ विकटी	६० दुर्जिता	५५ प्रेतभक्षणी	७ काली	८ कालरात्री
५ निमाचरी	१० हुंकारी	५४ यंत्रवाहिनी	५३ कौमारी	५२ यक्षी	५१ भक्षणी	१२ महाकाली	१६ रत्नांगी
४८ यमवृत्ती	४७ लक्ष्मी	१५ वीरभद्राक्षी	२० भूमाक्षी	२९ कलिप्रिया	२२ राक्षसी	४२ चक्री	४९ मोहिनी
४० कालाग्नि	३५ मंत्रयोगिनी	२७ कौमारकी	२८ चंडी	२५ बाराही	३० सुंदरारानी	२४ दुर्गेश्वरी	३३ क्रोधी
३२ वज्रणी	३१ भैरवी	३५ प्रेतवाहिनी	३६ कंदकी	३७ दीर्घलुब्धी	३८ मालिनी	२६ सैवरी	२५ मयंकरी
२५ विरूपाक्षी	२३ घोररक्तक्षी	४३ कंकाली	४४ सुवनेश्वरी	४५ कुंडला	४६ नालुकी	१८ प्रेतकारी	१७ नरभोजनी
५५ करालाक्षी	५० बौरीक्षी	१४ अर्द्धेश्वरी	१३ भूतघ्नक्षी	१२ कलिकरी	११ सिद्धेश्वरी	५५ विशाला	५६ कामुकिका
५७ व्याघ्री	५८ यक्षणी	६ डाकिनी	५ प्रेतक्षी	४ जिनेश्वरी	३ सिद्धयोगिनी	६३ नयलक्षी	६४ विपलक्षणी

य र यो श्री य मः

शाकिनी, डाकिनी व्यतर्ग आदि देवों का दूषित प्रभाव अथवा दोष नहीं होते हैं। यन्त्र को पानी में धोकर वह पानी घर में चारों कोनों में छिड़कने में व्यतर्ग देव सम्बन्धी दोष निवारण होता है। क्रुद्धि, मिद्धि व समृद्धि का आगमन होता है। प्रतिकूल तांत्रिक व साम्प्रिक प्रभावों को नष्ट करता है।

यन्त्रों का आकार

स्तम्भ कर्मार्थ	—	चौकोर यन्त्र बनावे।
उच्चाटनाय	—	पट् कोण
विद्वेषण	—	त्रिकोण
वशीकरण	—	कमलाकार
शान्ति	—	गोलाकार

विद्या आने का यन्त्र

७४	८१	७	८
७	३	७८	७७
८०	७५	८	१
४	६	७६	७९

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष में प्रत्येक दिन कासी की धाली में केजर से लिखकर उस धाली में खीर डालकर यन्त्र को धोवे, उस खीर को प्यावे तो ज्ञान की वृद्धि होती है।

चौत्रीसिया यन्त्र कल्प

अथ चौत्रीस के जन्म मन्त्र का व्याख्यान —

१. आदि भवन चौत्रीस भराय, आदर रक्षा बहुत बढ़ाय ॥ १ ॥

११	८	१	१४
५	१०	१५	४
२	१३	१२	७
१६	३	६	९

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्री श्री काला गौरा क्षेत्राला जहाँ जहा भेजिये तहाँई करवाला गाजंत आवा बाजंत जाय । घोरंत जाव उडन जाव, काला कनवा वाटका घट का चाले का भोंव का पगइण का चुहड़ का चमारी का प्रगट करे इस घर की आदर रक्षा बढ़ाई करे । गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

दूजे घर तै जो अनमरै रोग जहा लो सब परहरै ॥२॥

मन्त्र —ॐ ह्रीं श्री पद्मावती प्रसादान रोग दुःख विनाश नाई गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

तीजे ठाम जात घर आवे ॥३॥

मन्त्र :—ॐ ऐं ता विधधारणी भगडा जतिनी कुरु कुरु स्वाहा, गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

चौथे घर उच्चाट लगावे ॥४॥

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ब्राह्मणी रः रः ठः ठः ठः ।

विधि :—लूण राई का होप मंत्र जाप १०८ बार ।

पंचम घर धंमण करै सब कोई ॥५॥

मन्त्र :— ॐ अजता अजत सासताई सः पः षः अ. अमुक मुख बधन कुरु स्वाहा ।

छठे घर भट कचन फुन होय ॥६॥

मन्त्र :—ॐ नमो जहाँ २ जाण वेग कारज करु धनधुन वीर धन ले आव, वेग ले आव, धनधुन वीर की वाचा फुरः कुरु स्वाहा । मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि :—१३६ यंत्र लिखना । १३६ दिन में रोज १ यंत्र लिखना, जबकि रोटी खाणी घीव, नहीं खाणा और उस यंत्र को रोज आटे में डालकर नदी में बहा देना । १३७ वें दिन यंत्र लिखकर दाहिने मोड़े के नीचे दबाकर रखना । यंत्र देवता ले जाएगा, कुछ रुपये रख जावेगा । मंत्र जाप करता रहे ।

सात में घर मोहन करे नर नार ॥७॥

मन्त्र :—ॐ नमो सर्व मोहनी मेल राजा पाय पेल जो मैं देखू मार मार करता, मोई मेरे पांव पड़ता, रावल मोह देवल मोह स्त्री मोह पुरुष मोह नार सिंह वीर तेरी शक्त फुरे, दाहिना चाले नार सीध बाया चाले, हनवत मेरे पिंड प्रान का रीढ़पाल होडी मोह जहा मेरा मन चाले तहां मोह गुरु की शक्त मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि — १३६ बार जाप करना जहा जावे वहां सफल होय ।

आठवे घर तै होय उजाड ॥८॥

मन्त्र :—ॐ नमो ॐ लमोल वोटा हनवत वीर वज्र ले बैठा काकड़ा, सुपारी, पीले पान, मेरे दुश्मन घर उजाड करो, काहो प्राण गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि — शत्रु के घर मे गाड़ना, उजाड होय ।

नी में घर तै हाजरात कहावे ॥९॥

मन्त्र ॐ नमो कामरू देश ने कामरू आई, ता डंड राता ही माई, राता वस्त्र पहिर आई राता जाय जपती आई, काम छे, काम धारणी रक्त पाट पहिरणी परमुख बोलती आई वेग मन्त्र उतार लेही, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि :—लडकी को लाल वस्त्र पहनाकर बैठाने, दीपक जलावे, अगूठे पर काजल लगाकर मंत्र बोलकर हजरात चढ़ावे ।

दस में घर फल उपजै सारा धरती, नारि, तीर जंच विचारा ॥१०॥

मन्त्र :—ॐ नमो मन पवन पवन पठारा के राख बंधे गरम रहै ॐ हठा ॐ कचे मासौ फुलै कपाम पुरे मासे होई नीकास नदी अपुडी गगा वहे । अजुण साधे बाण पुरे मासे निकासे सही मतां हणवत जती की आण गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि यन्त्र लिखकर कमर के बांधे, संतान होवे, खेत में गाडे तो अनाज अच्छा उपजे ।

भ्यारह में घर तै लिखे जो कोई, लिख मेटे जीवे नहीं कोई ॥११॥

मन्त्र काल भैरो ककाल का तो बाही कलेजा भुंज कली रात काला मैं अरु चढ़े मसाण जिस ह्म चाहे निस नु आण कडी तोड़ कलेजा फोड़ नौमे छार मे द्वार लोहु जोल आव तो छरं न आवतो कलेजा फुटे गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि :—११६ यन्त्र लिखे । मन्त्र तो १०८ जाप करे । कौवे की पांख व श्मसान के कोयले की राख से लिखे तो शत्रु की मृत्यु हो । इसे न करे ।

बारह मे घर तै लिख जो कोई टोटा नहीं नफा फुल होई ॥१२॥

मन्त्र —ॐ गणवाणी पत रह मसाणी सो मै मागु ले ले आऊ काची नदी क व मै दीय फुल २ म्हा फुल जपे जगत्र दस कोस पंच कोसी ग्राहक ले आऊ गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईदबरो वाचा ।

विधि —१३६ यन्त्र लिखे, हाट में गाडे बहुत ग्राहक आवे ।

तेरहवां घर तै लिखे मुजान प्राणी सु करे है निदान ॥१३॥

चौदह घर तै चौदह विद्या कही लिख लिख पीव पंडित हो सही ।

मन्त्र ॐ ह्री श्री वदवद् वाग वादनी सरस्वती मम विद्या प्रसाद कुरु २ स्वाहा ।

विधि —यन्त्र १३६ लिख लिख के पानी मे घोलकर पीवे तो पण्डित हो ।

पन्द्रह घर ते लिखे मन लाय गुप्त ही आवे गुप्त ही जाए ।

मन्त्र : ॐ नमो उच्छिष्ट चटालिनी क्षोभणी द्रव्य आणय पर मुख कुरु २ स्वाहा ।

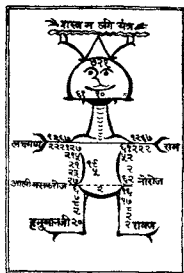
विधि —यन्त्र लिखके पावे । एक अपने पास रखे तो गुप्त आवे गुप्त जावे ।

सोचह घर तै कारज सत्र सरे आपा रखे भूल न करे ।

इन जत्र को जानी भेय सब कोई करे निसकी सेव ॥१६॥

मन्त्र :—ॐ ह्री श्री श्री चउसठ जोगनी की रक्षा करेगी कुरु २ स्वाहा ।

विधि :— यन्त्र १३६ पीवणा एक आपणा पास राखणा रक्षा करे ।



विधि :— इस यन्त्र को प्रात जव तारे व सप्तर्षी भगल के उतारे का समय हो, स्नान कर,

नये वस्त्र पहनकर चीनी मिट्टी की प्लेट या टुकड़े पर अष्ट गन्ध स्याही व अनार की कलम से पूर्व की ओर मुँह करके लिखे। फिर अपने गले में डाल ले। किसी प्रकार का शस्त्र उस पर नहीं चल सकेगा। शत्रु तलवार लेकर उस पर वार करे तो भी तलवार नहीं चलेगी।

अंडकोष वृद्धि रुके यन्त्र

४४२	४४६	२	७
६	३	४४६	४४५
४४८	४४३	८	१
४	५	४४४	४४७

विधि - इस यन्त्र को केसर में भोजपत्र पर रविवार को लिखकर दाहिने हाथ के बांधने से बढ़ते हुए अण्डकोष की वृद्धि रुक जाएगी।

स्वप्नदोष मिते यन्त्र

हा ॥	सा ॥	हो ॥
ल आ	ल आ	ल ओ
क ल	क ल	क ल
२	२५	३

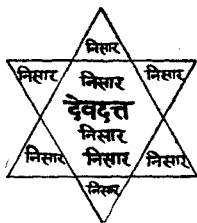
विधि :—पुण्य रविवार को भोज पत्र पर लिखकर कमर के बांधे तो स्वप्नदोष मिटे, स्तंभन बड़े।

मिरगी मिटे यन्त्र

४२	६२	२	॥ ७
४५	४३	७	७।
॥१४॥	॥१५॥	४४	४७॥
॥१४॥	॥१५॥	४४	४७॥

विधि :—अष्टगन्ध से भोज पत्र पर यह यन्त्र चित्र कर भुजा पर बांधे, तो मिरगी का रोग मिटे।

वैराग्योत्पत्ति यन्त्र



विधि :— इस यन्त्र को अष्टगन्ध से भोज पत्र पर लिखकर लोहे के मादलिंग से मंदाकर मस्तक के बांधे दे तो धीरे-धीरे स्त्री व धन आदि से मोह से छूटकर वैराग्य की ओर

उन्मुखता होगी। अन्ततः वह व्यक्ति योगी व सन्यासी बन जायेगा। देवदत्त के स्थान पर व्यक्ति का नाम लिखा जायेगा।

पंचांगुली महा यन्त्र का फल

शुभ मूर्त में सफेद कपड़ा, सफेद आसन, में पूर्व की ओर मुह करके, अनाम की कलम से अष्ट रत्न स्याही बनाकर भोज पत्र पर लिखें, फिर इस यन्त्र को ताम्र पत्र पर खुदवाकर, मन्त्र का सात बार जप करें, फिर सर्वांग पर हाथ फेंकें, इसके प्रभाव से हस्त रेखा विद की भविष्यवाणी सफल होगी, यह यन्त्र सौभाग्यशाली, रोग नाशक व भूत प्रेत, वाधा नाशक प्रभावोपन्न यन्त्र है। मन्त्र यन्त्र के बाहर लिखा है।

विशेष मन्त्र साधना।

कार्तिक मास में जब हस्त नक्षत्र प्रारम्भ हो, उस दिन से मन्त्र की साधना प्रारम्भ करें। मार्ग शीर्ष के हस्त नक्षत्र में पूर्ण करें। प्रतिदिन एक माला का जाप करें। जप शुरू करने के पहले ध्यान मन्त्र का एक बार उच्चारण अवश्य करें।

ध्यान मन्त्र :—ॐ पंचांगुली महादेवी श्री सीमन्धर शासने।

अधिष्ठात्री करस्यासौ, शक्तिः श्री त्रिदशेश्वरः ॥

फिर जप शुरू करें, जाप के बाद निम्न पांच मन्त्रों की दस आहुतियों से अग्नि में दहन करें। इस प्रकार साधना करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। देवी का एक चित्र बाजोटे पर रखकर उसके सामने बैठकर साधना करनी चाहिये। हस्त नक्षत्र रूप आधार पर स्थित हाथ की पांच अंगुलियों के इतीक म्बरूप देवी का एक चित्र बनवा लेना चाहिये।

चित्र कल्पना

शनि की अर्धाङ्ग मध्यमा ऊगली के प्रथम पाँचवें के आध भाग पर देवी का मुकुट सहित मस्तक होगा। उसके पीछे सूर्य मण्डल होगा। देवी के आठ हाथ होंगे, जिनमें दाहिनी तरफ पहला हाथ आशीर्वाद का हो, दूसरे हाथ में रस्सी, तीसरे में खड्ग, चौथे में तीर हो, बाईं तरफ पहले हाथ में पुस्तक, दूसरे में घाटा, तीसरे में त्रिशूल और चौथे में धनुष। गले में आभूषण, ललाटे में तिलक, कानों में कुण्डल कमर में आभूषण व सुन्दर वस्त्र हो। पैर में मणिबन्ध रेखा के नीचे तक आये। इस तरह देवी का चित्र बनाना चाहिये।

फल :—जो भी व्यक्ति इसकी एक बार भी साधना करले । फिर नित्य ही हाथ को इस मन्त्र से सात बार मन्त्रित कर, उसे सर्वांग पर फेरे, तो इसके फलस्वरूप हस्तरेखा द्वारा जन्म कुण्डली बनाने में हाथ देखकर, फल कहने में ही सदा सफल नहीं होता, अपितु उसके मूढम रहस्यों को भी जान लेता है । पञ्चगुनिदेवी हम्नरेखाओं की अधिष्ठात्री देवी है ।

देवीपंचांगुलीसहायंज

[illegible]

महायन्त्र का साधन व मन्त्र विधि पूर्वक

यंत्र रचना :—प्रथम अष्टदल का कफल बनावे, उसमें प्रमथ अर्हंत, मिद्ध आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु, सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र्य लिखे । फिर उसके ऊपर अष्ट दल फिर बनावे उन

घांठी ही दलो मे अष्ट जया, विजया, अजिता, अपराजिता, जम्भे, मोहे, स्वम्भे, स्तम्भिनी, इन जयादि देवी को लिखे, फिर सोलह दल ऊपर और खींचे, उन सोलह दलों मे क्रमशः रोहिणी, प्रकृती वज्र शृ खला, वज्राकु शी, अप्रति चक्रा, पुरुषदत्ता, कालि, महाकालि, गान्धारी, गौरि, ज्वालामाग्निनी, वैरोटि, अच्युता, अपराजिता, मानसि, महा मानसि, इन सोलह विद्या देवी को लिखे, फिर उसके ऊपर चौबीस दल और बनावे, उन चौबीस दलो मे क्रमशः चौबीस यक्षिणीओं के नाम लिखे, चक्रेश्वरी आदि । फिर वतीस दल और बनावे, उन वतीस दलो मे क्रमशः अमुरेन्द्र, नायेन्द्र आदि वतीस इन्द्रों के नाम लिखे, उसके ऊपर चौबीस वज्र रेखा बनावे, उन चौबीस वज्र रेखा पर क्रमशः चौबीस यक्षों के नाम लिखे, गौमुखादि । फिर ऊपर दश दिक्पालों के नाम लिखे, फिर नव ग्रहों के नाम लिखे । ऊपर से अनावृत मंत्र लिखे, ॐ ह्रीं आ ओ हे अनावृत यक्षेभ्यो नमः । यह हुई यन्त्र रचना चित्र देखे ।

यन्त्र व मंत्र की साधन विधि

मन्त्र :—ॐ हां ह्रीं हूं ह्रौं हः असि आउसा मम् सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र का साधक १०८ बार जाप जपे, यह मूल मन्त्र है ।

शान्ति कर्म

ज्वर रोग की शानि के लिए साधक, रात्रि के पिछले भाग मे श्वेतवर्ण से इस महा यन्त्र को भोजपत्र या आम के पाटिया पर लिखे, फिर उस यन्त्र की पूजा करके, पश्चिम की ओर मुखकर, जान मुद्रा धारण कर पद्मासन मे बैठकर, सफेद माला मे, १०८ बार जप करे । इस तरह करने मे तीन दिन या, पांच दिन के भीतर ज्वर दूर हो जाता है । इसी तरह अन्य रोगों के निबे भी अनुष्ठान करे ।

पौष्टिक कर्म

मन्त्र : ॐ हां ह्रीं हूं ह्रा ह्रः अग्नि आउसा अस्य देवदत्तं नामधेयस्य मनः पुष्टिं कुरु २ स्वाहा ।

इस तरह पौष्टिक कर्म मे भी ऐसा ही करे । इतना विशेष है कि इस जप मे उत्तर की ओर मुह करके बैठे ।

वशीकरण

मन्त्र :—ॐ हां ह्रीं हूं ह्रौं हः असि आउसा अमुं राजाना वश्यं कुरु २ वषट् ।

इस वक्ष्य कर्म में, महायन्त्र को लाल रंग से बनावे, लाल पुष्पां से यन्त्र की पूजा करे, स्वतीकासन से बैठे, पद्म मुद्रा जोड़े, उत्तर की ओर मुंह करे, पूर्वार्द्ध के समय बायें हाथ से जाप १०८ बार करे।

आकर्षण कर्म

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं असि आउसा एता स्त्रियां आकर्षय २ मवीपद् ।

किसी का भी आकर्षण करना हो तो महायन्त्र को गाल वर्ण से यन्त्र बनावे, पूर्व दिशा में मुख करे, दण्डासन से बैठे, अक्षुब्ध मुद्रा जोड़े, और मन्त्र का १०८ बार जप करे, इसी तरह भूत प्रेत वृष्टि आदि का आकर्षण करे।

स्तम्भन कर्म

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं असि आउसा देवदत्तस्य क्रोध स्तम्भय २ ठ ठः ।

क्रोध स्तम्भन के लिए, महायन्त्र को हल्दी आदि पीले रंग से यन्त्र लिखे, पूजा सामग्री भी पीली बनावे, माला भी पीली हो, वज्रासन से बैठे, शंख मुद्रा जोड़े, मन्त्र का १०८ बार जप करे। इसी प्रकार सिंह आदि का क्रोध स्तम्भन करे।

उच्चाटन कर्म

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं असि आउसा देवदत्त उच्चाटय २ हू फट् २ ।

उच्चाटन कर्म में काले रंग की माला, काला रंग से ही महायन्त्र बनावे, दिन के पिछले पहर में, वायव्य दिशा की ओर मुंह करके कुकुटासन से बैठे, पल्लव मुद्रा जोड़े, पीली माला से वा काली से मन्त्र १०८ बार जप करे। भूतादिक का उच्चाटन भी इसी प्रकार करे।

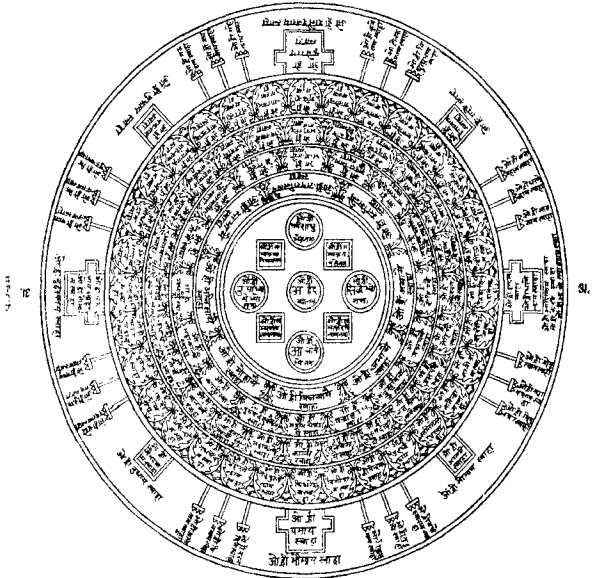
विद्वेष कर्म

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं असि आउसा देवदत्त, देवदत्त नाम धेयो परस्पर मनीष विद्वेष कुरु हू ।

महायन्त्र को काले रंग से यन्त्र बनावे, मध्याह्न के समय, आग्नेय दिशा में मुंह कर, कुकुटासन से बैठे, पल्लव मुद्रा करे। काले जाप्य से मन्त्र १०८ बार जपे। किसी में भी विद्वेष करना हो तो इसी प्रकार करे।

कसर

लं



२ ॥

कसर

अभिचार कर्म

मन्त्र --ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रीं हूं असि आउसा अस्य एतन्नाम धेयस्य तीव्र ज्वरं कुरु २ घे घे ।

इस महायन्त्र को जहर से अथवा किसी मादक द्रव्य से मीथ्रित काले रंग से यन्त्र लिखे, दोपहर के बाद, ईशान दिशा में मुख करके, काले वस्त्र, भद्रासन से बैठे, वज्र मुद्रा बनावे, खदिरमणि की जपमाला से मन्त्र का, जप १०८ बार करे तो ज्वर चढ़े शिरो रोग हो । आदि, मा० ।

महायन्त्र २



महायन्त्र का पूजा विधान

महायन्त्र का और जिन मूर्ति का पंचामृताभिषेक करके, महायन्त्र की पूजा, अष्ट द्रव्य से करे ।

पूजा मन्त्र — ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा जलं चन्दन आदि ।

अष्ट द्रव्य से क्रमशः चढ़ावे ।

फिर क्रमशः अर्हंतसिद्ध, आचार्य, उपाध्याय साधु दर्शन ज्ञान चारित्र्य का अर्घ्य चढ़ावे ।

फिर द्वितीय वलय की जयादि देवियों का अर्घ्य चढ़ावे, फिर १६ विद्या देवियों का अर्घ्य चढ़ावे, फिर चौबीस यक्षिणीयों की अर्घ्य से पूजा करे, फिर बत्तीस इन्द्रों की पूजा करे, फिर चौबीस यक्षों की पूजा करे, फिर दशा दिक्पाल को पूजा करे । फिर नवग्रह और फिर अनावृत यक्ष की पूजा करे । सबके पहले ॐ ह्रीं लगाना चाहिये ।

इस प्रकार महायन्त्र की पूजा करके फिर मूलमन्त्र का १०८ बार जाप अपने से कार्य सिद्ध होता है । प्रत्येक कर्म में जो विधि लिखी है । उसी विधि के अनुसार साधन करे तो ही कार्य सिद्ध होता है । लेकिन ध्यान रखें कि साधन करने से पहले महायन्त्र की पूजा करना परम आवश्यक है ।

॥ इति ॥

पद्मावती स्तोत्र को यंत्र मंत्र साधन विधान

प्रणिपत्य जिनं देवं श्री पार्श्वं पुरुषोत्तमम् ।

पद्मावत्यष्टकस्याहं वृत्तिं वक्ष्ये समासतः ॥

ननु किमिति । भवद्भिः । मुनिभिः सद्भिः पद्मावत्यष्टकस्य वृत्तिं विधायते । यतः साविरता कथं तस्याः सम्बन्धिनोऽष्टकस्य । भवतां मुनिनां सतां वृत्तिः कर्तुं पुज्यते । अत्रोत्तरमनुतरं वीतरागः यतः सा ति भगवतः । सर्वज्ञस्य तीर्थं करस्य सर्वोपद्रव रक्षण प्रबोधणस्य सकल कल्याणहेतोः श्री पार्श्वनाथस्य शासन रक्षण कारिणी सर्वसत्त्व भय रक्षण परायण अविरत कथा, सम्यग्दर्शनयुक्ता जिन मन्दिर प्रवर्तिनी सर्वस्यापि त्रिभुवनोदर विवरवर्तिनी लोकस्य मानसानन्द विधायिनी । अष्टचत्वारिंश सहस्र परिवार समन्विता । एकावतारा श्रीपार्श्वनाथचरणारविन्द समासाधनी । अतः कथमीदृशाया श्री पद्मावत्याः सम्बन्धिनोऽष्टकस्य वृत्तिम् पूर्वता अस्माकं दूषणजालमारोप्यतो न भवता, तस्मान्नात्र दोषः अथैवं वदिष्यति । ज

पूजकः सन् भवान् यंदुत किमिति पूर्वाचार्यं प्रणीतस्यास्य मन्त्र स्तोत्रस्य वृत्ति क्रियते, यतो भवता प्रयोजना भावात् ।

अत्रोच्यते प्रयोजनं हि त्रिविधं प्रतिपादयन्ति ।

१. परवादी कुञ्जर विदारण मृगेन्द्र सहृदयः स प्रयोजनम्
२. पर प्रयोजनं नववृत्ति प्रमाणस्य लोक प्रसिद्धस्य अस्य मन्त्र
३. उभय प्रयोजनं च स्तोत्रस्यार्थं स्मरणं लक्षणं विद्यत एव स्व प्रयोजनाः ।

तथा परप्रयोजनमपि विद्यत एव । यनस्ते केचित् भविष्यन्ति मंदतमा मनिपाठका येषामस्यापि वृत्ति सकाशात् त्रोधां भविष्यत् अतएव उभयप्रयोजनमपि संभवत्येव । तस्मात् वृत्तिकरणेऽस्माकं प्रयोजनमपि विद्यत एव । तत्राद्यं वृत्तमाह :-

पुरुषो मे उत्तम श्री पार्श्वं प्रभु जिन देव को नमस्कार करके, पद्मावती अष्टक वृत्ति में अच्छी तरह कहेंगा ।

यहां पर प्रश्न किया गया है कि आप विरक्त मुनि होकर आपके द्वारा कैसे पद्मावती अष्टक वृत्ति लिखी जा रही है ? आपसे उसका क्या सम्बन्ध है । आपके द्वारा पद्मावती अष्टक वृत्ति क्यों लिखी जा रही है ? आप तो वीनरागी मुनि है और ये देवी पद्मावती रागी है आपका उनसे क्या प्रयोजन है ?

उत्तर- ये देवी वीतगाय भगवान्, सर्वज्ञ तीर्थंकर के सेवकों का सर्वोपद्रव रक्षण करने में प्रयोग और सकल कल्याण के हेतु श्री पार्श्वनाथ प्रभु के शासन की रक्षा करने वाली, सर्व जीवों का भय से रक्षण करने में परायण है, इसलिये ये अविरत होते हुए भी इस देवी की यहां कथा है । ये सम्यग्दर्शन से युक्त, जिन मन्दिर प्रवर्तिनी है । सर्व तीनों लोक रूपी उदर ही है । बिल जिनका ऐसे जो लोग उनमें वर्तन करने वाली है । जन-जन को प्रानंद देने वाली है । चौरासी हजार परिवार से समन्वित हैं और एकावतारी है अर्थात् एक भव लेकर मोक्ष जाने वाली है और श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र के चरणों की अच्छी तरह से आराधना करने वाली है । इसलिये कैसे ऐसी श्री पद्मावती से सम्बन्धित अष्टक की वृत्ति को करने में आप हमारे पर आरोप्य अथवा दूषण जाल आरोपण करते हो ! इसलिए यहां पर कोई दोष नहीं है । यहां पर ही कहा जाता है तो फिर पूर्वाचार्यों के द्वारा प्रणीत जो ये स्तोत्र है । उसका ही हम वृत्ति करते हैं ये ही हमारा यहां पर प्रयोजन है ।

प्रयोजन तीन प्रकार का यहां पर प्रतिपादन किया है ।

- (१) पहला प्रयोजन प्रतिवादी रूपी हाथियों का विशरण करने में सिंह के समान है । सत् हृदय से यही प्रयोजन ।

- (२) पर प्रयोजन । इस मन्त्र स्तोत्र की नई वृत्ति बनाना ।
 (३) दोनो ही प्रकार प्रयोजन उभय, स्तोत्र का अर्थ स्परण लक्षण ही है जिसका ऐसा हो
 स्व का प्रयोजन है । इसमें पर का प्रयोजन भी देखा जाता है । कोई मन्द बुद्धि वाला
 जिना है तो उसको भी इस वृत्ति से बोध हो सकता है । इसलिये हमारा उभय प्रयोजन
 है । इस कारण से हमारे द्वारा वृत्ति का करना प्रयोजन भी देखा जाता है ।

अथ श्री पद्मावती स्तोत्रम्

श्री मद्गोर्वाणचक्रस्कृट मुकुट तटी, दिव्य माणिक्य माला ।

ज्योतिर्ज्वाला कराला, स्फुरति मुकुरिका, घृष्टपादारविन्दे ॥

व्याघ्रोत्का सहस्रज्वलदनलशिखा, लोलपाशांकुशाढ्ये ।

आं ह्रीं ह्रीं मंत्र रूपे, क्षाप्त कलिमले, रक्ष मां देवि पद्मे ॥१॥

व्याख्या—रक्ष पालय दे देवि, पद्मावती शाश्वत देवि । क मा स्तुतिकर्तारि, कीदृशे देवि,
 श्रीमन्त्रि पादारविन्दे श्री विद्यने येषाम् ते श्रीमन् श्रीमन् श्रीमन् श्रीमद्गोर्वाणचक्र
 स्फुटितानि च तानि मुकुटानि च स्फुटमुकुटानि । श्रीमद्गोर्वाणमुकुटानि तटे भक्ता
 तटि तेषा तटि श्रीमद्गोर्वाणचक्रस्कृट मुकुटतटि । दिव्यानि प्रधानानि माणिक्यानि
 दिव्यमाणिक्यानि तेषा माला, दिव्यमाणिक्यमाला । श्रीमद्गोर्वाण दिव्यमाणिक्यमाला ।
 तस्य ज्योतिस्तेज-सम्या ज्वाला । श्रीमद्गोर्वाण ० माणिक्यमाला ज्योतिर्ज्वाला
 तथा कराल स्फुरितमुकुरिका श्रीमद्गोर्वाण ० कराल स्फुरितमुकुरिका श्रीमद्गोर्वाण
 ० स्फुटित-मुकुरिका । श्रीमद्गोर्वाण ० मुकुरिकाया ध्रुष्टपादवेवा-विन्दे यस्या सा
 तस्या मोधन श्रीमद्गोर्वाण ० घृष्टपादारविन्दे पद्मा त्रिदशनिर्गुरव स्पष्टकिरीट
 पर्यस्त-तटस्थ-प्रधानरत्न माला । व्याघ्रोत्कासहस्र ज्वलदनल शिखालोलपाशा-
 कुशाढ्ये । व्याघ्रोत्काश्च ता उत्काश्च, व्याघ्रोत्का तासाम् महस्त्राणि ज्वलद्वा-
 नावनलश्च ज्वलदनलस्तस्य शिखा ज्वलत् अनल शिखा, व्याघ्रोत्कासहस्त्राणि च
 ज्वलदनल-शिखा च पाशश्च अकुश च, पाशाकुशो लीन च, पाशाकुशे लोल पाशाकुशे
 ते च व्याघ्रोत्का लोल पाशकुशा । तैराढ्य व्याघ्रो ० लोलपाशाकुशाढ्य तस्याः
 सर्वोधन व्याघ्रो ० पाशाकुशाढ्ये ।

तारापतनज्वाला सहस्रदेदीप्यमानानलधाराचबल पाशकरिकलभक्तु भविदारण प्रहरण
 इत्यर्थः । पुनरपि टीटणे आं की ह्री मन्त्र रूपे । आं च, की च, ह्री च, आ की ह्री रुपा आ की

ह्री रूपो य एव मन्त्र तत्स्वरूपे । आ क्री ह्रीं मन्त्र रूपे प्रतीते । पुनरपि को हंसे । क्षपित कलिमले ।

क्षपितः कलिमलं यया सा तस्याः सवोधन । हे क्षपितकलिमले । विघटित-पाप मले । अस्य भाव माह ।

श्री कार नाम गर्भं तस्य बाह्यपोद्गदले लक्ष्मी बीजमालिन्य । निरन्तर ध्यानमान विगलादि द्रव्यैः सोभाग्य भवति । द्वितीय प्रकारे पदकोण अन्य चक्र मध्ये एकारस्य नामगर्भितम्ब बाह्ये क्लीकार दान्त्य । बहिरर्षि ह्रीं मालिग्य कोणेषु ॐ क्ली ६०० ३१ श्री हू सलिन्य मायाबीजे स्त्रिविधमावेष्टय निरन्तर सायंमाणे काव्य शक्तिभर्या ।

अथ तृतीय प्रकार पदकोण चक्र मध्ये एं क्ली ह्रीं नाम मध्ये तः कोणेषु ॐ ह्रीं क्ली द्रवे नमः ॐ ह्रीं क्ली द्रावे नमः ॐ ह्रीं द्रवम ॐ ह्रीं उभाद्र नमः ॐ ह्रीं द्रवे नमः ॐ ह्रीं द्रावे नमः ॐ ह्रीं पश्चिनी नाम मालिग्य बहिरष्टदलेषु मायाबीज दान्त्यम् बाह्येषु पोद्गदलेषु कामाक्षर योज दान्त्य । बाह्येषु पोद्गदलेषु ह्रीं नलिग्य बहिरष्टदलाग्रे माया बीज सलिन्य मध्येषु ॐ आ क्री ह्रीं त्रयायै नमः अजितायै नमः अपराजितायै नमः जयन्ती नमः विजयन्ती नमः भद्रायै नमः ॐ ह्रीं शातायै नमः आलिन्य बाह्यमाया बीज त्रिगुण वेष्टय माहेद्र चक्रोक्तमङ्गलोणेषु लकार लेख्य । इदं चक्र कु-कुम्भ गोरचन्द्रादि मुग्धादित्य भूजपत्रं सलिन्यास्या मूल विद्या—

ॐ आं क्री ह्रीं धरणेनाय ह्रीं पद्म वती नलिग्य काद्र ह्रीं इदं स्वाहा ।

श्वेत पुष्पपञ्चाशत् सहस्र (५००००) प्रमाण एकांत स्थान कान्त जगित दशागहोमेन सिद्धिर्भवति । प्रथम वृत्तान्तर माला मन्त्रमनेक प्रकार सप्त पञ्चमाह ।

पद्मावतीदेवी स्त्रोत्र संबन्धि यंत्र मन्त्र साधन का विवरण

- (१) श्री कार में, देवदत्त, लिखकर सोलह दल वाले कमल की रचना करे श्री कार के ऊपर फिर उस सोलह दल वाले कमल में, प्रत्येक दल में, लक्ष्मी बीज की स्थापना करे । लक्ष्मी बीज याने (श्री) लिखे । यह यन्त्र रचना हुई । देखिये इस स्त्रोत्र के प्रथम काव्य की यन्त्र न० १

विधि :—इस यन्त्र को सुगन्धित पीले रंग के द्रव्य से लिखकर, निरन्तर सामने रखकर यन्त्र का ध्यान करने से सोभाग्य की वृद्धि होती है । गोरचन्द्र, कस्तूरी से यंत्र, भोज पत्र पर बनावे ।

- (२) दूसरे प्रकार से :—प्रथम ऐं कार लिखे, ऐं कार में देवदत्त लिखे, फिर उस ऐं कार ऊपर पट्कोणकार रेखा खींचे। पट्कोण के प्रत्येक दल में क्ली लिखें। फिर बाहर ह्रीं लिखें, फिर कोणों में ॐ क्ली ॐ द्रौं द्रौं द्रूं लिख कर माया बीज याने (ह्रीं) कार से तीन घेरा लगावे। देखिये मन्त्र न० २।

विधि —इस यन्त्र को भोज पत्र पर गीरोचन, कस्तूरी, केशर आदि सुगन्धित द्रव्यों से लिखकर निरन्तर यन्त्र का ध्यान करने से, काव्य शक्ति बढ़ती है।

- (३) तीसरे प्रकार से यन्त्र की रचना :—प्रथम पट्कोण बनाये, पट्कोण चक्र में, ऐं क्ली ह्रीं तथा देवदत्त लिखें, उस पट्कोण के दलों में त्रमश ॐ ह्रीं क्ली द्रवे नमः, ॐ ह्रीं क्ली द्रावे नमः, ॐ ह्रीं क्ली द्रे नमः, ॐ ह्रीं क्ली उभाद्रे नमः, ॐ ह्रीं क्ली द्रवे नमः, ॐ ह्रीं क्ली द्रावे नमः, ॐ ह्रीं क्ली द्रे नमः लिखें। फिर उस पट्कोण पर बलया कार बनावे, उस बलय का अष्ट दल बनावे, उन अष्ट दलों में माया बीज यानी (ह्रीं) बीज की स्थापना करें। फिर उसके ऊपर सोलह दल का कमल बनावे, उन सोलह दलों में काम बीज यानी (क्ली) बीज की स्थापना करें। उसके ऊपर एक सोलह दल वाला कमल और बनावे, प्रत्येक दल में (ह्रीं) बीज की स्थापना करें। फिर उसके ऊपर आठ दल वाला कमल बनावे, प्रत्येक दल में त्रमशः माया बीज (ह्रीं) लिखकर फिर त्रमशः ॐ आ क्रौं ह्रीं जयायै नमः, ॐ आ क्रौं ह्रीं विजयायै नमः, ॐ आ क्रौं ह्रीं अजितायै नमः, ॐ आ क्रौं ह्रीं अपराजितायै नमः, ॐ आ क्रौं ह्रीं जयन्ते नमः, ॐ आ क्रौं ह्रीं विजयन्ति नमः, ॐ आ क्रौं ह्रीं भद्रायै नमः, ॐ आ क्रौं ह्रीं शान्तायै नमः, लिखें, फिर ऊपर से ह्रीं कार को तीन गुणा वेष्टित करके माहेन्द्र चक्राक्षित चक्र कोण में, (ल) कार की स्थापना करें। यह यन्त्र रचना हुई। देखें यन्त्र न० ३।

विधि —इस यन्त्र को भोज पत्र पर कुकुम गीरोचनादि सुगन्धित द्रव्यों से लिखकर इस मन्त्र का जप करें।

मन्त्र :—ॐ आं क्रौं ह्रीं धरणद्राय ह्रीं पद्मावती सहिताय क्रौं द्रौं ह्रीं फट् स्वाहा।

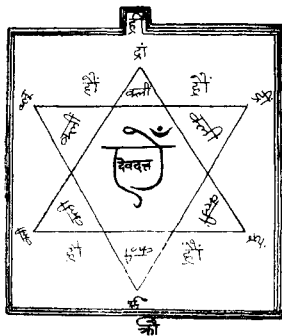
विधि :—सफेद फूलों से ५०००० हजारा जप, एकान्त स्थान में मौन से करें। दशांश होम करे तो सिद्ध होता है।

श्लोक नं० १

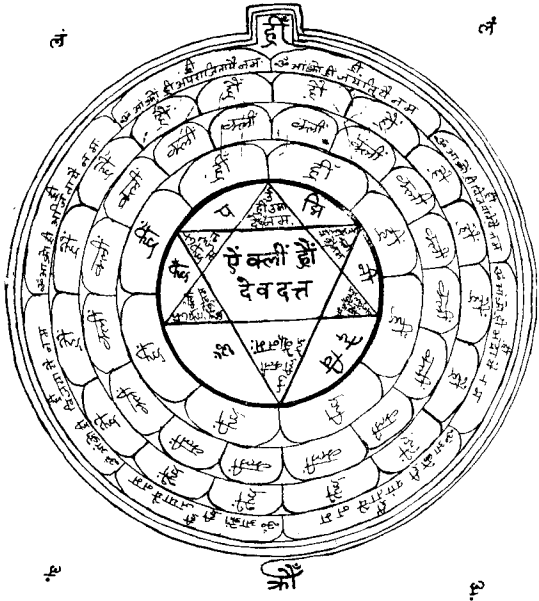
यंत्र नं० १



यंत्र नं० २



यन्त्र नं० ३



मित्रा पातालमूलं, चल—चल चलिते, न्यायलीला कराले ।

विद्युद्दण्ड प्रचंडप्रहरणसहिते, सद्भुजस्ताडयन्ती ॥

वेत्येन्द्रकू रबंधा, कट-कट घटितः स्पष्टभीमाट्टहासे ।

माया जीमूतमाला, कुहरितगगने रक्ष मा देवि पद्मे ॥२॥

रक्ष पालय हे देवी पद्मावती । शासन देवी । क मां स्तुतिकर्तारं कीदृशी देवी, चल-चल चलिते चंचल गमने इत्यर्थः किं कृत्वा, भित्त्वा विदार्य किं पाताल मूलं पातालस्य मूलं असुर भुवन मूल मित्यर्थः पुनरपि कीदृशी व्याललीलाकराले । व्यालानां सर्पाणां लीला, व्याललीला, तथा कराला, व्याललीला कराला, तस्या सर्वोघन हे । व्याललीला कराले । पुनरपि कीदृशी । विद्युद्दंडप्रचंड प्रहरण सहिते विद्युद्दंडः तद्वत्प्रचंडं चतत् प्रहरण च विद्युद्दंड प्रचंड प्रहरण तेन सहिता विद्युद्दंडप्रचंड प्रहरण सहिता । तस्याः सर्वोघनं विद्युद्दंडप्रचंड प्रहरणसहिते सोदामिनीलकुट समर्थायुधयुक्तं त्वर्थः । तथा तर्जयती ताडयती क दै येन्द्र दानवेन्द्र, । कै मद्भुजे शोभनदोदण्डः पुनरपि कीदृशी । क्रूरदष्टाकटकघटितः स्पष्ट भीमाट्टहासे क्रूरदष्टा कटकघटितः स्पष्टदन्तामी भीमदन्तः स्पष्टभीमः स्पष्टभीमश्चासी अट्टहासश्च स्पष्टभीमाट्टहासः क्रूर दष्टा कटकटेन घटिते स्पष्ट—भीमाट्टहासो यया सा तस्य सर्वोघन क्रूरद० हासे पुनरपि कीदृशी । मायाजी मूत मालाकुहरित गगने । माया शब्दे ह्रीं कार बीजमुच्यते । ह्रींकार नामगर्भित तस्य बाह्येषु षोडशदलेषु मायाबीजं सलिल्य धारयेत् । ततो माया शब्देन माया--बीजं ह्रींकार मुच्यते । तत्सप्तलक्षणं जपेत् । सर्वकार्यं गिद्धिर्भवति ॥ १ ॥

माया एव जीमूता मायाजीमूता तेषां माला मायाजीमूत माला तथा कुहरित शब्दायमान गगन आकाश यया सा तस्या सर्वोघनं- "मायाजीमूतमाला कुहरित—गगने" ह्रींकार जलधराय गर्जिता वरे इत्यर्थः इदानीं मायानाम गजितस्य बहिरष्ट- पत्रेषु ह्रींकार दातव्यं, एतद्यंत्रम् कुकुमगोरोचनया लिखित्वा हस्ते बद्धात्मर्वजन प्रियो भवति ॥ २ ॥

पुनरेतच्च व कुकुमगोरोचनया भूर्योपत्रे (भोजपत्रे) विलिख्य ।

बाह्यं धारणीयं सीभाम्य करोति ।

मन्त्र—ॐ नमो भगवति पद्मावती सुधारिणी पद्मसंस्थितादेवि प्रचंडदोदंड खंडितरि- पुत्रके किन्नर किं पुंश्व गुरु गंधर्व यक्ष राक्षस भूत, प्रेत, पिशाच महोरग- सिद्धि नाम मनुज पूजिते त्रिधाधर संविते ह्रीं ह्रीं पद्मावती स्वाहा ॥

"ॐ एतन्मन्त्रेण सर्वपसम्मिमन्त्र्य व्यदेकविंशतिवारान् वाम हस्तेन बंधनीयम् सर्व- ज्वर नाशयति, भूतशाकिनी ज्वरं नाशयति ॥

"ॐ नमो भगवति पद्मावती अक्षिकुक्षिमडिनी उत वासिनी अस्मै रक्षा, पर रक्षा भूत रक्षा, पिशाच रक्षा, शाकिनी, चोर वधामि (य) ॐ ठः ठः स्वाहा" ॥ १ ॥

१. पूर्व द्वार बंधामि	७. उत्तरद्वारं बंधामि
२. आग्नेयद्वारं ,,	८. ईशानद्वारं ,,
३. दक्षिणद्वारं ,,	९. अधोद्वारं ,,
४. नैऋतिद्वारं ,,	१०. ऊर्ध्वद्वार ,,
५. पश्चिमद्वारं ,,	११. वक्रं ,,
६. वायव्यद्वारं ,,	१२. सर्वग्रह (ग्रहान्) बंधामि ।

चण्डप्रहरणसहिते सद्भुजैस्तर्जयंति । दैत्येन्द्र क्रूर दष्टा कटकट घटित स्पष्ट—
भीमाट्टहासे । मायाजीमूत माला कुहरित गगने रक्ष मां देविपथे । २ सर्वं कर्म करो नाम
विद्याज्वर विनाशिनी भवति ।

॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ज्वी ज्वी ला ज्वा प लक्ष्मी श्री पद्मावती आगच्छ २ स्वाहा ।

एता विद्या अष्टोत्तर सहस्र एवेत पुष्पैर्गटोत्तरगणं जप्य श्री पार्वनाथ चैत्ये
जपित सिद्धिर्भवति । स्वप्नमध्ये शुभाशुभं कथयति ।

॥ ॐ नमः चडिकायै ॐ चामुंडे उच्छिष्ट चंडालिनी अमुकस्य हृदयं भित्वा मम
हृदयं प्रविशायै स्वाहा ॥

ॐ उच्छिष्ट चंडालिनी ए... अमुकस्य हृदयं पीत्वा मम हृदयं प्रविशेत्—क्षणा
दानय स्वाहा ॥

ॐ चामुंडे अमुकस्य हृदयं निवामि । ॐ चामुंडिनी स्वाहा । सित्थय पडिम
काउं संपुणंति अटुण्णतावेव—या होमे—सर्वे र सिणं वास कुणं ॥ मन्त्र ॥

ॐ उंतिम मातंगिनी अपद्रुपिस्मेपइ कित्ति एइपत्तलग्गि चंडालि स्वाहा ॥

ॐ हूं ह्रीं हूं हूं ।—एकान्तर ज्वर मंथ्य तांबूलेन सह देयम् ॥ ॐ ह्रीं ॐ
नामाकर्षणं । ॐ ग मः ठ ठः गति वधः ह्रीं ह्रीं द्रं द्र । ॐ देवु २ मुखबं घ २ । ॐ ह्रीं फट्
क्रौ प्रोच्छि भी ठ ठः कुंडली करणं । ॐ लोलु ललाटः घट प्रवेश ॐ यः विसर्जनीयं ओष्ठ
कंठ, जिह्वा, मुख खिल्लउ तालुं खिल्लउं ॐ जिह्वा खिल्लउं ॐ खिल्लउं तालू हंगर सुवहुः
चबुं २ हेर ठ ठः महाकाली योग कालो कुयोगम्मूह सिद्ध उए—कु सप्य मुह बंधउं ठ ठः ।
इति सर्प मन्त्रः ।

ॐ मूरिसि भूति घात्री विविध चूर्णैरलक्षता स्वाहा ।

भूमि शुद्धि ।

शाकिनी मन्त्र —ॐ नमो भगवते पार्वनाथाय शाकिनी योगिनीनां—मंडल मध्ये प्रवेशय,
आवेशय, सर्व शाकिनी सिद्धि सत्त्वेन सर्वपांस्तारय स्वाहा । इति सर्वपांस्तारण मन्त्र ।

ॐ नमो सुग्रीवाय ह्रीं खट्वांग, त्रिशूल, डमरू हस्ते तिस्तीक्ष्णक कराले वटेनानल कपोले लुचितं केश कपाल वरदे । अमृत सिर भाले । गंडे—सर्वं डाकिनीनां वशकराय सर्वं मयच्छिदनी निखये भ्रागच्छ भवित—त्रिशूलं लोलय २ इ अरा डाकिनी वल ३ ।

‘शाकिनीनां निग्रह मन्त्र’—नरलइ किलइ फैत्कार मंडलि असिद्धि हु इ निवारइ द्रोसममै आजसिपइ सइहाल षूनिमाइ २ रक्त सी पुत्तप—समं न करसी ।

डाकिनी मन्त्र ।

ॐ हं सं बं श कमल वज्रं पुं भा ह्रीं ग्नां ज फट् ।

अश्वगधापसव सर्षप कर्पासिकानि अभिमंत्र्य अवस्तूनि आद्योते ऊसल मूसल वनिता वाला गरुडे. सिदुरे स्ताडयेत् । शाकिनी प्रगटा भवति त पात्रं मोचयति । शाकिनी मंत्रः । किलट्ट मूल नंदुलोदकेन गालयित्वा पात्रस्य तिलकं क्रियते । शाकिनीनां स्तभो भवति । अतः परं प्रवक्ष्यामि । योगिनी शोभं मूक्तपरि—संमंत्र संसिद्धं श्री मन्त्रं प्रयुजित ॥१॥

मन्त्र :—ॐ सुग्रीवाय जने वा तराय स्वाहा । डाकिनी दिशा बंध पुत्र रक्षा च प्रवरयं ।

ॐ नमो सुग्रीवाय—भो भो मत्त मातंगिनी स्वाहा । मुद्रिका मन्त्रः । चक्र मुद्रा प्रेषित व्याग्रह गृहीतस्य मुद्रा दर्शना देवापनिर्गच्छति ॥ ॐ नमः सुग्रीवाय नमः चामुंडो तक्षिकालोग्रह विसन् हन २ भज २ मोहय २ रोषिणी देवी मुस्वाप स्वाहा ॥ प्रोच्छादने विद्या । ॐ नमो सुग्रीवाय परमसिद्ध सर्व शाकिनीता प्रमदनाय—कुंठ २ आकर्षय २ वाम देव २ प्रेतान् दहममाहलो रहि २ उसग्रत २ यसि २ ॐ फट् शूल चंडायनी विजयामामहन् प्रचंड सुग्रीवो सासपनि स्वाहा ॥ सर्वं कर्म करो मन्त्रः ।

ॐ नमो सुग्रीवाय वार्षिके सौम्ये वचनाय गौरीमुखी देवी शूलिनीज्जं २ चामुंडे स्वाहा ।

अनया विद्या सकलं परिजप्य कणवीरलतां सप्ताभिमंत्र्य उखल मुशलेन ताडयेत् यथा २ ताडयति २ योगिनी भूस्ताडिता भवति । प्रताडण विद्या अष्ट शतिको जापः । ॐ कारो नाम गर्भितो बाह्यश्च चतुर्दलमध्ये ॐ मुनिमुव्रताय स लिख्य बहि हर २ वेष्ट्यं । बहि कमादिश-कार पर्यंत वेष्टय, मायाबीज त्रिधा वेष्टय । यथा द्वितीय वंकारं नामगर्भित बाह्यश्चतुर्दले बकारं दातव्यं, बहिरष्टः—पश्रेषु उकारं देय । यथा तृतीय मायाबीजं नामगर्भितं । बहिरष्टकारं वंकारं देयं । बहिरगारेषु माया देया । एतद्वत् । कुकुमगोरोचनया भूर्यं संलिख्य दुष्ट—वश्योपसर्गो दोष-

मुपशमयति ह्यो नाम गभिरोक्ष वेष्टय —माया त्रिधा वेष्टय बहिरष्टार्धं 'क्षं क्षीं क्षू' ह्रीं सलिल्य विदिशिगेषु 'देवदत्त' देय । द्वितीय नामं गभिर्वहि स्वगावेष्टया बाह्ये —ॐ ह्रीं चांमुडे वेष्टयः बाह्य वलय पूरयेत् । एत-यं च द्वयं कुंकुम —गोरोचनया भूयै सलिल्य सूत्रेण वेष्टय बाह्ये धारणीयम् । प्रथम मत्र वक्ष्याया गुविणी मृतवत्मा धारयति । काकवक्ष्या प्रसवति ।

सर्वभूतपिशाच प्रभृतीना रक्षा बाल गृह रक्षणं रक्षा भवति ।

मायानामगभितो बहिरष्टपत्रेषु र देय । यथा रक्षाद्वितीयप्रकारः ।

मायानामगभितो बहिरष्टार्धं मायावीज देय । यथा तृतीय ।

ह्रीं श्री देवदत्त ह्यो श्री मलिल्य बाह्ये षोडशार्धं ह्रीं श्री देयम् एतद् यत्र कुंकुम-गोरोचनया भूयै सलिल्य कुमारी सूत्रेण वेष्टय बाह्ये धारणीय । बालानां शान्तिरक्षा भवति । सर्वजन प्रिय । दुर्भंगास्त्रीणां सोभाग्य भवति ।

'क्ष ज ह स म म ल व यूर्' एतानि पिडाक्षराणि मध्ये नामगभितानि सलिल्य कु कुम-गोरोचनया भूयै लिख्येत् । बाह्ये धारणीयं, वक्ष्यो भवति ।

पटकोण चक्रमध्ये माया नाम गभित पट् कोणेषु 'ह्रीं' स लिखेत । बाह्य ह्रीं देय । एतद्यं च कु कुम-गोरोचनया सगव सपुट मध्ये प्रक्षिप्य स्थाप्य वक्ष्यो भवति ।

माया श्री नाम गभितो वहि माया वेष्टय बहिरष्टार्धं माया देयम् कु कुम-गोरो-चनादिमुग्ध द्रव्यैः भूयै लिखेत । वस्त्रे कटे बाह्ये वा धारणीय आयुर्वृद्धि अपमृत्युनाश रक्षा, भूतपिशाच, ज्वरस्कंद, अपस्मारग्रह गृहीतस्य बधिनस्य तत्क्षणादेव शुभ भवति ।

मायात्रिविधावेष्टय ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रीं ह्रः यक्ष । पट्कोण गभित एतत् कोणेषु 'ह्रू' ॐ ह्रू ४ बाह्यं ह्रां ह्रीं स्वाहा एतद्यं च नामयन्त्रिपत्रेषु चूर्णेन लिखेत् । मन्त्राभिमुख्य एतं दीयते । बेलाज्वर नाशयति । अथवा—ह्रा ह्रीं ॐ शुभे द्रव्यैः भूयै सलिल्य माया त्रिविधा वेष्टय एतद्यं च गोरोचनया भूयै विलिखेत् । कटे हस्त वध्वा चोरभय न भवति । अमोघविद्या करोति ।

ह्रीं स्वं देव ह्रीं स्वं नामगभितो ।

बहिश्चतुर्वल ह्रीं ह्रां स्वं लिख्य एतद्यं च गोरोचना नामिकारवृत्तेन भूयै सलिल्य एरंडनालिकायां प्रक्षिप्य राज महामात्य प्रभृतीना वक्ष्य भवति । कान्तिका प्रयोग । ह्रीं द्र नय र नृप क्षोभयति । य नामगभितो वहिः ॐकारमयवेष्टय बाह्ये षोडशार्धं माया बीज बाह्ये माया त्रिवेष्टय एतद्यं च कुंकुम-गोरोचनादिमुग्ध द्रव्यै भूयै लिखेत् । कुमुम रक्तेसूत्रेण वेष्टयं रक्तकण

वीरपुष्पैरष्टोत्तरशतानि जापे क्रियमाणे पुष्पक्षोभो भवति । नामाक्षराणी नित्यं जपेत् । नृपपुरग्राम च क्षोभयति । पद् कोण चक्रमध्ये । य नामगर्भितो बाह्य सपुटस्थकोरुपु २ देय उच्यते सहित, एतच्च त्र स्मशानागारे, काकपिच्छे स्मशाने कर्पटे वा लिखेत् स्मशाने निखनेत् मयः उच्चाटयति । अनेन मन्त्रेण मृत्नामिमं यत्कृत्वा निखनयेत् । ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रीं फट् व. नाम ह्रीं नामगर्भित उच्यते वहिरष्ट—ल री र रा रं रं रः सल्लिख्य वायसर्वादिरेण यस्य नाम लिखेत् स महाध्वरेण गृह्यते । पद्कोणमध्ये 'य' नामगर्भिता कोरापु ६ बाह्ये निरतरम् पूरयेत् । एतच्च त्र विषण स्मशानागारेण पादपाशुना सह भूये यस्य नाम आलिख्येत् पंतवन निर्जयनम् । ॐ कारम् वेष्ट्य ग्रहिरधं 'य' देय । एतच्च त्र विप, कतक, रसेन ध्वजाग्रपट्ट यस्य नाम लिखित्वा स्मशान निखनत् उच्चाटयति । यस्य नाम मध्य बन्ध्यं सपुटस्थ वहिर्जपतुर्देन 'य' देय । एतच्च त्र स्मशानागारेण निवपत्ररसेन ध्वजकर्पटे लिखित्वा ध्वजाग्रं बन्ध उच्चाटयति । 'य' कार नाम अयं मंडलम् कोणेषु 'र देय' । स्वस्ति कामाना भूषित । इदं यत्र विभीकरसेन नाम मालिन्य खरभूत्रं स्थाप्यते सह उच्चाटयति । देवदत्त प्रसाद ह्योव 'य' च वारत्रय च वेष्ट्य एतच्च त्र तालपत्र २ कटकेन लेभ्य कुम्भमध्ये स्थाप्य कुम्भ वसनेन आचमयते । मायाबीजो नामगर्भितो वहिरष्टार्धं माया देय एतच्च त्र कुकुमगोरोचनया भूये लिख्य बाह्यो धारणीय । ग्रह, भूत, पिशाच, डाकिनी, प्रभृतीना पीडा न भवति ।

मायाबीज नामगर्भितो न द्विषा प्रमाणं अयं वज्रांकितदिक्षु लकार वौषट् मध्येषु ह्रीकार प्रत्येकम् लिखेत् । एतच्च त्र कुकुम-गोरोचनया भूयपत्रे वा नाम—मालिन्य बाह्यो धारणीय । भूत, प्रेत, पिशाच डाकिनी, त्रास, कम्प, विदाहो उपशामयति । सिद्धोपदेशः । मायाबीज नामगर्भितो त्रेधावेष्ट्य सिकतामयी प्रतिमा कृत्वा लिखेत् उषयेत्स्थाय्य मादनकटके विद्धा सर्वा अनकटकेन लोहि शिलाकाया हारा वद्धा अ करे स्थापयेत् । कूज ० दिव्य ० भास्व-द्वंद्वं देव वा आकर्षयति ॥२॥

श्लोक नं. २ के यन्त्र मन्त्र का विधान

(१) ह्रीं कार मे देवदत्त गर्भित कर ऊपर सोलह पाखुडी का कमल बनावे, उन सोलह पाखुडी मे माया बीज (ह्रीं) की स्थापना करदे । यह मंत्र रचना हुई । यत्र न० १ देखे ।

विधि — इस यन्त्र को भांज पत्र पर सुगन्धित द्रव्य से लिखकर, ॐ ह्रीं नमः । इस मन्त्र का सात लाख विधि पूर्वक जपे तो, सर्व कार्य सिद्ध होते हैं । मनवाञ्छित फल की प्राप्ति होती है ।

(२) ह्रीं कार में देवदत्त गर्भित कर ऊपर अष्ट दल का कमल बनावे, उस कमल की पाखुड़ी में प्रत्येक में ह्रीं बीज की स्थापना करे । ये यत्र रचना हुई । यत्र न० २ देखे ।

विधि :—इस यन्त्र को भोज पत्र पर केशर गोरोचनादि सुगन्धित द्रव्यों से लिख कर हाथ में बांधने से सर्व जन प्रिय होता है और सीमाभय की वृद्धि होती है ।

मन्त्र —ॐ नमो भगवति पद्मावति सुलघारिणी पद्म सस्थिता देवि प्रच्छददोर्दंड खडित रिपु चक्रे किलर कि पुरुष गरुड गधर्व यक्ष राक्षस भूत प्रेत पिशाच महोभय सिद्धि नाग मनुज पूजिते विद्याधर सेविते ह्रीं ह्रीं पद्मावती स्वाहा ॥१॥

विधि :—इस मन्त्र से सरसों २१ बार मन्त्रीत कर वाम हाथ में बांधने से, सर्व ज्वर का नाश होता है और भूत, शाकिनी ज्वर का नाश होता है ।

मन्त्र —ॐ नमो भगवति पद्मावति अक्षि कुक्षि मडिमी उत वासिनी ग्राम रक्षा पर रक्षा, भूत रक्षा, पिशाच रक्षा, शाकिनी रक्षा, चोर बधामिय ॐ ठः ठः स्वाहा ।

पूर्व द्वार बंधामि	उत्तर द्वार बधामि
आग्नेय द्वारं बधामि	ईशान द्वार बधामि
दक्षिण द्वार बंधामि	अधो द्वार बधामि
नैऋत्य द्वार बधामि	ऊर्ध्व द्वार बधामि
पश्चिम द्वार बंधामि	वक्र द्वार बधामि
वायव्य द्वारं बधामि	सर्वं ग्रहं (ग्रहान्) बधामि

सर्वं कर्म करने वाली विद्या, सर्व ज्वर का नाश करने वाली है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं ज्वी ज्वी ला ज्या प लक्ष्मी श्री पद्मावती आगच्छ २ स्वाहा ।

विधि :—इस विद्या का १००८ श्वेत फूलों से श्री पार्वनाथ के चंत्पालय में भगवान के सामने जप करे, तो, सर्व मन्त्र विद्या की सिद्धि होती है । स्वप्न में शुभा शुभ होने वाले भविष्य को कहती है ।

ॐ नमः चंडिकायै ॐ चामुंडे उच्छिष्ट चंडालिनी..... अमुकस्य हृदयं भित्वा मम हृदयं प्रविशायै स्वाहा ।

ॐ उच्छिष्ट चंडालिनी ए अमुकस्य हृदयं पीत्वा मम हृदयं प्रविशेत् क्षणादा
नय स्वाहा ।

ॐ चामुंडे अमुकस्य हृदयं पिबामि । ॐ चामुंडिनी स्वाहा ।

विधि :—बालू को मूर्ति बनाकर अजुणता से उपरोक्त मन्त्र का जप करे, फिर होम करे, सर्व
रसिणवास कुण ।

मन्त्र :—ॐ उंतिम मातंगिनी अप द्रुपिस्तेपइ किति एइ पत्त लग्नि चंडालि स्वाहा ॥

ॐ ह्रूं ह्रीं ह्रूं ह्रूं । एकान्तर उवर मंत्र्य ताबू लेन सह देयम् ॥

विधि :—इस मन्त्र से ताबूत (पान) को २१ बार मन्त्रीत कर रोगी को जिला देवे, तो एकान्त
उवर का नाश होता है ।

मन्त्र : ॐ ह्रीं ॐ नामाकर्षण । ॐ गः मः ठः ठः गति वधः ह्रीं ह्रीं द्रः ॐ देवु २ मुख बंधं
२ ॐ ह्रीं फट् क्रो प्रोच्छि २ भी ठः ठः ठः कुडली करणं । ॐ लोलु ललाट घट प्रवेश
ॐ यः विसर्जनीय ओष्ठ कंठ, जिह्वा, मुख—खिल्लउं तालु खिल्लउ ॐ जिह्वा
खिल्लउ, ॐ खिल्लउ तालु हगह मुवहः चंचु २ हेर ठः ठः महा काली योग काली
कुयोगम्भूह सिद्ध २ उए कु मप मुह बंधउं ठः ठः ।

ॐ भूरिसि भूति धात्री विविध चूर्णैर लक्षता स्वाहा । भूमि शुद्धिः ।

डाकिनी मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पाशर्वनाथाय शाकिनी योगिनी ना—मंडल मध्ये प्रवेशाय २
आवेशय सर्व शाकिनी सिद्धि सत्वेन सर्षपास्तारय स्वाहा ।

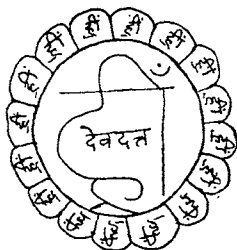
सर्षपतारण मन्त्र :—ॐ नमो सुग्रीवाय ह्रीं खट् वांग, त्रिशूल, डमरू हस्ते तीस्तीक्ष्णक, कराले
वटेला नल कपोले लुचित केश कपाल वरदे । अमृत शिर भाले । गडे ।
सर्व डाकिनी ना वशंकराय सर्व मन्त्र छेदनी निरवये आगच्छ भवति—
त्रिशूल लोलय २ इ अरा डाकिनी ३ ।

शाकिनी निग्रह मन्त्र :—नरलइ कि लइ फेत्कार मंडलि असिद्धि हइ निवारइ द्रोसम मै आउ
सि पइ स इ हाल घुलिमाइ २ रक्त सी पुत्तप—समं न करसी ।

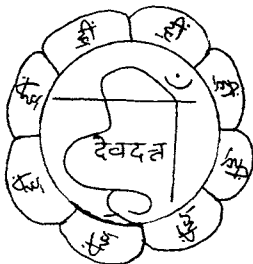
डाकिनी मन्त्र :—ॐ हं सं बं क्षं कमल बज्रूषु भा ह्रीं न्नां ज फट् ।

विधि :—अव्व गंधापसव, सरसों, कपास को उपरोक्त मन्त्र से मन्त्रीत कर, अवस्तुनि आछोते
ऊसल, मुमल, बतिना वाला गरुडै, सिन्धूर से ताडित करे तो, शाकिनी प्रगट होती
है, और उस पात्र को, यानी रोगी को छोड़ देती है ।

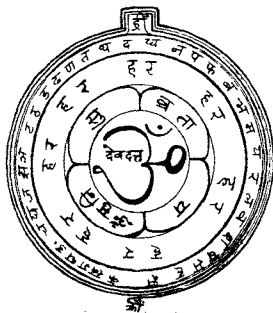
यन्त्र नं० १



यन्त्र नं० २



यन्त्र न० ३



शाकिनी मन्त्र

विधि :—किलट्ट मूलं तदु लोद केन गालयित्वा पात्रस्य निलक क्रियते । शाकिनीना स्तंभो भवति । अतः पर प्रवक्ष्यामि । योगिनी क्षोभं मुक्तयारि-समत्र ससिद्धं श्री मन्सर्वाः प्रपूजित ।

मन्त्र :—ॐ सुग्रीवाय जनेवहतराय स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को पढ़ने से डाकिनी की दिशा बन्ध होती है । और पुत्र की रक्षा डाकिनी से अवश्य होती ।

मन्त्र :—ॐ नमो सुग्रीवाय भौ भौ मत मातंगिनी स्वाहा । यह मुद्रिका मंत्र है ।

विधि :—उपरोक्त मन्त्र को चक्र मुद्रा बना कर रोगी को दिखावे और मन्त्र का जप करे तो कोई भी प्रकार की भूत प्रेत ग्रह शाकिनी, डाकिनी आदि रोगी को छोड़ कर भाग जानी है ।

मन्त्र :—ॐ नमः सुग्रीवाय नमः चामुंडो तक्षि कालोग्रह विसत् हन २ भंज २ मोहय २ रोषिणी देवि सुस्वाप स्वाहा । प्रोच्छादने विद्या ।

मन्त्र :—ॐ नमो सुग्रीवाय परम् सिद्ध सर्व शाकिनी प्रमर्दनाय, कुटं २ आकर्षय २ वामदेव २ प्रेतान दह २ ममाहलि रहि २ उस ग्रत २ यस्ति २ ॐ फट् शूल चंडायनो विजयामहन् प्रचंड सुग्रीवोसासपति स्वाहा । सर्व करो मंत्र :—

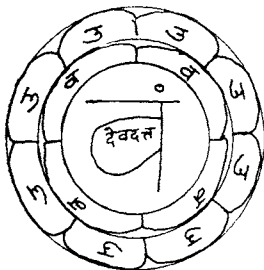
मन्त्र :—ॐ नमो सुग्रीवाय वार्षिके सौम्ये वचनाय गोरीमुखी देवी शूलनी उज्ज २ चामुंडे स्वाहा ।

विधि :—उपरोक्त मन्त्र से कनेर डाली को ७ बार मंजिन कर, उसल में डाल कर मूसल से कूटे, जैसे २ कूटे, वैसे २ योगिनी भूत का ताडन होता है । लेकिन प्रताडन मन्त्र को १०८ बार जपना चाहिये ।

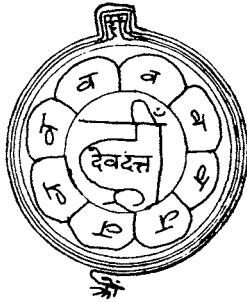
यन्त्र रचना

- (३) ॐ कार देवदत्त, गर्भित करके ऊपर चतुर्दल वाल कमल बनावे, उस चतुर्दल में ॐ मुनि सुव्रताय लिखे, ऊपर एक बलय बनावे, उस बलय को, हर हर से वेष्टित करे। ऊपर फिर एक बलय बनावे, उसमें क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ, ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न, प फ ब भ म, य र ल व श ष स ह क्ष, लिखे। ऊपर से ह्री कार से यन्त्र को तीन घेरे से सहित बनावे। ये यन्त्र रचना हुई। चित्र नं० ३ देखे।
- (४) 'व' कार मे देवदत्त, गर्भित करे, ऊपर चार पांखुड़ी का कमल बनावे, उन पांखुड़ीओं में व कार की स्थापना करे। फिर ऊपर आठ दल का कमल बनावे, उन आठ दलों में उ कार की स्थापना करे। यह हुआ यन्त्र का वरूप। यन्त्र नं० ४ देखे।
- (५) ह्री कार में देवदत्त, गर्भित करे, फिर आठ दल का कमल बना कर उसमें व कार की स्थापना करे, ऊपर ह्री कार का तीन घेरा देवे। ये हुई यन्त्र रचना यन्त्र नं० ५ देखे। इस प्रकार के यन्त्रों को, केशर, गोरचन से भोजपत्र पर लिख कर धारण करे तो दुष्ट लोगों के द्वारा किया हुआ बशीकर उपद्रव शांत होता है।

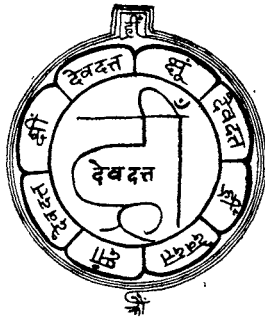
यन्त्र नं० ४



यन्त्र नं० ५



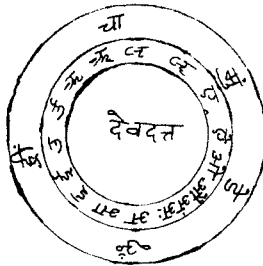
यन्त्र नं० ६



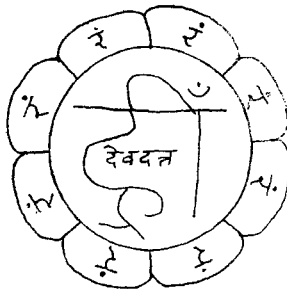
(१२) ह्रीं का २ में देवदत्त गर्भित करे, उसके ऊपर पट् कोण बनावे, पट् कोण की कर्णिका के क्रमशः ह्रीं, स, लिखे, बाहर ह्रीं २ लिखे। ये यन्त्र रचना हुई। यन्त्र नं० १२ देखे।

विधि :—इस यन्त्र को केशर, गोरोचन में भोज पत्र पर लिख कर (सरात्र सपुट के अन्दर डालकर स्थापना करे तो अच्छा बशीकरण होता है।

यन्त्र नं० ७



यन्त्र नं० ८



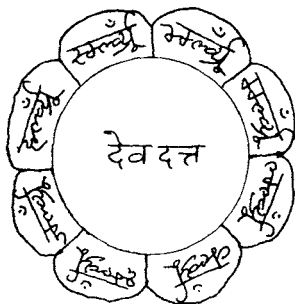
यन्त्र नं० ६



यन्त्र नं० १०



यन्त्र नं० ११



यन्त्र नं० १२



(१३) ह्रीं देवदत्त श्री लिखे, बाहर चार दल का कमल खींचे, उस कमल कर्णिका में ह्रीं कार की क्रमशः स्थापना करे। यन्त्र नं० १३ देखे।

विधि :—इस यन्त्र को केशर गौरोचनादि से भोज पत्र पर लिखे, यन्त्र को वस्त्र में लपेट कर, गले में अथवा हाथ में धारण करने से, प्राण की वृद्धि होती है। अपमृत्यु नहीं होती है। भूत पिशाच, ज्वर स्कंध, अपस्मार ग्रह, से पीड़ित रोगी को तत्क्षण ही छुटकारा मिल जाता है। रोगी अच्छा हो जाता है।

(१४) देवदत्त, लिख कर षट् कोणाकार बनावे षट् कोण के कर्णिका में क्रमशः ह्रूं, ॐ, ॐ ह्रूं, ह्रूं, ह्रूं, ह्रूं लिखे, बाहर ह्रां ह्रीं स्वाहा लिखे, ऊपर एक बलयाकार बनावे उस बलयाकार में ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रं यक्ष । ह्रीं कार का तीन घेरा लगावे। ये बना। यंत्र नं० १४ देखे।

विधि :—इस यन्त्र को नागर बेल के पत्ते पर, नागर बेल के पत्ते के रस से लिखे। उस पत्ते को रोगी को खिलाने से बला ज्वर का नाश होता है। उस पत्ते रस को उपरोक्त मंत्र से ७ बार मन्त्रित करे।

(१५) अथवा ह्रां, ह्रीं ॐ के बीच में देवदत्त लिखे, ऊपर से ह्रीं कार को वेष्टित कर दे। यंत्र नं० १५ देखे।

विधि :—इस यन्त्र को गौरोचना से भोज पत्र पर लिख कर, गले में या हाथ में बाधने से चौंग भय कभी नहीं होगा। ये अमोघ विद्या है।

(१६) ह्रीं स्त्रं देवदत्त ह्रीं स्त्रं, लिखे, ऊपर चतुर्थ दल कमल बनावे। उस कमल की पाखंडी में क्रमशः ॐ ह्रां ह्रीं, स्त्रं, लिख दे। यह यंत्र रचना हुई। यंत्र नं० १६ देखे।

विधि :—इस यंत्र को गौरोचना और अपनी अनामिका अंगुली के खून से, भोज पत्र पर लिख कर एरंड की नली में डाले तो, राज मन्त्री आदि के वश में होते हैं।

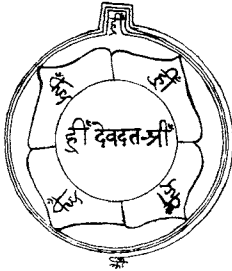
मन्त्र :—ह्रीं द्रं नय र, नूप (राजा को शोभित करता है।)

(१७) य कार में देवदत्त लिख कर, ऊपर एक बलय बनावे, उस बलय में ॐ २ लिखे, ऊपर अष्ट दल का कमल बनावे, उन आठो ही दलों में ह्रीं कार आठ लिखे, ऊपर से ह्रीं कार का त्रिधा घेरा बनावे। यंत्र रचना हुई। यंत्र नं० १७ देखे।

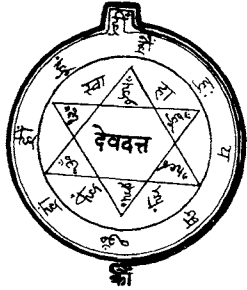
विधि :—इस यंत्र को केशर, गौरोचनादि शुभ द्रव्य से भोज पत्र पर लिखे, कमल के धागे से यन्त्र को वेष्टित कर के, लाल कनेर के फूलों से १०८ बार जाप करने से, राजा पुरुष

आदि को भी शोभित करता है। नामाक्षर को नित्य ही जपे। नृप को, नगर को, गांव को शोभित करता है।

यन्त्र नं० १३



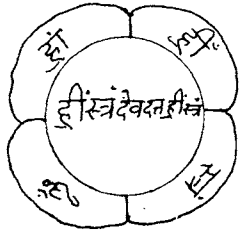
यन्त्र नं० १४



यन्त्र नं० १५



यन्त्र नं० १६



यन्त्र नं० १७



(१८) य कार में देवदत्त गर्भित करके, ऊपर पट् कोणोंकार बनावे, उस पट् कोण की कर्णिका में रं लिखे। उपर अग्नि मंडल बनावे। यन्त्र नं. १८ देखे।

विधि इस यन्त्र को श्मशान के कोयले से, कौआ के पंख से कफन के टुकड़े पर लिखे फिर श्मशान में गाड़ देवे तो उच्चाटन होता है। यन्त्र गाड़ने के समय मन्त्र को सात बार जपना चाहिये।

(१९) ह्रीं कार में देवदत्त लिखे, ऊपर एक बलाया कार बनावे, उस बलय में क्रमशः ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट् व देवदत्त लिखे, फिर एक बलय और बनावे, उस बलय को 'ठ' कार से बेष्टित करे, फिर घाठ दल का कमल बनावे, उस कमल में ल री रं रों रों रं रः यह यन्त्र रचना हुई। यन्त्र नं० १९ देखे।

विधि—इस यन्त्र को कौआ के रक्त से शत्रु के नाम सहित लिखे तो शत्रु को ज्वर पकड़ लेता है।

(२०) य कार में देवदत्त गर्भित करके, ऊपर पट् कोण बनावे, प्रत्येक पट्कोण की कर्णिका में यं रं लिखे। यह प्रथम यन्त्र रचना हुई। यन्त्र नं० २० देखे।

विधि :—इस यन्त्र को विष, श्मशान का कोयला, और शत्रु के पाँव के नीचे की धूल, इस सब चीजों से भोज पत्र पर शत्रु के नाम सहित लिखे तो शत्रु का उच्चाटन हो जाता है।

- (२१) यं कार में देवदत्त लिख कर ऊपर षट् कोण बनावे, उन षट् कोण के कर्णिका में यं २ लिखे। ऊपर एक बलय बनावे। उस बलय में ॐकार लिखे, फिर बाहर चार यः कार से वेष्टित कराये। यह हुई यंत्र रचना। यन्त्र नं० २१ देखे।

विधि:—इस यंत्र को विष कृक फल के रस से ध्वजा के कपड़े पर लिख कर, इमसान में गाड़ देवे, तो शत्रु का उच्चाटन हो जाता है।

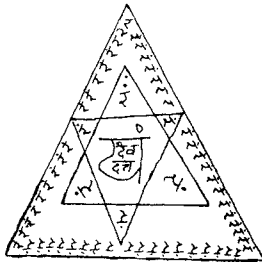
- (२२) कम्ब्यूं पीडांशर में देवदत्त, गर्भित करे ऊपर चतुर्थ दल का कमल बनावे, उन दलों में यं २ लिखे। ये हुई यंत्राकार की रचना। यन्त्र नं० २२ देखे।

विधि:—इस यंत्र को इमसान के कांयले से नीम के पत्तों के रस से लिखे, कौवे के पंख की कलम से ध्वजा के कपड़े पर लिख कर, उस ध्वजा को दास में लगा कर बाध देवे तो शत्रु का उच्चाटन होता है।

- (२३) यं कार में देवदत्त नाम गर्भित करके, फिर ऊपर अग्नि मण्डल बनावे, उस अग्नि मंडल के तीनों कोण में रं कार लिखे, बाहर तीनों ही कोणों में स्वस्तिक लिखे ३। यन्त्र नं० २३ देखे।

विधि:—इस यन्त्र को विभिन्नक के (हरें के) रस से लिख कर गधे के मूत्र में क्षेपण करे तो शत्रु का उच्चाटन होता है।

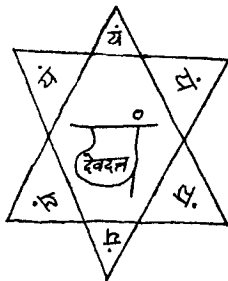
यन्त्र नं० १८



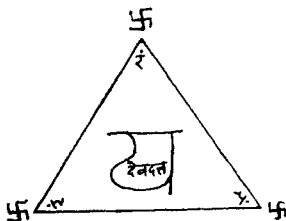
यन्त्र न० १६



यन्त्र न० २०



यन्त्र न० २३



(२४) देवदत्त लिख कर ह्रीं कार को त्रिधा वेष्टय । ये यन्त्र हुआ । यन्त्र नं० २४ देखे ।

विधि :—इस यन्त्र को ताल पत्र के रस से, ताल पत्र के काटे की कतम से लिख कर घड़े में डाले । उस घड़े का मुह कपड़े से ढक देवे तो उच्चाटन होता है ।

(२५) ह्रीं कार में देवदत्त लिख कर, ऊपर चार दल का कमल बनावे, उस चारों ही दलों में ह्रीं, की स्थापना करे । यह हुआ यन्त्र का स्वरूप । यन्त्र नं० २५ देखें ।

विधि :—इस यन्त्र को केशर गोरौचन से भोजपत्र पर लिख कर हाथ में धारण करने से, ग्रह भूत, पिशाच, डाकिनी, प्रभृतिता की पीडा नहीं होती है ।

(२६) ह्रीं कार में देवदत्त लिखे, ऊपर गोलाकार बनावे, उस गोलाकार के उपर आठ पाञ्च का चिन्ह बनावे ऊपर लू कार वीणट् मध्य में प्रत्येक में ह्रीं कार लिखें । ये यन्त्र रचना हुई । यन्त्र नं० २६ देखें ।

विधि :—इस यन्त्र को केशर, गोरौचन से, भोजपत्र पर लिखें और भुजा में धारण करे तो भूत प्रेत पिशाच डाकिनी आदिक के द्वारा पीडित व्यक्ति की, पीडा नष्ट हो जाती है । सिद्धोप देश है । यानी प्रसिद्ध पुरुषों ने ऐसा कहा है ।

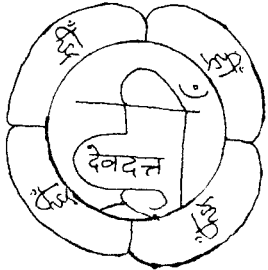
यन्त्र नं० २४



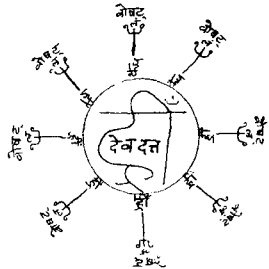
यन्त्र नं० २७



यन्त्र नं० २५



यन्त्र नं० २६



(२७) बाल की प्रसिमा बना कर उस प्रनिमा मे ह्री कार देवदत्त सहित लिखे । माया (ह्रीं) बीज से त्रिधा वेष्टित करे । यहा विशेष कुछ समझ में नहीं आया है । अतः मंत्र शास्त्र के ज्ञाता विशेष समझे । यन्त्र नं० २७ देखो ।

“इदानीं प्रहरणमेकप्रकार सप्रपंचमाह ।”

कूजत्कोदंडकाडो, डमरुविधुरितः क्रूरघोरोपसर्गा ॥

दिश्यं वज्रातपत्रं, प्रगुणमणिरण्टिकिणी क्वाणरम्य ॥

भास्वद्वैड्यदंड, मदन विजयिनो, विभ्रती पार्श्वभर्तुः ॥

सा देवी पद्महस्ता, विघटयतु महा, डमरं मामकीनम् ॥ ३ ॥

व्याख्या :—विघटयतु विनाशयतु काऽसौ कनोदेशी पद्मावती किम् तत्कर्मता पन्न महाडामर महा विघ्न कथभूतं मामकीन मदीध । कीदृशी देवी पद्महस्ता पद्यकरा कि कुर्वती विभ्रती धारयती कि कर्मतापद्म वज्रातपत्र, वज्र च आतपत्र च वज्रातपत्र कस्य पार्श्वभर्तुः पार्श्वभिधानयक्षस्य पुनरपि कि कर्मतापन्नं ‘कूजत्कोदंडकाडो डमरुविधुरितः क्रूरघोरोपसर्गाः कोदंडश्च काडश्च काडकाडो कूजतो, कोदंडकाडो कूजत्कोदंडकाडो तयोरु डमरः कूजत्कोदंड काडोडमर क्रूरश्च घोरश्च क्रूरघोरो, क्रूरघोरो उपसर्गो यस्यसौ क्रूरघोरोपसर्गाः कूजत्को दंड काडो डमरेण, विधुरितः क्रूर-घोरो—तत् क्रूर घोरोपसर्गाः गदाधनुर्बाणोडमरुविधुरितः दुष्टराद्रविघ्न न केवल विभ्राणा कि तत् वज्रातपत्र दिव्यं प्रधानं तथा विभ्राणा कि तत्—भास्वद्वैड्यं दंडं, भास्वान प्रभा पुज सहितो वेड्यं दंडो येनासौ भास्व द्वैड्यं दंड त भास्वद्वैड्यं दंड देशीप्यमान रत्न विशेषम् तेलगुडं कीदृशं प्रगुणमणिरण्टिकिणी क्वाणरम्य । प्रगुणश्च ते मणयश्च, प्रगुण—मणय रणंतश्च ताः किंकियश्च रण्टिकिण्य प्रगुणमणि—रण्टिकिणी नाम् क्वाण प्रगुण मणि रण्टिकिणी क्वाण नेन रम्य, प्रगुण मणिरण्टिकिणी क्वाण रम्यं । विशिष्टरत्ननिमित्तशुद्धघण्टि कारावरमणीय । कीदृशस्य पार्श्वभर्तुः मदन विजयिन कामजयिन भावमाह । एषा विद्यामार्ग भवे ३ सप्तवारान् अभिमंत्र्यथे धनुरा लिखेत्—चोरभय न भवति ।

ॐ मदनविजयिनो विभ्रती पार्श्वभर्तुः सा देवी पद्म हस्ता विघटयतु महाडामर मामकीनं । भूमी काली कराली, परिजन सहिते, चडि चामुण्डित्ये । क्षा क्षी क्षी क्षः क्षणार्धक्षतरिपुनिवहे ह्रीं महामत्रवश्ये ॥ १ ॥

॥ नमो धरणेद्राय खगविद्याधराय चल २ खड्ग गृह्ण २ स्वाहा ॥ १ ॥ अष्टोत्तर-सहस्रकरजापो मुष्यानि । वादिनः भय सिद्धिः ।

खड्गस्तंभन मंत्र :—ॐ नमो कुबेर, अमुक चोरं गृह्ण २—रथापितं दर्शय आगच्छ स्वाहा ॥ १ ॥

भस्मना कटोरक पूरयित्वा पूजयेत्—चौर गृह्णापयति पूर्वं सेवा दशलक्षाणि जपेत् ततः सिद्धो भवति ॥ ३ ॥

श्लोक ३

काव्य नं० ३ के यंत्र मन्त्र

मंत्र :—ॐ मदनवि . यिनो बिभ्रतोपाश्वर्भतुः सादेवी पद्महस्ता विघटतु महाडामरं
मामकीनं, भृंगी काली कराली परिजन सहिते चंडि चामुंडि नित्ये,
क्षां क्षीं क्षौ क्षः क्षणार्ध क्षतरिपुनिवहे ह्रीं महामंत्र वश्ये ।

विधि — इस मंत्र को मान वाग पढ़कर, मार्ग में धनुषाकार बना देवे, तो चौर भय नहीं होता है ।

मंत्र :— ॐ नमो धरणेद्राय खड्ग विद्याधराय चल २ खड्गं गृह्ण २ स्वाहा ।

विधि — इस मंत्र का १००८ बार जप करने से वादियों को भय होता है ।

खड्ग स्तंभनमंत्र :—ॐ नमो कुबेर अमुक चोरं गृह्ण २ स्थापितं दर्शय
आगच्छ २ स्वाहा ।

विधि — भस्म से कटोरा भरकर पूजा करे । चौर को पकड़ेगा । पहले मंत्र का दस हजार जप करे तब मंत्र सिद्ध हो जायगा ।

“इदानीं अनेक प्रकार शास्त्र प्रतिपाद्य अधुना देवकुलरक्षा स्तंभन, मोहन, उच्चारण, विद्वेषण, वशीकरण, भूत शाकिनी देवीनां अभिधानानि मन्त्राणि विद्याश्च संप्रपञ्चमाह ।”

भृंगी काली कराली, परिजन सहिते, चंडि चामुंडि नित्ये ।

क्षां क्षी क्षू क्षो क्षणार्धक्षतरिपुनिवहे, ह्रीं महामंत्र वश्ये ।

ॐ ह्रा ह्रीं भ्रा भ्री भ्रू भ्रू भग संग, भ्रकुटि पुटतटः, त्रासितोदा । सदैत्ये ।

स्वा स्त्री स्त्रू स्त्री (द्रा भ्री भ्रू भूः) प्रचंडे, स्तुति शतमुखरे, रक्ष । मां देविपद्मे ॥ ४ ॥

व्याख्या — रक्ष पात्रय हे देवी, पद्मे, पद्मावति । क मां स्तुतिकर्तारम्कीदृशी स्तुति शतमुखरे, स्तुतय श्री पार्श्वनाथ सर्वधन्यस्तासा शतानि तैः मुखराः वाचाला तस्याः सबोधन, स्तुतिशत मुखरे कीदृशे । भृंगी, काली, कराली, परिजन सहिते, भृंगी च काली च कराली च, भृंगी काली कराली एवं परिजन. परिवार तेन सहिते । संयुक्ते । पुनः कीदृशे । च ङि चामुंडि नित्ये । चंडिश्च चामुंडिश्च, च ङिचामुंडि च ङिचामुंडिभ्यां

नित्ये युक्ते च ङिचामु'हिनित्ये, लोक प्रतीते । क्षां च क्षी च क्षूं च क्षों च, क्षां क्षी क्षूं क्षों एतैः क्षरैः क्षणस्यार्थं, क्षणार्थं तेन क्षणार्धेन क्षता हताः रिपूणा निवहः समूहा यया सा तस्याः संबोधनं क्षां क्षीं क्षूं क्षो क्षणार्धक्षतरिपुनिवहे । पुनः कीदृशे, ह्रीं महामन्त्र वक्ष्ये । ह्रीं लक्षणो यो महामन्त्रस्तस्माद्वक्ष्या, ह्रीं महामन्त्र वक्ष्या तस्याः संबोधनं ह्रीं—महामन्त्रवक्ष्ये । नरनारीप्रभृतयः । पुनरपि कीदृशे । ॐ ह्रा ह्रीं भ्रू भग ॐ ह्रां ह्रीं भ्रूं भ्रू भगस्य संग ॐ ह्रा ह्रीं भ्रूं भ्रू भग संगः भृकुटिपुटतट । तेन भासिता उद्दामो दैत्याः यया सा । ॐ ह्रा ह्रीं भ्रूं भ्रू भगसंग भृकुटिपुटतटः त्रासितोद्दामदैत्याः । तस्याः संबोधनं ।

ॐ ह्रा ह्रीं भ्रूं भ्रू भग दामदैत्ये । विकटकटाक्षोन्वाटयेत् । दुष्टासुरे ।

पुनरपि कीदृशे—स्त्रा स्त्री स्त्रू स्त्रौ प्रचंडे स्त्रां च स्त्री च स्त्रूं च स्त्रौ च एतैः प्रचंडा सा तथोक्ता तस्याः संबोधनं, स्त्रा स्त्री स्त्रूं स्त्रौ प्रचंडे समर्थेत्यर्थः अस्य भावतामाह । इदानीं ॥ देव ग्रह यत्र मन्त्र ॥ कम्बव्यूहं—ह्रस्वव्यूहं—मन्त्रः । एतत् हि अष्टदलेषु सर्वाणि पिडाक्षराणि सलिख्य बहिरष्टदलेषु ॐ भृगी नमः ॐ काली नमः ॐ कगाली नमः ॐ तड्डी नमः ॐ जभायै नमः ॐ चामुंडायै नमः ॐ अजितायै नमः ॐ मोहार्यै नमः । बाह्ये मायावीजम् त्रिधावेष्टयं । पृथ्वी मंडलं चतुष्कोणेषु क्षिकारवज्राकिन एतत् क्रमेण चक्रं कुंकुमं—गारोचनया कूर्परादि मुगन्धद्रव्यैः मूर्ध्नि पत्रे सलिख्य कुमारी सूत्रेण वेष्ट्यम् बाह्ये धारणीयं सर्वभयरक्षा भवति । प्रयत्नाः । एतच्च च श्रीखड्ग—कूर्परादिना सलिख्य श्वेत—पुष्पैः रण्डोत्तर शतैः पूजयेत् । यन्मांसं यावद् लक्ष्मीं सौभाग्यं सर्वं कार्यं सिध्यति ।

ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय शरगोन्द्र पद्मावती सहिताय सर्वं लोकाम्युदयकारिणी भृंगोदेवी सर्वसिद्धि विद्याबुधाग्रिनी, कालिका सर्वविद्या, मंत्र, यंत्र, मुद्रा स्फोटना कराली, परद्रव्य योगचूर्ण रक्षणा जभापरं मौन्य मर्दिनी, नमो दानदरोग नाशिनी सकलत्रिभुवनानंद कारिणी, भृंगो देवी सर्वं सिद्ध विद्या बुधाग्रिणी महामोहिनी, त्रैलोक्य संहारकारिणी चामुंडा । ॐ नमो भगवति पद्मावती सर्वग्रह निवारय कट् २ कंठ २ शीघ्रं चालय २ गात्रं चालय २ पादं चालय २ सर्वांगं चालय २ लोलय २ धनु २ कंठय २ कंठावय २ सर्वं दुष्टानं विनाशय । जये विजये । अजिते । अपराजिते । जंभे । मोहे । अजिते । ह्रीं २ हन २ वह २ पच २ धम २ चल २ चालय २ आकर्षय २ आकर्षय २ विकपय २ दम्बव्यूहं क्षां क्षी क्षूं क्षो क्षः कट् २ निग्रहं ताडय २ कम्बव्यूहं त्रां स्त्री ह्रू क्षो क्ष २ हं २ सं २ ध २ स २ म्बव्यूहं ह्र २ घर २ ॐ ह्रां ह्रीं भ्रूं भग संग—भृकुटि दामदैत्ये । स्त्रां स्त्री स्त्रूं स्त्रौ प्रचंडे । स्तुतिशत-

मुखरे । रक्ष मां देवि पद्मे । पर २ कर २ ॐ फट् शंखमुद्रया मारय २ गाह्य २ हस्त्यं हार २
स्तुतिका मुद्रा ताडय २ र्म्ह्यं रवरा प्रज्वल २ प्रज्वालय २ धूर्माधकारिणी रां २ प्रां २ क्ली २
हः व नद्यावतु मुद्रया त्रासय २ र्म्ह्यं खचक्रमुद्रया छिद २ र्म्ह्यं ग त्रिशूल मुद्रया छेदय २
पर मंत्रं भेदय २ र्म्ह्यं घम २ बंधय २ मोचय २ हल-मुद्रया द्रावय २ ब २ यं २ कुरु २
र्म्ह्यं २ प्रां प्रूं प्री प्र समुद्रे मज्ज २ र्म्ह्यं छा छी छौं छः मंत्राणि छेदय २
परसैन्यमुच्चाटय २ पर रक्षां क्षः त्रकुत्र पट् २ परसैन्यम् -विध्वंसय २ मारय २ दारय २
विदारय २ गति स्तंभय २ र्म्ह्यं भ्रां भ्री भ्रूं भ्रौ भ्रः श्रावय २ र्म्ह्यं यः प्रेषय २
पछेदय २ विद्वेषय २ र्म्ह्यं स्त्री स्त्री स्त्रावय २ मम रक्षां रक्ष २ पर मंत्रं क्षोभ २ छेद २
छेदय २ भेद २ भेदय २ सर्वजन्म स्फोटय २ भ २ र्म्ह्यं आ आं औं ओं अः जामय २
स्तंभय २ दुःखय २ रवाय २ र्म्ह्यं ब्रा ब्री ब्रूं ब्रौ ब्रः हा श्रीवां भांजय २ मोहय २ र्म्ह्यं
त्रां श्री ब्रूं श्री ब्रः -त्रासय २ नाशय २ क्षोभय २ स २ सर्वदिशि बंधय २ सर्व-विघ्न छेदय २
निकृंतय २ सर्वदुष्टान् ग्राह्य २ सर्वयंत्रान् स्फोटय २ सर्वं शृंखलान्
घोटय २ मोटय २ सर्वं दुष्टान् आकर्षय हस्त्यं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः शान्तिम्
कुरु कुरु-नुष्टि कुरु २ स्वस्ति कुरु २ ॐ क्री ह्रीं ह्रीं पद्यावती आगच्छ २ सर्वं भयं मम रक्ष
सर्वं सिद्धि कुरु २ सर्वं रोगं नाशय २ किन्तर किं पुरुषं गरुडं गंधर्वं यक्षं राक्षसं भूतं प्रेतं पिशाचं
वैतालं रेवतीं दुर्गां चंडीं—कुष्मांडिणी बांध सरय २ सर्वं शाकिनी मर्दय सयोगिनी गण चूरय २
नृत्य २ गाय २ कल २ किली २ हिलि २ मिलि २ सुतु २ घुतु २ कुत २ पुरु २—अस्माकं वरदे
पद्यावती हन २ पत्र २ मुदण्णं चक्रेण छिद २ ह्रीं क्ली —

ह्रां ह्रीं स्त्रूं द्रूं भ्रूं प्रूं ॐ ग्नी प्ली स्त्रां श्रीं वा म्री ह्रीं २ पां २ श्री २ ह्रां २
पद्यावती धरमोद्रे प्रासादयति स्वाहा । एष. मंत्र. पठित. सिद्ध. निरतरं स्मर्यमाणेन सूत ग्रह
ब्रह्मराक्षस वेताल प्रभृति-शाकिनी ज्वर रोग चोरारिमारि-निग्रहव्याल सर्प वृश्चिक मूषक
लूत पातकं च शिररोगो नाशयति ।

ॐ भृंगो रेटी किरैटी जभय २ क्ली पय २ घृत ट कं स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ चंडाली अमृकस्य रुधिर पितर २ सुहृदये भित्वा हिलि २ चंडालिनी, मातंगिनी
स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ नमो भगवती काली महाकाली रुद्राकाली नमोस्तुते हन २ दह २ छिद २ छेदय
२ भिद २ त्रिशूलेन हः २ स्वाहा ॥ ३ ॥ विशात्रयं सप्त वारानाभिर्मथ्य तदीयेत शूलं नाशयति ॥

ॐ नमो भगवती कराली महाकराली, ॐ महामोह संमोहनीय महाविद्ये । जंभय २
स्तंभय २ मोहय २ मुच्चय २ क्लेदय २ आकर्षय २ पाताय २ कुनरे संमोहिनी । ऐं त्रीं श्रीं द्रूं

आगच्छ कराली स्वाहा ॥१॥ एषा विद्या निरंतरं द्वादश सहस्राणि (१२०००) कर जापे सिद्धः भवति । मोहनी विद्या ॥

ॐ श्री ह्री अजिताए आगच्छ ह्री स्वाहा । ॐ नमो जूमे मोहं स्तभे । स्तभिनी स्वाहा । ॐ नमो भगवती गंगा देवी कालिका देवी आह्वाननः । ॐ महामोहे स्वाहा ।

ॐ नमो च डिकार्यं योगवाहि प्रवर्तय महा मोहय योगमुखी योगीश्वरी महामाये । रूपिणी महा हरिहर भूतप्रिये । स्व स्वार्थं नृणातिशय जिह्वाग्ने सर्वलोकाना एष्य पुसरू २ दर्शय २ साधय स्वाहा ॥ २ ॥

हस्ताकर्षणी नदी द्रुह तडागे वा आकाशे चंद्रमंडले वा खडगे दीपशिखाया या अंगुष्ठे दर्पणे तथा । स्वप्ने, खड्गे तथा देवी अवतोर्यं शुभाशुभ । एषा आरुषणीविद्या ॥ २ ॥

ॐ नमो च डिकार्यं योगं वाहि २ इयं वा । ॐ नमो च डि वज्रपाणये महायक्ष सेनाना गापितये वज्रको वा दीप्टोः कट भैरवा एतद्यथा ।

ॐ नमो अमृतकु डली अमुकं स्वाहि २ ज्वल २ कुद्म २ वध २ गज २ सर्वं विधनीय विन.जकाय महागणपति + + + अमुकस्य जीव हराय स्वाहा ॥ २ ॥

शक्तेः प्रेषण मंत्र :- ॐ नमो भगवति रक्त चांमुडे मन्त्रजापले कट २ आकर्षय २ ममोपरि चितं भवेत कल पुष्प यस्य हस्ते ददामि स जीप्रमागच्छतु स्वाहा ॥ ४ ॥ वषट्कार्येण वज्रपाणिमंत्रेण विषेपणं क्रियते । तस्यं सहस्रत्राणः ।

कराभ्यां क्षतपुष्पाणां सिद्धि भवति ।

प्रथम तावत् करन्यासः (हस्तन्यासः)

ॐ ठः ठः कराभ्यां शोधनीयं, तर्जनांगुलिना, प्रत्येक सशोधन कार्यं । तदनंतरं । क्षपादाभ्यां स्वाहा । क्ष हृदये स्वाहा । क्षी शिरसि स्वाहा । क्षू ज्वलित शिखायै वीषट् । क्षां कवचाय वषट् । हूं क्ष बाहुभ्यां स्वाहा । क्षे स्कंधाभ्यां स्वाहा । क्षे नेत्राय वषट् । क्षी कर्णाय वषट् । क्ष नेत्राय स्वाहा । क्ष अन्धाय स्वाहा । दश दिशाना रक्षा करोति ।

ॐ बाहुबलि मन्त्र बाहु क्षा क्षी क्षू क्षी क्षे क्षत्रुद्धं पुंजं कुरू २ शुभाशुभं कथय २ स्वाहा ॥ १ ॥

एतन्मंत्रेण कर जापेन दश सहस्राणि (१००००) सिद्धि भवन्ति ॥

ॐ कट विकट कटे कटि धारिणो ठः ठः परि स्फुट वादिनी भंज २ मोहय २ स्तंभय
२ वादी मुखं प्रति शल्य मुख कीलय २ पुरय २ भवेत् + + + अमुकस्य जयम् ॥२॥ एष विद्या
व्यवहार काले स्मर्यमाणा वादि मुखं स्तंभयति, विजय प्रयच्छति ॥२॥ अवश्य प्लवा सदा कटं
कारी वृक्षार्णो अष्ट सहस्रं (८०००) जपेततः सिद्धो भवति । कटकारि महा विद्या ।

अधुना नामादिना पूर्णि मध्ये पटमु दिशु को विदिशु च क्ली बहिर्बहि पुटं
कोष्ठेऽष्टा जंभे—मोहे समालिख्येत । माह निशान दष्टाग्रा ब्रह्माकार मास्वितः । ॐ क्ली धी त्रं
ववट् फट् बाह्य क्षिति मंडल अष्टर्वालाक्षण च चड कोणेषु लकार मालिख्य, फलके भूय पत्रे
वा लिखित्वा कु कुमादिभूय जयेत् । य मदा यंत्र नस्य अवश्य जगत सर्वं वश्य भवति ॥३॥

॥ॐ ह्रीं क्लीं जंभे मोहे + + + अमुक वश्य कुरु २ ते से पवद्वश्य यन्त्रम् ॥ॐ
रमल यूँ र र व र स हा हा ॐ क्रीं क्षीं क्लीं ब्लू द्रा द्री पद्यमालिनी । ज्वल २ हन २ दह २
पव २ इदं २ भूयं नि—दयं २ धूम २ धूमाधकारिणी । ज्वलनशिखे हु फट् २ यः त्रि
मात्रा हतावायुं हिता ज्वाला मालिनी आत्ता पयति ॥ स्वाहा ॥ मन्त्रेण वेष्टयेत् त्रोटयत् इदं
पिड नलाटे व्याधि दग्धिवणं सिङ्गागे भुज्ज्वरं ग्रह दोषं शाकिनी प्रभुत नाशयति ॥४॥

ॐ नमो भगवते एषु पतये नमो नमोऽधिपतये नमो रुद्राय ध्वंस २ खड्गरावण चत्स २ विहरतृपे २ स्कोट्य २ स्मशानभस्मनाचिता शरीर घटा कपाल माला धरा यथा व्याघ्र भ्रम परिधानाय शशांकित शेल्वराय कृष्ण मपे यज्ञोपविताय चल २ चलाचल २ अनिवृत्तिक पिपीलीनी हन २ भूत प्रेत त्रासय २ ह्री मण्डल मध्ये कट २ वत्स कुशेमानमत्र प्रवेशय श्रावह प्रचंडधारासि देव रुद्रा आपेक्षय महारुद्रो आज्ञापयसि ठ वर स्वाहा ॥ भूत मन्त्र ॥ ४ ॥

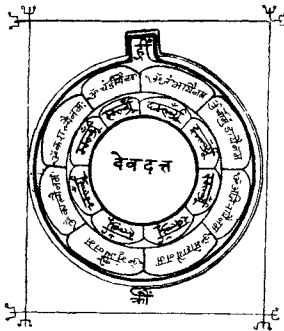
11 0 11

श्लोक नं. ४ के यंत्र मंत्र

(१) देवदत्त लिखकर, प्रथम अष्ट दल का कमल बनावे, उन दलों में क्रमशः-हस्त्यं, मत्स्यं, गजं, सिंह, घोडा, हस्ति, श्व, रथ, ये पिडाक्षर लिखे, ऊपर अष्ट दल का कमल बनावे, उन दलों में क्रमशः ॐ भूमी नमः, ॐ काली नमः, ॐ कराली नमः, ॐ चंडी नमः, ॐ जम्भायै नमः, ॐ बाण्डायै नमः, ॐ अजितायै नमः, ॐ मोहार्यै नमः । फिर ह्रीं कार के तीन घंटे से यन्त्र को देखि करे ।

ऊपर से पृथ्वी मण्डल में, क्षी कार वज्राकित बतावे । ये हुआ यन्त्र का स्वरूप ।
यन्त्र नं० १ ।

यन्त्र नं० १



विधि :- इस यन्त्र को केशर, गोरोचन, कर्पूरादि सुगन्धित द्रव्यों से भोज पत्र पर लिखे, फिर उस यन्त्र को कन्या कर्षित मूत्र से वेष्टित करके हाथ में धारण करने से, सर्प भय की रक्षा होती है । अथवा इस यन्त्र को श्री त्वड कर्पूरादिक से लिख कर, सफेद फूलों से १०८ बार यन्त्र की पूजा, नित्य छह महीने तक करे, तो लक्ष्मी मीमांश को प्राप्ति, और सर्व कार्य की सिद्धि होती है ।

माला मन्त्र

इस माला मन्त्र को पठित सिद्ध मन्त्र कहते हैं । इस मन्त्र को सिद्ध नहीं करना पड़ता है । नित्य ही पढ़ने मात्र से सिद्ध हो जाता है । नित्य ही पाठ मात्र करने से भूत ग्रह ब्रह्म राक्षस बैताल प्रभृति-शाकिनी ज्वर रोग चोरादि मारि का निग्रह होता है । व्याल, सर्प, बुध्चिक, मूषक, लूत, पातक आदि शिरोरोग का नाश होता है ।

मन्त्र :- ॐ भूमी रेती किरिटी जभय २ बली स्त्रां श्रीं वां श्रीं ह्रीं २ प्रा २ श्री २ ह्रां २ पद्यावती धरणेन्द्र प्रासादयति स्वाहा ।

ॐ चंडाली अमुकस्य रुधिर पितर २ सु हृदये भित्वा हिलि २ चंडालिनी मातंगिनी स्वाहा ।

ॐ नमो भगवती काली महाकाली रुद्र काली नमोस्तुते हन २ दह २ छिद २ छेदय २ भिद २ त्रिशूलेन ह. २ स्वाहा ।

विधि :—इन तीनों ही मन्त्रों को सात बार पढ़ कर पानी पिलावे तो शूल का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवती कराली महाकराली, ॐ महा मोह संमोहनीय महा विघ्ने जभय २ स्तंभय २ मोहय २ मुच्यय २ क्लेदय २ आकर्षय २ पातय २ कुनरे समोहिनी ऐ द्वी त्री द्वौ त्र्यागच्छ कराली स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का बारह हजार जप करने से ये मन्त्र सिद्ध होता है ये मोहनी विद्या है ।

मन्त्र :—ॐ क्रौ ह्री अजिताए आगच्छ ह्री स्वाहा । ॐ नमो जू भे, माहे, स्तंभे स्तंभिनी स्वाहा । ॐ नमो गंगादेवी कालिका देवो आह्वानन. । ॐ महा मोहे स्वाहा ।

ॐ नमो चडिकायै योग वाहि प्रवर्तय महा मोहय योग मुखी योगेश्वरी महा मायै रूपिणी महा हरी हर भूति प्रिये स्व. स्वार्थं नृणातिशयं जिह्माने सर्व लोकाना एष्य पुसरू २ दर्शय साधय स्वाहा । हस्ताकर्षणी नदी द्रह् तडागे वा आकाशे चद्र मडलेवा खड्गं, दीप सोखाया या अंगुष्ठे, दर्पणं तथा स्वयने, खड्गं तथा देवो अवतीर्य शुभा शुभं । (ये आकर्षणी विद्या है ।)

मन्त्र :—ॐ नमो चडिकायै योग वाहि २ इयं वा, ॐ नमो चडि वज्र पाणये महायक्ष से नागाधिपतये वज्र कोवा दौष्ट्रैःकट भेरवा एतद्यथा ।

ॐ नमो अमृत कु डली अमुकं खाहि २ ज्वल २ कूदम २ बंध २ गज २ सर्व विघ्नीष विनाशकाय महा गणपति + + + अमुकस्य जीव हराय स्वाहा ।

शक्तेः प्रेषण मन्त्र -- ॐ नमो भगवति रक्त चामुंडे मत्प्रजा पाले कट २ आकर्षय २ ममोपरि चित्त भवेत् फलं, पुष्पं, यस्य हस्ते ददामि स शीघ्र मागच्छ तु स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को १००० जाप कर, फिर १०० पुष्पों में जप कर फल अथवा पुष्प को मन्त्रीत करे । फिर जिसको दिया जाय वह शीघ्र ही वष्य होता है ।

करन्यास मन्त्र ॐ टः ठः कराभ्या शोधनीयम् तर्जनागुलिना प्रत्येकं संशोधनं कार्यं । तदनंतरं । क्ष पादाभ्या स्वाहा । क्षं हृदये स्वाहा । क्षी शिरसि स्वाहा । क्षूं ज्वलित शिखायै औषट् । क्षा कवचाय वषट् । हु क्षं बाहुभ्यां स्वाहा । क्षे स्कंधभ्या

स्वाहा । क्षे नेत्राय व षट् क्षी कर्णाय वषट् क्षं नेत्राय स्वाहा । क्षः ग्रन्थाय स्वाहा ।
दशो दिशाग्रों से रक्षा करता है ।

मन्त्र :- ॐ ह्रीं बाहुयली लम्ब बाहु क्षा क्षी क्षूं क्षे क्षी क्षवृद्धं पुजां कुरु २ शुभा शुभ कथय
स्वाहा ।

यह मन्त्र दस हजार जाप करने से सिद्ध होता है ।

मन्त्र :- ॐ कट विकट कटे कटिघारिणी ठः ठ परि स्फुट वादिनी भज २ मोहय २ स्तभय २
वादी मुख प्रति शन्य मुख कीलय २ पूरय २ भवेत् + + + अमुकस्य जय ।

विधि :- इस विद्या को कार्य पर जप करने से वादि का मुख स्तम्भित होता है । और विजय
प्राप्त होती है ।

काँटे वाले वृक्ष के नीचे इस मन्त्र को ८००० जपने से यह मन्त्र सिद्ध होता है । इसको
कंटकारि महा विद्या कहते हैं ।

(२) देवदत्त की, मूर्ति का आकार बनावे, फिर छह दिशाओं में त्रौ लिखे, विदिशाओ में
क्ली लिखे, फिर ऊपर आठ कोठों में क्रमशः जूभे, मोहे, आदि लिखे, (मोह शित
दष्टाग्रां ब्रह्मा कार मास्थितः । ॐ बले धी त्रै वषट् फट् बाह्यो क्षिति मडल अष्टर्वा
लांछणं च चंड कोणेषु लकार मालिन्य) इन पंक्तिओं का अर्थ समझ में नहीं आया
है, इसलिये यन्त्र रचना नहीं किया है ।

विधि :- पाटे पर अथवा भोज पत्र पर यन्त्र लिखकर केशर पुष्पादि से पूजा करे, जो मदा डम
यन्त्र की आराधना करना है, उसका तीनो लोक अवश्य हो वश में रहते हैं ।

मन्त्र :- ॐ ह्रीं क्लीं जंभे, मोहे + + + अमुकं वश्यं कुरु २ ते मेव वद्वयं गन्त्रम् । ॐ
स्मृद्ध्यूं र र व र स हा हां ॐ क्रौं क्षी क्लीं ब्लूं वां द्री पद्य मालिनी ज्वल २ हन २
दह २ पच २ इदं भूयं निर्दय धूम धूम्राध कारिणां ज्वलन शिखे हुं फट् २ य त्रिमाश
हृतार्थानि हिना ज्वाला मालिनी आज्ञा पयति स्वाहा ।

विधि : इस मन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर पाम में रखने से, सिर दर्द मिटता है, भूत
वर, ग्रह दोष, शांति, नो, प्रभृति आदि नाश होती है ।

मन्त्र :- ॐ नमो भगवते ण्डपतये नमो - ध्रुपतये नमो रुद्राय ध्वज २ खड्ग रावण चलं २
निहर नृपे २ स्फोटय २ श्मसान् भस्मना चिता, शरीर घटा वपाल माला २ राधा
व्याघ्र भ्रम परिधानायः शशांकित श्लोकनाय काणं सर्प यक्रोपविताय चक्र २ कलाचल

२ ग्रनि वृत्तिक पिपीलिनी हन २ भूत प्रेत त्रासय २ ह्री मंडलं मध्ये कंठ २ वस्त्रं
कुशेममानमत्र प्रवेशय आवह प्रचंड धारासि देव रुद्रो -आपेक्षय महा रुद्रो भ्रात्रा
पयति ठ त्र स्वाहा ।

विधि : - इस मन्त्र से नाडन करने से भूतादिक दोष शान्त होते है ।

इदानीं योगिनी चक्राणांतरं “कंदर्पचक्रं” सप्रपंचमाह ॥

चंचत्कांची कलापे, स्तनतन विलुठत्तार हारावलीके ।

प्रोत्कुल्ल पारिजात, द्रुमकुसुममहा, मंजरी पूज्यपादे ॥

ह्रीं ह्रीं क्लीं ब्लूं समेते, भुवन वशकरी, क्षोभिणी द्रावणी त्वं ॥

ओं ईं ऊं पद्महस्ते, कुरु कुरु घटने, रक्ष मां देवि पद्मे ॥ ५ ॥

व्याख्या :- रक्ष पालय क मा स्तुतिकर्तार, कीदृशे । चंचत्कांचीकलापे चंचत् देवीप्यमान.
काव्या कलापे. कांचीकलापो मेखला यस्या सा तस्याः सशोधन । चंचत्काची-
कलापे । पुनरपि कीदृशे, स्तनतनविलुठत्तार हारावलीके, स्तनतने विलुठति तारा
समुज्ज्वला हारावली, मुक्तावली, पत्तियस्या सा तस्याः संबोधन, स्तनतन०
हारावली के । पुनरपि कीदृशे । प्रोत्कुल्ल पारिजातः द्रुमकुसुम-महामंजरी
पूज्यपादे । प्रोत्कुल्लद्वि विकसद्वि. पारिजात द्रुमाणां देवतरुणां व पारिजात
नाम धेय कल्पवृक्षाणी कुसुमे पुष्पे रूप लक्षिताभिः महामंजरीभि पूज्यपादौ
चरणौ यस्या सा तस्याः सशोधनं प्रोत्कुल्ल पारि० पूज्यपादे । पुनरपि कीदृशे ?
भुवनवशकरी क्षोभिणी द्राविणी त्वं । त्रैलोक्यवश्यता धांयनी चालयनी ग्रणं मोहयनी
द्रावयती तपयती । पुनरपि कीदृशे । ह्रीं ह्रीं क्लीं ब्लूं समेते - हा च ह्रीं च
क्लीं च ब्लूं च यन्ते तानि ते हा ह्रीं क्लीं ब्लूं समेते । एतावत्येतानि बीजा-
धराणि भावना क्लीं क्लीं नाग गर्भितस्य लक्षकोणेषु रेफस्वस्तिका ज्वाला द्रातव्या-
वहिः । षोडश स्वरं वैष्टनीय बहिरष्ट दलेषु कामिनी रजिनी स्वाहा । ॐ ह्रीं श्रीं
श्रीं क्षीं ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं देवदत्ताभय द्रावय २ मम वक्ष्यमानय २
पञ्चावति आज्ञापयति स्वाहा । अस्य वाम पाद पांशुः गृहीत्वा पुष्प वाम करे
मामेन दक्षिणे निजकरे लिखत् । तस्य वामकर पीडयेत् करनिभवती । अद्युना-

ॐ चले चलचित्ते चपले मातंगो रेतं मुंच मुंच स्वाहा ॥

ॐ नमो कामदेवाय महानुभावाय कामसिरि अशुरि स्वाहा ॥

अनेन मंत्रेणाभिमन्थ्य तांबूलं दन्तकाष्ठं पुष्पं फलं वार २१ परिजाप्य यस्य दीयते स वश्यो भवति । अनेन मंत्रेण रक्त कणवीर अष्टोत्तरशतं अभिमन्थ्य स्त्रियाप्रतोक्षेभ्येत् सा क्षरति ।

ॐ नमो भगमास्त्रिनी भगावहे च ल २ सर २ ॥ अनेन मंत्रेण ७ वाराभिमन्थ्य हस्तं स्त्रिया भगस्पोपरि दद्यात् सा क्षरति प्रवासे । अष्टसहस्राणि जपेत् यः तद्देशे-
नाशोककुमुदै. ह्रीम् । पुनः की दृष्टे । आ इ उं पञ्च हस्ते अं चं इं च उं च ते तद्योक्ता मिति बीजाक्षराणि । भावनाहं हुंकारं नाम गर्भितस्य बाह्येकारं ते दातव्यं । बाह्ये षोडश स्वराणि वेष्टय, बाह्ये षोडश दनेषु ॐ क्षां गं ईं वां रं घ्रां वां लां वां उं ह्रौं मां जीं सीं मां --- सलिल्यदलाघ्रे उं रां पूरयेत् ।

माया बीजं त्रिगुणी वेष्ट्य बहिर्भुजं गद्वयमस्तके ग्रन्थः हृदये 'इ' 'वां' सलिल्य एतद्यंत्रं कुकुमादिमुग्धद्रव्यैर्भूयै सलिल्य वाह्ये धारणीय सर्वभय रक्षा भवति । षड्सदृशी हस्तो यस्या सा तस्याः संबोधनं पञ्च हस्ते कमलपाणे कुरु कुरु ललकं । सर्वेशं सुगम विष । तत्त्वं सारविषय प्रतिपाद्य ग्रन्थुना विषहरण सीमाभ्य अपुत्राण पुत्रजनन सत्त्वक मंत्रमाह ।

श्लोक नं० ५ के यन्त्र मन्त्र

(१) कलां क्ली के अन्दर देवदत्त गर्भित करके, लक्ष कोण में रेफ स्वस्तिक ज्वाला लिखे, बाहर सोलह स्वर वेष्टित करे, ऊपर अष्टदल का कमल बजावे, उस कमल के दलों में कामिनी रजिनी स्वाहा लिखे ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं घ्रां श्री क्षी ह्री क्ली व्लूं द्रां श्री देवदत्ता भगं द्रावय २ मम वश्य मानय २ पद्मावती आज्ञापयति स्वाहा ।

जिसका वाम पांव की धूलि को ग्रहण करके, पुष्प को वाम हाथ में और दक्षिण में (निज करे लिखेत) उसके वाम हाथ को दबावे तो (करनि भवति :) ।

और भी—

ॐ चले चलचित्ते चपले मात्तंगी रेतं मुंच मुंच स्वाहा ।

ॐ नमो कामदेवाय महानुभावाय कामसिरी अमुरि स्वाहा ।

विधि : — इस मन्त्र से तांबूल अथवा दांतुन ग्रथवा पुष्प ग्रथवा फल को २१ बार मन्त्रीत करके जिसको दिया जाय वो वह वश्य हो जाता है । इस मन्त्र से लाज कनेर को १०८

बार मन्त्रांत करके स्त्रियों के आगे (ग्राम्येत) वह शरण को प्राप्त होती है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगमालिनी भगवहे च ल २ सर २ ।

विधि :—इस मन्त्र से हाथ को ७ बार मन्त्रोक्त करके स्त्रो के भाग पर रखे तो वह शरण को प्राप्त होती है । प्रवास में ५००० हजार जप करे । अशोक के फूलों से दशासि होम करे ।

फिर कैसा है—

आं इं उं पचहस्ते घं च इं च उं च वे वीजाक्षर हैं ।

(१) भावना हं हुंकार में देवदत्त नाम गर्भित करके, बाहर में क, कार लिखे । ऊपर सोलह दल बनावे, उन सोलह दलों में सोलह स्वर लिखे, फिर सोलह दल बनावे, उन दलों में क्रमश—ॐ आं गौं इं वा रे आ खा लां वां उं छौं मा जी सीं मां लिख कर दल के अग्र भाग में उ रां, लिखे । ये यन्त्र स्वरूप बना । नेकिन हमको कुछ समझ में नहीं आया है, विशेषज्ञ ममर्षों । इसलिए हमने यन्त्र छोड़ दिया है ।

(२) माया बीज ह्रीं कार को त्रिगुणा वेष्टित करके, बाहर भुजंग, दो के मस्तक पर ग्रन्थः हृदय पर 'इ' वा' लिखे ।

विधि —इस यन्त्र को केशरादि मुगन्धिन द्रव्यों से भोजन पर लिखकर हाथ में धारण करने से सर्व भय रक्षा होती है ।

लीला व्यालोलं नीलोत्पलदल नयने, प्रज्वलद्वाडवाग्नि—

श्रुत्यज्ज्वाला स्फुलिगस्फुरदरुण करोदग्र वज्राग्रहस्ते ॥

ह्रां ह्रीं लूं ह्रीं हरंती हर हर ह ह ॐ कारमी मेक घोरे

पद्मे, पद्मासनस्थे व्यपनये दुरितं देवि । देवेन्द्रबंधे ॥ ६ ॥

व्याख्या :—व्यपनय—स्फोटय । कि ? तत् दुरितं विघ्नं कीदृशे—लीला व्यालोलनीलोत्पल-
दलनयने । लीलया व्यालोलं नीलोत्पलस्य दलं लीलाव्यालोलं चतत् नीलो-
त्पलदलं च लीलाव्यालोलं—तत्सदृशे नेत्रे यस्या सा तत्संबोधनं—लीला-
नीलोत्पलदन नयने । क्रीडाशोभमानेन्दीवर नयने । पुनः कीदृशे प्रज्वलद्वाडवाग्नि
श्रुत्यज्ज्वाला स्फुलिगस्फुरदरुण करोदग्रवज्राग्रहस्ते । वाडवस्य अग्निः वाडवाग्निः
प्रज्वलन्वासी वाडवाग्निरच प्रज्वलद्वाडवाग्निः श्रुत्यंती चासीज्वाला च श्रुत्यज्ज्वालाः
प्रज्वलद्वाडवान्मे । प्रज्वलद्वाडवाग्निः श्रुत्यज्ज्वालाः तस्याः स्फुलिगाः । तेषां

स्फुरंतश्च ते अरुणकराश्च तैरुदयं प्रचंडं यद्वज्रं तदग्र हस्ते यस्या सा प्रज्वलद्वा-
डवाग्निः । श्रुत्यज्ज्वाला स्फुलिगस्फुरदरुणकरोदग्र—वज्राग्रहस्ता, तस्याः
संबोधन—प्रज्वल० वज्राग्रहस्ते । जाञ्जन्य मानवाङ्गज्ज्वलत् व्याला—कलाप-
समानशतकोटिविभूषित हस्ताग्रे । पुनरपि कीदृशे—“ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रीं हरंती हर-
हर हह्रं ॐ कार भीमैकनादे । ह्रीं च ह्रीं च ह्रूं च ह्रीं च हरती हर
हर हह्रं ॐ कारास्त्रैर्भीमो भीषणम् । एकोऽद्वितीयो नादो यस्या सा तस्याः
संबोधन—ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रीं भीमैकनादे ॥ सर्वाणि एतान्यक्षराणि माला मन्त्र-
यन्त्राणि सूचयति । लीला० व्याला० वाडवाग्निः । श्रुत्यज्ज्वाला वज्राग्रहस्ते
ह्रीं ह्रीं भीमैकनादे यद्यथा—

(१) ॐ नमो भगवती, अवलोकित पद्मिनी, ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं वरागिनी चितित पदार्थ
साधनी, दुष्ट लोकोच्चाटिनी, सर्वभूतवश्यकरी, ॐ श्रीं ह्रीं पद्मावती स्वाहा ।

(२) ॐ नमो भगवती पद्मावती सप्त—स्फुट विभूषिता चतुर्दशदण्डाकराला व.
नर २ रम २ फुर २ एकाहिक, द्वयहिक, त्रयहिक, चतुर्व्यहिक ज्वर चातु-
र्मासिक ज्वर, अर्द्धमासिक ज्वर, संवत्सरं ज्वर शिवाच ज्वर मूर्त ज्वर,
सर्वज्वर, विषमज्वर, प्रंतज्वर, भूतज्वर, गृहज्वर, राक्षस गृहज्वर, महाज्वर, रेवती-
ग्रहज्वरं, दुर्गाग्रहज्वरं, किंकिणीग्रह ज्वरं, वासय २ नाशय २ छेदय २ भेदय २
हन २ दह २ पच २ क्षोभय २ पार्श्वचन्द्राय ज्ञापयति, सर्वभयरक्षिणी २ ।

विद्या —मन्त्र द्वय एतदम्पस्यते, ज्वरनाशो भवति । हरंति, नाशयति, अस्य भावना । ऐ
ह्रीं क्लीं ब्लू आ श्रीं श्रीं प्लीं प्लीं प्लीं सर्वांग सुन्दरी क्षोभि २ क्षोभय २ सर्वांग
भाणय ह्रूं फट् स्वाहा ।

एषा विद्या निरंतरं ध्यायमाना दुष्ट रोग नाशयति । हर हर इति माधना ।
माया बीज नामगर्भितस्य बहिश्चतुर्दलेषु पार्श्वनाथ संलिख्य बाह्ये हर हर वेष्टय
बहिः । ह्रूं ह्रीं हि ही हु ह्रूं हे है हो ही ह्रूं ह्रूं बहिः ककारादि क्षकार पर्यन्ता मातृका
संलिख्यते । बहिः भुजगपदा दातव्या एतद्यन्त्रं कुंकुमगोरोचनया भूयं संलिख्य—
कुमारी सूत्रेण वेष्टयं निजभुजे धारयेत् । यः पुष्ट सः स्वजनवत्भो भवति ।
श्रीमान् —

अपुत्रो लभते पुत्रं निदवो जीवित प्रजाः ।

यन्त्र धारण मात्रेण दुर्भगा सुभगा भवेत् ॥ १ ॥

प्रभवति विषं न भूतं सनिहाती पिटक भूताश्च ।

संस्मरणादस्य स्तुत्या पापमायं विनाश मुपयाति ॥ २ ॥

द्वितीय :—हुकारं नामगर्भितस्य वह्नि क्षकारं वेष्टयं । वह्नि षोडशदलेषु स्वराः दातव्याः ।
बाह्ये षोडशदलेषु—“ऐं ह्रां ह्रीं द्रा द्री क्लीं क्षः प्लुं प्ली ह्रां ह्रीं ह्लूं ह्रौं हः
ठः ठः ।”—आलिख्य बाह्यदलाय ॐ कारं ह्रीं कारं दातव्यं ।

एतद्यंत्रं कुंकुमगोचनया भूयंपत्रे संलिख्य कुमारीकर्तृतिनसूत्रेण वेष्टय
मुच्यते । भीमेक घोरे प्रतीतनादप्रल्हादे । कीदृशे—पञ्चे, पञ्चावति देविदिति
संबंधः । पुनरपि कीदृशे । देवेन्द्रवद्ये । देवताना इन्द्रा देवेन्द्रास्तैर्वद्या वदनीया
देवेन्द्रवद्यास्तस्या संबोधन देवेन्द्रवद्ये ।

श्लोक न. ६ के यन्त्र मन्त्र

मन्त्र . ॐ नमो भगवती, अवलोकित पद्मिनी ह्राह्रीं ह्रूं हः वरगिनी चित्तन पदार्थ साधनी
दुष्ट लोकोच्चाटनी सर्व भूत वश्य करी, ॐ क्रीह्रीं पञ्चावती स्वाहा ।
ॐ नमो भगवती पञ्चावती सप्तस्कृष्ट विभूषिता, चतुर्दश दंष्ट्रा कराला वः नरः २
रमः २ फुरः २ एकाहिक द्वयहिक त्र्यहिक चतुर्थहिक ज्वरं, चातुर्मासिक ज्वर अर्द्ध
मासिक ज्वर सत्रस्मर ज्वर पिशाच ज्वर, मूर्त ज्वर सर्व ज्वर विषम ज्वर प्रत
ज्वर भूत ज्वरं ग्रह ज्वर राक्षस ग्रह ज्वर महा ज्वर रेवती ग्रह ज्वरं दुर्गा ग्रह ज्वर
किष्किणी ग्रह ज्वर त्रामय २ नाशय २ छेदय २ भेदज २ हन २ दह २ पच २ क्षोभय २
पार्श्वचंद्रायज्ञापयति सर्वं भय रक्षिणी ॥२॥

विधि :—इम मन्त्रों को पढ़ने से सर्व प्रकार के ज्वर का नाश होता है । हरण होता है । दोनों
मन्त्रों को पढ़ना चाहिये ।

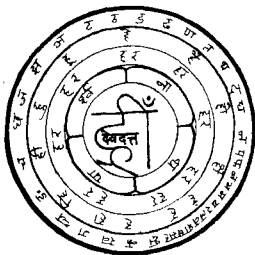
मन्त्र :—ऐं ह्रीं क्लीं प्लूं ह्रां क्रीं श्रीं प्लीं प्ले प्ले सर्वांग मुन्दरि क्षाभी २ क्षोभय २ सर्वांग
भासय २ हं हं फट् स्वाहा ।

इस विद्या का नित्य ही स्मरण करने से दुष्ट रोगों का नाश होता है ।

(१) ह्रींकार से देवदत्त गभित करके, ऊपर चार दलों का कमल बनावे उन चारों दलों में
त्रयशः पार्श्वनाथं, लिखे ऊपर एक बलय में हूर २ लिखे, फिर ऊपर में एक बलय
और बनावे उस बलय में ह हा हि ही हु ह्र है ह्रौ ह्रूं हः लिखे, ऊपर एक बलय

और बनावे, उस बलय में क ख ग घ ङ इत्यादि क्ष कार प्रयत्न लिखे, ऊपर भुजग पद लिखना । देखे यंत्र नं० १

यन्त्र नं० १



बिधि :- इस यंत्र को केशर गौरोजन से भोज पत्र पर लिख कर, कन्या के हाथ से कना हुआ सूत्र से वेष्टित करके, अपने हाथ में धारण करे तो वह पुरुष स्वजन बल्लभ होता है। जिसको पत्र तही है वह पत्र प्राप्त करता है। निर्धनों को धन प्राप्त होता है।

यन्त्र के धारण मात्र से ही दुर्भंगा सुभंगा होता है ।

विष का असर नहीं होता है। भूत प्रंत, पिटक, आदि कभी भी असर नहीं करता है। स्मरण मात्र से नाना प्रकार के पाप नष्ट होते हैं।

(२) हु कार में देवदत्त गभित करके बाहर अ कार वेष्टित करे, ऊपर सोलह दली वाला कमल बनावे, उन सोलह दलों में सोलह स्वर लिखे, ऊपर सोलह दलों का एक और कमल बनावे, उनमें क्रमशः ऐ ह्रा ह्री वा श्री क्ली क्ष प्लु प्ली ह्रां ह्री ह्रूं ह्री ह्रः ठः ठः लिखकर बाहर ओं कार और ह्री कार लिखना चाहिये ।

बिधि :- इस यन्त्र को केशर, गौरोवन से भोज पत्र पर लिख कर कन्या के हाथ से कता हुआ सूत्र से वेष्टित करके धारण करे।

इदानीं शास्त्रिकं पौष्टिकं तुष्टिकं यन्त्रं विषह्वरयन्त्रं मन्त्रं सप्रपञ्च माह—

यन्त्र नं० २



कोपं वंशं सहंसः कुवलयकलितोद्दामलीला प्रबन्धे ।
ज्वां ज्वी ज्व पक्षिवीजं शशिकरध्वले प्रक्षरत्क्षीरगोरे ॥
व्यालव्यावद्वज्जूटे, प्रबलबलमहा, कालकूटं हरती ।
हा हा हु कारनादे कृतकर मुकुलं रक्षा मा देवि पद्मे ॥७॥

व्याख्या — रक्ष । पालय । कं मां कासौ कर्त्री पद्मावती देवी कीदृशां कृत-कर मुकुल-
विहितपाणि कमलमलीन विहितकरकुङ्कुमल कीदृशां कोपं वंशं सहंस । कोपं च,
वंश च, कोपवंश । सह हसेन वर्तते य-सहंसः । तत्राब्जपदस्य भावना । ॐ कोपं
वंशं हंसः वसह मन्त्रः ॐ क्षा सा हूं ज्वी स्वी हूं स चक्रमुद्रया प्र पुं जात । पुनः कथं
भूते कुवलयकलितोद्दामलीलाप्रबन्धे । कुवलय अथवा कुवलय नं. लोत्तलः कलितः
स्वीकृतः उद्दामः स्फारो लीला प्रबन्ध. श्रीडा समहो यस्याः सा तस्याः सम्बोधनम्
कुवलय लीला प्रबन्धे । तस्य मन्त्रः ॐ कुवलय हंस. कुमुममन्त्र पुनरपि
कथं भूते । शशिकर ध्वले । शशिन करा शशिकरा तद्वतध्वलाः तस्याः
संबोधनम्-शशिकर ध्वले । कं. कृत्वा ज्वां ज्वी ज्वः पक्षि बीजं कृत्वा ज्वां च
ज्वी ज्वः पक्षि बीजं । अस्य पदस्य उपलक्षणत्वात् चक्रं सूचयति तद्यथा-लं वं हुः
पक्षिना नामगमितस्य वेष्टय बहि षोडश दल पमध्येअकार पर्यंतानि संलिख्य बहिः
षकारं वेष्टय बहिः द्वादशदलेषु-ह हा हि हो हु ह्र हे है हो ह्री ह्र ह्र. बहि
ह कारद्वयसंपुटस्थ बहि इवी ५वी ह सः वेष्टयेत् । पुनः तद्बाह्ये एकारद्वय संपुटस्थम
पुनर्मयिबीजं त्रिगुणं वेष्टय मन्त्रमिदं एतद्वक्ष्यमाण मन्त्र द्वय पूर्वोक्तं स्यात्

चैव यन्त्रस्य—

तद्यथा—क्रां खां गां घां चां छां ज्वां ज्वां नमः । गरुध्वनजो नाम मन्त्रः ।

कर जाप सहस्रेण सिद्धि भवति । क्षि प ऊं स्वाहा । जी स्कं अभिमन्त्रयेत् वारि पश्चात् । पातव्यं, अजीर्णं विषं नाशयति । ह हा हि ही हु हू हे है हो हो हं हः अनेन मन्त्रेणोदकं अभिमन्त्र्य श्रोत्राणि ताडयेत् अभिषिचयेत्—निविषो भवति । जं च ज्व पक्षि वा स्वी हंस मन्त्र मागधयेत् । श्वेताक्षतैः श्वेत पुष्पैर्वा श्रीखंडादिभिः सुगन्ध द्रव्यै शराव संपुटे निख्य, शांतिः पुष्टिः, तुष्टिर्भवति । एतज्जल पूर्ण घटे प्रक्षिपेत् । शीत ज्वर वात ज्वर नाशयति, ग्रह पीडा निवारयति । सर्वं रोगा न प्रभवति । दृष्ट प्रत्यय मिदम् । पुनरपि कीदृशे । प्रक्षरत् क्षीर गोरे, प्रक्षरत् च तद् क्षीरं च प्रक्षारत्क्षीरं तद्वद् गोरा, प्रक्षरत्क्षीर गोरा, तस्याः संबोधनं प्रक्षरत्क्षीर गोरे प्रक्षरतदुग्ध पांडुरे ।

ॐ कारै विक्रकारै सर हंस अमृत हंस ॐ कोपं व भं ह स ठ ठ. ठ. स्वाहा । सर्वं विषत्यजन मन्त्र—पुनरपि कीदृशे—व्यालव्यावद्ध जूटे । दंद शूक—बद्ध प्रोडके । “ॐ कुरु २ कुलेण उपरि मेरु बलि बिदु—विनु पड मन्त्र, गरुडा हि व हा हंस यक्ष मन्त्र । को पं वं भ हंस ॐ स्वाहा ।” हा हंसः वृक्ष मन्त्र । तथा कि कुर्वन्ती । हंती । कं—प्रबलबल महा काल कूटं ।—प्रबल बलं यस्यासौ प्रबल बलः प्रबलबल लस्यासौ महा काल कूटश्च, प्रबल बल महा काल कूटस्त प्रबल कूट । पुनरपि कीदृशे । हा हा हुंकार नादे । हा हा हुंकार नादो यस्याः सा तस्या संबोधन हा हा हुंकार नादे । हा हा इति दैत्य नाश हुंकार शब्देन परविद्या छेदः सूच्यते नादे ह्रां महाकूटं इत्यस्य भावना माह । ‘स’ स्त्री ध्वी हंसः पक्षिः प्रावय प्रावय विप हर हर स्वाहा । “ङकार वाम गभितं तकारे वेष्टय । पुनरपि बाह्ये वलया कार मन्त्रे षोडश स्वरं वेष्टय । वलयाकार बाह्ये द्वादश दलेषु मध्ये ह हा हि ही हु हू हे है हो ही हू हे हातव्य । बाह्ये ह कार सपुट दातव्य । तस्य बाह्यं वलया कार मध्ये व भं हंसः पूरयेत् वकार द्वय सपुट ।

ॐ नमो भगवती पद्ममावती स्वाहा । पक्षे हंसः विषं हरय २ प्लावय २ विप हर २ स्वाहा । एतन्मन्त्रं निरतरं कर्ण जापेन विष नाशयति । हकार नाम गभितस्य बाह्ये हंसः वारत्रयं वेष्टय हा मस्तक हा अष्टागन्यासः । तथा बाह्ये हंस हंस—वारत्रय लिख्य ग्वकीय मडलं स्थाप्य यथा ॐ क्षी सां हं ज्वी क्षी हौ ह स । विष हरण मन्त्र । ॐ कारनाम गभित ॐ कारसपुटस्य वज्राष्ट भिन्न वज्र—ॐ कारं लिखेत् । वज्र पर्यन्ते लकार मालि खेत् । संबोधामपि । अथवा ॐ कार. ताम गभितो तस्य बाह्ये । ॐ कार द्वय सपुटश्च तस्य बाह्ये स्वर

वेष्टय, दिशि विदिशि वज्राष्ट भिन्नं वज्रेण, ॐ कारं मध्ये सकार सर्वत्र वज्रेषु द्रष्टव्यं ।

एतद्यन्त्रं शुभैर्द्रव्यैः कस पात्रे दर्भाप्रेण यत्रमालिखेत् । यथाश्वेत पुष्पं रण्टोत्तरं शतं प्रमाणं जापः क्रियतेऽनेन परं विद्या मन्त्रं, यन्त्र रक्षा छेदनं करोति अमुता पूर्वोक्तं कंसपात्रे सुगन्ध द्रव्यै ॐ कारं नाम गभितस्य तस्य बाह्ये पौंडश स्वरा वेष्टितस्य बाह्ये ॐ कारं वेष्टय बहिः ॐ कलि कुंडाय स्वाहा — लिखेत् तस्यैव यत्रस्य श्वेत पुष्पं रण्टोत्तरं सहस्रं प्रमाणे रक्षतंबलिः धूप दीप प्रभृतिभिः गृहीतस्य पूर्वोक्तं कस पात्रं पानीयेन प्रक्षालयेत् । तत् पानीयं च भूतादि गृहीतं गंगा कानं चुलुकत्रिकं पायेत् । सर्वं ग्रहयोग निर्मुक्तो भवति ।

श्लोक नं. ७ के यन्त्र मन्त्र

(१) ल व ह पडिना में देवदत्त गभित करके वेष्टित करे, फिर सोलह दलों वाला कमल बनावे, उन दलों में क्रमशः अ म ण इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लृ ए ऐ ओ औ अ अः लिखकर बाहर 'व' कार से वेष्टित करे, फिर बाहर दल का कमल बनावे । उन दलों में क्रमशः ह हा हि हो हु हू हे है हो हौ ह हः बाहर लिखे । ह कार दोनो सपुट करे, बाहर ज्वी ज्वी हू हू वेष्टित करे । फिर बाहर ए कार द्वय सपुटस्थ करके माया बीज को बी गुणा वेष्टित करे । इस मन्त्र को कहा गया जो यन्त्र पूर्वोक्त है । उसी प्रकार आ ला भा घा चा छ्वा ज्वी ज्वी नमः ।

इस मन्त्र को गरुड ध्वज मन्त्र कहते हैं । एक हजार जप से मन्त्र सिद्ध होता है ।

मन्त्र :—शिप ॐ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को पढ़कर पानी मन्त्रीत करके पिलाने से अजीर्ण विप नाश होता है ।

मन्त्र :—ह हा हि हो हु हू हे है हो हौ ह हः ।

विधि :—इस मन्त्र से पानी मन्त्रीत करके उस पानी से कान को ताड़न करे, तो मनुष्य निविप होता है ।

मन्त्र : जच जवः पक्षि वां स्वी हं स । इस मन्त्र की आराधना करे ।

श्वेत अक्षत श्वेत पुष्प से श्री खंडादि सुगन्धित द्रव्यों से, सराव सपुट में लिखे तो शान्तिः पुष्टिः तुष्टि होती है ।

इसको जल से भरे हुये घड़े में डालने से, शीत ज्वर, वात ज्वर, का नाश होता है ।

यन्त्र नं० १



ग्रह पीड़ा को निवारण करता है। सर्व रोग नहीं होता है। अनुभूत है।

मन्त्र :—ॐ कारं विक्र कारं सर ह सः अमृत हं स ॐ कोपं वं भ ह स ठः ठः स्वाहा।
इससे सर्व प्रकार के विष नाश होते हैं।

(२) डं कार में देवदत्त गर्भित करके तं कार वेष्टित करे, फिर बाहर एक वलय बनावे, उस वलय में सोलह स्वर लिखे, फिर बारह दल के कमल में क्रमशः हु हा हि ही हु हू हे है हो ह्रीं हृ हः लिखे, बाहर ह कार सपुट देवे। उसके बाहर वलयाकार मध्ये वं भं हं सः लिखे, व कार द्वय सपुट करे।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवती पद्मावती स्वाहा। पक्षे हं सः विष हरय २ प्लावय २ विषं हर २ स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र का निरंतर कान में अप करने से विष का नाश होता है।

यन्त्र :— ह कार में देवदत्त गर्भित करके बाहर ह सः बार तीन वेष्टित करे, हा मस्तक, हा अष्टांग न्यासः। तथा बाहर हं स हं स व र तीन लिखकर, स्वकीय मंडल में स्थापना करे।

मन्त्र :—ॐ क्षी सां हूं ज्वी क्षी हूं हं सः। ये विष हरण मन्त्र है।

(३) ॐ कार में देवदत्त गभित करके ॐ कार से सपुट करे । अष्ट वज्राकित करके ॐ कार लिखे । वज्र पर्यन्त ल कार को सब में लिखे ।

और भी ॐ कार में देवदत्त गभित करके, उसके बाहर ॐ कार द्वय सपुट, उसके बाहर में स्वर्गे को लिखे, दिशा विदिशाओं में वज्राष्टिभित वज्र के द्वारा, ॐ कार में सर्वत्र स कार वज्र ही दिखना चाहिए ।

विधि :—इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्यों से कम पात्र में दर्भाग्र से लिखे । श्वेत पुष्पों से अष्टोत्तर-शत १०८ बार जप करने से, पर विद्या यन्त्र से रक्षा होती है और उनका छेदन करता है ।

(४) ॐ कार में देवदत्त गभित करे, फिर उसके बाहर सोलह स्वर लिखे, उसके बाहर ॐ कार को वेष्टित करे, फिर बाहर ॐ कति कुडाय स्वाहा । लिखे ।

विधि :—इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्यों से कासे के पात्र में लिखकर श्वेत पुष्पों से १००८ बार जपे, श्वेत पुष्प अक्षत (बलि) नैवेद्य धूप दीप प्रभृतिक से यन्त्र की पूजा करे । फिर उस यन्त्र को पानी से धोकर, उस पानी को भूदादिक से गृहीत रोगाक्रांत व्यक्तिको तीन अजुली प्रमाण पिलावे । सर्व ग्रह रोग से निर्मुक्त होता है ।

इदानी पर विद्याछेदान्तरं चक्र प्रकार देव कुल माह ।

प्रातर्बालाकर्करश्मिस्फुरित धन महा साद्र सिन्दूर धूलीः ॥

सध्या रागारुणांगीः त्रिदशवरवधूवृक्षपादार विदे ॥

चच्चच्चडासि धारा प्रहतरि पुफुले, कु डलोद्घृष्टगल्ले ॥

श्री श्री श्रीं श्रीं स्मरन्तो, मदगजगमने रक्ष मा देवि पद्मे ॥८॥

व्याख्या :—रक्ष । पालय । देवी पचावती । क ? मा की हृषे, प्रातर्बालाकर्करश्मिः स्फुरितधन महा साद्र सिन्दूरधूलीः संध्यारागारुणांगीः प्रातः प्रभाते बालो नवोद्भूतो यो अर्कः तस्य रेणुर्मयः किरणाः तेषां स्फुरित देदीप्यमानम् वा प्रकाश रूपं प्रातर्बालार्क रश्मि स्फुरितो घनो बहुः महास्त्रांद्रौ निविडो यः सिद्धर तस्य धूलिः चूर्णं सन्ध्याया रागः सध्या राग प्रातर्बालार्करश्मयश्च घनमहासांद्र-सिद्धरधूली च सन्ध्यारागश्च ते प्रातर्बाला तद्वदरुण । रक्तवर्णं अगो यस्याः सा, प्रातर्बाला सन्ध्यारागा रूणांगी । पुनरपि कीदृशे । त्रिदशवरवधूवृक्षपादार विदे वराश्च ता वृक्षश्च वरवध्वः त्रिदशानां

देवानां वरवध्वः त्रिदशवरवध्वः ताभिरभि-वद्ये पादारविन्दे यस्याः सा तस्याः सम्बोधनं त्रिदशवरवधू वद्य पादार विन्दे । अमर वरांगनानमस्प्रमान चरणपकेरुहे । कीदृशे । चच्चच्चडासिधारा प्रहृतरि पुफुले । चडाचासीप्रसिधारा चच्चच्चडा० सिधारा चचतीचासीचडा सिधारा च चच्चच्चडासिधारा तथा प्रहृत विनाशित रिपुकुल शत्रु समूह यया सा चच्चच्चडा० रिपुकुल तस्याः सम्बोधनं, चच्चच्चडा रिपुकुले देदीप्यमान प्रचण्ड मण्डलाग्रधारा व्यापादित पुनरपि कीदृशे । कुंडलोद्घाट गत्ते । कुंडलाभ्या उदघृष्टौ गत्तौ गदौ यस्याः सा तस्याः संबोधनम् कुंडलोद्घाट गत्ते । कर्णं वेष्ट कोदघृष्टमाणं गंडस्थले । पुनरपि कीदृशे श्री श्री श्री स्मरती श्री च, श्री च श्री च श्री च नानि स्मरंती ध्यायती एतेवाम् पचाक्षराणा मत्र दर्शयन्नाह कम्ब्यं नामगर्भितस्य बाह्ये कम्ब्यं वेष्टय च बाह्ये षोडश स्वगान् लिखेत् । बहिरष्ट दलेषु क च छ्रयट र भ म ल व यू पिडाक्षराणि दातव्यानि बहि कम्ब्यं चम्ब्यं छम्ब्यं इम्ब्यं यम्ब्यं रम्ब्यं भम्ब्यं मम्ब्यं अष्ट दलेषु ब्रह्माणी १ कुमारी २ ऐद्राणी ३ माहेश्वरी ४ वाराही ५ वैष्णवी ६ चामुडा ७ गाधारी ८ ॐ कार पूर्व मन्त्रमालिख्यते । बाह्ये कम्ब्यं हा ह ह. आ क्ली ब्लू द्रा द्री पद्मावती श्री श्री श्री श्रीः हुं फट् स्त्री स्वाहा । एषा विश्वा अष्टौत्तर सहस्र प्रमाणं काजापेन क्रियमाणेन दशदिनपर्यं ते सर्वकार्याणि सिद्ध्यन्ति । पुनरपि कीदृशे मदगजगमने मदनीपल क्षितौ गजो मदगज तद्वदमन गतिर्यस्या सा तस्याः संबोधनं मदगज गमने ॥८॥ सा प्रत्तमुपसंहरन्नाह ॥

श्लोक नं० ८ के यन्त्र मन्त्र

- (१) कम्ब्यं मे देवदत्त गर्भिन करके, बाह्ये कम्ब्यं वेष्टित करे, ऊपर बलय बनावे । उस बलय में सोलह स्वर लिखे, ऊपर से एक अष्ट दल का कमल बनावे, उन दलों में क्रमशः कम्ब्यं चम्ब्यं छम्ब्यं इम्ब्यं यम्ब्यं रम्ब्यं भम्ब्यं मम्ब्यं लिखे । ऊपर से अष्ट दल का कमल और बनावे, उसमें भी क्रमशः ब्रह्माणी, कुमारी ऐद्राणी, माहेश्वरी, वाराही, वैष्णवी, चामुडा, गाधारी, लिखे । ॐ कार पहले मन्त्र को लिखे । बाह्य में कम्ब्यं हा ह ह. आ क्ली ब्लू द्रा द्री पद्मावती श्री श्री श्री श्रीः हुं फट् स्त्री स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र विद्या को एक हजार आठ प्रमाण जप, नित्य दस दिन तक करने से सर्व कार्य सिद्ध होते है ।

दिव्यं स्त्रोतं पवित्रं पटुतरपठता, भक्ति पूर्वं त्रिसध्यम् ।

लक्ष्मी सौभाग्य रूप दलितकलम ल, मगलं म गलानाम् ।

पूज्य कल्याणमान्य, जनयति सतत पार्श्वनाथप्रासादात् ।

देवी पद्मावती सा प्रहसित वदना या स्तुता दानवद्रं ॥६॥

व्याख्या : जनयति उत्पादयति कासी कर्त्री इय देवी पद्मावती कीदृशी ? प्रहसित वदना प्रहृष्टानना कस्मात् पार्श्वनाथ प्रासादात् या स्तुता कै ? दानवद्रं दत्त पुरुहूतः किं जनयति लक्ष्मी सौभाग्य रूप कीदृश तत् दलित कलमल निर्दलित पाप मलं । तथा मगल जनयति । केपाम् मगलानां नि श्रयसानामपि मध्ये विशिष्ट निःश्रेयस जनयति इत्यर्थः । पुनरपि कथभूत पूज्य अर्च्य पुनरपि कीदृश कल्याण मान्यं, कुशल-युत । कथ ? सतत निरन्तर केषु ? पटुतर पठता स्पष्टतर भूयता पठता कथ ? भक्ति पूर्वं बहुमानपूर्वं न केवल भक्ति पूर्वं त्रिसध्य च, किं कर्म भो मत स्तोत्र स्तवन कीदृश ? दिव्य प्रधान पुनरपि कीदृशम् पवित्रम् ।

अस्या पार्श्वदेव मणि विरचितायां पद्मावत्यष्टक वृत्ती यत् किमपि वद्य पठित नन्मर्व सर्वाभिक्षं नव्य । देवताभिरपि ।

वर्षाणां द्वादशकिं शतैः गतैः श्रुतेरैरियं वृत्तिः १२०३ वैशाखे सूर्ये दिने समयिता शुक्ल पंचम्या, ॥१॥ अस्याक्षरस्य गणनाम् पञ्चशतानि द्वाविंशदक्षराणि च सदनुष्टुप छंदसा प्राप ॥२॥ इति श्री पार्श्व देवमणिविरचिता पद्मावत्यष्टक वृत्तिः संपूर्ण ॥

संवत् १६२२ रा भिती ज्येष्ठ वद १३ कुजवासंग योऽपुर नगरे लिपि कृत पं० राम चन्द्रेण स्वात्मार्थ ।

॥ इति ॥

श्लोक नं० ९

इस दिव्य पवित्र स्त्रोत को बुद्धिमान, नीनो सध्याता में भक्ति पूर्वक पढ़ता है । उसको लक्ष्मी की प्राप्ति सौभाग्य, की प्राप्ति, होती है । मगलों में मंगल होता है । कलमलों का

नाश होता है। जो देवी प्रहसत वदन है। क्योंकि जिनका मन पार्श्व जिनेन्द्र की भक्ति में ही रत है। इसलिये, दानव इन्द्रों के द्वारा वंदित हैं। इसलिए सब को कल्याणकारी हैं।

इस स्तोत्र जो की आ. पार्श्वदेव मणि विरचित पद्मावती अष्टक वृत्ति को जो कोई भी वधन करता है, पढ़ता है वह सर्व प्रकार के सर्व अभिसिप्त प्राप्त करता है।

इति श्री आ० पार्श्व देवमणि विरचित पद्मावत्यष्टक वृत्ति संपूर्ण।

॥ ० ॥



॥ ॐ ह्री नम ॥

श्री पद्मावती देवी स्त्रोत यन्त्र मन्त्र विधि सहित

काव्य नं० १

श्री भद्रगीर्वाण चक्रस्फुट मुकुट तटि दिव्य माणिक्यमाला ।
ज्योति ज्वाला कराला रफुरित मुकुरिका घृष्ट पादार बिन्दे ॥
व्याघ्रो रूतका सहस्र स्फुरज्ज्वलन शिखालोच पाशा कुशाह्वये ।
आं क्रों ह्री मन्त्र रूपे क्षपित कलि मले रक्षमां देवि पद्मे ॥१॥

यन्त्र रचना

चतुर्थ दल कमल कृत्वा, तन्मध्ये ह्री बीजं लिखेत दल मध्ये ॐ आं क्रों ह्री नमः
एतन्मन्त्रं लिखेत् तदुपरि ॐ ह्री श्री क्ली महा लक्ष्मी नमः लिखेत् तदुपरि काव्य लिखेत् अथ प्रका-
रेण यन्त्र कृत्वा पार्श्व रक्षणीयात् राज्य भयादि नश्यन्ति ।

फल

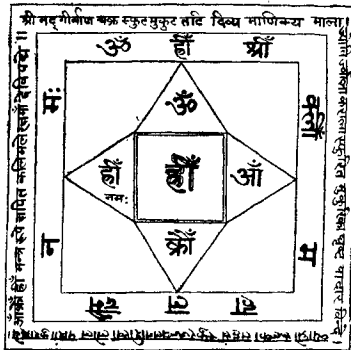
प्रथम काव्यस्य ह्री बीज षडाक्षरे मन्त्र, ॐ आं क्रों ह्री नमः अथवा ॐ ह्री श्री
क्ली महा लक्ष्मी नमः, अनेन मन्त्रेण पूर्वं दिगं मुखं शुक्लासनं शुक्ल माला, अष्टोत्तर शतं जाप्यं
कृत्वा, गुगलस्य घूपं दत्त्वा दीपं घृतस्य घृत्वा जाप्यं कुर्यात् जाति पुष्पेन जाप्यं, तर्हि राज्यं भय,
दुष्टादि भय, अग्नि भय, कुर्यात् नश्यन्ति ।

इस काव्य के यन्त्र मन्त्र को पास में रखने से व मन्त्र का १०८ बार पूर्व दिशा में
मुख करके और सफेद आसन, सफेद माला अथवा जाड़ (चमेली) के फूल से गुगुल का घूप घी
का दीपक रख कर जाप करने से राज्य भय, दुष्टादि भय, अग्नि भय, आदि नाश होते हैं ।
लक्ष्मी लाभ होता है ।

मन्त्र :—ॐ आं ह्रीं क्लीं नमः ।

काव्य न० १

यन्त्र न० १



काव्य न० २

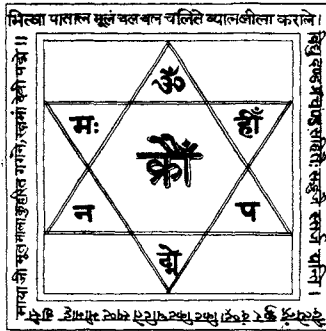
भित्वापालालमूलं चल चलिते व्याल लीला कराले ।

विद्युच्छण्ड प्रचण्ड प्रहरणसहितः सद्भुजैस्तज्यन्ति ।

देव्येन्द्रं कूरदंष्ट्राकिटकिट घटिते स्पष्ट भीमावृहासे ।

माया जी मृत माला कुहरित गगने रक्षसादेवी पद्मे ॥ २ ॥

यन्त्रनं०२



यन्त्र रचना

पट्कोण आकारं कृत्वा, तन्मध्ये की बीजं लिखेत्, पदुपरि प्रत्येक कोणमन्त्राक्षरं लिखेत् ॐ ह्रीं पद्मे नम एतत् मन्त्रं लिखेत् तदुपरि काव्य लिखेत् । पश्चात्पार्श्वं रक्षणीयात् ।

फल

द्वितीय काव्यस्थ की बीजं, पडाक्षरं मन्त्र, ॐ ह्रीं पद्मे नम अनेत् मन्त्रेण कुबेरदिग् मुख कृत्वा रक्तपुष्पेन् अष्टोत्तर शत (१०८) जाप्य कृत्वा, लक्ष्मी लाभं तथा चितित कार्यस्य सिद्धि भवति, यन्त्रस्थ रक्त पुष्पेन् पूजां कुर्यात् ।

इस यन्त्र मन्त्र काव्य को भोजपत्र वा सोना, चाँदी, ताँबा, के पत्र पर लिखकर लाल पुष्प से पूजा करे । मन्त्र का १०८ बार जाप करे तो लक्ष्मी का लाभ होता है । चितित कार्य की सिद्धि होती है । भोज पत्र पर यन्त्र लिखना हो तो, सुगन्धित द्रव्य से लिखे ।

जपने का मन्त्र ॐ ह्रीं पद्मे नमः । इस मन्त्र की १ माला उत्तर दिशा में मुख करके नित्य फरे—

श्लोक नं० ३

कूजत्को दंड कांडो डमर विधुरित कूर घोरोप सर्ग ।

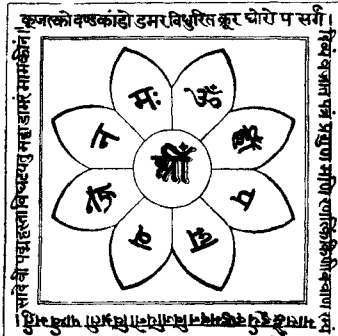
दिव्यं वज्रातपत्रं प्रगुण मणि रणत्किणि नीवाणरम्य ।

भासद्वै इयं दंड मदन विजयिनो विभ्रतीपाश्वर्भर्तु ।

सादेवी पद्म हस्ता विघटयतु महा डामर मामकीनं ॥ ३ ॥

यन्त्र विधि अस्य काव्यस्य, श्री बीज, अष्टाक्षरं मन्त्र, ॐ ह्रीं पद्म वज्रं नमः । अनेन मन्त्रेण एकशत जाप्य कृत्वा दक्षिणाभिमुखं, रुद्राक्षमाला जाप्यं कृत्वा, घोरोपसर्ग नाशनं भवति: श्रष्टदल कमलं यंत्रं कृत्वा, तन्मध्ये श्री बीजं लिखेत् । ॐ ह्रीं पद्म वज्रं नमः, अनेन मन्त्रेण अक्षर यन्त्र स्थाप्यं । पीत पृष्णेन यन्त्र पूजनं कृत्वा नमस्कारं कुर्यात् ।

यंत्र नं० ३.

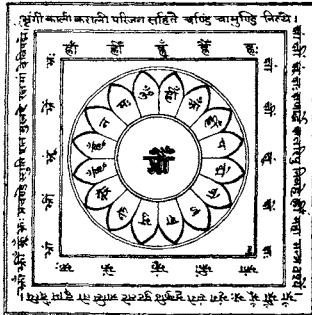


उपर्युक्त विधि के अनुसार सोने अथवा ताँबे अथवा चाँदी वा भोजपत्र पर सुगन्धित द्रव्य से यन्त्र लिख कर, ॐ ह्रीं पद्म वज्रं नमः इस मन्त्रको १०८ बार नित्य जपे, रुद्राक्ष की माला से दक्षिण की ओर मुख कर जपने से और यन्त्र मन्त्र को पास में रखने से सर्व घोरोंप-सर्ग दूर होवे, सुख हो महाभय दूर हो ।

श्लोक

भृंगी काली कराली परिजन सहिते चण्डि चामुण्डि नित्ये ।
 क्षां क्षी क्षूं क्षः क्षणाद्धक्षतरिपुजिबहे ह्रीं महामन्त्र रूपे ।
 भ्रां भ्री भ्रूं भ्रः भृंगसग भृकुठि पुट तटे वासि तोछाम दैत्ये ।
 झां झी भूं भ्रः प्रचण्डे, स्तुति शत मुखरे रक्ष मां देवी पद्मे ॥ ४ ॥

यन्त्र नं० ४



टीका

चतुर्थ काव्यस्य, प्री, वीज षोडशा क्षरं मन्त्रः । ॐ ह्रीं भ्रां ह्री पद्मे षोडश भुजे

प्रो ह्रूं ह्रूं नमः, अनेन मन्त्रेण पूर्वादि ग् मुखम्, रक्तासन, रक्तमाला १०८ शत जाप्यं कृत्वा स्थान लाभं भवति ।

यन्त्र रचना

पोडणदल कमल कृत्वा तन्मध्ये, प्रो. बोजं लिखेत्, दल मध्ये कमशः, ॐ ह्रीं आं ह्रीं पद्मे पोडण भुजे प्रो ह्रूं ह्रूं नमः, एतन्मन्त्रं लिखेत् तदुपरि पूर्वं, क्षा क्षी क्षूं क्षे क्षाः, पश्चिमे आ ओ भ्रूं भ्रं भ्र, दक्षिणे भ्रूं भ्रूं भ्रूं भ्रूं भ्रूं, उत्तरे ह्रा ह्रीं ह्रूं ह्रूं ह्रूं लिखेत्, अयं प्रकारेण यन्त्रं कृत्वा । काव्य मन्त्र यन्त्र पार्श्व रक्षणात्, राजा प्रसन्न भवति शत्रु नाशनं भवति, स्त्री पुरुष वश्य भवति ॥ ४ ॥

इस चतुर्थ काव्य के यन्त्र मन्त्र व काव्य को सुगन्धिन द्रव्य में लिखे, भोज पत्र अथवा सोना चाँदी ताँबा के ऊपर लिख कर पास में रखने से स्थान लाभ होता है, राजा प्रसन्न होता है, शत्रु का नाश होता है और स्त्री पुरुष वश्य होते हैं । मन्त्र का १०८ बार जाप पूर्व दिशा में मुख कर लाल माला से, लाल आसन पर बैठ कर जाप करें ।

काव्य नं० ५

चंचत्कांची कलापे स्तन तट विलुठ तार हारा बली के ।

प्रोफुल्ल त्पारिजात दुम कुमुम महा मंजरी पूज्यपादे ।

द्रां द्री वी व्लूं व्री समेते भुवन वसकरी क्षोभिणी द्राविणीव ।

ओं एं ओं पद्महस्ते कुरू २ घटने रक्षमा देवो पद्मे ॥ ५ ॥

यन्त्र लेखन विधि

पोडश दल कमल कृत्वा, तन्मध्ये, कला बीज दलेषु । ॐ ह्रीं श्रीं ह्रस्वकी विभुवन वस्य कराय ह्रीं नमः, एतन्मन्त्रं लिखेत् तदुपरि द्रां द्री द्रूं द्रूं द्रूं एतत्पंच वर्णं पूर्वं लिखेत् । क्ली व्लूं क्ली व्लूं क्ली उत्तरेलिखेत् । आ ईं आ ईं आं, दक्षिण लिखेत्, ॐ ॐ ॐ रक्ष पश्चिमोलिखेत्, अनेन प्रकारेण यन्त्रं कृत्वा, नाना प्रकारं पुण्यं अष्टद्रव्य पूजन कार्यः ।

काव्य नं० ६

लीला व्यालोल नीलोत्पल दलनयने प्रज्वल द्वाड वाग्निः ।

उद्यज्ज्वाला स्फुलिग स्फुरू दरुण करुदग्र वज्रांग हस्ते ॥

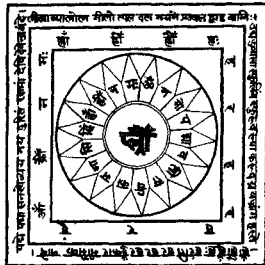
ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रीं हः हरति हर हर हर ह्र कार भीमेक नादे ।

पद्ये पञ्चासनस्ये व्यय नय दुरित रक्षमा देवी देवेन्द्र बंधे ॥६॥

यन्त्र रचना विधि

एकोन विंशति दल कमल कृत्वा, तन्मध्ये प्लौ बीज लिखेत् दले अष्टादशा क्षरं मन्त्रलिखेत् । ॐ नमो पद्मावती सर्व कामना सिद्धि हा ह्रीं नमः, लिखेत्, तदुपरि हा ह्रीं ह्रीं ह्र हर हर ह्रूं आं क्रो नमः, एतत् अक्षराणां यन्त्र वेष्टयेत् अष्ट द्रव्येन पूजन कृत्वा मन्त्र जाप्यं कुर्यात् ॥

यन्त्र नं० ६



फल

षष्ठम् काव्यस्य प्लौ बीज, अष्टादशाक्षरं मन्त्र, अनेन मन्त्र काव्य यन्त्र प्रसाधनेन

कवीं श्री नमः । अनेन मन्त्रेण पूर्वदिग् तथा उत्तराभिमुखं कृत्वा, माता सहस्रं जाप्यं कृत्वा । बुद्धि प्रबल भवति सोभाग्य विम्ब्याप्य, दलेषु अष्टा दशाक्षरैः । ॐ ह्रीं धरणद्र पद्मावति विद्या सिद्धि कवी श्री नमः, लिखेत्, तदुपरि प च झ म ह स. इवा इवीं इवां इवां प्रबल बल हां हां हूं रक्ष रक्ष, एतत् अक्षरेन वेष्टयेत् ।

फल

यन्त्र रचना सप्त मोयन्त्र अष्ट द्रव्येन पूजनं कृत्वा, काव्य यन्त्र मन्त्र प्रभावात् राज कोपरोगादि भय व्यतरादि दोष उच्चाटनादि भय नष्ट भवति वृद्धि मोक्ष बल पराक्रामस्य वृद्धि भवति ।

इस यन्त्र के प्रभाव से राज्य का कोप मिटे । रोगादि भय नाश होय । व्यतरादि दोष का और उच्चाटनादि दोष का भय दूर हो । बंदिखाना में छुटे । बल पराक्रम की वृद्धि होय । इस यन्त्र को मुगधित वस्तुओं से लिख कर अष्ट द्रव्य से पूजा करें ।

काव्य नं० ८

प्रतर्वाला कर्करस्मिद्धरित धन महा सांद्रनिहूर धूलो ।

सध्या रागारूणागी त्रिदश वर बधू वद्य पादार विदे ।

चच्चर्चंडासिधारा प्रहतरिपु कुलेकुं डलो घृष्ट गंडे ।

श्रा श्रो ध्रू श्रः स्मरति मद गज गमने रक्षमां देवी पद्मे ॥ ८ ॥

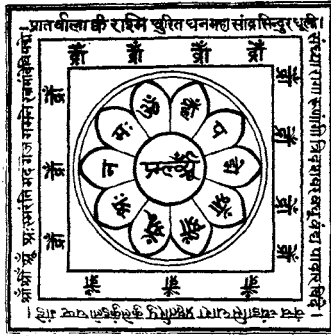
यन्त्र रचना

दशदल कमल कृत्वा तन्मध्ये पूष्पव्यूहं स्थाप्य, कमलेषु, ॐ ह्रीं पद्मे श्रा गी श्रू श्रः नमः, एतत् मव लिखेत् तदुपरि चतुर्दश द्रो कारेन वेष्टयेत् तदुपरि काव्य लिखेत् तत्पश्चात् अष्ट द्रव्येन पूजनं कृत्वा, काव्य, मन्त्र, यन्त्र, पार्श्व रक्षणात् अस्य प्रभावेन सर्वलोके पूजनीकं भवति, धन धान्यसस्य वृद्धि भवति सर्व भय नश्यति, देव सममुक्ति भवति ।

फल

अष्टम काव्यस्य पूष्पव्यूहं बीज, दशाक्षरै मन्त्र, ॐ ह्रीं पद्मे श्रा श्री ध्रू ध्रः नमः, अनेन मन्त्रेण, अष्टात्तर शत १०८ दिने कमल पुष्प मध्ये बीजाक्षर मन्त्राक्षर सयुक्तं लिखेत्, कर्पूर कस्तूरिकाया, प्रातः समये भक्षणं कृत्वा, तस्य पुरूपस्य आयुश्चिरं भवति, लक्ष्मी लाभ भवति निश्चयेनः ।

यन्त्र नं० ८



इस यन्त्र मन्त्र काव्य कों मुगन्धि द्रव्य से लिख कर, फिर बध्द द्रव्य से यन्त्र की पूजा कर, पास में रखे, यन्त्र को तबि अथवा चाँदी सोना वा भोजपत्र पर लिख कर पास में रखे तो, सर्वलोक में पूजा को प्राप्त होता है। यन्त्र की प्राप्ति होती है, धन धान्य की वृद्धि होती है। देवता समान पूजा को प्राप्त होता है, सुखी हाता है, और किसी भी बात का भय नहीं रहता है।

विशेष मन्त्र ॐ ह्रीं पद्मे श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं नमः इस मन्त्र को १०८ दिन में, कमल पुष्प के अन्दर बीजाक्षर और मन्त्राक्षर कर्पूर और कस्तूरी से १०८ दिन तक लिखे फिर प्रातः समय १०८ दिन तक भक्षण करे तो उस पुरुष की आयु बढ़ती है। लक्ष्मी लाभ होता है, राज-द्वार में मान्यता मिलती है। और अत्यन्त सुखी होता है।

नोट जहाँ आयु बढ़ाने की यन्त्र विधि लिखी है उस विधि में ऐसा भी अर्थ बनता है, कि कर्पूर कस्तूरी को भक्षण करके १०८ दिन, में बीजाक्षर सहित मन्त्र को कमल पुष्प के अन्दर १०८ दिन तक प्रतिदिन लिखे।

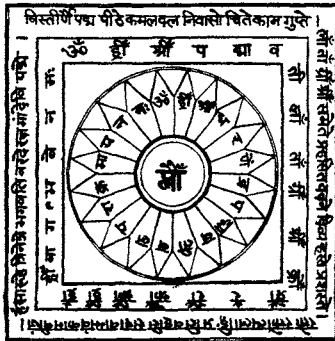
काव्य नं० ९

विस्तीर्णं पद्मपीठे कमल दल निवासोचिते काम गुप्ते ।
 लां तां श्रीं श्रीं समेते प्रहसित वदने दिव्यहस्ते प्रशस्ते ।
 रक्ते रक्तोत्पलाङ्गि, प्रतिवहसि सदावाग्भवं काम बीजं ।
 हसा रूढे, त्रिनेत्रे भगवति वरदे, रक्षमां रेवो पद्मे ॥ ६ ॥

यन्त्र रचना

विंशति दलं कमलं कृत्वा, तन्मध्ये प्लो बीजं स्थाप्य, दन मध्ये, ॐ ह्रीं श्रीं धरणेन्द्र
 पद्मावति बल पराक्रमाय नमः एतन्मन्त्रं लिखेत् । तदुपरि ॐ ह्रीं श्रीं पद्मावति लां तां श्रीं
 श्रीं कौ द्रो रं रो भूँ म्नी ह्रीं ह्रां ह्रौं वाग्भवे नमः, एतत् अक्षरेण यन्त्रं वेष्टयेत् यन्त्रस्य अष्ट
 द्रव्येन पूजनं कृत्वा । काव्य यन्त्र मन्त्र प्रभावात् सर्वं क्षेमं कुशलं भवति ।

यन्त्र नं० ६



फल

नवम काव्यस्य प्लौ बीजं विसत्यक्षरे मन्त्रः । ॐ ह्रीं श्रीं धरणेन्द्र पद्मावति बल पराक्रमाय नमः । अनेन् मन्त्रेण पूर्वाभि मुखं पीत वस्त्रं, पीतासने सहस्रं द्रव्यं जाप्यं कृत्वा एक विंशति दिने मन्त्र सिद्धि भवति, राज्य स्थानलाभं भवति ।

इस यन्त्र के मन्त्र को पूर्व में मुख करके पीला वस्त्र पहन कर पीली माला से दो हजार जाप पीले आसन पर बैठ कर २१ दिन तक करे तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है फिर यन्त्र पास में रखे । यन्त्र सुगन्धित द्रव्य से भोज पत्र पर लिखे और यन्त्र की अष्ट द्रव्य से पूजा करे । काव्य मन्त्र यन्त्र का नित्य ही स्मरण करे, तो नया स्थान का लाभ हो और नाना प्रकार की संपदा का लाभ होता है । शत्रु तो सन्मुख भी इस यन्त्र के प्रभाव से नहीं जावे । मन्त्र जपने का—ॐ ह्रीं श्रीं धरणेन्द्र पद्मावति बलपराक्रमाय नमः ।

काव्य नं० १०

षट्कोणं चक्रमध्ये प्रणव वरयूते वाग्भवे । काम राजे ।

हंसारूढं सविन्दो विकसित कमले कर्णिकाग्रे निधाय ।

नित्ये विलम्बे मदाद्रे द्रव्यसि सतत सां कुसे पास हस्ते ।

ध्यानात् सक्षोभयन्ति त्रिभुवन वशकुद् रक्षमां देवी पद्मे ॥ १० ॥

यन्त्र रचना

षट् कोण यंत्र कृत्वा, एं बीजं मध्ये स्थापयेत्, तत्पश्चात् क्लीं एं ह्रीं श्रीं नमः स्थापयेत् तदुपरि पद् कोणे एकविंशति क्लीं कारेन वेष्टयेत् अष्ट द्रव्येन पूजनं कृत्वा एकाग्रचित्तं साधयेत् । काव्य यन्त्र मन्त्र प्रभावात् तथा यन्त्र पार्श्वे रक्षणीयात् अस्य प्रभावेन लक्ष्मी लाभो भवति राजा प्रसन्न भवति, देव आशीर्वादिं ददाति प्रत्यक्ष भवति अस्य प्रभावात् ।

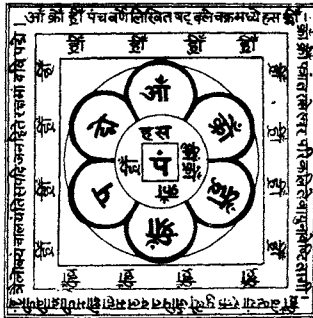
फल

दशम काव्यस्य एं बीजं वाग्भव शक्तिः वषाक्षरै मन्त्र ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एं ह्रीं ह्रीं ह्रूं नमः, अनेन् मन्त्रेण जाप्यं कृत्वा बृहस्पति समानं भवति द्वादश सहस्रं श्वेत जाति पुष्पेन जाप्यं कृत्वा । बृहस्पति समबुद्धि भवति । एक त्रिशदिन मध्ये ब्रह्मचर्यात् जाप्यं कुर्पु एक स्थाने स्थित्वा, एकासन कृतत्वा द्वादश सहस्रं जाप्यं कृत्वा ।

यन्त्र रचना

षट् दल कमलं कृत्वा पं बीजं, मध्ये स्थापयेत् षट् क्षरं ह स क्लीं क्रीं क्रीं बीजाक्षरं वेष्टयेत् आ क्रीं ह्रीं श्रीं पद्मे एतत् अक्षरं षट् दल कमलं मध्ये लिखेत् । तदुपरि षोडश ह्रीं कारं वेष्टयेत् वायुतत्त्व मध्ये, यत्र साधयेत् रक्तपुष्प अष्ट द्रव्येन पूजनं कृत्वा यन्त्र मन्त्र साधनात् चितित कार्यस्य सिद्धि भवति, शत्रु क्षयं याति लक्ष्मी लाभो भवति, सद्गति प्राप्ति भवति ।

यन्त्र न० ११



फल

एकादशम काव्यस्य पं बीजं, द्रो, शक्ति षोडशाक्षरं मन्त्र, ॐ ह्रीं श्रीं आ क्रीं ह्रीं वली क्रीं ह्रीं एं पद्मावती नमः, अनेन मन्त्रेण पूर्व दिशा मुख कृत्वा द्वादश सहस्र जाप्य १२००० रक्त पुष्पेन कृत्वा, मन्त्र सिद्धि भवती मन्त्र प्रभावात् सर्वजनप्रियो भवति, अस्य प्रभावात् चक्रवर्ति समान भवति, सर्वजन वशी भवति । भाग्योदय भवति ।

इस यन्त्र को भोज पत्र पर सुगन्धित द्रव्य से लिखें, अथवा सोना, चादी, तांबा, के पत्र पर अष्ट द्रव्य से खुदवा कर और लाल पुष्प से यन्त्र की पूजा करें तो, लिखित कार्य की सिद्धि होती है । शत्रु नाश को प्राप्त होता है । लक्ष्मी का लाभ होता है । सद्गति की

प्राप्ति होती है। ॐ ह्रीं श्रीं आं क्रीं ह्रीं क्लीं क्रीं ह्रीं एं पद्मावति नमः, इस मन्त्र को पूर्व दिशा में, मुख करके बारह हज्जार लाल फूल से जाप करे तो मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र के प्रभाव से समस्त पृथ्वी के लोग चरणों में आकर पड़े, चक्रवर्ति के समान भाग्यो दय करता है।

काव्य नं. १२

ब्रह्माणी कालरात्री भगवती वरदे चाडि चामुडि नित्ये ।

मात गांधारी गौरी धृति मति विजये कीर्ति ह्रीं स्तुत्य पद्मे ।

संग्रामे शत्रु मध्ये ज्वलद नल जले वेष्टि तेभ्यः सुरास्त्रैः ।

क्षां क्षीं क्षूं क्षः क्षणाद्धूं क्षतरिषु निवहे रक्षमां देवी पद्मे ॥ १२ ॥

यन्त्र रचना

षोडश दल कमलं कार्यं, मध्ये क्ष्मत्क्ष्मूं स्थाप्य, दले षोडश देव्या । ॐ ब्रह्माणी ॐ कालरात्री, ॐ भगवते, ॐ सरस्वती, ॐ चंडी, ॐ चामुडायै, ॐ नित्यायै, ॐ मातायै, ॐ गांधारी, ॐ गौरी, ॐ धृति, ॐ मति, ॐ विजय, ॐ कीर्ति, ॐ ह्रीं नमः, ॐ पद्मावतये नमः, लिखेत् पश्चात् यन्त्रस्योपरि चतुर्कोणे क्षा क्षी क्षूं क्षः, लिखेत् तदुपरि काव्य लिखेत् यन्त्रस्य अष्ट द्रव्येन पूजनं कृत्वा, काव्य, यन्त्र, मन्त्र, पठनात् शत्रु भयं न भवति, शत्रु उन्मत्त भवति नाश भवति शत्रुस्य मरणं भवति यन्त्र साधन प्रभावात् मन्त्रात् मिरचकाया मंत्रित्वा होमं कुर्यात् शत्रुस्य निश्चयेन मरणं भवति ।

फल

द्वादश काव्यस्य क्ष्मत्क्ष्मूं बीजं, माया शक्तिः पचिष्यति अक्षरं मन्त्रं ॐ ह्रीं श्रीं प्रौं श्रीं क्लीं क्रीं पद्मावति धरणेन्द्र संहितायः क्षा क्षी क्षूं क्षः नमः अनेन मन्त्रेण, हस्तार्कं, वा मूलार्कं वा पुष्पांकिं दिने पचिष्यति सहस्त्रेण २५००० दक्षिणदिशा साधनं कृत्वा कृष्ण पुष्पेन होमः कृष्ण माला जाप्यं कृत्वा, शत्रुस्य मरणं भवति, संग्राम विषये जयं भवति ।

इस यन्त्र को भोज पत्र पर सुगन्धित द्रव्य से लिखे अथवा सोना, चादी, तांबा के पत्रा पर खुदवा कर यन्त्र की अष्ट द्रव्य से पूजा करे फिर मन्त्र की साधना करे, मन्त्रः— ॐ ह्रीं श्रीं प्रौं श्रीं क्लीं क्रीं पद्मावती धरणेन्द्र संहितायः क्षां क्षीं क्षूं क्षः नमः इस मन्त्र को काली

यन्त्र नं० १२



माला से और काले पुष्प से पचीस हजार (२५०००) रविहस्त नक्षत्र में अथवा रविमूल नक्षत्र में वा रवि पुष्यामृत दिन में जाप करे काले फूल से होम करे, तो शत्रु मरे और मश्राम में जय हो। काय, यन्त्र, मन्त्र, के पठने से और पूजन करने से शत्रु मरे वा भूष्ट होय, शत्रु पागल हो जाय, और मन्त्र से मिचं मन्त्रीत कर होम करे, तो शत्रु का मरण हो जावे।

काव्य नं. १३

खड्ग को दंड कांडे मुसल हलधरै बाण नाराच चक्रै ।

शक्त्या सत्यं त्रिशूलं वरं फणं ससरं मूढगरं मुष्टिं दण्डं ।

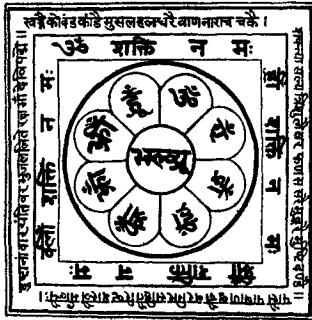
पासैपाषाण दक्षे वर गिर सहितैरिष्ट क्षत्रै माल्यैः ।

दुष्टानां दारम्यंति वर भूज ललिते रक्षमा देवी षष्ठी ॥ १३ ॥

यन्त्र रचना

अष्टदल कमलं कृत्वा म्लव्यं मध्ये स्थाप्य, अष्टाक्षर मन्त्र, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भ्रीं ह्रीं लिखेत् तदुपरि, ॐ शक्ति नमः, ह्रीं शक्ति नमः, श्रीं शक्ति नमः, क्लीं शक्ति नमः, चतुर्दिक लिखेत्, अष्ट द्रव्येन च रक्त पुष्पैः यन्त्रस्य पूजनं कृत्वा, एकाग्रित्तेन यन्त्र मन्त्र साधनं कुर्यात्, अस्य प्रभावात् सर्वं वाङ्मासिद्धिर्भवति दिव्य दृष्टिर्भवति सर्वं लोकस्य वशीकरणं भवति ।

यन्त्र नं० १३



मन्त्र साधन विधि

त्रयोदशम काव्यस्य म्लव्यं बीजं, दंड शक्ति चतुर्विंशति अक्षरैः मन्त्र, ॐ ह्रीं पद्मावति उपसर्ग भय निवारय हा प्री क्लीं ह्रीं नमः, अनेन मन्त्रेण द्वादश सहस्रेण १२००० उत्तरदिशा जाप्यं कृत्वा होखणीस्य—होम कुर्यात्तर्हि विद्या सिद्धिर्भवति, चित्तित कार्यं भवति, होमस्य भस्मं तथा मिष्टान्नसह खादयेत् तर्हि स्त्री पुरुष वधयं भवति ।

इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्य से भोज पत्र पर लिख कर लाल फूल और आठ द्रव्य

से पूजन करे। एकप्र मन से मन्त्र की साधना करे तो मन वांछित कार्य की सिद्धि होय। दिव्य दृष्टि होय वशीकरण होय।

ॐ ह्रीं पद्मावति उपसर्ग भय निवारय ह्रीं प्रो वञ्जी ह्रीं नमः, इस मन्त्र का बारह हजार उत्तर दिशा में मुख करके जाप करे (हीखणी) का होम करे तो विद्या सिद्धि होय। मन में चिन्तन करे तो कार्य हांय, मिठाश और होम की राख दोनों मिलाकर जिसको खिलावे, पुरुष वा स्त्री वश्य होय।

नोट—इस यन्त्र मन्त्र की विधि में हीखणी द्रव्य का होम करे, लिखा है सो (हीखणी) क्या वस्तु है सो अर्थ समाज में नहीं आया है। हमने जो जैसा था, वैसा लिख दिया है।

(हीखणी) शब्द का अर्थ मेवाड़ी भाषा में नाशिका सुगन्धे वाली को कहते हैं। और गुजराती भाषा में ही-वणी कपास होता है। यहां हीरवणी कपास ही होता है। उसका होम करे।

काव्य नं. १४

यस्या देवै नरेन्द्रै र सरपतिगणैः किन्नरै दानवैन्द्रैः ।

सिद्धै नगिन्द्रै यक्षै र्वर मुकुट तटे धूष्ट पादारविन्दै ।

सौम्ये सो भाग्य लक्ष्मी दलित कलिमले पद्म कल्याणमाले ।

अवे काले समाधि प्रकट्य परमं रक्षमां देवी पद्मे ॥ १४ ॥

यन्त्र रचना

एक विंशति दल कमलं त्रित्वा, मध्ये, श्रुम्ब्युं स्थाप्य, कमल दले, ॐ ह्रीं श्री पद्मावती सर्वं कल्याण रूपे रां री द्रां द्रीं द्रों नमः लिखेत, तदुपरि षोडश श्री कारवेष्टयेत् तदुपरि काव्य लिखेत, नानाप्रकारेन् अष्ट द्वयै यन्त्र पूजन कृत्वा, बीज मन्त्र यन्त्र प्रभावात् स्वर्ग लोः स्य, यक्ष, किन्नर, देव, भूत भैरवादि सिद्धि भवति, राजा प्रजा, स्त्री, पुरुषादिक सर्वं वश्य भवति, सौभाग्य लक्ष्मी ददाति । वंदि मोक्षं भवति ॥ १४ ॥

फल व साधन विधि

चतुर्दश भाग्यस्य श्रुम्ब्युं बीजं, माया शक्तिमेक विंशति अक्षरैः । मन्त्र—ॐ ह्रीं श्री पद्मावति सर्वं कल्याण रूपे रां री द्रां द्रीं द्रों नमः । अनेन मंत्रेण एक विंशति सहस्रेण २१००० जाप्य कृत्वा, उत्तर दिशा मुखं कृत्वा, पीत वस्त्र परिधान्यः । पीत पुष्पे सरसपं च धृत

काव्य नं १५

पूषे श्वंदन तंदुलै शुभ महागंधैश्च मन्त्रालिकः ।
 नानावर्ण फले विविध सरसैः दिव्यं मनो हारिभिः ।
 दीपनै वेद्य वस्त्रैः नुभवन्तु करं भक्ति युक्तं प्रदत्त्वा ।
 राज्यं हेत्वा ग्रहाण भगवति वरदे रक्षमां देवी पद्मे ॥ १५ ॥

यन्त्र रचना

चतुर्दश दल कमलं कृत्वा इमं ब्रह्मं बीजं मध्ये, स्थाप्य दलेषु मन्त्र । ॐ ह्रीं पद्मे
 राज्यं प्राप्तिं ह्रीं क्लीं कुरु २ नमः, लिखेत् । तदुपरि षोडश ब्रह्मं कारेण वेष्टयेत् तदुपरि काव्यं
 लिखेत् । पश्चात् धूप दीप नैवेद्य, पुष्पेन पूजनं कृत्वा, राज्यं लाभं संतानं प्राप्तिं भवति ।

मन्त्र साधन विधि

पञ्च दशम काव्यस्य इमं ब्रह्मं बीजं रक्त दत्ता शक्ति चतुर्दशाक्षरं ।

यन्त्र नं० १५



मन्त्रः—ॐ ह्रीं पद्मे राज्यं प्राप्तिं ह्रीं क्लीं कुरु नमः । अनेन मन्त्रेण षोडश सहस्रं जाप्यं साधयेत्, ष्मास द्वेयनं राज्यं प्राप्तिं भवति ।

इस मन्त्र को सुगन्धित द्रव्य से भोज पत्र पर वा सोना चांदी के पत्रे पर लिख कर घूप दीप नैवेद्य पुष्पों से मन्त्र की पूजा करे, तो राज्य का लाभ, सत्ता की प्राप्ति होती है । और मन्त्र का जाप सोलह हजार करके मन्त्र सिद्ध कर लेवे, तो दो मास में राज्य की प्राप्ति होती है ।

काव्य नं. १६

गज्जन्नीरदं गर्भं निर्गतं तडित् ज्वाला सहस्रं स्फुरित् ।

सद्व्याकुलं पासं पंकजं करा भक्त्या मरं रचिताः ।

सद्यपुष्पितं पारिजातं रुचिरं दिव्यं वपु विभ्रतिः ।

सामांपातु सदा प्रसन्नं वदना पद्मावती देवता ॥ १६ ॥

यन्त्र रचना

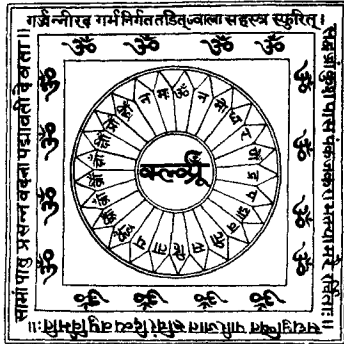
पंचविंशतिं दलं कमलं कृत्वा, व्यर्थं मध्ये स्थाप्य, बीजं दल मध्ये मन्त्राक्षरं । ॐ नमो धरणेन्द्र पद्मावति सहिताय ह्रीं श्रीं ब्रां ग्रीं क्षां क्षीं प्रो ह्रीं नमः लिखेत् । तदुपरि षोडश ॐ कारेण वेष्टयेत् पश्चात् ऊपरि काव्यं वेष्टयेत् वेष्टनं कृत्वा । अष्ट द्वयेन पूजनं कुरु, यन्त्र, मन्त्र, प्रभावात् कुबुद्धिनाशं भवति तथा परं कृतं मारण, मोहन, उच्चाटन, विद्वेषनादिकं कर्मनष्टं भवति दुष्टानां नाशं भवति ।

मन्त्र साधन व फल

षोडशम काव्यस्य व्यर्थं बीजं, श्री शक्ति, पंचविंशति मन्त्राक्षरः । ॐ नमो भगवते धरणेन्द्र पद्मावति सहिताय ह्रीं श्रीं ब्रां ग्रीं क्षां क्षीं प्रो ह्रीं नमः । अनेन मन्त्रेण, अष्टादश सप्तसत्रेण १८००० जाप्यं कृत्वा श्वेतं पूष्प श्वेतं, सिद्धार्थं, व नारिकेल संयुक्तं दिने होमं कृत्वा, तन्मन्त्रं सिद्धिं भवति, तस्य प्रभावेन, वंश्या पुत्रवति भवति, नव प्रकारं बहिर्भयं न भवति ।

इस मन्त्र को सुगन्धित द्रव्य से लिख कर अष्ट द्वय से पूजा करे । अथवा सोना, चांदी, व तांबा, के ऊपर खुदवा कर अष्ट द्रव्य से पूजा करे । तो दुर्बुद्धि का नाश होता है । और परकृत मारण, मोहन, उच्चाटन दिक कर्म का नाश होता है और दुष्टों का नाश होता है ।

यन्त्र नं० १६



मन्त्र का जाप अठारह हजार (१८०००) जाप करके फिर सफेद फूल और सफेद जरसों और नारियल का गोला दोनों को मिलाकर होम करे, तो मन्त्र की सिद्धि होती है। मन्त्र प्रभाव से बध्या स्त्री पुत्रवान होती है, और नो प्रकार की अग्नि का नाश होता है। यन्त्र मन्त्र और काव्य को पास में रखे।

काव्य नं. १७-१८

ताराखं सुगता गमे भगवती गोरीति शैवागमे।

वक्ष्य कोलिष शासने जिनमते पद्यावति विश्रुता।

गायत्री श्रुत शालिन प्रकृति रित्युक्तासि सांख्यागमे ।

मातर्भारति किं प्रभूत भणितं व्याप्त समस्त त्वया ॥ १७ ॥

संजप्ता कणवीर रक्त कुसुमैः पुष्पेक्षिचर सचित्रैः ।

सन्मिश्रैः घृत गुग्गुलोघ मधुभिः कुण्डत्रिकोणं कृतः ।

होमार्थं कृत षोडशांगुल शताम बन्धू दशांस जपेत् ।

तं वाचं वदसिह देवी सहसा पद्मावति देवता ॥ १८ ॥

अस्य काव्यस्य, हं, शक्ति, ग्लव्य, बीज एकोन विंशति क्षरैः । मन्त्र — ॐ ह्री श्री एं क्लीं श्रा प्रों आं क्रो पद्मावति रक्त रूपे नमः । अनेन मन्त्रेण सवालक्ष १२५००० जाप्य कृत्वा, अष्टांग धूप, दीप, नैवेद्येन ।

यन्त्र रचना

पद्मावति स्वरूप रक्त वर्ण चतुर्भुजा, पद्मासना, अंबुज त्रिगुल, पास, कमल, हस्ते, देव्यापरि नवदल कमलं कृत्वा, तल कमल परिदेव्यादलेः । ॐ ह्री श्री एं क्लीं श्रा प्रो हं र लिखेत् । अनेन मन्त्रेण, ॐ ह्री श्री एं क्लीं श्रा प्रो आं क्रो पद्मावति रक्त रूपे नमः बंष्टयेत् तत् अग्ने होम कुंडं कृत्वा दशांस होम कुरु ।

इस यन्त्र को पद्मावति के आकार का बना कर ऊपर नौ कमल दल बनावे । उसमें ॐ ह्री श्री क्लीं एं श्रा प्रो हं र लिखे, ऊपरि ॐ ह्री श्री एं क्लीं श्रा प्रो आं क्रो पद्मावति रक्त रूपे नमः लिखे, फिर होम कुंड बनावे । होम कुंड काकोन अंगुल २५ उसका विस्तार अंगुल १०० उसके मध्ये मे योन्वाकार कुंड अंगुल ६४ विस्तार मध्य में करे । ताल कनेर के फुल, गुग्गुल, घी, कपूर, सहित मिष्टान, तिल, ये सब मिलाकर हांम कर । जितना जाप मन्त्र का किया हो उसका दशांस होम करना, नव देवता प्रसन्न होता है, प्रीत प्राना भक्ष मामता है । हलवा, पुरी, २५ सेर, लड्डू ५ सेर, मेवा ५ सेर, खीर ५ सेर, दूध आदिक भक्ष दीजिये, तब पद्मावति प्रत्यक्ष होकर कहे, की वर मांगो तब जो इच्छा हो सो देवा मे वर मांग लेना, कार्य सिद्ध होता है । पद्मावति देवी को छहो सिद्धान्त वाले अलग २ नाम से पुकारते व पूजा करते हैं । ॐ ह्री श्री एं क्लीं श्रा प्रो आं क्रो पद्मावति रक्त रूपे नमः । इस मन्त्र का सवालक्ष १,२५,००० जाप करे । अष्टांग धूप दीप नैवेद्य से करे । यन्त्र मे देवी की मूर्ति बनावे ।

काव्यनं०१७व१८कायंत्र



काव्य नं० १९-२०

पाताले कृतता विषं विषधरा धूर्मति ब्रह्माडजा ।
स्वर्भूमौ पति देव दानव गणा सूर्येन्दु जोतिर्गणा ॥
कल्पेन्द्रास्तुत पाद पकज नता मुक्तामणि श्रूविता ।
सात्रलोक्य नताः मितिस्त्रि भुवनस्तुत्यास्तुता सर्वदा ॥१६॥

ह्री कारे चन्द्रमध्ये पुनरपि वलये षोडशावर्तं पूर्णं ।
बाह्ये कठेर वेष्टयां कमलदलयतम् मूल मन्त्रं प्रयुक्तं ।
साक्षात् त्रैलोक्य वश्य पुरुष वसकृत मन्त्रराज्येद्र राज्यं ।
एतत्तत्त्वं स्वरूपं परम पदमिदं पातुमां पार्श्वनाथ ॥२०॥

अस्य द्वय काव्यस्य, स्तम्भ्यं बीजं स शक्ति, त्रिशत् अक्षरेन् मन्त्र ।
ॐ ह्री ऐं धरणेन्द्राय विषहर पन्न गरुपाय आ श्री श्री ह्र हर हर ह्रा ह्रूं ह्रं
नमः ।

इस विद्या मन्त्र का एक लाख (१०००००) जाप पूर्व की तरफ मुख करके बहत्तर (७२) दिन तक जाप करे, मन्त्र सिद्ध हो जायगा । मन्त्र सिद्ध होने के प्रभाव से साधक को पानान वासी विषधर, देव, भूमिजा स्वर्गादि देव, दानव, यक्ष, राक्षस, कल्पेन्द्र, सूर्यादि ग्रह गण, समस्त साधक के चरण कमलों की पूजा करते हैं ।

यन्त्र रचना

कर्म्य देवा, धरणेद्र देवेन कथं भूतं धरणेन्द्रादि विष हर पन्नग पुरुषाकार स्वरूप द्विभुजा सर्पाकार मस्तके अर्द्धचन्द्राकार, तन्मध्ये ह्री कारे स्थाप्य, पुनरपि षोडश वर्णन मन्त्रेना ॐ ह्री विषहर पन्नग धरणेन्द्राय नम लिखेत् कठ देशे रविकिरी स्थाप्य मूर्ति अष्टदल कमल मन्त्रेन ॐ ह्री ऐं धरणेन्द्राय विष हर पन्नग रूपाय आ श्री श्री ह्र हर हर ह्रा ह्रूं ह्रं नमः वेष्टयेत् अनेन प्रकारेन धरणेन्द्र स्वरूपं कृत्वा ।

ये यन्त्र साक्षात् पुरुष त्रैलोक्य को वशी करता है । मन्त्र का राजा धरणेन्द्र है । लक्ष्मी मनोकामना को देने वाला है ।

नोट :—इस १९-२० के यन्त्र की विधि में हमें कुछ अशुद्ध पाठ नजर आता है । क्योंकि जहां

श्लोक में—“बाह्यं कठेर वेष्टयां कमल दल युतं मूल मन्त्रं प्रयुक्त ।” ऐसा पाठ है । किन्तु हमारी समझ से तो यहाँ— बाह्यं ठं कार वेष्टयं होना चाहिये । समझ में नहीं आता कि कहीं पाठ बदल गया है । जब तक पूर्ण प्रमाण नहीं मिले तब तक पाठ बदलना ठीक नहीं जमता है । हमने जैसा पाठ था वैसा ही यन्त्र बना दिया । विशेष विद्वान लोग समझे । जितने आजकल उपलब्ध पाठ हैं, उसमें ऐसा ही पाठ है ।

काव्य नं० २१

क्षुद्रोपद्रव रोग शोक हरनी दारिद्र विद्रावनी ।
व्याल व्याघ्र हरा फण त्रय धरा बेह प्रभा भ सुरा ॥
पातालाधिपते प्रिया प्रणयती चितामणि प्राणिना ।
श्रीमत्पार्श्वजिनेश शासन सुरी पद्मावती देवता ॥२१॥

इस काव्य का पाठ करने से क्षुद्रोपद्रव, रोग, शोक, दारिद्र, दुःख, दुर्बुद्धि, व्याघ्र, सर्प, बिष, राज भय, दुष्ट कर्म, माःण, उच्चाटन इत्यादिक घरणेन्द्र पद्मावती, जो पाताल बासी देव है, वह दूर करते है ।

भक्तयानां देहि सिद्धिं मम सकल कलिमलं देवि दूरी कुरुष्व ।
सर्वेषां धार्मिकानां सतत नियमितं वाञ्छितं पूरयस्व ॥
संसारबन्धो निमग्नं प्रगुण गुण युत जीवराशि च त्राहि ।
श्री ऊज्जनेन्द्र धर्मं प्रगटय विमल देवि पद्मावति त्व ॥२२॥
मातः पद्मनि पद्मराग रुचिरे पद्मप्रसूनानने ।
पद्मे पद्म वनस्थिते परि लसत्यद्याक्षि पद्मालये ॥
पद्मा मोदिनी पद्मराग रुचिरे पद्म प्रसूनार्चिते ।
पद्मोत्प्लासिनि पद्म नाभि निलये पद्मालये पाहिमां ॥२३॥

दिव्य स्तोत्रं पवित्र पटुतर पठित भक्तिपूर्वं विसंध्यं ।
लक्ष्मी सौभाग्य रूपं दलित कलिमलं मंगलं मंगलानां ॥
पूज्या कल्याण माला जनयति सतत पार्श्वनाथ प्रसादात् ।
देवी पद्मावती न हसित वदना शस्तुता दानवेन्द्र ॥२४॥

श्री चक्रेश्वरी देवी



या देवि त्रिपुरा पुराश्रयगता शीघ्रासि शीघ्रप्रदा ।
या देवी समया समस्त भुवने संगीयते कामदा ॥
तारामान विमर्दनी भगवति देवी च पद्मावती ।
सास्ता सर्वगतास्त्वमेव नियतां मातेति तुभ्यं नमः ॥२५॥

पद्मासना पद्मदलाय ताक्षी पद्मानना पद्म कराहि पद्मा ।
पद्म प्रभा पार्व जनेन्द्र यक्ष्यः पद्मावती पातुफणीन्द्र पत्नी ॥२६॥
पठितं भणितं गुणितं जय विजय पराजितं धनं परमं ।
जयं च सर्वं व्याधि हरं जयति श्री पद्मावती स्त्रोतं ॥२७॥

प्रथम हरति घोरपद्मव दुर्निवारं ।
द्वितीय मपि च हन्या घातिघातं समस्त ॥

तृतीय हरति मारी तुल्यकं शत्रु शोकम् ।
शर जकुनवशकारी षण्ट कोष्ठाटनघ्नं ॥२८॥

मुनि युग विष नाशं चाध्मो द्वेगहन्त्यात् ।
मन वच वपु गुह्या भावयुक्तनै निर्व्यं ॥२९॥

स्मरति न मति पादयो त्रिदध्यात् त्रिकालं ।
स भवति मति पूर्णं पापपंकं विभुक्तः ॥३०॥

सुख धन यश लाभो पुत्र कामाप्ति निष्ठो ।
मनसिज वरकामा देवि ध्यानाद् भवन्ति ॥३१॥

सद्ध्यानाद् देवि जातात्सुर नर भुजगेश्वर्यं मारोग्य युक्तं ।
नागेन्द्रै स्तं, ग देहं मद गलति कटं कोप युक्तं द्विरेकैः ॥३२॥

वाजिनां द्वंद्वं वृंदैर्जल भुवि रवचरं वायु वेगं मनोज्ञं ।
तारुण्यं दिव्य रूप सुर युवतिनिभं भक्तुं चेतोनुगम्यं ॥३३॥

त्वन्ना मस्मरणाद् भवन्ति भुवने बागीश्वराणां विभुः ।
लक्ष्मी निर्भर मानुवति च यशोहंसाज्ज्वलं निर्मलं ॥३४॥

त्वत्पादार्चनया नमन्ति च स्वयं भूमिस्वराणां प्रभुः ।
 पुत्राप्तिर्वरं बन्धु गोत्र विमलं वस्त्रं च नाना विधं ॥३५॥
 त्वन्नाम स्मरणाद् ब्रजंति नितरां हारंति च दुर्जनाः ।
 भूत प्रेत पिशाच राक्षस सुरा दुष्टाग्रहा व्यन्तराः ॥३६॥
 डाकिन्योऽसुर दुष्ट शाकिनी गणा सिद्धादयश्चोरगोः ।
 दन्ती वृश्चिक दुष्ट कीटक रूजाः दुर्मिक्ष दावानल ॥३७॥
 श्रुत्येति शृङ्खल बन्धनं बहुविधं पाशेष्वच यन्मोचनं ।
 स्तम्भे शत्रु जलाग्नि दारुण महि नागारि नाशोभयम् ॥
 दारिद्र्य ग्रहरोग शोक शमनं सौभाग्य लक्ष्मीप्रद ।
 ये भक्त्या भुवि सस्मरन्ति मनुजास्ते देविनाम ग्रहम् ॥३८॥
 यां मन्त्रायाम वृद्धिमान वितनोत्प्लास प्रसादार्पणा ।
 यां दुष्टाशय क्लृप्त कर्मणगण प्रध्वंस दक्षाङ्कुशाः ॥
 आयु वृद्धिकरा जरामय हरां सर्वार्थ सिद्धि प्रदां ।
 सद्य प्रत्यय कारिणी भगवती पद्मावती संस्तुवे ॥३९॥
 आह्वान नैव जानामि न जानामि विसर्जनं ।
 पूजामर्चनं जानामि क्षमस्व परमेश्वरि ॥४०॥
 अपराध सहस्राणि क्रियान्ते नित्यं शोभया ।
 तत्सर्वं क्षम्यतां देविप्रसीद परमेश्वरी ॥४१॥
 आशा हीनं क्रिया हीन मन्त्र हीन च यत्कृतं ।
 तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरी ॥४२॥
 ॥ इति ॥



श्री चक्रेश्वरीदेवी स्तोत्र यन्त्र मन्त्र (हिन्दी) विधि सहित

स बीज मन्त्र यन्त्र गमित चक्रेश्वरी स्तोत्रं लिख्यते ॥
 श्री चक्रे चक्र भीमे ललित वर भुजे लीलया लालयन्ती ।

चक्रं विद्युत्प्रकाशं ज्वलित शत शिरखे खे खगेन्द्राधिरूढे ॥
तत्त्वं रूढभूत भासा सकल गुण निधे मन्त्र रूप स्वकान्ते ।
कोट्यादित्य प्रकाशे त्रिभुवन विदिते त्राहि मां देवि चक्रे ॥१॥

टीका :—हे चक्रे 'देवि' त्व 'मां' त्राहि रक्षं पालय, कथं भूतं हे चक्रे, श्री चक्रे 'चक्रेण भीमे, भयंकरे पुनर्ललित वर भुजे, चक्रं 'लीलया' लालयन्ती, कथं भूतं, चक्रं, विद्युद्भूतप्रकाशा, यस्य तत्, पुनर्ज्वलित, शतशिखं, ज्वलिता दीप्ताः, शतशिखां, शताग्नि, शिखा, यस्मिन्, तत् पुनः कथं भूते, देवि रवे, आकाशे, कोट्यादित्य प्रकाशे, कोटि सूर्य प्रकाशे पुनः खगेन्द्राधिरूढे, गरुडा रूढे, पुन, स्तत्त्वं, स्सप्त तत्त्वं रूढभूताया भास, स्तया सकलगुण निधे, हे मन्त्र रूप स्वकान्ते, हे त्रिभुवन विदिते त्रिलोक प्रसिद्धे त्वं 'मां' त्राहि योजनीयं चेति पदार्थः ।

शान्ति कर्म

॥ यन्त्रोद्धार ॥

अस्य 'तत्त्व' समुद्धीयते 'श्रीचक्रे' अतस्चक्रे, अन्यंतर कर्णिकायां 'खे' चक्र भीमा गरुडा रूढा भुजे 'चक्र' लालयन्ती इ 'रूपा' लक्ष्मी रूपा त 'तत्त्वं' श्रीचक्रे अष्टार चक्रे श्री बीज लेखनीय चक्रशब्देनाष्टार चक्रं—गृह्यते पुनस्तत्त्वं स्सप्त तत्त्व बीज रूढभूता 'धा' कान्ति, स्तया, सकल गुण निधे, रितियुक्ते कलाभिः षोडश कलाभिः गुणैरष्ट बीजाक्षरै स्तथा निध्या-क्षरै स्तथा, मूल मन्त्रेण रूपं वेष्टयित्वा ध्यातव्या ।

अस्य मन्त्रः

ॐ ऐं श्री चक्रे चक्रभीमे ज्वल २ गरुड पृष्ठि समारूढे ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं हः
स्वाहा ।

विद्युद्बीजं 'ऐं' तत्त्वानि ग्रामादीनि चेतिसंज्ञेय ॥

अथ विधिः

पूर्वादिक् 'आसनं' 'प्रसासनं' प्रभातः कालः वरद मुद्रा इत्यादि को ज्ञेयः । शान्तिः
कर्मणः फलं सकल गुण लाभो निधि लाभश्चेति ज्ञेयः ।

यन्त्र नं० १



बीजोत्पत्ति समुद्देशः

सूच्यते 'बीज कोशतः, विज्ञानार्थं प्रतीत्यर्थं', फलं, तेषां, पृथक् २ तत्त्वानि, कानी' सप्तैव, आ वां हां तां रां लां धा इति न भवन्ति, गुणा अष्टौ के अस्मि आउसा ह्री श्री इवी गुण अष्टौ प्रकीर्तिताः इत्युक्तं नव निधयश्चराणि इह कानि मति जिनागमे गृहानि, नान्य शास्त्रेषु विना विद्यानुशासनात् । ह्री क्लीं व्लू द्रां द्री दू आ को क्षी, एतानि नव बीजानि निधितानि चार्थ सज्ञया नव भेदाः प्रणीताः स्युः, कर्मणा च पृथक् प्रदा इत्युक्ते कान्ति बीज (क्ली) भवेच्च सर्व कामार्थ साधकं च चक्र बीज माख्यान चक्रे चक्रे पृथक् २ इत्युक्ति गूढा अथैतेषां फलोदश माह आकारः सूरि वर्गेत्यात् मकार साधुवर्गे तत्संयोग भवा सिद्धिः प्रथमे तत्त्व बीजके । १।

व कारो वरुण पक्षी, गगन सजया स्मृता स्तत्सयोगेन शास्त्रेश्च पुष्टि कर्म
प्रदोप्यय ॥२॥

ह कारोदिविजृंभारव्ये कर्माणी व्योम शून्ययो स्तत्स योगेन, वशोकार कार्य सिद्धि
करो भवेत् ॥३॥

त कार स्तस्कर प्रोक्तस्तद्वोधे, 'पाश' बीज युक्त तत्प्रभावेन चौर्यादि दुष्ट घात करो
भवेत् ॥४॥

र कामानिल वन्हीना त्रिस्वरूपेणैव संस्थितः तत्सयोग भवेदेष सर्व कामार्थ
साधनः ॥५॥

लः कामेन पृथिव्याख्य स्तंभन बीज मुक्तम तत्सयोगादिव जाये नाम्नादि स्तंभ
कारण ॥६॥

ध धनेधः समादाने सयोगेन निधिप्रदः इत्युक्ते सप्त विजाणी कार्य करारण च ॥७॥

सयोगत समुद्दिष्ट देवताः 'स्सप्त एव च आचार्यो वरुणो पाशो 'गक्र' सोमो' यमो
भवेत् ॥८॥

कुबेर इति सजाताः सप्त देवा इमे स्मृता इति बीज कोणात् गुणोत्पत्तिः कथ्यते ।

अकाराहंन् मिर्भवेत् सिद्धे आचार्यो उरुपाध्याये मा साधो इत्युक्ते ।

ह्री श्री क्ली कथ सिद्धा इत्युक्ते इचेन् कथ्यते क्षत् जम्भ, व्योम वक्त्र धूम्र भैरव्य
ल कृत्ता नाद बिन्दु समायुक्त बीज प्राथमिक म्पन ॥९॥

क्षतजां 'र कार' व्याम वक्त्र 'ह कार' धूम्र भैरवी ई इत्येभि 'ह्री सिद्ध' फल' च
पञ्च वर्णात्मक ध्यानम्य यत्फल तन् ज्ञेय श्री चण्डीश, क्षतजाह्म धूम्र भैरव्य ल कृत्ता नाद
बिन्दु समायुक्त बीज पद्यालयात्मक ॥१०॥

श्री चण्डीश, शकार (शेष पूर्ववत्) समुक्त धूम्र भैरव्या रक्तस्य वलि भायुतं नाद
बिन्दु समायुक्त बीज म्याद्धूत भैरवी ॥११॥

इवी फल च वारुणी शान्ति स्तुष्टि पुष्टि विनश्यते इत्यष्ट गुणोत्पत्ति फल नव
निधि फलोत्पत्ति सूच्यते नराथा ह्री तु सूचित मेव पर तु वर्णान्न आदि जिनोयोरेफ स्त लगतः
स गोमुख राट् तूर्य स्वर स बिन्दु, सभवेच्चक्रेश्वरी सज इत्यभिधानार्थ पुनरुक्तम ने नैव क्रमेण
वर्णन्ति पादर्व जिनोयो रेफस्त लगतः 'स' धरणेन्द्र स्तुर्य स्वरः स बिन्दु सभवेत्पद्मावती
सप्तः—

इत्यभिधानमपि संगत कथं अ वा उवालामुखी काली चक्रा पद्मावती ति 'च' लक्ष्मी

सरस्वति दैव्यो 'जैनाः' शासन भाक्तिकाः शक्ति रूपा एक रूपा ध्यातव्या वर देवता यासां प्रतीति सिद्धयर्थं पुरु नैभ्यत्य सम्मतीः इति विद्यानुशासनोक्तः मल्लिषेणाचार्यः ॥

क्ली क्रोधीशो बल भेदी च धूर्त्त भैर व्यलं कुन नाद बिन्दु समायुक्तः कामराजः परः स्मरः । क्रोधीशः वकारा बलभेदी 'लकारः' ब्लू' व भय करो बलभिलदा युक्तो नाद युतो भवेत् विदारी भूषितो भूतः संज्ञया द्रावणो मन ।

द्रां द्रीं द्वयं काम युग रति काम द्वयं प्रदं उत्पति बीज कोशाच्च मोहने कर्मणि स्मृता । ४।

आ 'बीज' पाश बीज स्यात् क्रौं बीजं त्वं कुशाह्वयं क्षी बीज पृथ्वी बीजं त्रिण्यापि प्रीति कारणं ।

चण्डेन 'कविता' प्रोक्ता निधियो 'नव' कि न च, लिखिताश्चेति प्रश्नेचोत्तर शृणत भाक्तिकाः ।

हां ह्रीं क्षां क्षीं धूं क्षें हूं ह्रौं ह्रः इत्येता निधियो मता । वक्ष्याकर्षण उन्मादोच्चाटन स्थम्भनानि च तुष्टि पृष्टि शरीरस्य धातु वद्धनं कारिकाः, इत्युक्ते स्ताः कथ ने 'त्युर-माहा, काव्येऽस्मिन् नव कर्मणि नोक्तान्य स्मात् कृतानि च, मोहना कर्पणे शान्ति पृष्टि मुम्कान सन्ति चात. पृथक्, उक्तानि, इति संक्षेपतो बीज विषयं फल प्रथम काव्यस्य गत ॥

यन्त्र रचना

यन्त्र रचना इस प्रकार करे । वलय का र छ घेरे बना कर बीच कणिका मे, गरुडा रुड अष्ट भूजा वाली चक्रेश्वरी देवी की मूर्ति बना कर अष्ट दल वाला प्रथम वलय मे कमल बनावे । ओर कमल के प्रत्येक दल में श्री, बीज की स्थापना करे, आठोंही दल में आठ श्री बनावे । द्वितीय वलय में क्रमशः आं वा हां तां रां लां धां की स्थापना करे । तृतीय वलय में अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लू ए ऐ ओ औ अं अ, इन सोलह स्वरों की स्थापना करे । चौथा वलय मे क्रम से, असि आउसा हीं श्रीं इवीं, इन बीजाक्षरों को लिखे । पंचम वलय में ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं द्रूं (ह्रूं) आं क्रौं क्षीं इन नों नीधि रूप बीजाक्षरों को लिखे, फिर सप्तम वलय में धूल मन्त्र इस प्लोक का है वह लिखे ।

मूल मन्त्र :— ॐ ऐं श्रीं चक्रे चक्र भीमे ज्वल २ गरुड पृष्टि समा रुडे हा ह्रीं हूं ह्रौं ह्रः स्वाहा ।

इस मन्त्र को लिखे । इस स्तोत्र के प्रथम काव्य का यह नं० १ यन्त्र का स्वरूप बना ।

इस प्रकार के यन्त्र को तांबा, सोना, चादी, अथवा भोज पत्र के ऊपर खुदवा कर यन्त्र सामने रख कर, मूल मन्त्र का पूर्व दिशा में पद्मासन से प्रातः काल, वरद मुद्रा से साढ़े बारह हजार जप करे, यन्त्र पास में रखे तो सर्व शांति होती है, सर्व पुणों का लाभ होता है और नाना प्रकार की निधि का लाभ होता है । धन की वृद्धि होती है । भोज पत्र पर यन्त्र लिखना हो तो सुगन्धि द्रव्य से लिख कर पास रखे, ताबीज में धारण करे ।

मूल मन्त्र :—ॐ ऐ श्री चक्रे चक्र भीमे ज्वल २ गरुड पृष्ठि समारुडे ह्रा ह्रीं ह्रूं ह्रौ हः स्वाहा ।

इसी मूल मन्त्र का साढ़े बारह हजार जप करना है ।

अथः द्वितीय श्लोक

क्ली क्लीन्ने किल प्रकीले किलि-किलि त ले दुं दमिध्वाननादे ।

आ हु क्षु ह्रीं मु चक्रे क्रमसि जगदिदं चक्र विक्रान्त कीर्ति ॥

क्षा मा ऊं भासयति त्रिभुवन मखिल सप्त तेज प्रकाशे ।

क्षा क्षी क्षू विस्फुरन्ति प्रवल बल युते त्राहि मां देवि चक्रे । २ ।

टीका — हे चक्रे, देवि, त्व मा त्राहि रक्ष २ कथं भूते चक्रे क्ली क्लीन्ने क्लीमित्यस्य 'कोर्यः' नित्ये काम साधिनि पुनः कथं भूते क्लिन्ने काम रूपे मनोभिष्ट साधिनि पुनः कथं भूते किल प्रकीले मुखात् किल प्रकथके थ 'त' एव किलि-किलि त ले सज्ञा शब्दः किलि-लाति सज्ञा रूपः स जाता यस्मिन् सः किलकिल तो र वः शब्दः यस्याः पुनः कथं भूते दुं दुभि ध्वान नादे, दुं दुभि ध्वानवत् नादो यस्या सा त्व चक्र विक्रान्त कीर्तिः दश दिशा व्याप्त कीर्ति आं हुं क्षु ह्रीं मु चक्रे इदं जगत क्रमसि है सप्त तेजः प्रकाशे बल वीर्यं पराक्रमं द्युति मति पृष्ठि तुष्टि सप्त तेजासि तेषां प्रकाशे क्षा आ ऊं त्रिभिर्वर्जि स्वि भुवनं "भासयन्ति ई रूपा" सि क्षा क्षी क्षू प्रवल बल युते विस्फुरन्ति दशो 'त्व' म सीत्यर्थः —

अथ यन्त्रोद्धार

चक्र विक्रान्त कीर्ति रिति पदेन षट् कोण चक्रे कर्णिकायां समूति कीर्तिः । कोणेषु षट् सु आ हुं क्षु ह्रीं चक्रे इति षट् बीजाणि उपरी दित विलःने दित नित्ये किलि किलि इति क्षा

आं उं इति दक्षिणे उत्तरे मत्त तेजांसि लेख्यानि ग्रधः क्षा क्षी क्षूं प्रबल बलेति पदानि चेत्यु-
द्धारः ।

अथ मन्त्रोद्धारः

ॐ क्ली किलन्ते किल नित्ये नमः । १ उं आ हु क्षु ह्री नमः । २ ॐ क्षा आं ॐ नमः । ३
ॐ चक्रे क्षा क्षी क्षूं प्रबल बल स्वाहा ४

एतानि मन्त्राणि चत्वारि अस्मिन् काव्ये सन्ति ।

अथ विधि

पुष्टि कर्मणः सप्त दश नियमा ज्ञातव्याः फलं च तेजः प्रताप वृद्धि दिव्य वाचा लाभ
श्चेति ज्ञेयः ।

अथ विजोत्पत्ति

क्ली स्वरूप क्रोधीशं बल भी सस्थ धूम्र भैरव्य ल कृत 'विद्धि दु सयुत' बीज
द्रावण क्लेदन स्मृत इति ।

प्रथमस्य काम बीजस्य किल 'क्रोधीश' बल भी सस्थ रुद्र भैरव्य ल कृत विद्धिन्दु सयुत
बीजं चंड कर्म फलं स्मृतं, इकारो गरुजनी चण्डा तथा च रुद्र भैरवी त्युक्ते प्रेत्यस्य मकारस्तु
कपर्दी स्यात् 'र कार' क्ष तेजो भवेत् ।

सयोगेन भवे द्रव्य कारी प्रो बीज उत्तम किलि २ क्रोधीशो, बन भेदी, चण्डी, बीजेण
सयुतः फलेन काम रूपत्व मोहने वश्य कर्मणि, इत्युक्ते, आकारे नाम सो कालि नाद विन्दु समा-
श्रिते, पाश बीज फलं दुष्ट निग्रह प्रति पादित मित्युक्ते ह व्योमास्य काल वज्रादय नादिनी
विन्दु सयुत, ह्रीं फलं निधि प्रदान च 'क्ष' त्रैलोक्य ग्रसन बीज काल वक्त्रान्वित पर क्षु बीज
साद्धं विद्धि कं फलं च कर्षणं पर चेति 'ह्री' युक्त फलं त्रैलोक्य ग्रसन ध्येयं, पाश बीज
समन्वित तेजः प्रताप सिद्धयर्थ पाश, प्रणवः, सयुत सप्त तेजा 'सर' बीज सप्तकं वा थ वेदकं
तस्या पि सप्त क बोध्य शं अं व रं त क ग इति क्षा क्षी क्षूं आ काल रात्रिः ई धूम्र
भैरवी 'ऊ' विदारी च सयोगात् फलानि च 'तेजः' प्रतापादिव्य वाचा लाभश्चेति बोध्यं ।

मूल मन्त्र :- ॐ किल किलन्ते किल नित्ये नमः । १।

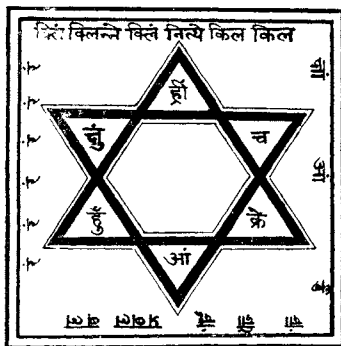
ॐ आं हुं क्षुं ह्री नमः । २।

ॐ क्षां क्षां ॐ नमः । ३ ।

ॐ चक्रे क्षां क्षीं क्षूं प्रबल वल स्वाहा ।४।

इस श्लोक में व यन्त्र में, ये चार प्रकार का मन्त्र पाया जाता है। इन मन्त्रों का जाप पृष्ठि कर्म के लिए जपना चाहिये। इसके लिये १७ प्रकार के नियम जानना चाहिए।

यंश्च नं० २



यन्त्र लेखन विधि

पहले पट् कोणा कार बनावे । बीच में चक्रेश्वरी देवी की मूर्ति का आकार बनावे, फिर पट्कोण की कर्णिका में अक्षरः नीचे वाली प्रथम कर्णिका में आ लिखे फिर दूसरी कर्णिका में 'हु' लिखे, तृतीय कर्णिका में 'क्षु' लिखे, चतुर्थ कर्णिका में 'ह्री' लिखे, पंचम कर्णिका में 'च' लिखे, छठी कर्णिका में 'क्रे' लिखे । पट् बीजो के ऊपर किल बिलन्ने किल नित्ये किलि किलि, लिखे, क्षा आ उं लिखे, दक्षिण में और उत्तर में सात र र र र र र कार तेज बीज को लिखे, नीचे क्षा क्षी क्षं प्रबल बल लिखे । ये यन्त्र रचना इस प्रकार हुई ।

इस मन्त्र को तांबा, सोना या चांदी पर खुदवा कर, पास रखने से, वाक् सिद्धि (वचन सिद्धि) होती है। तेज बढ़ता है। प्रज्ञा बढ़ता है।

मूल मन्त्र जो उपरोक्त चार प्रकार के हैं, उनका जप पुष्टि कर्म के लिए विधि पूर्वक करना चाहिये। जप करते समय गुरु से पूछ कर पूर्ण विधि विधान ज्ञात कर जप करे। प्रत्येक मन्त्र का सवा सवा लाख जप करने से, तेज व प्रज्ञा बढ़ेगा और दिव्य वचन का लाभ होगा।

अथ तृतीय काण्ड

मोहन कर्म

श्रूं झीं द्रूं प्रसिद्धे सुजन जन पदाना सदा कामधेनुः ।

गूं क्ष्मीं श्री कीर्ति बुद्धि प्रथयति वन्दे त्वं महा मन्त्र मूर्ते ।

त्रैलोक्यं क्षोभयति कुरु कुरु हरहं नीर नाद प्र घोषे ।

क्लीं क्लिं ह्रीं द्रावयन्ती द्रुत कनक निभे त्राहि मां देवि चक्रे ॥३॥

टोका :—हे चक्रे देवि त्व 'मां' त्राहि रश्न रश्नेति श्रूं झीं द्रूं प्रूं इति मन्त्रेण । 'प्रसिद्धे' हे चक्रे देवि त्व सुजन जन पदाना सुष्टु जना सुजना स्तेपाये जन पदा देशाः तेषा त्वं सदा सर्वं स्मिन् काले 'काम धेनु रसि' पुन कथ भूते, हे वरदे हे महा मन्त्र र मूर्ते त्वं गूं क्ष्मीं श्री इति त्रिभिर्मन्त्र बीजाक्षरैः श्री कीर्ति बुद्धि प्रथयति 'पुन' कथं भूते हे नीर नाद प्रघोषि जलद् नाद शब्द कुरु २ हर ह इति मन्त्रेण त्रैलोक्यं क्षोभयती हे द्रुत कन कनि भे द्रुत तप्त षोडश वर्णिक स्वर्ण कान्ते क्लीं क्लिं ह्रीं स्त्री द्राव यन्ति त्वसि चास्मिन् काव्ये चतुर्भिः पादैः काम धेनु त्वं प्रथम पदेन मनोभिप्सित कार्यं साधने द्वितीय पदेन श्री कीर्ति बुद्धि प्रथनत्वं तृतीय पदेन त्रैलोक्य क्षोभणत्वं तूर्य पदेन स्त्री द्रावण त्वं सूचित मित्यर्थः ।

अथ यन्त्रो द्वार

षट् कोण चक्रं स मूर्तिकं पूर्वात् कृत्वा पश्चादुपरि श्रूं झीं द्रूं प्रूं लिख्यते गूं क्ष्मीं श्री दक्षिणे उत्तरे हर ह कुरु २ अधः क्लीं क्लिं ह्रीं चक्रे इति यन्त्रो द्वारः ।

अथ- मन्त्रो द्वार

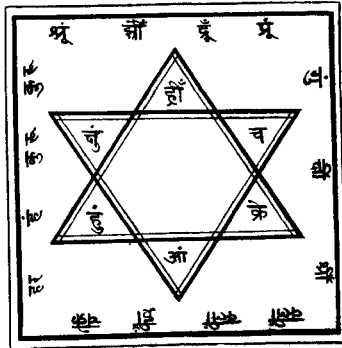
ॐ श्रूं झीं द्रूं प्रूं गूं क्ष्मीं श्रीं कुरु २ हर २ हं क्लीं क्लिं ह्रीं चक्रे स्वाहा ।

मोहन कर्मणः सर्वौ जातव्यः फलं श्री कीर्ति बुद्धि विस्तृति, शोभण, द्रावण, वशी करणानि च जातव्यम् ।

अथ बीजोत्पत्ति

श्रूं शस्चडीश रः क्षतजः ॐ विदारो 'मः' महाकालः चतुः संयोग फलं वशीकरणं भूं भूः बाल मुख रः क्षतजः ॐ डाकिनी मः महाकालः' चतुः संयोग फलं डाकिनी तिरस्कारः दः वलि रक्षतजः ॐ विदारांमः 'काल' इति चतुः संजः काम बीजात् द्रावणं फल पः 'कपर्दी' रः क्षतजः ॐ विदारी मः महाकाल इति चतुः संयोगात् ग श्वड ॐ विदारी मः महाकालः त्रि संयोगात् वर सिद्धि फल, क्षः त्रैलोक्य (ग्रामिन्) ग्रसन मः महाकालः ई बूझ भैरवी 'म' महा काल क्षमी शत्रु सहारः फल श्री लक्ष्मी बीज माधनं पूर्वं मुक्तं ह शून्य रः अग्नि बीजं हं व्योम वक्त्रं फल हर है त्रयाणा, लोक शून्य 'फन क्लो किन हों' पूर्वं मुक्त फल साधना । इति —

यंत्र न० ३



मन्त्र, यन्त्र रचना व फल

इसमें पहले षट्कोण रचना करे, फिर बीच में चक्रेश्वरी देवी की मूर्ति बनावे। षट्कोण की कर्णिकाओं में नीचे से क्रमशः आं, हुं, क्षूं, ह्रीं, व, के, लिखे, षट्कोण चक्र के ऊपर श्री, झी, द्रूं, प्रूं, दक्षिण में गूं धमी श्री लिखे, उत्तर में हं रं हं कुरु २ लिखे, नीचे क्ली किल ह्रीं चक्रे इति यन्त्रो द्वारा ।

मूल मन्त्र :—ॐ श्रीं भूमीं द्रूं प्रूं गूं धमी श्रीं कुरु २ हर २ ह क्लीं किल ह्रीं चक्रे स्वाहा ।

इस मन्त्र का साठे बारह हजार, यन्त्र ताबे के पत्रे पर बनाकर सामने रख कर, विधि सहित जाप करे, तो मोहन कर्म, विशेष होता है, श्री कीर्ति बुद्धि का विस्तार होता है, क्षोभण, द्रावण, वशीकरण भी होता है ।

मोहन, शोषण, विजय, उच्चाटनाथ

चतुर्थ काव्य

ॐ क्षूं द्रां ह्रीं सु वीजैः प्रवर गुण धरं मूर्ध्नि शोषणी त्वं । शैले-शले नटन्ती विजय जयकरी रौद्र मूर्ते त्रिनेत्रे ॥ वज्र क्रोधे सु भीमे 'रहसि' करतले भ्रामयन्ति सु चक्र । हं हं रौ हः कराले भगवति वर दे त्राहि मा देवि चक्रे ॥४॥

टीका :—हे चक्रे देवि त्व मा पाहि त्राहि रक्ष २ कथं भूते चक्रे ॐ क्षूं द्रां ह्रीं सु वीजैः मोहनी त्व मसि 'प्रवर' गुण धरं वीजै त्वं शोषणी कर्म शोषण्यसि शैले २ पर्वते 'नटन्ती' श्री श्लीं पदेन श्ले श्ले पदेन विजय जय करी है रौद्र मूर्ते हे त्रिनेत्रे हे वज्र क्रोधे हे सु भी मे भ्रा धी भ्रूं भ्रौ भ्रः सु भीमे 'त्व' कर तले हस्त तले चक्रं, भ्रामयन्ति 'रहसि' पठसि हं हं रौ हः कराले हे चक्रे भगवति वर दासि इति हे वरदे त्वं मां रक्षेत्यर्थः ।

अथ यन्त्रो द्वारा-

प्रथमा नु कषेण 'चक्रेश्वरी' मूर्ति रभ्यन्तरे लेख्या षट्कोण केषु पूर्व व द्वी जाति व्यवस्थाय तदुपरि ॐ क्षूं द्रां ह्रीं मोहय २ मोहनि श्लीं श्लीं श्लें श्लें विजये जय २ दक्षिणे उतरे च आं श्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः चक्रं भ्रामय २ अथ श्व हं हं रौ हः कराले वरदे रक्ष २ इति ।

पूर्वोक्त प्रकार से षट्कोणाकार यन्त्र रचना करे। षट्कोण के प्रथम कर्णिका से क्रमशः आ, हुं, क्षुं, ह्रीं, च, क्रे, लिखे, फिर यन्त्र के चारों तरफ मूल मन्त्र लिखे।

ॐ क्षुं द्रा ह्रीं मोहय २ मोहनी। श्ली श्ली श्ले श्लं विजये जय जय। हूं हूं रो हू। कराले वरदे रक्ष २। आ भी भ्रूं भी भ्रः चक्र भ्रामय २।

इन बीजाक्षरों को षट् कोण यन्त्र के चारों तरफ लिखे।

इस यन्त्र को चादी के ऊपर खुदवा कर, मन्त्र का साढ़े बारह हजार जप यन्त्र के सामने जप करे, प्रत्येक कार्य के लिये प्रत्येक मन्त्र का साढ़े बारह हजार जप करे तो क्रमशः मोहन, शोषण, विजय उच्चाटन, होता है। मन्त्र पहले इसी काव्य में लिखा है।

अथ पंचम काव्य वशीकरणार्थं

ॐ ह्रीं हुं हुं सुहर्षे ह ह ह हिम कुन्देन्दु स काश बीजे।
ह्रां ह्रीं ह्रूं क्षः सुवर्णः कुवलय नयनेद्विद्रुमा द्रावयन्ती॥
हं ह्रीं ह्रूं क्षः स्त्रिलोकी ममूत जलधरा वारुणः प्लावयन्ती।
भ्रां भ्रां ह्रूं सः सु बीजैः प्रबल बल भया त्राहि मा देवि चक्रे ॥१॥

टीका :—हे देवि चक्रे त्वं मां त्राहि 'रक्ष २' कस्मात् भयात्। कथं भूते ज्ञा ज्ञा ह्रूं ग प्रबल बलेति सु बीजैः भय—नाशके पुनः कथं भूते चक्रे हिम कुन्देन्दु मंकाश बीजं ध्यातं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रूं लक्षणैः सुहर्षं 'पुनः' कथं भूते, ह्रां ह्रीं ह्रूं क्षः सुवर्णं द्विद्रुं द्रूं द्रूं द्रूं सर्व जनान योषि तश्च आद्रावयन्ती मां हयन्ती 'पुनः' कथं भूते ह्रूं ह्रीं ह्रूं क्षः पदा कितैः अमृत जलधरा वारुणं त्रिलोकी प्लावयन्ती त्वं रक्षत्यर्थः।

अथ यन्त्रोद्धारः

पूर्ववत् स मूर्तिक षट् कोण चक्र मारभ्य स बीज कृता, उपरि ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रूं ह ह ह हेति विलिख्य दक्षिणे ह्रां ह्रीं ह्रूं क्ष द्रूं द्रूं चेति विलिख्य 'उतरे' च, हं ह्रीं ह्रूं क्षः त्रिभुवन बीजानि च अघश्च भ्रां भ्रां ह्रूं सः प्रबल बलेति चेति सलिल्य अमृत बीजेन वेष्टयित्वा जलधरा वारुणं प प्लावयन्ती ति ध्यातव्येत्यर्थः।

मन्त्रोद्धारः

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रूं ह ह ह ह्रूं ह्रां ह्रीं ह्रूं क्षः द्रावय २ मोहय २ स्वाहा।

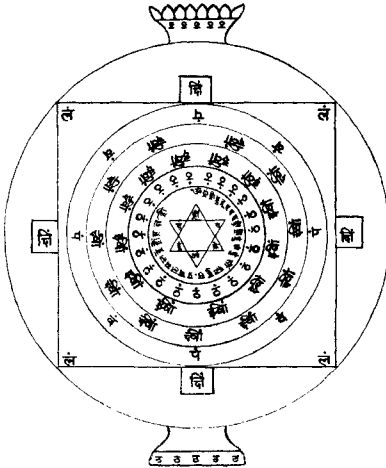
ॐ हं हां हीं ह्रं क्षं भ्रां भ्रां ह्रं सः प्रबल बल चक्रं स्वाहा ।

वशीकरण विषयोऽपिसर्वो विधि बोधव्या फल च द्रावण आकर्षण मोहन वशीकरणा-
निचेति संबोध्यं ।

अथ बीजोत्पत्ति

ॐ अ विद्युजिह्वा 'उ' काल वक्त्रा सयोगे द्वयोः उईति म महाकालः उं इति शत्रु
क्षय कारक स्वेनानदोःपादकाव पल ह्री क्षतजस्थ ध्याम, वक्त्र धूर्म भैरव्यलं कृत नाद बिन्दु

यन्त्र न० ५



समायुक्तं बीजं प्राथमिकं स्मृतं, पट् कर्म सिद्धि करण फल जयेयं । हुं काल वक्त्र युक्तफलं
च स्तम्भन ज्ञेय र कारं तदा कर्षण ह्रं मोहनात्मक विदारो युक्त व्योमास्य रुद्र डाकिन्यं ल कृत

नाद बिन्दु समायुक्तं हं ह बीजद्वय भवेत् । चतुः शून्यं हकारः स्यात्फलं क्रोधाग्निं वारुणं विषानां
स्तम्भं करणं विज्ञेयं विजकोशतः द्रुं द्रुं कामरतीदध्याते ह्रा ह्रीं ह्रूं क्षः उक्तफला ह ह्रीं हः
रुद्र डाकिनी भीमाक्षी चण्डिका संयोगात् त्रिलोकं वशीकरणात्मकाः भ्रा भ्रा ह्रूं सः भों पाल-
मुखः आ कानरात्रीः तत्फलं वलभय हरणं भों बालमुखः रं क्षतजः आ काल रात्रीः फलं रोगः
हरणं ह्रूं फलमारुर्ध्वं स धूम ध्वजः स विसर्गस्तत्फलं परदेशं गमनं फलं इति ।

इस यन्त्र को तब के पत्रे पर या चाँदी सोने के पत्रे पर खुदवा कर पूजन करे
पश्चात् ऊपर लिखित दोनों मन्त्रों का पृथक् २ जप करे, जिसका कार्य के लिये जपना है ।
वशीकरण विधि में भी सर्व प्रकार की विधि जानना चाहिये । इन दोनों मन्त्रों को अलग २
जप साढ़े बारह हजार करने से द्रावण, आकर्षण, मोहन, वशीकरण आदि होता है । जप विधि
पूर्वक करना चाहिए ।

शोभनार्थं षष्ठम काव्यम्

आं क्रो ह्रीं क्षुयुतांगे प्रलय दिन करास्तस्य कोटि प्रकाशे ।

अष्टौ चक्राणि धृत्वा विमलः निज भुजैः पद्मभक्तं फल च ॥

द्वाभ्यां 'चक्रं' करालं निश्चितं च लिल ताक्ष्यं रुद्रा प्रचण्डा ।

ह्रौं ह्रीं ह्रीं क्षोभ कारी र र र र रमणे त्राहि मा देवि चक्रे ॥६॥

हे चक्रे देवित्वं मा त्राहि 'रक्ष रक्ष' कथं भूते आं क्रो ह्रीं क्षु यतान्यं गानि यस्य आ
क्रो ह्रीं क्षु युतांगे आनाभ्युः परि 'क्रो' ललाटे ह्रीं 'ह्रौं' क्षु कर्ण द्वय पुन कथं भूते प्रलया चल
संबन्धस्ताच्चलस्य कोटि दिन कर प्रकाशे पुनः कथं भूते विमल निज भुजैरष्टभिः अष्टौ चक्राणि
धृत्वा पद्मकं नवम् भुजे दशम भुजे प्यक्तं फल द्वाभ्यां एकादश द्वादश भुजाभ्यां 'करालं' विक-
रालं निश्चिता तीक्ष्णा 'चला' चंचला शिखायस्य तत ईदृशं चक्रं धृत्वा प्रचण्डाऽसि पुनः कथं
भूता ताक्ष्यं रुद्रा गरुडा गरुडा पुनः कथं भूते चक्रे ह्रौं ह्रीं ह्रीं क्षोभ कारी र र र रमणे हे 'चक्रे'
देवित्वं मां रक्ष रक्ष रक्ष इत्यर्थः ।

अथ यन्त्रोद्धार

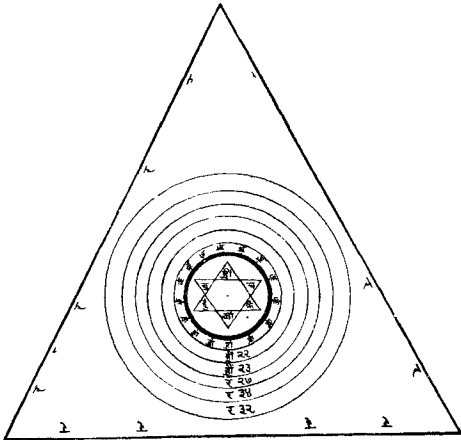
द्वादश भुजां चक्रेश्वरी लिखित्वा गरुडारूढां उक्त स्थानेषु वीजातिं संलेख्य ह्रौं ह्रीं
ह्रौं इति त्रिभिर्बीजैर्वेष्टयेत् पश्चात् 'रं रं रं रं' बीजं त्रय वेष्टितेऽग्निं पुटेस्थाप्य ध्यातव्येत्यु-
द्धारः ।

अथ मन्त्र :—ॐ श्रीं ह्रीं क्षुं ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा । इति मन्त्र ।

विधि :—क्षोभ कर्मण सर्वोत्तम फलं च त्रैलोक्य क्षोभतं नाम सजेयम् ।

अथ बीजोत्पत्ति :—आ आ काल रात्रि शत्रु संहार कारिका कः क्रोधीशः रः क्षतज औ 'संयोगात्' विद्रोपणं कनं ह्रीं मिः युक्त कनं क्षः त्रैलोक्य प्रसन्नात्मकः 'उ' 'उ' काल वस्त्रायः महाकाल त्रिनयोगी क्षुं कनं चार्पण कर जेय ह्रीं ह्रीं ह्रीं आ काल रात्री ई मज्जनी श्रीं डाकिनीं शेष पूर्ववत् फलं च क्षोभण र र र र चतुष्कस्य फलं चाग्नि बीजं चतुष्कं तु शत्रु क्रोध जलानतोच्चाटन फलं विजेयं ।

यन्त्र नं० ६



इस यन्त्र को इस प्रकार बनावे । प्रथम षट् कोणाकार बनावे । षट् कोण के प्रथम

इस यन्त्र को बांदी के ऊपर खुदवा कर पास में रखे । और मन्त्र का सत्रा लक्ष जप विधि विधान पूर्वक करे तो यश का लाभ, अभ्युदय की प्राप्ति होती है ।

ये तुष्टि कर्म के लिए है ।

वश्य, मोहनार्थं अष्टम काव्य

ॐ ह्रीं फट्कार मन्त्रे हृदय मुपगते रुंधि वश्याधिकारे
ह्रा ह्रीं क्लीं किल सु घोषे प्रलय धन घटा टोप शब्द प्रनादे ॥
वां फां क्रोध मूर्ते धगधगित शिखे ज्वालिनि ज्वाल माले ।
रोद्रे हुंकार रूपे प्रकटित दर्शने त्राहि मां देवि चक्रे ॥८॥

टीका :—हे चक्रदेवित्व मां त्राहि रक्ष रक्ष कथं भूते चक्रे ॐ ह्रीं फट् कार मन्त्रे हृदय मुपगत रुंधि वश्याधिकारे ॐ ह्रीं फट् इत्यनेन रुंधो त्यनेना कर्षण वशीकरणाधि कारे ह्रा ह्रीं क्लीं किल सुघोषे सु शब्दे पुनः कथं भूते प्रलय धन घटा टोप शब्द वन्नादे पुनः कथं भूते वा का क्रोधमय मूर्तं प्रतः कथं भूते धग धगताऽग्निशिखे हे ज्वालिनि हे ज्वाला माले हे रोद्रे हुंकार रूपे हूं वेष्टित मन्त्र 'रूप प्रकटित दर्शने' प्रकटित दंते हे चक्रे देवित्व मां त्राहि रक्षत्यर्थः ।

अथ मन्त्रोद्धारः :—अस्मिन् अभ्यन्तरे ॐ ह्रीं फट् इति लिखेत् तदुपरि मूर्ति प्रलिख्य तदुपरि ह्रां ह्रीं क्लीं किल लिख्यते दक्षिणे वा का ह्रीं लिखेत् उत्तरे च धग धग ज्वल ज्वल रुद्रे धगश्च ज्वालिनि दहर हु हुं इति विनिस्याऽग्नि मण्डलं कृत्वा द्यायेदित्युद्धारः ।

मूल मन्त्र :—ॐ ह्रीं फट् इति मन्त्र

वश्ये ॐ ह्रां ह्रीं क्लीं किल वा फां ह्रीं धग २ ज्वालिनि ज्वल २ रुद्रे हुं फट् चक्रे स्वाहा ।

विधि :—अत्र वश्य मोहनाकर्षणानां कर्मणा बोध्यः ।

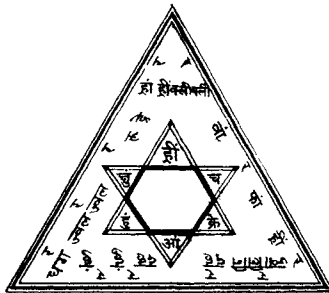
कल मपि तदात्मक मेव संबोध्यं इति ।

अथ बीजोत्पत्ति :—अ विद्युत् 'उ' कालः मः महाकालः ॐ सिद्धं फलं शत्रु क्षयः ह्रीं हः व्योम र मग्निः ईं धूम्र भंरवो संयोगात् ह्रीं वश्याधिकारे फट् इति वश्य बीजं ह्रां

आर्षं बीजं फल मोहनं । ही मूल बीज माया मायाफल क्ली काम बीज क्लि क्लिन्ना
बीज फल वश्य द्वावणोचेति व भयंकरः 'घ्रा' काल रात्रिमः पूर्वं सजा फलं
मारण फलं ह्रीं हुकारः शून्य रकारः वह्नं हंकारः धूम्रः भैरवी तत्सयोगात्
'तदेव' पूर्ववत् णग फलं इत्यस्य मध्येष इत्यस्य उग्र शूल सजाग इत्यस्य चंड
संज्ञा णग इत्यनेनापि दहूलं फलं बोध्यं हुं विद्वेषऽपि फट् वश्यात्म के
जय शत्रु क्षय करोऽपिचेति बोध्यं इत्येव बीज निष्पत्ति व्वेद्विध्या बीज
कोशतः परतः स्वेन किं प्रोच्यं तदेकान्वय युक्तिः ।

य स्तोत्रं रूपं पठति निज मनो भक्ति पूर्वं शृणोति त्रैलोक्यं तस्य वश्य भवति बुध
जने वाक्य पटुत्वं च दिध्य । सोभाग्य स्त्रिषु मध्ये खगपति गमन गौरवत्वत् प्रशादात् । डाकि-
न्यो गुह्य कावा विदधति न भयं चक्र देव्या स्तवेन ।

यन्त्र नं० ८



इस यन्त्र को प्रथम षट् कोण कार खीचे, षट् कोण में चक्रेश्वरी देवी की मूर्ति के
उदर पर ॐ ह्रीं फट् लिखे । षट्कोण की कर्णिका में क्रमशः अ ह क्षु ह्रीं, चक्रे लिखे । षट्कोण
के ऊपर ह्रा ह्रीं क्ली क्लि, लिखे दक्षिण में वा पां ह्रीं लिखे, उत्तर में धग वल २ रुद्रे लिखे,

और नीचे ज्वालिनि दह दह हु हु लिखे, पश्चात् अग्नि मण्डल बनावे यानि ऊपर त्री कोणाकार रेखा खींच कर अन्दर तीनों तरफ र, कार लिखे। करीब तीनों तरफ मिला कर बारह, र, लिखना चाहिए।

इस यन्त्र को सोना, चांदी, ब तांबे के पत्रे पर खुदवा कर शुद्धि करवा कर, मन्त्र का सवा लक्ष जप करके यन्त्र पास रखे तो सर्व जन वश्य होय और सर्व कार्य सिद्ध होता है। बस बड़ा मन्त्र भी है। सो बड़ा मन्त्र का साडे बारह हजार जप करना चाहिए। उससे भी वशीकरण होता है। ये दोनों ही मन्त्र अन्तिम श्लोक के मूल मूल हैं।

इस स्तोत्र रूपी काव्य को जो कोई पढ़ता है, अपने मन में, भक्ति पूर्वक मुनता है उस पुरुष के तीनों लोक वशी हो जाते हैं। बुद्धिमान पुरुषों के सामने देवों के समान वाक् पटुता होती है। सौभाग्य की प्राप्ति होती है। स्त्रियों में विद्या घरों के समान गौरव को प्राप्त होता है। चक्रेश्वरी देवी के स्तवन से शाकिनी डाकिनी आदि का भी भय नहीं होता है।



विभिन्न प्रकार के रोग एवं कष्ट निवारण हेतु यन्त्र

यन्त्र नं० १

२६	३६	२	७
६	३	३३	३२
३५	३०	८	१
४	५	३१	३४

इस यन्त्र को भोज पत्र पर अष्ट गंध से लिख कर पास में रखने से दुष्ट मनुष्य का मुख स्तंभन होता है ॥ १ ॥

यन्त्र नं० २

४२	४६	२	७
६	३	४६	४५
४८	४३	८	१
४	५	४४	४७

इस यन्त्र को अष्ट गंध से भोज पत्र पर लिख कर पास में रखने से स्त्री का गर्भ अधुरा नहीं गिरे ॥ २ ॥

यन्त्र नं० ३

४१	४६	२	७	४०	१७
४२	६७	६७	३७	७६	४२
०८	३७	६७	३८	देवदत्त	४ २२
४६	७३	७३	४६	४	५

इस यन्त्र को रविवार के दिन अष्ट गंध से भोज पत्र पर लिख कर ताबीज में डाल कर गले में पहने तो मृत वत्सा गर्भर है ॥ ३ ॥

यन्त्र नं० ४

१०	१८	१	१४	२२
११	२४	७	२०	३
१७	५	१३	२१	६
२३	६	१६	२	१५
४	१२	२५	८	१६

इस यन्त्र को लिख कर जो, सुपारी, घृत, भजवाइन, इन चिजों सहित कुलड़ी (छोटा मीट्टी का घड़ा) के अन्दर रख कर गद्दी के नीचे गाढ़े और ऊपर बैठकर व्यापार करें तो व्यापार अधिक चलता है ॥ ४ ॥

यन्त्र नं० ५

१०	१०	१०	१०
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
६	६	१५	४

इस यन्त्र को रविवार के दिन रोटी बनाकर, उस रोटी पर यन्त्र लिखे, धान में उस रोटी को रक्को तो अनाज कभी भी नहीं सड़ता है ॥ ४ ॥

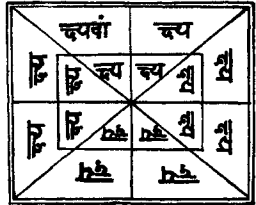
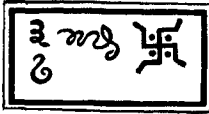
यन्त्र नं० ६

६	१३	२	७
६	३	१०	६
१२	७	८	१
४	५	८	११

इस यन्त्र को कागज पर लिख कर स्त्री के गले में बांधे तो रक्त स्त्राव रुक जाता है ॥ ६ ॥

यन्त्र नं० ७

यन्त्र नं० ८



इस यन्त्र को लिख कर लोहे की कील से ठोके तो दाढ़ दुखती अच्छी हो जाती है ॥ ७ ॥

इस यन्त्र को सूत कातने वाले रोहंटीये में (बरखा) बाध कर उल्टा १०८ बार घुमावे परदेश गया शीघ्र आवे ॥ ८ ॥

यन्त्र नं० ९

इ	क्ष	आ	का	ह
कु		फ	स्त्री	म
			स्त	
४४	क्के	४५	४	म
आंका	सि	अ व	ब	श्री
		क	इ	

इस यन्त्र को बसुले पर (लकड़ी काटने वाले बसुले) लिख कर यन्त्र के दोनों बाजू जिनमें भगडा करवाना हो उनका नाम लिखे फिर उस बसुला को आग में तपावे, तो दोनों की जुदाई होती है। याने मन मुटाव हो जाता है। अथवा बंध्या स्त्री को पुत्र पैदा होता है ॥ ९ ॥

यन्त्र नं० १०

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
८ ७	एए	ट ३	टा २
६ ६	पू ५	उ	३२

इस यन्त्र व सोला उपरि लिखी अग्नि मध्ये धमोजे पढ़ै उपरि लि राध करा वो बंध्या छुट्इ ॥ १० ॥

यन्त्र नं० ११

७	४	७	४
६	६	५१	५१
७७	७	५	५१
६२	५१	७	२१

यन्त्र नं० १२ ॥



इस यन्त्र को वसोला पर लिखि कर अग्नि मध्ये धमोजे स्त्री बंध्या छुट्इ । याने पुत्र होगा ॥ ११ ॥

इस यन्त्र को लिख गले में बाधे तो मृगी रोग जाय ॥ १२ ॥

यन्त्र नं० १३

२७	२०	२५
२२	२४	२६
२३	२८	२१

इस यन्त्र २० से लिखना शुरू करे ।
क्रम २ से सख्या बढ़ाते हुये लिखो तो
डाकिनी शाकिनी दोष दूर होता है ॥ १३ ॥

यन्त्र नं० १४

७५	७५	११	११	११	११	११	११
१५	३५	११	११	११	११	११	११
११	११	११	११	११	११	११	११
११	११	११	११	११	११	११	११
११	११	११	११	११	११	११	११
११	११	११	११	११	११	११	११
११	११	११	११	११	११	११	११
११	११	११	११	११	११	११	११

२९ यन्त्र को लिख कर धान के अंदर डाल कर रखे, तो धान सुलता (सड़ता) नहीं है ॥ १४ ॥

यन्त्र नं० १५

२२	० ३	६	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१६	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

इस यन्त्र को अष्ट गंध से भोज पत्र पर लिख कर गने में बाधने से डाकिनी शाकिनी दोष दूर होता है, और दृष्टिदोष निकल जाता है ॥ १५ ॥

यन्त्र नं० १६

१०	१७	२	७	ल
६	३	१४	१४	लं
१६	११	८	१	ल
४	५	१२	१५	लं

इस यन्त्र को केशर से बाली में लिखकर धोकर पिलाने से कष्टि स्त्री, काट से छूट जाती है, याने प्रसूती अच्छी तरह हो जाती है ॥ १६ ॥

यन्त्र नं० १७

६	१३	२	७
६	३	१०	६
१२	७	८	१
४	५	८	११

इस यन्त्र को लिख कर ताबिज में डालकर गुगुल का धूप लगाकर, माथे पर धारण करने में, मार्ग में किसी प्रकार का भय नहीं होता है ॥ १७ ॥

यन्त्र नं० १८

४२	४६	२	७
२१	३	४६	४४
४८	४३	८	१
४	५	४१	४७

इस यन्त्र को लिख कर पशुओं के गले में बांधने से पशुओं को किसी प्रकार का रोग नहीं होता है ॥ १८ ॥

यन्त्र नं० १९

१२	२४	२	७
६	३	२१	२०
२३	१८	८	१
४	५	१६	३३

इस यन्त्र को लिख कर गले में बांधने से दृष्टि दोष, शाकिनी, भूतः, प्रेतः, डाकिनीः सिहारी सर्व दोष मिटे ॥ १९ ॥

यन्त्र नं० २०

२८	७	४	३३
३५	२	५	३०
६	३१	३४	१
३	३२	२६	८

इस यन्त्र को लिख कर माथे पर रखो तो भगडे पंर. विजय हो और नामर्द मर्द होई ॥ २० ॥

यन्त्र नं० २१

ॐ ह्रीं क्लीं	ॐ ह्रीं क्लीं	ॐ ह्रीं क्लीं	ॐ ह्रीं क्लीं	ॐ ह्रीं क्लीं
ॐ ह्रीं क्लीं	ॐ ह्रीं क्लीं	ॐ ह्रीं क्लीं	ॐ ह्रीं क्लीं	ॐ ह्रीं क्लीं
देवदत्त	देवदत्त	देवदत्त	देवदत्त	देवदत्त
ॐ ह्रीं क्लीं	ॐ ह्रीं क्लीं	ॐ ह्रीं क्लीं	ॐ ह्रीं क्लीं	ॐ ह्रीं क्लीं
ॐ ह्रीं क्लीं	ॐ ह्रीं क्लीं	ॐ ह्रीं क्लीं	ॐ ह्रीं क्लीं	ॐ ह्रीं क्लीं

इस यन्त्र को अष्टगंध से भोज पत्र पर लिखकर पास रखे तो डाकिन्यादि सर्व रोग जाता है ॥ २१ ॥

यन्त्र नं० २२

क्ली

क्ली

क्ली ८	क्ली १	क्ली ६
क्ली ३	क्ली ५	क्ली ७
क्ली ४	क्ली ९	क्ली २

क्ली

क्ली

ह्री	यन्त्र नं० २३	ह्री
ह्री ८	ह्री १	ह्री ६
ह्री ३	ह्री ५	ह्री ७
ह्री ४	ह्री ९	ह्री २

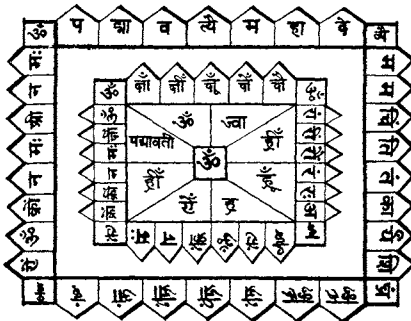
श्री	यन्त्र नं० २४	श्री
श्री ८	श्री १	श्री ६
श्री ३	श्री ५	श्री ७
श्री ४	श्री ९	श्री २

ह्री सकट निवारण ह्री

श्री रोजगार कर श्री

इत तीनो यन्त्रों में से जिसका जो काम हो वह यन्त्र भोज पत्र पर अष्ट गंध से लिख कर हाथ या भुजा में बांधो उसका वह कार्य सिद्धि होती है ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥

यन्त्र नं० २५



इदं यन्त्र श्री चिन्तामणि सर्वं कार्य-कर्म करं । इदं यन्त्रं सुरभि कर्पूर कस्तूरी, केशर, गोरौचनादि लिख्यते । सुवर्ण रूप मृदंगेन भिवेष्टितं कृत्वा मसनके अथवा बाहु धारयते । सदा सर्वं जन प्रथो भवति । सर्वेपि वशी स्यात् । यस्य कस्यापि कारमणन प्रभवन्ति । नागवली पत्रेण चन्दनेन यन्त्रं लिखित्वा वन्ध्या स्त्री दीपते ऋतु वेलाया प्रथो प्रसूति गर्भं धारयति । नान्यथा पश्चात् गौ दुग्ध चावल दीयते, दृष्ट प्रत्यय आत्म पार्श्वे स्थाप्यते, सकल जन मोहोत्था घतः । ॥ इति श्री चिन्तामणि यन्त्र प्रभाव सत्यं ॥ यस्य कस्याऽपि न दातव्य ॥ २५ ॥

पंदरिया यन्त्र विधि

इस १५ वा यन्त्र को शुभ तिथि, शुभ वार देख कर पुरुष ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मम देहि वाञ्छितं स्वाहा ।

यन्त्र नं० २६

६	७	२
१	५	९
८	३	४

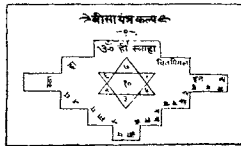
ब्राह्मण के लिये भोजपत्र पर, वैश्य के लिए ताड़पत्र पर, अथवा कागज पर लाल चन्दन, कस्तूरी आदि से लिखना । वश करने के लिए लाल चन्दन से लिखना, दुकान के लिए कस्तूरी से, स्तम्भन के लिए हल्दी से, देव दर्शन के लिए बेशर से, मारण के लिए धतूरे से, उच्चाटन के लिए श्मसान के कोयले से, विद्रोषण के लिए सफेद चन्दन से, शांति के लिए दिव्य रस से कलम मुसल स्याही से लिख, सब काम ऊपर एक अंगुल प्रमाण ५ अंगुल प्रमाण, दो अंगुल प्रमाण, आठ, तीन, दस, चार तथा १५ अंगुल प्रमाण कलम होनी चाहिये । सोना की १, चांदी की २, साँभर पक्षी के पंख की ३, कीवा के पंख की ४, लौह की ५-६ ।

विधि .—लाल आसन, लाल वस्त्र, लाल पुष्प, लाल चन्दन, ब्रह्मचर्य से रहना, जमीन पर सोना, लोभ छोड़ना । मोक्ष के लिए १० हजार जप करना, नष्ट राज्य की प्राप्ति के लिये २० हजार जप करना, जीतने के लिए ३० हजार जप करना, पाप दूर करने के लिये तीन सौ चालीस हजार या पचास हजार से वचन सिद्धि, ६० हजार से जल में प्रवेश, ७० हजार से सर्व वश हाप, सवा लक्ष (सवा लाख) से मनुष्य शिव सुख के समान हो ।

अंक भरने की विधि . लाभ तथा सुख के लिए १ अङ्क से भरना, जीतने के अर्थ भरे तो २ से भरना, क्षय करना हो तो ३ अंक से भरना, वश करने के लिये ४ अंक से भरना । परदेश से बुलाना हो तो ५ के अंक से भरना, उच्चाटन करना हो तो ६ के अंक से भरना, मोहन करना हो तो ७ के अंक से भरना, सर्व कार्य सिद्धि के लिये ८ से और संतान तथा गर्भ स्तम्भन, रोग दूर करना हो तो ९ के अंक से भरना ॥ २६ ॥

बीसा यन्त्र कल्प

यन्त्र नं० २७



बीसा यन्त्र :—बीसा यन्त्र कल्प जिसके साथ विधान, यन्त्र और मन्त्र का मिलना भाग्योदय से होता है । यन्त्र के साथ मन्त्र होने से आराधना करने वाले को जल्दी सिद्धि होती है । पहले यन्त्र बना देते हैं । यन्त्र को ठीक प्रकार से समझ लेना चाहिये । ऊपर बताये हुये यन्त्र का आलेखन अष्ट गन्ध से करना चाहिये । और जब सब कोठे तैयार हो जायें । तब बीच में जो यन्त्र हो, खुनिया बताया है । उनमें प्रथम बायीं तरफ के कोठे में दो का अंक लिखना, फिर तीन का, चार का, छे, सात,

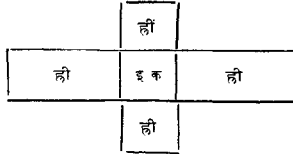
आठ और दस का अङ्क लिख, यन्त्र लेखन को पूरा करने के बाद बाजू में मन्त्र लिखना चाहिये।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं चित् पिगल दह २ जापन, हुन २, पच २ सर्व सापय स्वाहाः ।

विधि :—इस मन्त्र को प्रथम ऊपर कोठे में से प्रारम्भ कर बताये मुताबिक लिखे, जैसे—
 ॐ ह्रीं लिखा, बाद में दूसरे कोठे में चित्पिगल, तीसरे के नीचे कोठे में दह, चौथे के बायीं तरफ के कोठे में जापन लिखें, और नीचे दाहिनी ओर के कोठे में हुन २ लिखे, नीचे बायीं ओर के कोठे में, के कोने में पच २ लिखे, सर्व भी लिखे, ऊपर के बायीं ओर के कोठे में सापय लिखना, और ऊपर के दाहिनी ओर के कोने में स्वाहा लिखे। इस यन्त्र को ताम्रपत्र पर खूदवाना चाहिये। यन्त्र को सिद्ध करते समय किसी एकान्त जगह में निर्जन्तुक स्थान को देखे, जो पीपल पेड़ के नीचे हो, वहाँ अक्वण्ड दीपक जलाकर यन्त्र सिद्ध करें। तुम्हारे यन्त्र सिद्ध करने में किसी प्रकार की बाधा नहीं आवे, इसलिये दो नोकर साथ में ले जाना चाहिये। इस यन्त्र को पीपल के पत्ते पर १०८ बार लिखना चाहिये, लिख कर उन पत्तों में पीपल की लकड़ी से घी लगावे, फिर रख देवे, मन्त्र का जप प्रारम्भ करना, मन्त्र साढ़े बारह हजार करना, फिर जप किया हुआ मन्त्र का दशास होम करना, होम करते समय, पीपल की लकड़ी के साथ, जो पीपल के पत्ते पर यन्त्र लिखे थे, उन पत्तों को भी एक २ मन्त्र के साथ आहुती देते जाना, पीपल की लकड़ी के साथ, कपूर, दशांग, धूप, भी लेना आवश्यक है। इस तरह से ४० दिन तक १०८-१०८ बार क्रिया करना, खाना में केवल चालीस दिन तक दूध या दूध की वस्तु ही बनी हुई, गरम पानी ठण्डा कर पीये, भूमि शयन, ब्रह्मचर्य पाले, उनके वस्त्र पर शयन करे, पिछली रात्रि में जप करे, वैसे मन्त्र जप त्रिकाल कर सकते हैं। संध्या के समय बराबर साधना और देव की, फल, नैवेद्य से नित्य ही पूजा करे, पुष्प गुलाब के या मालती के चढ़ाना, इस तरह करते समय रात्रि में जब स्वप्न आवे उसका ध्यान रखना। जब सिद्धि प्राप्त हो तब यन्त्र सामने रख कर, मन्त्र की एक माला फेर कर सो जाने से स्वप्न में शुभाशुभ मालूम होगा। व्यापार के अर्थ अक भी स्वप्न में मालूम होगा। कुछ यन्त्र भोजपत्र पर या कागज पर सिद्ध करने समय सामने रखना चाहिये। भोजपत्र पर लिखे हुये में से १ यन्त्र अपने पास रख कर व्यापार करने से बहुत लाभ होगा। बाकी यन्त्र

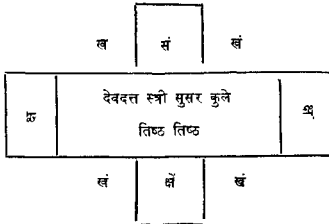
दूसरों को भी दे सकते हैं । उपकारार्थ । धर्म, नीति, न्याय, श्रद्धा को नहीं छोड़े, धर्म से विजय पा सकते हैं ॥ २७ ॥

यन्त्र नं० २८



इस यन्त्र को लिखकर शत्रु के सोने की जगह पर गाढ़ देवे, तो शत्रु का उच्चाटन हो जाता है ॥ २८ ॥

यन्त्र नं० २९



इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्यों से लिख, ताबीज में डाल कर गले में बांधे, तो स्त्री सासरे में रहती है ॥ २९ ॥

यन्त्र नं० ३०

हं:	खं:	फं:	ग्रं:
नूं:	झं	त्रं	क्लीं
ही	ही	थी	क्लीं
जुं	त्रं	घ्रं:	स्त्रं

इस यन्त्र को हिलुल से लिखकर साथ में नाम भी लिखकर, कमर में बांधने से कूखि बांधे: ॥ ३० ॥

यन्त्र नं० ३१

ही	ही	ही	हीं	ही	ही	ही	क्लीं	क्लीं

पाक के अन्दर अधोमुख रखिए, यन्त्र को कोरी ठीकरी ऊपर रविवार को लिखकर रखे तो शत्रु का मुख स्तम्भन होता है ॥ ३१ ॥

यन्त्र नं० ३२

२६५	५२	५५	५५
१०२	५५	५०२	५२
१५५	५५	५२	५५
१५०७	०२५२	५५	७:७

इस यन्त्र को जिसको बुलाना हो, उसके पहनने के कपड़े पर लिखकर कोडे लगावे, उस लिखे हुये यन्त्र पर, तो परदेश गया हुआ वापिस आ जावे ॥ ३२ ॥

यन्त्र न० ३३

२	७	६
६	५	१
४	३	८

इस यन्त्र को रविवार के दिन लिखकर, उस यन्त्र पर दोनो का नाम लिखे, फिर उस यन्त्र को आग में जलावे, तो दोनो जुदाई हो यानि दोनों अलग २ हो जावे ॥ ३३ ॥

यन्त्र न० ३४

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

इस यन्त्र को लिखकर, धोकर पिलावे, तो स्त्री पुरुष में आपस का मनमुटाव दूर हो जाता है और भेल, प्रेम, हो जाता है ॥ ३४ ॥

यन्त्र नं० ३५

२५	८०	ह	१५	५०
२०	४५	र	३०	७४
स	र	ह्रीं ना म	सुं	स
७०	३५	हं	६०	५
५०	२३ ७८	हः	६५	४०

इस यन्त्र की मुरभि द्रव्यों से लिखकर पास में रखने से शत्रु वश में होता है। और डाकिनी शाकिनी आदि दोष दूर होते हैं। और चोर भयादिक नहीं होते हैं ॥३५॥

यन्त्र नं० ३६

२२	३	६	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१६	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

इस यन्त्र को भोज पत्र पर अष्ट गन्ध से लिखकर सोने के मादलिया में डालकर, अथवा चाँदी के मादलिया में डालकर पास रखे, फिर ११ सेर घाटे की रोटी बना कर कुत्तों को खिलावे, देव गुरु के पाव पूजे तो राजा वश होय, ॥३६॥

यन्त्र नं० ३७

७१	४०	२५	४६	६	१२
८०	७७	८८	६६	६०	१४
१५	१८	२०	२७	२६	४८
४६	५५	५७	३४	४५	४८
क	स्वा	श्री	ऐ	न	ह्री
२१	३१	६०	६०	१५	५७
२४	४४	६७	६२	६६	६६

ॐ ह्री श्री क्ली ऐं द्राय आसन वज्र डं डं सही करि । सिद्धं सुखं पुद् स्वाहा नमः ।
इदं यन्त्र मन्त्र भोज पत्रे रवि दिन में अष्ट गन्ध से लिखकर पास रखे तो शत्रु स्वयं का दास होता है ॥३७॥

यन्त्र नं. ३८

इस यन्त्र को लिखकर ३ दिन तक गर्म पानी में डाले तो शीत ज्वर दूर होता है। और शीतल जल में डाले तो ताप ज्वर दूर हो। हाथ में बांधे तो बेला ज्वर दूर होता है ॥३८॥



यन्त्र नं० ३९

		२	६	२१		
		२१	३१	३		
		ज	२५	व		
३	स्व	स्व आ स्व	२१	६	डा	स्व ग्नि अ घ
३	ज	इ ग्री मी	श्री	डा	व्य	रो स्व ग्रा रः
३	स्वा	दी ई: २०	ह्री	स्वा	ई	स्व गा गि
		म ३०	२३१	अ घ		
		श्री	३३	१८		
		३	३	३		

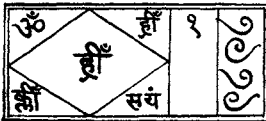
इस यन्त्र को अपने पहनने के कपड़े पर, नाम सहित लिख कर, कपड़ा जलावे, फिर उसकी राख (भस्म) को खिलावे तो वश्य होय ॥३६॥

यन्त्र नं० ४०

तं	य	द	लं
लं	तं	प	दं
दं	प	त	दं
तं	पं	दं	लं

इस यन्त्र को बाँस की कलम से जमीन पर लिखे, तो मित्र समा-गम होता है ॥४०॥

यन्त्र नं० ४१



इस यन्त्र को गेहूँ की रोटी पर लिखकर काली कुत्ती को खिलावे, तो सासु वश में होती है। काले कुत्ते को खिलाने से ससुर वश में होता है ॥४१॥

यन्त्र नं० ४२

२	६	२१
२१	३१	३
ज	२५	छ
स	स्व	आ
ज	स्व	स्व

इस यन्त्र को चन्दन, सिन्दुर, से भोजपत्र पर लिखकर पास में रखे तो बाण, (तीर) नहीं लगता है। केशर किस्तुरी से लिखे, तो सर्व वश होते हैं ॥४२॥

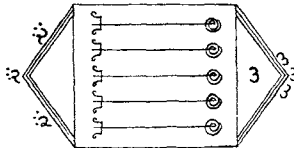
यन्त्र नं० ४३

१	१५१	३५	२३
३१॥	२७॥	३॥५	॥३६
१॥	६॥	२४॥	१४॥
२४	३४॥	५॥	४॥

रा	३८	ॐ
॥	ॐ	ह
छ	छ	श्री

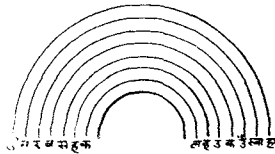
इस यन्त्र को बच्चों के गले में बांधने से दांत सुख पूर्वक आते हैं ॥४३॥

यन्त्र नं० ४४



इस यन्त्र को रविवार के दिन लिखकर पास रखे, तो भूत प्रेत हाहा कार करके भाग जाये । (अग्नि सुं जाय मूछ छै) ॥४४॥

यन्त्र नं० ४५

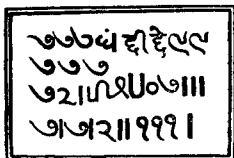


इस यन्त्र को रविवार के दिन लिखकर कमर में बांधने से गर्भ का स्थंभन होता है
यन्त्र नं० ४६ ॥४५॥



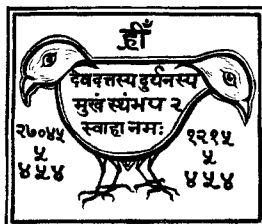
इस यन्त्र को अष्ट गन्ध से भोज पत्र पर लिख कर सिर पर धारण करे, तो राजा वश में होता है ॥४६॥

यन्त्र नं० ४७



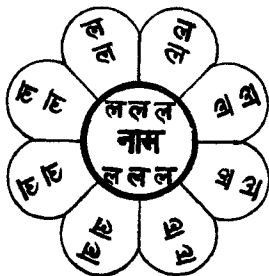
इस यन्त्र को रविवार के दिन घी से कागज पर लिखे, फिर दीपक में यन्त्र को जलावे तो नर वश्य में होता है। तस्य (उसके) कपड़े पर तेर, मीथी, मोठा (नमक) से लिख कर प्रतिदिन १ जलावे, तो परस्पर का स्नेह नाश होता है। अगर पूरे हों सात दिन जलावे तो शत्रु का शय होता है। किन्तु ऐसा करे नहीं ॥४७॥

यन्त्र नं० ४८



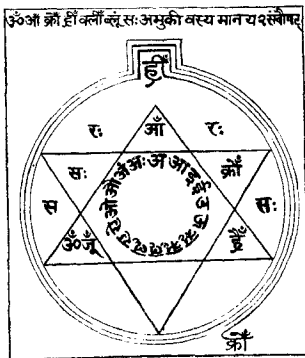
इस यन्त्र को अर्क (आकड़ा) के पत्र पर लिख, ऊपर नीचे पत्थर से दबावे याने एक पत्थर के नीचे रखे फिर ऊपर यन्त्र रखे, फिर यन्त्र के ऊपर पत्थर रखे देवदत्त की जगह शत्रु का नाम लिखे शत्रु का नाश हो किन्तु ऐसा करे नहीं महान हिंसा का दोष लगेगा ॥४८॥

यन्त्र न० ४६



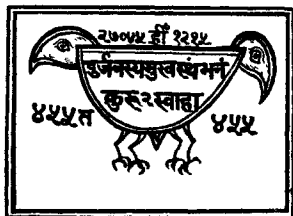
इस यन्त्र को हल्दी में लिख, शिला संपुट कर अधोमुख कर के रखे, नौ शत्रु का मुख स्थम्भन होता है ॥४६॥

यन्त्र न० ५०



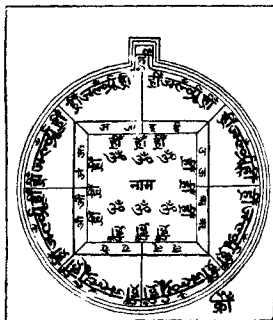
इस यन्त्र को नागरवेल के पत्ते पर आक के दूध में अखरोट ३ पीस कर साथ में राइ भी मिलावे, और यन्त्र इससे लिख कर दीप शिखा में दिन तीन तक जलावे तो रम्भा भी वश से हो जाय । तो अन्य स्त्री की तो बात ही क्या ? दृष्ट प्रत्यक्ष ॥५०॥

यन्त्र न० ५१



एस यन्त्र को आक के पत्ते पर अष्ट गन्ध से लिखकर ऊपर शीला, नीचे शीला, बीच में यन्त्र रखना, तो शत्रु वश्य होता है ॥५१॥

यन्त्र न० ५२



इस यन्त्र को थाली के अन्दर सुगन्धित द्रव्यों से लिख कर ३ दिन त्रिकाल पूजा करके, चौथे दिन दूध से थाली धोकर पीये तो स्त्री के निश्चय से गर्भ रहे ॥५२॥

यन्त्र नं० ५३



इस यन्त्र का मन्त्र :—ॐ नमो भगवते श्री पार्ष्वनाथाय ह्रीं धरणेन्द्र पद्मावति सहिताय, भट्टे मट्टे क्षुद्रविषदे क्षिप्रं क्षुद्रान् स्थंभय २ जूंभय २ स्वाहा ।

विधि — इस यन्त्र को शुभ दिन में पवित्र होकर सुगन्धित द्रव्यों से लिखे, फिर सफेद वस्त्र पहन कर पूर्व दिशा व उत्तर दिशा में बैठकर पद्मासन से बैठकर १२००० हजार सफेद पुष्पों से जपकरे, यन्त्र पार्ष्व नाथ पद्मावती के सामने स्थापित करके जप करे । रविवार से लेकर रविवार तक, १३०० जप नित्य करे, तब मन्त्र सिद्ध होता है । जब कार्य पड़े तब इस प्रकार करे, प्रथम शालिक, पौष्टिक, म गलीक, कार्य में सफेद माला, सफेद धोती, सफेद फूल सुगन्धित से, दिन में १०८ बार जपे तो कार्य सिद्ध होता है । शुक्ल ध्यान करे ।

लक्ष्मी प्राप्त पर जरद धोती, जरद माला, जरद आसन, जरद फूल, पद्यासन से बैठ कर उत्तर दिशा में मुंह करके श्री पार्श्वनाथ प्रभु के सामने चपा के पुष्प १०८ से जप करे, रविवार से लेकर आठ दिन पर्यंत नित्य ही केशर, चन्दन, अगर कपूर में यन्त्र पूजा करे, लक्ष्मी लाभ होगा, पीत वर्ण का ध्यान करे।

वश्य करने के लिये लालासन, लाल माला, लाल कपडा, पूर्व दिशा में मुख या उत्तर दिशा में मुख पद्यासन से पार्श्व प्रभु के सामने रविवार से लेकर आठ दिन पर्यंत, कनेर के १०८ फूलों से नित्य करे, सर्ववश्य होगा, फूल नित्य ही ताजा चूने हुये होने चाहिये। लाल ध्यान करे।

भूत प्रेत, शाकिनी, डाकिनी का उपद्रव हटाने के लिए, काला आसन, काला कपडा, काली माला, पंच वर्ण के पुष्पो से लोह रक्षा करते हुए, पटकोण यन्त्र, सामने रख कर, पूर्व दिशा में बैठकर १०८ बार २ जप आठ दिन पर्यंत नित्य जप करे। भूत्रादि दोष नष्ट होते हैं ॥५३॥

परविद्या छेदन

कलि कुंड यन्त्र

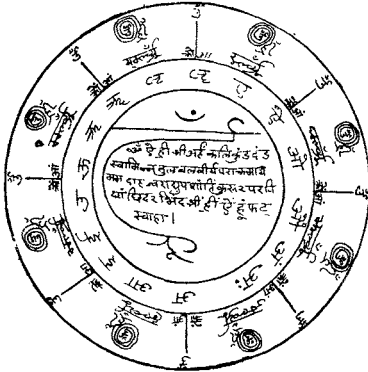
यन्त्र न० ५४



इस यन्त्र को भोज पत्र पर केशर से लिख कर गले या हाथ में बांधे, तो परकृत विद्या, मूठ, कामण, से रक्षा होती है। यन्त्र में लिखे हुये मन्त्र का साठे बारह हजार जप करे, और तदज्ञास होम करे ॥५४॥

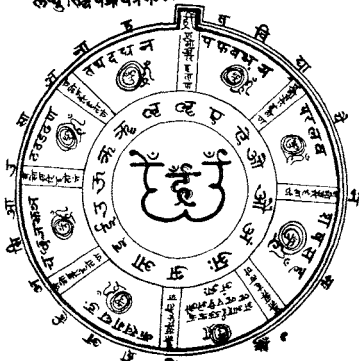
ज्वरोपशम
कुलिकुंड
यन्त्र

यन्त्र नं० ५५



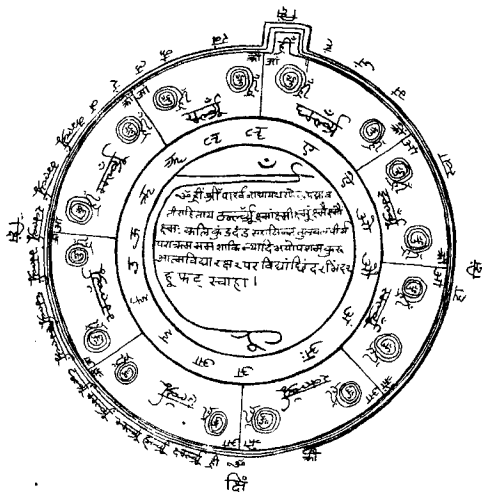
लघु सिद्ध लक्षण यन्त्र नं० ५६

यन्त्र नं० ५६



शाक्त्विन्यादि निवारण कलि कुण्ड यन्त्र

यन्त्र नं० ५७



इस यन्त्र को तांबे के पत्रे पर खुदवा कर प्रतिष्ठा करवा ले, फिर किसी भी प्रकार के ज्वर से आक्रान्त रोगी के सिंहाने गरम पानी में डाल कर यंत्र रखे तो शीत ज्वर जाता है और ठंडे पानी में डालकर सिरहाने रखे तो ताप ज्वर जाता है। ५५।

इस लघु सिद्ध यन्त्र को तांबे के पत्रे पर खुदवा कर यन्त्र पर लिखा हुआ मन्त्र का सवा लक्ष जप कर एक यन्त्र भोज पत्र पर लिखकर पास में रखे, दशास होम करे, तो सर्व कार्य सिद्ध होता है, सर्व रोग दूर होते हैं, सर्व प्रकार की परविद्या का खेदन होता है। लक्ष्मी लाभ होता है। चित्तिन सर्व कार्य सिद्ध होते हैं। यह यन्त्र मन्त्र चिता मणि है। इसके प्रभाव से मोक्ष लाभ होता है। ५६।

इस शाकिन्यादि को दूर करने के यन्त्र को अष्ट गंध से भोज पर लिखकर उस यन्त्र को एक चौकी पर स्थापन कर, विधि पूर्वक यन्त्र में लिखे हुये यन्त्र का साढ़े बारह हजार जप करे यन्त्र की पूजन नित्य करे, जब जप पूरे हो जाय तब दशांश आहुती देवे, यन्त्र को गले में या हाथ में बांधने से भूत, प्रेत, राक्षस, शाकिनी, डाकिनी की बाधा दूर होती है । ५७ ।

अथ घन्टा कर्ण मन्त्र संक्षेप विधि

ॐ घंटाकर्णो महावीर सर्व व्याधि विनाशकः, विस्कोटक भयं प्राप्ते, रक्ष २ महाबल यत्र त्वं तिष्ठ से देव लिखितो क्षय रक्ति मि रोगास्तत्र व्रणश्यन्ति वातपित्त कफोद्धूवा । तत्र राज भय नास्ति, याति कर्णे जा क्षय, शाकिनी, भूत, बैताला, राक्षसा प्रभवन्ति न ॥३॥ ना कले मरण तस्य न च सर्पेण उद्व्यते । अग्नि चौर भय नास्ति ॐ घंटा कर्णो नमोस्तुते ।

विधि :—शुभ दिन देखकर रवि पुष्य या रवि मूल या और कोई शुभ दिन में कोरे धुले हुये कपड़े पहन कर महावीर गुरु को प्रतिमा के प्रागे दीपक जलाकर तैवेद्य चढ़ाकर आठ जाति के धान्य को अलग ढेर लगा कर, एक मुक्त आहार करे, ब्रह्मचर्य व्रत पाले, और मन्त्र का साढ़े बारह हजार जप करना, दिन १४ में अथवा २१ में पूरा करना, तब मन्त्र सिद्ध होगा, सर्व कार्य सिद्ध होय, इस मन्त्र को तीनों काल में पढ़ने से मृगी रोम घर मे कभी भी नहीं आवे, सोते समय तीन बार पढ़कर तीन बार ताली घजा कर सावे तो, सर्प भय, चोर भय, अग्नि भय, जल भय इत्यादि नहीं होता है । अशुभा पानी को इस मन्त्र से २१ बार मन्त्रीत कर छाटा देने पर, अग्नि नहो लगेगी । तथा एक वर्णि गाय के दूध को २१ बार मन्त्रीत कर छाटा देवे तो अग्नि बुझ जायगी । मन्त्र को कागज पर लिख कर घंटा में बांधे तो और घंटा बजावे तो जहां जहां आवाज जाय वहां २ के उपद्रव सब मिटते हैं । कन्या कर्त्रीत सूत्र में ७ गांठ लगाते हुये मन्त्र से २१ बार मन्त्रीत कर बच्चे के गले मे बांधने से तजर नहीं लगती है । कन्या कर्त्रीत सूत्र को २१ बार मन्त्रीत कर घूप देकर हाथ में बांधे तो एकांतरा उबर जाता है ।

इसी मन्त्र की दूसरे प्रकार से विधि कहते है :—

दीवाली की रात्री तथा शुभ मुहूर्त में प्रारंभ कर भगवान् महावीर के सामने ब्रह्मचर्य पालन करते हुये पूर्वोक्त विधि से १२ दिन में साढ़े बारह हजार जप पूरा करे । फिर गुग्गुलु आढाई पाव, लाल चन्दन, घृत, विनीला (कपास के बीज), तिल, राई सरसो, दूध, दही, गुड, रक्त कनेर के फूल, सब चीजों को मिलाकर, साढ़े बारह हजार गोली बनाना फिर एक २ मन्त्र के साथ एक २ गोली आग में खेवना, इस प्रकार साढ़े बारह हजार जप पूरा कर, फिर दशांश होमकरना, तब मन्त्र सिद्ध होगा, नित्य ही भगवान् की पूजा करना, माला लाल चन्दन की होनी चाहिए ।

राज द्वार में जाने समय मन्त्र को तीन बार पढ़कर मुख पर हाथ फेरे, राज सभा वश में होनी है। खाने को वस्तु को २१ बार मन्त्रीन कर जिसको खि नावे वह वश होता है। पिछली पहर को गुग्गुलु सेय कर मन्त्र १०८ बार पढ़कर मुख पर हाथ फेरे तो वाद विवाद झगड़े, आदिक में वचन ऊंचे रहे, याने सब उसी ही बात माने। पहले गुग्गुलु आदिक को १०८ बार मन्त्रीन कर होम करना, फिर रोगी को भाड़ा देना तो भूत प्रेत सर्पादि दोष सर्व जाने रहने है। विशेष विधि घंटा कर्ण कल्प में देखे।

ज्वाला मालिनी यन्त्र ५८

दम्भयं, दम्भयं, दम्भयं को को को ज्वाला मालिनी देवी नमः व वा वि वी वृ वृ वे वे वो वा द व द्रं वो द्रो द्र द्रुष्टान् वार्य वार्य स्वाहा श्री नमः	हम्भयं, हम्भयं, हम्भयं को को को ज्वाला मालिनी देवी नमः ह हा हि ही हृ हृ हे हे हो हो ह ह हो हो हू हू हर्बं द्रुष्टं भिषान् वश्य वृक्ष वृक्ष स्वाहा	क्षम्भयं, क्षम्भयं, क्षम्भयं को को को ज्वाला मालिनी देवी नमः क्ष क्षा क्षि क्षी क्षृ क्षृ के के की क्ष क्ष मर्बं न न नश्यं द्रुष्टं न न नश्यं न न नश्यं स्वाहा
झम्भयं, झम्भयं, झम्भयं को को को ज्वाला मालिनी देवी नमः भभा भिभी भृभृ भेभे भोभो भृभृ मर्बं न न नश्यं द्रुष्टं न न नश्यं न न नश्यं स्वाहा श्री नमः	झम्भयं, झम्भयं, झम्भयं को को को ज्वाला मालिनी देवी नमः ममा भिभी भृभृ मे मे भो भो भृ भृ मर्बं न न नश्यं द्रुष्टं न न नश्यं न न नश्यं स्वाहा श्री नमः	जम्भयं, जम्भयं, जम्भयं को को को ज्वाला मालिनी देवी नमः जज्ज भिभी जृजृ जेजे जोजो जृजृ मर्बं न न नश्यं द्रुष्टं न न नश्यं न न नश्यं स्वाहा श्री नमः
झम्भयं, झम्भयं, झम्भयं को को को ज्वाला मालिनी देवी नमः यया विभी वृवृ येये रोरो य य मर्बं न न नश्यं द्रुष्टं न न नश्यं न न नश्यं स्वाहा श्री नमः	झम्भयं, झम्भयं, झम्भयं को को को ज्वाला मालिनी देवी नमः प्रो प्रो प्रो प्रो प्रो प्रो प्रो प्रो मर्बं न न नश्यं द्रुष्टं न न नश्यं न न नश्यं स्वाहा	झम्भयं, झम्भयं, झम्भयं को को को ज्वाला मालिनी देवी नमः को को को को को को को को मर्बं न न नश्यं द्रुष्टं न न नश्यं न न नश्यं स्वाहा ।
झम्भयं, झम्भयं, झम्भयं को को को ज्वाला मालिनी देवी नमः श्री श्री श्री श्री श्री द्रुष्टं न न नश्यं मर्बं न न नश्यं द्रुष्टं न न नश्यं न न नश्यं स्वाहा	झम्भयं, झम्भयं, झम्भयं को को को ज्वाला मालिनी देवी नमः ना नो नो नो नो नो नो नो नो मर्बं न न नश्यं द्रुष्टं न न नश्यं न न नश्यं स्वाहा श्री नमः	झम्भयं, झम्भयं, झम्भयं को को को ज्वाला मालिनी देवी नमः वा वा वा वा वा वा वा वा मर्बं न न नश्यं द्रुष्टं न न नश्यं न न नश्यं स्वाहा श्री नमः

लक्ष्मी. इदं यन्त्रम् । विधि -- दीप मालिकायां कृष्ण चतुर्दश्या षष्ठं व्रत तपः कृत्वा पवित्री भूत्वा अष्टा गन्ध केन अगुरु धूपोत्क्षेपण पूर्वकं सदश पीताम्बरं परिधाय स्वर्णं लेखिन्या लिखनीयम् । ततः पङ्कोर्णक कुण्डं कृत्वा अष्टोत्तरं यत् संख्येयनालीकेन पूर्योत्तमं बग जाती फल एलादिक पञ्चः मृत साठ् पञ्च पञ्च सेर संख्याकं अग्नौ जुहुयात् ।

इस यन्त्र को अष्ट गन्ध से भोज पत्र पर लिख कर विधिवन् पूजा करने से और यन्त्र पास में रखने से मन चित्त सर्व कार्य का सिद्धि प्राप्ति है । शरीर निरोग रहता है । प्रकृत दुष्ट विद्या का परकोप नहीं होता । डाकिनी, शाकिनी, भूत, प्रेत, व्यंजरादिक की पीडा शान्त होती है । ल.मा का लाभ होता है ॥ ५८ ॥

ज्वर नाशक यन्त्र नं० ५९



इस यन्त्र को लिखकर गर्म पानी में डालकर रखने से, शीत ज्वर शांत होता है । ठण्डे पानी में डाल कर रखने से उष्ण ज्वर शांत होता है ॥ ५९ ॥

नोट :- जहां बीच में देवदत्त लिखा है, उस जगह 'स' लिखकर फिर बीच में देवदत्त लिखें ।

इस मन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर, सामने रखे, फिर ॐ ह्रीं श्रीं ग्रहं नमः । इस मन्त्र का पीला ध्यान करने से स्तम्भन होता । अरुण वर्ण का ध्यान करने से वशीकरण होता है । भूमे का रंग जैसा ध्यान करने से क्षोभ होता है । काला ध्यान करने से विद्वेषण होता है । कर्म का क्षय करने के लिए चन्द्रमा के समान ध्यान करे ।

इस मन्त्र का १२००० हजार विधि पूर्वक जप कर दशम होम करे, तब मन्त्र सिद्ध होता है । इस मन्त्र का रहस्य सबसे ऊँचा है ॥६०॥

यन्त्र न० ६०

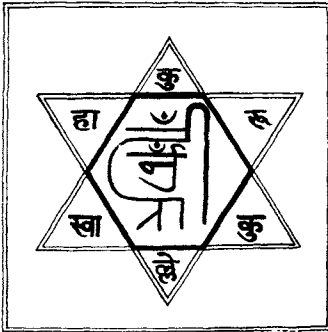


यन्त्र न० ६१



इस यन्त्र को कपूर, अगुरु, कस्तुरी, कुंकुम आदि सुगन्धित द्रव्यों से जाड़ की कलम बना कर शुभ समय में लिखे। कन्या कर्त्रित सूत में यन्त्र को लपेट कर हाथ में बांधने से सौभाग्य आदि सुखों की प्राप्ति होती है ॥ ६१ ॥

यन्त्र नं० ६२



इस यन्त्र को अष्ट गंध से भोज पत्र पर लिख कर, ॐ ह्रीं देवी कुरु कुन्ते अमुकं कुरु २ स्वाहा। इस प्रकार के मन्त्र का १०८ बार जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है, इस मन्त्र का जप करने के लिये, अच्छा दिन, अच्छा योग, चन्द्र वल, वगैरह का निर्णय करके जप करे, अष्ट द्रव्य से यन्त्र पूजा करे तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

इस मन्त्र के प्रभाव में कोढ़ रोग का नाश होता है। कुएँ का खारा पानी मीठा अमृत जैसा बन जाता है। सर्प, फूल की माला जैसा बन जाता है। भाला का अग्र भाग फूल जैसा हो जाता। अग्नि, पानी की बाढ़ के समान बन जाती है। विष, अमृत के समान बन जाता है। गर्मी के दिन, शरद ऋतु जैसे बन जाते हैं। सूर्य चन्द्रमा के समान लगना है। नित्य ज्वर, एकांतर, और तीसरे दिन आने वाला बुखार ठीक हो जाता है। विषले जन्तु तो आज्ञा मात्र से ही दूर हो जाते हैं ॥ ६२ ॥

यंत्र न० ६३



इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्यों से भोज पत्र पर लिख कर, सुगन्धित द्रव्यों में पूजा करें, फिर कन्या कत्रीत मुन में लपेट कर हाथ में बांधे लें, भूत वगैरह् वेणो को दूर करता है। स्त्रियो को सन्तान की प्राप्ति कराता है। सीभाग्य वगैरह् पुणो को देने वाला है ॥ ६३ ॥

यंत्र न० ६४

६	४८	१८
३६	२४	१२
३०		४२

इस यन्त्र को लिखते समय, प्रथम १ कलश पानी से भर कर विधि से रखे, फिर आग के पत्ते पर कुंकुम बिछा कर अनास की कलम से यत्र लिख कर अष्ट द्रव्य से पूजा करे। मन में कामेश्वरी देवी का ध्यान करे, यन्त्र को लिखते समय ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय नमः। यन्त्र लेखन कार्य जब पूरा हो जाय तब पूजन करने के उपरांत इस मन्त्र का जप करना रहे।

ॐ नमो कामदेवाय महाप्रभाय ह्रीं कामेश्वरी स्वाहा।

इस मन्त्र का ७२ बार जप करे, मन्त्र जपने के बाद लिखा हुआ यन्त्र मिटा दे, इस प्रकार पुनः लिखे पुनः मिट ये प्रतिदिन, इस तरह २४ यन्त्र लिखे। २४ वे यन्त्र के बाद मन्त्र की २१ माला जपे, प्रतिदिन इसी नियम से करना रहे। एक दिन के लिखे यन्त्र को गेहूँ के आटे में थोड़ा सा मोटा (मिश्री) मिलाकर घी, घीर घुरा मिलाकर गोली बांध कर नदी में बहादे। नाथक जो कि रोटी, श्रुवा के मांस को खाये। पृथ्वी पर शयन करे, तथा ब्रह्मचर्य पालन करे, मन्त्रादि मिटा से रह ७२ दिन तक इसी क्रिया को करना रहे। घोर इसी अवधि में सबालक्ष जप पूरा करे। जब जप पूरा हो जाय, तब दशास हाम करे। यनोर्मा को दान दे। उसके बाद प्रतिदिन एक २ यन्त्र लिख कर उस यन्त्र की पीठ पर ७२ टके चलन बाजार दे। उसे अपने बेटने के खापन पर रख कर ७२ यत्र जप ले। ७२ टके बाजार मिले तो किसी से कहें नहीं, कहेगा तो देना बन्ध हो जायगा। यदि आसन के निचे नहीं आयेंगे तो किसी तरह से कुटुम्ब के पालन के लायक स्वर्च करने को धन प्राप्त होता रहेगा। इनके उपरांत यन्त्र को आसन के नीचे से उठाकर पगड़ी में रखने तथा दूसरे दिन गोली बनाकर नदी में बहादे। जो यन्त्र फिनार पर आ जाये, उसे एक आले में रख दे तथा उस पर मफेद वस्त्र का पर्दा डाल दे और प्रति दिन गुप चढ़ाकर घूप दे दिया करे ॥ ६४ ॥

पंचांगुली यन्त्र व मन्त्र की साधन विधि, यन्त्र नं० ६५ की विधि

प्रथम-मन्त्र :- ॐ ह्रीं पंचांगुली देवी देवदत्तस्य आकर्षय नमः स्वाहा।

विधि :- इस यन्त्र को अष्ट गद्य से लिख कर, मध्य में देवदत्त का नाम लिख कर, फिर उपरोक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे, फिर बडे बांस की भोगली के अंदर यन्त्र डाले, तो ४१ दिन के अन्दर हजार गड से मनुष्य अथवा स्त्री का आकर्षण होता है। शुक्ल पक्ष की अष्टमी से आरंभ करे।

द्वितीय मन्त्र :- ॐ ह्रीं पंचांगुली देवी अमुको अमुकी मम वश्य ध्वं श्री स्वाहा।

विधि :- इस यन्त्र को देवदत्त के कपड़े पर शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को हिंगुल, गौरोचन, मृग के

पानी के साथ स्याहो बना कर लिखे। लाल चन्दन का धूप जलावे, दीपक में घी जलावे, फिर इस यन्त्र को मकान के द्वार में अथवा छत में बांधे, सोने के समय उपरोक्त मन्त्र १०८ बार १३ दिन तक, जपे, फिर (उवात्रण हावरणीनी मारवो) मन की इच्छा पूर्ति हो। इच्छित व्यक्ति वश में हो।

तृतीय-मन्त्र—ॐ ह्रीं क्लीं क्षां क्षं फुट् स्वाहा।

विधि :—इस यन्त्र को शत्रु के वस्त्र पर, रजकरी श्मशान के कोयले से लिख कर फिर इस मन्त्र का १०८ बार जप करे, धूप श्मशान रक्षा डोडकीषापट जाग पंख, उल्लु का पंख, लेकर हवन करे, इस रीति से करके यन्त्र काले कपड़े में बांधकर, एक पत्थर में बांधे, फिर उसको कुएं में प्रवेश करा देवे याने कुएं में डाल देवे, फिर नित्य १०८ बार जपे ४१ दिन तक उपरोक्त धूप जलावे तो विद्वेषण होगा।

चतुर्थ मन्त्र—ॐ ह्रीं पंचांगुल। मस्य उच्चाट्य २ ॐ क्षं क्लीं क्षं धे २ स्वाहा।

विधि :—इस यन्त्र को धतुरे के रस से लिख कर पृथ्वी मध्ये कोयला से ये उपरोक्त मन्त्र का १०८ बार जप करता हुआ यन्त्र को पृथ्वी में गाढ़े, और उस यन्त्र के ऊपर अग्नि जलावे। दिन ७ के अंदर उच्चाटन होता है। भूत प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी, चूडेल चुंडावली, जीद, भोटीग, के लिये इस यन्त्र को विप से लिख कर कटि में बांधे तो सर्वबाधा का नाश होता है। सर्व गुणों की प्राप्ति होती है।

पंचम मन्त्र—ॐ ह्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षीं क्षं मम शत्रु मारय २ पंचांगुली देवी चूसय २ नीराघात वच्चेनपातय २ फुट् २ धेधे।

विधि :—मारण कर्म के लिये इस यन्त्र को काले कपड़े पर श्मशान के कोयले से लिखे, ॐ कार के नीचे शत्रु का नाम लिखे। संख्या में इस मन्त्र का जप करे १०८ बार, धूप भेसा गुग्गुल का जलावे (आ यन्त्र गरीयल डोरे) फिर इस यन्त्र को रेशमी डोरे से लपेट कर एकान स्थान में गाढ़ देवे, तीर्थ की धारा छोड़े, धूप गुग्गुल का जलावे, जिस जगह यन्त्र गाढ़ा हो, उस कोने में उपरोक्त मन्त्र का जाप करे १०८ वखत, शत्रु के पांव के नीचे की धूल, और गुग्गुल, के साथ में जलावे, २१ दिन तक करने से शत्रु का नाश हो जायगा। कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन करे। अगर शत्रु परेशान होकर पांवों में आकर पड़े, तब गढ़ा हुआ यन्त्र को निकाल कर, दूध में उस यन्त्र को भीगी-

कर धी, धूप जलाता हुआ ॐ ह्रीं पंचांगुली रक्ष २ स्वाहा । इस मन्त्र का जप १११ बार करे तो शत्रु को फिर से शान्ति मिले, सर्व विघ्न दूर हो ।

बाकी के तीन मन्त्र और यन्त्र के बीच में और आजु बाजु लिखो हुये हैं । उन मन्त्रों के फल भी जैसा मन्त्र में शब्द विवरण आया हुआ है वैसा ही समझता ।

पंचांगुली मूल मन्त्र :—ॐ ह्री श्री पंचांगुली देवी मम सरीरे सर्व ग्रहिष्ठान् निवारणाय नमः स्वाहा, ठः ठः ।

इस मूल मन्त्र का पूर्ण विधि विधान से सवालक्ष जप करे तब पंचांगुली देवी सिद्ध होगी, सर्वकार्य की सिद्धि होनी है ॥ ६५ ॥

ज्वाला मालिनी यन्त्र विधि

मन्त्र :—ॐ ह्री श्री अर्हं चद्र प्रभु स्वामिन्न पादपंकज निवासिनी ज्वाला मालिनी स्वाहा नित्य तुभ्यं नमः ।

इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्यों से भोज पत्र पर लिख कर, उपरोक्त मन्त्र का जप सवालक्ष विधि विधान से करे तब सर्व कार्य की सिद्धि हो, सर्व रोग शान हो, महादेवी श्री ज्वाला मालिनी जी का वरदान प्राप्त होना है । पञ्चात्र विंशत्य कर्म के लिये ग्रन्थ २ पल्लव जोड़ कर मन्त्र का जप करने से वैसाही कार्य सिद्ध हो । एक यन्त्र तावा, अथवा चाद्री, अथवा गोता, अथवा कासे पर खुदवा कर यन्त्र प्रतिष्ठा करके घर में स्थापित करने से सर्व विघ्न बाधा दूर हो । जो भोज पत्र पर लिखा हुआ यन्त्र है उसको स्वयं के हाथ से तावाज में डाल कर बाधे, सर्व कार्य सिद्ध हो ॥ ६६ ॥

नृत्यु जय ज्वाला मालिनी यन्त्र मन्त्र की विधि

मन्त्र : ॐ हा ह्री हूँ ह्री हूँ हा या क्री क्षी ह्री क्री ब्लूँ द्रा व्री ज्वाला मालिनी सर्वग्रह उच्चाटय २ दह २ हन २ शिघ्र २ हू फट् घं घे ।

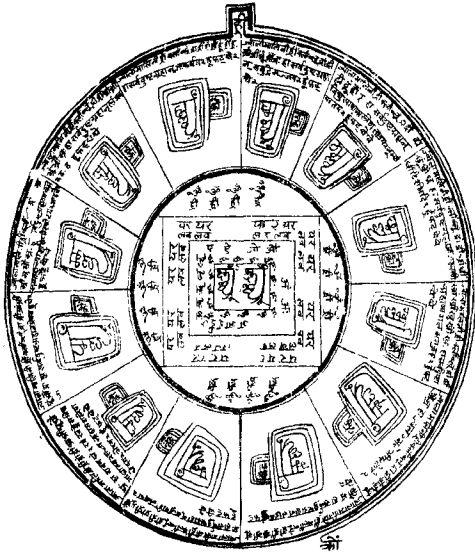
विधि :—उपरोक्त मन्त्र का जप सवालक्ष, प्रमाण विधि विधान से करे पञ्चात्र ज्वाला मालिनी विधान मन्त्र का दशास होम करने से सर्व प्रकार की अपमृत्यु का नाश होता है । यन्त्र भोज पत्र अथवा कोई भी धातु के पत्र पर खुदवा कर, प्रतिष्ठा करके घर में स्थापित करने से यन्त्र को धोकर पीने से, सर्वरोग शोक शांत होते हैं ॥ ६७ ॥

पत्र न० ६६

ज्वाला मालिनी यंत्र नं०

ॐ श्रीं श्रीं अहं चन्द्र प्रभु स्वामिन पादपंकज निवासिनी ज्वाला मालिनी स्वाहा नित्यं तुभ्यं नमः

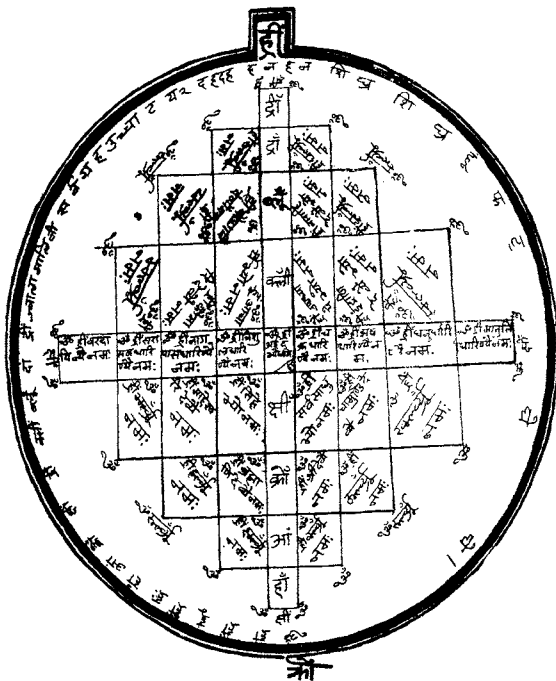
ॐ श्रीं श्रीं सर्वभूतपति मिश्राचार्य सप्तकायानु संवत्सराः प्रसन्ना भवन्तु



यस्य पार्व यज्ञेयं तिसृति मर्यामो करितं कुं २ रचन ध्यानं सर्व कुं २ रखा ह्युत्र कलत्रादि निमित्तं विवादि

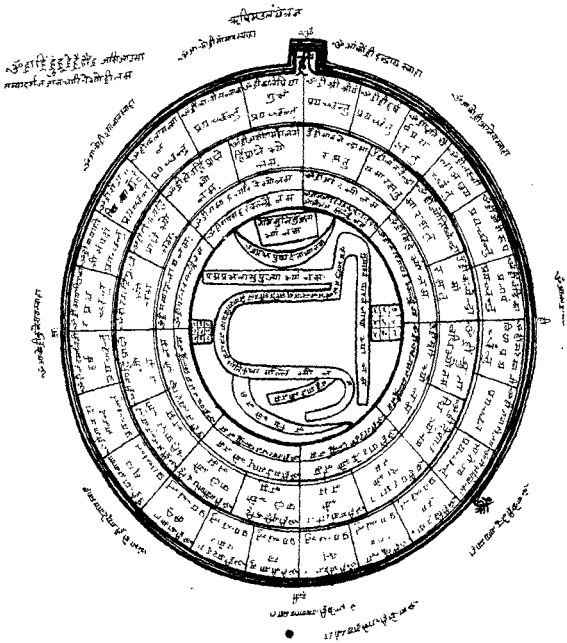
पञ्च कुं २ सर्व यज्ञोक्तं प्राणिनोक्तं वाक्पितृकुं २ देवादि

श्री महा मृत्युंजयं ज्वाला मालिनी यंत्र नं० ६७



यन्त्र में लिखित मंत्र का सवालक्ष प्रमाण विधि पूर्वक जप करने से सर्व प्रकार की भयमृत्यु का नाश होता है।

पंख नं० ६८

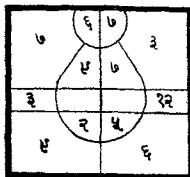


ऋषि मण्डल यन्त्र विधि

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रिं हूं ह्रूं ह्रै ह्रौं ह्रः असि प्राउसा सम्पद्दर्शनं ज्ञानं चारित्र्यं मयी ह्रीं नमः ।

विधि :—ऋषि मण्डल यन्त्र को भोजपत्र पर मुगन्धित द्रव्य से लिखकर हाथ या गले में बाधने से सर्व प्रकार के रोग, शोक, ऊपरी हवा नाष्ट होती है। परकृत विद्या का नाश होता है। सर्व कार्य सिद्ध होते हैं। किन्तु प्रथम ऋषि मण्डल मन्त्र को बिधि-विधान पूर्वक सिद्ध करें, जैसे प्रथम एक ताम्र पत्र पर अथवा सुवर्ण पत्र पर अथवा चांदी के पत्र पर अथवा कान्ति के पत्र पर यन्त्र खुदवा कर शुद्ध करावे, फिर उस यन्त्र को एक सिंहासन पर विराजमान करके, सामने दीप, धूप रखकर उपरोक्त मन्त्र का ८००० हजार जप करें, आठ दिन में, संयम से रहे, आचाम्ल तप करें, ब्रह्मचर्य पाले, मन्त्र का जप समाप्त होने के बाद शुभ दिन मूर्त में ऋषि मण्डल विधान करके दशांस आहुती देवे तो मन्त्र के प्रभाव से मन चिंतित कार्य सिद्ध हो। सर्व उपद्रव मिटे। लक्ष्मी लाभ हो, विशेष मन्त्र का छह महीने तक नित्य ही आचाम्ल तप पूर्वक आराधना करने से स्वयं के मस्तक पर अर्हत चिह्न दिखेगा। जिसको अर्हत चिह्न दिख जायगा। उसको निश्चय ही सानने भव में मोक्ष हो जायगा। साधक को किसी प्रकार का भय, डाकनी, शाकिनी, भूत, प्रेत, परकृत विद्या, इन चीजों का उपद्रव कभी नहीं होगा। वैसे मन्त्र का एक माला फेर कर, स्त्रोत का पाठ करने से ही सर्व प्रकार के रोग, शोक बाधाएँ मिटती हैं। इस काल में ये मन्त्र, यन्त्र की साधना कल्प वृक्ष के समान चिन्ता पदार्थ को देने वाला है। विशेष क्या कहे ॥ ६८ ॥

यन्त्र नं ६९



इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर मस्तक पर बाधने से मूठ नहीं लगती। इस यन्त्र को होली की रात्रि में नंगे होकर धतूरे के रस से लिखना चाहिये ॥६९॥

छुहारा गुण यन्त्र

जिस छुहारे में दो गुठली हों उसे उठाकर रखले, फिर दीवाली के दिन अनार की कलम से, इस यन्त्र को पहले १०८ बार पृथ्वी पर लिख कर, सिद्ध करे,

यन्त्र नं० ७०

८	१	६
३	५	७
४	९	२

तत्पश्चात् भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजनकर छुहारे की दोनों गुठली को यन्त्र के साथ लपेट कर चादी के तावीज में मढ़वाकर रखले। कार्य पड़े तब तावीज की धोकर पिलाने से कष्टी स्त्री का कष्ट दूर होता है। रोगी का रोग दूर होता है। बाध स्त्री के कमर में बाधने से गर्भ रहता है। पास में रख कर राज दरवार में जाने से सम्मान प्राप्त होता है। यन्त्र के प्रभाव ऋद्धि सिद्धि प्राप्त होकर सभी इच्छाये पूरी होती है ॥ ७० ॥

यन्त्र नं० ७१

२	१०	२	८
७	३	८४	२४
३६	८१	६	१
४	९	२२	२५

इस यन्त्र को लिखकर, खेत में गाढ़ देने से तथा क्षेत्रपाल की पूजा करने से, खेत में अधिक अन्न उत्पन्न होता है ॥ ७१ ॥

यन्त्र नं० ७२

८३	८६	२	७
६	७६	७६	७८
८५	७५	८	१
४	५	७७	८२

इस यन्त्र को आश्लेषा नक्षत्र में शशु की हाट में लिखने से हाट उजड़ जाती है ॥ ७२ ॥

यन्त्र नं० ७३

६४	६१	२	८
७	३	६८	६८
७०	६५	६	१
४	६	६६	६६

इस यन्त्र को कीच के बीज से लिख कर घर में रखने से सूहे कपड़े को नहीं काटते हैं ॥ ७३ ॥

यन्त्र नं० ७४

७६	७८	२	८
७	३	७४	७४
७७	७२	६	१
४	६	७३	७६

इस यंत्र को घूँट के रस में (दूध) स्वाति नक्षत्र में लिख कर, पुरुष अपनी कमर में धारण करे तो शुक्र का स्तम्भन होता है ॥ ७४ ॥

यन्त्र नं० ७५

१६	२६	२	८
७	३	२३	२२
२५	२०	६	१
१	६	२१	२३

इस यंत्र को सेही के कांटे से, पशु के खूँटे पर लिख देने से तथा खूँटे को गाढ़ देने से गया हुआ पशु वापस लौट आता है ॥ ७५ ॥

यन्त्र नं० ७६

६	१३	२	८
७	३	१०	११
२	७	६	१
४	६	६	६

इस यन्त्र को केवडे के रस में लिख कर, मिरहाने रत्नकर मोने में स्वप्न में भूत ही भूत दिखाई पड़ते हैं ॥७६॥

यन्त्र नं० ७७

७७	८४	२	८
७	३	८१	८३
७४	७८	६	१
४	६	७६	८५

इस यन्त्र की लाख के पानी से थूहर के पत्ते पर लिखकर, बगीचे में गाढ़ देने से अधिक फूल आते हैं ॥७७॥

यन्त्र नं० ७८

७५	८२	२	८
७	३	७६	७८
६१	७६	६	१
४	६	७७	८०

इस यन्त्र को पुण्य नक्षत्र में लिखकर श्वयं के पास रखने से भोग इच्छा खत्म हो जाती है ॥७८॥

यन्त्र नं० ७९

७९	७६	२	७
६	३	८३	८४
८५	८०	८१	१
४	५	८१	८४

इस यन्त्र को कुम्हार के आवे की ठोड़ी पर लिप्य कर, किसी के घर में डाल देने से, उस घर में कलह होना आरम्भ हो जाता है ॥७९॥

यन्त्र नं० ८०

४१	४२	२	७
६	३	४५	४०
४७	४३	८	१
४	५	४३	४०

इस यन्त्र को शत्रु के नाम सहित गधे के मूत्र से लिख कर, ऊपर से जूता मारने से शत्रु का मुँह सूज जाता है ॥८०॥

यन्त्र नं० ८१

६६	६३	२	८
७	३	६०	८६
६१	८६	६	१
४	६	८७	६८

इस यन्त्र को कुलिजन के रस से लिख कर ताबीज में भँदा कर पास रखने से वचन सिद्ध होती है ॥८१॥

यन्त्र नं० ८२

४१	१८	११
१०	२०	३०
१६	२३	३२

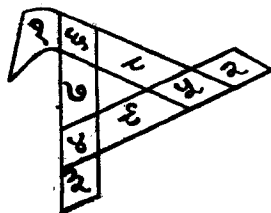
इस यन्त्र को भोजपत्र पर केशर से लिखकर सरसो के तेल में जलाने से परस्पर की प्रीति नष्ट होती है ॥८२॥

यन्त्र न० ८३

तं	तं	तं	तं
तं	तं	तं	तं
तं	तं	तं	तं
तं	तं	तं	तं

इस यन्त्र को श्मसान के कोयले से शधु के वस्त्र पर लिखने से उसको परदेश भाग जाना पड़ता है ॥८३॥

यन्त्र नं० ८४



इस यन्त्र को लक्ष्मी पूजा के दिन बसने बदलने के दिन बही खातों पर हत्दी से यन्त्र मन्त्र लिखे, तो लक्ष्मी लाभ होगा। ॐ ह्रीं श्री क्लीं धूम्रं अर्हं नमः। इस मन्त्र का १०८ बार नित्य जप करे ॥८४॥

यन्त्र नं० ८५

८	३३४	३३४	३३४	७
८	३३४	३३४	३३४	७
८	३३४	३३४	३३४	७

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिखकर गले में बांधने से भसिन का रोग शांत होता है ॥८५॥

यन्त्र नं० ८६

हं	सं	लं	फं
घं	वं	धं	जं
नं	पं	मं	क्षं
बं	यं	जं	व

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर सोते समय सिरहाने रख लेने से बुरे स्वप्नों का दिखना बन्द हो जाता है ॥८६॥

यन्त्र नं० ८७



इस यन्त्र को कागज पर लिखकर लोबान की धूप देकर, ओखली में धर कर कूटे। डाकिनी का मस्तक फूट जायेगा और वह चिल्लाकर सब कुछ बताते लगेगी और रोगी को छोड़ कर भाग जायगी ॥८७॥

यन्त्र नं० ८८

हीं	ही	हीं
ही	ही	ही
हीं	हीं	हीं

नये खधर पर खडिया मिट्टी से यन्त्र को लिख कर पुष्पादि से पूजा कर घूलि से पूर्ण अग्नि में रखकर रवैर को अग्नि से प्रज्वलित करे। इस यन्त्र के प्रभाव से भूतादिक, रोते कांपते हुये बालकादिक को अथवा कोई भी हो छोड़ कर भाग जाते हैं। उस देश में ही वास नहीं करते हैं ॥८८॥

यन्त्र नं० ८९

१	४	४४	८
४५	७	२	४६
६	४२	४६	३
४८	४	५	४३

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर, भुजा में बांधने से दोनों प्रकार के खूनी और वादी बवासीर दूर हो जाता है ॥८९॥

यन्त्र नं० ६०

१२	११
३	३

इस यन्त्र को कागज पर लिख कर लपेट कर रोगी को सुँघाने पर तथा इस यन्त्र में राई भर कर जलने से भूत जिन्न उत्तर जाते हैं ॥६०॥

यन्त्र नं० ६१

श्रीं	श्री	श्रीं
श्रीं	श्रीं	श्रीं
श्री	श्रीं	श्रीं

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर गले में बांधने से शीतला (चेचक) नहीं निकलती है । जिसकी निकली है उसकी शांत होती है ॥६१॥

यन्त्र नं० ६२

७१	७१	७१
७१	७१	७१
७१	७१	७१

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर दांयी भुजा मे बाधने से, तिजारी खुलार दूर हो जाता है ॥६२॥

यन्त्र नं० ६३

७२	७६	२	७
६	३	७६	७५
७८	७३	८	१
४	५	७४	७७

इस यन्त्र को मार्ग की बालू पर लिख कर ऊपर कोड़ा मारने से, गया हुआ मनुष्य घर लौट आवे ॥६३॥

यन्त्र नं० ६४

२२	२६	२	८
७	६	१६	२५
२८	२६	६	१
३	६	२४	२१

इस यन्त्र को अनार के रस से लिखकर कान में बाध देने से, कान में दर्द नहीं है ॥ ६४ ॥

यन्त्र नं० ६५

=		=	
-	b	=	≡
		≡	
		=	

इस यन्त्र को आम वृक्ष के नीचे बैठकर सवा लक्ष लिखने से अम्बिका देवी प्रसन्न होती है ॥६५॥

यन्त्र नं० ६६

गं	छं	जं	चं
छ	नं	जं	ठं
ठं	जं	ठं	च
नं	छं	जं	टं

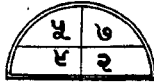
इस यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर, गुगुल का धूप देकर, गले में धारण करने से दुष्ट स्वप्नों का दीखना बन्द हो जाता है। ६६।

यन्त्र नं० ६७

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	३६	८	१
४	५	३०	३३

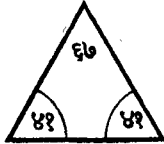
इस यन्त्र को केशर, गोरोचन अथवा रोली से भोजपत्र पर लिखकर, गाय के गले में और भैंस के सींग में गुगुल की धूप देकर बांधने से वह अच्छे को लगाने तथा बहुत दूध देने लगती है। ६७।

यन्त्र नं० ६८



इस यन्त्र को कागज पर लिख कर, रविवार के दिन, सूर्य के सामने पानी में धोकर पीने से वायु गोला का दर्द तुरन्त दूर हो जाता है । ६८।

यन्त्र नं० ६९



इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर मस्तक पर रखने से कुत्ते का बिष दूर होता है । ६९।

यन्त्र नं० १००

६२३	१ स	८६
७ सी	५ पू	३७
२ म	६८	४ स

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर कमर में बांधने से धरन ठिकाने पर आ जाती है । १००।

यन्त्र नं० १०१

६	७	२
१	५	६
८	३	४

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर घोड़े के गले में बांधने से उसका पेट दर्द दूर होता है। पंशाब बन्द हो जाय, तो होने लगता है। सर्वे कष्ट दूर हो जाता है। १०१।

यन्त्र नं० १०२

४	५	७४	७७
७६	७२	८	१
६	३	७६	६५
७२	३८	२	८

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर कमर में बांधने से नपुंसक व्यक्ति की नपुंसकता दूर होती है। १०२।

यन्त्र नं० १०३



इस यन्त्र को अष्ट गंध से भोज पत्र पर लिख कर मस्तक पर बांधने से पीलिया रोग दूर होता है । १०३।



॥ यन्त्राधिकार इति ॥



भगवान महावीर के अहिंसा का सार :—

“तुम स्वयं जीओ और जीने दो ।”

पड़ लेने से धर्म नहीं होता, बोलियों और पिच्छी से भी धर्म नहीं होता, किसी मठ में भी रहने से धर्म नहीं है और केशलोंब करने से भी धर्म नहीं कहा जाता । धर्म तो आत्मा में है उसे पहचानने से धर्म की प्राप्ति होती है ।



❖❖ भजन ❖❖

संकलनकर्ता—शान्ति कुमार मंगवाल

महावीर कीर्ति गुरु स्वामी, दुःख भेटो जी अन्तरयामी ॥ टेरे ॥

- (१) रतनलाल के पुत्र कहाये, बूँदा देवी जी के जाये ।
सबसे नेहा तोड़ा, जग से मुँह को मोड़ा, दीक्षा धारी—दुःख
- (२) वीर सागर से क्षुल्लक दीक्षा धारी,
बादी सागर से मुनि दीक्षा धारी ।
शेढवालमे आ, सबसे आग्रह पा,
पदवी आचार्य की पाई दुःख...-भेटो जी अन्तरयामी
- (३) पाँचों रस का तो त्याग किया है,
त्याग स्वारस को भी कर दिया है ।
अठारह भाषा के ज्ञाता, सारे शास्त्रों के वेत्ता,
गुरु स्वामी—दुःख..... भेटो जी अन्तरयामी
- (४) लाखों बार तुम्हें शीष नवाऊँ,
मुनीराज दरश कब पाऊँ ।
सेवक व्याकुल भया, दर्शन बिन ये जिया,
लागे नाहीं—दुःख..... भेटो जी अन्तरयामी

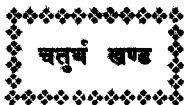
❖❖ भजन ❖❖

सारे जहाँ से न्यारे, मुनीराज है हमारे ।
भाको तो इनके अन्दर, तन-मन से ये दिगम्बर,
वैभव के हर नजारे, इनको लुभा के हारे—सारे जहाँ से

इनको न मोह मठ से, रखते न पर से यारी,
धूणी न ये रमाते, होते न जटाधारी ।
टीका तिलक से हटकर, इनके स्वरूप न्यारे—सारे जहाँ

सेवक से न खुश हों, दुश्मन से न द्वेष करते ।
कोई भी फिर सताये, ये क्षमा भाव धरते ।
हर क्षण क्षमा का दरिया, बहता है इनके द्वारे—सारे जहाँ से

॥ समाप्त ॥



इस खण्ड में

(४—१ से ४—२४)

प्रत्येक तीर्थंकर के काल में उत्पन्न शासन रत्नक
यज्ञ यज्ञि के चित्र सहित स्वरूप
व होम विधान

२४ तीर्थंकरों के यज्ञ व यज्ञि का नाम व स्वरूप	१
अष्ट मातृका स्वरूप वर्णन अष्ट जयाद्या देवता स्वरूप	६
सोखह विद्या देवियों के नाम चतु षष्टि योगिनियों के नाम	१०
यज्ञ अथवा यक्षिणीयों की पक्षो पचारी पूजा का क्रम होम विधि	११
अथ पीठिका मन्त्रा	१६
अथ पूर्ण आहूति	२०
अथ पुन्याह वाचन	२१
मंत्र जप के बाद दशांस होम करने के लायक	२३
होम कुण्डों का नक्शा	२४



चतुर्थाधिकार

प्रत्येक तीर्थंकर के काल में उत्पन्न शासन

रक्षक यक्ष यक्षिणी के

चित्र सहित स्वरूप व होम विधान

(१) श्री आदिनाथ जी (बल का चिन्ह)

गो मुख यक्ष—स्वर्ण के समान, कांति वाला, गो मुख सदृश वाला, वृषभ वाहन वाला, मस्तक पर धर्म चक्र, चार भुजा वाला ऊपर के दाहिने हाथ में माला, बांए हाथ में फरसा तथा नीचे वाले दाहिने हाथ में वरदान, बांए हाथ में बिजोरे का फल धारण करने वाला होता है। (चित्र नं० १)

“चक्रेश्वरी यक्षिणी” (अप्रतिहत चक्रा) :—स्वर्ण के जैसे वर्ण वाली, कमल पर बैठी हुई गरुड की सवारी, १२ भुजा वाली, दोनों हाथों में दो वज्र, दो तरफ के चार चार हाथों में आठ चक्र, नीचे के दाहिने हाथ में वरदान धारण करने वाली, नीचे के बांए हाथ में फल। प्रकारान्तर से चार भुजा वाली भी मानी है। ऊपर के हाथों में चक्र, नीचे के बांए हाथ में बिजोरे, दाहिने हाथ में वरदान धारण करने वाली है। क्षेत्रपाल ४ जय, विजय, अपराजित, माणि भद्र। (चित्र नं० २)

(२) श्री अजितनाथजी (हाथी का चिन्ह)

“महायक्ष”—जिन शासन देव—स्वर्णसी कांति वाला, गज की सवारी चार मुख व आठ भुजा वाला है। बांए चारों हाथों में चक्र, त्रिशूल, कमल और शंख तथा दाहिने चारों हाथों में तलवार, दंड फरसा और वरदान धारण करने वाला है। (चित्र नं० ३)

“रोहणि यक्षिणी”—स्वर्ण समान कांति वाली, लोहासन पर बैठने वाली चार भुजा

वाली हाथों में शंख, चन्द्र अभय और वरदान युक्त है। (चित्र नं० ४)

क्षेत्रपाल—४ क्षेम भद्र, क्षांति भद्र, श्री भद्र, शान्ति भद्र।

(३) श्री संभवनाथजी (घोड़े का चिन्ह)

“त्रिमुख यक्ष”—कृष्ण वर्ण वाला, मोर वाहन वाला, तीन नेत्र व तीन मुख वाला, छह भुजा वाला, बाँगे हाथों में चक्र, तलवार व अक्रुश और दाहिने हाथों में दंड, त्रिशूल, और तीक्ष्ण कतरनी को धारण करने वाला है। (चित्र नं० ५)

“प्रज्ञप्ति यक्षिणी”—श्वेत वर्ण, पक्षी की सवारी दह हाथ वाली हाथ में अर्द्ध चन्द्रमा, फरसा, फल तलवार, तूम्ही और वरदान को धारण करने वाली है। (चित्र नं० ६)

क्षेत्रपाल—४ वीर भद्र, वलि भद्र, गुण भद्र, चन्द्राय भद्र।

(४) श्री अभिनन्दन नाथजी (बानर का चिन्ह)

“यक्षेश्वर यक्ष”—कृष्ण वर्ण वाला, राज की सवारी, चार भुजा वाला, बाँगे हाथ में धनुष और डाल, दाहिने हाथ में बाण और तलवार धारण करने वाला है। (चित्र नं० ७)

“वज्र शृङ्खला यक्षिणी”—स्वर्ण सी कांति वाली, हंस वाहिनी, चार भुजा वाली, हाथों में नाग पाश, बिजोरा फल, माला और वरदान धारण करने वाली है। (चित्र नं० ८)

क्षेत्रपाल—४ महा भद्र, भद्र भद्र, शत भद्र, दान भद्र।

(५) श्री सुमतिनाथजी (चक्रवे का चिन्ह)

“तुम्बुर यक्ष”—कृष्ण वर्ण वाला, गरुड की सवारी और यज्ञोपवित धारण करने वाला, चार भुजा वाला है। ऊपर के दोनों हाथों में सर्प, नीचे दाहिने हाथ में वरदान तथा बाँगे हाथ में फल धारण करने वाला है। (चित्र नं० ९)

“पुरुष वक्ता यक्षिणी”—(खड्गवरा) रवर्ण के वर्ण तथा हाथों की सवारी करने वाली, चार भुजा वाली है। हाथों में वज्र, चक्र, और वरदान धारण करने वाली है। (चित्र नं० १०)

क्षेत्रपाल—४ कल्याण चन्द्र, महा चन्द्र, पद्म चन्द्र, नय चन्द्र।

(६) श्री पद्मप्रभुजी (कमल का चिन्ह)

“पुष्प यक्ष”—कृष्ण वर्ण वाला, हरित वाहन, चार भुजा वाला। (वसु नन्द

प्रतिष्ठा कल्प मेर भुजा वाली) है। दाहिने हाथ में माला व वरदान तथा बाएँ हाथ में ढाल और अभय की धारण करने वाला है। (चित्र न० ११)

“मनोवेगा (मोहनी) यक्षिणी”—स्वर्ण वर्ण तथा श्रवण वाहन वाली, चार भुजा वाली है। हाथों में वरदान, तलवार, ढाल और फल की धारण करने वाली है। (चित्र नं १२)

क्षेत्रपाल—४ कालाचन्द्र, कल्पचन्द्र, कुमुत चन्द्र, कुमुद चन्द्र।

(७) श्री सुपाश्वनाथजी (स्वस्तिक का चिन्ह)

“मातङ्ग यक्ष”—कृष्ण वर्ण वाला, सिंह की सवारी करने वाला, टेढ़ा मुँह वाला, दाहिने हाथ में त्रिशूल, बाएँ हाथ में दण्ड की धारण करने वाला है। (चित्र न० १३)

“काली देवी (मानवी) यक्षिणी”—श्वेत वर्ण वाली, बैल की सवारी करने वाली चार भुजा वाली है। हाथों में घंटा, फल, त्रिशूल और वरदान की धारण करने वाली है। (चित्र न० १४)

क्षेत्रपाल—४ विद्याचन्द्र, खेमचन्द्र, विनयचन्द्र।

(८) श्री चन्द्र प्रभुजी (चन्द्रमा का चिन्ह)

“श्याम यक्ष”—कृष्ण वर्ण, कबूतर (कपांत) की सवारी करने वाला, तीन नेत्र तथा चार भुजा वाला है। बाएँ हाथ में फरसा और फल, दाएँ हाथ में माला और वरदान युक्त है। (चित्र न० १५)

“ज्वाला मालिनी (ज्वालिनी) यक्षिणी”—श्वेत वर्ण भैंसा (महिष) की सवारी करने वाली तथा आठ भुजा वाली है। हाथों में चक्र, धनुष नाग पाश, ढाल, बाण, फल, चक्र, और वरदान है। (चित्र न० १६)

क्षेत्रपाल—४ सोम कान्ति, रविकांति, शुभ्र कान्ति, हेम कान्ति।

(९) श्री पुष्पदन्तजी (मगर का चिन्ह)

“अजित यक्ष”—श्वेत वर्ण वाला, कछुआ की सवारी तथा चार हाथ वाला है। दाहिने हाथों में अक्ष माला है और वरदान तथा बाएँ हाथों में शक्ति और फल की धारण करने वाला है। (चित्र नं १७)

“महाकाली (अकुटि) यक्षिणी”—कृष्ण वर्ण वाली, कछुआ की सवारी तथा चार

भुजा वाली है हाथों में वज्र, फल, मुग्धर और वरदान युक्त है। (चित्र नं० १८)

क्षेत्रपाल—४ वज्रकांति, वीरकांति, विष्णुकांति, चन्द्रकांति।

(१०) श्री शीतलनाथजी (कल्प वृक्ष का चिन्ह)

“बाह्य यक्ष जिन शासन देव”—श्वेत वर्ण, कमल आसन, चार मुख और आठ हाथों वाला है। बाएँ हाथ में धनुष, दण्ड, ढाल और वज्र तथा दाहिने हाथ में बाण, फरमा तलवार और वरदान को धारण करने वाला है। (चित्र नं० १९)

“चामुण्डा देवी (मानवी चामुण्डी) यक्षिणी”—हरे वर्ण वाली, काले सूवर की सवारी, चार भुजा वाली है, हाथों में मछली माला, विजोरा फल और वरदान धारण करने वाली है। (चित्र नं० २०)

क्षेत्रपाल—४ शतवीर्य, महावीर्य, बलवीर्य, कीर्तिवीर्य।

(११) श्री श्रेयांसनाथजी (गेडे का चिन्ह)

“ईश्वर यक्ष”—श्वेत वर्ण, बैल की सवारी करने वाला, त्रिनेत्र तथा चार भुजा वाला है। बाएँ हाथ में त्रिशूल और दण्ड तथा दाहिने हाथ में माला और फल को धारण करने वाला है। (चित्र नं० २१)

“गौरी यक्षिणी”—स्वर्ण वर्ण तथा हरिन की सवारी करने वाली, चार भुजा वाली है। हाथों में मुग्धर, कलश, कमल, और वरदान को धारण करने वाली है। (चित्र नं० २२)

क्षेत्रपाल—४ तीर्थ रुचि, भाव रुचि, भव्य रुचि, शान्ति रुचि।

(१२) श्री वासुपूज्यजी (भैंसे का चिन्ह)

“कुमार यक्ष”—श्वेत वर्ण तथा हंस की सवारी करने वाला है। त्रिनेत्र और छह भुजा वाला है। बाएँ हाथ में धनुष, नोलिया और फल तथा दाहिने हाथों में बाण गदा और वरदान को धारण करने वाला है। (चित्र नं० २३)

“गांधारी (विन्ध्यमालिनी) यक्षिणी”—हरित वर्ण, मगर बाहिनी तथा चार भुजा वाली है। ऊपर के दोनों हाथ में कमल, फल, वरदान युक्त है। (चित्र नं० २४)

क्षेत्रपाल—४ लब्धि रुचि, तत्त्व रुचि, सम्यक्त रुचि, तूर्य वाद्य रुचि।

(१३) श्री विमलनाथजी (सूवर का चिन्ह)

“कतुमुंख यक्ष”—वर्ण मुख, हरित वर्ण वाला, मोर की सवारी करने वाला चार



गौमुख यक्ष नं. १



विष्णु यक्षी नं. ७



महायक्ष नं. ३



रोहिणी यक्षी नं. ४



किष्कि यज्ञ नं-५



अष्टमि यज्ञ नं-५



यक्षेश्वर यज्ञ नं-७



विष्णु यज्ञ नं-७

यज्ञभूषण यज्ञ नं-८



सुखरुपसो नं-६



सुखरुपसो नं-७



सुखरुपसो नं-११



सुखरुपसो नं-१२



महाशयद्व नं. १३



वन्द्य धर्म नं. १४



इष्टमयक नं. १५



न्याय साहिबो यत्नो नं. १६



श्री.वेङ्कटेश्वर मे. १७



महा.पद्मलक्ष्मी देवी मे. १८



ब्रह्म.यक्ष वेणु मे. १९



वामदेवी मे. २०



श्री लक्ष्मी नंद



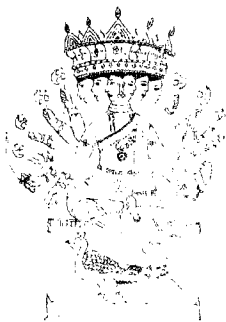
श्री लक्ष्मी नंद



कुमार यज्ञ नं. २३



गोपनीयवर्ण २४



श्रीगणेशाय नमः-२३



श्रीलक्ष्मीयै नमः-२४



पातलपदो नमः-२५



अमलमणिमूढाय नमः-२६



विष्णु यक्ष नं. २४



महेश्वर यक्ष नं. २५



गणेश यक्ष नं. २६



महामाता यक्ष नं. २७

मुख, बारह भुजा वाला है। ऊपर के आठ हाथों में फरसा तथा बाकी के चारों हाथों में तलवार, डाल, माला और वरदान धारण करने वाला है। प्रतिष्ठा तिलक में छह मुख वाला है। (चित्र नं० २५)

“बैराटी देवी यक्षिणी”—हरे वर्ण वाली सर्प वाहिनी, चार भुजा वाली है। ऊपर के दोनो हाथों में सर्प, नीचे के दाहिने हाथ में बाण बाए हाथ में धनुष को धारण करने वाली है। (चित्र नं० २६)

क्षेत्रपाल—४ विमल भक्ति, आराध्य रुचि, वैद्य रुचि, भावस्य वैद्य वाद्य रुचि।

(१४) श्री अनन्तनाथजी (सेही का चिन्ह)

“पाताल यक्ष”—लाल वर्ण तथा मगर की सवारी करने वाला और तीन मुख वाला, मस्तक पर सर्प की तीन फणियों को धारण करने वाला तथा छह भुजावाला है दाहिने हाथ में अंकुश त्रिशूल और कमल तथा बाए हाथ में चाबुक हल और फल धारण करने वाला है। चित्र नं० २७।

“अनन्तमति यक्षिणी”—स्वर्ण वर्ण वाली, हंस वाहिनी, चार भुजा वाली है हाथों में धनुष, बीजोरा फल बाण और वरदान धारण करने वाली है। चित्र नं० २८।

क्षेत्रपाल ४ स्वभाव नामा, पर भाव नामा, अनीपम्य, सहजानन्द।

१५. श्री धर्मनाथजी (वज्र का चिन्ह)

“किन्नर यक्ष”—मूंगे (प्रवाल) के वर्णमाला मछली की सवारी करने वाला, त्रिमुख और छह भुजा वाला है बाए हाथों में फरसा वज्र और अंकुश तथा दाहिने हाथ में मुग्धर माल, और वरदान को धारण करने वाला है। चित्र नं० २९।

“मानसी यक्षिणी”—मूंगे जैसी लाल कान्ति वाली व्याघ्र की सवारी करने वाली, छह भुजा वाली है। हाथों में कमल, धनुष वरदान, अंकुश बाण और कमल को धारण करने वाली है। चित्र नं० ३०।

क्षेत्रपाल - ४ धर्मकर, धर्मकारी, सातकर्मा (सात कर्मका) विनय नाम।

१६. श्री शान्तिनाथजी (हरिन का चिन्ह)

“गरुड यक्ष”—कृष्ण वर्ण वाला टेढ़ा मुख वाला (सूवर का सा मुँह वाला) सूवर की सवारी करने वाला चार भुजा वाला है। नीचे के दोनों हाथों में कमल और फल तथा ऊपर के दोनो हाथों में वज्र और चक्र लिए हुये है। चित्र नं० ३१।

“महामानसी (कंवर्पा) यक्षिणी”—सयूर बाहिनी चार भुजा वाली तथा स्वर्ण के समान वर्ण वाली है। हाथों में चन्द्र, फल, वज्र और वरदान को धारण करने वाली है। चित्र नं० ३२।

क्षेत्रफल—४ सिद्धसेन, महासेन, लोक सेन, विनय केतु।

१७. श्री कुन्धनाथ जी (बकरे का चिन्ह)

“मध्वं यक्ष”—कृष्णा वर्ण वाला, पक्षी की सवारी करने वाला तथा चार भुजा वाला है। ऊपर के दोनों हाथों में नागपाश नीचे दोनों हाथों में क्रमशः धनुष और बाण है। चित्र नं० ३३।

“जया गान्धारी” यक्षिणी—स्वर्ण वर्ण वाली, काले सूअर की सवारी करने वाली चार भुजा वाली है हाथों में चक्र शंख, तलवार और वरदान को धारण करने वाली है। चित्र नं० ३४।

क्षेत्रपाल ४ यक्षनाथ, भूमिनाथ, देशनाथ, अवनिनाथ।

१८. श्री अरहनाथजी (मत्स्य का चिन्ह)

“रवगोत्र यक्ष”—शंख की सवारी करने वाला त्रिनेत्र तथा बृह मुख वाला है बाण हाथों में क्रमशः धनश, कमल, माला, बीजोराफल, बटी यक्ष माला और अभय को धारण करने वाला है। चित्र नं० ३५।

“तारावती यक्षिणी”—स्वर्ण वर्ण वाली हंस बाहुनी, चार भुजा वाली है। हाथों में सर्प हरिण वज्र और वरदान को धारण करने वाली है। चित्र नं० ३६।

क्षेत्रपाल ४ गिरिनाथ, गङ्गारनाथ, वरुणनाथ मंत्रनाथ।

१९. श्री मल्लिनाथजी (कलश का चिन्ह)

“कुबेर यक्ष”—इन्द्र धनुष जैसे वर्ण वाला, गज बाहिनी चार मुख आठ हाथ वाला है।

“अपराजिता देवी यक्षिणी”—हरित वर्ण वाली, अष्टापद की सवारी करने वाली चार भुजा वाली, हाथों में ढाल फल तलवार और वरदान को धारण करने वाली है। चित्र नं० ३८।

क्षेत्रपाल—४ क्षितिप, भवप, क्षातिप, क्षेत्रप (यक्षप)।

२०. श्री मुनिमुश्रतनाथजी (कच्छप का चिन्ह)

“वरुण यक्ष”—श्वेत वर्ण तथा बैल की सवारी करने वाला जटा के मुकुट वाला, आठ मुख वाला, प्रत्येक मुख तीन तीन नेत्र वाला और चार भुजा वाला है। बाएँ हाथ में ढाल और फल तथा दाहिने हाथ में तलवार और वरदान है। चित्र नं० ३६।

“बहुरुपिणी (सुगन्धो देवी) यक्षिणी”—पीत वर्ण, कृष्ण सर्प की सवारी करने वाली और चार भुजा वाली है हाथों में ढाल फल तलवार और वरदान धारण करने वाली है। चित्र नं० ४०।

क्षेत्रपाल—४ तंदराज, गुणराज, कल्याणराज, भव्यराज।

२१. श्री नमिनाथजी (नील कमल का चिन्ह)

“अक्रुति यक्ष”—रक्त वर्ण वाला, बैल की सवारी करने वाला चार मुख तथा आठ हाथ वाला, हाथों में ढाल, तलवार, धनुष, बाण, अंकुश कमल चक्र और वरदान है। चित्र नं० ४१।

“चामुण्डा (कुमुदमालिनी) यक्षिणी”—हरित वर्ण वाली मगर की सवारी करने वाली चार भुजा वाली, हाथों में दण्ड, ढाल, माला और तलवार है। चित्र नं० ४२।

क्षेत्रपाल ४ कपिल, घटुक, भैरव, भैरव, सल्लाकारव्य।

२२. श्री नेमिनाथजी (शंख का चिन्ह)

“गोमेद यक्ष”—कृष्ण वर्ण वाला तीन मुख तथा पुष्प के आसन वाला मनुष्य की सवारी करने वाला और छह हाथ वाला है हाथों में मुदर फरसा, दण्ड, फल, चक्र और वरदान है। चित्र नं० ४३।

“आम्ना (कुष्माण्डनी) यक्षिणी”—सिंह वाहनी आम की छाया में रहने वाली दो भुजा वाली है बाएँ हाथ में धिय पुत्र की प्राप्ति के लिए आम्ना को लूम को धारण करने वाली है तथा दाहिने हाथ में शुभकर पुत्र को धारण करने वाली है। चित्र नं० ४४

क्षेत्रपाल ४ कौकल, खगनाम, त्रिनेत्र कलिंग।

२३. श्री पार्ष्वनाथजी (सर्प का चिन्ह)

“धरणेश्वर यक्ष” आकार के समान नीले वर्णवाला, कछुआ की सवारी करने वाला,

मुकुट में सर्प का चिन्ह और चार भुजा वाला है। ऊपर के दोनों हाथों में सर्प और व नीचे के बाएँ हाथ में नागपाश और दाहिने हाथ में वरदान को धारण करने वाला है। चित्र नं० ४५।

“परमावती देवी यक्षिणी”—कमल (आशाधर पाठ में कुक्कुट) सर्प की सवारी करने वाली कमलासानी माना है मस्तक पर सर्प के तीन फणों के चिन्ह वाली माना है। मल्लि-
षेणाचार्य कृत परमावती कल्प में चारों हाथों में पाश फल वरदान को धारण करने वाली भी माना है। प्रकारान्तर में छह और चौबीस भुजा वाली भी माना है। छह हाथों में पाश, तलवार, भाला वाल चन्द्रमा गदा और मूसल को धारण करती है। तथा २४ हाथों में शंक तलवार, चक्र, बाल चन्द्रमा, सफेद कमल, लाल कमल, धनुष, शक्ति, पाश, अंकुश, घंटा, बाण, मूसल, डाल त्रिशूल, फरसा वज्र, माला, फल, गदा पान नवीन। पत्तों का गुच्छा और वरदान को धारण करने वाली है। चित्र नं० ४६।

क्षेत्रपाल ४ कीर्तिधर, स्मृतिधर, विनयधर, अञ्जधर (ग्रन्थारव्य)।

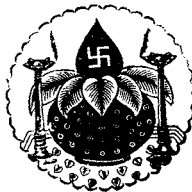
२५. श्री महावीरजी (सिंह का चिन्ह)

“मातंग यक्ष”—मूँ के जैसे वर्ण वाला, गज वाहन मस्तक पर धर्म चक्र को धारण करने वाला और दो भुजा वाला है। बाएँ हाथ में विजोराफल, दाहिने हाथ में वरदान है। चित्र नं० ४७।

“सिद्धायिक यक्षिणी”—स्वर्ण के समान वर्ण वाली भद्रासनी, सिंहवाहनी, दो भुजा वाली बाएँ हाथ में पुस्तक व दाहिने हाथ में वरदान युक्त है। चित्र नं० ४८।

क्षेत्रपाल ४ कुमुद, अञ्जन, चामर, पुष्पदत्ता।

॥ इति ॥





गंगवि यक्ष मं. ३३



महाभारत यक्षणी मं. ३४



लक्ष्मी यक्ष मं. ३५



राजपक्ष यक्षणी मं. ३६



कृष्ण उग्र स् ५०



कृष्ण उग्र स् ५०



कृष्ण उग्र स् ५०



कृष्ण उग्र स् ५०



శ్రీ వేంకటేశ్వర స్వామి



శ్రీ వేంకటేశ్వర స్వామి



శ్రీ వేంకటేశ్వర స్వామి



శ్రీ వేంకటేశ్వర స్వామి



शरणोट्ट यक्ष नं. ४५.



जगन्नाथ यक्ष यक्षणी नं. ४५५



प्रागङ्ग यक्ष नं. ४७



महागिरीय देवी नं. ४८६

अष्टमातृका स्वरूप वर्णन

१-(ब्रह्माणी) देवी पद्मराग वर्णवाली, पद्मवाहन, मूसल का आयुध धारण करने वाली है ।

२-(माहेश्वरी देवी) मुकुट का वाहन, दंड और वरदान, आयुध को धारण करने वाली और श्वेतवर्ण वाली है ।

३-(कौमारिदेवी) विद्रुम वर्ण वाली, मयूर का वाहन (खड्ग) तलवार का आयुध धारण करने वाली है ।

४-(वैष्णविदेवि) इन्द्रनील वर्ण वाली, चक्रायुध धारण करने वाली, और गरुड वाहन वाली है ।

५-(वाराहिदेवी) नील वर्ण वाली, वराहका (मुकर) वाहन वाली, हनु का आयुध धारण करने वाली है ।

६-(इन्द्राणि देवी) सुवर्ण वर्ण वाली, वज्रायुध धारण करने वाली, हाथी का वाहन वाली है ।

७-(चामुंडिदेवी) अरुण वर्ण वाली, व्याघ्र वाहन वाली, शक्ति आयुध को धारण करने वाली है ।

८-(महालक्ष्मीदेवी) सर्वलक्षणों से पूर्ण गदा का आयुध, चूहों का वाहन, और श्वेत वर्ण ।

अष्टजयाद्यादेवता स्वरूप

१-(जयादेवी) पाश, असि, खटक, और फल, सोने के समान वर्ण वाली, पीतांबर को धारण करने वाली, फूल की माला पहने हुये, चार भुजा वाली ।

२-(विजयादेवी) छह हाथ वाली कोदंड, बाण, असि, गदा, सरोज, फल, के आयुध धारण करने वाली रक्त वर्ण वाली, रक्ताम्बर वाली ।

३-(अजितादेवी) श्वेत वर्ण वाली, सुवर्ण वस्त्र, मत्स्य का वाहन, दो भुजा वाला, एक हाथ में कृपाण एक हाथ फल ।

४-(अपराजितादेवी) कृष्ण वर्ण वाली, कृष्णांबर धारण करने वाली ६ भुजा वाली खेट, कृपाण रूचक, अभय, गदा, पाश, के आयुध को धारण करने वाली ।

५-(जंभादेवी) लाल वस्त्र को धारण करने वाली, श्वेत वर्ण वाली, अष्ट भुजा वाली, धनुष, बाण, कृपाण, गदा, वर, माला, फल, अंबुरुह ।

६-(मोहादेवी) रक्तवर्ण वाली, श्वेत वस्त्र को धारण करने वाली, सिंहाधिरूढ, चार भुजा वाली, माला, अभय, अंभोज, (कमल), वरद, को धारण करने वाली है ।

७-(स्तंभादेवी) सूर्व वर्ण वाली, लाल वस्त्र को धारण करने वाली, हाथी की सवारी, छह हाथ वाला, खड्ग, त्रिशूल, उत्तल, मातुलिंग, वरद, अभय के आयुध वाली है ।

८-(स्तंभिनीदेवि) रक्तवर्ण वाली, लाल वस्त्र को धारण करने वाली, ४ भुजा वाली, फल, ग्रसि, पुत्रीपरिका, अभय के आयुधों को धारण करने वाली, द्विरदाधिरूढ ।

सोलह विद्या देवियों के नाम

रोहिणी १ प्रजापते २ वज्र शृंखला ३ वज्रांकुशे ४ अप्रतिचके ५ पुरुषदत्ता ६ कालि ७ महाकालि ८ गान्धारि ९ गौरि १० ज्वालामालिनि ११ वैरोटि १२ अच्युते १३ अपराजिते १४ मानसि १५ महामानसि १६ ।

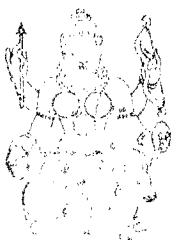
सोलह विद्या देवियों के वाहन व आयुध २४ यक्षिणीचो अन्तर्गत ही है इसलिये अलग से नह दिया है । २४ यक्षिणों के चित्र रहित वर्णन किया है ।

चतुःषष्टि योगिनीयों के नाम

दिश्वयोगिनी १ मह योगिनी २ त्रिद्वयोगिनी ३ जिनेश्वरी ४ प्रेताशी ५ डाकिनी ६ कालो ७ कानरात्रि ८ निशाचरो ९ हुँकारी १० सिद्धवंताली ११ ह्रींकारी १२ भूतडामरी १३ ऊर्ध्वकेशो १४ विरूपाक्षो १५ शुक्लाङ्गी १६ नरभोजिनी १७ पटुकारी १८ खोरभद्रा १९ घृष्णाक्षी २० कलहत्रिया २१ राक्षसी २२ धोररक्ताक्षी २३ विश्वरूपा २४ भयंकारी २५ वैरी २६ कुमारिका २७ चण्डि २८ वाराही २९ मुण्डधारिणी ३० भास्करी ३१ राष्ट्रंकारी ३२ भीषणी ३३ त्रिपुरान्तका ३४ रौरवी ३५ ध्वंसिनी ३६ क्रोधा ३७ दुर्मुखी ३८ प्रेतवाहनी ३९ खट्वाङ्गी ४० दीर्घलंबोष्ठी ४१ मालिनी ४२ मन्त्रयोगिनी ४३ कालिनी ४४ ब्राहिनी ४५ चक्री ४६ कंकालि ४७ भुवनेश्वरी ४८ कटी ४९ निकटी ५० माया ५१ वामदेवाकपदिनी ५२ केशमर्दी ५३ रक्ता ५४ रामजंघा ५५ महर्षिणी ५६ विशाली ५७ कामुकी ५८ लोलाका



१. श्रीशक्ति (दिगम्बर)



२. श्रीशक्ति (श्वेताम्बर)



३. श्रीशक्ति (दिगम्बर)



४. श्रीशक्ति (श्वेताम्बर)



५. श्रीशक्ति (दिगम्बर)



६. श्रीशक्ति (श्वेताम्बर)



4. 2. 1947 (1. 1. 1948)



4. 2. 1947 (1. 1. 1948)



4. 2. 1947 (1. 1. 1948)



4. 2. 1947 (1. 1. 1948)



4. 2. 1947 (1. 1. 1948)



4. 2. 1947 (1. 1. 1948)



Figure 1

Figure 1

Figure 1

Figure 1

Figure 1

Figure 1

Figure 1

Figure 1

Figure 1

Figure 1

Figure 1

Figure 1

Figure 1

Figure 1

Figure 1

Figure 1

Figure 1

Figure 1

Figure 1

Figure 1

Figure 1

Figure 1

Figure 1

Figure 1



Figure 2

Figure 2

Figure 2

Figure 2

Figure 2

Figure 2

Figure 2

Figure 2

Figure 2

Figure 2

Figure 2

Figure 2

Figure 2

Figure 2

Figure 2

Figure 2

Figure 2

Figure 2

Figure 2

Figure 2

Figure 2

Figure 2

Figure 2

Figure 1

Figure 2



१०. कर्तव्येश्वर (चित्र-१)



११. कर्तव्येश्वर (चित्र-२)



१२. कर्तव्येश्वर (चित्र-३)



१३. कर्तव्येश्वर (चित्र-४)



१३. वेङ्कट (विज.)



१४. वेङ्कट (विज.)



१५. वेङ्कट (विज.)



१६. वेङ्कट (विज.)



१७. वेङ्कट (विज.)



१८. वेङ्कट (विज.)



१२ महाभयवती (११०)



१३ महाभयवती (११०)

ॐ वि० सेनपन्नाशानिनाथसेनभक्तये ॐ



दृष्टि रघोमुखी ५६ मञ्जोयधारिणी ६० व्याघ्री ६१ भूतादिघ्रेत नाशिनी ६२ शैरवी, महामाया ६३ कपालिनी वृषाङ्गनी ६४ ।

यक्ष अथवा यक्षिणीयों की पंचोपचारी पूजा का क्रम

प्रथम सकलीकरण करे, फिर अष्टद्रव्य सामग्री शुद्ध अपने हाथ से धोकर, यक्ष अथवा यक्षिणी की पंचोपचारी पूजा भक्ति से श्रद्धानपूर्वक करे ।

ॐ आं क्रों ह्रीं नमोऽस्तु भगवति अमुक यक्ष अथवा अमुक यक्षिणी एहि २ सवीषद् ।

इति आह्वान मंत्र

ॐ आं क्रों ह्रीं नमोऽस्तु, भगवती, अथवा, भगवते, अमुक यक्ष, अथवा अमुक यक्षिणी, तिष्ठ २ ठः ठः

इतिस्थापन मंत्र

ॐ आं क्रों ह्रीं नमोऽस्तु भगवति, अथवा, भगवते, अमुक यक्ष, अथवा अमुक यक्षिणी, ममसन्निहिता भव २ वषद् ।

इति सन्निधीकरण मंत्र

ॐ आं क्रों ह्रीं नमोऽस्तु भगवति अथवा भवावते, अमुकयक्ष अथवा अमुक यक्षिणी, जल-गंध अक्षत् पुष्पादिकान् गृह्ण २ नम ।

उपरोक्त मंत्र से प्रत्येक द्रव्य को चढ़ाते समय उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करे । प्रत्येक द्रव्य से पूजा हो जाने के बाद विसर्जन करे ।

इति द्रव्य अर्पण मंत्र

ॐ आं क्रों ह्रीं नमोऽस्तु, भगवति अथवा भगवते, यक्ष, अथवा अमुक, यक्षिणी रवस्थान गच्छ २ जः जः जः ।

इति विसर्जन मंत्र

इस प्रकार यक्ष अथवा यक्षिणी की पूजा करनी चाहिये ।

होम विधि

पहले शकलीकरण के बाद होम शुरू करे

तद्यथा—ॐ ह्रीं क्षीं भु स्वाहा पुष्पाञ्जलिः ॥ १ ॥

इस तरह के मन्त्र जाप के विधान को पूर्ण कर दशांस अग्नि होम करे इसका विधान इस प्रकार है ।

“ॐ ह्रीं क्षीं” इस मन्त्र का उच्चारण कर पुष्पाञ्जलि क्षेपण करे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अत्रस्थ क्षेत्रपालाय स्वाहा ॥ क्षेत्रपालबलिः ॥ २ ॥

इस मन्त्र का उच्चारण कर क्षेत्रपाल को बलि देवे ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं वायु कुमाराय सर्व विघ्नविनाशनाय महीं पूतां कुरु कुरु हं फट् स्वाहा ॥ भूमि सम्मार्जनम् ॥ ३ ॥

इस मन्त्र को पढ़कर भूमिका सम्मार्जन-सफाई करे ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं मेघ कुमाराय धरा प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं तं पं स्वं अं अं यं क्षः फट् स्वाहा ॥ भूमि सेचनम् ॥ ४ ॥

यह मन्त्र पढ़कर भूमि पर जल सींचे ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं अग्नि कुमाराय हं ह्यूर्ध्वं ज्वल उज्ज्वल तेजः पतये अमित तेज से स्वाहा ॥ दर्भाग्निप्रज्वालनम् ॥ ५ ॥

यह मन्त्र पढ़कर दर्भ से अग्नि सुलगावे ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं कौं षण्ठि सहस्र संख्येभ्यो नामेभ्यः स्वाहा नागतपणम् ॥ ६ ॥

इस मन्त्र का उच्चारण कर नागों की पूजा करे ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं भूमिदेवते इदं जलादिकमर्चनं गृहाण स्वाहा । भूम्यर्चनम् ॥ ७ ॥

यह मन्त्र पढ़कर भूमि की पूजा करे ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं अं हं अं वं वं श्रीं पीठ स्थापनं करोमि स्वाहा ॥ होम कुण्डा-
ऽऽव्यक्त पीठ स्थापनम् ॥ ८ ॥

इस मन्त्र का उच्चारण कर होम कुण्ड से पश्चिम की ओर पीठ स्थापन करे ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं समदर्शनज्ञानः चारित्र्येभ्यः स्वाहा ॥ श्री पीठार्चनम् ॥ ९ ॥

इस मन्त्र को पढ़कर पीठ की पूजा करे ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अं हं जगतां सर्व शान्तिं कुर्वन्तु श्री पीठे प्रतिमास्था-
पनम् करोमी स्वाहा ॥ श्री पीठे प्रतिमास्थापनम् ॥ १० ॥

यह मन्त्र पढ़कर श्री पीठ पर प्रतिमा स्थापन करे ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं अहं नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं अहं नमः परमात्म-
केभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं अहं नमोऽनाधिनिधनेभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं नमो
नृसुरासुर पूजितेभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं अहं नमोऽनन्तज्ञानेभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं
अहं नमोऽनन्त दर्शनभ्यः स्वाहा ॐ ह्रीं अहं नमोऽनन्तबोयेभ्यः स्वाहा ॥
ॐ ह्रीं अहं नमोऽनन्त सौख्येभ्यः स्वाहा इत्यष्टमिर्मन्त्रेः प्रतिमार्चनम् ॥ ११ ॥

इन आठ मन्त्रों का उच्चारण कर प्रतिमा की पूजा करना चाहिये ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं धर्म चक्रायों प्रतिहत तेज से स्वाहा ॥ चक्रत्रयार्चनम् ॥ १२ ॥

इस मन्त्र को पढ़कर तीनों मन्त्र से चक्रों की पूजा करे ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं श्वेतच्छत्रत्रयभिर्यं स्वाहा ॥ छत्रत्रय पूजा ॥ १३ ॥

इस मन्त्र का उच्चारण कर छत्र त्रय की पूजा करे ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं ह्रसौं २ सर्वं शास्त्र प्रकाशनि बद् बद् बाग्वादिनी
अवतर अवतर । अश्च तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः संनिहिता भव भव वषट् क्लूं नमः
सरस्वत्यै जलं निर्वपामि स्वाहा ॥ एवं गन्धा क्षत पुष्प चरु दीप धूप फल व
स्त्राभरणादिकम् । प्रतिमां च सरस्वती पूजा ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं इत्यादि मन्त्र पढ़कर सरस्वती का आव्वाहन स्थापन और सन्निधिकरण
करे "क्लूं" इत्यादि पढ़कर जल गन्ध अक्षत पुष्प नवर्ध दीप धूप फल और वस्त्राभरणादिकसे
प्रतिमा के सामने सरस्वती की पूजा करे ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनं ज्ञानं चारित्र्यं पवित्रतरगात्रं चतुर शीत लक्षणं
गुणाष्टा दश सहस्र शीलं गणधरचरणाः आगच्छत २ संवौषट् इत्यादि गुरु
पादुका पूजा ॥ १५ ॥

"ॐ ह्रीं" इत्यादि पढ़कर गणधरो की पादुका की पूजा करे ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं कलियुग प्रबन्धं दुर्मार्गं विनाशनं परमं सम्मार्ग-परिपालनं
भगवन् यक्षेद्वरं जलार्पणं गृहाण गृहाण इत्यादि जिनस्य दक्षिणे यक्षा-
र्चनम् ॥ १६ ॥

"ॐ ह्रीं" इत्यादि पढ़कर जिन भगवान के दक्षिण की ओर यक्षों की पूजा
करे ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं कलिपुग प्रबन्ध दुमार्ग विनाशिन सन्मार्ग प्रवर्तिनि भगवती यक्षी
देवते जलाद्यर्चनं गृहाण गृहाण । हस्त्यादि वामे शासन देवतार्चनम् ॥ १७ ॥

यह मन्त्र पढ़कर जिन भगवान की बाईं ओर शासन देवताओं की पूजा करे ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं उपवेशनभूः शुधतु स्वाहा ॥ होम कुंड पूर्व भागे दर्भपूलेनोपवेशन
भूमि शोधनम् ॥ १८ ॥

यह मन्त्र पढ़कर होम कुंड के पूर्व भाग में दर्भ के पूले से बैठने की जमीन को
शुद्ध करे ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं पर ब्रह्मणे नमो नमः ब्रह्मासने अहमुपविशामि स्वाहा । होम
कुण्डाग्रे पश्चिमामिमुखं होता उपयिषेत् ॥ १९ ॥

यह मन्त्र पढ़कर होता (होम करने वाला) होम कुंड के अग्र भाग में पश्चिम की
ओर मुख करके बैठे ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये पुण्याहकलशं स्थापयामि स्वाहा ॥

शाली पूज्योपरि फल सहित पुण्याह कलश स्थापनम् ॥ २० ॥

यह मन्त्र पढ़कर चावलो के ढेर पर पुण्यावाचन के कलश स्थापन करे और उनके
ऊपर नागियन आदि कोई सा फल रखे ॥ २० ॥

ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्ममहा पद्मतिर्गीच्छ केसरि पुण्डरिक
महापुण्डरिक गङ्गा सिन्धु रोहिद्रोहिता स्याहरिद्वरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नर
कान्ता सुवर्ण रूप्य कूलारक्तारक्तोदा पयोधि शुद्ध जल सुवर्ण घट प्रक्षालित वर
रत्न गन्धाक्षत पुष्पा चितमा मोदकं पवित्रं कुरु कुरु शं शं भौं शौ वं वं मं मं
हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः इति जलेन प्रसिञ्चय जल पवित्री
करणम् ॥ २१ ॥

यह मन्त्र पढ़कर जल सींचकर पूजा करने के जल को पवित्र करे ॥ २१ ॥

मन्त्र :—ॐ ह्रीं नेत्राय संबौषट्म ॥ कलशार्चनम् ॥ २२ ॥

यह मन्त्र बोलकर कलशों की पूजा करे ॥ २२ ॥

ततो यजमानाचार्यः वाम हस्तेन कलशं धृत्वां सव्यहस्तेन पुण्यहवाचनां
पठित्वा कलशं कुंडरय दक्षिणे भागे निवेशयेत् ॥ २३ ॥

इसके बाद यजमान आचार्य बांये हाथ में कलश लेकर दाहिने हाथ से पुण्याहवाचन को पढ़ता हुआ भूमि का सिंचन करे ॥ २३ ॥ और पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्ता प्रीयन्ता इत्यादि पुण्याहवाचन को पढ़ता हुआ कलश को कुण्ड के दाहिने भाग में स्थापन करे ॥ २३ ॥

ततः ॐ ह्रीं स्वस्तये मङ्गलकुंभं स्थापयामि स्वाहा वामे मङ्गलकलशं स्थापनं तत्र स्थालि पाक प्रोक्षण पात्र पूजाद्रव्य होम द्रव्य स्थापनम् ॥ २४ ॥

इसके बाद “ ॐ ह्रीं स्वस्तये ” इत्यादि पढ़कर कुण्ड के बांये भाग में कलश स्थापन करे और वही पर स्थालीपाक गन्ध पुष्प अक्षत फल इत्यादि को से सुसोभित पांच पंच पात्री प्रोक्षणपात्र, पूजाद्रव्य और होम द्रव्य को स्थापन करे ॥ २४ ॥

ॐ ह्रीं परमेष्ठिन्यो नमो नमः इति परमात्म ध्यानम् ॥ २५ ॥

इसे पढ़कर परमात्मा का चिन्तन करे ॥ २५ ॥

ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं ध्यातुं भिरभीप्सित फलदेभ्यः स्वाहा परम पुरुष स्याध्यं प्रदानम् ॥ २६ ॥

यह पढ़कर परमात्मा को अर्घ्य दे ॥ २६ ॥

तत इदं यन्त्रं कुण्ड मध्ये लिखेत् ॐ ह्रीं नीरज से नमः ॐ दर्पमथनाय नमः । इत्यादि ॥ जलदर्भं गन्धाक्षतादिभि होम कुण्डार्चनम् ॥ २७ ॥

इसके बाद कुण्ड के बीच में ॐ ह्रीं नीरज से नमः ॥ “दर्पमथनाय नमः” इत्यादि जिस पीछे पूर्ण निब आये है उन मन्त्र को लिखे जल गन्ध अक्षत दर्भ आदि से होम कुण्ड को अर्चना करे ॥ २७ ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं अग्नि स्थापयामि स्वाहा ॥ अग्नि स्थापनम् ॥ २८ ॥

इसे पढ़कर कुण्ड में अग्नि की स्थापना करे ॥ २८ ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं दर्भ निक्षिप्य अग्निसन्धुक्षणं करोमी स्वाहा ॥ २९ ॥

यह पढ़कर कुण्ड में दर्भ डालकर अग्नि जलावे ॥ २९ ॥

ॐ ह्रीं क्ष्वीं क्ष्वीं वं मं हं सं तं पं द्रां द्रां हं सः स्वाहा ॥ आम नमः ॥ ३० ॥

यह मन्त्र पढ़कर आचमन करे ॥ ३० ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अति आ उ सा अहं प्राणायामं करोमि स्वाहा ॥
त्रिरुच्चार्य प्राणायाम् ॥ ३१ ॥

इस मन्त्र का तीन बार उच्चारण कर प्राणायामः करे ॥ ३१ ॥

ॐ नमोऽर्हते भगवते सत्यवचनसन्धर्भाय केवल ज्ञान दर्शनप्रज्वलनाय
पूर्वीतराग्रं धर्मं परिस्तण्णमुदुम्बरं समित्परिस्तरणं च करोमि स्वाहा ॥ होम
कुण्डस्य चतुर्भुजेषु पञ्च पञ्च धर्मं वेष्टितेन परिधि बन्धनम् ॥ ३२ ॥

“ॐ नमोऽर्हते” इत्यादि पढ़कर कुण्ड के चारों कोनों पर पांच पांच धर्म को एक साथ
बांधकर परिवन्धन करे, दक्षिण और उत्तर के कोने पर रखे हुये धर्मों की नीके पूर्व दिशा की
ओर करे और पूर्व पश्चिम के कोने पर रखे धर्मों की नीके उत्तर की ओर करे ॥ ३२ ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं अग्नि कुमार देव आगच्छ आगच्छ इत्यादि ।

इत्यादिवेव माह्व प्रसाद्य तन्मौल्युद्भवस्याग्नेरस्य गार्हपत्येनामधेयमन्त्र
संकल्प्य अर्हदिव्यमूर्तिभावनया श्रुद्धानरूपदिव्य शक्ति सम्पन्नित सम्पद्दर्शन
भावनया समभ्यर्चनम् ॥ ३३ ॥

“ॐ ॐ ॐ ॐ” इत्यादि मन्त्र पढ़कर अग्नि देव (अग्नि कुमार) का आह्वान करे
उसे प्रसन्न करे, अर्थात् अग्नि जलावे, ‘गार्हपत्य’ इस नाम की कल्पना करे और अर्हन्त भगवान्
की दिव्य मूर्ति की तथा श्रुद्धान रूप दिव्य शक्ति युक्त सम्पद्दर्शन की भावना कर पूजा
करे ॥ ३३ ॥

ॐ ह्रीं क्रौं प्रशस्त वर्ण सर्वं लक्षण सम्पूर्णं स्वायुध वाहन वधूचिन्ह
सपरिवाराः पञ्चदश तिथिदेवताः आगच्छत आगच्छत इत्यादि कुण्डस्य प्रथम-
मेखलायामं तिथि देवतार्चनम् ॥ ३४ ॥

“ॐ ह्रीं क्रौं” इत्यादि मन्त्र का बोलकर कुण्ड की प्रथम मेखला पर प्रन्द्रह तिथि
देवताओं की पूजा करे ॥ ३४ ॥

“ॐ ह्रीं क्रौं” प्रशस्तवर्णसर्वं लक्षणसम्पूर्णस्वायुध वाहन वधू चिन्हस
परिवारा नवग्रह देवता आगच्छत आगच्छत इत्यादि । उर्ध्वमेखलायां द्वात्रिंशदि
दिन्द्रार्चनम् ॥ ३५ ॥

यह मन्त्र पढ़कर तीसरी मेखला पर बत्तीस इन्द्रों की पूजा करे ॥ ३५ ॥

ॐ ह्रीं क्रीं स्वर्णं सुवर्णवर्णं सर्वं लक्षणं सम्पूर्णं स्वायुधं वाहनवधू चिन्हं
सपरिवारं इन्द्रदेवं आगच्छा अगच्छेत्यादि इन्द्रार्चनम् ॥ ३६ ॥

एवं लघु पीठेषु दशदिक्पाल पूजा करे ॥ ३६ ॥

ततः ॐ ह्रीं स्थालीपाकं मुपहयमि स्वाहा । पुष्पाक्षतैरुपहार्यं स्थाली
पाकं ग्रहणम् ॥ ३७ ॥

इसके बाद “ॐ ह्रीं स्थालीपाकं मुपहयमि स्वाहा” यह पढ़कर पुष्पाक्षतों से भरकर
स्थाली पाक को अपने पास रखे ॥ ३७ ॥

ॐ ह्रीं होमं द्रव्यं मादधामि स्वाहा । ॥ होमं द्रव्याधानम् ॥ ३८ ॥

इसे पढ़ कर होम द्रव्य अपने पास रखे ।

ॐ ह्रीं आज्यपात्रस्थापनम् ॥ ४० ॥

यह पढ़ कर होम करने के घी को अपने पास रखे स्थापन करे ॥ ४० ॥

ॐ ह्रीं स्वमुपस्करोमि स्वाहा ॥ स्तुववस्तापनं मार्जनं जलंसेवनं पुन-
स्तापनमग्रे निधापनं च ॥ ४१ ॥

यह मन्त्र पढ़ कर स्तुत (सूची) अर्थात् घी होमने के पात्र का संस्कार इस प्रकार करे
कि प्रथम उसे अग्नि पर तपावे, सेकें इसके बाद उसे पीछे इसके बाद उस पर जल सींचे पुनः
अग्नि पर तपावे और अपने सामने रखे ॥ ४१ ॥

ॐ ह्रीं स्तुवमुपस्करोमि स्वाहा ॥ स्तुवस्थापनं तथा ॥ ४२ ॥

यह मन्त्र बोलकर स्तुव अर्थात् होम सामग्री को होमने के पात्र को सूची की तरह
संस्कार करे, स्थापना करे ॥ ४२ ॥

ॐ ह्रीं आज्यामुद्रासयामि स्वाहा ॥ दर्भपिण्डोज्ज्वलेन आज्यस्यो द्वाशनं
मुत्पाचनमवेक्षणं च ॥ ४३ ॥

यह मन्त्र पढ़ कर घी को तपावे वह इस तरह कि दर्भ के पूले को जलाकर घी को
उठावे उत्पाचन (तपावे) और अववेक्षण (देखे) करे ॥ ४३ ॥

ॐ श्रीं पवित्रतरं जलेन द्रव्यशुद्धिं करोमि स्वाहा होमं दुष्टां प्रोक्ष-
णम् ॥ ४४ ॥

यह मन्त्र पढ़ कर द्रव्य शुद्धि करे ॥ ४४ ॥

ॐ ह्रीं कुशमादवामि स्वाहा । दर्मपूलमादाय सर्वद्रव्य स्पर्शनम् ॥४५॥

यह मन्त्र पढ़ कर दर्भ के पूले को उठाकर सब द्रव्य से छुवावे ॥४५॥

ॐ ह्रीं परम पवित्राय स्वाहा ॥ अनामिकांगुल्यां पवित्रधारणं ॥४६॥

यह मन्त्र पढ़ कर अनामिका उंगली में पवित्र पहिने ॥४६॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय स्वाहा ॥ यज्ञोपवीतधारणम् ॥४७॥

यह मन्त्र पढ़ कर यज्ञोपवित पहने ॥४७॥

ॐ ह्रीं अग्निकुमाराय परिषेचनं करोमि स्वाहा । अग्निपर्युक्षणम् ॥४८॥

यह मन्त्र पढ़ कर कुंड के चारों ओर पानी की धार छोड़े ॥४८॥

ततः ॐ ह्रीं अहं अहंस्तिकेवल्यभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं पञ्चदशतिथि-
देवेभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं नवग्रहदेवेभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं द्वात्रिंशदिन्द्रेभ्यः
स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं दशलोकपालेभ्यः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं अग्नीन्द्राय स्वाहा षडेतात्
मन्त्रानष्टादशकृत्वः पुनरावर्तनेनोच्चारयन् स्त्रुवेणप्रत्येक माज्याहुतिं कुर्यादित्या-
ज्याहुतयः ॥४९॥

इसके बाद “ॐ ह्रीं अहं” इत्यादि छह मन्त्र को अठारह बार दोहरा कर बोले प्रत्येक मन्त्र को बोल कर सूची घृताहुति करे । इस तरह एक सौ आठ आहुति हो जाती है इसे घृताहुति कहते हैं ॥४९॥

ॐ ह्रीं अहंत्परमेष्ठिनस्तर्पयामि स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिनस्तर्प-
यामि स्वाहा ॥ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिनस्तर्पयामि स्वाहा ॥ ॐ ह्रः सर्वसाधुपर-
मेष्ठिनस्तर्पयामि स्वाहा ॥ अवान्तरे पञ्चतर्पणानि “ॐ ह्रीं” इत्यादि मन्त्र पढ़ कर
मध्य में पाँच तर्पण करे ॥५०॥

यह तर्पण हर एक द्रव्य का हो और हाँम हो चुकने के बाद किया जाता है । इसलिये इसे अवान्तर तर्पण कहते हैं ।

ॐ ह्रीं अग्नि परिषेचयामि स्वाहा ॥ क्षीरेणाग्निपर्युक्षणम् ॥५१॥

यह मन्त्र पढ़ कर अग्नि को दूध की धार देवे ॥५१॥

अथ समिधाहुतयः ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्रं असि आउसा स्वाहा ॥ अनेन मन्त्रेण
समिधाहुतयः करेण होतव्याः इति समिधा होम १०८ ॥ ततः षडाज्या हुतयः पञ्च तर्पणानि
पर्युक्षणच ॥५१॥

अब समिधाहुति कहते हैं । “ॐ ह्रीं” इत्यादि मन्त्र के द्वारा हाथ से समिधा की एक सौ स्राट आहुतियाँ देवे । मन्त्रोच्चारण भी एक सौ आठ बार करे, इसके बाद पूर्वोक्त छह धृताहुति देवे । पाँच तर्पण करे और अग्नि पर्युक्षण करे । अग्नि के चारों ओर दूध की धार देने को पर्युक्षण कहते हैं ॥५२॥

अथ लवगाद्यातुय ॥ ॐ ह्रीं अहंवभ्य स्वाहा । ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यः स्वाहा ॐ ह्रीं सूरभ्य स्वाहा । ॐ ह्रीं पाठकेभ्य स्वाहा ॐ ह्रीं सर्व साधुभ्य स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं जिन धर्मेभ्यः स्वाहा ॐ ह्रीं जिनागमेभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं जिनालयेभ्य स्वाहा । ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय स्वाहा । ॐ ह्रीं सम्यकज्ञानाय स्वाहा । ॐ ह्रीं सम्यकचारित्राय स्वाहा । ॐ ह्रीं जया धृष्ट-देवताभ्य स्वाहा । ॐ ह्रीं पौण्ड्र विद्यादेवताभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं चतुर्विंशतय क्षीभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं चतुर्दशभवन वासिभ्य स्वाहा । ॐ ह्रीं अष्टविधव्यन्तरेभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं चतुर्वि-ध्योतिरिन्द्रेभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं द्वादशविधकल्पवासिभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं अष्टविधकल्पवा-सिभ्य स्वाहा । ॐ ह्रीं नवग्रहेभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं अष्टविध कल्पवासिभ्य स्वाहा । ॐ ह्रीं अग्निद्राय स्वाहा । ॐ स्वाहा भू स्वाहा । भुव स्वाहा स्वः स्वाहा । एताव् सप्तविसन्ति मन्त्राश्चतुवारानुच्चार्य प्रत्येक लवंग गन्धाक्षतगुग्गुलुतिलशालिकुट्टकुमकपूरलाजा गुरु शर्करामि राहुति स्रुचा जुहुयात् इति लवगाद्यातुयः ॥

“ॐ ह्रीं अहंवभ्य” इत्यादि सताइस मन्त्रों का चार-चार बार उच्चारण कर हर एक मन्त्र को लोग गन्ध अक्षत-गुग्गुल-कु कम्-कपूर लाजा (भुने चावल), अगुरु और शक्कर इनकी मूचों से स्राट्टियाँ देवे । इस प्रकार १०८ आहुति देवे ॥५३॥

॥ पूर्ववत् षडाज्याहुति पञ्चतर्पणकपर्युक्षणानि ॥५४॥

इसके बाद पहिले की तरह छह धृताहुति पञ्चतर्पण और एक पर्युक्षण करे इनके करते समय पूर्वोक्त मन्त्रों को बोलना जावे ॥५४॥

॥ अथ पीठिका मन्त्राः ॥

ॐ सत्यजाताय नमः । ॐ अहंज्ञानाय नमः । ॐ परमजाताय नमः । ॐ अनुपम-जाताया नमः । ॐ स्वप्रधानाय नमः । ॐ अचलाया नमः ॐ अक्षयाय नमः । ॐ अम्या-बाधाया नमः । ॐ अनन्तज्ञानाय नमः । ॐ अनन्तदर्शनाय नमः । ॐ अनन्तवीर्याय नमः । ॐ अमन्तसुखाय नमः । नीरज से नमः । ॐ निर्मलाय नमः । ॐ अक्षे-द्याय नमः । ॐ अभेद्याय नमः । ॐ अजराय नमः । ॐ अपराय नमः ॐ अग्रमेष्टाय नमः । ॐ गर्भ-

वासाय नमः । ॐ अविलीनाय नमः ॐ परमनाथाय नमः । ॐ लोकाग्रनिवासने नमः । ॐ पर-
मसिद्धेभ्य नमः ॐ अर्हत्सिद्धेभ्यो नमः । ॐ केवलि सिद्धेभ्य नमः ॐ अनन्तकृत्सिद्धेभ्य नमः ।
ॐ परंपरासिद्धेभ्य नमः । ॐ अनादिकरमल्लिदेभ्य नमः । ॐ अनाद्यनुपमसिद्धेभ्य नमः ।
ॐ सम्यक्दृष्टे आसन्नमध्य निर्वाणपूजाहं अग्निन्द्राय स्वाहा ॥ सेवाफलघट परम स्थानं भवतु
अपमृत्युनाशनं भवतु ॥ पीठिकामन्त्रा ॥ पीठिकामन्त्रोत्प्रेतैः पञ्चत्रिंशद्देवभिन्नेः प्रतिमन्त्रं
त्रिवारमुच्चारितं शाल्मल्लक्ष्मीरधृत-अक्षयपायस शर्करारम्भाफलैर्मलितैरन्ताहूति । स्मृत्वा
जुहुयात् पुनराज्याहुतितर्पणपर्युक्षणानि ॥५५॥

“ॐ सत्यजाताय नमः” इत्यादि छत्तीस पीठिका मन्त्रों का हर एक का तीन तीन बार
उच्चारण करे प्रत्येक के अन्त में, शाली, अन्न दूध, घी, दूसरे खाने के पदार्थ, खोवा, शक्कर
और केले इन सबको मिलाकर सूची के द्वारा अन्ताहूति देवे यह भी १०८ बार हो जाती है
इसके बाद जीतने मन्त्र जप किया हो उसका दशम होम लवगादि द्रव्य से करे फिर छह
धृताहूति, पाच तर्पण एक पर्युक्षण करे ।

॥ अथ पूर्ण आहूति ॥

ॐ तिथि देवा पञ्चदशधा प्रसीदन्तु, त्वग्रह देवा प्रत्यवापहरा भवन्तु । भावना-
दयो द्वात्रिंशद्देवा इन्द्राः प्रमोदन्तु । इन्द्रादयो विश्वे दिवपाला पालयन्तु । अग्निन्द्रामोत्य
ज्ज्वालयन्ति देवता प्रसन्ना भवन्तु । शेषा सर्वेऽपि देवा एते राजान विराजन्तु दातर
तर्पयन्तु सध श्लाघयन्तु वृष्टि वर्षयन्तु । विघ्न विघातयन्तु मारी निवारयन्तु । ॐ ह्रीं
नमोऽर्हते भगवते पूर्ण ज्वलित जानाय सम्पूर्ण कलाध्या पूर्णाहूति विदधमहे ॥ इति पूर्णाहूति ५६॥

“अति तिथि देवा” इत्यादि मन्त्रों के द्वारा पूर्णाहूति देवे । पूर्णाहूति में पल और
पूजा का द्रव्य होना चाहिए । पूर्णाहूति के मन्त्र पूर्ण हो, वहाँ तक बराबर एक सरीखी घी की
धार छोड़ता रहे ॥५६॥

ततो मुक्लित कर — ॐ दर्पणो घोट जान प्रज्वलित सर्व लोक प्रकाशक भगवन्नहं
श्रुद्धा मेघां प्रज्ञां बुद्धिं श्रियं बल आयुष्य तेज आरोग्य सर्वं शान्ति । विधेहि स्वाहा । एत पठित्वा
सम्प्रार्थ्य शान्ति धारां निपात्य पुष्पाञ्जलि प्रक्षिप्य चैत्यलादि भक्ति त्रयं चतुर्विंशति स्तवन् वा
पठित्वा पञ्चांग प्रणम्य तदित्य भोम समादाय ललाटा दी स्वयं धृत्वा अन्यार्थं दद्यात् ॥५७॥

इसके बाद हाथ जोड़कर “ॐ दर्पणो घोट” इत्यादि मन्त्र पढ़े, प्रार्थना करे, शान्ति
धारा-दे पुष्पाञ्जलि-क्षेपण करे चैत्यलय वगैरह की तीन भक्ति अथवा चौबीस तीर्थ करों की स्तुति

पढ़े और पचांग नमस्कार कर होम की दिव्य भस्म को लेकर ललाट बगैरह स्थानों पर लगावे, और औरों को भी देवे ॥५७॥

शांति धारा शान्ति पूर्वक भक्ति से पढ़े । फिर पहले स्थापित कलश लघू पूण्याह वाचन कर, स्थापित जिनेन्द्र प्रभु की मूर्ति को स्वस्थान पर विराजमान करके मंगल कलश को बाजे, गाजे के साथ अपने घर में ले जावे ।

। इति होम विधान ।

अथ पुण्याह वाचन

ॐ स्वस्ति श्री यजमानाचार्यं प्रभूति समस्त भयजनानां सद्धर्म श्री बलायु-
रारोग्यैश्वर्याभि वृद्धिरस्तु ।

अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्री मदादि ब्रह्मणो मते त्रैलोक्य मध्य मध्यासीने मध्य लोके श्री भदनावृत यज्ञ स सेव्य माने, दिव्य जम्बू वृक्षोपलक्षित, जम्बू द्वीपे, महीनय महामेरो-
र्दक्षिण भागे, अनादि काल स सिद्ध भरत नाम धेय प्रविराजित पद् खण्ड मण्डित भरत क्षेत्रे,
सकल शलाका पुरुष संभूति सम्बन्ध विराजितार्य खण्डे, परम धर्म समा चरण अस्मिन् देशे,
अस्मिन् विनेय जनताभिरामे, ... ग्रामे श्री दिगम्बर जैन मूल संघे, सरस्वती गच्छे,
बलात्कार गणेश श्री मद कुन्दकु दाम्नाये महा शांति कर्मशोचिते, अत्र दिव्य महा
चैत्यालये, प्रदेशे एतदव सर्पिणी कालावसाने प्रवृत्त सुवृत्त चतुर्दश मनुषमान्वित सकल लोक
व्यवहारे, श्री वृषभ स्वामी पौरस्त्य मंगल महापुरुष परिषत्प्रतिपादित परमोपशम पर्व क्रमे,
वृषभ सेन सिंह सेन, चारु सेनादि गणधर स्वामी निरूपित विशिष्ट धर्मोपदेशे, दुःखम सुख-
मानतर प्रवर्तमान कलियुगा पर नाम धेय दुःखमाभिधान पंचम काल प्रथम पादे, महति महावीर
वर्द्धमान तीर्थकरोपदिष्ट सधर्म व्यक्ति करे, श्री गौतम स्वामी प्रतिपादित सन्मार्गः षट् माने,
श्रेणिक महा मंडलेश्वर समा चरित सन्मार्गा विशेषे, विक्रमाक नृपाल पालित प्रवृत्त मानानु-
कूल शक नृप काले वर्षसमिते, प्रवृत्तमान संवत्सरे, अमुक मासे अमुक पक्षे,
अमुक तिथौ, अमुक वासरै, प्रशस्त तारका योग करणद्वे काण होरा मुहूर्त लभ युक्ताया, अष्ट
महा प्राप्तिहाय शोभित श्री मद अहंत्वरमेश्वर सन्निधौ श्री शारदा सन्निधौ, राजपि परपि
ब्रह्मर्षि सन्निधौ, विद्वत्सामाज सन्निधौ, अनाधि श्रोतृ सन्निधौ, देव ब्राह्मण सन्निधौ, सुब्राह्मण
सन्निधौ, याग मंडल भूमि शुद्धयर्थं, द्रव्य शुद्धयर्थं, पात्र शुद्धयर्थं, क्रिया शुद्धयर्थं, मत्र शुद्धयर्थं,
महा शांति कर्म सिद्ध साधन यज्ञ मत्र तत्र विद्या प्रभाव, सं सिद्धि निमित्त विधियै मानस्य अमुक

क्रिया महोत्सव समये, पुण्याह वाचन करिये । सर्वे: सभाजनैरनु जायता विद्वद्विशिष्ट जनैरनु जायता, महाजनैरनु जायता तद्यथा ।

प्रथमात्र तदुलोपरि ह्रीं कार स्वेटित स्वस्तिक यन्त्रे मन्त्र परिपूजित मणिमय मंगल कलश सस्थाप्य, यजमानाचार्योऽपसव्य हस्तेन धृत्वा पुण्याहमन्त्रमुच्चारन् सिचेत् । ॐ स्वस्तिक कलशं स्थापनं करोमि ।

ॐ

ह्रीं

पास मे छपे हुये यन्त्रानुसार करीब एक सेर चावल लेकर जमीन मे यन्त्र बनावे, फिर उसके ऊपर जल से भरा हुआ कलश रखकर उसमे नागर बेल का पत्ता रखे और पुण्यहवाचन पढ़ते जावे और कलश का पानी उस पत्ते से दाहिने हाथ से छिड़कते जावे ।

ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं हः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते समस्त गंगा सिध्दा-
वि नवी नद तीर्थ जलं भवतु स्वाहा । जलपवित्री करणं ।

ॐ ह्रीं पुण्याह कलशाचनं करोमि स्वाहा ।

साधिया के ऊपर के कलश मे अर्ध चढ़ावे ।

ॐ पुण्याह २ प्रियता २ भगवंतोऽर्हंत सर्वज्ञाः सर्वदाशनः त्रिलोकनाथा त्रिलोक प्रद्योतनकरा वृषभ अजित सभवा अभिनवन सुमति पद्मप्रभ सुपाश्वं चन्द्रप्रभ पुष्पवन, शीतल श्रेयो वासुपूज्य विमल अनत धर्मं शांति कुंभु अर मल्लि मुनि सुव्रत नमि नेमि पाश्वं श्री वद्धमानाः शांता शांतिकरा कलकर्मणिपु विजय कातार दुर्गाविषयेषु रक्षतु नो जिनेन्द्राः सर्वविदश्च ॥ श्री ह्रीं धृति कीर्ति कांति बुद्धि लक्ष्मी मे ध्याविन्यः सेवा कृषि बाणिज्य वाद्य लक्ष्य मन्त्र साधन चूर्णप्रयोग स्थान गमन सिद्धि साधन या प्रतिहत शक्त्या भवतु नो विद्या-देवताः । नित्यमर्हसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु वदश्च भगवंतो नः प्रियता २ आदित्य सोमंगार बुद्ध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु ग्रहाश्च नः प्रियता २ । तिथि करण मुहूर्त लग्न देवता इहचान्य ग्राम नग रादिषु त्रिषु वास्तु देवताश्चताः सर्वगुरु भक्ता अक्षिण कोप कोष्ठागारा भवेयुर्दान तपोवीर्यं नित्यमेवास्तु नः प्रियता २ मातृपितृ भ्रातृ सुत सुहृत्स्व जन सबन्धो बहुवर्ण सहितानां धनधान्यैश्वर्यं द्युति बलयशो वृद्धिरस्तु । प्रमोदोस्तु शांति भवतु पुष्टि भवतु सिद्धि भवतु काम मागत्योत्सवाः सतु शाम्यतु घोरार्णि शाम्यत् पापानि पुण्य वद्धंताम् धर्मोवद्धंताम् श्यामुषोवद्धंताम् कुलगोत्र चाभिवद्धंताम् स्वास्ति भद्रं वास्तु नः हुता स्तेपरिपथिनः शत्रव

शर्मयतु । निष्प्रति घमस्तु । शिव मतुलमस्तु । सिद्धा सिद्धिं प्रयच्छंतु न । ॐ कर्मणः पुण्याहं भवतो ब्रुवंतु इति प्रार्थयेत् । प्रार्थितविप्राः पुण्याहं कर्मणोऽस्तु " इति ब्रूयुः । ॐ कर्मणस्वस्ति भवतो ब्रूवतु । स्वस्ति कर्मणोऽस्तु कर्मकृद्धिं भवतो ब्रूवतु " कर्मकृद्धिस्तु ।

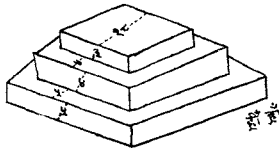
विशेष :—अगर हम नही करना है तो जितना जप किया, उतने जा का दशांस, जप चौगुना जप, ज्यादा कर लेना चाहिये । जैसे—एक हजार जप का दशांस १०० जप हुआ, उस १०० जप को चौगुना जपने से, याने ४०० बार जप कर लेने पर होम की पूर्ति हो जाती है । फिर अग्नि होम करने की आवश्यकता नही पड़ती है ।

मन्त्र जप के बाद दशांस होम करने के लायक

होम कुण्डों का नक्शा

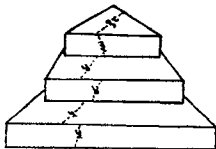
होम कुण्ड नीचे दिये गये नक्शे के मुताबिक बनावे, और होम कुण्ड के लिये ईंटें कच्ची हानी चाहिये । वध, विद्वेषण, उच्चाटन कर्म में आठ अंगुल लम्बी समिधा ले (लकड़ी) । पुष्टि कर्म में तो अंगुल, शान्ति, आकर्षण, वशीकरण में, स्तम्भन, कर्म में बारह अंगुल की लकड़ियाँ हो । लकड़ियाँ दूध वाले वृक्ष की हो ।

तीर्थङ्कर कुण्ड (१)



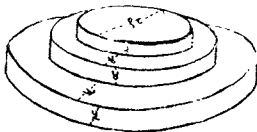
गार्हपत्यग्नि

गणधर कुण्ड (२)

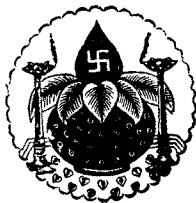


आहवनीय

केवली कुण्ड (३)



दक्षिणाम्नि



लघु विद्यानुवाद



इस खण्ड में

(५-१ से ५-५६)

तन्त्राधिकार

विभिन्न जड़ी बूटियों के प्रयोगों में कण्टों का निवारण की विधियां	१
नागार्जुन प्रणित श्रंतंघ्यान विधि	६
बंदा कल्प नंदिवेणाचार्य कृत	१०
अथ कलकोश प्रवक्ष्यामि धन्वतरी कृत	१२
अथल जालु कल्प	१३
अथ श्वेत गूँजा कल्प	१४
सर पूँखा कल्प एवं पमाड कल्प	१५
अथ रक्त गूँजा कल्प	१६
एकाक्षी नारियल कल्प	२८
दक्षिणा वर्त शंख कल्प	२९
गौरोचन कल्प,	३०
तन्त्राधिकार रुद्राक्ष कल्प	
वहेड़ा कल्प, निर्गुण्डी कल्प	३४
हाथा जोड़ी कल्प, विजया कल्प	३५
यक्षिणी कल्प	३६
रत्न, उपभोग, फल व विधि	३८
श्वेतार्क कल्प	४२
ह्रीं कार कल्प	४४

रक्त ह्रीं कार के ध्यान का फल	४५
पीत वर्णीं ह्रीं कार के ध्यान का फल	४५
श्याम वर्णं ह्रीं के ध्यान का फल	४६
कुडती स्वरूप ह्रीं के ध्यान का स्वरूप	४६
कि मन्त्र यन्त्रै विविधाः गमोलै दुः साध्यसं नीति फलाल्पलाभे.	४७
सोना चांदी बनाने के तंत्र	४६
पारास्तंभन का तंत्र	५४
पूज्य पाद स्वामी कृत	५५
चांदी बनाने का तंत्र, सोना बनाने का तंत्र हीरा बनाने की विधि	५६



पंचम तंत्राधिकार

अश्विनी नक्षत्र में अर्द्ध रात्रि को नग्न होकर अपामार्ग की जड़ को लावे, फिर कण्ठ में धारण करे तो राज सभा वश होय । १ ।

भरणी नक्षत्र में सखा होली की जड़ लावे, ताबीज में रखे (पर) स्त्री वश में होय । २ ।

कृत्तिका नक्षत्र में रोहिंस की जड़ लावे, पास रखे तो अग्नि नहीं लगे । ३ ।

मृगशिरा नक्षत्र में अर्द्ध रात्रि में नग्न होय, नेगद बावची की जड़ लावे और पास रखे तो वीर्य चाले नहीं । ४ ।

मृगशिरा नक्षत्र में महुवा की जड़ लावे तो रात्रि में चांगी नहीं होय । ५ ।

आर्द्रा नक्षत्र में अर्क की जड़ लाय, ताबीज में डालकर पास रखे तो, झूठी बात सच होय । ६ ।

पुनर्वसु नक्षत्र में मेहदी की जड़ को लेकर पास रखे तो अपने शरीर में अच्छी सुगन्ध घाती है । ७ ।

पुष्य नक्षत्र में नागरबेल की जड़ लेकर पास रखे तो, दुष्ट बावय से कभी भय नहीं होता है । ८ ।

आश्लेषा नक्षत्र में धनूरा की जड़ लेकर देहली में रखे तो, सर्प घर में आने का भय नहीं रहता है । ९ ।

मेघा नक्षत्र में पीपल की जड़ लेकर पास रखे तो रात्रि में दुस्वप्न नहीं आते है । १० ।

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में आम की जड़ लाकर दूध में घिस कर पिलाने से बाभ स्त्री को पुत्र की प्राप्ति होती है । ११ ।

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में नीम की जड़ को लाकर पास रखे तो लड़की से लड़का होता है । १२ ।

हस्त नक्षत्र में चम्पा की जड़ लाकर गले में बांधने से भूत प्रेत नहीं लगता है । १३ ।

चित्रा नक्षत्र में गुलाब की जड़ लेकर पास रखे तो शरीर में नष्ट नहीं होता है । १४ ।

स्वाति नक्षत्र में मोगरा की जड़ लेकर भैंस के दूध में घिस कर पीने से काले से गोरा होता है । १५ ।

विशाखा नक्षत्र में बबूल की जड़ को लाकर पास में रखे तो नित्य ही चोरी करने पर प्रकाशित नहीं होता है ।

अनुराधा नक्षत्र में चमेली की जड़ को लाकर सिर पर रखे तो शत्रु मित्र हो जावे । १७ ।

ज्येष्ठा नक्षत्र में जामुन की जड़ को लाकर पास रखे तो राजा के द्वारा सम्मान को प्राप्त हो । १८ ।

मूल नक्षत्र में गूलर की जड़ लेकर पास रखे तो दूसरे का द्रव्य मिले । १९ ।

पूर्वाषाढा नक्षत्र में शहतूत की जड़ लेकर स्त्री को पिलावे तो योनि सकोच होती है । २० ।

उत्तराषाढा नक्षत्र में कलगरामा की जड़ लेकर हाथ में बाँधे तो पहलवान से युद्ध में जीते । २१ ।

श्रवण नक्षत्र में आंवली की जड़, नागरवेल के रस में पीये तो स्त्री नव यौवनवान हो । २२ ।

घनिष्ठा नक्षत्र में बबूल की पत्ती अजन आँख में करे तो सोना, चादी की परीक्षा में सफल होय, याने परख ज्यादा करे । २३ ।

६ शतभिषा नक्षत्र में केले की जड़ लेकर शहद के साथ पीये तो चाप न होय । २४ ।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में तुलसी की जड़ लेकर मस्तक पर रखे तो मुरदा कभी नहीं जलता है । २५ ।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में पीपल की जड़ लेकर पास रखे तो चतुर मनुष्य युद्ध में जीत कर आता है । २६ ।

रेवती नक्षत्र में बड़ की जड़ लेकर माथे पर रखे तो दृष्टि चौगुनी होय । याने अगस दृष्टि होती है । २७ ।

हिगुल १८ तोला, अश्रक ३२ तोला एकत्र कर रुद्रवती के रस में घोट कर चादी के पत्रे पर लेप कर पुट दीजे तो सुवर्ण होता है । २८ ।

स्वर्ण माक्षिक ८ माशा, पारा ४ माशा, तांबा ४ माशा, सुहागा ४ माशा, इन सब चीजों को एक साथ गलाने से शुद्ध चादी होती है । २६ ।

शुद्ध गन्धक को प्याज के रस में १०८ बार तपा कर भुजावे तो, फिर उस गन्धक को चादी के पत्रे पर गलावे तो सोना होता है । ३० ।

मेनशिल, सिधव, गोगोचन, भृंगराज के रस में इन चीजों को चिस कर वाम हाथ पर, जिसको वश करना चाहे, उसका नाम लिखे, फिर अग्नि में तपावे तो वशी होता है । ३१ ।

हस्त नक्षत्र रविवार के दिन अधाहुली को लेकर राजा के माथे पर डाले तो राजा वश होता है और दुष्ट व्यक्ति भी स्नेह करने लगता है । ३२ ।

अधोमुखा च जला च स्वेता च गिरि कर्णिका गोरोचन समीयुक्तं, तिलकं विश्व मोहर्त्त । ३३ ।

चिता भस्म विष युक्तं, धतुर चूर्ण मिथितं, यस्याग्रे विक्षिप्ते सद्योयातीय मालयम् । ३४ ।

मनुष्य को हड्डि का चूर्ण, जिसको पान में रखकर खिला देवे तो, मनुष्य मर जाता है । ३५ ।

भरणी नक्षत्र मंगलवार को चिता की लकड़ी लेकर आवे, शत्रु के दरवाजे पर गाड़ देवे तो शत्रु शीघ्र मर जाता है । ३६ ।

काले सांप की वसा, काचली की बत्ती बनाकर धतूरे के तेल में भिगोकर, दीपक जलावे फिर मनुष्य की खोपड़ी पर काजल उपाड़ कर और चिता की भस्म, पांच प्रकार का निमक इन सब चीजों को सम भाग मिला कर जिसके ऊपर डाल देवे वह मर जावे । ३७ ।

बीछू का मांस और कंठक का चूर्ण कर जिसके ऊपर डाल देवे वह मर जायेगा । अमावस के दिन चिता की भस्म से यन्त्र लिखकर चिता में ही डाल देवे तो शत्रु मर जाये । ३८ ।

उल्लु की बिष्टा और विष को मिला कर जिसके अंग पर डाल देवे वह शीघ्र मर जाता है । ३९ ।

गधे का बिष्टा और विष दोनों को जिसके ऊपर डाल देवे वह, शीघ्र मर जावे । ४० ।

शशु की बिष्ठा मनुष्य की खोपड़ी में भर कर एकान्त वन में गाड़ देने से ज्यों ज्यों गड़ी बिष्ठा सुखेगी त्यों २ शशु मरेगा ॥४१॥

अकलास की वसा का तेल १ बीदु भी जिसके ऊपर डाल दिया जाय वह मर जायगा ॥४२॥

तुलसी के बीज का चूर्ण सहदेवी की जड़ के रस में रविवार के दिन घिस कर तिलक लगाने से मोहित होता है ॥४३॥

हरिताल, और असगंध को केला के रस में गौरोचन सहित घिस कर तिलक लगाने से मोहित होता है ॥४४॥

शृ गी, चन्दन, वच, कूट, ये चारों चीज की धूप बनावे फिर अग्नि में उस धूप को डाल कर अपने शरीर में धुआ लगावे और अपने मुख में भी धुआ लगाने से और वस्त्र में धुआ लगाने से राजा प्रजा पशु पक्षी जो देखें सब मोहित हों ॥४५॥

पान की जड़ का तिलक करने से मोह नहीं होता है ॥४६॥

मैनसिल, कपूर, कोकेला के रस में घिस कर स्नान करे तो मोह नहीं होय ॥४७॥

सेदूर, वच, असगंध, पान के रस में घिस कर स्नान करे और तिलक करे तो मोह न होय ॥४८॥

भगरूया, चिचिडा, छुडमुड, सहदेई, इन चारों चीजों का तिलक लगाने में मोह न होता है ॥४९॥

डमरू के फूल की वाती नैनू के साथ रात्रि को जलाय काजल उपाड़ कर अंजन कर तो मोह न होता है ॥५०॥

सफेद घु घची का रस बह्मदडी की साथ घिस कर शरीर में लेप करने में मोह नहीं होता है ॥५१॥

सफेद दूब के रस में हरिताल को घिस कर तिलक लगाने से मोह नहीं होता है ॥५२॥

सफेद अकुआ की जड़ और सफेद चन्दन को घिस कर तिलक लगाने से मोह न होता है ॥५३॥

बेलपत्र छाया में सुखा कर, कपिला गाय के दूध में घिस कर तिलक लगाने से मोह नहीं होता है ॥५४॥

भाग के पत्ते, सफेद सरसो, इन दोनों को कुट कर शरीर में लेप करने से मोह नहीं होता है ॥५५॥

तुलसी के पत्तों को छाया में सुखा कर चूर्ण करे, अमगद, और भाग का बीज सम भाग मिला कर कपिलाघ्राय के दूध में घिस कर गोली बनावे, उस गोली का तिलक लगाने से मोह नहीं होता है और उस गोलीकी शस्त्र में लेपन करने से शत्रु की सेना उस शस्त्र को देख कर ही भाग जाती है । १५६।

विष्णु काता का बीज में से तेल निकाले यन्त्र से, फिर उस तेल में विष भी मिलावे तेल, और अफीम, गधे का पेशाब, धतुरे का बीज का चूर्ण, हस्ताल, मेनसील, गन्धक, इन सब को लेकर घोटकर पाच छटाक का गोला बनाकर रख लेवे जब युद्ध का काम पड़े तब अपने शस्त्र पर उस गोले का लेप कर युद्ध में जावे तो शत्रु की सेन्य उस शस्त्र को देखते ही भयभीत होकर भाग जावे, और अपने पर दूसरों का शस्त्र चल नहीं सकता है । १५७।

श्मशान की राख को १ मिट्टी के बर्तन में भर कर शत्रु का नाम लेकर नील के रंग में रंगे हुये डोरे से उस बर्तन को बांध कर गाड़ देवे तो शत्रु की सेन्य का स्तभन ही जाता है । १५८।

ऊट की हड्डी ४ अंगुल प्रमाण कीज जहाँ गाड़े वहाँ गाय मँस नहीं जानी है, उनका स्तभन हो जाता है । १५९।

रजस्वला स्त्री का कपड़ा और गीरोचन, दोनों चीजों को लेकर शत्रु का नाम लेकर गाड़ में डालने से शत्रु का स्तभन हो जाता है । १६०।

दो टाँट श्मशान की आग सहित लेकर जगल में गाड़ देवे तो मेघ का स्तभन होता है ।

मूलं गृह्णाति मधुकं पिष्टानिणि समाचरेत् । निद्रास्तभन मेतद्धि, मूल देवेन भाषितं ।

अथवा क्षीर काण्डानां कीज पत्तागुलिक्षिपत्नीकास्तभन मेतन्मूलदेव न भाषित ।

रवित्राय के दिन सती होने वाली स्त्री की चिता में टाँट धर आवे फिर तीमरे रविवार जाकर उस टाँट को ले जिसके घर में डाल दे अथवा खोद दे तो उसके घर में पत्थर बरसने लगते हैं ।

उल्लू का पित्तों और कालि जो, श्मशान की भस्म, गाय की लूणी, इन सब चीजों को मिला कर गोली बनावे उस गोली को मोने या चादी के नाबीज में भर कर पास रखे तो अदृश्य होता है । स्वयं सबको देखता है और स्वयं को कोई नहीं देख पाता ।

एक वर्ष का काला कुत्ता को पकड़ कर उपवास करावे, स्वयं भी उपवास करे, दूसरे दिन दूध, और काला तिल, उस कुत्ते को खिलावे, जब कुत्ता टट्टी करेगा, उस टट्टी में

से काले तिल को निकाल कर तिल में से तेल निकाल कर यन्त्र में नहीं गया, उपास की बत्ती बना कर उस बत्ती को डाल कर दीपक जलावे और काजल पाड़कर आख में अंजन करे तो मनुष्य अदृश्य हो जाता है।

घौली (सफेद) चिणोठी, (गुंजा) सफेद रीगणी, (सफेद भट कटंजा) की जड़ लेकर चूर्ण करे फिर मनुष्य की खोपड़ी पर काजल उपाड़ कर नैत्र में अंजन करने से अदृश्य होता है।

नागार्जुनप्रणित अंतर्ध्यान विधि:

सफेद सुरमा १, सेवार कटक १, सोना मुखी १, जेठी मक्ख १, ये चारों वस्तु बरा बरा लेकर कन्या के प्रथम मासिक धर्म का रक्त में गोली बनावे, उस गोली को सोना, चादी के ताबीज में डाल कर उस ताबीज को मुंह में रखे तो मनुष्य अदृश्य होता है।

शुक्ल एक रंग की बिल्ली को तीन दिन भूखी रख कर चौथे दिन कपिला गाय के घी को खिलावे, तब बिल्ली तत्काल उल्टी करेगी उस घी को लेकर, कपास के फल में से रुड़ निकाल कर उसकी बत्ती बनावे दीपक जलावे मनुष्य की खोपड़ी पर काजल उपाड़कर नेत्र में अंजन करे तो अदृश्य होता है।

शिवालयेतु कन्याकं, शिलायाशिलया सहः, ललाटे तिलकं दत्त्वा, दृश्यो भवति तत्क्षणम्।

लोह विभितिक, आमलक, वा रुद्र के फूल, इन सबको चतुर्थांश जल छोटे और आंख में अंजन करे तो आख में फूला का नाश होता है। रात्रिघनां का नाश होता है।

पिंडी, तगर की जड़, गोरौचन के साथ ताम्बे के वर्तन में रगड़ कर आख में आंजने से अक्षिपुष्पं (नाशयति) याने आख का फुला नष्ट हो जाता है।

लाल चन्दन, मिरच, सम भाग लेकर पानी में पीस कर लेप करने से बिस्फोटक का नाश होता है।

गडुची, हरिद्रा, दुर्वा, धूर्य से, समभाग, गुटिका क्रियते से सर्वं श्रणोपशमं करोति प्रलेपनम्।

रवि के दिन सफेद कनेर की जड़ को लेकर कुमुम्भ डोरे से बांध कर वाम हाथ में बांधने से (मर्कटिका) का नाश होता है।

अश्विनी नक्षत्र में घोड़े की पाव की हड्डी ४ अंगुल प्रमाण शशु के घर में फेंकने से शशु के कुल का उच्चाटन हो जाता है ।

उत्तरा भाद्रपद नक्षत्रे स्वान (कुत्ते) की पाव की हड्डी ४ गुल पाच जिसके घर में डाल दिया जाय वह चक्षुहीन हो जाता है ।

बालउनागबोलिन पुनः पत्राणि ग्राह्याणि जलेन घृष्टवापीयते भ्रूणो न भवति ।

हीगु, सिधव, का काहा बना कर पीने से (गर्भों न भवति) ।

श्वेतगिरि कणिका की जड़ को योनी में डालने से गर्भ का नाश होता है ।

मधु, कर्पूर, पदं पूगीफल पूरयित्वा मुरत समयेभक्षयेत् (पुत्रो भवति)

पार्श्वपिप्पल फलानि एक वर्णं गो दुग्धेन प्रस्तावे रित्रय पानेदात व्यानि (पुत्रो-त्पत्ति कृत)

काक जगा की जड़ को एक वर्ण की गाय के दूध में पीवे, निश्चित ही गर्भ रहे ।

भृगराज रस, पत्ती १ (एक छंटाक) कांच कर्पूर गटियाणउ १ (कर्पूर) गाथियउ १ ऋतु स्नाने दिन त्रयस्त्रीगायतेन त्रिनत्रये श्वेत वर्ण गो दुग्धक्षीरेयी भोजनं कार्यं अन्यकेकिमपि न भोक्तव्यं पुत्रोत्पत्तिर्भवति दृष्टप्रत्ययः ।

मातुलिग (विजोरा) के बीज की दूध के साथ २ खीर बनाकर घी के साथ पीवे तो स्त्री को निश्चित ही गर्भ रहे किन्तु ऋतु समये तीन दिन खाना चाहिये ।

गेरू, (हो-डमीस) विद्रांग, पीपली, समभाग लेकर पीसे फिर सभोग के समय पान करने से स्त्री गर्भवान होती है ।

रविबाजे अष्टमी निशीथ समये वाटिकाया जाती पत्र स्रडक मेक गृहीत्वा एक वर्णं गोक्षीरेण सहपीयतेरितु समये गर्भं धारयति ।

वासकं, त्रिफला, शर्करा, मुन्दी, को समभाग लेकर पीसकर रितु समय मे यदि स्त्री पीये तो गर्भवान हो ।

श्वेत रीगणी मूल पुष्य नक्षत्र में लेकर एक वर्ण की गाय के दूध में पीवे तो बन्ध्या भी पुत्रवान होनी है ।

मयुरशिखा की जड़ को दिन ३ दूध के साथ पीने से स्त्री पुत्रवान होती है । लक्षमणा भाग ३ उभयलिगी भाग ४ विरहाजी भाग ६ सब एकत्र करके गाय के दूध में पीसकर ऋतु समय में स्त्री को पीलाने से पुत्र होता है ।

श्वेत पुनर्नवा मूल को दूध के साथ घीस कर पिलाने से स्त्री को गर्भ रहता है ।

(पद्धिः प्राणिविशेष) तथा हल्दी दोनों का चूर्ण कर बकरे के मूल में भावना देकर मनुष्य को खिलाने से नपुंसक हो जाता है ।

तिल चूर्ण गोक्षुर चूर्णपत्ती समभाग करके बकरे के मूत्र में काथ करे जब काथ ठंडा हो जाय तब माक्षिक के साथ खिलाने से नपुंसकता का नाश हो जाता है ।

उदस्ट्र हृवड मध्ये मानुषास्थि प्रक्षिप्य मिथुनस्य शिरोदेशे स्थापयेत् रेत स्तभो-
भवति ।

यस्थलिंगे पाषाणं नरोधोभवति (जिसके मूत्राशय में पथरी हो) तस्य (कालानमक) कृष्णलवणेन सहसुरापानं दीयत्तं साम्यत्र जति ।

अपकतिल नाल भग्म गृहीत्वा दुग्धेन माक्षिकेन सहपानं दीनेन एव पाषाणान्
लिंग पीडा नाशयति ।

संखाहुली की जड़ और गाय का शृंग (सींग) को बाधने से स्तन रोग का नाश होता है । काक जगा की जड़ और उपलउ (पाषाण) दोनों को जल के साथ पीय कर तस्य दे अववा पिलावे तो सर्प का जहर उतर जाता है ।

कविट्ट की जड़, नमक, और तेल, इनको पीलाने से बिच्छु का जहर उतर जाता है । तिल की जड़, अतार की छाल, समभाग लेकर ठंडे जल में घीस कर गुटीका बनावे पीलावे बीछु के जहर का नाश करता है ।

वंध्याकर्कोटिका सर्प दृष्टस्य जलेन धर्पयित्वा मध्येपानं तस्य च देयं भद्रो भवति ।

गुग्गुली की जड़ को (पाय तरे) बाधे तो व्यवहार में अपराजित होता है याने उसको कोई जीत नहीं सकता है ।

कुंदमूल पुष्पेणोत्पाद्य प्रसार के धर्त्तव्य प्रभूतविया भवति ।

कृष्णा निगुंडी का मूल मागसिर मद्य पुण्यार्के उताय तग्मिन्नवदिने मूले श्वेत
सर्प पाश्व ग्रथौ वध्यते हृदेव्यवहारो घनो भवति दृष्ट प्रत्यय ।

काक जगाहाथ में बाधने से सर्व प्रकार के ज्वर का नाश होता है ।

पिटारी, (काकथी) की जड़ को सध्याकाल में लेकर कमर में बाधने से हर्ष रोग (मस्सा) का नाश होता है लेकिन जड़ को चौदश के दिन दीप धूप बिजान से लेवे ।

उपरोक्त औषधि की लकड़ी अठारह अंगुल प्रमाण लेकर (दत्तवनेन) तो सर्वप्रकार के ज्वर का नाश करता है ।

विशाखा तक्षत्र मे पिंडी तगर की जड़ को चावल के पानी के साथ पीवे से स्त्रियों का रक्त स्त्राव, बन्ध हो जाता है ।

इमली के बीज २ बहेड़ा के बीज २ हरडे का बीज २ इन बीजों की गुटिका बनाकर पानी के साथ आख में अंजन करें तो (तिमिर) मच्छति ज्योति ज्यादा बढ़ती है ।

काक, पारावत, मयूर, कपोतना, बिष्ठागृह्णते, तन्पश्चात्, खर, (गधा) रुधिर संहिता निगडानि लपयेत् तत्क्षणमृष्टयंति ।

सियाल के आख का चूर्ण अपने आख (नेत्र) में अंजन करने से रात्रि में बड़े बड़े भूत नजर आते हैं उन भूतों से नहीं डर कर जो उनमें इच्छा करें वही चीज बां भूत लोग लाकर देते हैं ।

मनुष्य करोड़ों मध्ये अकंतल सत्कदीर्घा महिषी सत्क नव गीत दीपे प्रज्वाल्य सीप-पाततेह जेक्रियतेऽदृश्यो भवति ।

त्रिलो की जग तो (जो लच्छा पेदा होने के समय निकलती है) त्रिलो के नाविज में डाल कर पाम रखे तो अदृश्य होता है ।

मंत्र निमोत्तल ताल, केसरस्त्रेण पद्मिनिपुष्प मयु शंकरावृत्तेन नाभिलंपोदीयेतवीर्य-स्त्वम्भ छीन प्रोड गृहीत्वा द्या हरि दुग्धेन भावयित्वा पादोन्मेषेत वाय स्त्वम्भ ।

स्वेतमृग पखा की जड़ का नाभि पर लेप करने से वीर्य का स्तंभ होता है ।

मयगु मयण हलु मणालिल एकीकृत्य लिग लेपयेत् वीर्य स्तंभो भवति ।

स्वेतमृग पखा की जड़ को कमर में बांधने से और दक्षिण जघाप्रदेश में स्थापित करने से वीर्य का स्तंभन होता है ।

स्वेतपुनर्वा की जड़ को दूध के साथ घिस कर पिलाने से स्त्रियों का गर्भ रहता है । सांघलि (सात्मली) (मेमर) काण्टपादुका क्रियते वज्रापन्वृते मूत्रवागिमध्ये प्रक्षिप्य लेपोदिय ते अलग पादुकाभिः चक्रम्यते ।

मफेद कनेर की जड़ को रविवार के दिन ल कर कुम्भ रंग के डोरे में बामहस्त में बांधने से (मर्कटिका) रोग नष्ट होता है

कौलिका गृह्णतु मुद्राद्य मृधम व स्त्रेण वेष्टियित्वा तैलेन स्निग्ध कृत्वा कोरक शरावे (कोरामिट्टी का घडापर) कज्जल पात्यते तेनाशि अजयन् एकावर, द्वयतर चातुर्विक उवराणा-शयति । गोवृत्तेन दीपक दातव्य तस्य दीपकस्य शिखाया मूचीकापीर (सुदर्पोना) अगीवाद्दह

नीयं, गोसूतक माधुअरीवा घर्षणीय जीरकं मगध, पिपल, नमक मेघा, मध्ये घषणीयं ताम्र भाजने घर्षणं कर्तव्यं अक्षिरोगो नश्यति ।

सरसों, हिंगुल, नीम के पत्ते, वच, सांघ की कांचनी, की धूप बनाकर खेने से शाकिनी का उच्चाटन होता है और सर्व प्रकार की ऊपर की बाधाएँ दूर होती है ।

वणिमूल, हिंगुल, सुंठि, इत सब चीजों को बराबर मात्रा में लेकर पानी के साथ पीसकर सुंधाने से शाकिन्यो नश्यति ।

वहेडावीज सैधव, शंखनाभि सममात्रा चूर्णेन अक्षिभरण चक्षुफुल्लोपशमः ।

वंदा कल्फ

नंदिषेणाचार्य कृत

वंदाकल्प प्रवक्ष्यामि नन्दिषेण मुनि भाषित, यस्यविज्ञान मात्रेण, सर्वसिद्धिः प्रजायते । अश्विनी नक्षत्रे पलास (डाक) वदा संगृह्यहस्ते वधा सर्वभयनिवारयति । भरणी नक्षत्रे आयिली (इमली) वा आवल, वदा संगृह्य हस्ते वधा सप्राप्तेराजकुले अपराजितो भवति सर्वजन प्रियोभवति और इसी नक्षत्र को, कुश, वंदा संगृह्यद्रव्य मध्येधान्य राशौवाध्रियते अक्षयो भवति ।

कृत्तिकानक्षत्रे वध्या कर्कोटी मूल उत्तराभिमुखोभूय उत्पाद्यते हस्तेवध्यते सर्व प्रकारस्य ज्वरंयति । और इस नक्षत्रको तुवर्गि (उवर्गि) वदा संगृह्य दुग्धेन सहपिबेत् महापुष्टिकारकः भवति ।

रोहिणी नक्षत्रे वित्तवदामृह्यहस्ते वध्यते सर्वदोषप्रहान् निवारयति । मृगशिरानक्षत्रे शन्यपुष्किमूल दक्षिणाभिमुखोभूत्वा उत्पाद्य कर्णे दत्त्वाफूँ किते वृश्चिकविष नाशयति ।

आद्रानक्षत्रे जातीमूल () वायव्याभिमुखोभूय उत्पाद्य हस्ते वध्वा सर्वजन प्रिय भवति । इसी नक्षत्र में जानि मूल वायव्याभिमुख भूप उत्तरादय लिहसोडा वदा संगृह्य द्रव्यमध्ये धान्यपराशोवा स्थापयेत् अक्षयो भवति ।

पुनर्वसु नक्षत्रे मदार (अकौआ) वदा संगृह्य हस्तेवध्वा सर्व ऊवर नाशयति । इसी नक्षत्र में कटिका मूलनेत्र्याभिमुखो भूय उत्पाद्यते वीदक्त्वा हस्ते वध्वा सर्व जनप्रियो भवति । इसी नक्षत्र में वेद वदा बीजं कृताया स्त्रीशुत्रिणी भवति स तस्या पुत्रो भवति । पुष्य

नक्षत्रे दवेतार्कमूल संगृह्य राजा सन्मुखं राई सहितं सहस्रं जाप कृत्वाऽग्नि मध्ये होम कारयेत् सप्तरात्रेण उच्चाटयति ।

इसी नक्षत्र में कुशवदा संगृह्य कटिवध्वा षोडश कन्या रमते ।

अश्लेषा नक्षत्रे पुनर्नवा मूल ईशानदिशाभिमुखी भूय उत्पाद्यते बीजं क्रियते सर्व कर्माणि करोति विषं नाशयति ।

मघानक्षत्रे मदारक मूल पूर्वाभिमुखी भूयोत्पाद्यते सर्वकर्माणि करोति । यदा विनाय ऋकुरि मस्तके प्रक्षिप्यते पूज्यते, तदा मनश्चितितकार्यं भवति ।

मघानक्षत्रे मधुवंदा संगृह्य क्षेत्र मध्ये तथा चतुःकोणे स्थापयेत् मूवकायाति ।

पूर्वाफाल्गुनिनक्षत्रे दाडिम (अनार) वदाहस्ते वध्वाज्वर नाशयति ।

उत्तराफाल्गुनि नक्षत्रं उ वरि मूल (तु वरि) उत्तराभिमुखो भूयत्पाद्यते हस्ते वध्वा सर्वकार्याणि करोति ।

चित्रानक्षत्रे वदरी (वैर) वदाहस्ते वद्धा सग्रामे राजकुले अपराजितो भवति ।

स्वानिन नक्षत्रे धातकी वदा हस्ते वध्वा यास्त्री रमते सा वश्या भवति ।

विशाखा नक्षत्रे वारि वदा सग्रह्यवणिजे, दूते, (जुग्मे) अपराजितो भवति ।

अनुराधा नक्षत्रे आंविनी (इमली) वदा संगृह्य यस्पृशेत् सर्वशयो भवति ।

ज्येष्ठानक्षत्रे मधूक, निव, कपिथ, वदा संगृह्य यः स्पृशेत् सर्वशयो भवति ।

मूलनक्षत्रे म्रदीर वंदाय हस्य गृहे ध्रियते सर्वशयो भवति ।

पूर्वाषाढा नक्षत्रे अमिलोडवदा अजाक्षीरेण सह यः पिबति तस्य वातरोगनाश यति ।

उत्तराषाढा नक्षत्रे मदारक वदाहस्ते वध्यते सर्व जनप्रियो भवति ।

श्रवणनक्षत्रे कमोलिवदाहस्ते वध्वा सर्वेषां विष नाशयति ।

धनिष्ठा नक्षत्रे बबूल वंदा कटि वध्वा हरिषां (ववासिर) नाशयति ।

शतभिखा नक्षत्रे ककोलिका वदा अजाक्षीरेण सहपीवेत् कुष्टयाति । इसी नक्षत्र में शंखपुष्पी मूल उत्तराभिमुखी भूयोत्पाद्यते पीयते स्त्री रितुकाले दिन ३ क्षीरेण सहपीवति सा स्त्री पुरुष सग मे गर्भवति भवति ।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रे चपकवदा (चपा) संगृह्य निलकं कृत्वा य इच्छति तं भवति ।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्रे पलासवदा (ढाक) संगृह्य क्षीरेण सहपीवति वध्या पुत्र प्रशयति ।

रेवति नक्षत्रे अश्वत्थ वंदक संगृह्य हस्ते वध्वा लोकेश्वर पुत्रं जनयति ।

॥ इति ॥

अथ कलकोशं प्रवक्ष्यामि

धन्वंतरी कृत

श्वेतु अपराजिता, मूलं नाशयदेयं सर्वग्रहं नाशयति ।
 बंध्या ककोडी मूलं तंदुलोद केनसहा पीषयेत् सर्वविषं नाशयति ।
 श्वेतगिरी कर्णिकामूलं नाशयदेयं शिरोरोगं नाशयति ।
 मयुरशिखा मूलं कर्णवध्वा चक्षुरोगं नाशयति ।
 अपामार्ग मूलं भृगाराज संयुक्तं हस्तेवध्वा सर्वं जनप्रियो भवति ।
 शरपंखा मूलं हस्ते बंध्वा सर्वज्वरं नाशयति ।
 कासमृदुकामूलं तंदुलोद के नसह पीवेत् नीद्रा नाशयति ।
 अपामार्ग मूलं तंदुलोदकेन सहपिबेत काम्बलं नाशयति ।
 तुलसीमूलं कर्णवध्वा चक्षुरोगं नाशयति ।
 मूडिमूलं कर्णवध्वा शिरलेपोदीयते शिरवायो नाशयति ।
 वालामूलं हस्ते बंध्वारात्रि ज्वरं नाशयति ।
 सिधलमूलं कर्णवध्वा एकोत्तशत ज्वरं नाशयति ।
 बहेडामूलं कर्णवध्वा सर्वं ज्वरं नाशयति ।
 श्वेताकमूलं कर्णवध्वा सर्वविषं नाशयति ।
 संहपुष्पिका मूलं पुष्प नक्षत्रे उत्पाद्य हस्तेवध्वा सर्वज्वरं नाशयति ।
 श्वेतगुंजा मूलं मुखे प्रक्षेप्यः कालसर्पोवारयति ।
 गुडोचीमूलं हस्तेवध्वा सर्वं सहस्रांक्षी भवति ।
 उंट कटालां मूलं मुखेप्रक्षेप्यं सर्वलोकानां स्तंभयति ।
 च मूलं गुविणी सपेठ उत्पन्ने धारयति सुखं शीघ्रं प्रसवोभवति ।
 दूधिका मूलं कर्णवध्वा वेलाज्वरं नाशयति ।
 गोखुरीका मूलं कंठे बंध्वा उष्ण वातं नाशयति ।

मुहुंजण मूलं कर्णवध्वा वेलाज्वरं नाशयति ।
 कटशेलुवा मूलं वध्वा ज्वरं नाशयति ।
 दम्पणा मूलं कर्णं वध्वा अग्नि उदीपयति ।
 श्वेरऐरंड मूलं कटिवध्वा ध्रुकं नाशयति ।
 जोडासीयनी चूर्णं कृत्वा मुलेपीणंदीयतं मरी नाशयति ।
 सतावरी मूलं हस्ते वध्वा महाबलं भवति ।
 उंट कटाला मूलं तंदुलोदकेन लेपोददाति गंडमाला नख प्रमाणे
 नाशयति ।
 काक जंगामूलं करे वध्वा क्षयं नाशयति ।
 कंठ सेलुआ मूलं करे वध्वापीत ज्वरं नाशयति ।
 श्वेत कटाइ मूलं पुष्प नक्षत्रे उत्पाटयेत् एक वर्णं गोक्षिरेण सहापिवेत
 बंध्यायापुत्रो भवति ।
 पलास मूलं खारं हरिताल चूर्णं, प्रलेयेत् रोमनाशयति ।
 जाती मूलं, तंदुलोदकेन, सहपिवेत्, वातज्वरं नाशयति ।
 आत्मश्रुक्नेन स्त्रिया वामपादं लिप्यते स शीघ्रं वशी भवति ।

॥ ० ॥

अथलजालु कल्प

शनिवार संध्या को जहा छुड़मुर (लजालु) का पेड़ हो वहा जाकर १ मुट्ठी चावल,
 सुपारी रखे, पीर उस पेड़ की मोली धागा बांधे, अपनी अपना पेड़ पर नहीं पड़ने दे, सबेरे
 तुमको अपने घर ले जायेंगे, ऐसा कहे । फिर प्रभात ही भिखनी रात को जाकर छाया रख कर
 उस पेड़ की उखाड़ लावे, उखाड़ते समय इस मंत्र को २१ बार पड़े ॐ भू भुव मम कार्य
 प्रत्यक्षी भवतु स्वाहा । फिर जिसको बंध करना हो उसके घर में रखवादे तो वह बंध में हो
 जाता है । लजालु पचास १ छटाक, धा २ छटाक, गिरक रण छटाक ३ मखा होली छटाक ३
 सब चीज एकत्र कर गोली बनावे, फिर जिसको बंध करना हो उसके खाने पीने की चीजों में

मिलाकर खिला देवे तो वश होता है। वाद, विवाद, भगडे आदिक में पास रख कर जावे तो सब लोग उसकी बात मानते हैं। गोरोचन के साथ घिस कर तिलक करे तो राजा प्रजा सर्व-लोक वश होते हैं।

॥ ० ॥

अथ श्वेतगुंजाकल्प

शुक्ल पक्ष में श्वेतगुंजा की दशमी के दिन पूरी जड़ सहित ले, पचाँग ले, फिर उसकी जड़ को पान के साथ जिसको खाने देवे वह वश होय स्त्री वश हो। पानके साथ में घिस कर गोरोचन से टीका करे, फिर जिसका नाम ले, वह वश में होता है अथवा गुंजा चंदन मणसिल से तिलक करे जिसका नाम लेवे वह वश में होता है। गुंजा प्रियगु, सरसो इन चीजों को जिसके माथे पर डाले वह वश में होता है, गुंजा की जड़ को पीसकर लगावे अथवा पीखे तो वातरोग का नाश होता है। गुंजा की जड़ को पानी के पीने से मूत्र कुछ नहीं होता है। गुंजा की जड़ को घिस कर पानी के साथ पिलाने से बालगाने से माप, विच्छुवा अन्य विषेले जन्तुओं के द्वारा काटने से विष फेल जाता है उम विष को दूर करती है। गुंजा की जड़ को गोरोचन के साथ घिस कर तिलक करने से जो २ देखता है वह वश में होता है। गुंजा की जड़ को स्त्री के कमर में बांधने से सुख में प्रसव होता है। गुंजा की जड़ को घटके मुखेक्षिपत जयभवति। पास रखकर राजा के पास जावे तो राज्यसभा वश होती है।

॥ ० ॥

सरपंखा कल्प

पुष्प नक्षत्र में सूर्य उदय के समय नग्न होकर सरपंखा को ले, फिर उसको छाया में ले सुखावे, जड़सहित उखाड़े, (मासाश्वेरीत जड़ लिजड़) अथ पंचांग लीजड़। छाया में सुकावे। फिर उसका चूर्ण करके दुध के साथ अपने शरीर में लेप करे तो सर्व शत्रुओं का स्तब्ध न होता है। सरपंखा के तिल का गोरोचन के साथ तिलक करे तो राजप्रजा सर्व वश होने हैं। दुकान पर बैठे तो व्यापार अधिक चले। सरपंखा के पचाँग की गोली को गाय के दुध के साथ २१ दिन तक पिलावे तो गर्भ धारण करे।

शुभ मुहूर्त में सोने या चादी के ताविज में रखकर बांधे तो शस्त्रादिक की धार बंद हो। श्वेत सरपंखा को लेने के समय २ आदमी हाथ में नंगी तलवार लेकर खड़े रहे एक

आदमी दीपक लेकर खड़ा रहे १ आदमी तीर छोड़े, जब तक तीर जमीन पर न गिरने आवे तब तक सरपखा को उठाने और घर लेकर आजावे छाया में सुका देवे ।

॥ ० ॥

पमाड कल्प

अश्वनी नक्षत्र में उत्तर दिशिमुख करके पवित्र हो सूर्योदय पहले पमाडीये की जड़ लेना, नमन होकर, छाया पड़ने नहीं देवे, घर लाकर, कपूर, कस्तूरी, केशर, के साथ अपने पास रखना राजा प्रजा सर्व वश होने है सर्व कार्यों की सिद्धी होती है । जिसके हाथ में बांधे, उसका बेलाज्वर, तीजारो ज्वर आदिक नष्ट होने है और मक्खन के साथ जिसको खाने को देवे वह वश में होता है ।

॥ ० ॥

नार नास्र मृवर्ण च इदु अर्कं पोडशभी ।

मुष्याकं घटिता मुद्रा दृष्ट दारिद्र नागिनी ।

३ रत्नी सोना, १२ रत्नी, तांबा १६ रत्नी चादी, गव मिला ले । २६ रत्नी हुआ, इनकी अगुठी वनवावे रविवार गृष्प नक्षत्र के योग में, उसी रोज वनवाना, उमी रोज पार्श्व प्रभु का पचा मृत अभिषेक करके उसमें वह अगुठी धोकर, याने गधोदरु से धोकर धूप खंवे, फिर अगुठ के पास वाली तर्जनी अंगुली में पहने तो तीव्र दारिद्र का नाश होता है, लक्ष्मी का लाभ होता है । अगुठी जमने हाथ में पहनना चाहिये । भोजन करने समय अगुठी को नोकाल देना, फिर पहन लेना । श्रान रहे उमी रोज अगुठी वने उसी रोज अंगुली में पहन लेना चाहिये । भक्तामर जा के प्रथम काव्य के मंत्र का १०८ बार जप करे ।

॥ ० ॥

विन्ली के ऊपर की दाढ़ और कुत्ते के नीचे की दाढ़ को, भक्तामर के काव्य का न बार वाला मंत्र से मन्त्रीक करके शत्रु के घर में गाड़ देने से शत्रु का घर टुट जाता है महान उत्पात होता है ।

सफेद सरसों सफेद चंदन, उपलेट () वच तथा कपूर, इन सबको दूसरा रविपुष्य के दिन इकट्ठा करके गोली बनाकर रखवे, जब जरूरत पड़े तब उस गोली को घीसकर तीलक करे तो दृष्टि दोष का नाश होता है । पशुओं के आँख में अंजन करने से दृष्टिदोष दूर होता है ।

अथ रक्त गुंजा कल्प

पुष्प होय आदिभ्य को, तव लीजिये यह मूल ।
 सुकर बारी रोहड़ी, ग्रहण होय अनुकूल ॥ १ ॥
 कृष्ण पक्ष की अष्टमी, हस्त नक्षत्र जो होय ।
 चौदह स्वाति शत मिषा, पुनों को लेय सोय ॥ २ ॥
 अर्द्ध निशा कारज सरे, मन की संज्ञा छोय ।
 धूप दीप कर लीजिये, धरे धूल लो सोय ॥ ३ ॥
 जो काहू नर नारी कूँ विष कोई को होय ।
 विष उतरे सब तुरंत ही, जड़ी पिलावे धोय ॥ ४ ॥
 जो तिलक लगावे भाल पर, सभा मध्य नर जाय ।
 मान मिले स्तुति करे, सब ही पूजे पाय ॥ ५ ॥
 हांजी हांजी सब करे, जो वह कहे सो सांच ।
 एक जड़ी के जुगत से, सब नचावें नाच ॥ ६ ॥
 ताके मूल मढ़ाये के, बांधे कमर के सोय ।
 नव मासे व नारी के, निश्चय बेटा होय ॥ ७ ॥
 ऋतुवती के रक्त सो, अंजन आंजि कोय ।
 देखत भाजे संन सब, महा भयानक हो ॥ ८ ॥
 काजल हूं घिस आजिये, मोहे सब संसार ।
 गाली दे दे ताडिये, तोय लगा रहे लाट ॥ ९ ॥
 मधु सुं अंजन आंजिये, देखे बीर बैठाल ।
 जो मंगावे वस्तु कू, ले आवे सो हाल ॥ १० ॥
 जो घिस कर लेपन करे, दूध संग सब अंग ।
 भूत प्रेत सब यक्ष गण, लगे फिरत सब संग ॥ ११ ॥

घिसके रुई लगाइये, बत्ती घरे बनाये ।
 फिर भिगोवे तेल में, दीपक देय जलाय ॥ १२ ॥
 करे अच मों सब नमें, घर इमसान दरसाय ।
 सात महल के बीच सूं लावे पलंग उठाये ॥ १३ ॥
 जो घृत में घिस के करे, लेप मूत्र नर लाय ।
 भोग शक्ति बाड़े अमित, मन अति मोद उठाये ॥ १४ ॥
 अजा मूत्र में रगड़कर, बेंदा दे जो हाथ ।
 करे दूर की बात बी, रहे यक्षणि साथ ॥ १५ ॥
 गोरोचन के साथ घिस, लिखिये जाको नाम ।
 मृत्यु होय बाकी तुरंत, नहीं देर को काम ॥ १६ ॥
 लिंग पत्र के अर्क सु, घिसिये केवल नाम ।
 भूत प्रेत व डाकिनी, देखस नसे तमाम ॥ १७ ॥
 रघाउ संग वा रगड़ के, तलुवे तले लगाये ।
 आँख मीच के पलक में, सहस, कोस उड़ जाय ॥ १८ ॥
 जो घिस आंजे पीस के, बंदी छोड़ कहाय ।
 बन्दी पड़े छुटे सभी, बिना किये उपाय ॥ १९ ॥
 जो गुलाब संग याहिं घिस, नाड़ी लेप कराय ।
 घड़ी चाट कूं जी पड़े, मुरदा सहज सुभाय ॥ २० ॥
 फेर अंकल के तेल में, घिस के आंजे कोय ।
 धन दीखे पाताल को, दिव्य दृष्टि जो हाय ॥ २१ ॥
 जो वाधिन के दुध में, घिस चौपड़े सब अंग ।
 सर्व शस्त्र लागे नहीं, बंद कर जीते जग ॥ २२ ॥
 घिस कर तिल के तेल में, मर्बन करे शरीर ।
 दीखे सब संसार कू, महाबोर रणधीर ॥ २३ ॥

जो अलसी के तेल में, घिसिये हतश मिलाय ।
 कोडि के लेपन करे, कंचन तन हो जाय ॥ २४ ॥
 जो कोई संसार में, अंधा आवे जे कोय ।
 सात दिवस तक आंजिये, दृष्टि चौगुनी होय ॥ २५ ॥
 श्याम नगद सग रगड़ के, बीसो नख लिपटाय ।
 जो नर होय कुमारजी, देखत वश हो जाय ॥ २६ ॥
 कस्तूरी सू आंजिये, प्रात समय लो लाय ।
 मौत जो लिखिये सबन की, काल पुरुष दरशाय ॥ २७ ॥
 गंगाजल सू आंजिये, दोनों नेत्र जु मांही ।
 वरसा वरसे धूल की, या में संशय नाही ॥ २८ ॥
 जो आंजे निज रक्त सू भर के दौऊ कोय ।
 देखे तीन लौक कूँ, अपनी आँखन सोय ॥ २९ ॥
 जो आंजे निजरक्त, खुले रागनी राग ।
 जो घिस पावे दूध सू, होय सिद्ध सू नाय ॥ ३० ॥
 रक्त गुंजा यह कल्प है, सूक्ष्म कहियो बनाय ।
 जो सीधे सो सिद्ध हो, या मे संशय नाय ॥ ३१ ॥

नोट — इस रक्त गुंजा कल्प के दाँहे का अर्थ इतना सरल है कि कम पढ़ा लिखा
 हुआ व्यक्ति भी अच्छी तरह जान लेता है । इसलिए यहाँ पर इसका हिन्दी
 अनुवाद करना उचित नहीं है ।

॥ इति ॥

मनुष्य की खोपड़ी पर, रताजन, भीमसेन कपूर, तथा रविपुष्प के रोज जिस स्त्री
 के पहली बार प्रसूति में लड़का पैदा हुआ हो उस स्त्री के दूध में रवि पुष्प के दिन गोली
 बनावे, काम पड़े तब तीन दिन आँख में धाँजन करने से, आँख का सर्व रोग नाश को
 प्राप्त होते है ।

शरद पूर्णिमा को ब्राह्मी का रस, बच, और कपिला गाय का भी इन तीनों चीजों को बराबर २ लेकर, कासे की थाली में इन चीजों को खूब गाढ़ा २ लगावे, फिर उसमें भक्त-मर का ६ नं० का यन्त्र लिखे, उपर अष्टगन्ध से ३० ह्नी श्री वली ७७ वद् वद् वाग्वादिनी लिखे, फिर चन्द्रमा के प्रकाश में रात्रि भर उस थाली को एक ऊँचे पाटे पर विराजमान कर रखे, सबेरे एक २ अक्षर को खावे, तो सरस्वती वश में होती है। महान् बुद्धिमान होता है।

ब्रह्म दंडी को शनिवार के दिन श्याम को अक्षत, मुपारी, का रखकर कुंकुम के छोटे लगाकर नोत दे, फिर रविवार की शाम को नग्न होकर धूप खेवे, फिर ब्रह्मदंडी का पचाग ले, फिर कपड़े पहनकर घर ले आवे, उस ब्रह्म दंडी को कैसा भी धाव हो, ब्रण हो, किसी भी प्रकार का गड्ढा मुड हो, उसके उपर लप करने में शीघ्र ही आराम हो जाना है।

रवि पुष्य के दिन जिस स्त्री को पुत्र पैदा हुआ हो, उस स्त्री की जेब, लेकर छाया में सुखा देवे। एकान्त में फिर उम जेब का कई के अन्दर लपेटकर बत्ती बनावे। दीपक में रख कर जलावे, तो घर में मनुष्य ही मनुष्य ही दिखते हैं। चोर चोरी नहीं कर सकते हैं।

रवि पुष्य को (लज्जालु) छुटमुड का पचांग को ग्रहण करके छाया में सुखाले, फिर जो मनुष्य कई दिनों से खो गया है, उस मनुष्य के कपड़े में लज्जालु का ब्राँध कर, त्रिकाल उस वस्त्र में कोडा लगावे तो खोया हुआ मनुष्य शीघ्र ही आता है।

१२ भाग तावा, १६ भाग चादी, १० भाग साना, इन तीनों का प्रथक २ तार खिचवा कर, रविपुष्य या गुरु पुष्यामृत योग रहते २ अंगुठी बनवाना और पचांमृत से जिनेन्द्र प्रभु का अभिषेक करके, उस अभिषेक में उस अंगुठी को धोकर सीधे हाथ की तर्जनी अंगुली में पहनना चाहिये, जिससे सर्व प्रकार का त्रिद्वारिद्र नाश होता है। किन्तु रवि या गुरु पुष्यामृत योग में ही अंगुठी बनवाना चाहिये और उसी ही योग के रहते २ ही पहन लेना चाहिये। तब ही कार्यकारी हो सकती है। आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी इस द्वारिद्र नाशिनी अंगुठी के लिए सबको कहा करते थे।

लौंग, केशर, चन्दन, नाग केशर, सफेद सरसो, इलायची, मनशिल, कूट, तगर, सफेद कमल, गोरोजन, लालचन्दन, तुलसी, पिक्कार, पद्मास्वा, कुटज, को पुष्प नक्षत्र में बराबर लाकर, सबको धतूरे के रस में कुमारी कन्या में पिसवाकर, उसका चन्द्रोदय होने पर तिलक करने पर ससार मोहित होता है।

मयूर शिखा, सफेद गुञ्जा, गोरंगा (गोभी) आक का पत्ता, कीटक का मल, और

अपने पाँचों मलों का चूर्ण। इन सब चीजों को जिस स्त्री को खिला दिया जाय वह वश में हो जाती है।

कान, आँख, दाँत, जीभ, तथा धीर्य को पच मल कहते हैं।

लाल कनेर के पुष्प, भुजगाक्षि जटा, ब्रह्मदर्शनी, उम्ब्रायन, गोवन्धनी (अधो पुण्ड्रिया प्रियंगु) लज्जावती के चूर्णों की गोमिया बनावे, उन गोमियों को धरावर तमक सहित एक वर्तन में डालकर अपने मूत्र में पकावे। इन गोमियों को भोजन आदि के साथ खिलाने से स्त्री वश में होती है।

बड़, गुलर, पीपल, पिलखन, अजीर के दूध तथा पंडुकी (पाँतकी) के अडे के रस में कपास, आक, कमल सूत्र, सेमल की रुई, सन की बनी हुई बत्ती को भावना देकर काले तिलो का दीपक जलाने से तीनों लोक वश में होते हैं।

निगुण्डी और सफेद सरसो घर के द्वार पर अथवा दुकान के द्वार पर रखी जावे तो अच्छा क्रय विक्रय होता है।

जो स्त्री काचिका (सीबीर) के साथ जब के फूल को मल कर क्रतु का १ में पीती है। वह फिर मासिक से नहीं होती है यदि हों भी जावे तो गर्भ प्राग्गण तो कभी भी नहीं करती है।

लज्जारिका, और मेढक की चरबी को हाथ पर लगा देने में अग्नि वा स्तम्भन होता है, और श्वास निराध से तुला दिव्य का स्तम्भन होता है।

उत्तर दिशा में उत्पन्न होने वाली कौच की जड़ का गो मूत्र में पीस कर उमका मस्तक पर तिलक करने में शक्तिनी उममे अपना प्रतिबिम्ब देखती है।

रवि पुष्यामृत के योग में ब्राह्मी, जनावरी, जखा होली, अथा जारा, जावरी, केसर मालकांगरी, चित्रक, अकलकगे और मिथी का वर्ग करके सब सम भाग लेकर, सबेरे १४ कोमल अदरक के रस में २१ दिन तक खाने से बुद्धि की वृद्धि होती है।

पुष्याक योग में काला धतुरे की जड़ अथवा सफेद धतुरे की जड़ जनिवार को निमन्त्रण देकर, रविवार को संध्या काल में नग्न होकर ग्रहण करे, फिर कम्पा कथीत सूत्र लपेट कर, धूप खेवे, फिर उस जड़ को अपने कमर में बांधने से स्वप्न में धीर्य का कभी स्थलन नहीं होता है।

पुण्याकं अथवा हस्तार्क में रुद्रवति और () का पंचांग लेकर पानी में गोली बनाकर रखे, जब कार्य पड़े तब अपने शरीर में लेप करने से अग्नि शीतल के समान लगती है। याने अग्नि में नहीं जलता है।

मूलार्क योग में सर पखा का पंचांग, वीसरवपरा का पंचांग, इन्द्रवारुणी का पंचांग शिव लिंगी का पंचांग, इन सब को एकत्र करके पेट पर लेप करने से उदर रोग शांत होते हैं।

पुण्याकं योग में लज्जालु पंचांग, शख पुष्पी पंचांग, () पंचांग लक्ष्मण पंचांग, श्वेत गुंजा पंचांग इन सब चोजों को ग्रहण करके गोली बनावे, जब कार्य पड़े तब स्वयं के मूत्र में उस गोली को घिस कर तिलक करने से पर विद्या का छेदन होकर, आजीविका की प्राप्ति होती है।

रवि पुण्या मृत योग में दुव पंचांग का रस त्वाकर अष्ट गध मिलाकर दाया हाथ की अनामिका अंगुली से माथे पर निरन्तर तिलक करने से सर्व जन वश में होते हैं।

पुण्याकं योग में जाड पुष्प का पंचांग और समुद्र फेन, गंधेडा के मूत्र में गोली करके ब्राह्म में अंजन करने से भूत प्रेत, व्यतरादि सर्व दोंप का नाश करता है। स्त्रियों के भग पर लेपन करने से सुभागी हो जाता है।

पुण्याकं में धन्वंतरि पंचांग, लक्ष्मणा पंचांग, शिवलिंगी पंचांग इन तीनों का चूर्ण करके सू घने में आधा गीशा तथा सूर्य वान का नाश होता है।

पुण्याकं योग में एक डडी पंचांग, पुत्र जारी पंचांग को तीन धातु के ताबीज में डालकर हाथ में बाधने से, सर्व जाति को अग्नि डडी हो जाती है।

पुण्याकं योग में मुरगे की बिष्टा, मयूर की बिष्टा लोमडो की बिष्टा, चीमगादड की बिष्टा और चतुष्पद पशुओं रज, सबको इकट्ठा करके शत्रु के माथे डालने में उसका नाश होता है।

पुण्याकं योग में संपखा पंचांग, चक्रांग पंचांग, मयूर ग्रीखा पंचांग इन सब चोजों को पानी के साथ पिलाने से सब जाति के विप से कभी भरण नहीं होता है।

पुण्याकं योग में चक्रांग पंचांग, काक गधा पंचांग, पिलाने से अन्दर गाठ और गोलादिक शूल की शानि होती है।

पुण्याकं में सहदेवी का पंचांग तीन धातुओं के ताबीज में डालकर धारण करने से असमय में गर्भपात कभी नहीं होता है।

पुण्यार्क में सूअर की चिंटा जमीन पर नहीं गिरे, उसके पहले ही ग्रहण करके मिष्टान्न के साथ में हाथी को खिलाने से हाथी पग में होता है।

पुण्यार्क योग में सकेद अकौआ जडको, की जो गणेशाकार होती है उसको लाकर ब्रह्म के साथ में रखने से अष्ट सिद्धि और नव निः की प्राप्ति होती है।

गंगा पार की ताम्बा लाकर चने में मिलावै और कूट कर गुदा में धूनी दे तो बवासीर का रोग शांत होता है।

सर्प की कंचुली को मस्से के नीचे बांधे तो बवासीर ठीक होता है।

दाया हाथ की बीच की अंगुली में लोहे की अंगूठी पहनने से पथरी रोग शांत होता है।

सुबह के समय दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके हाथ में गुड़ की डली लेकर उसे दातों से काट कर चोराहे पर फेंक देने से आधा सीसी का रोग शांत होता है।

गाय के घी में सोरा मिलाकर सूंघने में आधा सीसी रोग दूर हो जाता है।

दूध के दांत जिसके गिरे हों उस दांत को तावोज में मड़वा कर पास रखने से दांत पीड़ा शांत होती है।

रेशम के डोरे में जायफल की माला गुंथ कर रागी के गले में बांधने से मृगी रोग शांत होता है।

गाय के बायें सोग की अंगूठी बजा कर, दाया हाथ को कनिष्ठा अंगुली में पहनने से मृगी का दौरा आना जल्दी बन्द हो जाता है।

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में उत्तर दक्षिण की ओर बाले पवित्र स्थान से, व्याघ्र नखी, बूटी की जड़ उखाड़ लावे और उसे स्त्री के कमर में बांधने से प्रदर रोग शांत होता है।

काली मूसली की जड़ को हाथ वा पांव में बांधने से रुका हुआ गर्भ गिर जाता है।

जेष्ठा नक्षत्र में अंडुसे की जड़ लाकर उसे धूप देकर स्त्री की कमर में बांधने से मष्ट पुष्पा स्त्री ३० दिन के भीतर फिर, रजम्बला होने लगती है।

तीन की जड़ ब्रह्मदण्डी की जड़, मुलहठी, काली मिर्च और पीपल इन सबको जो कुट का काढा बनाकर पीने से बन्ध मासिक धर्म फिर से होने लगता है।

शिव लिंगी के बीज की गुड़ के साथ गोलो बना कर ऋतु स्नान के बाद तीन दिन खाकर मंथन करने से गर्भ ठहर जाता है।

निर्गुण्डि के रस में गोखरू के बीज डालकर सात दिन तक पीने से स्त्री गर्भ धारण करती है ।

श्रवण नक्षत्र में काले एरण्ड की जड़ लाकर, उसे धूप, दीप देकर बन्ध्या स्त्री के गले में बाँधने से बन्ध्यात्व दोग दूर हो जाता है । वह गर्भ धारण करती है ।

नीबू के पुराने वृक्ष की जड़ को दूध में पीसकर घी में मिला कर पीने से दीर्घ जीवी पुत्र की प्राप्ति होती है ।

रजो धर्म से निवृत्त होने के बाद पाच दिन तक, जो स्त्री पान की जड़ को घोट कर पी लेती है । उसे गर्भ नहीं रहता है ।

स्त्री की योनि पर हाथी की लीद रखने से गर्भ नहीं रहता है ।

रवि पुण्या मृत में धतूरे की जड़ को लाकर रख ले, कार्य पड़े तब गर्भवती स्त्री के कमर में बांध देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है ।

मरुद सोड की जड़ को गर्भिणी स्त्री के योनि में रखने से सुख पूर्वक प्रसव होता है ।

गर्भिणी स्त्री के हाथ में चम्बक पत्थर रख देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है ।

स्त्री के कमर में बांस की जड़ बांधने से प्रसव सुख से होता है ।

नीम की जड़ स्त्री के कमर में बांधने से प्रसव सुख पूर्वक होता है ।

उत्तर दिशा में उ पक्ष ईश्व की जड़ को स्त्री के नाप के डोरे में बांध कर कमर में बांधने से प्रसव सुख पूर्वक होता है ।

आबला और मूलहठी को गाय के दूध के साथ पीने से गर्भ स्तंभन होता है ।

धतूरे की जड़ को कमर में बाँधने से गर्भ स्त्राव नहीं होता है ।

अकरकरा को मृत में लपेट कर बच्चे के गले में बांधने से मृगी रोग घात होता है ।

दूध पिलाने वाली मा अथवा धाय के कपड़े में से एक टुकड़ा फाड़ कर, पानी में भिगोवे, फिर बच्चे के माथे पर रख देने से हिलकी रोग शान्त हो जायगा ।

कपूर के डलियों की माला बनाकर बच्चे को पहनाने से सुखपूर्वक दौन आयेगे ।

बच्चे के हाथ में लोहे अथवा तांबे का कड़ा पहनाने से दात सुखपूर्वक आवेंगे और बच्चे को दृष्टि दोष नहीं होगा ।

काली सरसो और काली मिर्च को पीसकर अजन करने से भूत बाधा नष्ट होती है ।

अश्विनी नक्षत्र में घोड़े के खुर का नख लेकर रखले, उस नख को अग्नि में डाल कर धूनी देने से भूत प्रेत आदिक भाग जाते हैं।

अनार का बाधा ज्येष्ठा नक्षत्र में लाकर घर के दरवाजे पर बाध देने से बालकों के दुष्ट ग्रहों का निवारण हो जाता है।

काशीफल के फूलों के रस में हल्दी को पीस कर पत्थर के बरत में खूब घोट कर अंजन बनाले। इस अंजन को आँख में लगाने से भूतादि की बाधा अवश्य दूर हो जाती है।

रविवार के दिन सफेद कनेर की जड़ को दाहिने कान पर बाधने से विषम ज्वर दूर होता है और दायी भुजा में बाधने पर शीत ज्वर दूर होता है।

चौलाई की जड़ मिर में बाधने से विषम ज्वर दूर हो जाता है।

मकड़ी के जाले को गले में लटकाने से ज्वर उतर जाता है।

रविवार के दिन आक की जड़ को उखाड़ कर कान में बाधने से सभी तरह के ज्वर दूर हो जाते हैं।

नारियल की जड़ को (लांगली मूल) को गले में बाधने से महा ज्वर दूर हो जाता है।

बृहस्पति की जड़ को मस्तक पर रखने में, बाधने से महा ज्वर नष्ट होता है।

अपा मार्ग की जड़ को रोगी के भुजा में बाधने से भूत ज्वर नाश होता है।

रीठे के फल को धागे में गूथ कर बच्चे के गले में बाधने से उसे नजर नहीं लगती तथा हिचकी रोग शान्त होता है।

भेड़िये के दात को बालक के गले में बाधने से बालक का अपस्मार रोग शान्त होता है।

कबूतर की बीट को दाहद के साथ पीने से स्त्री रजम्बला हो जाती है।

घूंघची की जड़ को कान में बाधने से दाढ़ के कीड़े भड़ जाते हैं।

रविवार के दिन सर्प की कंचुल लाकर थोड़े में गुड़ में १ रत्ती भर कंचुलि मिला कर देने से नाहरू रोग शान्त हो जाता है।

सूकी मिट्टी का डला सू घने से ताक का रक्त बन्द हो जाता है। नकसीर ठीक होती है।

प्याज की माना को कंठ में धारण करने से तिल्ली और जिगर दूर हो जाता है।

आवा हल्दी, सेंधा नमक, कूठ को सम भाग लेकर नीबू के रस में पीस कर लेप करने से मुंह के धबके दूर होते हैं ।

तज, धनिया और लोध को सम भाग पीस कर मससो तथा मुहासो पर लेप करने से वे दूर हो जाते हैं ।

सरसो, सेंधा नमक, लोग और बच—इन सबको कूट कर मुंह पर लेप करने से मुंह पर होने वाली छोटी २ कीले फुंसिया ठीक होती हैं ।

सफेद साठी की जड़ को घी में पीस कर आंखों में अंजन करने से बहना हुआ पानी रुक जाता है ।

बादाम, कपूर, आधी २ रस्ती लेकर खूब महीन पीस ले, फिर अगुली से अंजन करने पर दुखती हुई आंखें ठीक हो जाती हैं ।

रागे की अंगूठी मध्यमा उंगली में पहनने से मोटापा कम हो जाता है ।

सांते समय सुखा नमक पिसा हुआ शिर में मलने से भड़ते हुए शिर के बाल बन्द हो जायेंगे ।

शुभ नक्षत्र में (अपामार्ग अथवा अधाभार) की जड़ लाकर व्यक्ति के दांये कान में बांधने से सर्प-बिच्छू का जहर उतर जाता है ।

सर्प के काटे हुए स्थान पर सफेद सोठ की जड़ का लेप करने से जहर उतर जाता है ।

मयूर के साबूत पट्ट को चिलम में भर कर फूंक लेने से तुरन्त सर्प का जहर उतर जाता है । किन्तु इस प्रयोग को छ-सात बार करना चाहिये, सर्प दष्टा व्यक्ति अगर बेहोस हो गया हो तो अन्य व्यक्ति स्वयं फूंक लेकर सर्प दष्टा के नाक में जोर से धुआं फेंकने से विष उतर जायगा ।

ऊट के वालों की रस्सी बनाकर, अपनी जांघ में बांध ले तो जब तक उस रस्सी को नहीं खोलेंगा तब तक वीर्य स्थलित नहीं होगा ।

कमल गट्टे को शहद के साथ पीस कर नाभि पर लेप करने से वीर्य स्थलित नहीं होगा ।

पुष्य नक्षत्र में आक और धतूरे का ऊपरी भाग एवं कटेली की जड़ लाकर, सबको मिलाकर चूर्ण करे, इस चूर्ण को जिसके शिर पर डाल दिया जाय, उससे इच्छित वस्तु प्राप्त की जा सकती है ।

ताल को मट्टे में पीस कर मिट्टी सहित पुतली बनाए। उस पुतली को जिसके घर में गाढ़ दिया जाय उस घर का ग्रह बलेश का नाश हो जाता है।

शुक्ल पक्ष में पुष्य नक्षत्र पड़े तब घूँघची की जड़ लाकर उसे शैय्या के सिरहाने बाँध कर सोने से चौरों का भय नहीं रहता है।

कृति का नक्षत्र में कंथ का बाँधा लाकर मुँह में रखने से शस्त्र के आघात का भय दूर हो जाता है।

अंकोल के फल का तेल निकाल कर उसमें तगर के फल का चूर्ण मिलावे इसे आंखों में आजने से जहाँ तक दृष्टि जायगी वहाँ तक देवी-देवता ही दिखाई पड़ेगे। बाद में केवल तगर के तेल का अंजन करने से पुनः मानुषि दृष्टि प्राप्त होती है।

आकोल का तेल दीपक में भर कर घर में जलाने से भूत प्रेत दिखाई देते हैं।

मीठे तेल में गंधक डाल कर दीपक जलाने से घर में भूत प्रेत दिखाई देते हैं।

रविहस्त को पमाड की जड़, शनिवार को न्योतकर रविवार को प्रातः उसे लाकर दाँई भुजा में बाँधने से जुआ में जीत होती है।

सफेद घूँघची को पानी में पीस कर बिना खूँटी वाली खड़ाऊँ पर गाढ़ा लेप कर ले फिर उस पर पाँव जमा कर चले तो खड़ाऊँ पाँव से अलग नहीं होगी।

मूली के पत्तों का रस हाथ में लेकर बिच्छु पकड़ने से वह डक नहीं मारता है।

गोखरू बकरी का सींग, ताल बुखारा, शूकर की विण्टा और सफेद घूँघची इन सब को पीस कर रसोई घर में डाल देने से मिट्टी के बरतन सब फुट जायेंगे।

रविवार के दिन प्रातः काल लाल एरण्ड को न्योत आवे। शाम के समय उसे एक भटके में तोड़ लाये कि उसके दो टुकड़े हो जायें। एक टुकड़ा नीचे गिर पड़े, दूसरा हाथ में रहे फिर दोनों टुकड़ों को अलग-अलग रख ले। फिर जिसे पीढ़े (पाटा) पर बैठा हुआ देखे, उसके शरीर से जो टुकड़ा नीचे गिर पड़ा हो, तो वह आदमी पाटे से चीपक जायगा। हाथ में जो रह गया था, उसको स्पर्श करा देने पर वह चिपका हुआ आदमी छूट जायगा।

आक के दूध में चाँवलों को भीगो कर आग पर चढ़ाने से चाँवल कभी भी नहीं पकते हैं।

भिलावे का रस में घूँघची, बिष, चित्रक, और कौच को मिला कर देने के शत्रु को

भूत लग जाता है। चन्दन खस माल कांगनी, तगर, लाल चन्दन और कूठ को एक में पीस कर शरीर में लेप करने से भूत उतर जाता है।

शुभ तिथि, शुभ वार के नक्षत्र को काली गाय के दूध को जीभ पर रखे और उसके घी को दोनों आँखों में अंजन करे तो पृथ्वी में गड़ा हुआ द्रव्य दिखेगा।

जहाँ पर कौए मैथुन करते हों और सिंह आकर बैठता हो वहाँ अवश्य ही धन गड़ा हुआ है समझना।

बहेड़े के वृक्ष को साम की नोट आवे, सबेरे उसका पत्ता लाकर पाव के नाचे दबा कर भोजन करने से बीस तीस घादमी का भोजन अकेले ही खा जाता है।

बहेड़े का पत्ता तथा सफेद कुत्ते का दाँत इन दोनों को कमर में बांध कर खाने बैठने से बहुत भोजन करता है।

घेस के दूध में तथा घी में अपना मार्ग के बीजों की खीर बना लर खाने से १ महीने तक भूख नहीं लगती है।

पमार के बीज, कसेरू तथा कमल की जड़ को गाय के दूध में पका कर खाने से एक महीने तक भूख नहीं लगती।

गोरोचन तथा केशर को महावर के साथ घिस कर, उसके द्वारा भोज पत्र के ऊपर शत्रु का नाम लिख ने से उसका स्वप्न न हो जाता है। और वह सदैव वश में रहता है।

पके और सुखे हुए लभेड़े (लहसुई) के फल को खूब महीने पीस कर पानी में डालने से पानी बंध जाता है।

दो हांडियों में शमसान के अंगारे भर कर दोनों का आपस में मुँह मिला कर जगल में गाड़ देने से मेघ का स्तंभन हो जाता है।

चौलाइ की जड़ को चान्दो के ताबीज में डाल कर अपने मुँह में रखने से शत्रु का मुख स्तंभित रहता है।

ऊँट के रोमों को किसी पशु पर डाल देने से वह जहाँ का तहाँ ही स्तंभित हो जाता है। कटेली की जड़ को और मुलहठी की समभाग लेकर पीसे, फिर नाक में सुँघने से निद्रा का स्तंभन हो जाता है।

ऋतुमती स्त्री की योनि के वस्त्र पर जिस मनुष्य का नाम गोरोचन से लिख कर घड़े में बन्द कर दिया जाय, उसका स्तंभन हो जाता है। फिर वह चल फिर नहीं सकता है, एक ही स्थान पर पड़ा रहता है।

जलते हुए भट्टे में घोड़े का खुर और बेल की जड़ को डाल दिया जाय तो अग्नि का स्तंभन हो जाता है । फिर खाली धुंआ उठता रहता है ।

रविपुष्पामृत नक्षत्र में सफेद आकड़े की जड़ को लेकर दाईं भुजा में बांधने से व्याघ्र का स्तंभन होता है ।

ऊँट की हड्डी को जिस व्यक्ति का नाम लेकर पृथ्वी में गाड़ दिया जाय तो, उस मनुष्य की गति स्तम्भित हो जाती है ।

एकाक्षी नारियल कल्प

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं एकाक्षाय श्रीफलदाय भगवते विश्वरूपाय सर्व योगेश्वराय त्रिलोक्यनाथाय सर्वकार्य प्रदाय नमः ।

पूजन विधि : प्रथम हस्त में पानी लेकर संकल्प करे—अत्राद्य संवत् मिलाब्दे महामागलाय फलप्रद प्रमुक्तमामे अमुक पक्षे अमुकनिधौ अमुक वामने अष्ट मिदये वस्त्रेन प्राप्तये एकाक्षी श्रीफल पूजन महं करिष्यामि । इस प्रकार कह कर पानी छोटे फिर उपर्यन्त मन्त्र को बोलते हुये श्रीफल का पंचामृताभिषेक करे, अष्ट द्रव्य च हावे रेणुमी वस्त्र छोटाए, पूजन करे । उसके बाद सोने की वा मू गेकी अथवा रुद्राक्ष को माला से जप शुरू करे । जप १२५०० हजार हो जाय, फिर नित्य प्रति एक माला फेरे, दीवाली, सूर्यग्रहण या चन्द्र ग्रहण के समय पूजन करे ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं महालक्ष्मी स्वरूपाय एकाक्षिनालिकेराय नमः सर्वसिद्धिं कुरु २ स्वाहा ।

यह मन्त्र रेणुमी कपड़े पर अष्ट गंध से अथवा केसर से लिखा । अनार की कलम से उस वस्त्र के उपर एकाक्षी श्रीफल रखा मन्त्र से प्रातः और संध्या को अष्ट द्रव्य से पूजा करे, मूल मन्त्र की एक माला फेरे ।

मन्त्र :—ॐ ऐं ह्रीं ऐं ह्रीं श्रीं एकाक्षिनालिकेराय नमः ।

इस मन्त्र की एक माला फेरे गुलाब के फूल १०८ चढ़ावे ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ऐं एकाक्षिनालिकेराय नमः ।

इस मन्त्र की १० माला पाच दिन तक प्रति दिन फेरे । तथा कनेर के २१ फूल चढ़ाए । जिज्ञासित का स्वप्न में उत्तर प्राप्त होगा ।

फलप्राप्ति :-

इस श्रीफल सुंधाने मात्र से स्त्री गर्भ, के कष्ट से छुटे, तुरंत प्रसव हो।

बन्ध्या स्त्री को ऋतु स्नान के बाद धोख कर पानी पिलावे तो संतान हो।

श्री फल को सात बार पानी में डुबो कर सात बार ही मन्त्र पढ़े, फिर उस पानी को छीटने से भूत-प्रेत, का उपद्रव शांत होता हो।

लाल कनेर का फूल लेकर, दक्षिण दिशा में बैठकर शत्रु का नाम लेते हुए एक माला फेरे, शत्रु के सामने फेंके तो शत्रु का नाश हो।

दक्षिणावर्त शंख कल्प

शंख ३ तोले का उत्तम २५ तोले का अत्युत्तम है। शंख शुक्ल वर्ण का ही उत्तम माना गया है।

दे शंख को पानी में नमक डाल कर उस पानी में डाल दे, फिर सात दिन तक पानी में ही रक्खे, अगर शंख फटे नहीं तो समझो असली शंख है नहीं तो नकली है।

प्रयोग फल :-

शंख पानी भर कर मस्तक पर नित्य ही छीटे तो पाप का क्षय हो।

शंख पानी लेकर पूजन करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है।

पूजन पश्चात् शंख में दूध भर कर बन्ध्या स्त्री पिए तो उसके सन्तान होती है।

जिस घर में शंख हो उस घर में सर्व मंगल होता है। रोग शोक मोह का नाश, प्रतिष्ठा बढती है। पुन सम्मान राज्य में होता है।

पूजन विधि :-

स्नान करके, सफेद वस्त्र धारण करे, प्रतिदिन दूध से फिर पानी से शंख को स्नान करावे। फिर चांदी, के चा सोने के पत्र पर उस शंख को सोने में मढ़ाना चाहिये, फिर अष्ट-द्रव्य से सोडसो प्रचार पूजन करना चाहिए, पूजन करने के पहले सकल्प करे।

ॐ अथ प्रमुखाय अमुकमासे अमुक पक्षे अमुकतिथौ मम मनोवाञ्छित कार्यसिद्धये ऋद्धि सिद्धि प्राप्तिर्वा महे देवाणा वरत शंखस्य पूजन करिष्याम।

पूजन मन्त्र :-

ॐ ह्री श्री क्लीं पीधर करस्थापयोनिधि जाताय श्री दक्षिणवर्त शंखाय ह्री श्री क्लीं श्रीकराय पूज्याय नमः।

जलते हुए भट्टे में धोड़े का खुर और बेत की जड़ को डाल दिया जाय तो अग्नि का स्तंभन हो जाता है। फिर खाली धुंआ उठता रहता है।

रविपुण्यामृत नक्षत्र में सफेद आकड़े की जड़ को लेकर दाईं भुजा में बांधने से व्याघ्र का स्तंभन होता है।

ऊँट की हड्डी को जिस व्यक्ति का नाम लेकर पृथ्वी में गाड़ दिया जाय तो, उस मनुष्य की गति स्तम्भित हो जाती है।

एकाक्षी नारियल कल्प

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं एकाक्षाय श्रीफलाय भगवते विश्वरूपाय सर्व योगे-

श्वराय त्रैलोक्यनाथाय सर्वकार्य प्रदाय नमः ।

पूजन विधि : प्रथम हस्त में पानी लेकर सकल्प करे—अत्राद्य संवत् मिलाव्दे महामागलाय फलप्रद—अमुकमासे अमुक पक्षे अमुकतिथौ अमुक वासने षट् सिद्धये बहुधन प्राप्तये एकाक्षि श्रीफल पूजन महं करिष्यमि। इस प्रकार कह कर पानी छीटे फिर उपर्युक्त मन्त्र को बोलते हुये श्रीफल का पंचामृताभिषेक करे, अष्ट द्रव्य चढ़ावे रेशमी वस्त्र ओढ़ाए, पूजन करे। उसके बाद सोने की वा मृगेकी अथवा रुद्राक्ष की पाला से जप शुरू करे। जप १२५०० हजार हो जाय, फिर नित्य प्रति एक माला फेरे, दीवाली, सूर्यग्रहण या चन्द्र ग्रहण के समय पूजन करे।

मन्त्र :—ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं महालक्ष्मी स्वरूपाय एकाक्षिनालिकेराय नमः सर्वसिद्धि कुरु २ स्वाहा ।

यह मन्त्र रेशमी कपड़े पर अष्ट गंध से अथवा केसर से लिखा। अनार की कलम से उस वस्त्र के ऊपर एकाक्षि श्रीफल रखा मन्त्र से प्रातः और संध्या को अष्ट द्रव्य से पूजा करे, मूल मन्त्र की एक माला फेरे।

मन्त्र :—ॐ ऐं ह्रीं ऐं ह्रीं श्रीं एकाक्षिनालिकेराय नमः ।

इस मन्त्र की एक माला फेरे गुलाब के फूल १०८ चढ़ावे।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ऐं एकाक्षिनालिकेराय नमः ।

इस मन्त्र की १० माला पाच दिन तक प्रति दिन फेरे। तथा कनेर के २१ फूल चढ़ाए। जिज्ञासित का स्वप्न में उत्तर प्राप्त होगा।

फलप्राप्ति :-

इस श्रीफल सूत्राने मात्र से स्त्री गर्भ, के कण्ठ से छूटे, तुरंत प्रसव हो।

बंध्याँ स्त्री को ऋतु स्नान के बाद धोल कर पानी पिलावे तो सतान हो ।

श्री फल को सात बार पानी में डुबो कर सात बार ही मन्त्र पढ़े, फिर उस पानी को घर में छीटने से भूत-प्रेत, का उपद्रव शांति होता हो।

लाल कनेर का फूल लेकर, दक्षिण दिशा में बैठकर शत्रु का नाम लेते हुए एक माला फेंगे, फल शत्रु के सामने फेंके तो शत्रु का नाश हो।

दक्षिणावर्त शंख कल्प

शंख ३ तोले का उत्तम २५ तोले का अत्युत्तम है। शंख शुक्ल वर्ण का ही उत्तम माना गया है।

यदि शख को पानी में नमक डाल कर उस पानी में डाल दे, फिर सात दिन तक पानी में ही रहने दे, अगर शख फटे नहीं तो समझो असली शख है नहीं तो नकली है।

प्रयोग फल :—

शंख में पानी भर कर मस्तक पर नित्य ही छोटे तो पाप का क्षय हो ।

शख में पानी लेकर पूजन करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है।

पूजन के पश्चात् शिखर में दुध भर कर बन्ध्या स्त्री पिण तो उसके सन्तान होती है ।

जिस घर में शंख हो उस घर में सर्व मंगल होता है। रोग शोक मोह का नाश, प्रतिष्ठा बढ़ती है। मान सम्मान राज्य में होता है।

पूजन विधि :—

स्नान करके, सफेद वस्त्र धारण करें, प्रतिदिन दूध से फिर पानी से शंख को स्नान करावे। फिर चानी, अथवा सोने के पत्र पर उभ शंख को सोने में मढ़ाना चाहिये, फिर अष्ट-द्रव्य से सोहस्रो प्रचार पूजन करना चाहिए,। पूजन करने के पहले सकल्प करें।

ॐ अद्य प्रमुक्तं वर्षे अमुकमासे अमुक पक्षे अमुकतिथौ मम मनोवाञ्छित कार्यसिद्धये
ऋद्धि मिद्धि प्राप्यर्थं मह दक्षिणा वर्त शस्त्रस्य पूजन करिष्याम ।

पूजन मन्त्र :—

ॐ ह्री श्री क्ली श्रीधर करस्थायपयोनिधि जाताय श्री दक्षिणवर्त शम्भाय ह्री श्री क्ली
श्रीकणाय पुज्याय नमः ।

इस मन्त्र को पढ़ते हुए अष्ट द्रव्य से सुगन्धित इत्र चढ़ाए, नैवेद्य चादी के बरतन में रखे, उससे दूध, चीनी, केशर, कस्तूरी बादाम, इलायची डालें, साथ में केला रखें, जो भोजन शाला में बस्तु बनी हो उसे चढ़ाए, कपूर से आरती उत्तारें ।

ध्यान मन्त्र :—

ॐ ह्रीं श्री क्लीं श्री वर करस्थाय पयोनिवि जाताय लक्ष्मी सहोदराय चिन्तितार्थ संपा-
दकाय श्रीदक्षिणावतं शंखाय श्री कराय, पूज्याय क्ली श्री ह्री ॐ नमः सर्वाभरण भूषिताय
प्रशस्त्याय ज्योत्स्नाय संयुताय कल्पवृक्षाय स्थिताय कामधेनु चिन्तामणिनव नीधिरूपाय चतुर्दश रत्न
परिवृताय अष्टादश महासिद्धि सहिताय श्रीलक्ष्मी देवता श्री कृष्णदेव करतल लालिताय श्रीशंख
महानिधये नमः ।

जप मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमूँ दक्षिण मुखाय शंखनिधये समुद्रप्रभावाय शंखाय नमः । प्रतिदिन एक या दसमाला फेरे । जप करने के बाद मन्त्र के साथ पानी आकाश को ओर छुड़ा दे ।

गौरोचन कल्प

मन्त्र :—ॐ ह्रीं हन हन ॐ ह्रीं हन ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ठः ठः ठः
स्वाहा ।

विधि :—गौरोचन की टिकड़ी बनाये—२१ उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके शुद्ध जगह रख दे, जब भी जरूरत हो उपरोक्त मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित करके प्रयोग में लावे, गुल का धूप लेवे ।

प्रयोग :—१. ललाट पर तिलक कर राज्य सभा में राज्य प्रमुख के पास व सरकारी किसी भी कार्य के लिए जावे तो मनोकामना सफल हो।

२. हृदय पर तिलक करके जहाँ भी जावे, तो मनोकामना सफल हो, किसी स्त्री के पास जावे, तो वश में हो।

३. मस्तक पर तिलक करके जावे तो रास्ते में सिंह, व्याघ्र, चोर आदि का भय मिटे, स्त्री-पुरुष सब वश हो, लोक प्रिय हो।

तंत्राधिकार : रुद्राक्ष कल्प

भोग और मोक्ष की इच्छा रखने वाले चारो वर्गों के लोगों को रुद्राक्ष धारण करना चाहिये। उत्तम रुद्राक्ष असंख्य।य समूहो का भेदन करने वाला है। जाति भेद के अनुसार

रुद्राक्ष ४ तरह के होते हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। उन ब्राह्मणादि जाति के रुद्राक्षों के वर्ण श्वेत, रक्त पीत तथा कृष्ण जानना चाहिये। मनुष्यों को चाहिये कि वे क्रमशः वर्ण के अनुसार अपनी जाति का ही रुद्राक्ष धारण करें। जो रुद्राक्ष आंबले के फल के बराबर होता है। वह समस्त अनिष्टों का विनाश करने वाला होता है। जो रुद्राक्ष बेर के फल के बराबर होता है, वह उतना छोटा होते हुए भी लोक में उत्तम फल देने वाला तथा मुख सौभाग्य वृद्धि करने वाला होता है। जो रुद्राक्ष गुजाऊन के समान बहुत छोटा होता है वह सम्पूर्ण मनोरथों और फलों की सिद्धि करने वाला होता है। रुद्राक्ष जैसे-जैसे छोटा होता है वैसे-वैसे अधिक फल देने वाला होता है। एक-एक बड़े रुद्राक्ष से एक-एक छोटे रुद्राक्ष को विद्वानों ने दस गुना अधिक फल देने वाला बतलाया है। अतः पापों का नाश करने के लिए रुद्राक्ष धारण करना आवश्यक बताया है। रुद्राक्ष के समान फलदायिनी कोई भी माला नहीं है। समान आकार प्रकार वाले चिकने, मजबूत, स्थूल, कण्टक युक्त (उभरे हुए छोटे २ दानों वाला) और मुंदर रुद्राक्ष ग्रन्थि-लबित पदार्थों के दाता तथा सदैव भोग और मोक्ष देने वाले है। जिसे कीड़ों ने दूषित कर दिया हो, जो टूटा फूटा न हो जिसमें उमरे हुए दाने न हो, जो ब्रण युक्त हो तथा जो पूरा पूरा गोल न हो इन पांच प्रकार के रुद्राक्षों को त्याग देना चाहिये। जिस रुद्राक्ष में अपने आप ही डोरा पिरोने योग्य छिद्र हो गया हो, वही उत्तम माना गया है, जिसमें मनुष्य के प्रयत्न से छेद किया गया हो, वह मध्यम श्रेणी का होता है। ग्यारह सौ रुद्राक्ष धारण करने वाला मनुष्य जिस फल को पाता है उसका वर्णन सैकड़ों वर्षों में भी नहीं किया जा सकता, भक्तिमान पुष्ट साठ पांच सौ रुद्राक्ष के दानों का मुंदर मुकुट बनाले और उसे सिर पर धारण करे तीन सौ साठ दानों के लम्बे सूत्र में पिरोकर एक द्वार बना ले। वैसे-वैसे तीन द्वार बनाकर भक्ति परायण पुष्ट उनका यज्ञोपवीत तैयार करे और उसे यथा स्थान धारण किये रहे।

कितने रुद्राक्ष की माला—कहाँ धारण की जाये—छ. रुद्राक्ष की माला कान में, बारह की हाथ में, पन्द्रह की भुजा में, बाईस की मस्तक में सत्ताईस की गले में, वत्तीस की कंठ में (जिससे झूल कर वह हृदय को स्पर्श करती रहे) धारण करनी चाहिये।

कौनसा रुद्राक्ष कहाँ धारण करना चाहिए—छ. मुखा रुद्राक्ष दाहिने हाथ में, सात मुखा कंठ में, आठ मुखा मस्तक में, नौ मुखा बाये हाथ में, चौदह मुखा शिखा में, बारह मुखा बाले रुद्राक्ष को केश प्रदेश में धारण करना चाहिये। इसके धारण करने से आरोग्य लाभ सात्विक प्रवृत्ति का उदय, शक्ति का अविर्भाव और विघ्ननाश होता है।

रुद्राक्ष के मुखों के अनुसार उसका फल निम्न प्रकार से है—

(१) एक मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् भोग व मोक्ष रूप फल प्रदान करता है। जहाँ इसकी

पूजा होती है, जहाँ से लक्ष्मी दूर नहीं जाती। उस स्थान में सारे उपद्रव नष्ट हो जाते हैं तथा वहाँ रहने वाले लोगों की सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

- (२) दो मुख वाला रुद्राक्ष देव देवेश्वर कहा गया है। वह सम्पूर्ण कामनाओं और फलों को देने वाला है। गर्भवती महिलाओं की कमर या बाँह पर सूत से बांध देने पर गर्भावस्था नौ महिने के अन्दर किसी भी प्रकार की बाधा, भय, बेहोशी, हिस्टीरिया, डरावने स्वप्न आदि दोष नहीं होंगे साथ में एक रुद्राक्ष बिस्तर पर तकिए के नीचे एक डिबिया में रख देना चाहिये।
- (३) तीन मुख वाला रुद्राक्ष सदा साक्षात् साधन फल देने वाला है, उसके प्रभाव से सारी विद्यायें प्रतिष्ठित होती हैं। तीन दिन के बाद आने वाला ज्वर इसके धारण करने से ठीक हो जाता है।
- (४) चार मुख वाला रुद्राक्ष के दर्शन और स्पर्श से शीघ्र ही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों की सिद्धि देने वाला है इससे जीव हत्या का पाप नाश हो जाता है।
- (५) पाँच मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् कालाग्नि रूप है वह सब कुछ करने में समर्थ है सब कष्टों से मुक्ति देने वाला तथा सम्पूर्ण मनोबांछित फल प्रदान करने वाला है उसके तीन दाने धारण करने से लाभ होता है।
- (६) छः मुख वाला रुद्राक्ष यदि दाहिनी बाह में उसे धारण किया जाये तो धारण करने वाला मनुष्य विद्याओं का स्वामी होता है और पापों से मुक्त हो जाता है यह विद्यार्थियों के लिए उत्तम है।
- (७) सात मुख वाला रुद्राक्ष अर्नग स्वरूप और अनग नाम से ही प्रसिद्ध है उसको धारण करने से दरिद्र भी ऐश्वर्य शाली हो जाता है। सभी रोगों का नाश होता है।
- (८) आठ मुख वाला रुद्राक्ष अष्ट मूर्ति भैरव रूप है। असत्य भाषण का पाप नष्ट करता है। उसको धारण करने से मनुष्य पूर्णाधि होता है और मृत्यु के पश्चात् शूल धारी यक्ष हो जाता है।
- (९) नौ मुख वाले रुद्राक्ष को भैरव का प्रतीक माना गया है प्रयत्न नौ रूप धारण करने वाली माहेश्वरी दुर्गा उसकी अधिष्ठात्री देवी मानी गई है जो मनुष्य अपने वांछे हाथ में इसको धारण करता है वह सर्वेश्वर हो जाता है।
- (१०) दस मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् भगवान् रुद्र है। उसको धारण करने से मनुष्य की

सम्पूर्ण कामनाएं पूर्ण हो जाती है वह भूत प्रेत बाधा तथा सभी प्रकार की बीमारियों को हरण करने वाला है ।

- (११) ग्यारह मुख वाला रुद्राक्ष रुद्र का है, उसको धारण करने से सर्वत्र विजयी होता है इसे पूजा गृह अथवा तिजोरी में मंगल कामना के लिए रखना लाभदायक है यह सबको मोहित करने वाला है ।
- (१२) बारह मुख वाले रुद्राक्ष को केश प्रदेश में धारण करे, उसको धारण करने से मानो, मस्तक पर आदित्य विराजमान हो जाते हैं ।
- (१३) तेरह मुख वाला रुद्राक्ष विश्व देशों का स्वल्प है, उसको धारण करके, मनुष्य सम्पूर्ण अभिष्टों को पाता है तथा सौभाग्य और मंगल लाभ प्राप्त करता है ।
- (१४) चौदह मुख वाला रुद्राक्ष परम शिररूप है, उसे भक्ति पूर्वक मस्तक पर धारण करे, इससे समस्त पापों का नाश होता है । इस तरह मुखों के भेद से रुद्राक्ष के मुख्यतः चौदह भेद बताये गये हैं ।

रुद्राक्ष धारण करने के मन्त्र निम्नलिखित रूप में हैं ।

१-४-५-१०-१३ इन पाँचों का मन्त्र—ॐ ह्रीं नमः ॥

२-१४ इन दोनों का मन्त्र—ॐ नमः ॥ है ।

३-इसका मन्त्र—क्लीं नमः ॥ है ।

६-९-११ इन तीनों का मन्त्र—ॐ ह्रीं ह्रूं नमः ॥ है ।

७-८ इन दोनों का मन्त्र—ॐ हुं नमः ॥ है ।

१२-इसका मन्त्र—ॐ क्लीं क्षीं रो नमः ॥ है ।

उपरोक्त चौदह ही मुखों वाले रुद्राक्षों को अपने अपने मन्त्र द्वारा धारण करने का विधान है रुद्राक्ष की माला धारण करने वाले पुरुष को देखकर भूत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी तथा द्रोहकारी राक्षस आदि सर्व दूर भाग जाते हैं ।

एक मुन्नी रुद्राक्ष को साधने का मन्त्र :—

श्री गौतम गणपति जी को नमः ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एक मुखाय भगवते-
ऽनुरूपाय सर्व युगेश्वराय त्रैलोक्य नाथाय सर्व काम फलं प्रदाय नमः ।

विधि :—चंद्र शुक्ला अष्टमी को १०८ रक्त वर्ण के पुष्पों से पूजन करे । धूप, दीप, प्रसाद करे केशर चन्दन कपूर का तिलक करे । प्रत्येक पुष्प पर एक मन्त्र पढ़े । फिर इसी तरह

दीपावली के दिन करे तत्पश्चात् तिजोरी में रख दे या सोने में मड़ कर गले में धारण करे।

जिनमें एक मुन्डी रुद्राक्ष जिसका मूल्य ५-१० हजार रुपये तक भी हो जाता है। विशेष रूप से नकली आते हैं। लेते समय सावधानी रखनी चाहिए। किसी विज्ञ व्यक्ति से पहचान करवा कर लेना चाहिए।

वहेड़ा कल्प

शनिवार को संध्या को वृक्ष के पास जावे, "मम कार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा" इस मन्त्र का उच्चारण करे, चन्दन, चावल, पुष्प, नैवेद्य घूप, द्वीप द्वारा उसका पूजन करे व मोली बांध कर आ जावे। दूसरे राज रविवार पुष्य नक्षत्र के दिन सूर्योदय से पहले जावे और निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर मूल व पत्ते ले आवे।

मन्त्र :—ॐ नमः सर्व भूताधिराज्ये ग्रस शोषय भंरवोऽवाज्ञायति स्वाहा।

घर पर लाकर पंचामृत से धोकर अच्छी तरह स्थापना कर, उपरोक्त मन्त्र से फिर अभिमन्त्रित करना चाहिये तत्पश्चात् प्रयोग में लाया जा सकता है।

जैसे :—(१) दाहिनी जाघ के नीचे रखकर भोजन करे, तो अपनी खुराक से बस गुना ज्यादा भोजन कर सकता है।

(२) तिजोरी में रखे तो अटूट भंडार रहे।

निर्गुण्डी कल्प

विधि — रात्रि के समय अकेला निर्गुण्डी वृक्ष के पास जावे और २१ प्रदक्षिणा निम्नलिखित मन्त्र को बोलने हुये सात रात्रि तक बराबर दे, तो वृक्ष सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो गौतम गणेशाय कुबेरये कद्रि के फट् स्वाहा।

तत्पश्चात् सातवें रोज वृक्ष का पंचाग ले आवे। फिर घूप द्वीप से पूजन करे। पंचामृत से धो कर शुद्ध जगह रखकर उपरोक्त मन्त्र की एक माला से अभिमन्त्रित कर निम्नलिखित प्रयोगों से काम लें।

जैसे :—(१) पुष्य नक्षत्र में निर्गुण्डी और सफंद सरसो, दुकान के द्वार पर रखी जाये, तो अच्छा क्रय विप्रय होता है।

- (२) वृक्ष की छाल का चूर्ण, जीरे का चूर्ण सम भाग आठ दिन तक सेवन करने से हर प्रकार का ज्वर दूर हो जाता है ।
- (३) एक महीने तक सेवन करने से भूमिगत द्रव्य दिखाई देता है ।
- (४) चालीस दिन तक सेवन करने से आयुष्म में वृद्धि होती है ।
- (५) पचास दिन तक सेवन करने से शरीर में बल अत्यन्त बढ़ता है । मृत्यु पर्यन्त निरोग रहता है इसका सेवन करते समय हल्का भोजन, खिचड़ी आदि खाना चाहिये ।

हाथा जोड़ी कल्प

शुभ दिन शुभ योग में ले, और निम्नलिखित मन्त्र का १२५०० जाप करके इसको सिद्ध कर ले ।

मन्त्र :—ॐ किलि किलि स्वाहा ।

- योग . -** (१) किसी भी व्यक्ति से वार्ता करने में साथ रखे, तो बात माने ।
 (२) जिसको भी वश करना हो उसका नाम लेकर जाप करे तो इसके प्रभाव से वह व्यक्ति वशोभूत होगा ।
 (३) प्रयोग के बाद चादी की डियिया में सिन्दूर के साथ रखे ।

विजया कल्प

इसका भिन्न भिन्न मास में निम्न भिन्न अनुष्ठान से सेवन करने से अलग अलग फल हैं जो निम्न प्रकार से हैं :—

- १ चैत्र मास में पान के साथ खाने में पड़ित बने ।
- २ वैशाख मास में अकालकरा के साथ खाने से जहर नहीं चढ़ेगा ।
- ३ ज्येष्ठ मास में नीबू में खाने में, नाबे के में रग का शरीर हट्ता ।
- ४ आषाढ मास में चित्र बल से खाने में, केश कल्प हो ।
- ५ श्रावण मास में शिबनिमी से खाने में, बलवान बने ।
- ६ भाद्र मास में रुद्रवती से खाने से, सबका प्रिय होता है ।
- ७ आश्विन मास में मातृ कागती से, खाने में अमरी उतरे स्वस्थ हो ।
- ८ कार्तिक मास में यकरी के दूध के साथ खाने में, सभोग शक्ति बढ़े ।
- ९ मार्ग शीर्ष मास में गाय के घृत के साथ खाने से, दृष्टि दोष मिटे ।

१० पोष मास मे तिलों के साथ खाने से जल के भीतर की वस्तु भी दृष्टि गोचर हो

११ माघ मास में मोथा की जड़ के साथ खाने से शक्तिशाली हो ।

१२ फाल्गुन मास मे आवला के साथ खाने से पैदल यात्रा की शक्ति बढ़े ।

यक्षिणी कल्प

(१) विचित्रा (२) विभ्रमा (३) विशाला (४) सुलोचना (५) वाला (६) मदना (७) धूआ (हंसनी) (८) मानिनी (९) शतपत्रिका (१०) मेखला (११) विकला (१२) लक्ष्मी (१३) काल करणी (१४) महाभय (१५) माहिन्द्रिका (१६) श्मसानी (१७) वट यक्षिणी (१८) चन्द्रिका (१९) चक्रपाली (घंटा कर्णि) (२०) भीषणा (२१) जनरंजिका (२२) विशाला (२३) शोभना तथा (२४) शशिनी ।

विचित्रा—मन्त्र :—ऐं विचित्रे विचित्र रूपे सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—वट वृक्ष के नीचे एक लाख जाप करने से, विचित्रा नामक यक्षिणी सिद्धि होती है ।

प्राप्ति :—अजरामरत्व का वरदान देती है ।

विभ्रमा—मन्त्र :—ॐ ह्रीं भर भर स्वाहा ।

विधि :—एक लाख जाप करे तथा तीन कोनो का यज्ञ कुंड बनाकर उसमें दुग्ध, घृत व मधु से दशम हवन करे तो विभ्रमा नामक यक्षिणी सिद्धि होती है ।

प्राप्ति :—साधक के स्त्री रूप में रहती है तथा चितित् अर्थ देती है ।

विशाला—मन्त्र :—ऐं विशाले ह्रीं ह्रीं क्लीं ऐं ह्रिं ह्रिं विभ्रम भुये स्वाहा ।

विधि :—श्मसानी में दो लाख जाप करे । गुग्गुलु व घृत का दशम हवन करे ।

प्राप्ति :—साधक के स्त्री के रूप में रहे । ५०० व्यक्तिगतक का भोजन दे । साधक अन्य स्त्री के साथ सगम न करे ।

सुलोचना—मन्त्र :—ॐ लं लं सुलोचने सिद्धं देहि-देहि स्वाहा ।

विधि :—पर्वत पर या नदी के किनारे तीन लाख जाप करे । घृत से दशम हवन करे, तो सुलोचना नामक यक्षिणी सिद्ध हो ।

प्राप्ति :—आकाश गामिनी दो पादुकाएं भेंट करे जिससे जहाँ चाहे जा सके ।

मदना—मन्त्र :—ऐं मदने मदन बिट्बिनी आत्मीय मम देहि २ श्रीं स्वाहा ।

विधि :—राज द्वार पर एक लाख जाप करे तथा जाति पुष्प व दूध से दशम हवन करे ता मदना नामक यक्षिणी सिद्ध हो ।

प्राप्ति :— एक गुटिका भेंट करे, जिसे मुह में रखने से अदृश्य हो जाने की शक्ति प्राप्ति होती है ।

मानिनी—मन्त्र :— ऐ मानिनी ह्रीं ऐहि-एहि सुन्दरि हस-हस समीह में सगमकं स्वाहा ।

विधि :— जहाँ चौपाये जानवर रहे । वहाँ बैठकर १,२५,००० जाप करे व लाल फूल व तीन मधुर वस्तुओं में दशम होम करे, तो मानिनी नामक यक्षिणी सिद्ध हो ।

प्राप्ति :— साधक के पास स्त्री रूप में आकर उसमें संभोग करे । उसके बाद एक तलवार भेंट दे । जिसमें वह विद्याभार बनने की शक्ति प्राप्त करे ।

हंसिनी—मन्त्र :— हंसिनी हंसयनि क्लीं स्वाहा ।

विधि :— नगर द्वार पर एक लाख जाप करे व कमल पत्र से दशास हवन करे तो हंसिनी नामक यक्षिणी सिद्ध हो ।

प्राप्ति :— साधक को यज्ञ भेंट करे, जिसमें पृथ्वी के अन्दर की वस्तुये देखी जा सके ।

शतपत्रिका—मन्त्र :— शतपत्रिके ह्रां ह्रीं ध्वीं स्वाहा ।

विधि :— वट वृक्ष के नीचे एक लाख जाप करे व घृण से दशास हवन करे, तो शतपत्रिका नामक यक्षिणी सिद्ध हो ।

प्राप्ति :— पृथ्वी में गड़ खजाने का बनाये ।

मेखला—मन्त्र :— ह्रूं मम मेखले ग ग ह्रीं स्वाहा ।

विधि :— पलाश वृक्ष के नीचे १८ दिन तक जाप करे, तो मेखला नामक यक्षिणी सिद्ध हो ।

प्राप्ति :— प्रतिदिन ५०० मंत्रों तक भेंट दे ।

विकला—मन्त्र :— विकले ऐ ह्रीं श्रीं ह्रूं स्वाहा ।

विधि :— घर में तीन मास तक जाप करे, तो विकला नामक यक्षिणी सिद्ध हो ।

प्राप्ति :— ग्रणिमा (छोटा हाता) आदि विद्या दे ।

लक्ष्मी—मन्त्र :— ऐ कमले कमल धारिणी हंस स्वाहा ।

विधि :— लाल कनेर के फूलों में एक लाख जाप करे । कुड में रागुल में दशास हवन करे । इससे लक्ष्मी नामक यक्षिणी सिद्ध हो ।

प्राप्ति :— पांच विद्या दे तथा मनवाछित धन दे ।

कालकर्ण—मन्त्र :— क्लीं कालकर्णके ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—ब्रह्म वृक्ष के नीचे एक लाख जाप करे, मधु-मिश्रित दशांश हवन करे, तो कालकणि नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—सैन्य स्तंभन, अग्नि-स्तंभन, मधु-स्तंभन तथा गर्भ-स्तंभन की विद्या दे।

महाभय—मन्त्र :—ह्रीं महाभय एहि स्वाहा।

विधि :—इमशान में जहाँ मुर्दा जलाया गया हो, वहाँ बैठकर एक लाख जाप करे तो महाभय नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—रमायन दे, जिसके खाने में वृद्धावस्था नहीं आये व वृद्धावस्था हो तो युवा हो जाये।

माहिन्द्नी—मन्त्र—माहिन्द्नी कुल-कुल युल-युल स्वाहा।

विधि :—इन्द्र धनुष के उदय के समय निगुण्डो वृक्ष के नीचे बैठ कर १२,००० जाप करे, तो माहिन्द्नी नामक यक्षिणी सिद्ध हों।

प्राप्ति :—आकाश गामिनी, पाताल गामिनी, नगर प्रवेश, वचन सिद्ध, देव, भूत, प्रेत, पिशाच, शाकिनी, बेताल, सोंटिय, आदि को दूर करने की शक्ति दे।

इमशानी मन्त्र :—ह्रा ह्री स्युः इमशान वासिनी स्वाहा।

विधि :—इमशान में नभ हो कर ४ लाख जाप करे, तो इमशानी नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—एक पट्ट दे, जिससे अटस्य होकर तीनों लोकों में घूम सके।

वटयक्षिणी मन्त्र :—ऐ कपालिनी ह्रां ह्री वली ध्रूं हंस हम्बली फुट स्वाहा।

विधि :—वट वृक्ष के नीचे बैठ कर चादनी रात में तीन लाख जाप करे, तो वट नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—साधक की स्त्री के रूप में रहकर वस्त्र, अलंकार, स्वर्ण, गन्ध व पुष्प आदि दे।

चन्द्रिका मन्त्र :—ॐ नमो भगवतो चन्द्रिकाय स्वाहा।

विधि :—शुक्ल पक्ष की रात्रि में एक लाख जाप करे, तो चन्द्रिका नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—अमृत रसायन दे, जिससे हजार वर्ष तक जीवित रहने की शक्ति प्राप्त हो।

घंटाकर्णि मन्त्र :—ऐं घंटे पुर क्षोभय राजा नाम क्षोभय क्षोभय भगवती गंभीरः इवरप्ली स्वाहा।

विधि :—धजने हुये घण्टे के साथ बीस हजार जाप करे, तो घंटाकर्णि यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—इतनी शक्ति दे कि पूरे नगर को भयभीत कर सके।

बीषणा : जनरंजिका विशाला।

मन्त्र :—भोषणा क्षपेत माता छिते चिरं जोवितं कर्मव्या, साधकेन भगिन्या जन-
रंजिनी कालोजन रंजि के स्वाहा ।

विधि :—एक लाख जाप से भोषणा सिद्ध हो जायेगी । उसी मन्त्र होने से जनरजिका सिद्ध हो जायेगी । ५० हजार और अधिक जाप से विशाला सिद्ध हो जायेगी ।

प्राप्ति :—विशाला मन्त्री के समान तथा जनरजिका, दासी के समान रहेगी तथा भोषणा इन दोनों के पंच की स्थिति में रहेगी ।

शोभना मन्त्र :—ॐ अशोक पल्लवा काटकर तले श्री क्षः स्वाहा ।

विधि :—लाल वस्त्र व माला में तीनों समय १८ दिन तक जाप करे, तो शोभना नामक यक्षिणी सिद्ध हो ।

प्राप्ति :—साधक की स्त्री के समान रहेगी ।

शंखिनी मन्त्र :—ॐ शंख धारिणी शंखा भरणे ह्रां ह्रीं क्लीं स्त्रीं श्रीं स्वाहा ।

विधि :—सूर्योदय के समय जख माला में १० हजार जाप करे, कंगूर के फूल, सफेद गाय के घृत तथा छाट प्रकार के धान्य मलिन दशास हवन करे, तो शंखिनी नामक यक्षिणी सिद्ध हो ।

प्राप्ति :—अन्न व पौंच रुपये प्रतिदिन दे ।

रत्न, उपभोग, फल व विधि

भारत में भिन्न २ ग्रहों का दशा में भिन्न भिन्न रत्ना को धारण करने का विधान है । इस सम्बन्ध में निम्नांकित बातें विशेष रूप से शास्त्रोक्त हैं ।

माणिक्य (मानिक) कौन धारण करें :—माणिक्य सूर्य का रत्न है । यदि किसी के जन्म के समय सूर्य अग्निष्टकारी हो तो उसे माणिक्य धारण करना चाहिये ।

धारण विधि :—कम से कम ३ रत्नी का माणिक्य होना चाहिये । अपने जन्म मास की १, ६, १० या २८ वी तारीख को या रविवार को प्रातः काल श्रीवा, भुजा, या अंगुली में इसे धारण किया जाता है । लालड़ी (सूर्य मणि) को भी चांदी में जड़वाकर रविवार को मध्याह्न में धारण किया जाता है ।

माणिक्य को धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ आकृषणेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्मृतं मर्त्यञ्च ।

हिरण्येन सविता रथेनावेषो याति भुवनानि पश्यन् ॥

मोती कौन धारण करें — मोती चन्द्रमा का रत्न है। यदि किसी को जन्म के समय चन्द्रमा निर्बल है तो उसे मोती धारण करना चाहिये।

धारण विधि — २, ४, ६, ११ रत्ती का मोती होना चाहिये। ७ या ८ रत्ती का मोती नहीं पहनना चाहिये। मोती को चांदी में जड़वा कर शुक्ल पक्ष, सोमवार को संध्या के समय ग्रीवा, भुजा, या अंगुली में धारण करना चाहिये। इसे धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ इमं देवा असपत्नं सुवर्ध्वं महते क्षत्राय

महते ज्येष्ठाय महते जान राज्यायेन्द्र स्येन्द्राय,

इमं मनुष्य पुत्र ममुष्यं पुत्रमप्यं विष एष वोढमी

राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा ।

मूंगा कौन धारण करें — मूंगा मंगल ग्रह का रत्न है। अतः मंगल ग्रह की दशा में इसे धारण करना चाहिये।

धारण विधि — जन्म कुंडली में मंगल ग्रह ४, ८ या १२ के स्थान पर हो तो ८ रत्ती का मूंगा, मोने की अंगुली में पहनना चाहिये। चन्द्र मंगल के योग में चांदी में, मूंगा जड़वाकर पहनना चाहिये। ५ या १४ रत्ती का मूंगा कभी नहीं होना चाहिये। मंगलवार के दिन सूर्योदय से एक घंटा पश्चात् ग्रीवा, भुजा या तीसरी अंगुली में इसे धारण करना चाहिये।

इसे धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ अग्निमूर्द्धा दिवः ककुपतिः पृथिव्या अयम् ।

अपा रेतसि जिवति ।

पन्ना कौन धारण करें — पन्ना बुध ग्रह का रत्न है। अतः बुध की दशा में ५ कैरेट का पन्ना धारण करना चाहिये।

धारण विधि — पन्ने को स्वर्ण को में जड़वाकर अपने जन्म मास की ५, १४ या २३ तारीख को या बुधवार के दिन सूर्योदय के दो घंटे पश्चात् ग्रीवा, भुजा, या मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिये।

इसे धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ उद्बुध्यस्वातने प्रति जाग्रहित्व मिष्टाभूत संसृजेयामयं च । अस्मि-
न्तत्स्थे अधुत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ।

पुखराज कौन धारण करें—पुखराज गुरु ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है । गुरु की दशा में पुखराज धारण करना चाहिये ।

धारण करने की विधि—७ या १२ कैरट का पीला पुखराज सोने की अंगुली में जड़वाकर गुरुवार को साय सूर्यास्त में एक घंटे पूर्व ग्रीवा, भुजा या तीसरी अंगुली में धारण करना चाहिये । ६, ११, १५ रत्नी का पुखराज कभी धारण नहीं करना चाहिये ।

इसे धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :

ॐ बृहते अति यदियौ अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ।

यदीदयच्छवश ऋतप्रजात तदस्मासु द्वुविणं धेहि चित्रम् ।

हीरा कौन धारण करें—हीरा शुक्र ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है । शुक्र की दशा में हीरा धारण करना चाहिये ।

धारण विधि—शुक्रवार की प्रातः ग्रीवा, भुजा या अंगुली में धारण करना चाहिये ।

इसे धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ अन्तात् परित्स्त्रुतौ रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्

क्षत्रं पयः सोमं प्रजापितः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं

विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु ।

नीलम कौन धारण करें—नीलम शनि ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है । शनि की दशा में नीलम धारण करना चाहिये ।

धारण विधि—५ या ७ रत्नी का नीलम धारण करना चाहिये । शनिवार को सूर्यास्त से दो घंटे पहले से ४० मिनट बाद तक इसे एक नीले कपड़े में बांध कर भुजा पर धारण कर, तीन दिन परीक्षा करनी चाहिये यदि अनुकूल सिद्ध हो, तो धारण किये रहना चाहिये । हृदय पर धारण करने में यह उसे शक्ति प्रदान करता है ।

इसे धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ शन्नो देवीरमिष्टय आपो भवन्तु, पीतये शंयो रमिस्त्रवन्तु नः ।

गोमेद कौन धारण करें—गोमेद, राहु ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है । राहु की दशा में इसको धारण करने से लाभ होता है ।

धारण विधि :—गोमेद ६, ११ या १३ कैरट का होना चाहिये । ७, १० या १६ रत्ती का कभी नहीं होना चाहिये । इसे धारण करने का समय सायंकाल के अनन्तर दो घंटे रात तक है ।

गोमेद को धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ कथानदिचित्र आभुव दूती सदा वृधः सखा कया शचिष्ठया वृता ।

लहसुनिया कौन धारण करें :—लहसुनिया, केतु ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है । केतु की दशा में इसे धारण करना लाभ प्रद है ।

धारण विधि :—२, ५ या ७ कैरट का लहसुनिया धारण करना चाहिये । २, ४, ११ या १३ रत्ती का निषिद्ध है । इसको चांदी में जड़वाकर अर्द्ध रात्रि में धारण करना चाहिये ।

लहसुनिया को धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है

ॐ केतुं कृत्वन्न केतवे पेशोमर्त्या अपेषसे । समुषद्भिरजायथाः ।

॥ ० ॥

श्वेतार्क कल्प

विधि :—शनिवार के दिन वृक्ष के पास न्यूना देने जाये तो सर्वप्रथम 'मम कार्य सिद्धि कुत कुमावाहा' यह मन्त्र वृक्ष के सामने हाथ जोड़कर बोले और चंदन, चावल, पुष्प, नैवेद्य से पूजन करें, धूँ दे और पानी श्रावण आ जाये । दूसरे रोज रवि पुण्य नक्षत्र को सुबह से पहले २ वृक्ष के पास नहा धोकर शुद्ध वस्त्र पहनकर जाये और निम्न मन्त्र बोले वृक्ष की जड़ को घर ले आवे । जड़ पूर्व या उत्तर की ओर मुंह करके लेनी चाहिये ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते श्री सूर्याय ह्रां ह्रीं हूं ह्रः ॐ संजु स्वाहा ।

इस मन्त्र से मूल को लाकर पञ्चामृत से धोकर ऊँचे व शुद्ध स्थान पर रख दे, तत्पश्चात् पुण्य नक्षत्र रहने उम जड़ से भगवान् पार्श्वनाथ की मूर्ति बनावे व निम्नलिखित मन्त्र से पूजा करें । इसमें श्री गौतम गणेशजी की मूर्ति भी बनाई जाती है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति शिव चक्रे । मालिनो स्वाहा ।

उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर फिर किसी भी कार्यवश साथ में लेकर जाये, तो अवश्य सफल हो इस सम्बन्ध में निम्नांकित बातें और ज्ञातव्य है ।

- (१) जहा सकेद आक होता है कहने है कि यहा आतपास गडा हुआ धन होता चाहिए ।
- (२) सातवी ग्रन्थि में ऐसी गांठ पडती है कि उसमे गणेश जी कि मू डवाली आकृति बनती है । यदि दक्षिणावर्ती मू डवाली आकृति के श्री गणेश मिल जाये, तो बहुत चमत्कारी होती है ।
- (३) पुरुष के दाहिने हाथ और स्त्री के बाये हाथ मे इमे बाधने मे मीभाग्य व लाभ होता है । ऐसा माना जाता है ।
- (४) बध्या रत्नी की कमर मे बाधने से सन्तान की प्राप्ति होती है ।
- (५) मूल को ठण्डे पानी मे घिसकर लगाने से बिच्छू आदि का जहर व हर प्रकार का जहर उतरता है ।
- (६) मूल में गोरोचन मिलाकर गुटिका कर तिलक करे तो सर्वजन वश हो ।
- (७) यह मूल, वच, हल्दी तीनों बराबर मिलाकर तिलक करे, तो अधिकारी वश मे हो ।
- (८) मूल, गोरोचन, मनासिल अग्राज चारो मिलाकर तिलक करे, तो अधिकारी वश मे हो ।
- (९) मूल, हल्दी, कुट (लाज कुरी) स्वरक्त से भोज पत्र पर लिखकर हाथ मे बांधे, सर्वजन वश हो ।
- (१०) मूल, वीर्य अग्राज, मिलाकर अजन करे, तो अदृश्य हो ।
- (११) मूल का मेघा नक्षत्र मे कस्तूरी मे अजन करे, तो अदृश्य हो ।
- (१२) मूल का वच के साथ घिसकर हाथ के लेप करे तो हाथ नहा जले ।
- (१३) मूल को छाया मे सूखा कर, नंगे कर पृथ के साथ आवा रत्नी की मात्रा मे खाने से भूत, प्रेत दूर होते है । स्मरण शक्ति बढ़ती है । देह की क्रांति कामदेव के समान हो जाती है । ८० दिन धांडी मात्रा मे सेवन करे । ऊणता का अनुभव हो, तो छोड़ दे ।

पंचांग - फल, फूल, जड, पत्त व छाल को पंचांग कहते है ।

पंचभैल :- कान, दात, आंख, जिह्वा, और ग्वबीर्य को पांच प्रकार का भैल कहते है ।

मूल :- किसी भी पेड की जड़ को मूल कहते है ।

बदा :- एक वृक्ष पर दूसरा वृक्ष निकल आता है । उसे बदा कहते है । उस वृक्ष की गांठ लेना चाहिये ।

अपनी मा का नाम कागज पर लिखकर, मस्तक के नीचे दबाकर सोने मे स्वप्न दोष कभी नहीं होता है । और यह रोग मिट जाता है ।

काले धतूरे की जड़ ६ मासा प्रमाण चूर्ण कर कमर मे बांधने से, स्वप्न दोष कभी नहीं होता है और बवासीर रोग ठीक होता है ।

ह्रीं कार कल्प

सर्वर्ण पार्श्वं त्रय मध्य सिद्ध मधिश्वरं मास्वर रूप भासम् ।

खण्डेन्दु बिन्दु स्फुट नाद शोभं, त्वां शक्ति बीज प्रमत्ता प्रणौमि ॥१॥

अर्थ :—जिसके पार्श्व में (स) वर्ण है (ऐसा, 'ह') 'ल' धीर 'य' के मध्य में सिद्ध विराजमान है। ऐसा 'र' उसके अन्दर 'इ' स्वर है जिसकी कान्ति देवियमान सूर्य के जैसी है, और जो अर्थ चन्द्र (कत) बिन्दु और स्पष्ट नाद में शोभा पा रहा है। ऐसा यह शक्ति बीज है। मैं तुमको उत्तमपूर्वक मन में भावपूर्वक स्तुति करता हूँ ॥१॥ नमन करता हूँ।

ह्रीं कार मेकाक्षर मादि रूपं, मायाक्षरं कामद मादि मंत्रम् ।

त्रैलोक्य वर्ण परमेष्ठि बीज, विज्ञाः स्तुवन्तीशमन्त्र सित्यम् ॥२॥

अर्थ :—हे ईश ह्रीं कार आपकी विद्वान् पुरुष ह्रीं कार, एकाक्षरी, आदि रूप मायाक्षर कामद, आदि मन्त्र, त्रैलोक्य वर्ण और परमेष्ठि बीज, ऐसे विज्ञेयों में स्तुति करते हैं।

शिष्यः सुशिक्षां सु गुरोर वाप्य, शुचिर्वशी धीर मनाश्च मोनो ।

तदात्म बीजस्य तनोतु जाप मुपांशु नित्यं विधिना विधिज्ञः ॥३॥

अर्थ :—सद्गुरु के पास पूर्ण आज्ञा प्राप्त करके, विधि का ज्ञान वाल शिष्य वा पांडित्य होकर सर्व इन्द्रियों को वश में कर पूर्ण रूप में, मन में धर्म धारण कर, मान रखकर उस आत्म बीज ह्रीं कार का विधियुक्त उपांशु जाप नित्य करना चाहिये ॥३॥

विशेष - ह्रीं कार के जाप व ध्यान करने वाले का प्रथम मुक्त में आज्ञा प्राप्त करना चाहिए। फिर स्वयं पूर्णरूपेण शुद्ध होकर धर्मपूर्वक इन्द्रियों को वश में करना हुआ मोन में उपांशु जाप करे। जाप करने के पहले सकलोक्य करना परम आवश्यक है। यही उपांशु जाप का अर्थ है दिन रात मन पढ़ना, जिस में ह्रीं हिलते रहें। जाप १ लक्ष करना चाहिये। जाप करने का स्थान श्वेत खड़ी में रखा हुआ मकान हो, सफेद ही रुपडा हो, सफेद ही अन्न का भोजन करे, सफेद ही सावधान जाप करने वाले को अपने शरीर में सफेद चदन का विलेपन करना चाहिये। एक भा शुक्ल हो, पहल एक ताम्र पत्र अथवा सोना, चाँदी वा कासे के ऊपर की कार खुदवा ले, फिर ह्रीं

कार यंत्र का पंचामृत अभिषेक कर के, उत्तमोत्तम अष्ट द्रव्यों से पूजा करे, फिर ॐ ह्रीं नमः की आराधना शुरू करे। जाप करने वाले को एकासन अथवा उपवास करना जरूरी है। उपवास कृष्णपक्ष की अष्टमी वा चतुर्दशी को करके विद्या आराधना करने शुक्ल पक्ष में भी कर सकते हैं। षट् कर्मों के लिये कोष्टक का देख लेघे। उपवास करने वाले साधक को दस हजार जाप से भी विद्या सिद्ध हो जाती है। विद्या सिद्ध हो जाने के बाद इस माया बीज ह्रीं कार को कौन-कौन कार्य के लिये किम किम वर्ण का ध्यान करना चाहिये सो कहते हैं। ('सफेद रंग का ह्रीं' का ध्यान करने का फल')।

त्वांचिन्तयन् श्वेत करानुकारं, जोत्स्नामयीं पश्यति या स्त्री लोकोत्तमा ।

(म) श्रयन्ति तंतत्क्षणतो न वदन् विद्या कला शान्तिक पण्डित कानि ॥४॥

अर्थ - चन्द्रमा के समान उज्ज्वल ह्रीं का ध्यान करने वाले को सर्व विद्याएं, सब कलाएं और शान्तिक पौष्टिक कर्म तत्क्षण सिद्ध हो जाते हैं। जो ह्रीं का तीन लोक में प्रकाशमान होता हुआ ध्यान करता है। श्री शुक्लवर्ण का ध्यान करता है। रक्तवर्ण की विपत्ति का नाश होता है। अनेक रोगों का नाश, लक्ष्मी और सौभाग्य की प्राप्ति, वधन में मुक्ति। नये काव्य की रचना शक्ति प्राप्त होती है। नगर में क्षोभ पैदा करना व मर्यादा में क्षोभ पैदा करने की शक्ति और आज्ञा ऐश्वर्यपल की प्राप्ति होती है ॥४॥

“रक्त ह्रीं कार के ध्यान का फल”

त्वामेव बाला रुणमण्ड लाभं स्मृत्वा जगत् त्वं कर जाल ददौ म् ।

वलोक तेयः किल तस्य विश्व विश्वं भवेदवश्यं वश्यमेव ॥५॥

अर्थ—हे ह्रीं तू ने तुम उदित हुए बाल भूय की कान्ति के समान अरुण हूं। आपके अरुण मण्डल में सारा ससार बिहिन है। जो इस रूप में आपका ध्यान करता है उसके वश में समस्त ससार अवश्य हो जाता है। अन्य आचार्यों के मानुषांतर जाल वर्ण के ह्रीं कार का ध्यान करने से समोहन, आकर्षण और अक्षोभ भी होता है ॥५॥ स्त्री आकर्षण के लिए स्त्री के योनि के मध्य में ध्यान करना ।

यो त्ववर्णी ह्रीं कार के ध्यान का फल

यस्तप्त चामी कर चारु दीपं, पिङ्ग प्रभं त्वां कलयेत् समन्वात् ।

सदा मुदा तस्य गृहे सहेलि, करोतिकैलि कमला चलाऽपि ॥६॥

अर्थ :—जो पीले कान्ति सहित तुमको तप्त सुवर्ण के समान सुन्दर मन्त्र प्रकाशमान ध्यान करता है। उसके घर में चलाय मान लक्ष्मी भी ध्यान और लीला सहित क्रीड़ा करती है। वह स्तम्भन कार्य और शत्रु के मुख बन्धन में उत्तम कार्य करता है ॥६॥

‘श्याम वर्ण ह्रीं के ध्यान का फल’

यश्यामल कज्जलमेचकाम, त्वां वीक्षतेवा तुष धूम धूम्रम

विपक्ष पक्षः खलु तस्यवाना, तताऽध्वदया त्यचिरेण नाशम् ॥७॥

अर्थ :—जो साधक ह्रीं का मायावीज को काला काजल के समान श्याम वर्ण रूप अथवा द्विलोक के धुआ के समान ध्यान करता है। उसके शत्रु समूह क्षण भर में नाश को प्राप्त हो जाते हैं। जैसे पवन से मेघ विपर जाते हैं। नि मन्देह शत्रु को मरण प्राप्त करा देता है। और नील वर्ण का (ह्रीं) तुम्हारा ध्यान करने से विद्वेषण और उच्चाटन करता है ॥७॥

कुडती स्वरूप ह्रीं के ध्यान का स्वरूप

आधार कन्दोदगत् तनु सुक्ष्म तस्यद्भोव ब्रह्म सरोज वासम् ।

योऽयायति त्वां सर्व हिन्दु बिम्बा मृतं स च स्यात् कवि सर्व भीमः ॥८॥

अर्थ : जो मूलधार कन्द में से निकलना हुआ तनु के समान सूक्ष्म मृगम्ता नाडी में रहने वाले लक्ष्यो (चित्रों) को भेद कर ऊपर जाता हुआ अन्त में सहस्रार कमल में रह स्थिर हो कर वहाँ चन्द्रमा के विम्ब के समान अमृत भरा हुआ हो गया ह्रीं का माया वीज का ध्यान करता है वह साधक कवियों में श्रेष्ठ चक्रवर्ति होता है ॥८॥

फल श्रुति षड् दर्शनि स्व स्व मतावलम्बैः स्वे देवते त (त्व) समय बीज मेव । ध्यात्वा तदाश्रयन वैभवेन भवदे जेयः परिवार वृन्दैः ॥९॥

अर्थ :—षड्दर्शन के जान कार अपने अपने दृष्ट देवता ह्रीं का वीज का ध्यान करके वे आराधना के वैभव में प्रविष्ट होकर यादियों के समूह से अजेय बन जाते हैं। ऐसा इस माया वीज का अतिशय है।

किं मन्त्र यन्त्रे विविधागमोलैः दुःसाध्यसं नीति फलाला लाभैः

मुसेव्यः वः (सद्यः मुसेव्यः) फलचिन्ततार्याश्रिक प्रदश्च (त) सिन्नेत्व मेकः

॥१०॥

अर्थ :—साधक के हृदय में एक ही बार अगर विद्यमान है, तो अन्य यन्त्र मन्त्र जिनका कि उत्पन्नफल है और दुःसाध्य है, ऐसे मन्त्रों अथवा यन्त्रों का क्या प्रयोजन है। अन्यत्र आगम में जिनका वर्णन है ॥१०॥

चौरारि-मारि-ग्रह-रोग, लूता भूनादि दोषा नल बन्ध नोत्थाः ।

भियः प्रभावात् तव दूर मेव नश्यन्ति पारोद्बखारि वेमा ॥११॥

अर्थ :—जैसे वनराज सिंह की गर्जना से हाथी दूर भाग जाते हैं, वैसे ही कार तुम्हारे प्रभाव से चार, पागु मारी, ग्रह, रोग हता रोग तथा भूत, व्यन्त्र, राक्षस, प्रेत, डाकिली, जाकिनी विषाचदी दोष और अग्नि तथा वन्धन से उत्पन्न होने वाला भय दूर हो जाते हैं ॥११॥

प्राप्तोत्पुत्रः सुतमर्भहीनः श्री दायते पतिरशोशनीह ।

दूःखी सुखी चाऽभ भवेन्न किं किं, त (त्व) द्रुपचिन्ता मणिवितनेन ॥१२॥

अर्थ :—चिन्तामणि समान तुम्हारे रूप का चिन्तन करने में क्या-क्या प्राप्त नहीं होता ? जिसका पुत्र नहीं है उसको पुत्र की प्राप्ति हानी है, जिसके पास लक्ष्मी नहीं है उसको लक्ष्मी की प्राप्ति हानी है। मेवक भी स्वामी बनता है दुःखी भी अन्यत्र सुखी होता है ॥१२॥

विशेष—इस ही कार को साधक सालवन ध्यान से निरालवन ध्यान करें फिर निरालवन ध्यान में से पराश्रित ध्यान करें, उसके बाद उल्टा पराश्रित ध्यान में से निरालवन और निरालवन में से सालवन ध्यान करें, इस प्रकार ध्यान करने से अनेक सिद्धिया प्राप्त हो जाती हैं। सालवन बाह्य पर आदि आलवन सहित ध्यान ॥ निरालवन—बाह्य आलवन बिना केवल मन के द्वारा हीकार की आवृत्तिका ध्यान करना। पराश्रित ही कार से वाच्य ऐसे परमात्मा के गुणादिका ध्यान करना।

पुष्पादि जापामृतहोम पूजा, क्रिया धिकारः सकलोऽस्तुद्वरे ।

य केवल ध्यायति बीज मेव, सौभाग्य लक्ष्मी वर्णुत स्वयंतम् ॥१३॥

अर्थ :—पुष्प वगैरह के जाप से क्या, बी के होम से भी क्या, पूजा वगैरह समस्त क्रियाओं का अधिकार दूर रहा, किन्तु केवल तुम्हारे बीज रूप ध्यान से समस्त सौभाग्य रूपी लक्ष्मी स्वयं वरण, करती है ॥१३॥

महिमा :—

त्वतोऽपि लोहः सु कृतार्थ काम, मोक्षान पुमर्माश्वतुरो लभन्ते ।

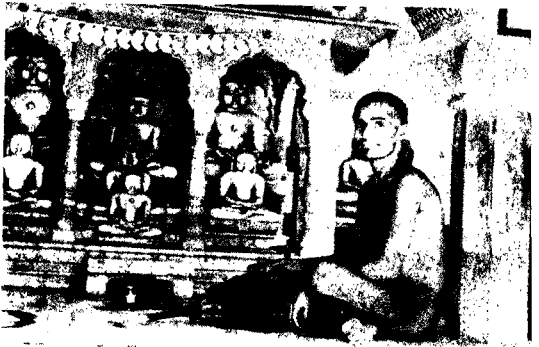
यास्यन्ति याता अथ यान्तिये ते, श्रेय परं त्वमहिमा लवः सः ॥१३॥

अर्थ :—तुम्हारे प्रभाव से लोक धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष नाम पुरुषार्थों की प्राप्ति करते हैं । जो मोक्ष का स्थान है उसको प्राप्त कर रहे हैं कर गये हैं और आगे भी करेंगे । वे सब तुम्हारी महिमा का वर्ण मान्य है । क्योंकि एक ही तारा साया बीज के अन्दर बीबीस तीर्थकर, बीबिस वृक्ष, बीबीस वक्षिणी, समाविष्ट है । ह्रीकार को सिद्ध परमेष्ठि वाचक भी कहा है, और इस ही का मे धरणेन्द्र पद्मावती पार्श्वनाथ प्रभू का भी वास है । मोक्ष प्राप्ति के इच्छुक को ह्रीकार का कैसे स्थान चाहिये सो बताते हैं ।

वृक्ष, पर्वत, जिलाग्रो से रहित क्षीर समुद्र के समान जो सम्पूर्ण बाधाओं से रहित आनन्द दायक शाल अद्वितीय क्षीर से परिपूर्ण जैसे क्षीर का महासागर हो ऐसी इस पृथ्वी का चितवन करे । फिर ऐसी पृथ्वी के बीच अष्ट दल कमल, कमल दल पर ह्रीकार उसके बीच कणिका में स्वयं में उज्ज्वल कान्तिमान पद्मासन लगा कर बैठा हूँ ऐसा चितवन करे । फिर स्वयं को चतुर्मुख तीर्थकर, के समान समवसरण सहित ध्यान करे, चाणो गतियों का विच्छेद करने वाला सर्व कर्मों से रहित पद्मासन से बैठा हुआ श्वेत स्फटिक के समान शोभा को प्राप्त कर रहा हूँ उसके बाद ब्रह्मरूप में स्थापन किया हुआ स्फटिक के समान वर्णवाला ह्रीकार के बीच अपनी आत्मा को बैठा हुआ देखे फिर ह्रीकार के प्रत्येक अंग से अमृत भर रहा है । और उस अमृत में मेरी आत्मा का सिंचन हो रहा है, ऐसा चितवन करे, ऐसा ध्यान करने से साधक तद भव मोक्ष सुख पा लेता है, अबवा तीन चार भव में नियम से मोक्ष पा लेता है ।

विधामयः प्राक प्रणवं नमान्ते, मध्येक (च) बीजननु जग्नपति

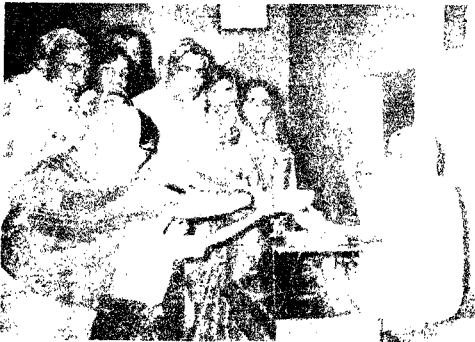
तस्यैक वर्णा वितन्योतय वन्धमा, कामार्जुमी कामित केव विद्या ॥१४॥



जयसिंहपुरा खोर (कानीखोह) के दिगम्बर जैन मन्दिर की मूल वेदी में—
१०८ आचार्य गणधर श्री कुन्धुसागर जी महाराज



दिगम्बर जैन मन्दिर जयसिंहपुरा खोर पर १०८ आचार्यश्री कुन्धुसागर जी महाराज
व गणनी १०५ आयिका श्री विजयमनी माताजी आहार लेते हुये, पास में मन्दिर के
मानद-व्यवस्थापक, श्री लल्लूलाल जैन गोष्ठा, दिखाई दे रहे हैं।



जयपुर निवासी मर भक्त पंथीनाथजी श्री शक्तिबुद्धाजी मयवाड़ आचार्य श्री क. लालसोम अश्वमेध
 त्रिना मीलापुर (मयवाड़) में मयवाड़ा के केश लालजी मयवाड़ा के बेटे अपने
 परिवार जनों के साथ पिन्टो व मयवाड़ में क. ले हुए ।

अर्थ :—जो साधक पहले प्रणव “ॐ” और अन्त में “नमः” मध्य में अनुपम बीज “ह्रीं” कार का बार बार जाप करता है, उसके पूर्व मनवांछित कार्य एक वनबाही अवश्य और कामधेनु के समान ह्रीं का विद्या विस्तारती है, इसको एकाक्षरी विद्या कहते हैं ॐ ह्रीं नमः । १५।

नोट - ध्यान रहे कि शुक्ल ध्यान का ह्रीं का छोड़ कर बाकी पिली, लाल, काली, जो भी वर्ण का ध्यान करने का आया है, उस उस वर्ण के ह्रीं, को शत्रु के हृदय में ध्यान करे मारण कर्म के लिये शत्रु के नाभि में ध्यान करें ।

मालामिमा स्तुतिमयीं सुगुणां त्रिलोकी ।

बीजस्य यः स्तुतुर्हृदये निधयेत् क्रमात् सः ॥

अङ्कुष्ठ सिद्धिर वशा लुठतीह तस्य

नित्यं महोत्सव पदं लभते क्रमात् सः ॥१६॥

अर्थ :—जो मनुष्य त्रैलोक्य बीज क्रम अच्छे गुण वाली स्तुति रूपी इस रूपी इस माला को तीनो काल अपने हृदय में धारण करता है, उसके गोद में आठो सिद्धिया अवश्य बन कर निरंतर ही आती है और क्रम से मोक्ष पद की प्राप्ति कराती है । १६।

सोना चांदी बनाने के तन्त्र

(१) स्वर्ण माक्षिक ८ मासा

पारा ४ मासा

तांबा ४ मासा

सुहागा ४ मासा

इन सबको मिला कर ‘कुप्पी’ में डाले ‘फिर अग्नि में गलावे’ तो शुद्ध चांदी हो ।

(२) गंधक को ओटा कर (गर्म कर) प्याज के रस में भुजावे १०८ बार, फिर उस गंधक को चांदी के साथ गलावे तो सोना होता है ।

(३) हिंगुल शुद्ध १८ तोला, अभ्रक ३२ तोला को एकत्र करके रुद्रवन्ति के रस में घोट कर, चांदी के पत्रे पर लेप करके पुट देवे, तो सोना हो ।

(४) साग बीज एक जात की बूटी होती है । उसके पत्ते की लुगदी में तांबा रख कर अग्नि में फूँके तो स्वर्ण बने ।

(५) गाथा :—नाग फणिए मुलं, नागण तोए एणगभनागेण

नामण होइ सुवर्ण धमत पुण्य जोगेण ॥

समयसार जयसेनाचार्य की टीका मे ।

अर्थ :—नागफणी की जड़ लेना, चादी गलाइ हुई लेना, उसमे सिन्दूर मिला कर घोटना फिर उस द्रव्य को अग्नि में धोकना तो सोना बनता है, यदि पुण्ययोग हुआ तो ।

- (६) शुद्ध हिंगुल का एक तोला का डला लेकर उस हिंगुल के डले को गोल बेगन काला वाला को चीर कर उसमें उस हींगुल को रख कर उपर मे कपड़ा लपेट कर, फिर मिट्टी का उस बेगन पर खूब गाढ़ा लेप करे, फिर उस बेगन को जंगली कड़ों के अन्दर रख रख कर जलावे, जब कण्डों की अग्नि जल कर शांत हो जावे तब उस बेगन को निकाले । बेगन के अन्दर मे उस हिंगुल के डले को निकाल लेवे । इसी तरह क्रमश १०८ बेगन मे उस हिंगुल के डले को फूँके । यह रसायन तैयार हो गई । इस रसायन मे से एक रत्ती लेकर एक तोला तावे के साथ मिला कर बूझी मे गलावे तो १ तोला सोना तैयार हो जायगा, लेकिन शमोकार मन्त्र का सतत जप करना होगा ॥
- (७) लोहे के लुपा चेउधा चेपक्का सेर दुधाचेमा लोल सारख त्यान सेराचा दुधत्या भर मिलउन सख्या समोल तोले ६ आन घालणे धोडयाची चूल करणे वर लोट के ठेव ने शनसेनी अग्नि देवी रुचिक आटवने मगपुरे करणे म्हण जे कल्क ज्ञावा जतन ठेवणे तोला १ लाव्या चेपानी करणे रसफिरो लागला म्हण जे सामध्ये अर्द्ध मासा कल कण काटकाणे समरस करणे हालवने भुसीस धमकव ने से नाचे मुसील बोलने घड भा ल्यावर काधने म्हण जे शुद्ध धवल होय ॥ इति ॥
- (८) कई होय अर्द्ध मेला होय मागुनी पानी कर ने एक तोल मास दाने तोले रूप मिलविणे धवल शुद्ध होय हा एक तोल्या चा अनुपात ।
- (९) लाल फूल बटो लापात बहुत होय है । रावोरान जडमूल का किया थात । नाथ कहे कवील हुआ रूपा बटोल पान सफेद फूले येक लासव ही रात एक धेव से पारा मारु नाथ कहे कंचन रूप ।
- (१०) जरून तोला १ पाँड्या व सूच्या भावना सात देखे मग पत्र करणे कंटक वेधनी ताडन रसान सिजवे म्हण जे एक फुट जाले मागु ते लाडन सिजवने म्हण जे पुटि २ झाले मागुने लाडन एसे पुट सात दणे मगपुरे करणे मग एक मुसीत घालोन कोलसा वर डेऊन कोल से पेटवा वे त्याचे पानी करणे रस वरापि घलला म्हण जे मग कांही थोडी

बहुत मुस थोड़ी बहुत घड भाव्या वर रस जां मुसीर हले सरल तो त्या मध्ये पारा तोला १ मे लवने पारा व जस्त तत क्षण एक होती मग ते खला मध्ये वारीक करून ठेवणे म्हणजे कलक सिद्ध साध्य भावा एक करून ठेवणे नाब पत्र कटा वेधनी करून मग रुई चेपाना चा रस काढून हे वणे मग ताम्र पत्र लाऊन रुई रसात सिजवने एसेपुट ७ देगे मगपूरे करणे मग श्वेत भाव्या एका मुमीत घालणे त्याचे पानी करणे ॥ इति ॥

शुद्धस्य भाग त्रतय नेकं नाग वेगयोः ॥ ११ ॥

समावर्त्य विचूरायार्थं सिद्ध चूर्णेन पूर्ववत् ।

नागमेक द्वयं शुल्बं चैकं पद्मं ॥ १२ ॥

रुद्धाधियातंतु तच्च हेमगेरिकं ॥ १३ ॥

रुद्धाध्यातं पुनश्चूर्णे सिद्ध चूर्णे न पूर्ववत् ।

गंध केनहतं शुल्बं माक्षिकं कंच समं समं ॥ १४ ॥

हंस पाच्यं त्रक द्वाये दिन मेकं विमदयेत् ।

तेनैव तार पत्राणिलिप्त्वा रुद्धा पुटेप चेत् ॥ १५ ॥

समुद्ध पुटा त्पश्चात् कृत्वा पत्राणि लेपयेत् ।

पूर्वकं त्केन रुद्धाथपुटं दत्त्वा समुद्धरेत् ॥ १६ ॥

इत्येवं सप्तधा कुर्यात्तार मायाति कांवनम् । इति ।

राजावर्तं च पारापत मलं समं ॥ १७ ॥

असित्यसेन कुरु तेस्वर्णं रोप्यं च पूर्ववत् । इति ।

रसे शिरषि पुष्पस्य आद्रं कस्य रसं समं ॥ १७ ॥

भावयेत्समं वाराणि राजावर्तमु चूर्णितं ।

तेनैव शत स्वर्णं तार दुतं समं ॥ १८ ॥

वेधयेत् सर्वं मांशेन घृतिसिद्धं दिव्यं भवति कांच नं । इति ।

कुंकुमं विमलं ताप्यं रस कंद रदं शिला ॥ २० ॥

राजावर्तं प्रवालं च राजी गेरिक टंकणं ।

संधवं चूर्णं ये त्तुल्यं शीत्यंशेन वेधयेत् ।

काच माच्या द्रवः समं ॥ २१ ॥

णमं मर्धतु तंरुध्वा आरण्योत्पल कं पुटेत् ।
 इत्येवं तुत्रिधा कुर्यान्मदितं पुट पाचितं ॥ २२ ॥
 तद्धिं हिगुलं शुद्धं क्षिप्त्वा तस्मिन्नि मर्दये त्कांजि कं यमि मात्रां हि पुटे
 नं केन पाचयेत् ॥ २३ ॥

अस्य कल्कस्य भार्गवं भागा श्वत्वारिहाटकं ।
 अंधभुर्वागं तंमातं समादाय विचूर्णयेत् ॥ २४ ॥
 पूर्ववत्पूर्वं वत्कल्केन रुध्वा दयं पुटे पुनः ।
 अनेन षोडशं शेनसित वर्णं वेधयेत् ॥ २५ ॥
 सेचये त्कांगुणी तैलं रक्त वर्णं भावित ।
 पुनर्वेध्य पुनः सेच्य षोडशं शेन बुद्धिमान् ॥ २६ ॥
 एवं वार त्रयं वेध्यं दिव्यं भवति कांच नं । इति ।
 ताम्र तुल्यं स्य नागस्य शोधयेत् ध्यमनेन च ।
 ताम्र तुल्यं शुद्धं हेमं समा वत्यं लिपत्रयेत् ॥ २७ ॥
 इष्टि का तुवरी चैव स्फटिका लवणं तथा ।
 गैरिकं भागं वृद्धं शं मारुता लेन पेष्टयेत् ॥ २८ ॥
 तेन लिप्तवा पूर्व पत्रं रुध्वा मज्ज पुटे पचेत् ।
 एवं पुनः पुनः पाच्यं थावत्स्वर्णं विशेषितं ॥ २९ ॥
 तत्स्वर्णं ताम्रं संयुक्तं समावर्त्या तुपत्रयेत्पूर्वं वत्पुट पाकेन पचेत्स्वर्णं
 विशेषितं ॥ ३० ॥

इत्येवं षड्गुणं ताम्रं स्वर्णं बाह्यं क्रमेण तत् ।
 तत्स्वर्णं जायते दिव्यं पद्मरागं समः प्रभः ॥ ३१ ॥
 षड्त्रिंशेन ते नैवमष्ट वर्णतु वेधयेत् ।
 तत्सर्वं जायते दिव्यं दशवर्णं न संशयः ॥ ३२ ॥ इति ।
 समं ताप्यं ताम्रं चूर्णं ताप्याद्धं लाहं चूर्णकं ।
 कन्या द्वावं क्षणं मर्धं तै रे व मर्दयेत् ॥ ३३ ॥

एवं वाराहच तुषष्टि त तः शुष्कं विचूर्णयेत् ॥

षोडशां शेन तंनव मष्ट वर्णं तु वेधयत् ॥ ४० ॥

तत्स्वर्णं जायते दिव्यं दश वर्णं न संशयः । इति ।

गन्धकेन हत स्वात्वं दर्दाद्धं युत सुतकम् ।

मन शिले समायुक्तं मातुलिगेन मर्दं ते ॥

नाग पत्र प्रलेपानां त्रिपुटं कुंक मारुन सन्नभम् ॥

तार वेदश्य त्रिगुणं छतं तारामायात कंचनम् ॥ १ ॥

गंधक लेके बाटे पानी से तावे चे तगड को लेप करे । अग्निदेय ताम्र मरेनतर हिगुल जस्त मनशिल समभा ॥ लेप वा ताम्र मरनेवा एकम् करिनिबू रस से खरल करे दिन इन्तर सीस को पत्र करीते बाट लेली जिनरु तेपत्रास लेप करे मग रान गोविरी की अंगार कापुटती न देय । तर ते शीस मरेन नतर ३ भाग चांदी १ भाग ते नाग भस्म मुसमे गलावे वसु थाय ॥ इति ॥

गन्धकेन हले सुल्यं दर देन समान मिता ॥

तत समा मनि शिला युक्तं मातु लिगेन मर्दताम् ॥

त्रिषष्टि पुट नं नागं कु कुमारुन सन्न भम् ॥

षोडशं शतार वेदांत एवं भव नु कंचनम् ॥ २ ॥

गंधक से ता वामारे हिगुल क दोई समान मन शिल लेप निबू रस से मर्दन करे शीशे पत्रा को लेप करे नतर रान गोवि रोके छपुट दे अग्नि की मूतर कुंकम सारभस्म होय षोडश भाग चांदी एक भाग ते भस्म एक भाग मुसमे गलावे पीत ॥ इति ॥

गंधिकं मधु संयुक्तं हरि धीर्येन मर्दताम् ॥

भमिस्ता मास मेकं तारा मयात कंचनम् ॥ ३ ॥

गन्धिक मधुपारा एकत्र करी खल करे दिवस २ शीशी मे भरे । उकरडा मे गाडे मास १ मग काठुन तोला चा दीमु मासादेय वसु ॥ इति ॥

हार मेकं मयं तीरं तार नीक्षण चतुर्गठां ॥

चतुरष्ट मष्टवंगं च वंगं स्थभन रौषधम् ॥ ४ ॥

पीतल चांदी पीलाद रेत ४ कबील भाग ८ एकत्र मुस मंगलावे, एक मेक होय जाय

तब निकाल लेय ते जिनस घट होय नतर वारीक वाटी तोला कथील को पानी करी एक मासा कथीला सी देय रजत ॥ इति ॥

हिगुलक उत्तम लेय ताला १ खडा काले बँगन में भरे । फिर बँगन को कपर मिट्टी का लेप करे । अग्नि में देय जब बँगन पक जाय, ठंड भये काटे । ऐसे १०८ बँगनमें पकावे । एप्रमाण करे भस्म होय ते भस्म तोला ताबे को गूँज देय वसु ॥

मन्त्र :—ॐ नमो अरिहंताणं रसायनं सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र का जाप्य ४५०० करे ॥ इति ॥

जूनी ईंट लेय १ साचे दल बाटे ४ के सममधी खड्डा करके खड्डो में पारा भरे तोला २ मग जस्ताची वाटी ता पाच की ऊपर बाँधी रहेवे । पारा का ऊपर मग भौताल वाटी की सधी (सांठ) गुड चुना ओमू चे मग तीन पत्थर के ऊपर ईंट चढ़ावे । नीचे अगार नर बेर की लठ्ठी की देय प्रहर १६ मगने वाटी ऊपर हजार नीबू को रस लेप चो बादे सोलह प्रहर मग ठंडी भवे निकारे नारियल फोड़े ।

मन्त्र जप :—ॐ नमो भवावते अर भटे मम रसायनं सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ॥

जप १०,००० नंतर ते भस्म पर की तोला ताबे को गूँज १ देय उत्तम पीत । जस्त भस्म देय तर मध्यम भगार ॥ इति ॥

पारास्तंभन का तंत्र

मन्त्र :—अल बांधो, थल बांधो, बांधो जल का नीरा, सात कोस समुंदर बांधो, बांधो बावन वीरा, लंका ऐसी कोट, समुंदर ऐसा खाड़, पारा तेरा उड़ना बांधो, शिव तोर धी जाई बांध जा पारवती की दोहाड़ ॐ ठः ठः स्वाहा ।

विधि : इस मन्त्र को कमलाक्ष की माना से पूर्व की तरफ मुख करके चौरासी हजार जप करे, दशास अग्नि में आहुति देवे, होम द्रव्य, खावा, १ मेर, शहद १ सेर, नीप १ सेर, दूध १ सेर, घी १ सेर. ग्राम की लकड़ी । तब मन्त्र सिद्ध होता है ।

मन्त्र सिद्ध हो जाने के बाद पारा एक रुपया भर से लेकर नौसो भर पारा तक एक पात्र मे धर, छाटा बर्तन गारी वूटी का दो चार पत्र डारि, इसी मन्त्र को १०८ अथवा तीन, अथवा सात, अथवा एक इस बार मन्त्र पढ़ि २ पारा कुं फूक के ढाक ते जाना, मन्त्र पढ़ते जाना, अच्छी भाति ढाकी के गोबड़े (कड़े) सेर २ सेर के अग्नि मे कप रोटी करके डार देना, पारा की चादी हो जायगी । यह सिद्ध सांवर मन्त्र हे रसायन क्रा ।

(१) गंधक एक भाग, पारा दो भाग, हस्ताल भाग तीन, सिसा भाग चार, पीला बधारी याने पीले तीलवनी उसके रस में खन कर ताबे को पुट देने से मुवर्ण के समान पीत होता है । सिद्धम् इति ।

- (२) हरण खुरीतास्वे रस में घुमाना चाहिये। ताँबे में पारा भस्म अथवा शिवाभस्म प्रयमतः डाले उसके बाद रस में घुमावे। सिद्धम्।
- (३) फन्हेरा मशिल पत्थर उसका रंग कनेर के फूल जैसा रहता है। १ तोला कयिल का पानी करना। उसमें एक रती गुज मसिल डालना। उसमें शुद्ध शुभ्र होता है।
- (४) कलहपारा सेर ७७२ काले पत्थर के खल में उसको घोटना। सफेद रिंगणी उसके फूल सफेद होते हैं उसको तोड़कर उसके बाद भूजा शाखा पाला चिसकर उसका रस बनाना। रस खल में डालकर उसको खलना। पारा मखन जैसा बनता है। कुम्भार से एक बेलनी लाना। उसमें खल किया हुआ पारा डालना। एक बोनभर खड्डा खनना। खैरका कोयला भट्टी जलाना। उसपर बेलनी रखना। उसमें रिंगणी का रस डालना। बेलनी आटे का पाक करना। पारा और रस ओटने के बाद पूरा पारा पोता है।
- (५) समभाग सान्ता भाग १ सब्जी खार भाग १ फटकडी भाग १ गोरा कलमी भाग १ सख्या समोल १ नगसागर रूनी कौपध कज्जकली ६ वटिका करना। उस पर पुट देने जाना, सान वार पुट देना। ताम्र धवल शुद्ध होता है।
- (६) सफेद फुलों का कोहला लेकर उसका ऊपरी हिस्सा निकालना। उसकी शाक पकाना। उसमें कथीक डालना। पकने बाद ठंडा होने के बाद निकालना। शुभ्र धातु होय।

पूज्यपाद स्वामी कृत

सोना बनाने की विधि :—

श्लोक पारदं पलमेक च हरिताल च तत्समम् ।
 गंधक च त्रयो तुल्यं मर्दनीयं विशेषतः ।
 दिनेक सूर्य दुग्धेन पश्चात् छाया विशेषतः ।
 कोपिको दूरे विनिक्षिप्य मुखं रूढ्वा विपालिन ।
 रस्तिमात्र प्रयोगेन दिव्यं भवति काचनम् ।

अर्थ :— पारद १ पल, हरिताल १ पल, और गंधक १ पल, इन द्रव्यों को लेकर विशेष रूप से मर्दन करे, आकड़ के दूध में, फिर छाया में मुबा कर उसका साने गताने को कुप्पी में डालकर मुख को रूध करे, फिर अग्नि में फूँके तब एक रसायन तैयार हो जायगा, उस रसायन को १ रती, तोला ताँबे के ऊपर प्रयोग करे तो शुद्ध सोना होता है।

गंधक से ताँबा को मारकर हिंगुलर दोई समान, मनशिल लेप नींबू रस में मर्दन करे, शीवा के पनरा पर लेप करे, फिर रानगोबिरो के ६ पुट देवे अग्नि में तो कुं कुमसार भस्म हो जायगा। सोलह भाग चांदी पर वह एक भाग रसायन भस्म, लेकर कुप्पी में गलावे तो सोना होता है।

श्लोक :- गंधिकं मधु संयुक्तं हरी वीर्येन मर्दताम् ।

भूमीस्ता मासमेकं तारामायात कंचनम् ।

गंधक, मद, पारा, एकत्र करके खरल करे, दिवस २ शीशी में भरे, उकरडा में गाडे मासा १ निकाल कर एक तोला चादी के साथ गलावे तो सोना होता है ।

पीतल चांदी पीलाद रेत ४ भाग कथील भाग ८ एकत्र मुसल में गलावे, एक मेक हो जाय, तब निकाल कर, जब जिनम घट्ट हो जाय नस्तर वारोक बांटी तोला कथील को पानी-करी एक म सा कथील देय तो चादी बने ।

चांदी बनाने का तंत्र

नरबूज मेर पांच मे ज्यादा कुछ तौल में होय ऐसा एग तरबूज ताके तले की तरफ तेचकरी घाट के उसमे समलखार पैसे दो भर चिथरा में लपेट कर डारि के तब पेदा तरबूज की लगाय के कपरीटा मान दफे मुखाय २ के करना तबगत्र पुट का घ्राच देना, जब तरबूज जलने नही पावे तब निकाल लेना, तब तांबा तोला १ पर मासा १ उपरोक्त रसायन देना तो शुद्ध चांदी बने ।

सोना बनाने का तंत्र

शीशा को प्रहर चार अग्नि मे देना जब ठंडा होय तब तोला एक का पत्र बनाय कर, उसके ऊपर हिगुल तोला १ नीबू के रस में खरलकर पत्र पर चुपड कर दो दीए के बीच मे रख कर बंद करे ऊपर कपरीटी करे, मुखावे, सेर एक जगली कंडे में उसको फूँके, जहा किसी की छाया नही पड़े, जब ठंडा हो तब निकालना, इस भात सात बार करे तब शीशा की भस्म बनेगी, बंधक होय सो तोला एक चादी भरें तो एक की मात्रा डालने से शुद्ध सोना बनेगा ।

हीरा बनाने की विधि

मऊ के बीज का तैल नैयाग रखे, जब बनेला आकाश से पड़े, तब तुरन्त अग्नि जलाकर, उस तैल को अग्नि पर चढ़ादे, फिर गर्म करे, उस गर्म तैल में बिनीला ले, लेके डालते जाना, गव परधर हो जायगा जम करके वही कोरा हीरा है । लेकिन मऊ की लकड़ी को ही घ्राच दे । कड़ाई को जब बने तोला पत्थर हो जाय तब नीचे उतारना । भाग्य अच्छा हो तो यह कार्य अच्छा हो जाय ।

—: समाप्त :-

ग्रंथ प्रकाशन कार्य में दान दाताओं की सूची

सधु विद्यानुवाद ग्रन्थ प्रकाशन कार्य में निम्न महानुभाओं से आर्थिक सहायता प्राप्त हुई है :—

६००१)	श्रीमान् बानवीर सेठ पन्नालालजी सेठी आसाम (नागालैण्ड)
४००१)	गुप्तदान
४००१)	गुप्तदान
१५०१)	श्री भागचन्दजी मोतीचन्दजी अकलूज सीलापुर (महाराष्ट्र) वाले (स्वर्गीय श्री गंगाराम जी दोशी की पुण्य स्मृति में)
२८०६)	अकलूज जैन निवासियों से प्राप्त राशि
११५१)	श्री जौहरी लालजी मोतीलालजी, छिन्दवाड़ा
१००१)	श्री हीराचन्दजी लैमचन्दजी फडे अकलूज,
१००१)	श्री मियाचन्दजी रतुचन्द फडे अकलूज
१००१)	श्री ताराचन्दजी जैन कार्य पालन मंत्री पी. डब्लू. डी. भिड
१००१)	श्री कुलचन्दजी देवचन्दजी दोशी अकलूज
१००१)	श्री अभयकुमारजी रूपचन्दजी फडे अकलूज
१००१)	श्री महावीर मोतीचन्दजी शाह अकलूज
१००१)	डा० सुरेशकुमार जैन इलाहाबाद
५०१)	श्रीमती खतुराबाई सुन्दरलाल चकेश्वरा
५०१)	श्री शांतिलालजी गुलाबचन्दजी गांधी अकलूज
५०१)	श्री जयकुमारजी खुशालचन्दजी गांधी अकलूज
५०१)	श्री दीपचन्द जी लालचन्द जी फडे अकलूज
५०१)	श्री प्रेमचन्दजी गुलाबचन्दजी गांधी अकलूज (श्री कांतिलालजी प्रेमचन्दजी कपुनी य स्मृति में)
५०१)	श्रीमती चंचल बाई हीरचन्द गंगाराम भम्भडकर अकलूज
५०१)	श्री अनंतलालजी फूलचन्दजी फडे अकलूज
५०१)	श्री बापूचन्दजी वीरचन्दजी दोशी अकलूज
५०१)	श्री बापूचन्दजी मोतीचन्दजी अकलूज
५०१)	श्री प्रेमचन्दजी फूलचन्दजी फडे अकलूज
५०१)	श्री नेमीचन्दजी फूलचन्दजी फडे अकलूज
५०१)	श्री मान् सेठ सम्पत कुमार जी कटक
५०१)	श्रीमान् सेठ विजय कुमार जी कटक
१५०१)	श्री भाग चन्दजी छाबडा जयपुर
१००१)	श्री हरक चन्दजी पाण्डया (गोहाटी वाले) जयपुर
१००१)	श्री मोतीलालजी छाबडा, जयपुर

- १००१) श्री मोतीलालजी औहरीलालजी, खड़गपुर
 १००१) श्री महावीर कुमारजी लौंग्या, जयपुर
 १००१) श्री सांतिकुमारजी गंगवाल जयपुर
 ५०१) श्री मोतीलालजी हाड़ा जयपुर
 ५०१) श्री रतनलालजी गिरराज जी राणा
 ५०१) श्री गुलाबचन्दजी चौधू वाले फर्म (रामसुख बुधीलाल) जयपुर
 ५०१) श्री चिरंजी लालजी महावीर कुमारजी सोगानी जयपुर
 ५०१) श्री सुन्दर लालजी गप्पूलालजी पापड़ोवाल, जयपुर
 ५०१) श्री कपूरचन्दजी पाण्ड्या, जयपुर
 ५०१) श्री हीरालालजी सेठी जयपुर
 ५०१) श्री कमल चन्दजी चिंतामणीजी बज्ज जयपुर
 ५०१) श्री हरिचन्दजी पाटनी, जयपुर
 ५०१) श्री प्रमचन्दजी अनिलकुमारजी काला, जयपुर
 ५०१) श्री रामअवतारजी राजकुमारजी, जयपुर

“कु‘बु बिजय ग्रंथ माला” समिति उपरोक्त सभी महानुमाओं का आभार प्रकट करती है। कि समिति के द्वारा भविष्य में जब २ श्री इस प्रकार के अद्भुत अलम्य ग्रंथों का प्रकाशन होगा, सहयोग मिलता रहेगा।

